

FASANA-E-AZAD

फ़साना-ए-आज़ाद

आज़ाद-कथा / संपूर्ण उपलब्ध हिंदी पाठ

मूल उर्दू कृति के प्रकाशक — मुंशी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ।

MUSEUM READER

आज़ाद-कथा

फ़साना-ए-आज़ाद का हिंदी कथा-पाठ

मूल उर्दू कृति के प्रकाशक — मुंशी नवल किशोर प्रेस, लखनऊ।

इस पुस्तक को पढ़ते हुए

इस खंड में संग्रहालय को प्राप्त हिंदी पाठ लगातार पढ़ा जा सकता है। दस स्थानों पर नए चित्र और संक्षिप्त संवाद संबंधित प्रसंग के साथ रखे गए हैं। विषय-सूची से उन पृष्ठों पर सीधे पहुँचा जा सकता है।

यह पाठ पुरानी छपाई की मशीन से की गई अक्षर-पहचान पर आधारित है। पन्नों के दोहराए हुए शीर्ष हटाए गए हैं और बिखरी पंक्तियाँ अनुच्छेदों में जोड़ी गई हैं। कई नाम, शब्द और संवादों के अंश अब भी अशुद्ध या संदिग्ध हैं। इन जगहों पर दी गई पाठ-फ़ाइल की पढ़त रखी गई है।

पहली बार पढ़ने वाले पाठकों के लिए साथ में एक अलग, संपादित सचित्र कथा दी गई है।

कथा का आधार fasana e azad - hindi edition.txt

दस चित्रकथाएँ

१ संदली जोड़े की शर्त 4

२ मकतब में किसकी ख़ता? 55

३ आमपुर या ख़रबूजानगर? 118

४ एक ख़त, दो बहनें 248

५ छत से आख़िरी सलाम 300

६ खोजी की बारात 334

७ पानी माँगा, ढेले मिले 381

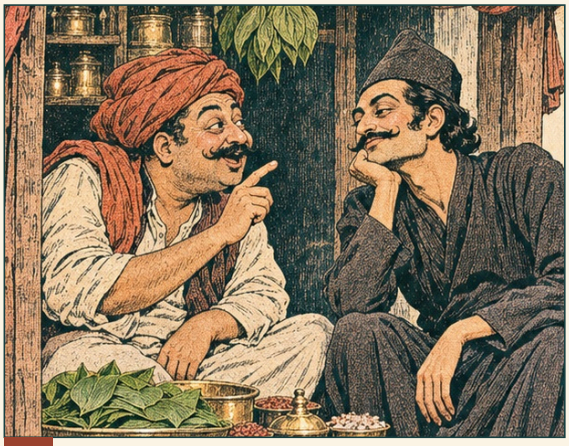
८ लिखावट तो वही है! 501

९ जहाज़ पर खोजी की तान 517

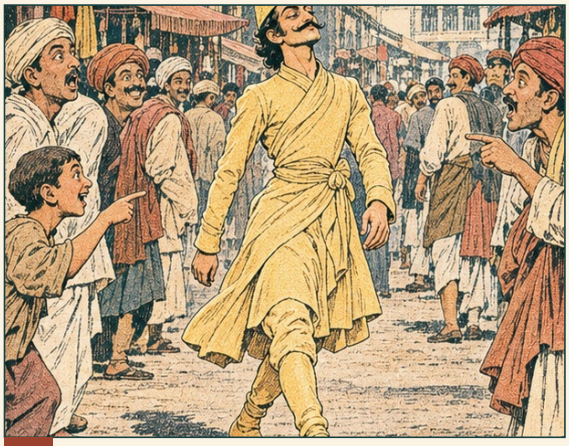
१० मीडा और बंद ख़त 628

पीडीएफ़ के बुकमार्क से १११ प्रसंग और उपसंहार भी खोले जा सकते हैं।

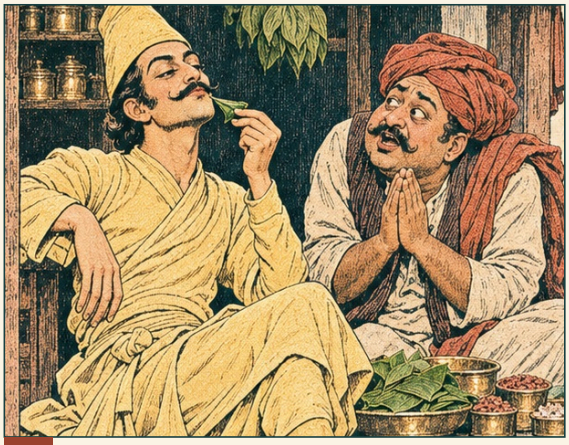
संदली जोड़े की शर्त



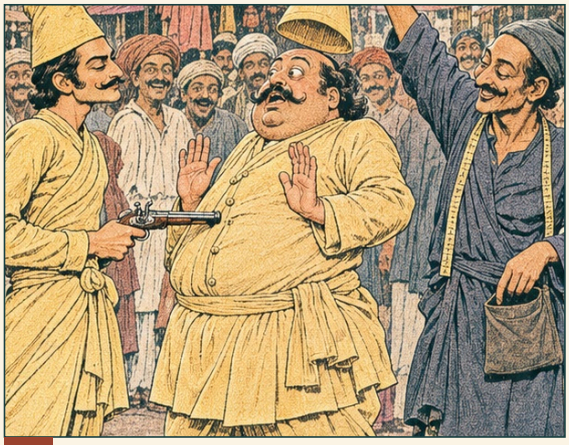
१ तंबोली ने राज़ खोला। संदली रंग का जोड़ा पहनने की मजाल शहर में बस एकरंग को थी।



२ अगले दिन आज़ाद के बूट, घुटन्ना, अंगरखा और टोपी सब संदली थे। गली भर की उँगलियाँ उनकी तरफ़ उठीं।



३ तंबोली ने हाथ जोड़े। टोपी ले लें, जूता बदल लें! आज़ाद ने गिलोरी ली और वहीं डट गए।



४ एकरंग ने टोपी उतारने को कहा। आज़ाद ने उसकी तोंद पर तमंचा रखा। एक दर्ज़ी ने एकरंग की टोपी उतारकर जेब में रख ली।

HINDI TEXT

प्रसंग १

मिर्यों आजाद के बारे में, हम इतना ही जानते हैं कि ... आज़ाद ये। उनके खानदान का पता नहीं, गाँव-घर का पता नहीं; खयाल आज़ाद रंग-दंग आजाद, लिवास आज़ाद, दिल आजाद और मजहब भी आज़ाद | दिन भर जमीन के राज बने हुए इधर-उधर घूम्मना, जहाँ.बेटना वहाँ से उठने का नाम न लेना भौर एक बार उठ खड़े हुए तो दिन भर मटरगइश्त करते रहना उनका काम था। धर, न झर; कमी किसी दोस्त के यहाँ डट गये, कभी किसी हलवाई की दूकान प*#५३, अमाया; और कोई ठिकाना न मिला, तो फ़ाक़ा कर गये । सब गुन पूरे ये | कुश्ती में, लकड़ी-बिनन्नट में, गदके-फरी में, पटे-बाँक में उस्ताद | ग़रज, आलिमों में आडिम, शायरों में शायर, रैंगीलों में रैंगीले, हर फन मौला आदमी ये |

एक दिन मियाँ आज़ाद बाज़ार में सेर सपादा कर रहे ये कि एक बुडे ने एक बाँकें से कह्दा कि मिर्यों, बेधे आये हो, या जान भारी है, या छींकते घर से चले ये ? यह अकड़ते वयों चलते हो १ यहाँ गरदन झुका कर चला कीजिए, नहीं तो कोई पहलवान गरदन नापेगा, सारी शेखी किरकिरी हो जायगी, ऐंड्रना भूल जाइएगा | इससे क्या वास्ता ! यह शहर कुश्ती, पटे-बाँक और लकड़ी की टकसाल है। बहुत से लड़तिये आये, मगर पटकनी खा गये | द्वाथ मिलते ही पहलवानों ने मारा चारों खाने चित्त। यह सुनते ही वह मिर्यों बाँके आग-मभूका हो गये। बोले-जी, तो कहीं इस भरोसे भी न रहिएगा, यहाँ पटकनी खानेवाले आदमी नहीं हैं, बीच खेत पछाड़ें तो सद्दी; बने रहे हमारे उस्ताद, जिन्होंने हमें लकड़ी सिखायी। टालों की लकड़ी फेंकना तो सभी जानते हैं, मेदान में ठहरना मर्दों ही का काम है। हमारे उस्ताद तीस-तीस आदमियों से गोहार लड़ते ये। और कौन लोग ! गैंवारघामड़ नहीं, पले हुए पट्टे, जिन पर उनको ग़रूर था| फिर यह खयाल कीजिए कि तीस गदके बराब- पड़ते थे, मगर तौसों की खाली जाती थी | कभी आड़े हो गये, कभी गदके से चोष काट दी, कभी बन को समेट लिया, कभी पंतरा बदल दिया । शागिदों को ललकारते जाते ये कि 'लगा दे बढ़ के हाथ, आ घुसके ।" और वह झल्ला-झल्ला के चो० लगाते ये, मगर मुँह की खाते ये | जब सबके दम टूट गये और छगे हॉफने, तो गदके हाथ से छूट-छूट पड़े। मगर वाइ रे उस्ताद | उनके वही खमदम, वही ताव-भाव, पहरों लकड़ी फेंके, मगर दम न फूले और जो कहीं मिड़ पड़े तो बात की बात में परे साफ ये। किसी पर पाल्ट का हाथ जमाया, किसी को चाकी का हाथ लगाया | फिर यही म्राद्म होता था कि फुलझड़ी छूट रही है, या आतशबाजी की छद्ूँदर नाय रही है, या चरखी चक्कर में हे । जनेवा का हाथ तो आज तक कोई रोक ही न सका; वह दुला हुआ हाथ पड़ता था कि इधर इशारा किया, उधर तड़ से पड़ गया । बस, मौत का तीर था, गदका हाथ में आया और मादूम हुआ कि बिजली लॉकने लगी। मुमकिन नहीं कि आदमी की आँख झपकने पाये | ललकार दिया कि रोक चाकी, फिर लाख जतन कीजिए, भला रोक तो लीजिए | निशाना तो कभी खाली जाने द्वी नहीं पाता था । फरी उम्र-भर न छूटी । एक अंग ही लड़ा किये । छरहरा बदन, सीघे-सादे आदमी, सूरत देखे तो यक्रीन न आये कि उस्ताद हैं, मगर

एक जरा सी बाँस की खपांच दे दीजिए, फिर दिल्लगी देखिए, कैसे जौहर दिखाते हैं! हम जैसे उत्तादों की आँखें देखे हुए हैं, किसी से दबनेवाले नहीं ।

मियाँ आज़ाद तो ऐसे आदमियों की टोह में रहते द्वी थे, बाँके के साथ हो लिये और दोनों शहर में चबकर लगाने लगे | चोक में पहुँचे, तो जिस पर नजर पड़ती है, बाँका-तिरछा; चुन्नगदार अंगरखे पहने, नुक्केदार टोपियाँ सिर पर जमाये, नुस्त घुटन्ने डाठे, ढाटे बाँधे हुए तने चले जाते हैं। तमंचे की जोड़ी कमर से छगो हुई, दो-द। विलायतियाँ पड़ी हुईं, बादें चढ़ी हुईं, पेशकब्ज, कटारै, सिरोही, शेर बचा, सबरे लेस | बाँके को देख कर एक दूकानदार की ज्ञामत आयी, हँस पड़ा । बाँके ने आव देखा न ताव, दन से तमंचा दाग दिया । संयोग था, खाली गया | लोगों ने पूछा, क्यों भाई, क्यों बिगड़ गये ! तीखे हो कर बोले--हमको देख कर बचाजी मुसकिराये थे, हमने गोली लगायी कि दाँत पर पड़े और इनके दाँत खट्टे द्वो जायें, मगर जिंदगी थी, बच निकले। मिययाँ आज्ञाद ने अपने दिल में सोचा, यद्द बाँके तो आफ़त के परकाले हैं, इनको नीचा न किया ठो कुछ बात नहीं । एक तंबोली से पूछा--क्यों ५३, यहाँ बाँके बहुत हैं?! उसने कहा-मियाँ, बाँका होना तो दिल्लगी नहीं, हाँ, बाते "त हैं । और इन सबके गुरू-घंटाल वह हज़रत हैं, जिन्हें लोग एकरंग कहते हैं। वह संदली रँगा हुआ जोड़ा पहन कर निकलते हैं, मगर मशल क्या कि शहर भर में कोई संदली जोड़ा पहन त्तो ले । एकरंग संदली जोड़ा कोई पहन नहीं सकता; कोई पहने तो गोक़ी भी सर कर दे, इसके साथ यह भी है ।

प्रियाँ आज्ञाद ने सोचा कि इस एकरंग का टेठुआ न लिया, तो खाना हराम । दूसरे दिन आप भी संदली बूट, संदलो घुटन्ना, संदली जैगरखा और टोपी डाट कर निकले । अब जिस गली-कूचे से निकलते हैं, उँगलियाँ उठती हैं कि यह आज इस टत्र से कौन निकले हैं भाई | होते-होते एकरंग के चेले-चापड ने उनके कान में भी भनक डाल दी । सुनते ही मुँह लाल चुकंदर हो गया। कपड़े पहन, इथियार ढगा, चल खड़े हुए । आज़ाद तंबोली की दुकान पर टिक गये । उनका वेष देखते ही उसके द्वोश उड्ड गये । छगा द्वाथ जोड़ने कि भगवान् के लिए मेरी ही टोपी दे लीजिए, या जूता बदल डालिए, नहीं तो वह आता ही होगा, मुफ्त की ठायें-ठायँ से क्या वासस्ता १ इनको तो कच्चे घड़े की चद्दी थी, कब्र मानते थे, गिलोरी ली और अकड़ कर खड़े हुए.। शहर में धरम हो गयी कि आज आज़ाद ओरे एकरंग में तलवार चलेगी । तमाशा देखनेचाले जमा है) गये। इतने में मियाँ एकरंग भी दिखाई दिये। उनके आते ही भीड़ छट गयी। कोई घर +पंग गया, कोई गली में घुसा, कोई कोठे पर चंद गया । एकरंग ने जो इनको देखा, तो जल मग्ग | बोछा--अबे ओ खब्ती, उतार टोपी, बदल जूता । इमारे होते तू संदली जोड़ा पहन कर निकले] उतार, उतार, नहीं तो में बद्द कर काम तमाम कर दूँगा । मियाँ आज़ाद पेतरा बदछ कर तीर की तरद्द झपट पड़े और बडी फुर्तो से एक रंग कौ तोंद पर तर्मचा रख दिया । बस हिले ओर धुआओँ उस पार | बोले और लाश फड़कने लगी | बेईमान, बड़ा बाँका बंना है, सैकड़ों भले आदमियों को बेइज्ज़त किया। इतने चाबुक मारुगा कि याद करेगा । अभी उतार टोपी, उतार, उतार, नहीं तो धुआँ उस पार | संयोग से एक दर्जी उधर से निक्रद्य, उतने एकरंग की टोपी उतार जेब में रखी । एकरंग की एक न चली। आज़ाद ने ललकारा-हौसता हो तो आओ, दो-दो हाथ भो हो जायें, खबरदार जो आज से संदली जोड़ा पहना |

शुहर भर में धूम हो गयी कि मियां आजाद न एकरंग के छक्के छुड़ा दिये, चुपचाप दर्जी से टोपी बदली ।सच है, “दबे पर बिल्ली चूदे से कान कटाती ह।! मियाँ आज़ाद की धाक बँध गयी | एक दिन उन्होंने मनादी कर दी कि आज मियों आदडाद छट्टद बजे से आठ बजे तक अपने करतब दिखायेंगे, जिन्हें शौक़ दो आयें। एक बड़े लम्बे-चौड़े मैदान में आज़ाद अयने जौहर दिखाने लगे। लाखों आदमी जमा थे । मियाँ आजाद ने नीबू पर निशान बनाया, और तलवार से उड़ाया, तो निशान के पास खट से दो टुकड़े । कसेरू उछाला और पाँच-छहद् बार में छील डाला ! तलबार की बाद से दध-बारह की आँखों में छुरमा छगाया । चिरार जलाया और खाँड़ा फेंकते-फेकते गुल काट डाला, लौ अलग, बत्ती अलग। एक प्याले में दस कोड़ियाँ रखीं और दो पर निशान बना दिया। दोनों को तलवार से प्याले द्वी में काटा और बाकी कोड़ियोँ निलोह बच निकलीं । छकड़ा टेकी और बीस हाथ छत पर हो रहे । गदके का ज़रा इशारा किया और बीस ह्वाथ उड़ गये। चालोस-चालीव आदमियों ने घेरा आर यह साफ़ निकल भागे। पढलेंग के नोचे ए% जंगछी कबूतर छोड़ दिया गया। उन्होंने उत्तको निकलने न दिया । एक फिकेत ने ये करतब देखे तो बोला--अजौ यह खब नट-विद्या है, मेदान में आयें तो मादूम हो।

आज़ाद--अच्छा | अन्न तुम्हें भी मैदान में आने का दावा हुआ | तुम्दारे ए.करंग का तो रंग फीका दो गया, अब तुम मुँद्द चदते द्दो, तुम्हें भी देखूँगा।

फिकैत--चोंच संभाले ।

आजाद -तुम्दारी शामत ही आ गयी है, तो में क्या करूँ। आजकल में तुम्हारी भी कलई खुली जाठी है| तुम लोग बाँके नहीं, बदमाश हो; जिधर से निकल जाओ, उधर आदमी कॉप उठे कि भेड़िया आया । कोई हँसा और तुमने बंदुक छति-यायी, किसी ने बात की और तुमने चोट रूगायी | भाई वाह, अच्छा बाँकपन है ! तो बात क्या, जहाँ दस रिन डंड पेले और उबल पड़े, दो-चार दिन लकड़ी फेश्ली और महब्केवालों पर शेर हो गये । गुनी छोग सिर झक्का ही के चलते हैं।

यही बातें दो रही भीं कि सामने से एक पहलान एऐड़ते हुए निकले, रूँगोट बाँधे, मतमल की चादर ओढदे दो-तीन पट्ढे साथ। एक कसेरुबाले. के पास खड़े हो गये और उसके सिर पर एक धप लगा दी। वह पीछे फिरकर देखता है, तो एक देव खड़े हैं। बोले, तो पथा जाय; कान दबा कर, धप खा कर, दिल ही दिल में कोसता हुआ चला गया ।

थोड़ी ही देर में मियां पहलवान ने एक खोँचेवाके का खाँचा उछट दिया; तीन-चार रुपये कि मिठाई धूल में मिल गयी। जब उसने गुल-गपाड़ा मचाया, तो पढ़ों ने दो-तीन गुद्दे, घूसे, मुक्के लगा दिये, दो-चार लप्पड़ जमा दिये। वह बेचारा रोता-चिल्लाता, दुद्दाई देता चला गया ।

आज़ाद सोचने लगे, यह तो कोई बड़ा ही शैतान है, किसी के लप्पड़, किसी के थप्पड़, अच्छी पहलवानी है ! सारे शहर में तहलका मचा दिया | इसकी खबर .न ली, तो कुछ न किया | यह सोचते ही मेरा शेर झपट पड़ा और पहलवान के पास जा कर घुटने से ऐसा धक्का दिया कि मियोँ पहलवान ने इतना बड़ा डील-डौल रखने' पर भी बीस छुदकनियाँ खायीं। मगर पनलवान सैंभलते ही उनकी तरफ झपट पड़ा | तमाशाई तो समझे कि पहलवान आज़ाद को चुरं-मुर कर डालेगा, लेकिन आज़ाद ने पहले ही से वह

दाँव-पेंच किये कि पहलवान के छक्के छूट गये, ऐसा दबाया कि छठी का दूध याद आ गया । उसने जैसे ही आजाद का बायाँ हाथ घसीटा, उन्होंने दाहने हाथ से उसका हाथ बाँधा और अपना छुड़ा, चुटकियों में कूलेपर लछाद, घुटना टेक कर मारा--चारों खाने चित ! पहलवान अब तक कोश था, किसी टंगल में आसमान देखने की नौबत न आयी थी। आज़ाद ने जो इतने आदमियों के सामने पटकनी बतायी, तो बड़ी किरकिरी हुई और तमाम उम्र के लिए दारा लग गया ।

अब तो मियां आज़ाद जगत्-गुरु दो ये, .एकरंग का रंग फीका पड़ गया, पहल-बान ने पटकनी खायी, शहर भर में धूम हो गयी | जिघर से निकल जाते, लोग अदब करते ये । जिससे चार आँखें हुईं उसने ज्मीन चूम कर सलाम किया | अच्छे-अच्छे बाँकों की कोर दबने लगी। जहाँ किसी शहज़ोर ने कमजोर को दबाया और उसने गुल मचाया--दोहाई मिर्यों आजाद की, और "्द बाँड़ी ले कर आ पहुँचे । किसी बदमाश ने कमजोर को दबाया और उसने डॉट बतायी--नहीं मानते, बुढाऊँ मिर्यों आजाद को! शोहदें-डस्चे <नसे ऐसे थर्राते ये, जैसे चुद्दे शि्ली से, या मरीज त्छी से । नाम सुना और बगलें झाँकने लगे; सूरत देखी और गली-कूचों में दबक है । शहर भर में उनका डंका बज गया ।

एक दिन आजाद सिरोही लिये ऐंडते जा रहे थे कि एक दर्जी की दुकनि के पास से निकले। देखेते बया हैं, रंगीटें छेले, बाँके जवान छोटे पजे का मखमडी बता पहने जुल्फें छटकाये, छुरी कमर से लगाये दज़ीं से तकरार कर रदे हैं। वाह मियाँ खलीफ़ा ! तुमने तो हमें उठटे धूरे मूडा ! खुदा जाने, किस कंतर-न्योत में रहते हो। सीना पिरोना तो नाम को' हैं, हाँ, जवान अल्बत्ता,कतरनी की तरह चटा करती है । तुमसे कपड़े सिलवाना अपनी मिट्टी खराब करना है। दम धागा देना खूब जानते हो । टोपी ऐसी भोंडी बनायी कि फबतियाँ सुनते-सुनते नाकों दम आ गया

दर्जी--ऐ: तो हुजूर, मैं इसको क्या करूँ ! मेरा मलछा इसमें क्या कुयूर है ! आपका छिर ही टेदा है। मैं टोपी बनाता हूँ, सिर बनाना नहीं जानता ।

बाँके--चोंच सेंभाल, बहुत बद्-बढ़ कर बातें न बना। बाँकों के मुँह लगता है ! और सुनिए, हमारा सिर टेदा हे । अबे, तेरा सिर साँचे का दला है ! तेरे ऐसे दर्जी मेरी जेब में पड़े रद्दते हैं, मुँह बंद कर, नहीं दूँगा उलटा द्वाथ, मुँदद टेढ़ा दो जायगा । और तमाशा देखिए, हमारा सिर गोया कद्दू हो गया है ।

दर्जो--आप मालिक हैं, मुल मेरी खता नहीं। जैसा सिर वैसी टोपी । ऐसा सिर तो मैंने देखाही नहीं; यह नयी गदंत का सिर है, आप परे लें, बस, में सी चुका । जब दाम देने का वक्त आया, तो यह झमेका किया ।

यह सुनते ही बाँके ने दर्जी को इतना पीटा कि वह बेचारा बेदम हो गया | आखिर कफ़न फाड़ कर चीलां, दोदह्दाई मियाँ आजाद की, दोदड़ाई मेरे उस्ताद की | आज़ाद तो दूर से खड़े देख द्वी रहे थे, झट तल्वार सैंत दुकान पर पहुँच गये । बाँके ने पीछे फिर कर देखा, तो मिर्यों आजाद ।

आज़ाद-वाह भाई बाँके, तुम सचमुच रुस्तम हो। बेचारे दर्ज़ी पर सारी चोट साफ कर दीं। कभी किसी कड़ेखाँ से भी पाला पड़ा है ! कहीं गोहार भी लड़ा है ! या.गरीबों ही पर शेर हो! बड़े दिलेर हो तो आओ, हमसे भी दो-दो दाय दो जायें | तुम ढेर हो जाओ, या हम चरका खाये। आइए, फिर पैतरा बदलिए, लगा

बढ़ कर हाथ, इधर या उधर |

बाँके--हैं, हैं, उस्ताद, हमीं पर हाथ साफ़ करोगे, हम नौसिखिये तुम गुरु-घंटाल । मगर आप इस कमीने दर्जी की तरफ से बोलते हैं और शरीफ़ों पर टलवार तौलते हैं | मुमान अलछाह ! आइए, आपसे कुछ कद्दना है।

आजाद--अच्छा, तोता करो कि अब्र किसी ग़रीब को न धमकायेंगे ।

बाँकि--अजी दृज़रत, धमकाना कैसा, हम तो खद ही बला में फँसे हें; खदा दी बचाये, तो बचें । यहाँ एक फिकेत है, उससे हमसे लाग-डॉट हो गयी दे। कल नौचंदी के मेले * हमें घरेगा, कोई दो सौ बाँकों के जत्ये से हम पर दरबा करना चाइता है। हम सं जत हैं कि दरगाह न जायें, तो बॉकपन में बद्दा ल्गता है, और जाये, तो किस तबिरते पर ! यार, तुम साथ चलो तो जान बचे, नहीं तो बेमौत मरे ।

आजाइ--अच्छा, तुम भी क्या कद्दोगे | लो, बीड़ा उठा लिया कि कल तुमको ले चढेंगे और सबसे मिड पड़ेंगे, टो सौ हों, चादे हजार, हम हैं और इमारी कयार, इतनी कटारें भोकूँ कि ठम बंद हो जाय। मगर यह बता दो कि कुसूर तुम्हारा तो नहीं है !

बकि-- नहीं उस्ताद, कसम ले छो, जो मेरी तरफ़ से पहल हुई हो | मुझसे उन्होंने एक दिन अकड़ कर कहां कि तू तलवार न बाँधा कर | मैं भी, आप जानिए, “इनसान हूँ । पिता तो मछली के भी होता है। मुझे भी गुस्सा आ गया । मैंने कद्दा, धत् ! तू और हमते हथियार रखबा ले! बस, बिगड़ ही तो गया और पंद्रह-बीस आदमी उसकी तरफ़ से बोलने छगे। मैंने भी जवाब दिया, दबा नहीं । मगर लड़ पड़ना मसलरुहत न थी। बाँका हूँ, तो क्या हुआ, भिना समझे-बूझे बात नहीं करता । खेर, उसने लछकार कर कहा--अच्छा बचा, दरगाह में सम लेंगे, अन्न की नौचंदी में हमीं न होंगे, या तुम्हीं न होगे ।

आज्ाद--अच्छा, तुम लैध रहना, में दो घड़ी दिन रहे आऊँगा, घब्राओ नहीं, तुम्दारा बाल-ाँका हो, तो मूँछ मुंड़। दूँ । ये दो सो आदमी देखने ही भर के होंगे । सच्चे दिलेर उनमें दी-ही चार होंगे, जो आजाद की तलवत्ार का सामना करें । मौत से लड़ना दिल्लगी नहीं है; कलेजा चाहिए !

दूसरे दिन आज़ाद इथियार बाँध कर चले, तो रास्ते में बाँके मिल गये और दोनों साथ-साथ टहलते हुए दरगाह पहुँचे ।

नौचंदी जुमेरात, बनारस का बुढवामंगल मात; चारों तरफ चहल-पहल; कहीं 'तमाशाइयों? का हुजूप, हटो-बचों की धूम; आदमी पर आदमी टूटे पड़ते हैं, कोसों का ताँता छगा हुआ है, क्लेवेवाले आवाज़ लगा रहे हैं, तंत्रोली बीडे बना रहे हैं, गैंडेरिया हैं केवड़े की, रेवड़ियाँ हैं गुलाब की । आज़ाद घ्रते-घारते फाटक पर दाखिल हुए, तो देखा, सामने तीध-बालीत आदमियों का गोल है। गशाँके ने कान में कहा कि यही हजरत हैं, देख लीजिए, दंगे पर आमादा हैं या नहीं ।

आज़ाद--भला, यहाँ तुम्हारा भी कोई जान-पहचान है १ हो, तो दस-पाँच को

तुम भी बुला छो; भीड-भड़कका तो हो जाय | लड़नेवाले हम क्या कम हँ--मगर दो- /7 जमाली खरबूज़े भी चाहिए, डाली की रौनक हो जाय ।

बाँकि--अमी लाया, आप ठहरें; मगर बाहर टहलिए, तो अच्छा है, यहाँ जोखिम है |

आजाद फाटक के बाहर टहलने लगे । फिकैत ने जो देखा कि दोनों खिसके, तो आस में हॉडियाँ पकने लगीं--वह भगाया ! वह हटाया! भागा है | उनके साथियों में से एक ने कहा--अजी, बह भागा नहीं है, एक ही काइयाँ है, किसी टोह में गया है | एक बिगड़ेरिल ब'हर गये, तो देखा, बॉके पश्चिम की तरफ गन उठाये चले जाते हैं, ओर मिय्रों आज़ार फाठक से दस कदम पर टहल रहे हैं। उलटे पाँव आ कर ख़बर दी--उत्ताद, बस, यही मौका है, चलिए,, मार लिंपा है, बायें द्वाथ चछा जाता है, और अकेला है। सब दूसरे फाटक से चढ़ दौड़े । ठहर बे, ठहर |! बस, रुक जा, आगे कदम बढ़ाया, और ढेर हुए ! हिले, और दिया तुला हुआ द्वाथ | याद है कि नहीं, आज नौचंदी है। छोगों ने खारों तरफ से घेर लिया | बाँके का रंग फ़क कि गजब ही हो गया | अब कुतें की मौत मरे । किस-ऊिससे छढ/ेंगा! एक की दवा दो फिनो। । पियाँ आजाद को कोई खबर कर देता, तो वह झपद ही पड़ते; मंगर जन्न तक्र कोई जाय-जाय, हमारा काम तमाम हो जायगा। एक यार ने बढ़कर बेचारे मुसी-बत के मारे बाँके के एक लठ लगा दिया, बायें हाथ की हड्डी दूट गयी । गुल-गपाड़े की आवाज़ आज़ाद ने भी सुनी । भीड़ काट कर पहुँचे, तो देखा, बाँ के फँसे हुए हैं। तलवार को ठेका और दन से उस पार हुए। खज़रदार खिलाडी ! द्वाथ उठाया ओर मैंने टेटुआ लिया । बाँके के दिल में दादस हुआ, जान बची, नयी जिन्दगी हुईं । इतने में मियोँ आज़ाद ने तलवार म्यान से निकाटी और पिल पड़े । तलवार का चमकना था कि किकैत के सत्र साथी हुरं हो गये, मेदान खाली, मियाँ आजाद ओर बाँके एक तरफ, फिकैत और दो साथी दूसरी तरफ, बाक़ी रफूचक्क्र । एक ने आजाद पर तमंचा चलाया, मगर खाली गया। आज़ाद ने झपट कर उसको ऐसा चरका रिया कि तिलमिला कर गिर पड़ा । दूसरे जवान दस कदम पीछे हट गये । बाँके मी खिसक गये । टच आजाद और फिकेत आमने-सामने रह गये । वह कड़क कर झुका, इन्होंने चोट रोक कर सिर पर हाथ लगाना चाहा, उसने रोका और चाकी का हाथ दिया । आप घंटे तक शपाशप तलवार चछा की। आखिर आज़ाद ने बद कर 'जनेऊ? का वह हाथ लगाया कि 'भडारा! तक खुल गया, मगर फिकेत भी गिरते-गिरते बाहरा? दे

हीं करी । इधर यह, उधर वह धम से गिरे । ततब्र बॉके दौड़े और आजाद को उठा कर प्रर ले गये |

HINDI TEXT

प्रसंग २

आजाद की धाक ऐशी बँधी कि नवात्रों और रईसों में भी उनका जिक्र दोने छगा। रईसों को मरज होता है कि पहलवान, फिकेत, ब्िनवटिये को साथ रखें, बग्घी पर ले कर हवा खाने निकले | एक नवात्र साहब ने इनको भी बुलवाया | यह छेला बने हुए, दोहरी तलवार कमर से लगाये जा पहुँचे | देखा, नवाब साहब, अपनी माँ के लाइले, भोले-भाले, अँपेरे घर के उजाले, मसनद पर बैठे पेचवान गुड़ागुड़ा रदे हैं। सारी उम्र महल के अन्दर ही गुज़री थी, कभी घर के बाहर जाने तक की भी नौबत न आयी थी, गोया बाहर क़दम रखने को क़सम खायी थी। दिनभर कमरे में बेठना, यारों-दोस्ंतों से गपें उड़ाना, कभी चौसर रंग ज्माया, कभी बाज्जी लड़ी, कभी पौ पर गोट पड़ी, फिर इतरंज बिछी, मुहरे खट-खट पिटने लगे । किश्त ! वह घोड़ा पीट लिया, वह प्यादा मार लिया । जब दिल घबराया, तब मदक का दम ल्गाया, चंद के छींटे उड़ाये, अफ़ीम की चुसकी ली। आज़ाद ने छक कर सलाम किया। नवाब साहब खुश हो कर गले मिले, अपने करीब ब्रिठाया और बोले-- मैंने सुना है, आपने सारे शहर के बाँकों के छक्के छुड़ा दिये |

आज़ाद--यह हुजूर का इक़त्रांल है, वरना में क्या हूँ। नवाब--मेरे मुसाइब्रों में आप ही जैसे आदमी की कमी थी, वह पूरी हो गयी, अन्न खूब लनेगी ।

इतने में मीर आगा बटेर को मूठ करते हुए. आये और सलाम कर के बैठ गये । जरा देर के बाद अच्छे मिर्जा गन्ना छीलते हुए आये और एक कोने में जा डटे । मिरयाँ झम्मन ओंगरखे के बंद खोले, गुद्दी पर टोपी रखे खट से मौजूद । फिर क्या था, तू आ, मैं आ | दस-पंद्रद् आदमी जमा हो गये, मगर सब झंडे-तले के शोहदे, छटे हुए गुरगे थे कोह चीनी के प्याले में अफ्रीम घोल रहा है, कोई चंड्ू का क्रिवाम बना रहा है, किसी ने गँड़ेरियाँ बनायी, किसी ने अमीर-हमजा का किस्सा छेड़ा, सब्र अपने-अपने धंघे में लगे | नवाब साहत्र ने मीर आग़ा से पूछा--मीर साहब, आपने ख़द़के का दरख्त भी देखा है !

मीर आग्रा--हजूर, कसम है जनाब अमीर की, सत्तर और दो बहत्तर बंसस की उम्र होने की आयी, गुलाम ने आज तक आँखों से नहीं देखा, लेकिन होगा बड़ी दरख्त । सारी दुनिया की उससे 7”7+*श द्वोती है, जिसे देखो, खृश्के पर हत्थे लगाता है ।

अच्छे मिर्जा-उ “ जाऊँ, दरख्त के बड़े होने में क्या शक है। कश्मीर से ले कर, कुरबान जा 2 गांव तक और लंदन से ठे कर थिः ।यत तक, सबका इसी पर दारमदार है '

नवाब--मेरा भी खयाल यही है कि दरख्त होगा बहुत बड़ा; लेकिन देखने की बात यह है कि आखिर क्रिस दरख्त से ज़्यादा मिलता है। अगर यह बात मादम हो जाय, तो फिर जानिए कि एक नयी बात मालूम हुई । और माई, सन पूछो, तो छान-बीन करने ही में जिंदगी का मजा है ।

अच्छे मिर्जा--सुना बरगद का दरख्त बहुत बढ़ा होता है-। झटठ-सच का हाल खुदा जाने; नीम का पेड़ तो हमने भी देखा है,' लेकिन किसी शायर ने नीम के दरख्त की बड़ाई की तारीफ नहीं की ।

छुट्टन--हमने केले का पेड़, अमरूद का पेड़, खरबूज़े का पेड़ सत्र इन्हीं आँखो देख डाले |

आज़ाइ-भल्ा, यहाँ किसी ने वाहवाह की फलियों का पेड़ भी देखा हे !

घुइन--जी हाँ, एक दफ़े नेपाल की तराई में देखा था, मगर शेर जो डकार, तो मैं झप से गेंदे के दरझत पर चढ़ गया । कुछ याद नहीं कि पत्ती कैसी होती है ।

नवाइ-खुश्के के दरख्त का कुछ ह्वाल दरियाफ़त करना चाहिए ।

अच्छे मिर्जा --कुरनान जाऊँ, इन लोगों का एतबार क्या ! सब सुनी-सुनायी

कहते हैं | कुरान जाऊँ, गुलःम ने वह बात सोचो है कि सुनते ही फड़क जाइये |

नवाब--कद्दिए, कदहिए ! जरूर कद्दिए ! आपको कसम है। मुझे यक्रीन हो गया कि आप दूर की कौड़ी लाये होंगे ।

अच्छे मिर्जा --(कतारे को खड़ा करके) कुरबान जारऊँ, अगर खुश्के का दरख्त होगा, तो इस कतारे के बरातर द्वी होगा, न जौ भर बढ़ा, न तिछू भर छोटा ।

नवाब--वाह मीर साहब, वाह, क्या बात निकाली !

मुसाहब--सुभान झलाइ मीर साहब, क्या सूझ-बूझ है !

आजाद --आप तो अपने वक्त के छाल बुशकइ निकले ! मादूम द्योता है, सफ़र बहुत किया हे |

अच्छे मिर्जा -कौन, मैंने सफ़र ! क्रतम छो, जो नखास से बाहर गया हूँ। मगर, कुरबान जाऊँ, लड़कपन द्वी से जहीन था। अन्जाजान तो बिलकुल बेवकूफ थे, मगर अम्मॉजान तो बला की औरत थीं, बात में बात पैदा करती थीं ।

इतने में गुरू-गपाड़े की आवाज आयी। अंदर से मुवारकक़रम लोंडी सिर पीटती हुईं आयी--हुज्र, मैं सदके, जल्दी चलिए, यह इंगामा कहाँ हो रद्द हे ! बढ़ी बेगम साहबा खही रो रही हैं कि मेरे बचे पर आँच न आ जाय ।

नवाब साइब जूतियाँ छोड़कर अंदर भागे। दरवाजे सब बंद ! अब किसी को हुब्म नहीं कि जोर से बोले । इतने में एक मुसाहब ने ड्योदी पर से पुकारा--हुजूर, फिर आखिर मिर्यों आज़ाद किस मरज की दवा हें ! गैंड़ेरी छीलने के काम के नहीं, क्रियाम बनोंना नहीं जानते, बटेर मृठियाना नहीं आता, इनको भेज कर दरियाफ़्त न कराइये कि दंगी कहाँ हो रहा है ।

मुतरकक़दम--हाँ, हाँ भेज दीजिए; कहिए, कुत्ते की चाल जायें और बिल्ली की चाल आये ।

मिर्यों आजाद ने कटार सैंभाली और बाहर निकले। राह्द में लोगों से पूछते ज,ते हैं कि भाई, यह फ़िसाद क्या है! एक ने कहा, अजी चिकमंडी में छुरी चली । पाँच-चार क्रम आगे बढ़े, तो दो आदमी बातें करते जाते थे कि पसारी ने पुड़िया में कद के बींजों की जगह जमाऊ-गोटा बाँध दिया । गाहक ने त्रिंगड़ कर पंसारी की गर्दन नापी । और दस क्रदम चले तो एक आदमी ने कहा, वह तो कट्दविए खैरियत गुज़री कि जाग हो गयी नहीं तो भेड़िया घर भर को उठा ले जाता । यह भेड़िया कैसा जी ! हुजूर, एक मनिहार के घर से भेड़िया तीन बकरियाँ, दो मेंढे, एक खरहा ओर एक खाली पिंजड़ा उड़ा ले गया । उसकी ओरत को

भी पीठ पर छाद चुका था कि मनिद्दार जाग उठा । अब आज़ाद चकराये कि भाई अजब बात है, जो है नयी सुनाता है। क़रीब पहुँचे तो देखा, पंद्रह-बीस आदमी मिल कर छप्पर उठाते हैं और गुल मचा रहे हैं। जितने मुँह उतनी बातें। और हँसी तो यह आती है कि नवात्र साइब्र बदहवास हो कर घर के अंदर हो रहे। वहाँ से लौट कर यद्द क्रिस्सा बयान किया, तो लोगों की जान में जान आयी, दरवाज़े खुले, फिर नवाब साइबर बाहर आये ।

नवाब--मियाँ आज़ाद, तुम्हारी दिलेरी से आज जी खूश हो गया । आज मेरे यहाँ खाना खाना । आप दाल नहीं बाँधते।

आज़ाद--हुजूर, दाल तो जनानों के लिए है, हम उम्र भर एक-अंग छड़ा किये, तलवार ही से चोट लगायी और उसी पर रोकी, या खाली दी या काट गये । एक दिन आपको तलवार का कुछ हुनर दिखाऊँगा, आपकी आँखों में तलवार की बाढ़ से सुरमा लगाऊँगा ।

नवाब--ना साहब, यह खेल उजड्डपन के हैं, मेरी रूद कॉपती है, तलवार की सूरत देखते ही जूड़ी चद्र आती है। हाँ, मिर्जा साइत्र जीवट के आदमी हैं। इनकी आँखों में सुरमा लगाइये, यह उफ़ करने वाले नहीं ।

अच्छे मिर्जा- कुरबान जाऊँ हुजूर, अब तो बाल पक गये, दाँत चूहों की नज़« हुए, कमर ठेढी हुई, आँखों ने दका सा जवाब दिया, होश-हवास चंपत हुए! । क्या कहूँ हुजूर, जत्न छोगों को गँड्रेरियाँ चूसते देखता हूँ, तो मुँह देख कर रह जाता हूँ ।

इतने में मियाँ कमाली, मियाँ झम्मन और मिर्यों दुन्नी भी आ पहुँचे ।

कम्ताली--खुदावंद, आज तो अजीत्र खबर सुनी, हवास जाते रहे । शहर भर में खलबली मची दे, अल्लाह बचाये, अबकी गरमी की फ़सल खरेरियत से गुजरती नहीं नजर आती, आसार बुरे हैं ।

नवाब--क्यों ! क्यों ! खैर तो है! क्या क्रयामत आने वाली है या आफ़तात्र थवा नेज़े पर हो रहा १ आलिर माजरा क्या है, कुछ बताओ तो सद्दी |

अच्छे मिर्ना--ऐ. हुजुर, यद्द जब आते हैं, एक नया शिग़ोफा छोड़ते हैं। ख़दा जाने, कौन इनके कान में फूँक जाता है । ऐसी सुनायी की- नशा हिरन हो गया,

जम्दाश्याँ आने लगीं ।

कमाली--अजी, आप किस खेत की मूली हैं, हमसे तो बड़े-बढड़ों के नशे हिरन हुए हैं | जब पहली तारीख आयेगी, तो आंखें खुल जायँगीं, आटे-दाछ का भाव मालूम हो जायगा | और दो-चार दिन मीठे ठुकड़े उड़ा छो। वाह साइब, हम तो दूँढ-दाँद कर ख़बरें छायें, आप दिनभर पीनक में ऊँधा करें, और हमी को उल्लू बनायें । पहली को कलई खुल जायगी, बचा, सूरत ब्रिगड़ जाय तो सही ।

नवाब--क्या ! क्या ! पहली तारीख केसी ! अरे मिर्यों, तुम तो पहेलियाँ बुझ-वाते हो, आखिर पहली को क्या होनेवाला हे १

कप्ताली-- ऐ हुजुर, यह न पूछिए, बस, कुछ कहा नहीं जाता । एक हल्वाइन अभी जवान-जहान है। मारे हौके के औटा हुआ दूध जो पी गयी तो पेट फूल कर कुप्पा हो गया । किसी ने कुछ बताया, किसी ने

कुछ नुस्खा पिछाया; मगर वह अंगा-ग़ाफ़िल हो गयी । +अ सुनिए कि जब्र चिता पर जाने लगी, कुलबुला कर उठ बैठी । भरे राम ! अरे बाप-रे-ाप | यू का भवा १ हलवाइयों ने वह बम-चख मचायी कि कुछ न पूछिए, | "यू देखो, लहास हिलत है ! अरे यू का अंघेर भवा ? आखिरकार दो-चार हलवाइयों ने जी कड़ा करके छाश को घसीट लिया ओर झटपट कफ़न फाड कर उसे निकाला, तो टैयाँ सी उठ बैठी । हुज़्र, कसम है ख़दा की, उसने वह वह बातें बयान को कि कही नहीं जातीं। जब मरी तो जमराज के दूतों ने मुझे उठा कर भगवान के पास पहुँचाया, सीता जी बैठी पूरी बेलत रहें, हमका देखके भगवान बोले कि इसको ले जाओ । मुझे उसकी बोली तो याद नहीं, मगर मतलब यह था कि पहली को बड़ा अंधेरा घुप छा जायगा और तूफान आयेगा, जितने गुनदगार बंदे हैं सत्र जलाये जायेंगे, और अफ़ीमची जिस घर में होंगे उसको फ़रिइते जला कर खाक-सियाह. कर देंगे।

नवाब--मिर्ज़ा साहब, ये बोरिया-बंधना उठाइए, आपका यहाँ ठिकाना नहीं । नाहक़ कहीं फ़रिइते मेरी कोठी फ्रूक दें तो कहीं का न रहूँ । बस, बक़चा सँभालिए कद्दीं और बिस्तर जमाइए ।

अच्छे मिजो--कुरबान जाऊँ हुज़्र, यह बड़ा बेईमान आदमी हे । हुजूर् तो भोलेभाले रईस हैं, जिसने जो कद्दा मान लिया । भल्य कहीं फ़रिश्ते घर फूँका करते हैं! मुझ बुद्दे को न निकालिए, कई पुछतते इसी दरबार में गुजर गयीं, अब किसका दामन पकड़े ! अरे वाह रे झूठे, अच्छी बेपर की उड़ायी, इल्वाइन मरी भी और जी भी उठी, बेसिरपैर की बात |

नवाब--खेर, कुछ भी हो, आप अपना सुबीता करें । मेरे बाप-दादा की मिल-कियत कहीं फ़रिश्ते फूँक दें तो बस ! आप हैं किस मरज की दवा ! चारपाइयाँ तोड़ा करते हैं ।

अच्छे मिर्ज़ा--वाह री किस्मत ! यहाँ जान छड़ा दी, बकरे की जान गयी, खाने-वाले को मज़ा न आया | इस शैतान से खुदा समझे, जिसने मेरे हक में काँटे बोये । खुदा करे, इसका आज के खातवें द्वी दिन जनाज़ा निकले । जैसे ही आ कर बैठा, मेरी बायीं आँख फढ़कने छगी, तो यह गुल खितल्ण | .._नवाब साहब मुसाहबों को यह नादिरी हुक्म दे कर ज़नानखाने में चले गये कि 'मेज़ों को निकल्वा दो। उनके जाते ही मिर्जा की ले-दे शुरू हो गयी। क्रमाली--मि्ज़ साहब, अफ़ीम का डबन्बा बगल में दबाइए और चलते-फिरते नज़र आएए। सरकार का नादिरी हुक्म हैं और छोटी बेगम साहिबा मदनामथ मचा रही हैं कि इस बुद्ें को खड़े-खड़े निकाल दो । सो अब खिसकिए, नहीं बुरी होगी । झम्मन--वाजिश्ी बात है, सरकार चल्ते-चलते हुक्म दे गये थे। हम छोग मजबूर हैं, अब आप अपना सुबीता कीजिए, अभी सबेरा है, नहीं हम पर पिट्टस पड़ेगी। और भाई, जब फ़रिश्तों के आने का डर है तो कोई तुमकों क्योंकर अपने घर में रहने दे १ कहीं एक जरा सी चिनगारी रख दें, तो कदह्िए मकान जल कर खाक-सियाइ दो गया कि नहीं, फिर कैसी होगी ! अच्छे मिज़ॉ--अबे, तो फ़रिश्ते कहीं गाँव जलाया करते हैं। वह ऊटपराँग बातें बकता है। लो साहब, हमारे रहने में जोखिम है, जो आठों पहर डथोद्दी पर बने रहते हे | अच्छा अढंगा दिया । झम्मन -अडंगा-वड़ंगा में नहीं जानता, अब आप खसकंत की ठददराइए, बहुत दिन मीठे दुकड़े उड़ाये, चुगलियाँ खा-खा कर रईस का मिजाज बिगाड़ रिया, किसी से ज़रा सी खता हुई और आपने जड़ दी। "भुस में चिनगी डारझू जमालो अलग खड़ी ।" पचासों मलेमानसों की रोटी छी । इनसान से गलती हो द्टी जाती है, यह चुग़ली खाना

क्या माने | ओ ग़फ़्ूर मिर्जा ने तुम्हें भी तो उखाड़ना चाहा था ! ग़फ़्र--अरे, यद्द तो अपने बाप की जड़ खोदनेवाले आदमी हैं, मीतर से बाहर तक कोई तो इनसे खूश नहीं । दुन्नी-मिर्जा, अगर कुछ हया है तो इस मुसाहबी पर लात मारो; जिस अछाइ ने मुँह चीरा है वह रोज़ी भी देगा । मुबारकक़दम--राफ़ुर । गफ़्र ! छोटी बेगन साइबा को हुक्म है कि इस मुए अफ़ी-मची को शहर से निकाल दो कद्दती हैं, जब्र तक यह न टलेगा द्वाहने द्वाय का खाना हराम है | अच्छे मिजो--शदर से निकाल दो | तमाम शहर पर बेगम साहन का क्या इजारा है ! वह अभी कल आयीं, यहाँ .स घर में उम्र बीत गयी । क्रमाली--अबे ओ नमकदराम, छोटा मुँह बड़ी बात ! बेगम साहबा के कद्दने को दुल्खता है । इतनी पड़ेंगी वेभाव की- कि याद करोगे, चाँद गंजी कर दी जायगी । अच्छे मिर्ज़ा--अब जो यहाँ पानी पिये उस पर लानत !

यह कह कर मिजों ने अफ्रीम की डिविया उठायी और चले। मुसाइब्रों ने उनके जलाने के लिए कहना शुरू किया-मिर्जा जी, कभी-कभी आ जाया कीजिएगा। एक बोला--लाइए डितिया, में पहुँचा दूँ । दूसरा ब्रोछा--कहिए तो घोड़ा कसवा दूँ। मिर्जा ने किसी को कुछ जवाब न दिया, चुपके से चले ही गये ।

इधर पहली तारीख, आयी तो मियाँ कमाडी बकराये कि अब मैं झठा बना, और साख गयी । लोगों ने नवाव को चंग पर चढ़ाया कि हुजुर, जो हम कह वह कीजिए, तो आज की बला टल जाय | नवात्र ने मुराहत्रों को सारा अख्तियार दे दिया । फिर क्या था, एक तरफ ब्राह्मग देयता जैठे मंत्रों का जय कर रहे हैं, हवन हो रहा है, और स्ाह्या-प्वाह्य की आवाज़ आ रही है, दूसरी तरफ द्वाफ़िज़ जी कुरान पढ़ रहे हैं, और दीवानखाने में महफ़िल जमी हुई है कि फ़रिश्तों को झँझोटी को घुत सुना कर खुश कर लिया जाय ।

झध्मन--मिज्ों जी न सिधारते तो खूदा जाने इस वक्त कया कुछ हो गया होता।

नवाब-- होता क्या, कोटी की कोटी मक से उड़ जाती। अब किसी अफ्रीमनी को आने तर न दूँगा ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३

नवाब साहब के दरबार में दिनोंदिन आज़ाद का सम्मान बढ़ने ऊगा | यहाँ तक कि वह अक़्सर खाना भी नवाब के साथ ही खाते। नौकरों को ताफीद कर दी गयी कि आजाद का जो हुक्म हो, वह फोरन बचा छायें, ज़रा भी मीनमेसख थे कर । ज्यों-ज्यों आज़ाद के गुण नवात्र पर खुलते जाते थे, और मुसाहत्रों की क्रिरकिरी होती जाती थी। अभी लोगों ने अच्छे मिर्जा को दरबार से निकलवाया था, अब भाज़ाद के पीछे पड़े । यह सिफ़ पहलवानी ही जानते हैं, गदके और बविनवट के दो-चार हाथ तुछ सीख डिये हैं, बस, उसी पर अकड़ते फिरते हैँ कि जा कुछ हूँ, बस, में द्वी हैँ | पटे-छिले वाजित्री ही वाजिबी हैं, शायरी इन्हें नहीं आती, मज़हब्री मुआमिलो में विरूकुल कोरे हैं।

एक रिन नवात्र साहब के सामने एक साहब बोल उठे--६भर, इस शहर में एक आलिम आया है, जो मंतिक (न्याय) के जोर से झूठ को सच कर दिखाता है। मगर खदा को नहीं मानता, पक्का मुनकिर (नास्तिक) है। मियाँ आजाद को तो मंत्की बनने का दावा है । कहिए, उस आलिम को नीचा दिखायें |

आज्ञाइ--हाँ ! हाँ, जब्र कहिए तब, मुझे तो ऐसे मुनक्रिय फी तल्शा रती है। लाइए मंतकी साहब को, खदा का वह पक्का सबूत दूँ कि वह चर फड्क जायँ, जरा यहाँ तक लाइए तो सही, भागे राह न पिले। जो फिर इस शहर में मुँह दिखायें, तो-आदमी न कहना ।

नवाब हाँ ! हाँ! मीर साहब, ज़रा उनको फाँस-फूँस कर छाइए, तो मियां आजाद के जोहर तो खुले ।

मीर साहब ने जोर से हुबके के दो-चार दम लगाये और झप से उत्त आलम को बुला छाये | हज़ारों आदमी बहस सुनने के लिए जमा हा गये, गं।॥ा बटेरा की पाली है । इतनी भीड़ थी कि थाली उछालिए तो घिर ही सिर जाय। आऊिम ने आते ही पूछा कि कोन साहब बहस वरेंगे ! मियों आज़ाद ब्ोले--हम हैं| डाब रात लोग बेक्-गर हो रहे हैं कि देखें, क्या सवाल-जवाब होते हैं, चारों तरफ़ खिचड़ी पक्र रटों है।

आलिम--जनात्र, आप तो किसी अखाड़े के पढ़े गालग होते हैं, (रव से ते ऐसा मालूम होता दै कि आपको भमंतिक छू भी नहीं गयी |

आजाद--जी, यूरत पर न जाइएगा, कोई सवाल कीजिए, तो हृत जयात्र द ।

आलिम--अच्छा, पहले इन तीन सवालों का जवाब दीजिए--

(£) ग्वदा है, तो हमें नज़र क्यों नहीं आता !

(९) शतान दोज़ख में जलाया जायगा। भला नारी (आग से बने हुए.) के आगब का क्या डर ! आग आग में नहीं जढ सकती ।

(हे) जो करता है, खदा फरता है, फिर इन्सान का कूसूर तप! ' चारों तरफ सन्नाटा पड़ गया कि वाह, क्या आलिम है, केसे कड़े सवार किये है कि कुछ जवाब ही नहीं सृझता। त्रिगड़े दिल लोग दाँत पीस रहे हैं कि बाहर निकले तो गरदन भी नापें। मियाँ आज़ाद कुछ देर तक तो चुपचाप खड़े रहे, फिर एक ढेला

उठा कर उस आलिम की खोपड़ी पर मारा, बेचारा हाय कर के बैठ गया । अच्छे जंगली से पाला पड़ा, मैं बहस करने आया था या छूप्पा-इग्गी। जब्च कुछ जवात्र न सुझा तो पत्थर मारने छगे | जो मैं भी एक पत्थर खींच मार्रू तो कैसी हो ! नवाद साइबर, आप ही इन्साफ कीनिए।

नवाब-भाई आज़ाद, हर्मे यह तुम्हारी हरकत पसंद नहीं आयी । इस ढेलेब्राजी के क्या माने ! माना कि मुनकिर गरदन मारने लायक होता है; मगर बहस करके कायछ कीजिए, यह नहीं कि जूता खींच मारा या ढेला ताग कर मारा ।

कमाली--हुजुर, आलिम का जवाब देना कारेदारर है। ढेलेबाजी करना दूसरी बात है ।

झम्मन--अजी, इसने बड़े-बड़े आलिमों को सर कर टिया, भव्य आज्ञाद क्या इसके मैंह आयैंगे।

नवाब--यह पत्थर क्यों फंका जी, बोलते क्यों नहीं!

आज्ञाद-हुजूर, मैंने तो इनके तीनों सवालों का वह जवाब दिया कि अगर कोई कदरदों होता तो गले से लगा लेता और करोड़ों रुपये इनाम भी देता, सुनिए--

(१) सदा है, सो हमें नजर क्यों नहीं आता १

जनाब--अगर उस ढेले से उनको चोट लगी, तो चोट नज़र क्यों नहीं आती !

सुभान अल्लाह का दोंगड़ बरस गया। वाह उ्ताद ! क्या जवाब्र रिया है कि दाँत खट्दे कर दिये ।

(२) शैतान को जहन्नुम में जलाना जेफार है, वह ते खाद नारी (अग्नि मय) है। क

जवाब-- इनसे पूछिए फझि यह मिट्टी के ही पुतहे हैं या नहीं! इनकी खोप३: दी की बनी है या रबड़ की ! फिर मिद्टी का डेला लगा, तो सिर क्यों भन्ना गया

तमाशाइयों ने गुल मचाया --सुमान अह्ह्यह! वाह मियोँ आज्ञाद ! क्या: पोड़ जवाब दिया है ।

(३) जो करता है णदा करता है।

जवाब--फिर ढेले मारने का इलज़ाम हम पर क्यों है !

यारों तरफ टोषियाँ उछडने लगीं -वाह मेरे शेर ! क्या कहना है ! कहिए, अभाव तो आप खदा के कायल हुए. या अब भी कुछ मीनमेख है १ लाख बातों को एक बाए यह है कि जब आपका पिर मिट्टी का है और भिट्टी ही का ढेला मारा, तब्र ॥ .'ी खोपड़ी क्यों भन्नायी १ मियाँ मुनकिर बहुत झेंपे, समझ गये कि यहाँ शोहदों का जमघ८ 3, चुप: से अपने घर की राह ली। आज्ञाद की और भी धाक बैंधी । अब तंत्र गे पद्दल॥ और फिकेत द्वी मशहूर ये, अब थआाल्मि भी मशहूर हुए । नवात्र ने पीठ ठोंकी -वाह, क्यों न हो ! पहले तो मैं झलया कि ढेलेबाज़ी कैसी; मगर फिर तो फड़क गया ।

मुसाहबों का यह वार भी जाली गया, ठो फिर हँड़िया पकने लगी कि आज़ाद को उखाड़ने की कोई दूसरी तदबीर करनी चाहिए. । अगर यह यहाँ जम गया, तो हम सभी को निकलवा कर छोड़ेगा । यद्द राय हुई कि नवाब साहन से कद्दा जाय, हुजूर, आज़ाद को हुक्म दें कि बटेरों को मुठियायें, बटरों को छड़ाये। फिर देखें, बचा क्या करते हैं | बगर्लें न झोंकने लगें तो सही। यह हुनर ही दुसरा है।

आपस में यह सल्यह कर एक दिन मियाँ कमाली बो७--६जर, अगर मियां आज्ञाद बटेर लड़ायें, तो सारे

शहर में हुज्र की धूम हो जाय ।

नवाब-- क्यों मियाँ आज़ाद, कभी बटेर भी लछड़ाये हैं १

झम्मन--आज हमारी सरकार में जितने बटेर हैं, उतने तो मणियाबुर्ज के चिड़िया: खाने में भी न द्ोंगे । एक-एक बटर हज़ार-हज़ार को खरीद का, नोकदम के बनाने में तोड़े-के-तोड़े उड़ गये, सेरों मोती तो पीस कर मेने अपने ह्वाथों खिला दिये हैं, कुछ दिनों रोज़ खरल चलता था । गगर आप भी कहेंगे कि हम आउमी हैं ! इस ड्योदी एर इतने दिनों से हो, अब तक बरेरसवाना भी न देखा ? लो आओ, चलो, तुमको सेर कराये ।

यह कद्द कर आज़ाद को ब:रखाने ले गये | मियाँ आज़ाद क्या देखते हैं कि चारों तरफ काबुकें ही काबुऊ नज़र काती हैं, और काबुर्के मी कैसी, हाथीदाँत की तीलियाँ, उन पर गंगाजमुनी कलछस, कारचोत्री छतें, कामदार मल्रमलछी गिल्यफ़े, रंगांग्ररंग सोने-चाँदी को नन्हीं-नन््हीं कटोरियाँ, जिनमे बटेर अपनी प्यारी-प्वारी चोंचों से पानी पियें, पाँच-पाँच छह-छह सौ लाश: को काबुक थीं, रूँटियाँ भी रंगबिरंगी। ढुन्नी मियाँ एक-एक काडुक उतार कर बटर की तार्यफ़ करने लगे, तो पुल श'ंघ दिये। एक बटर को दिखा कर कदह्ा--अल्लाह रखें, क्या मझोला जानवर है ! सफ़्शकन (दलसंहार) जो आपने सुना हो, तो यही है। लंदन तक खबर के काराज़ में इनका नाम छप गया । मेरी जान की कसम, जरा इसकी आनबान दो देखिएगा । द्वाथ, क्या बाँका बटर है ' यह नवात्र साइब के दादाजान के वक्त का है | ऐसे रईस पेदा कहां होत हैं ! दम के दम में लाखों फूँछ दिये, रपये को ठीकरा समझ ढिया। पतंग्बाड़ी का शोक हुआ, तो शहर भर के पतंगब्नाज़ों को निह्याल कर दिया, कनकं4वाले तन गये | अजी, और तो और, लौंडे, जो गली-कूचों में लंगर और ढग्गे ले छेकर डोर लूटा करते हैँ, रोज डोर बेच-बेच कर चलौतियाँ करते थे। अफ़ीम का शौक हुआ, तो इतनी खरीदी कवि टके सेर से सोलह रुपये सेर तक बिकने लगी | मालवा खाली, चीन खुक्खल, बंश्रई तक के गन्ने आते थे ।

आजाद--ऐसे ही कितने रईस बिगड़ गये !

कमाली- >२ईसों के बनने-जिगड़ने की क्या फ़ेक्र | यहाँ तो जो शौक, किया, ऐसा ही किया; कि. मरा बटरबारी में उनके सामने वैन ठहरता । उनके वक्त का अब यह एक सफ़शिकन बाक़ी रह गया है। बुजञगों की निशानी है | बस, यह समझिए कि मुहम्मद-अली श्ञाह के वक़्त में खरीदा गया था । अब काई सौ वष का होगा, दो कम या दो ऊपर, मगर बुढ़ापे में भी वह दमखम है कि मुग को लपक कर लात दे तो वह भी चें बोल जाय । पारसाल की दिलछगी सुनिए, नवाब साहब हे मामूँ तशरीफ़ छाये। उनमें भी रियासत की बू है | कनकौवा तो ऐसा छड़ते हैं कि मियां विलायत उनके आगे पानी भरें। दो-दो तोले अफ़ीम पी जायँ और वही ख़मदम ! बटेरवाज़ी का भी परले सिरे का शोक है । उनका ज़फ़रपैकर तो बला का बटेर है, बटेर क्या है, शेर है। मेरे मुँह से निकफछ गया कि हुजूर को तो बटेरों का बहुत शौक़ है, करोड़ों ही बटेर देख डाले होंगे, मगर सफ़-शिकन सा बटेर तो हुजूर ने भी न देखा होगा | बोले, इनकी हक़रीक़त क्या है, जफ़र-पैकर को देखो तो आँखें खुल जायें, बढ़कर एक छात दे, तो सफ़शिकन क्या, आपको नोकदम पाली बाहर कर दे । दहोसला हो, तो मैँगवा ऊँ ।

दूसरे दिन पाली हुई। हज़ारों आदमी आ पहुँचे | शहर भर में धूम थी कि आज बड़े मार्के का जोड़ है। जफ़रपैकर इस ठाट से आया कि जमीन द्विल गयी, और मेरा तो कलेजा एहरूने लगा मगर शफ़शिकन ने उस दिन आबरू रख ली, जभी तो नवाब साहब इसको बच्चों से भी उयादा प्यार करते हैं। पहले इसको दाना खिलवा लेते हूं फिर कहीं आप खाते हैं। एक दिन खदा जाने; भिल्ठी देखी या क्या हुआ कि अपने आप फड़कने छगा। नवात्र समझे कि बूँदा हो गया, फिर तो ऐसे धारोधार रोये कि घर भर में कुहराम मच गया। मैंने नवात्र साहब को कभी रोते नहीं देखा | मुहरम की मनलिसों में एक आँसू नहीं निकलता । जत्र बड़े नवाच्र साइब सिंधारे तो आँसू की एक बूँद न गिरी | यह बटेर ही ऐसा अनमोल है। सच तो यह है कि उसने उस दिन नवाब की सात पीढ़ियों पर एहसान किया। वल्ञह, जो कहीं प्र जाता, तो मैं तो जंगल की राह लेता । मिर्यों, जग में आवरू ही आबरू तो है, और त्या | खैर साहब, जेसे ही दोनों चक्की खा चुके, जफ़रपेकर त्रिजली की तरह सफ़शिकन को तरफ़ चड्म | आते ही दब्नोच बैठा, चोटी को चोंच से पकड़ कर ऐसा झपेदा कि दूसरा होता तो एक रगड़े में फुर से भाग निकलता | नवात्र का चेहरा 95 हो गया, भुँह पर हदाइयाँ पूटने लगीं कि इतने में सफ़्शिकन लौट ही तो पड़ा । वाह मेरे शेर ! खूघ फिरा |! पाली भर में आवाज मूँजने लगी कि वह मारा है! एक लात ऐसी जमायी कि जफ़रपैकर ने मैंह फेर लिया । मुँह का फेरना था कि सफ़शिकन ने उचकऋ कर एक झँझोटी बतलायी। वाह पढ़े, और लगा ! आजिर ज़फ़रपैकर नोऋदम पाली बाहर -॥गा। चारों तरफ टोगियाँ रछलछ गयीं ! आज यह चटे/ अपना सानी नहीं रखता ! मिर्यों आज़ाद, अब आप बटेरखाना अपने हाथ में ढीआए |?

नवात--वल्ाह, यद्दी में भी कदनेवाला था ।

झभ्मन--काम जरा मुश्हिल है | दुन्नी--बटेरों का लड़ाना दिललगी नहीं, बड़े तजरबे की जरूरत है।

आज़ाद--हुजर फ़रमाते हैं, तो बटेरखाने की निगरानी में ही करूँगा |

कहने को तो आज़ाद ने यह कह दिया; मगर न कभी बटेर छड़ाये ये, न जानते थे कि इनको कैसे लड़ाया जाता है। घबराये, अब्र कहीं नवात्र के बटेर ह्वारे तो सारी बला मेरे सिर पर पड़ेगी। कुछ ऐसी तदबीर करनी चाहिए. कि यह बला टल जाय । जभ शाम हुई तो वह सबकी नज़रें बचा कर बटेरखाने में गये और काबुकों की खिड़कियों खोल दीं बटेर सत्र फुर से भाग गये। पिंजरे खाली द्वो गये | कई पुस्तों की बसायी हुई बस्ती उजड़ गयी । बठरों को उडा कर आज़ाद ने घर की राह ली ।

दूसरे दिन मियाँ आज्ञाद सबेरे मुँह अँपेरे बाजार में मटरगश्त करते हुए नवात्र साइत्र की तरफ़ चले | बाज़ार भर में सन्नाटा) इलवाई भट्ठी में सो रहा है, नानबाई बरतन धो रहा है, बज़ाज़ा बंद, कुँजड़ों की दुकान पर अरुई न शकरकंद, जौहरियों की दुकान में ताला पड़ा हुआ है । मगर तंबाकूवाला जगा हुआ है। मेहतर सड़क पर झाड़ दे रद्दा है | मैदेवाला पिसनद्वारियों से आटा ले रद्दा है। इतने में देखते क्या हैं कि एक आदमी लुंगी बाँघे, हाथ में चिलम लिये, बौखलाया हुआ धूम रहा है कि कहीं से एक चिनगारी मिल जाय तो दम छगे, धुआँधार हुक्का उड़े | जहाँ जाते हैं, 'फिर-भाग” की आवाज़ आती है। भाई, ऐसा शहर नहीं देखा जहाँ आग माँगे न मिले, जानों इसमें छप्पन टके खर्च ह्वोते हैं ! मुहल्लेवालों को गालियाँ देते हुए नानबाई की दुकान पर पहुँचे और बोले--बड़े भाई, एक जरी आग तो झप से दे देना, मेरा यार, ला

तो झटठपट |

नानबाई--अच्छा, अच्छा, तो दूकान से अलग रहो, छाती पर क्यों चढ़े बैठते हो ! यहाँ सौ धंधे करने हैं, आपकी तरह कोई बेफ़िकर तो हूँ नहीं कि तड़का हुआ, चिलम ली, और लगे कौड़ी दुकान माँगने ! मिल गयी तो खेर, नहीं तो गालियाँ देनी शुरू की । सबेरे-सबेरे अल्लाइ का नाम न रामराम | चिलम लिये दुकान पर डट गये । बाह, अच्छी दिल्लगी है ! ऐसी ही तलब है तो एक कंडी क्यों नहीं गाड़ रखते कि रात मर आग दी आग रदे। ऐसे ही उचस्के तो चोरी करते हैं। आँख चूकी, और मार गायब ! क्या सहल छटका है कि चिलम के कर आग माँगने आये हैँ । किसी दिन मैं चिलमविलम न तोइताड़ कर फेक दूँ | तुम तड़फे-तड़के दुकान पर न आयो करो जी, नहीं ता किसी दिन ठायैं-ठार्य हो जायेगी |

हजरत की आँखों से खून ?पकने छगा, दाँत पीस कर रद गये । यहाँ से चले, तो इलवाई की दुकान पर पहुँचे और बोले--मियाँ एक जरा सी आग देना, भाई हो न ! हलवाई का दूध बिल्ली पी गयी थी, झल्लाया बैठा था, समझा कि कोई फ़क़ीर भीख माँगने आया है। झिड़क कर बोला कि और दुकान देखो । सबेरे-सबेरे कौड़ी की पड़ गयी। जाता है, कि दूँ धक्का ! रहे कहीं, मरे कहीं, कौड़ी माँगने यहाँ मौजूद । “दुनिया भर के मुर्दे नानामऊ घाट !? अब खड़ा घुरता क्या हे !

चिल्मबाज-- कुछ वाही हुआ है बे | अबे, हम कोई फ़क़ीर हैं, कहीं मैं आ कर एक पस्सा दूँ न! लो साहब | हम तो आग माँगने आये हैं, यह हमको मिखमंगा बनाता है ' अंधा है क्या !

हलवाई--भिखमंगा नहीं, तू है कौन ! लँगोटी बाँध ली और चले आग माँगने ! तुम्हारे बाबा का कर्ज खाया है क्या !

बेचारे यहाँ से भी निराश हुए, चुपके से कान दबाये चल खड़े हुए। आज तड़के-तड़के किसका मैँद देखा था कि जहाँ जाते हैं, झौड़ हो जाती है | इतने में देखा कि एक सुनार की दुकान पर आग दहफ रही है। उधर लपके। सुनार दुकान पर न था। यह तो हुक़के की फ़िक्र में चौंधियाये हुए थे दी, झप से दुकान पर चढ़ गये। घुनार भी उसी वक़्त आ गया और इनको देख कर आगमभभूका हो गया। तू कौन है बे ! वाह, खाली दुकान पर क्या मज़े से चद आये ! (एक धप जमा कर) और जो कोई अदद जाता रहता ! 'इतने में दस-पाँच आदमी जमा दो गये । क्या है मिर्यों, क्या है ! क्यों भले आदमी की आबरू विगाड़े देते हो !

सुनार--है क्या ! यह हमारी दुकान पर चोरी करने आये थे ।

चिलप्बाज--मैं चोर हूँ, चोर की ऐसी ही सूरत द्ोती है !

एक आदमी--कोन | तुम | तुम तो हमें पक्के चोर मादूम होते हो | अच्छा, तुम फिर उनकी दूकान पर गये क्यों १ दुकानदार नहीं था, तो वहाँ तुम्हारा क्या काम ! जो कोई गइहना ले भागते, तो यह तुम्हें कहाँ ढूँढ़ते फिरते !

सुना२र -साहब, इनका फिर पता कहाँ मिलता, जाते जमुना उस पार। चलो थाने पर |

लोगों ने सुनार को समझाया, भाई, अब जाने दो। देखो जी, खबरदार, अब किसी को दुकान पर न चदना, नहीं पथे जाओगे । सुनार ने छोड़ रिया। जब्र आप चलने लगे, तो उसे इन पर तरस आ गया । बोला, अच्छा आग लेते जाओ। इज़रत ने आग पायी और घर की राह ली। तड़के-तड़के अच्छी बोहनी हुई, चोर

बने, मार खायी, झिड़ के गये, थाने जाते-जाते बचे, तब कहों आग मिली ।

मियाँ आजाद यह दिल्लगी देख कर आगे बंदे और नवाब की ड्योदी पर आये ।

नवाब--आज इतना दिन चढ़ गया, कहाँ ये !

आज़ाद--हुजूर, आज बड़ी द्ल्लिगी देखने में आयी, हँसते-हँसते लोट जाइएगा। तलब भी क्या बुरी चीज है।

यह कह कर आज़ाद ने सारी दास््तान छुनायी ।

नवाब--खूत्र दिल्लगी हुई । आग के बदले चपतें पड़ीं। भरे म्ियाँ, जरा खोजी को बुलाना । हाँ, जरा खोजी के सामने सुनानों | क्रिसी दिन थह्द भी न पिटे |

खोजी नवाब के दरबार के मसखरे थे। ठेंगना कद, काले कोए का सा रंग, बदन पर मांध्त नहीं, पर आँखों में सुरमा छगाये हुए । लढ़कते हुए आये और बोले-- गुलाम को हुमूर ने याद किया हे !

नवाब - हाँ, इस वक़्त किस फ़िक्र में थे १

खोजी--खदाबंद, अफ़ीम घोल रहद्दा था, और कोई फ़िक्र तो हुजूर की बदौलत क़रीब नहीं फटकने पाती | मैं फ़िक्र क्या जानूँ, 'जोरू न जाता, अल्लाह मियाँ से नाता |?

नवाब--अच्छा खोजी, इस द्दौज़ में नहाओ तो एक अशफ़ीं देता हूँ ।

खोज्ी-- हुजू', अशफ़ियाँ तो आपको जूतियों के सदके से बहुत सी मिल जायेंगी, मगर फिर जीना कठिन द्वो जायगा । न मरे सही, लेकिन 'नकटा जिया बुरे हवाल !? न साहब, मुझे तो कोई एक गोते पर एक अशफ़ी दे, ती भी पानी में न पेहूँ, पानी की सूरत देखे बन काँप उठता है ।

दुक्षी - कैसे मर्द हो कि नहाने से डरते हो !

खोजी- हम नहीं नहाते तो आप कोई क़ाज़ी हैं !

आजाइ--अजी, सरकार का हुक्म है।

खोजी-- चलिए, आपकी बला से । कहने छगे सरकार का हुक्म है | 5.२ कोई अपनी जान दे ।

आज्ञार--हुजूर, जो इस वक़्त यह होज़ में धम से न कूद पड़ें, तो अफ़ीम इन्हें न मिले ।

खोजी-- आप कोन बीच में बोलनेवाले होते हैं? अरमठ बरस से तो मैं अफीम खाता आया हूँ, अब आपके कहने से छोड़ हूँ, तो कद्दिए, मरा या जिया !

नवाब--अच्छा भाई, जाने दो । दूध खाओगे !

खोजी- वाह ख़दावंद, नेकी और पूछ-पूछ। लेकिन जरी प्रिठास खूब हो | शाहजहाँपुर की सफ़ेद शक्कर या काडपी को मिश्री घोलिएगा। अगर थे।ड़ा सा केवडा भी गबड़ दीजिए तो पीते ही आँखें खुल जायें ।

इतने में एक चोबदार घबराया हुआ आया और बोला--खदावंद, ग़ज़ब हो गया। जोंब्रख्शी हो तो अजे करूँ, सब बटर उड़ गये |

नवाब -अरे ! सब उड़ गये !

चोबदार-- क्या कहूँ, हुज्र, एक का भी पता नहीं ।

मुसाहबों ने दाय-हाय करनी शुरू की, कोई सिर पीयने लगा, कोई छाती कूटने लगा । नवाब ने रोते हुए कहा, भाई ओर जो गये सो गये, मेरे सफ़शिकन को जो कोई ढूँढ़ छाये, हज़ार, रुपपे नक़द दूँ। इस वक़्त मैं जीत जी मर मिद्य । अभी सॉड्नी-सबारों को हुब्म दो कि पचकोसी दौरा करें । जहाँ सफ़शिकन मिले, समझा-बुझा कर ले ही आयें |

झम्मन -- उनको समझाना, हजूर, मुशकिल है | वह तो अरबी में बातें करते हैं। सारा कुरान उन्हें याद है| उनसे कौन बहस करेगा !

नवाब--- मुझे तो उससे इश्क हो गया था जी, वह नोकीली चोंच, वह अकड़-अकड़ कर काकुन चुनना ! सैकड़ों पालियाँ लड़ी, मगर कोरा आया । किस बाँकपन से झपट कर लात देता था कि पाडी भर थर्रा उठती थी। उसकी विसात ही क्या थी, मझोला जानवर, लेकिन मंदान का शेर | यद्द तो में पहले ही से जानता था कि यह बटर की सूरत में किसी फ़क्कीर की रूह है। अब सुना कि नमाज़ भी पढ़ता था।

झम्मन--हुजूर को याद होगा कि रमजान के महीने में उसने दिन के वक़्त दाना तक न छुआ; हुज़र समझे थे कि बूँदा हो गया, मगर में ताड़ गया कि रोज़े से है।

खोजी--खुदावंद, अब में हुजुर से कहता हूँ कि दस-पाँच दफा मैंने अफ़ीम भी पिला दी; मगर वल्लाह, जो ज़रा भी नशा हुआ हो ।

कमाली--हुजूर, यक्रोन जानिए, पिछले पहर से सुत्रह तक कादुक से हक-इक् की आवाज आया करती थी। ग़फ़्र, तुमको भी तो हमने कई बार जगा कर सुनाया था कि सफ़्शकिन खूदा को याद कर रहे हैं ।

नवाब--अफ़सोस, हमने उसे पहचाना ही नहीं । टिल छब्या जाता है, कोई पंखा झलना ।

मुसाहन -- जद्दी पंखा लाओ।

नवाब--

प्रीतम जो में जानती कि प्रीत किये दुख होय; गगर दिंढारा पीटती कि प्रं'त करे जनि कोय ।

खोजी--(पीनक से चौंक कर) हाँ उस्ताद, छेड़े जा । इस वक्त तो मिर्यों शोरी की रूह फड़क गयी होगी ।

नवाब-चुर, नामाकूल । कोई है १ इसको यहाँ से टहलाओ। यह रइसों की सोहबत के काबिल नहीं । झझको भी कोई गवेया समझा है। यहाँ तो जी जलता है, इनके नजदीरू कीवाली हो रही ह ं !

खोजी-- खूदा बंद, गुलाम तो इस दम अपने आपे में नहीं। हाय, सफ़शिकन की काब्ुक खाली हा। और में अपने आपे में रहूँ ! हुजूर ने इस वक़्त मुझ पर बड़ा जुल्म क्रिया ।

नवाब--शात्राश खोजी, श्जात्राश | भुआफ़ करना, में कुछ और दी समझा था । क्यों जी, साँडनी-सवार दौड़ाया गया कि नहीं १

सवार--हुजूर, जाता तो हूँ, मगर वह मेरी क्या सुनेंगे, कोई मौलवी भी तो साथ भज्िए, मैं तो कुछ ऊँट ही चदना जानता हूँ , उनसे दलील कौन करेगा भला !

आजाद-- किसी अच्छे मौलवी को युलवाना चाहिए ।

मुसाहिब्ों ने एक मोलाना साहब को तजवीजा। मगर यारों ने उनसे कुल दास्तान नहीं बयान की | लल्ोबदार ने मकान पर जा कर सिफ़ इतना कहा कि नवात्र साहब ने आपको याद किया है। मौलवी साहब उसके साथ दो लिये और दरबार में आ कर नवाब साहब को सलाम किया |

नवाब--आपको इसलिए तकलीफ़ दी कि मेरी आँखों का नूर, मेरे कलेजे क। ठुकड़ा नाराज़ हो कर चला गया है। बड़ा आलिम् और दीनदार है, बहस करने में कोई उससे पेश नहीं पाता, आप जाइए और उसक्मे माकूल करके ले आशये।

मौलाना--माँ-बाप का कड़ा इक होता है। वह कैसे नादान आदमी हैं !

खोजी--मौलाना साहब, वह आदमी नहीं हैं, बटेर हैं। मगर इल्म और अक़्ल में आदमियों के भी कान काटते हैं ।

कमाली--सफ़्शिकन का नाम तो मौछाना साहब, आपने सुना होगा । बह तो दूर-दूर तक मशहूर थे। जनात्र, बात यह है कि सरकार का बटेर सफ़शिकन कछ काबुक से उड़ गया। अब यह तजबीज हुई है कि एक-एक साँडनी-सवार जाय और उसे संमजझा-बुझा कर ले आये। मगर जऊँट्वान तो फिर ऊँटवान, वह दलील करना क्या जाने, इसलिए आप बुलाये गये हैं कि साड़नी पर सवार हों, और उनको किसी तदबीर से ले आयें ।

मौलाना--ठीक, आप सब्र के सब नशो में तो नहीं हैं ! होश की बातें करो | खुद मसखरे बनते हो। बटेर भी आलिम होता है, वह भी कोई मौलवी है, ला होल ! अच्छे-अच्छे गाउदी जमा हैं। बंदा जाता है।

नवाब--यह किस कोदमग़न को लाये ये जी ! खासा जाँगलू है ।

आज़ाद-अच्छा, हुजुर भी क्या याद करेंगे कि इतने बड़े दरबार में एक भी मंतकी न निकला । अन्न गुलाम ने बीड़ा उठा लिया कि जाऊँगा और सफ़शिकन को लाऊंगा। मुझे एक साडनी दीजिए, में उसे खर ही चला दूँगा। खर्चे के लिए कुछ रुपये भी दिलवाइये, न जाने कितने दिन लग जायें ।

नवाब- अच्छा, आप घर जाइये और लेप हो कर आइए ।

मियाँ आज़ाद घर गये तो ओर मुसाहित्रों में खिचड़ी पकने लगी--यार, यह तो गजी जीत ले गया। कहीं से एकआध बटेर पकड़ कर लायेगा और कहेग।, यह। सफ़शिकन है | फिर तो दम सत्र पर शेर हो जायग[.। दमको-आपको कोई न पूछेगा । स्तोजी जा कर नवात्र साहब से बोले -हुजूर, अभी मिर्यों आजाद दो दिन से इस दरबार में आये हैं, उनका एतभार क्या ! जो सॉड़नी ही लेकर रफ़्चकर हों, तो फिर कोई कहाँ उनका पता लगाता फिरेगा १

कमाली--हाँ खुदावंद, कहते तो सच हैं ।

झम्मन--खोजी सूरत ही से अदमक माठ्म होते हैं, मगर बात ठिकाने को कहते हैं। ऐसे आदमी का ठिकाना क्या !

दुल्नी-इम तो हुजूर को सलाह न देंगे कि मिर्यों आज़ाद को सॉड़नों और सफ़र-खर्च दीजिए । जाखिप की बात है।

नवाब--चलो, बस, बहुत न बकों । तुम खद जैसे हो, बेसा ही दूसरों को समझते हो | आजाद की यूरत

कददे देती दे कि कोई शरीफ़ आदमी है, और मान लिया कि साँड़नी “जाती ही रहे, तो मेरा क्या बिगड़ जायगा ! सफ़शिकन पर से लाखों सदके हैं। सॉडनी की हकीकत ही क्या |

इतने में मियाँ आजाद घर से तैयार होकर आ गये । अशर्फियों की एक येली खर्च के लिए मिली । नवाब ने गले लगा कर रुखसत किया । मुसाहब भी सलाम बजा लाये | आज़ाद साँडनी पर बैठे और साँड़नी हवा हो गयी ।

HINDI TEXT

प्रसंग ४

आज़ाद यह तो जानते ही ये कि नवाब के मुसाहब्रों में से कोई चौक के बाहर जानेवाला नहीं इसलिए उन्होंने साँडनी तो एक सराय में बाँध दी और आप अपने घर आये | रुपये हाथ में थे ही, सबेरे घर से उठ खड़े होते, कभी सॉड़नी पर, कमी पैदल, शहदर और शहर के आस-पास के दिस्सों में चक्कर लगाते, शाम को फिर साँड़नी सराय में बाँध देते और घर चले आते । एक रोज़ सुबह के वक्त घर से निकले तो क्या देखते हैं कि एक साहब केचुललेट का धानी रैंगा हुआ कुरता, उस पर रुपये राज़वाली महीन शरबती का तीन कमरतोई का चुस्त अँगरखा, गुलबंदन का चूड़ीदार घुटन्ना पहने, माँग निकाले, इत्र लगाये, माशे भर की नन्ृद्दी सी टोपी आलभपीन से अब्काये, हाथों में मेंहदी, पोर-पोर छल्ले, आँखों में सुर्मा, छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, एक अजब लोच से कमर लचकाते, फुँक-फूँक कर कदम रखते चले आते थे ! दोनों ने एक दूसरे को खूब जोर से घूरा । छेले मियाँ ने मुसकिराते हुए आवाज़ दी--ऐ, जरी इधर तो देखो, हवा के घोड़े पर सवार हो ! मेरा कलेज्ञा अछियों उछलता है। भरी बरसात के दिन, कहीं फिसल न पड़ो, तो कहकद्दा उड़े ।

आजाद - आप अपना मतलब्न कहिए, मेरे फिसलने की फ़िक्र न कीजिए. |

ढैला--गिरिएगा, तो मुझसे जरूर पूछ लीजिएगा ।

आजाद--बहुत खूब, जरूर पूछूँगा, बिक आपको साथ ले कर, गिरूँ तो सही ।

ठैछा-खदा की कसम, आपके-काले कपड़ों से मैं समझा कि बनेंछा कुसुम के खेत से निक्रल पढ़ा ।

आज्ाद--और मैं आपको देख कर यह समझा कि कोई जनाना मदकता जात! हे।

उला--वलाह, आपकी धज ही निराली है। यह डबल कोट और लक्कड़तोड़ बूट | जाँगल् मालम होते हो | इस वक्त ऐसे बदहवास क हाँ बगढुट भागे जाते हो ! उच कहिएगा, आपको हमारी जान को कसम |

आजाद--आज प्रोफेसर लॉक संस्कृत पर एक लेक्चर देनेवाले हैं, बड़े मशहूर आलिम हैं | योरप में इनकी बड़ी शोहरत है।

छैछा- भाई, कसम खुदा की, कितने भोडे हो । प्रोफ़ेसर के मशहूर होने की एक ही कही । दम इतने बड़े हुए, कसम ले छो, जो आज तक नाम भी सुना द्वी । क्या दुन्नीखाँ से ज्यादा मशहूर हैं ? भाई, जो कहीं तुम्हारे घुँघरवाले बाल" एक दफ़ा भी उसकी - जबान से सुन लो, तो उम्र-भर न भूलो | वलाइ, क्या टीपदार आवाज है; मगर मुम ऐसे कोदमराजों को गठेत्राज़ी से क्या वास्ता, तुम तो प्रोफ़ेसर साहब के फेर में हो ।

आशाद--सुम्दारी जिंदगी राग और छै ही में गुजरेगी । इस नाच और रंग ने आपकी यह गति बनायी कि मूँछ और दाढ़ी कतरबायी, मेंहदों छगवायी और मर्द से औरत बन गये । अरे, अब तो मर्दे बनो, इन बातों से

बाज आओ।

छेला--जी, तो आपके प्रोफ़ेसर छॉक के पास चला जाऊँ ! अपने को आपकी तरह गड्डामी बनाऊँ। किसी गछी-कूचे में निक्रल जाऊँ तो ताढियाँ पड़ने लगें।

आजाइ--अन्न यह फ़रमाइए कि इस वक़्त आप कहाँ के इरादे से निकले हैं !

छेला--कल रात को तीन बजे तक एक रैंगीले दोस्त के यहाँ नाच देखता रहा। वह प्यारी-प्यारी सूरतें देखने में आयों कि वाह जी वाह | किस काफ़िर का उठने को जी चाहता हो । जल्सा बर्खास्त हुआ तो बस, कलेजे का दानां हाथों से थाम कर निकले; लकिन रात भर कानों में छम्राछम की आवाज आया का। पारया को प्यारी-प्यारी सुरत आँखों में फिश की। अन्न इत्त वक़्त फिर जाते हैं, ज़ग सेक आय, भेरती उड़ रही होगी--

'ससीले नेनों ने फंदा मारा ।!

आजाद--कल फ़रसत हो तो हमसे मिलेश्गा ।

छे॥--+%छ तक तो मरी नींद का खुमार हा रहेगा ।

आज़ाद--अच्छा, परसां सही ।

छला -परतों ! परसों ता खदा भा बुलाये तो बंदा न जाने का । परसों नवात्र साहव क यहां ब्ेरों की पाली है, महीनों से व८र तेयार द्वो रहे हैं ।

आज्ञाइ--अच्छा साहब, परसों न सही, मंगल को सही |

छणा--मंगल को तड़ क से बाने की कनकइयाँ लड़ेंगो, अमी बनारस से बाना मगाया दे, भाहं। जार की कनकइयोँ ऐसी सधी हैं कि हरदम काबू में, मोड़ो, गोता दो, स्ीचो, जो चाहे सो करो, जैसे खेत का घोड़ा ।

आजाद--अच्छा, बुद्ध को फुरसत है !

छेला--वाह-वाह, बुद्ध को तो बड़े ठाट से भटियारियों की लड़ाई होगी | देखिए, तो, कैसी-फेसी भठियारियाँ किस बाँकी अदा से हाथ चमका कर, उँगलियाँ मटका कर लड़ती हैं और कैसी-केसी गालियाँ सुनाती हैं कि कान के कीड़े मर जायेँ ।

आजाइ--बतिरस्पत की तो जरूर मिलिएगा !

छेला--जनात्र, आप तो पीछे पड़ गये, मिलें तो सब कुछ, जब्र फुरसत भी हो । यहाँ मरने तक की तो फुरसत नहीं, अब्र की नौचंदी जुमेरात है, बरसों से मन्नत मानी हैं, आपको दीनदुनिया की खबर तो है नहीं ।

आज़ाद--तो मादूम हुआ, आपसे मुलाक़त नहीं होगी। आज मुररो लड़ाइएगा, कल पतंग लड़ाइएगा, कद्दीं गाना होगा, कहीं नाच होगा, आप न हों तो रंग व्यों-कर जमे | मेला-ठेला तो आपसे कोई काहे को छूटूता होगा फिर भला मिलने की कहाँ फुरसत १ रुखबत ।

छेला - ऐ, तो अब रूठे क्यों जाते हैं !

आजाइ--अब मुझे जाने दीजिए, आपका और दमारा मेल जैसे गन्ना और मदार का साथ | जाइए, देखिए, भेरवी का छत्फ़े जाता है।

छेला--जनाब, अन्न नाच-गाने का छत्फ़ कहाँ, वह चमक-दमक अब कहाँ, दिल हो बुझ गया । जो ल्फ़ इमने देखे हैं, वह बादशाहों को ख्वाब में नसीब न हुए होंगे | यह केसरबराग़ा अदन को मात करता था। परियों के झुंड, इसीनों के जमघट रात को दिन का समाँ रहता था। अब यहाँ क्या रह गया ! गडी कूचों में कुत्ते छोटते हैं । एक वह ज़माना था कि साक़िनों के मिज़ाज न मिलते थे । बाँके-तिरछे रईसज़ादे एक-एक दम की दो-दो अशर्फ़ियाँ फेंक देते थे। अब तो शहर भर में इस सिरे से उस सिरे तक चिराग लेकर दूँदिए तो मेदान खाली है। कल नयी सड़क की तरफ़ जो निकला, तो नुक्कड़ पर एक द्वाथी बँधा देखा। पूछा, तो माठ्म हुआ कि बी हेदरजान का द्वाथी है। क़सम खदा की, ऐसा खश हुआ कि आँखों में आँसू आ गया |

खदा आबाद रकखे लखनऊ को फिर ग़नीमत है नज़र कोई न कोई अच्छी यूरत आ ह्वी जाती है ।

आजाद--अच्छा, यह सब्र जल्पे आपने देखे और अब भी आँखें सेका ही करते हैं; मगर सच कहिएगा, बने या बिगड़े, बसे या उजड़े, नेकनाम हुए या बद-नाम ! यहाँ तो नतीजा देखते हैं ।

छेला--जनाब यह तो बड़ा कड़ा सवाल है। सच तो यों दै कि उम्र भर इस नाचरंग ही के फंदे में फँसे रहे, दिनरात तब्ला, सारंगी, बायाँ, ठोड, सितार की

न में मस्त रहे । खदा की याद ताक़ पर, इल्म छप्पर पर, छटे हुए शोहदे बन बैठे

लेकिन अब्र तो पानी में ड्त्र गये, ऊपर एक अंगुल द्वो तो, और एक हाथ हो तो तराबर है। आप छोग इस भरोसे में हों कि हमें आदमी बनायें तो यह खेर-सलाह है। बूढ़े तोते भी कहीं राम-राम पदते हैं !

आजाद--लेर, शुक्र है कि आप अपने को त्रिगढ़ा हुआ सम्रश्नते तो हैं। कड्ए न हूजिए तो कहूँ कि इस जनाने भेस पर लानत भेजिए, यह लोच, यह ल्खक, यह मेंहदी, यह मिस्सी, कुछ औरतों ही को अच्छी माद्म होती है। ज़रा तो इस दाद्ी-मूँठ का खयाल करो |

टैला--यह भरें किसी ऐसे-वैसे को दीजिए, यहाँ बड़े-बड़ों की आँखें देखी हैं । आपके झाँसे में कोई अनारी आये, हम पर चकमा न चलने का ।

आज़ाद--आपको डोम-डारियों ही की सोहच्त पसंद आयी या किसी और की + १ छखनऊ में तो दर फ़न के आदमी मौजूद हैं ।

छेला--हम पो हमेशा ऐसी ही टुकड़ी में रहे। घरफूँक तमाशा देखा। हुँगोटी में फाग खेला। म्रियाँ शोरी के टप्पे, क्र मियों की ठुमरियाँ, घसीटों की टीपदार आवाज़ प्यारेखाँ का खयाल छोड़ कर जायें कहाँ? सारंगी-मैंजीरे की आवाज सुनी तो छप से घुस पढ़े, मसनिद में अज़ान हुआ करे, सुनता कौन है। बहुत गुजर गयी, थोड़ी बाक़ी है।

आजाद--लखनऊ में ऐसे-ऐसे आलिम पढ़े हैं [क जिनका नाम आफ़ताब की तरह

सारी खदाई में रोशन है। कर्बठा और मदीने तक के समझदार लोग इन बुड्गों क #छाम झौक़ से पठये ६ | मफ्ती सादुलाह साहब, सेयद मुहम्मद साहब, वगेरह उत्मा का नाम बच्चे-चच्चे की जवान पर है। अब शायरों को देखिए, झा्वाजा देदरअली आतश, शेख नासिख अपने फ़न के खदा थे। मरसिया ऋ#उना तो

लबनऊ दालों का हिस्सा है। पौर अनीस साहब को खरा बख़्रो, जबाग को राफ़ाई तो यहाँ खत्म हो गयी। दतीर तो गोया अपने फ़न के मवजिद थे। नस्ीम ओर सबा ने आतश को

का दिया । गोया तो गोया शायरी के चमन का बुलबच्ुल था। मिर्ज़ों रजबअली “गे सझूर ने वह नख लिखी कि कलम तोड़ दिये। यहाँ के कारीगरगों के भी झंडे 7 ह। कम्दार तो ऐसे दुनिया के पर्द पर न होंगे। मिट्टी की मूरतें ऐसीबनायी कि भुराख्ियों कि किरदिरी हो गयी। बस, यही मालूम होता है कि मूरत बोछा ही चाहती है | जिस अज्ञायबधर में जाइएगा, ठखनऊ के कुम्हारों की कारीग़री जरूर पाइएगा। ख़शनयीसों ने बह कमा पदा किया कि एक-एक हफ़ की पाँच-पाँच अशर्फियाँ लीं। पाँके ऐसे कि ४२ का पंजा तोड़ डाछे, हाथी को डप्ट तो चिस्घाड़ कर मंजिलों भागे। रुस्तम और इस्फंगश्ियार को चुटकियों में लड़ा दें । उस्ताद मुदम्मम्अली खाँ फिकेत, छरहरा बदन, लेकिन गदका हाथ में आने की देर थी। परे के परे दर्म में साफ़ कर दिये | कड़क कर तमाचे का बुला हाथ लगाया, तो दुश्मन का मुँह फिर गया । अखाड़े में गदका लेकर खड़े हुए, तो मातम हुआ, बिजली चमक गयी । एक दफ़ा छलकार दिया कि रोक, बैठ गयी ! देख सँभल । खबरदार, यह आयी, वह आयी, वह पड़ गयी ! वाह-वाह की आवाज़ सातते आसमान जा पहुँची । बला की सफ़ाई, ग़ज़ब की सफ़ाई थी । जो मुँह चढ़ा, उसने मुँह की खायी | सामने गया और शामत आयी । कामदानी वह ईजाद की कि उड़ीसा और कोचीन तक घूम हो गयी । लेकिन आपको तोन शल्म से सरोकार, न फ़न से मतलब; आप तो ताछ-सुर के फेर में पड़े हैं

ठैला -हज़रत, इस वक्त भेरवी सुनने जाता था और “जाग्रे भाग प्यारा नज़र आया! सुनने का शौक चर्राया था; छेकिन आपने पादरियों की तरह बकवास करके काया पलट दी। आप जो हमें राह पर लाते हों, तो _तना मान जाओ कि ज़रा क्रम पढ़ाये हुए, हमारे साथ हाथ में हाथ दिये छुए, पायेनाले तक चले चलो; देखेँ तो परिस्तान से क्योंक्र भाग आते हो ! उन्हीं हसीनों का सिजदा ना करो, तो कुछ जुर्माना (। उस इंद्र के अखाड़े रो कोरे निकल आओ), तो याँग की राह निफछ जाऊँ ।

आजाद --(घड़ी नेत्र से निकाल कर ;] आठ पर इक्कीस मिनट |! इस खशगप्पी ने आज बड़ा सितभ ढाया, लेक्चर हगने में न आया । मुप्रत की बंकचक झकझक ! छेक्चर सुनने क़ापिल था।

कैला--अछाह जानता है, इस वक़्त कलेजे पर साँप छोट रहे हैं ! न जाने तड़के-तड़के किस मनहस का मुँह देखा है कि भेरवी के मज़े हाथ से गये !

आजाद--आप भी निरे चोंच हो रहे । इतनी देर तक समझाया, सिगमग़ज़न की, मगर वाह रे कुत्ते की दुम, बारह बरस बाद भी वह ठेढ़ी ही निकली ।

छेला--तो मेरे साथ आइए न, बगलें क्यों झाँकते दो ? जब्र जाने कि निलोह निकल आओ |

आज्ञार--अच्छा, चलिए । देखें, कौन सा हसीन अपनी निगाहों के तीर से हमें घायल करता है ! बरसों के ख़यालों की कोई क्या मिटा देगा ? हम, और किसी के थिरकने पर फ़ित हो जायें | तोबा | कोई ऐसा माझूक तो दिखाइए, जिसे हम प्यार करें। हमारा माशूक वह दे जिसमें कमाल हो। जर्फ़ और चोटी पर कोई और तिर धुनते हैं ।

खलासा यह फ़ि आज़ाद छेले प्रियाँ के साथ हाफ़िज़ जी के मकान गें जा पहुँचे । महफ़िल सजी 5ई थी।

तीन-चार हसीनें मिझ कर मुबरारकबराद गातो थीं। यही मालूम हं।ता था कि राग ओर रागिनी हाथ बाँ पे खड़ी हैं। जिसे देखो, गदन हिलाता है। पाजेब की छमाछम दिल को रोदती है, कोई इधर से उधर चमक जाती है, कोई ऊँचे सुरों में तान लगाती है, कोई सीने पर हाथ रख कर “गहरी नदिया? बताती है, कोई नग्ीली आँखों के इशारे से 'नैना रसीले? की छवि दिखाती है, धमा-चौकड़ी मची हुई है। छेले मियां ने एक इसोन से फरमाइश की कि हजरत मीर की यह राज़ल गाओ--

र के कहने से मारा उसने दृम्र को बे-गुनाह ; यह न समझा वह कि वाक़या में भी कुछ धा या न था | याद ऐयामे कि अपनी रोजोशन्र की जायबाश ; था दरे बाजे ब्रयात्रों, या दरे मयखाना था। इस ग़ज़ल ने वह लत्फ दिखाया और ऐसा रैंग जमाया कि मिययाँ आजाद तक ओ हो !! कह उठते थे; इसके बाद एक परी ने यह ग़ज़ल गायी --- हाल खुले ते! क्रिस तरह यार की वदेनाज़ का; जो है यहाँ वह मम्त है अपनी ही सोजोसाज में। इस राज़छ पर जल्से मं कुहराम मच गया। एक तो ग़ज़ल हक्क़ानी, दूसरे हसीना की उठती जवानी, तीसरे उसकी नाजुकतबयानी । लोग इतने मस्त हुए कि झूप-झुम कर यही शेर पढ़ते थे--- हाल खुले तो किस तरह यार की वद्दे-नाज़ का; जो है यहाँ वद मस्त है अपनी ही सोजोसाजञ में । -अब सब्रकी दकी जगह यक्रीन हो गया कि अब किसी का रंग न जमेगा। दर तरफ़ से इकक़ानी ग़ज़लों की फ़रमाइश है। न घुर्पद का खयाल, न टप्पे की फ़िक्र, न मैर्द्री की धुन, न पक्के गाने का जिके, बस हक्क़ानी ग़ज़लों की धूम है। अब दिब्लगी दलिए कि थुद्ढें जवान सब्र के सब्र बेघड़क उस मोहनी को घूर रद्े हैं। कोई उससे आर्ख लड़ाता है, कोई सिर धुनता दे, कोई ठंडी आहें खींचता है।

दो-चार मनचले रईसों ने हसीनों को बुला कर बड़े शौक़ से पास बैठाया । नोंक-न्नोंक, हँसी मज़ाक, चुइल-दिलगी, धोल-घप्या होने छगा। द्वाफ़िज् जी भी बेतींग के बछड़े बने हुए मजे से चौमुखी लड़ रहे हैं ।

बूढ़े मि्याँ--आजकल के लड़कों को भी हवा लगी है ।

एक जवान--जनाब, अब तो हवा ही ऐसी चली है कि जवान तो जवान, बुढों तक को बुढदुमस लगा दै। सौ बरस का सिन, चार के कंधों पर छदने के दिन, मगर जवानी द्वी के दम मरते हैं ।

बूहे मियों--अजी, हम तो जमाने भर के न्यारिये हैं, हमें कोई क्या चंग पर चढ़ायगी; मगर तुम अभी जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायश, ऐसा न हो, उनके फेर में आ जाओ; फिर दीनदुनिया दोनों को रो बैठो ।

जवान--वाह जनाब, आपकी सोहब्त में हम भी पक्के हो गये हैं; ऐसे कच्चे नहीं कि हम पर किसी के दाँव-पंच चले ।

बूढ़े मियाँ--कच्चे पक्के के भरोसे न रदिएगा, इन हसीनों का बड़े-बड़े जाहिदों ने सिजदा किया है; तुम किस खेत की मूली हो |

जवान--इन बुरतों को हम फ़कीरों से भला क्या काम है, ये तो तालिब्न जर के हैं और याँ ख़दा का नाम है ।

हसीना- इन बड़े मियाँ से कोई इतना तो पूछो कि बाल-बाल गछ कर बर्फ़ सा सफ़ेद हो गया ओर अब तक सियाहकारी न छोड़ी, यह समझाते किस मुँह से हैं! इनकी घुनता कौन है ! ज़रा शेखर जी, बहुत वद-बढ़ कर बातें न बनाया कीजिए; शाहछठेवाली गली में रोज़ बीस-बीस चक्कर होते हैं; ऐ, तुम थकते

भी नहीं |

हाफ़िज़ जी--शेख जी जहाँ बेठते हैं, झगड़ा जरूर खरीदते हैं। आप हैं कौन ! आये कहाँ से नासेह बन के | अच्छा, बी साहब, अपना कलाम सुनाइए; मगर शर्तें यह है कि जत्र हम तारीफ़ करें तो झुर के सलाम कीजिए ।

हसीना--आप हैं तो इसी लायक कि दूर ही से झुक कर सलाम कर ले।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर दूसरी टुरी में गाडी और फकड़ का छर्रो चलता था । तीसरे में धौल-धप्पा होता था | लड़के, जवान, बूदे बेधघड़क एक दूसरे पर फब्नतियाँ कसते थे । इतने में दोपहर की तोप दगी, जलसा बरखात्त, तब्ल्चियों ने बोरिया-बेंघना उठाया । चलिए, सन्नाटा हो गया |

HINDI TEXT

प्रसंग ५

मियाँ आजाद की सॉडनी तो सराय में बैंधी थी | दूसरे दिन आप उस पर सवार हो कर घर से निकल पड़े । दोपहर ढले एक क़स्बे में पहुँचे । पीपल के पेड़ के साये में बिस्तर जमाया । ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों से ज़रा दिल को दारस हुई, पाँव फैला कर लंबी तानी, तो दीनदुनिया की ख़बर नहीं। जब् खूब नींद भर कर सो चुके, तो एक आदमी ने जगा दिया । उठे, मगर प्यास के मारे हलक में काँटे पड़ गये। सामने इ्दारे पर एक हसीन औरत पानी भर रही थी। हज़रत भी पहुँचे ।

आजाद--क्यों नेकबइ्त, हमें एक ज़रा सा पानी नहीं पिलातीं । भरते न बनता हो तो लाओ दम भरें । तुम भी पियो, हम भी पियें, एहसान होगा ।

औरत ने कोई जवाब न दिया, तीखी चितवन से देख कर पानी भरती रही ।

आजाद--'सखी से सूम भला, जो देवे तुरत जवाब ।? पानी न पिलाओ, जवाब तो दे दो । यह क़स्बरा तो अपने हक़ में करन का मैदान दो गया। एक बूँद पानो को तरस गये ।

औरत ने फिर भी जवाब न दिया । पानी भर कर चली ।

आज़ाद--भई, अच्छा गाँव है| जो बात है, निराली ! एक लुटिया पानी न मिला, वाह री क़िस्मत ! लोग तो इस भादों की जलती-बलती धूप में यौसरे ब्रैठाते हैं, केवड़ा पड़ा हुआ पानी पिलाते हैं, यहाँ कोई बात तक नहीं सुनता ।

मियाँ आजाद को हेरत थी कि इस कमसिन नाजनीन का यहाँ इस बीराने में क्या काम । साथे कीं तरह साथ हो लिये । वह कनछियों से देखती जाती थी; मगर मुँह नहीं ल्गाती थी । बारे, सड़क से दाये दवाथ पर एक फाटक के सामने वह बैठ गयी और पेड़ के साये में सुस्ताने लगी। आजाद ने कहा--अगर यह बतंन भारी हो तो लाओ मैं ले चलूँ, इशारे की देर है। कसम लो, जो एक बूँद भी पीऊँ, गो प्यास के मारे कलेजा मुंह को आता है और दम निकला जाता है; लेकिन तुम्हारा दिल दुखाना मंजूर नहीं ।

हसीना ने इसका भी जवात्र न रिया । फिर हिम्मत करके उस बतंन को उठाया ओऔर फाटक के अंदर हो रही। मियोँ आज़ाद भी चुपके-चुपके दबे पाँव उसके पीछे-पीछे गये | इसीना एक खुले हुए छोटे से बंगले में जा बैठी और आजाद दरख्तों की आड़ में दबक रहे कि देखें, यहाँ क्या गुल बिलता है। उस बंगले के चारों तरफ खाई खुदी हुई थी, इद-गिर्द सरपत बोई हुई थी, ऐसी घनी कि (चड़िया तक का गुजर न हो; और वह तेज़ कि तलवार मात । बड़ा ऊँचा मेहरात्दार फाटक छगा हुआ था। वह जौदरदार शीशम की लकड़ी थी फि बायर व छायद । क्यारियाँ रोज़ सींची जाती थीं, रविश्ओं पर दुखी कटी थी, हरे-भरे दरख्त आसमान से बातें कर रहे थे | कहीं अनार की कतार, कहीं लखवट की बहार, इधर आम क्रे बाग, अमरूद और चकोतरों से टह-नि्याँ फटी पड़ती थीं, नारंगियोँ शाखों पर लदी हुई थीं, फूलों की बू-बास, कहीं गुल-मेंहदी, कहीं गुल-अब्बास, नेवाड़ो फूली हुईं, ठंडी-ठंडी हवा, ऊदी-ऊदी घटा, कलियों की चिटक, जूही की भीनी महक,

कनैछ की दमक | बाग के बीचो-बीच में एक तीन फुट का ऊँचा पक्का चबूतरा बना था। यह तो सन्न कुछ था; मगर रहने-वाले का पता नहीं । उस हसीना की चालढाल से मी बेगानापन बरसता था। एकाएव. उसने बतंन जमीन पर. रख दिया और एक नेवाड़ की पढलैंगरी पर सो रह्दी। इनको दाँव मिला, तो खूब छक कर मेवे खाये और बतंन को मुँह से लगाया, तो एक बूँद भी न छोड़ा । इतने में पाँव की आहट सुनाई दी। आज़ाद झट अंगूर की टट्टी में छिप रहे; मगर ताक लगाये बैठे थे कि देखें, है कौन ! देखा कि फाटक की तरफ से कोई आदहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। बड़ा लंब्ा-तड़ंगा, मोटा-ताज़ा आदमी था। लंगोट बाँधे, अकड़ता उस बंगले की तरफ जा रहा था। समझे कि कोई पहलवान अपने अखाड़े से आया है | नज़दीक आया, तो यह गुमान दूर हो गया। माद्म हुआ कि कोई शाह जी हैं | वह लंगोट, जिससे पहलवान का धोखा हुआ था, तदमद निकला। शाह साहब से बेंगले में दाखिल हुए। औरत को पलंग पर सोता पाया, तो पलंग पर हाथ मार कर चिल्ला उठे-उठ । हसीना घत्ररा कर उठ बैठी और शाह जी के कदम चूमे । शाह जी एक तिरपाई पर बैठ गये और उससे यों बातें करने छगे--बेटी, आज तुमको हमारे सब्र से बहुत राह देखनी पड़ी। यहाँ से दस कोस पर एक गाँव में एक राजा रहता है। अस्सी बरस का हो गया; मगर अल्लाह ने न लड़का दिया, न लड़की । एक दिन मुझे बुलाया । मैं कहीं आता-जाता तो हूँ नहीं, साफ़ कददला भेजा कि तुम्हें गरज हो तो आओ, ख़दा के बंदे ख़दा के सिवा और किसी के द्वार पर नहीं जाते । आखिर रानी को लेकर वह आप आया और मेरे कदमों पर गिर पड़ा | मैंने रानी के सिर पर एक ब्रिना सूँधा गुलाब का फूल दे मारा। पाँचवें महीने अल्लाह ने लड़का दिया और राजा मेरे पास दौड़ा आता था कि मैं राह में मिला। देखते ही मुझे रथ पर बिठा लिया । अब कहता है, रुपया लो, जागीर लो, गाँव लो, हाथी-घोड़े लो । मगर मैं कब माँगता हूँ। फ़कीरों को दुनियाँसे क्या काम । इस वक्त जा कर पीछा छूटा | तुम पानी तो लायी होगी !

हसीना--मैं आपकी छोडी हूँ, यह क्या कम है कि आप मेरा इतना खयाल रखते हैं | वह पानी रखा हुआ है । आप फएँूक डाल दें, तो मैं चली जाऊँ।

यह कह कर वह उठी; मगर बतंन देखा, तो पानी नदारत । एँ! यह पानी क्या हुआ | जमीन पी गयी, या आसमान | अभी पानी मर कर रखा था, देखते-देखते उड़ गया । ग़ज़ब खुदा का, एक बूँद तक नहीं; लबालब भरा हुआ था |

शाह जी--अच्छा, तो बता दूँ; मुझे जोग-बल से माछूम हो गया कि तुम आती द्वो | जब तुम सो रहीं, तो मैंने आँख बंद की, और यहाँ पहुँच गया । पानी पिया, तो फिर आँख बंद की और फिर राजा साहब के पास दो रहा। फ्रक डालने की साहत उसी वक़्त थी। टल ब्ाती, तो फिर एक महीने बाद आती । अब तुम यह इलायची लो और कल आधी रात को मरघट में गाढ़ दो। तुम्हारी मुराद पूरी हो जायगी।

युवती ने इलायची ले ली। मियां आजाइ चुपके-चुपके सब सुन रहे थे। अपर उन्हें खूब ही मालूम द्वो गया कि शाह जी रैंगे सियार हैं । लोटे का पानी तो मैंने पिया और आपने यह गढ़ा कि आँख बंद करते ही यहाँ आये, और पानी पी कर फिर किसी तरकीब से चल दिये। खूब खिल-खिला कर हँस पड़े । वाहरे मक्कार ! जालियै ! इतना बड़ा झूठा न देखा, न सुना। ऐसे बड़े वली हो गये कि इनकी दुआ से एक रानी पाँचवें ही महीने बच्चा जन पड़ी। झूठ भी तो कि तना ! ह्वद तो यों है कि झूटों के सरदार हैं। पट्टे बदा लिये, तहमद

बाँध कर शाहजी बन गये। छगे पुजने। कोई बेटा माँगता है, कोई तावीज़ माँगता है, कोई कहता है मेरा मुक़दमा जितवा दो तो नयाज़ यदाऊँ, कोई कहता है नौकरी दिलवा दीजिए तो मिठाई खिलाऊँ। संयोग से कहीं उसकी मुराद पूरी दो गयी, तो शाह साहब की चाँदी है, वरना किसकी मजाल कि शिकायत का एक दर्फ़ मुँह से निकाले | डर है कि कहीं ज़ब्रान न सड जाय। अब्लाइ री धाक ! बहुत से अक़ल के दुश्मन इन बने हुए; फ़कीरों के जाल में फैंस जाते हैं | आजाद ऐसे बने हुए सिद्ध और रँगेसियार फ़क़ीरों की क्त्र तक से वाक़िफ़ ये। सोचे, इनकी मरम्मत कर देनी चाहिए।

शाह साहब ने चबूतरे पर लगी बिछायी और उस पर लेट कर दुआ पदने लगे; मगर पढ़े-लिखे तो थे नहीं, शीन-काफ़ तक दुरुस्त नहीं, अना५-शनाप बकने लगे | अब मियाँ आज़ाद से न रद्दा गया, बोल उठे--क्या कददना है शाह जी, वस्लाह, आपने तो कम्ताल कर दिया । अब तो शाह जी चकराये कि यह आवाज़ किसने कही, यह दुश्मन कौन पैदा हुआ। इघर-उधर आँखें फाडू-फाड़ कर देखा; मगर न आदमी, न आदमजाद, न इनसान, न इनसान का साया। या खुदा, यह कौन बोला ! यह किसने टोका ! समझे कि यह आसमानी ढेला है । किसी जिन्न की आवाज़ है। डरपोक तो ये ही, बदन यरयराने छगा, द्वाथ-पाँव फूल गये, करामातें सब्र भूल गये, हवास ग़ायत्र होश कलाबाज़ी खाने छगे । कुरान की आयतें गलत-सलत पढने लगे । आखिर चिढ्ला उठे--महजरूछ अजञायत्र | तो इधर यद्द बोल उठे - लेंगी मयशादह् जी ग़ायत्र | अब शाह जी की घत्रराहट का हाल न पूछिए,, चेहरा फ़क, काटो तो लह नहीं बदन में ॥ मि्याँ आजार ने माँप लिग्रा कि शाह साइत्र पर रोत्र छा गया, झट निकल कर पत्तों को खूब खड्त्डाया | शाह जी कोप उठे कि प्रेतों का लश्कर का लश्कर आ खड़ा हआ | अन्न जान से गये । तब्र आज़ाद ने एक फारसी ग़ज़ल खूब ले के साथ पढ़ी, जैसे कोई ईरानी पढ़ रहा हो | शाह जी मरत हो गये, समझे कि यह तो कोई फ़क़ीर है। अब तो जान में जान आयी। मिर्यों आजाद के कदम लिये । उन्होंने पीठ ठोंकी | शाह जी उस वक्त नशे की तरंग में थे; खयाल बँघ गया कि कोई आसमान से उतरा है।

आजाद --कीस्ती वो अज् कुजाई व वामनत चे कार अस्त ।

(कौन है, कहाँ से आता दे और मुझसे क्या काम है !)

शाह जी के रहे-सहे हवास और ग़ायब हो गये। जबान समझ में न आयी। समझे कि जरूर आसमान का फ़रिश्ता है। हमारी जान लेने को आया है। दबे दाँतों बोले-- समझता नहीं हूँगा कि आप क्या हुक्म देंगे। हमने बहुत गुनाह किये, अब माफ़ फ़रमाओ । कुछ दिन और जीने दो, तो यह टगविद्या छोड़ दूँ । मैं समझ गया कि आप मेरी जान लेने आये हैं।

आज़ाद--यह बुढ़ापा और इतनी बदकारी, यह सिन और साऊ और यद्द चाल-टाल | याद रख कि जहन्नुम के गदड्े में गिरेगा और दोजख को आग में जलाया जायगा | सुन, मैं न आसमान का फ़रिश्ता हूँ, न कोई जिन्न हूँ । में इकीम बलीनास की पाक रूद्र हूँ, हकीम हूँ, खदा से डरता हूँ, भेरे कब्जे में बहुत से तिलरम हैं, मेशा मज़ार इसी जगह पर था जहाँ तेरा चबूतरा है और जहाँ तू नापाक रद्दता है और शोरबा लुद्रकाता है। खैर, तेरी जद्दाठत के सब्र से मेंने तुझे छोड़ दिया; लेकिन अब तूने यह नया फरफंद सीखा कि हसीनों को फाँसता है ओर उनसे कुछ ऐंठता है। उस जमाने में यह औरत मेरी बीबी थी | ले, अब यह

दृथकंडे छोड़, मक्र और दा से मुँह मोड़, नहीं तो तू है और हम । अभी ठीक बनाऊँगा और नाच नचाऊँगा। तेरी भलाई इसी में है कि अपना कुछ हाल कह चल, नहीं, तू दानेगा। मेरा कुछ न जायगा।

शाह जी ने शरात्र की तरंग में मारे डर के अपनी बीती कहानी शुरू को--चोदहइ बरस के सिन से मुझे चोरी करने की छत पड़ी ओर इतना पक्का हो गया कि आँख चूकी और गठरी उड़ायी, ग़ाफ़िल हुआ और टोपी खिसकायी। पहले कुछ दिन तो लुगियाचोर रहे, मगर यह तो करती विया है, थोड़े ही दिनों में हम चोरों के गुरू-घंटाल हो गये | सेंद लगाना कोई हमसे सीखे, छत की कड़ियों में यों चिमट रहूँ. जैसे कोई छिपकली, उचकाँद में बंदर मेरे मुकाबले में मात है, दबे पाँव कोसों निकल जाऊं, क्या मज़ाल किसी को आइट हो | शहर भर के बदमाश, लक्के, लुण्वे, शोहदे हमारी डुकड़ी में शामिल हुए। जिसने हेकड़ी की उसको नीचा दिखाया; जो टेढ़ा हुआ उसको सीधा बनाया । खब् चोरियाँ करने लगे | आज इसका माल मारा, कल उसकी छत काटी, परसों किसी नवाब के घर में सेंद दी। यहाँ तक कि डाके मारने लगे सड़कों पर दूटमार शुरू कर दी। गोल में दुनियाभर के बेफ़िक्े जमा हैं, कोई चंद्र उड़ाता है, कोई चरस के दम ढगाता है। गॉजे, भांग, ठरें सब़का शौक़ है। तानें उड़ रद्दी हैं, बोतलें चुनी हुई हैं, गडेरियों के ढेर लगे हुए हैं, मबिखयों मिन-मिन करती हैं, सबको यही फिक्र है कि किसी का माल ताकें। एक दिन शामत आयी, एक नवाग्र साइब के यहाँ चोरी करने का शौक़ चर्राया । उनके खिदमतगार को मिलाया, नौकरानियों को भी कुछ चटाया, और एक बजे के वक़्त घर से निकले । उसी मुद्दल्ले में एक मह्दीने पहले-ह्दी एक मकान किराये पर ले रखा था। पहले उसी मकान में पेंटे । नवाब का मकान कोई पचास ही कदम होगा। तीन आदमी दस क़दमपर और पाँच बीस कदम पर खड़े हुए। हम, खिदमतगार और एक चोर साथ चले कि घर में धँस पड़ें। क़रीब गये तो ड्योदी पर चौकीदार ने पुकारा, कौन ! सन से जान निकल गयी | उम्र-भर में यही ख़ता हुई कि चौकीदार को पहले से न मिला लिया । अब क्या करें | (पिछली बुद्धि गैवार की !? फिर चौलीदार ने छलछकारा, कौन आता है ! हमने कहा-- हम हैं भाई । चोकीदार बोला--हम फी एक ही कद्दी, हम का कुछ नाम भी हे ! आखिर, हमने चौकीदार को उसी दम कुछ चटा कर सेंद दी। घर में घुसे, तो क्या देखते हैं कि एक परेंग पर नवाब साहब सोते हैं, और दुसरे पढैंग पर उनकी बेगम साहबा मीठी नींद में मस्त हैं, मगर शमा रोशन है | अपने साथी से इशारा छिया कि शमा को गुल कर दे। वह ऐसा घबराया कि बड़े जोर से फूँक़ मारी । मैंने कहा, ख़दा ही खैर करे, ऐसा न हो कि नवात्र जाग उठें तो लेने के देने पढ़ें । आगे बढ़ कर मैंने बत्ती को तेल में खिसका दिया, चलिए, चिराग गुल, पगड़ी ग़ायब | बेगम साहबा के सिरहाने जेवर का संदक रखा था, मगर आड़ में । हम तो महरी की जब्नानी कच्चा चिट्ठा सुन चुके थे, 'धर का भेदी लंका दाय", फौरन संदुक उठाया और दूसरे साथी को दिया कि बाहर पहुँचाये । वद्द कुछ ऐसा घत्रराया कि मारे बौखलाहट के कॉपने लगा और धम से गिर पड़ा । धमाके की आवाज सुनते ही नवात्र चौंक पड़े, शेरत्रच्चा सिरहाने से उठा, पेतरे बदछ-बदल कर फिकेत) के हाथ दिखाने लगे। मेंने एक चाकी का द्वाथ दिया, और झट कमरे से निकल, दीवाल पर चढ़, पिछवाड़े कूदा और 'चोर-चोर"? चिल्लाता हुआ नाके बाहर | बे दोनों सिरब्रोशिये नौतिखिये थे, पकड्ड लिये गये | मगर वाह रे नवाब ! बड़ा ही दिलेर आदमी है। दोनों को घेर लिया । वे तो जेलखाने गय्मे, में बेदाग बच गया। अब्र मैंने वद पेशा छोड़ा और खून पर कमर बाँधी | एक महीने में कंई खनन किये। पहले एक सौदागर के घर में घुस कर उसे चारपाई

पर ढेर कर दिया; जमा-जथा हमारे बाप की हो गयी | फिर रेल पर एक माल दार जौहरी का गला घोट डाला और जवाहिरात साफ़ उड़ा लिये। तीसरी दफ़ा दो बनजारे सराय में उतरे थे | हमें खबर मिली कि उनके पास सोने की ईंट हैं । उनको सराय ही में अंटा-राफ़ीक करना चाहा। भठियारे ने देख लिया पकड़े गये और दखाने गये । वहाँ आठ दिन रहे थे, नवें दिन रात को मौका पा कर कालकोठरी का दरवाजा तोड़ा, एक बरकंदाज़ का सिर ईंट से फोड़ा, पहरे के चौकोदार का उसी की बंदूक से शह्दीद किया और साफ़ निकल भागे | अन्न सोचा, कोई नया पेशा अंख्तियार करें, सोचते-सोचते सूझी कि शाह जी बन जाओ । चट फ़क़ीरों का भेस बदल कर एक पेड़ के नीचे बिस्तर जमा दिया | पुजने छगे। एक दिन इस गाँव के ठाकुर का लड़का बीमार हुआ । यहाँ हकीम, न डाक्टर ! किसी ने कह रिया कि एक फ़कीर पकरिया के नीचे बैठे ख़रा को याद किया करते हैं, चेहरे से नूर बरसता हे किसी से लेते हैं न देते हैं। ठाकुर ने सुनते ही अपने भाई को भेजा ! हम साथ गये। खुशी से फूले न समाते थे कि आज पाल हमारे द्वाथ रहा तो उम्र भर चैन से गुज़रेगी । हमारा पहुँचना था कि सत्य उठ खड़े दुए। हम किसी से बोले न चाले, जा कर लड़के के पास बैठ गये और कुछ बुदबुद! कर उठ खड़े हुए। देखा, लड़के का बुरा हाल है, बचना मुहाल है। ठाकुर क़रमों पर गिर पढड़ा.। हमने पीठ ठोंकी और लंबे-लंबे डग बढ़ाते चल दिये । संयोग से एक योरोपियन डाक्टर दौरा करता हुआ उस गाँव में आया और उसकी दवा से मरीज चंगा हो गया | अब मजा देखिए, डाक्टर का कोई नाम भी नहीं लेता, सत्र हमारी तारीफ़ करते हैं। ठाकुर ने हमें एक हाथी और हज़ार रुपये दिये । यह हमने क़बूल न किया | सुभानअब्लाह ! फिर तो हवा बँध गयी । अब चारों तरफ़ हम ही हम हैं, कोई बीमार हो, तो हम पूछे जायें, कोई मरे तो हम बुलाये जायें । मियाँ-बी्री के झगढ़ों में हम क़ाजी बनते हैं, बाप-बेटे का झगड़ा हम फ़ेसला करते हैं। सुबह से शाम तक डालियों पर डालेयाँ आती रहती हैं ।

आज़ाद ने यह किश्सा सुन कर शाह जी को खब डाँटा--तू काफ़िर है, मलऊन है

तू अपनी मक्कारी से खटा के बँदों को ठगता है, अब हमारी बात सुन, हमारा चेला बन जा, तो तुझे छोड़ दें। कल तड़के गजरदम गाँव भर में कह दे कि हमारे पीर ये हुए हैं। दो सौ ग्यारह बरस की उम्र बताना | जिसे ज़ियारत करनी हो, आये | शाह जी की आछें खिल गयीं कि चलो, किसी तरह जान तो बची। नूर के तड़के गाँव मर में पुकार आये कि हमारे पीर आये हैं, जिसे देखना हो, देख ले। शाह जी की तो वहाँ धाक बँधी ही थी, जब लोगों ने सुना कि इनके भी वली-खंगड़ आये हैं, तो शौक चर्राया कि ज़ियारत को चलें। दो दिन और दो गत मियों आज़ाद अपने घर पर आराम करते रहे । तीसरे दिन फ़कीराना वेष बदले हुए हरे-हरे पेड़ों के साये में आ बैठे | देखते क्या हैं, पो फटते ही औरत-मदे, ठट के ठठ जमा हो गये। हिंदू और मुसलमान, जवान औरतें, गहनी से लछदी हुई आ कर बेठी हुई हैं। तब आजाद ने खड़े हो कर कुरान की आयतें पढ़ना झुरू कीं और बोले--ऐ खुदा के बंदो, में कोई वली नहीं हूँ, तुम्हारी ही तरह खरा का एक नाचीज़ बंदा हूँ । अगर तुम समझते हो कि कोई इनसान चाहे कितना ही बड़ा फ़क़ीर क्यों न हो, ख़दा की मरजी में दखल दे सकता है, तो तुम्दासी ग़छती है। होता वद्दी है, जो ख़दा को मंजूर होता है। हमारा फर्ज यही है कि तुम्हें खा की याद दिलायें। अगर कोई फ़क्कीर, कोई करामात दिखा कर अपना सिक्का जमाना चाहता हो, तो समझ हो कि वह मक्कार है। जाभो

अपना-अपना धंधा देखो ।

HINDI TEXT

प्रसंग ६

मियां आज़ाद मुँह-अँधेरे तारों की छाँइट में बिस्तर से "उठे, तो सोचे; सॉडनी के घास-चारे की फ़िक्र करके ज़रा अदालत और कचदइरी की भी दो षड़ी सैर कर आयें | पहुँचे तो क्या देखते हैं, एक घना बारा है और पेड़ों की छाँद् में मेला-सा लगा है। कोई हलवाई से मीठी-मीठी बातें करता है। कोई मदारिये को ताजा कर रहा है। कुँजड़े फलों की डालियाँ लगाये बैठे हैं। पानवाले की दूकान पर वह भीड़ है कि खड़े होने की जगह नहीं मिलती । चूरनवाला चूरन बेच रहा है। एक तरफ़ एक हकीम साहब दवाओं की पुड़िया फैलाये जिरियान की दवा बेच रहे हैं। . बीसों मुंशी-मुतसद्दी चटाइयों पर बैठे अर्लियाँ लिख रहे हैं। मुस्तगीस हैं कि एक-एक के पास दस-दस बैंठे कानून छाँट २हे हैं--अरे मुंशी जी, यो का अंट-संट चिघरटियाँ सी खैंचाय दिद्दो! हम तो आपन मज़मून बतावत हैं, तुम अपने अदाई चाउर अलग चुरावत हौ। ले मोर मुंसी जी, तनिक अस सोच-विचार के लिखो कि फ़रीक़ सानी क्यार मुक़दमा दिसमिसाय जाय। ले तोहार गोड़ धरित है, दुद्द कच्चा अउर छै लेव । आज़ाद ने जो गवाह-घर की ओर रख कियां, तो सुभानअब्लाह ! काले-काले चोगों की बद्दार नज़र आयी | कोई इधर से उधर भागा जाता है, कोई मसनद छगाये बैठा गैंवारों से डींग मार रद्दा है। जरा और आगे बढ़े थे कि चपरासी ने कड़क कर आवाज़ लगायी- सत्तारखाँ द्वाजिर हैं! एक अफीमची के पाँव लडखड़ाये, सीढ़ियों से हढ़कते हुए धम से नीचे ! एक टठोल ने कह्ा--वाह जनाब, गिरे तो मुझसे पूछ क्यों न लिया ! आज्ाद ज़रा और आगे बढ़े, तो एक आदमी ने डॉट बतायी--कौन हो ! क्या काम है !

आज़ाद--इसी शहर में रहता हूँ । ज़रा सैर करने चछा आया ।

आदमी-कचहरी में खड़े रहने का हुक्म नहीं है, यहाँसे जाइए, वरना चपरासी को आवाज़ देता हूँ।

आजाद--बिगड़िए नहीं, बस इतना बता दीजिए कि आपका ओहदा क्या है !

आदमी-- हम उम्मेदवारी करते हैं। तीन महीने से रोज़ यहाँ काम सीखते हैं । अग् फर्राटें उड़ाता हूँ । डाकेट तड़ से लिख दूँ, नक़शा चुटकियों में बनाऊँ। किसी काम में बंद नहीं । पंद्रह रपये की नौकरी हमें मिला ही चाहती है । मगर पहले तो घास छीलना मुशकिल माद्म होता था, अब छुक़मान बन गया ।

आजाद- क्यों मरियाँ, ठुम्हारे वालिद कहाँ नौकर हें !

उम्मेदवार-- जनाब, वह नौकर नहीं हैं, दस ग'व के जमींदार हैं ।

आज़ाद-- क्या तुमको घर से निकाल दिया, या कुछ खटपट है १

उम्मेदवार--तो जनाब हम पदे-छिले हैं कि नहीं !

आजाद-- हज़रत, जिसे खाने को रोटियाँ न हों, वह सत्त बाँध कर नौकरी के पौछे पड़े, तो मुजायक़ा नहीं । तुम खुदा के करम से जमींदार हो, रुपयेवाले हो, तुमको यह क्या सूझी कि दस-पाँच की नौकरी के लिए एडड्ियाँ रगड़ते हो १ इसी से तो हिंदुस्तान रात है; जिसे देखो, नौकरी पर आशिक | मियाँ, कद्दा

मानो, अपने घर जाओ, घर का काम देखो, इस फेर में न पड़ो। यह नहीं कि आमामा बाँधा और कचहरी में जूतियाँ चटकाते फिरते हैं ! मुहर्रिर पर लोट, अमानत पर उधार खाये बैठे हैं ।

दूतरे उम्मेदवार की निस्त्रत माढ्म हुआ कि एक लखपती महाजन का लड़का है | बाप की कोठी चलती है | लाखों का वारा-न्यारा होता है| बेटा बारह रुपये की नौकरी के लिए! सौ-सौ चक्कर लगाता है। चौथे दर्जे से मदर्सो छोड़ा और अपरेंटिस हुए। काम खाक नहीं जानते। बाहर जाते हैं, तो मुंसरिम साहब से पूछ कर। इस वक़्त जब दफ्तरवाले अपने-अपने घर जाने लगे, तो हज़रत पूछते क्या हैं- क्यों जी, यह सब्र चले जाते हैं, अभी चुट्टी की घंटी तो बजी द्वी नहीं |

स्कूल की घंटी याद आ गयी !

मियाँ आजाद दिल ही दिल में सोचने छगे कि ये कमसिन लड़के, पंद्रह-सोलह बरस का सिन: पदने-लिखने के दिन, मदर्सा छोड़ा, कॉलिज से मुँह मोड़ा और उम्मेदवारों के गोल में शामिल हो गये । अलिफबे नगाडा, इत्म को चने के खेत में पछाड़ा !' मेहनत से जान निकलती है, किताब को देख कर बुखार चढद आता है | जिससे पूछो कि भाई, मर्दर्सा क्यों छोड बैठे, 'तो यही जवात्र पाया कि उकलेदिस की अक़्छ से नफ़रत है । तवारील किसे याद रहे, यहाँ तो घर के बच्चों का नाम नहीं याद आता | हम भी सोचे, कहाँ का झंझट | अलग भी करो, चलता धंधा करो, जिसे देखिए, नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है । ज़मींदार के लड़के को यह ख्वाहिश होती है कि कचहरी में घूँ , सोदागर के लड़के को जी से लगी है कि कॉलेज से चंपत हूँ और फचहरी की कुर्सी पर जा डट्टे | और मुदरिर, मुंशी, अमले तो नौकरी के हाथों बिक ही गये हैं। उनकी तो घूँटी ही में नौकरी है। बाबू बनने का शौक़ ऐसा चर्राता है कि अक़ल को ताक़ पर रख कर गुलामी करने को तेयार हो जाते हैं ।

यह सोचते हुए मियाँ आज़ाद और आगे चले, तो चौक में आ निकले देखते क्या हैं, पंद्रह-बीस कमसिन लड़के बस्ते लगकाये, स्लेटें दबाये, परे जमाये, लपके चले आते हैं | पंद्रह-पंद्रह बरस का सिन, उठती जवानी के दिन, मगर कमर बहत्तर जगह से झुकी हुई, गालों पर धर्रियाँ, आँखें गड्ढे में धँसी हुईं। यह छका हुआ सीना, नयी जवानी में यह हाल | बुढ़ापे में ता शायद उठ कर पानी भी न पिया जायगा । एक छड़के से पूछा, क्यों मियाँ, तुम सब के सब इतने कमज़ोर क्यों दिख-लायी देते हो ! लड़के ने जवाब दिया, जनाब, ताकत किसके घर से छायें ! दवा तो है नहीं कि अतार की दुकान पर जायें, दुआ नहीं कि किसी शाह जी से सवाल करें, हम तो बिना मौत ही मरे | दस बरस के सिन में तो बीबी छम-छम करती हुई धर में आयी । चलिए, उसी दिन से पढ़ना-लिखना छपर पर रखा। नयी धुन सवार हुई । तेरहवे बरस एक बच्चे के अब्बाजान हो गये। रोटियों की फ़िक्र ने सताया। हम दुबले-पतले न हों, तो कौन हो ! फिर अच्छी ग़िज़ा भी मयस्ूसर नहीं; आज तक कभी ' की सूरत न देखी, घी का सिफ नाम सुनते हैं।

मिर्यों आज़ाद दिल में सोचने लगे, इन गरीबों की जवानी केसी बर्चाद हो रही है! इसी धुन में टहलते हुए हज़रतगंज की तरफ़ निकल गये, तो देखा, एक मैदान में दस-दस पंद्रह-पंद्रह बरस के अँगरेजों के छड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं। कोई पेड़ की टहनी पर झूलता है, कोई दीवार पर दोड़ता है। दो-चार गेंद खेलने पर रुष्ट हैं। एक जगह देखा, दो लड़कों ने एक रस्सी पकड़ कर तानी और एक प्यारी लड़की' बदन तौल

कर ज़मीन से उस पार उचक गयी। सत्र के सत्र खुश ओर तंदुरुस्त हैं । आज़ाद ने उन होनहार लड़कों और लड़कियों को दिल से ढुआ दी और हिंदुस्तान की हालत पर अफ़तोस झरते हुए घर आये |

HINDI TEXT

प्रसंग ७

मियाँ आजाद सॉडनी पर बैठे हुए एक दिन सैर करने निकले, तो एक सराय में जा पहुँचे । देखा, एक दरामदे में चार-पाँच आदमी फ़र्श पर बैठे धुआँधार हुके उड़ा रदे हैं, गिलोरी चत्रा रहे हैं. और ग़ज़ल पढ़ रहे हैं | एक कवि ने कहा, हम तीनों के तखल्लुस का क़ाफ़िया एक है--अलामी, फ़ह्ामी ओर हामी; मगर तुम दो ही हो--वकाद और जवाद | एक शायर और आ बनायें, तो दोनों तरफ़ से तीन-तीन हो जाये । इतने में मियाँ आज़ाद तड़ से पहुँच गये ।

एक ने पूछा--आप कोन !

आज़ाद- मैं शायर हूँ ।

आप तखल््छुस क्या करते हैं !

जार।द ने कदह्दा--आज़ाद | तब तो इन सबकी बाँछे खिल गयीं । जवा5, वकाट और आज़ाद का तुक मिल गया। अब लोग ग़ज़ल पढ़ने छगे | एक आदमी शेर पढ़ता है, बाकी तारीफ़ करते है--सुभान-अलाह, क्या तत्नीयत पायी है, वाह-वाह ! फिर फ़रमाइएगा; क़लम तोड़ दिये, कितनी साफ़ जबान है ! इस बोल-चाल पर कुर-बान । कोई झूमता है, कोई टोपियाँ उछालता हे ।

आज़ाद--मिर्यों, सुनो, हम शायरी के क्रायल नहीं । आप छोग तो जबान पर मरते हैं ओर हम खयालों पर जान देते हैं। हमें तो नेचर की शायरी पसंद है।

फ़्दामी--अख्खाह, आप नेचरिए हैं ! अनीतिए और दब्नीरिए तो सुनते थे, अब नेचरिए पेदा हुए । ग़ज़ब ख़दा का ! आपको इन उस्तादों का कलाम पसंद नहीं आता, जो अपना सानी नहीं रखते थे १

आज़ाद-मैं तो साफ़ कहता हूँ, यह शायरी नहीं, खब्त है, बेतुकापन है, इसका भी कुछ ठिकाना है, शठ के छप्पर उड़ा रिये। अन्न कान खोल कर नेचरी शायरी सुनो।

यह कह कर आज़ाद ने अंगरेजी की एक कविता सुनायी तो वह क़हक़हा पड़ा कि सराय भर गूँज उठी ।

फ़्दामी-वाह जनात्र, वाह, अच्छी गिट-पिट है | इसी को आप शायरी कहते हैं !

आज़ाद--'शेख क्या जाने साबुन का भाव !? 'भैस के आगे बीन बजाये, भेंस खड़ी पगुराय ।!

आज़ाद तो नेचरल शायरी की तारीफ़ करने छगे, उधर वे पाँचों उदूं की शायरी पर लोट-पोट थे । आतश और मीर की जवान, नासिख, अनीस, जौक, गालिब, मोमिन-जैसे उस्तादों के कलाम पढ़-पढ़ कर सुनाते ये। अब बताइए, फ़ैसला कौन करे ! मठियारिन झगड़ा चुकाने से रही, भठियारा घास ही छीलना जाने, आखिर यह राय तय पायी कि दाहर चलिए ! जो पढ़ा-लिखा आदमी पहिले मिले, उसी का फ़ेसला सबको मंजूर। सबने हाथ पर द्वाथ मारा । चलने ही को थे कि भठियारिन ने इनको लछकारा ओर चमक कर मियाँ जवाद का दामन पकड़ा--मिर्यों, यह बुस्ते किसी और को बताना, इम भी इसी शहर में बद कर इतने बड़े हुए

हैं | हूँ तो अभी आपकी लड़की के बराबर, मुल सैकड़ों ही कुओं का पानी पी डाला । पहले कौड़ी-कौड़ी बायें हाथ से रख जाइए, फिर असबाब उठाइए ।

अलामी--ने कबख्त, हम शरीफ़ भलेमानस हैं। शरीफ़ लोग कहीं दो पैसे के लिए ईमान बेचा करते हैं ! चलो, दामन छोड़ दो, अभी दम के दम में आये |

भठियारिन--इस दाम में बंदी न आयेगी | ऐसे बड़े साहूकार खरे असामी हो, तो एक गंडा चुपके से निकाल दो न !

बकाद--यह मुड़चिरी है या भठियारिन ! साहब, इससे पीछा छुड़ाओ | ऐसी भठियारिन तो कहीं देखी न सुनी ।

भठियारिन--मियाँ, कुछ बेघे तो नहीं हुए हो, या बिछी नाँध कर घर से चले थे ! चुपके से पेसे रख कर तब क़दरम उठाइए |

मियाँ जवाद सीघे-सादे आदमी थे । जब्न उन्होंने देखा कि मुफ़्त में घेरे गये, तो कहा--भाई, तुम पाँचों जाओ, हम यहाँ बी भठियारिन की खातिर से बैठे हैं | तुम लोग निपट आओ | वे सब तो उधर चले और जवाद सराय ही में भठियारी की हिरासत में बैठे, मगर एक आने पैसे न दे सके । दो-चार मिनट के बाद पुकारा-भठियारी-भठियारी ! मैं लेटा हूँ । कह्दीं ऐसा न दो कि तुम्हारे पेट में चूहे दौड़ें कि रफू-चक्कर हुए । फिर तीन मिनट के बाद गल्य फाड-फाड़ चिछाने छलगे--मठियारिन, हम भागनेवाले असामी नहीं हैं, तुम मज़े से अपनी दाल बघारो | जब इन्होंने बार-बार छेड़ना शुरू किया, तो वह आग-भभूका हो गयी और बोली-- मियाँ, ऐसे दो पैसे से दरगुज़्री, तुमने तो गुल मचा-मचा कर मेरा कलेजा पका दिया। आप जायें, बल्कि खटिया समेत दफ़न हों, तो मैं खश, मेरा अलाह खर। ऐ.वाह, 'देखी तेरी कालपी और बावन पुरे उजाड़ ।? मियाँ. हूँ तो अभी जुमा-जुमा आठ दिन की, मुल नाक पर तो मक्खी बैठने नहीं देती !

इधर मियोँ जवाद भठियारिन से चुद्दल कर रहे थे, उधर वे पाँचों आदमी सराय से चले, तो रास्ते में एक बुज़ुग से मुलाकात हुई।

हामी ने कह्दा-या मौलाना, एक मसला हु कीजिए; तो एहसान होगा |

बुजगं--मियोँ, मैं एक जाहिल, बेवकूफ, बेसमझ, गुमराह आदमी हूँ, मौलाना नहीं मौलाना होना दुश्वार बात है। मुझे मौलाना कहना इस रफज़ को बदनाम करना है ।

हदमी--अच्छा साहब, आप मौलाना न राह्दी, मुंशी सही, मियाँ सही, आप एक झगड़े का प्रेसला कर दीजिए और घर का रास्ता लीजिए । आपका हमारे बुजगोँ पर और बुजगों के बुज़्गों पर एहसान होगा । झगड़ा यह है कि यह साहब (आजाद की तरफ़ इशारा करके) नेचरी शायरी के तरफ़दार हैं, ओर हम चारोँ उर्दू -शायरी पर ज्ञान देते हैं। अब बतलाइए, इममें से कौन टीक कहता है और कौन राल्त !

बुजग--यह तो बहुत ग़ौर करने की बात नहीं । आप चारों मुफ़्त में झगड़ा करते हैं। आप सीधे अस्पताल जाइए और फ़र्द खुलवाइए,, शायरी पर जान देना समझदारों का काम नहीं | जान खुदा की दी हुई है, उसी की याद में लगानी चाहिए । बाक़ी रही दूसरे किस्म की शायरी, मैंने उसका नाम भी नहीं सुना, उसके बारे में क्या अर्ज़ कहूँ!

पाँचों आदमी यहाँ से निराश हो कर आगे बढ़े, तो एक मकतबलाना नज़र से गुजरा । दटा-फूटा मकान, पुरानी-धुरानी दालान, दीवारें बात्रा आदम के वक़्त की | एक मौलवी साहब लंबी दादी लटकाये, हाथ में छड़ी लिये, दिल-हिल कर पढ़ा रहे हैं और बीस-पचीस लड़के जदछ-काफ़िया उड़ा रहे हैं। एक लड़के ने दूसरे की चाँद पर तड़ से धप जमायी । मौलवी साहब पूछते हँ--अबे, यह क्या हुआ ! लड़के कहते हैं--जी, कुछ नहीं, तरइती गिर पड़ी । अबे, यह तइती को आवाज थी ! डी हाँ, और नहीं तो क्या ! इतने में दो-चार शरीर लड़कों ने मुँह चिदाना शुरू किया। देलिए मोलवी साहब, यह मुँह चिदाता है। नहीं मौलवी साहब, यह झक मारता है, में तो बाहर गया' था। गुल-गपाड़े की आवाज़ ऐसी बुलंद है कि आसमान की खबर लाती है, कान-पड़ी आवाज़ नहीं सुनायी देती । जिधर देखो, चिह्न-पों, जुती-पैज़ार ! मगर सब्र के सब हिल-द्दिल कर बड़चढ़ाते जाते हैं। कितात्र तो दो दी चार पद रहे हैं; मगर वाद्दी-तबाही, अनाप-शनाप बहुतों को जब्रान पर है ।

एक--आज शाम को में बाने की कनकद्रया ज़रूर लड़ाऊँगा |

दूसरा --आग़ा तक़ी के बाग में कोवा हलाल है |

तीसरा--अरे माली, तुझे गुलबूठे की पहचान रहे ।

चौथा--मौलवी साइब, गो पीर हुए, नादान रहे ।

पाँचवाँ--पढ़ोगे-लिखोगे, तो होगे खरात्र,

खेलोगे-कुदोगे, होगे नवात्र |

मगर सत्रकी आवाजें ऐसी मिल-जुल गयी हैं कि खाक समझ में नहीं आता, क्या खुराफ़ात बकते हैं| लोडे तो जद्रल-काफ़िया उड़ा रहे हैं, उधर मौलवी साहब मज़े से ऊँघते हैं । जब नींद खुली, तो एक लड़के को बुलाया--आओ, कितात्र लाओ, सबक पढ़ लो | वह सिर खुजलाता हुआ मौलवी साइबर के क़रीब जा बेठा, और सबक शुरू हुआ, मगर न तो लड़के ने कुछ समझा कि मैंने क्या पढ़ा और न मौलवी साइब को मालूम हुआ कि मैंने क्या पढ़ायः ! दोपहर के वक़्त लड़के तर्ती ले कर अऔठे, कोई गेंदे की पत्ती तख्ती पर मलता है, कोई कोड़ी से तख्ती को चिकनाता दै। आध घंटे तक यही हुआ किया । फिर लड़के लिखने बैठे, मौलवी साहब कोठरी से मक्खियों को निकाल ओर दरवाज़ा बंद करके सो रहे । यहाँ खूब छप्पा-डुग्गी हुई | दो घंटे के बाद मौलदी साइब चोंके । कोठरी खोलते हैं, तो यहाँ दो लड़कों में चट-पट हो रही है, दोनों गुँथे पड़े हैं। निकछते द्वी एक के तमाचे लगाने शुरू किये |

जो अमीर का छड़का था और मौलवी साहब को त्यवहारी ओर जुमेराती जब दिया करता था, उससे तो न बोले, बेचारे ग़रीब पर खूब हाथ साफ़ किया। आजाद ने दि में कहा-- गर हमीं मकतब अस्त वह मुल्ला, कारे तिफ़्लाँ तमाम ख्वाहद शुद । (अगर यही मकतब्र है और यही मौलवी, तो लड़के पढ़ चुके ।)

HINDI TEXT

प्रसंग ८

एक दिन मिर्यों आज़ाद सराय में बैठे सोच रहे थे; किधर जाऊँ कि एक बूढ़े मियाँ लछठिया टेकते आ खड़े हुए और ब्रोले-मियाँ, जती यह खत तो पढ़ लीजिए, और इसका जवाब भी लिख दीजिए। आज़ाद ने ख़त लिया और पढ़ कर सुनाने लगे--

मेरे खूसट शोहर, खुदा तुमसे समझे !

आजाद--वाह | यह तो निराठा ख़त है। न सलाम, न बंदगी। शुरू ही से कोसना झुरू किया |

बूढ़े---जनाब, आप ख़त पढ़ते हैं कि मेरे घर का कज़िया चुकाते हैं ! पराये झगड़े से आपका वास्ता १ जब मियाँ-त्रीत्री राजी है, तत्र आप कोई काज़ी हैं !

आजाद --अच्छा, तो यह कहिए कि आपकी बीत्री-जान का ख़त है। लीजिए, सुनाये देता हूँ--

'मेरे खूसट शौहर, खूदा तुमसे समझे ! सिकंदर पाताल से प्यासा आया; मगर तुमने अमृत की दो-चार बूँद जरूर पी छी हैं, जभी मरने का नाम नहीं लेते । कुछ ऊपर सो बरस के तो हुए, अब आखिर क्या आक़त्रत के बोरिये बयोरोगे ! ज़रा दिल में शरमाओ, हज़ारों नौजवान उठते जाते हैं, और तुम टेयाँ से मौजूद हो । डंकूफीवर भी आया, मगर तुम मूँछों पर ताव ही देते रहे | हेजे ने छाखों आदमी चट किये, मगर आप तो हेजे को भी चट कर जायें और डकार तक न लें । बुखार में इज़ारों दयादार चल बसे; मगर तुम और भी मोटे हो गये | तुम्हें लक़वा भी नहीं मारता, ढू के झोंके भी तुम्हें नहीं झुलसाते, दरिया में भी तुम नहीं फिसलछ जाते, और सो बात को एक बात यह दे कि अगर हयादार होते, तो एक चिल्लू काफी था; मगर तुम वह चिकने घड़े हो कि तुम पर चाहे हज़ारों ही पड़े पड़ें; लेकिन एक बूँद न थम सके । वाह पढ़ें, क्यों न हो | किस बुरी साइत में तुम्हारे पाले पड़ी। किस बुरी घड़ी में तुम्दारे साथ ब्याह हुआ | माँ-भाप को क्या कहूँ, मगर मेरी गरदन तो कुंद छुरी से रेत डाली । इससे तो किसी कुएँ ही में ढकेल देते, कसाई ही के हवाले कर देते, तो यह रोज-रोज़ का कुदना तो न होता । तुम ख़द द्टी इंसाफ करो | तुम्हारे बुटुभस से मुझ्न पर क्या गाज पड़ी । हाथ तो आपके कॉपत हैं, पाँव में सकत नहीं, मुंह में दात न पेट में आँत, कमर कमान को तरह झुकी हुई, आँखों की यद्द केफ़ियत कि दिन को ऊँट नहीं सूझता । लाठी टेक कर दस क़द्म चले भी तो साँस फूल गयी, दम टूट गया | सुस्ताने ब्रैठे, तो उठने का नाम नहीं लेते। सुबद को नन्द्वींनहवीं दो चपातियाँ खा लीं, तो शाम तक खट्टी डकारें आ रही हैं, तोला भर सिकंजबीन का सत्यनाश किया; मगर हाज़मा ठीक न हुआ ! द्वाफ़िज़े का यह हार कि अपने बाप का भी नाम याद नहीं । फिर सोचो ते कि ब्याह करने का शौक़ क्यों चर्राया । एक पाँव तो कब्र में लटकाया है और खयाल यह गुदगुदाया है कि दुल्दा बनें, दुलहिन लाये। खुदा-क्स्मम, जिस वक़्त तुम्हारा पोपछा मुँह, सफेर भौंद, गालों की झर्रियाँ, दोहरी कमर, गंजी चाँद और मनहूस सूरत याद आती है, तो खाना हराम हो जातो है। वाह बड़े मियाँ, वाह ! खूदा झूठ न बुलाये, तो हमारे अब्बाजान से पचास-साठ बरस बड़े होंगे, और अम्माजान को तुमने गोद

में लिलाया हो तो ताज्जुब नहीं। खुदा गवाह है, तुम मेरे दादा के बाप से भी बड़े हो, मगर वाद री क्रिस्मत, कि आप मेरे शौहर हुए ! जमीन फट जाय, तो मैं पँस जाऊँ।

“““तुम्दारी जवान बीती”

आज़ाद--अनाब, इसका जवात्र किसी बड़े मुंशी से दिख्वाइए |

बूदा--बुढापे में अब कभी शादी न करेंगे ।

आजाद--वबाह, क्या अभी शादी करने की हवस जाकी है १ अभी पेट नहीं मरा !

बूटा--अब् इसका ऐसा जवात्र लिखिए कि दाँत खट्टे हो जाय ।

आजाद--आप औरत के मुँह नाहइक़ लगते हैं ।

बूदा--जनाब, उसने तो मेरी नाक में दम कर दिया, और सच पूछो, तो जिस दिन उसको ब्याह लाये, नांक ही कट गयी। ऐसी चंचल औरत देखी न सुमी । मजाल क्या कि नाक पर मकखी बैठ जाय ।

आखिर, आज़ाद ने पत्र का जवाब लिखा--

'मेरी अल्बेली, छेल-लब्रीढ़ी, नादान बीवी को उधके बूढ़े शौहर की उठती जवानी देखनी नसीत्र हो । वह जुग-जुग जिये और तुम पूर्तों फलो, दूर्धों नहाओ, अठारदइ लड़के हों और अठारद दुनी छत्तीस छोकरियाँ । जत्र मैं दाला- में क्रम रखैं , तो रात्र बच्चे, “अब्बा आये, अब्बा आये, खिलौने लाये, पटाखा लाये? कह कर दौड़ें। मगर डर यद्द है कि तुम भी अभी कमसिन दो, उनकी देखा-देखी कहीं मुझे अब्बा न कह उठना कि पास-पड़ोस की औरतें मुझे उँगलियों पर नचायें। मुझे तुमसे इतनी ही मुदृन्बत है, जितनी क्रिसी को अपनी बेटी से होती है। अपनी नानी को मैं ऐसा प्यारा न था, जितनी तुम मुझे प्यारी हो । और क्यों न हो, तुम्दारी पददादी को मैंने गोदियों में खिल.या है और मेरी बदन ने उसे दूध पिलाया है। मुझे तुम्दारी दादी का गुड़िया खेलना इस तरह याद है, जैसे किसी को सुत्रह्द का खाना याद हो | तुम्दारे खत ने मेरे दिल के साथ वह किया, जो बिजली खलियान के साथ करती है, लेकिन मुझमें एक बड़ी सिफ़त यह दै कि परले सिरे का वेहया हूँ । और क्यों न द्वा, शर्म औरतों को चाहिए, मैं तो चिकना घड़ा हूँ । माना कि आँखों में नूर नहीं, मगर निगाह बड़ी बारीक रखता हूँ बहरा सदी, लेकिन मतलब की बात खूत्र सुनता हूँ, बुड्ढा हूँ, कमजोर हूँ, मगर तुम्हारी मुहब्बत का दम भरता हूँ। व़ुम्हारा प्यारा-प्यारा मुखड़ा, रसीली अँखियाँ गोरी-गोरी बढ़ियाँ जिस वक़्त याद आती हैं, केजे पर साँप लोटने लगता है | तुम्दारा चाँदनी रात में निखर कर निकलना, कभी मुसकिराना, कमी खिल खलाना--कितना शरमाना ! कैसा. लब्ाना ? और तो और, तुम्दारी कुर्ती मे दिक लोट-पोट है, कलेजे पर चोट है ।त़ुम्दारा फिरकी की तरह चारों ओर घूमना, मोरों की तरह झरमना, कभी खेजते-खेलते मेरी चपतगाहइ पर टीप जमायी, कभी शोखी से वह डॉट बतायी कि कछेजा काँप उठा, कभी आप ही आप रोना, कभी दिन-दिन भर सोना, अव्हड्यन के दिन, बारह बरस का पिन, बीनीजान, तुम पर कुरतरान, ले कहा मानो, हमें ग़नीमत जानो । में सुबह का चिराग हूँ, हवा चले या न चले, अन्न गुल हुआ, अब गुल हुआ । द्वबता हुआ आपफ़ताब्र हूँ, अब ड्रबा, अब ड्रबा | मुझे सताना, मुए पर सौ दुरं ! तुम खूब जानती हो कि मेरी बातें कितनी मीठी द्वोती हैं | सत्तर घरस हूं गये कि दाँत चूहे ले गये, तत्र से हडए पर बसर है, फिर जो रोज़ हुआ खायगा, उसकी बातें मीठी क्यों न होंगी। तुम लाख

रूठो, फिर भी हमारी हां, बीत्री हो, वह शुभ घड़ी याद करो: जत्र हम दूल्हा बने, पुराने सिर पर नयो पयड़ी जमाये, सेहरा लट्काये, मेंहदी छगाये, मुर्गी के बराबर घोड़िया पर सवार, 'मीठी पोई? जाते थे, और तम दुलहिन बनी, सोलद्द सिंगार किये पालकी में से झाँक रद्दी थीं। हमारे गालों की झरियाँ, हमारा पोपला मुँह, हमारी टेढी कमर देख कर खुश तो न हुई होगी ! और क्या लिखूँ , एक नसीहत याद रखो, एक ता मेले-ठेले न जाना, दूसरे आस-पास की छोकरियों को गुइयाँ न बनाना । खुदा करें, जब तक जमीन और आसमान क्रायम है, तुम जवोन रही, और नादान रहो; हमारे सफ़द बाल तुम्हें भायें, दासिद खार खाये | तुम्दारा बूदा शौहर!

बूदा--माशा-अल्लाह | आपने खूब लिखा, मगर इस खत को छे कौन जाय ! अगर डाक से भेजता हूँ, तो गुम होने का डर, उस पर तीन टिन की देर। अगर आप इतना एह्सान करे कि इसे वहाँ पहुँचा भी दें, तो क्या पूछना ।

आज़ाद सैलानी वो थे ही, समझे, क्या इज है, सॉड़नी मौजूद है, चदूँ, इसी बहाने ज़रा दिछगी देख आऊँ। कुछ बहुत दूर भी नहीं, साँड़नी पर मुश्किल से दो घंटे की राह है। बोले-- आप बुज़गे आदमी हैं, आपका हुक्म बचा लाना मेगा फर्ज है, लीजिए जाता हूँ ।

यह कद्द कर साँडनी पर बैठे और छुन-छुन करते जा पहुँचे । दरवाजे पर आवाज दी, तो एक कद्दारिन ने बाहर निकल कर पूछा--मियोँ कौन हो, कहाँ से आना हुआ किसकी तलाश है !

आजाद- बी महरी साहबा, सलाम | हम मुसाफ़िर परदेशी हैं ।

कहारिन --वाह ! अच्छे आये मियोँ, यह क्या कुछ सराय है !

आज़ाद--खुदा के लिए बेगम साहबा से कह दो कि बड़े मियाँ ने एक ख़त भेजा है।

महरी ने एक चौकड़ी भरी, तो घर के अंदर थी। जा कर बोली--बीबी, मियाँ के पास से एक साइब आये हैं, खत लाये हैं ।

वह चोंक उठी-चड झूड़ी, किसी और को जा कर उड़ाना, यहाँ कथ्ी गोलियाँ

नहीं खेली हैं | मियाँ किसी ऋत्अस्तान में मीठी नींद सो रद्दे होंगे कि खत भेजेंगे ! ॥।

महरी - बरी, झरोखे से झोँकिए तो; वह क्या सामने खड़े हैं ।

बेगम साहबा झरोखे की तरफ़ चलीं, तो अपनी बूढ़ी अम्माँ को आइना सामने रखे, बाल सँवारते देखा | छेड कर बोलीं-- ऐ अम्मा, आब तो बेतौर चोटी-कंघी की फ़िक्क है। कोई घूरे; तो इंसान निखार करे | कोई मरे, तो आदमी शिकार करे। तुम दो ऊपर अस्सी बरस की हुई, मगर जवानी की हवस न गयी । खदा ही खेर करे ।

अम्मो--मुश्त नसीबों-जली की किस्मत में यही बदा था कि बेटी की ज़बान से ऐसी-पेसी बाते सुझूँ । कोई और कद्दती, तो उसकी जबान निकाल लेती; लेकिन तुम तो मेरी आँखों की पुतली हो। द्वाय ! ममहा बुरी चीज़ है! बेटा, तुम ये बातें क्या जानो, अमी जवान दो, नादान हो, दनावट-सजावट तो मेरी धूँटी में पड़ी थी, और में न बनती-ठनती, तो तुम्दारी आँखों को तिरछी चितबन कौन सिखाता ? बाहर जाओ, तुम्हारे मियाँ का आदमी आया है|

बीबी ने झरोखे से जो देखा, एक आदमी सचमुच खड़ा है, और हे भी अल्बेला, छेला, जवान, तो तुरंत महरी को भेजा कि जा कर उन्हें बैठने के लिए कुर्सी निकाल दे। आज़ाद तो कुर्सी पर बैठे और चिक के उधर आप जा बैठीं। आजाद की उन पर निगाह पड़ी, तो तीर सा ढग गया । कमर ऐसी पतली कि साये के बोझ से बल खाये, मुखड़ा बिन घने चाँद को लजाये, उस पर सियाह रेशमी लिबास और हिना की बू-बास । जोबन फटा पड़ता था, निगाह फिसली जाती थी ।

महरी ने आज़ाद से पूछा--बड़े मियाँ तो आराम से हैं !

आज़ाद- हाँ, में उनका ख़त छाया हूँ । अपनी बेगम साइबा से मेरा सलाम कहो और यद्द खत उनको दों।

महरी--बेगम साहबा कहती हैं, आप खत छाये हैं, तो पढ़ कर घुना भी दीजिए ।

आजाद ने खत पद कर सुनाया, तो उस नाजनीन का चेहरा मारे ग़स्से के सुखे हो गया । बिना कुछ कहे-सुने समझ कर वहाँ से उठीं और अपनी माँ के पास आ कर खड़ी हो गयीं । अम्मौजान इस वक़्त चाँदनी की बहार देखने में मसरूफ़ थों। बोलीं--बेटी, देख तो क्या नूर की चांदनी छिटकी हुई है, चाँद इस वक़्त दुलह्दिन बना हुआ दे !

बेटी-- अम्मीजान, तुम्दारी भी अनोखी बातें हें । सरदी की चाँदनी, जैसे बूढ़े की नसीबों-जली बीजी की जवानी । आज तो असमान यों ही झक-झक कर रहा है, आज निकल्य तो वया, जब जानें कि अँपेरे-धुप में शक्ल दिखाये । बुढ़िया ताड़ गयी । बोली-बेटी, जरी सब्र करो, अपनी जवानी की कसम, बुद्डा तो क्रत्न में पाँव छटकाये बैठा है आज मुआ, कल दुरुरा दिन, फिर इम तुमको किसी अच्छे घर ब्याईंगे । अबकी खदाई भर की खाक छान कर वह दँद निकादें , जो लाखों में एक हो। सुबह-शाम ख़बर आना दी चाहती दे कि बुद्या चछ बसा ।

यह सुन कर वेटी छिछखिला कर हँस पड़ी । वोढी--अम्माँ, जब तुम अपनी जवानी की कसम खाती हो, तो मुझे बेअख्तियार हंसी आती है। ठुम तो अपने को बिलकुल नन्ीं ही समझती हो। करोड़ों तो आपके गाछों पर धुर्रियों, बगुले के पर का सा सफेद जूहा, सिर घड़ी का खटका बना हुआ, कमर टेढी, मगर मेंददी का लगाना न छूटा, न छूटा। रंगीन दुपट्टा ह्वी उम्र मर ओढ़ा, जब देखो, कंधी-चोटी से लेस । खदा क़श्तम, ऐसी अनगढ़ बूदी देखी न सुनी ।

बुढ़िया ने ट्श्याँ तोते को तरद्द पोपले मुँह से कहा--प्यारी, तुम्हारी बातों से मुझे होल होता है, अल्लाह मेरी बच्ची पर रहम खाये, बूढ़े के मरने की ख़बर सुनाये ।

महरी- बड़ी बेगम, आपके नमक की क़सम, साहबज़ादी को दिलोजान से आपका प्यार है; मगर मोली नादान है, जो अनाप-शनाप मुँह में आया, कद सुनाया । अल्हड-पने के तो इनके दिन ही हैं, जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायस, नेक-बद, ऊँच-नीच क्या जानें । जब सयानी होंगी, तो शहूर आपी-आप सीख जायेंगी। बुढ़िया ने एक ठंडी साँस भरके कहा--जो मुझे इनकी बातों से रंज हुआ हो, तो खुदा मुझे जन्नत न दे । मगर करँ क्या, बुरा तो यह मादम होता है कि मुझको यह आये-दिन ताने देती है कि तुम बुदिया दो, बुढ़ापे में निखरती क्यों हो ! मैं किससे कहूँ कि इसके ग़म ने मेरी कमर तोड़ डाली, इसको कुढ़ते देख कर घुली जाती हूँ, नहीं, अभी मेरा सिन ही क्या है ! अच्छा, तू द्वी ईमान से कष्ट, कोई और भी मुझे बूढ़ी कहता है !

महरी दिल में तो हँसती थी कि इन्हें जवान बनने का शौक चराया है, दौवा के साथ खेली होंगी, मगर अमी नन्ह्रीं ही बनी जाती हैं; लेकिन छटी हुईं औरत थी, बात बना कर बोली--ऐ. तोबा, बुढ़ापे की आप में तो छाँद भी नहीं, मेरा अकाह जानता है, जब आप और बिटिया को कोई साथ देख छेता है, तो पहले आप पर नज़र पढ़ती है पीछे इन पर | बल्कि, एक मुई दिलजली ने परसों चुटकी ली थी कि "छोटी बी तो छोटी बी; बड़ी बी सुभान-अलाह ।" लड़की तो खेर, इसकी माँ ने ता ख़ब काठी पायी है | आपका चेहरा कुंदन की तरह दमकता है, थो देखता है, तरसता है ।

बुढ़िया तो खिल गयी लेकिन बेटी जल उठी। कड़क कर बोली--चल, चुप खशा मर्दिन ! अल्लाह करे, तेरा मिर्यों भी मेरे मियाँ फा खा बुद्ा हो जाय | और तुम खशा मद न करो, तो खाओ क्या ! अम्माँ पर लोगों की नज़र पढ़ती है ! झठे पर शेतान को फटकार | बूढ़ी औरत, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन, लठिया टेक कर दस क़दम चलती हैं, तो घंटों ती हैं। दिन फो ऊँट और सारसं नहीं सूझता, इनके बढ़े नखरे देख कर इ आती है। जी जलता हैं कि यह किस बिरते पर इतराती हैं, मुँह में दांत नै थे. | अंत; भला कमर तो मेरे सबब से झुक गयी, और दाँत क्या हुए !

आखिर, महरी ने उसे समझा-लुझा कर बात टाल दी, और बोली--वह मिर्याँ बाहर ैठे हैं, उनके लिए आप क्या .कद्दती हैं ! उसने महरी की बात का कुछ जवाब न दिया | वहाँ से उठ कर बगीचे में आयी और इठला-इठछा कर टहलने छूगी । बाल बिखरे हुए, यही मादूम द्वोता था कि साँप लद्दरा रदा है। कमर लाखों बल खा रही है। मिर्यों आजाद ने चिक की दराजों से जो उसे बेनक्राब देखा, तो सन से जान निकछ गयी ! कलेजे पर साँप छोटने लगा । संयोग से उस रमणी ने कहीं इनको देख लिया कि आँखें सेक रहे हैं और दूर दो से जोबन रूट रहे हैं, तो बदन को छिपाये, आँख चुराये, पिजली की तरह लॉक कर नज़र से ग़ायब हो गयीं। आज़ाद हैरान कि अब क्या करू। आखिर, दिल की त्रेक़रारी ने ऐसा मजबूर किया कि आठ-आठ आँसू रो कर यह ग़ज़ल गाने छगे--

क्या जानिए कि वस्ल में क्या बात हो गयी; आँखें नहीं मिलाते ई शरमाये जाते हैं।

दिल मेरा लेके क्या कहीं भूल आये हैं हुजर !
खोये हुए से आप जो कुछ पाये जाते हैं।
काले डसे जो जुरुफ़ तुम्हारी कमी चछुएँ !
लो, अब तुम्हारे सिर की क़सम खाये जाते हैं ।

तमकनत को न काम फ़रमाओ;

एक नज़र मुड़के देखती जाओ। आशिकों से न इस क्रदर शरमा; एक निगह के लिए न आँख चुरा।

जाने-जाँ, कुछ तरस न खाओगी !

यों तड़पता ही छोड़ जाओगी १

वह इन-ऐसों की कब सुननेवाढी थी, मुद्ध कर देखना गाली थी । आज़ाद ने जत्र देखा कि यहाँ दाल गलने की नहों, कोई यों टहलते हुए देख ले, तो लेने के देने पड़ें, तो बेचारे रोते हुए घर आये ।

उघर उस नाज़नीं ने जवानी की उमंग में यद्द ठुमरी भेरवी की धुन में लहरा-लद्दरा कर गायी-- पिया के

आवन की भयी तिरियाँ, दरवजवा ढादी रहूँ; मोरे पिया को बेगि ले आओ री, निकसत जियरा जाय; पिया दरवजवा ठादी रहेँ !

इसके जवाब में उनकी अम्माँजान टीपदार आवाज़ में क्या कहती हैं-- जोबनवाँ हो, चार दिना दीन्हों साथ | जोबन रितु जात सभी मुख मोरत, "कदर" न पूछे बात रे । जोबनवाँ हो, चार दिना दीन्हों साथ । म्ियाँ आजाद ने चलते-चलाते बाहर से यह तान रूगायी-- तेरे नैनों ने मुझे मारा, रसीली मतवारियों ने जादू डारा।

महरी ने देखा कि सबने अपने-अगने द्वाल के मुताबिक हाँक लगायी। एक में ही फिसड़ी रद्द गयी, तो वद्द भी कफ़न फाड़कर चीख उठी-- जाओ-जा ओ, कादे ठादढ़े डारे गल-बाहीं रे ? घेरे रद्दत नित नेरे जेसे छाई रे।

जानत हूँ जो इमसे चहत दो
नाइक इतनी ब्रिनती करत हो,
"कदर? करत दो अरे नादी-नाहीं रे।
जाओ चलो, काहे टादे डारे गल-चाहीं रे !

HINDI TEXT

प्रसंग ९

आज़ाद को नवात्र साइब के दरबार से चले महीनों गुजर गये, यहाँ तक कि मुह रैम आ गया । घर से निकले, तो देखते क्या हैं, घर-घर कुहराम मचा हुआ है, सारा-शहर हुसेन का मातम मना रहा है। जिधर देखिए, तमाशाइयों की मीड़, मजलिसों की घूम, ताजिया-खानों में चहछ-पहल और इमामबाड़ों में मीड़-भाड़ है | ठलखनऊ की मजलितसों का क्या कद्दना ! यहाँ के मर्तिये पढ़नेवाले रूम और शाम तक मशहूर हैं। हुसेनावाद का इमामबाड़ा चौददवीं रात का चाँद बना हुआ था | उनके साथ एक दोस्त भी हो लिये थे । उनकी बेक़रारी का हाल न पूछिए | बह छखनऊ से वाक्रिफ़ न ये, लोटे जाते थे कि हमें छखनऊ का मुहरंम दिखा दो; मगर कोई जगह छूटने न पाये। एक आदमी ने टंडी साँस खींच कर कह्ा--मियाँ; अब वह लखनऊ कहाँ ?! वे लोग कहाँ १ वे दिन कहाँ १ लखनऊ का मुद्द रम रंगीले पिया जानआल्म के वक्त में अलबत्ता देखने काबिल था। जब देखो, बाँकों की तलवार मियान से दो उंगल बाहर | किसी ने जरा तीखी चितवन की, और उन्होंने खट से सिरोही का तुला हुआ द्वाथ छोड़ा, मंडारा खुल गया । एक-एक घंटे में बीस-बीस वारदातों की खबर आती थी, दुकानदार जूतियाँ छोड छोड कर सटक जाते ये | वह धक्कमधक्का, वह भीड़-भड़ाका होता था कि वाह्द जी वाह | इंतिजाम करना खालाजी का घर न था। “अब कोई चूँ भी नहीं करता, तब छोटे-छोटे आदमी इज़ारों छुटाते थे, अब कोई पेसा भी खर्चे नहीं करता । अब न अनीस हैं, नं दबीर, न ज्षमीर हैं, न दिल्गीर । 8

अफ़सोस जहाँ से दोस्त क्या-क्या न गये ; इस आरा से क्या-क्या गुलेराना न गये ।

था कोन सा बाग, जिसने देखी न खिर्जों,

वो कौन से गुल खिले धो मुरझ्झा न गये ।

दबीर का क्या कहना था, एक बंद पढ़ा और सुननेवाले छोट गये। अनीस को खुदा बख़्शे, क्या कलाम था, गोया बवाह्दिरात के ढुकड़े हैं । लेकिन द्वाथी छुटेगा भी, तो कहाँ तक | अब भी इस शद्दर की ऐसी ताज़ियादारी दुनियाँ मर में कहीं नहीं दहोती।

आजाद और उनके दोस्त चले जाते ये। राह में वह भीड़ थी कि कंधे से कधा छिलता था । हवा भी मुश्किल से जगह पाती थो । ग़रीब-अमीर, बढ़े-जवान उमड़े चले आते हैं। जिघर देखो, निराली हीं सज-धचज । कोई हुसेन के मातम में नंगे ही सिर चला जाता है, कोई देस-हरा जोड़ा फड़काता है | इसीनों की मातमी पोशाक, बिखहे छुछ बाल, कभी लजाना, कभी मुसकिराना । शोददों का सौ-सौौ चकफेरियोँ लगाने.

के ठखुनऊ के मशहूर मर्तिया कहने वाके |

तमाशाइयों की बाते, दिद्ातिनें बंदी लगाये, फरिया फड़काये, गोंद से पटिया जमाये बातें कर रही हैं | लीजिए, आगा बाक़र के इमामबाड़े में खट से दाखिल । वाह मियोँ बाकर, क्यों न हो, नाम कर गये।

चकाचोंध का आलम है | लेकिन गली तंग, तमाशाइयों की अक़्छ दंग । मगर छोग घुस-पैठ कर देख ही आते हैं। नाक हूटे या सिर फूटे, आग़ा बाकर का श्मामबाड़ा जरूर देखेंगे ।

दोनों आदमी वहाँ से आगे बढ़े, तो कच्चे पुल पहुँचे । देखते क्या हैं, एक बाबा आदम के जमाने के बूढ़े अगले वक़्तों के लोगों को रो रहे हैं। वाह-वाह ! लखनऊ के कुम्दार, क्या कप्ाल हैं। बुड्ढा ऐसा बनाया कि मादूम होता है, पोपले मुँह से अब बोला, और अब बोला । वही सन के से बाल, वद्दी सफेद भौहिं, वही चितवन, वही माथे की शिकन, वही द्वाथों की ध्रूर्रियाँ, वद्दी टेढी कमर, वही झुका दुआ सीना । वाह रे कारीग़र, तू भी अपने फ़न में यकता है । वहाँ से जो चले, तो दारोगा वानिदअली के इमाभबाड़े में आये । यहाँ सूरज-मुखी पर वह जोबन था कि आपताब अगर एक नज़र छिप कर देख गता, तो शर्म के मारे मुँह छिपा लेता | बेघडक जा कर कुर्तियों पर बैठ गये। इलायची, चिकनी डली पेश की गयी। बहाँसे हुसेनाबाद पहुँचे | घुभान-अछाइ ! यह इमामबाड़ा हे या जन्नत का मकान ! क्या सजावट थी; बुज़ों पर कंदीलें रोशन थीं, मीनारों पर शमा जलती हुई चिराणों की कतार हवा के झोंक़ों से लददरा-लह्दरा कर अजब सर्मों दिखाती थी। नजर जो देखी, तो आँखें ठंडी दो गयीं ।

अन्न इनके दोस्त को शौक़ चर्राया कि तवायफ़ों के इमामत्राड़ों की जियारत करे | पहले मियाँ आज़ाद झिश्के और बोले--बंदा ऐसी जगह नहीं जाने का, अपनी शान के खिलाफ़ है । दोस्त ने कह्ा--भाई, तुम बड़े रूखे-फो के आदमी हो | हैदर, मुश्तरी, गौहर भौर आबादी के मर्सिये न घुने, तो किसी से क्या कहेंगे कि लखनऊ का मुदरंम देखा । आजकल वहाँ जाना दलाल है ! इन दस दिनों में मजे से जहाँ चादे जाइए, रंगीन कमरों में दो गाल हँस-बरोड आइए, कोई कुछ नहीं कद्द सकता ।

आजाद--यह कह्िए तो खैर, बंदा भी ल्हू लगा कर शहीदों में दाखिल हो जाय । पहले ग़ौददर के यहाँ पहुँचे । अच्छे-अच्छे रईस-जादे बैठे हुए हैं । एक बड़े मालदार जौहरी साहब मटकते हुए आये । दस रुपये की कारचोबी टापी सिर पर, प्याज्ी अतल्स की भड़कीली अचकन पहने हुए। खिदमतगार के कंघे पर कीमती दुशाला | यह ठाट-बाट, मगर बैठते ही टोके गये । बेठे तो जरीद (ताड़िया) की तरफ भ्रीठ करके ! ग़ौहर ने एक अड्डीब अदा से सिड़क दिया--ऐ काह, बड़े तमीज़दार हो। जरीद की तरफ़ पीठ कर ली | सीघे बैठो, आदमियत के साथ !

मियाँ आजाद ने चुपके से दोस्त के कान में कद्ा--मियों, इस टीम-टाम से तो आये, मगर घुड़की खा कर पमिनके तक नहीं ।

दोस्त--भाईजान, ग्रौंदर लखनऊ की जान है, लखनऊ की शान है। ऐशा खधनसीब कोई हो तो छे कि इसकी घुड़्कियाँ सदे ।

लोग अदब से गरदन झ्वफाये बैठे कनखियों से आँखों को सेक रद्दे थे, लेकिन किसी के मुँह से बात न निकलती थी। यहाँ से उठे, तो फिरंगी-महल में हैदरजान के यहाँ पहुँचे | वहाँ मसिया हो रह्दा था--

निकले खेमे से जो हथियार लगाये अब्बास,
चढ़ के रहबार पर मेदान में आये अब्बास |

इस शेर को ऐसी प्यारी आवाज़ से अदा किया कि सुननेवाले लोटन कबूतर हुए जाते ये । गग और

रागिनी तो उसकी लींडियाँ थीं। सबके सब सिर घुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है ! प्रियाँ आज़ाद की बाँछें खिडी जाती थीं और गरदन तो घड़ी का खटका हो गयी थी।

यहाँ से उठे, तो मुइतरी के कमरे में पहुँचे। देखनेवालों का वह हुजूप था कि तिल रखने की जगह नहीं |

खैजर जो बोसा गादे पयंबर पे चल गया? इसको झेझ्ौटी की धुन में-इस ठत्फ से पढ़ा कि लोग फइक उठे |

दो .त- क्यों यार, क्या लखनऊ में जेवर पहनने की कसम हे !

आज्ाद--भाई, तुम त्रिलकुछ ही गैंवार हो। मातम में जबर का क्या ज़िक है ! गोरे-गोरे कानों में काले-काले करनफूल, हाथों में सियाह चूड़ियाँ, बस यहां काफ़ी है| लेकिन यह सादगी भी अज़ीत्र दुत्फ़ दिखाती है।

यहाँ से उठ कर दोनों आदमी मातम की मजलिसों में पहुँचे । जिधर जाते हैं, रोने-पीयने की आवाज आती है; जिसे देखिए, आँखों से आँसू बहा रहा है। सारी रात मजलिसों में घूमते रहे, सुबह अपन घर पहुँचे ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०

वक्तत के दिन आये। आज़ाद को कोई फ़िक्र तो थी ही नहीं, सोचे, आज वसंत की बहार देखनी चाहिए । घर से निकल खड़े हुए, तो देखा कि हर चीज़ जद है, पेड़-पत्ते जद, दरोदीबार जर्द, रंगीन कमरे ज़र्द, लिब्रास जर्द, कपडे जर्द | शाहमीना की दरगाह में धूम है, तमाशाइयों का हुजूम है । हसीनों के झमकड़े, रैंगीले जवानों की रेल-पेल, ईंद्र के अखाड़े की परियों का दगल है, जंगल में मंगल है। वसंत ही बहार उमंग पर है, ज़ाफ़रानी दुपट्टों और केसरिये पाजामों पर अजब जोवन है । वहाँ से चौक पहुँचे । जौहरियों की दूकान पर ऐसे सुंदर पुखराज हैं कि पुखराज-परी देखती, तो मारे शर्म के हीरा खाती और इंद्र का अखाड़ा भूल जाती । मेवा बेचनवाली जर्द आलू, नारंगी, अमरूद, चकोतरा, महतात्री की बहार ब्खिलाती है, चंपई दपष्टे पर इतराती है। माहिन गेंदा, हज़ारा, जर्दे गुलाब की बू-बास से दिल खश करती है। और पुकार-पुकार कर 5पांती है, गेंदे का हार है, गले की बद्दार है। हलवाई खोपड़े की ज़ुई बर्फी, पिस्ते की बर्फ़ी, नानखताई, बेसन के लड्डे , चने के लड़ दुकान पर सजाये बैठा है | खोंचेबाले पापड़, दाल्मोट, सेव वगैरह बेचते फिरते हैं। आज़ाद यही बह्दार देखते दिल ब्रहलाते चले जाते ये । देखते क्या हूँ, लाला वसंतराय के मकान में कई रंगीले जवान बॉको टोपियाँ जमाये, वसंती पगिया बॉधे, केसरिये कपड़े पहने बेटे हैं । उनके सामने चंद्रमुखी औरतें बैठी नौबहार की धुन में वसंत गा रही हैं। कालीन जर्द है, छत-पोश ज:, कंबल जर्द, जर्द झालर से मकान सज्ञाया है, वसंत-पंचमो ने दरोटीवार तक को वर्सती व्ब्रास पहनाया है| कोई यह गीत गाती है-- कतु आयी बसंत अजब बहार ; खिले जद फूल बिरड़ीं को डार । चटक्यो कुछुम, फूल लागी सरसों, झूमत चलत गेहूँ को आर | हर क द्वारे माली का छोदरा ; गरवा डारत गेंदों के हार । टेसू फूले, अंबा बौरे " चंपा के रूख कलियन की बहार । गरवा डारे उस्ताद के द्वारे ; खलो सब सलियाँ कर-कर सिंगार। कोई मियां अमानत की यह राज़ल गाती है-- है जलवए तन से दरोदीवार बसंती ; पोशाक जो पहने है मेरा यार बसंती ।

क्या फ़रले बहारी में शिगूफे हैं खिलाये ; माथक् हैं फिरते सरे-बराजार बसंती। गंदा है खिला वार में, मैदान में सरसों ; सहरा वह बसंती है, यह गुल्जार बसंती । मुँह जर्द दुपट्टे के न आँचल से छिपाओ ; हो जाय न रंगे गुले-दखसार बसंती |

आज़ाद चले जाते थे कि एक नयी सब-घज्ज के बुजगे से मुठभेड़ हुई । बड़े तजुबे कार, खर्राट आदमी थे । आजाद को देखते ही बोले--आइए-आइए खूब मिले। वलाह, शरीफ़' की सूरत पर आशिक हूँ। चीन, माचीन, हिंद और सिंध, रूम और शाम, अल्यरज, सारी खुदाई को बंदे ने खाक छानी है, और तू यार जानी है। सफ़र का हाल सुन, मुंघरू बोले छुन-छुन | ऐमी वात सुनाऊँ, परी को लभाऊँ, जिन को रिझाऊँ, मिसर की दास्तान सुनाऊँ ।

यह तक़रीर सुन कर आज़ाद के द्ोश पेतरे हो गये, समझ में न आया, फोई पागल है, या पहुँचा हुआ

फ़कीर । मगर आसार तो दीवानेपन के दी हैं ।

खुरोंट ने फिर बढ़-बड़ाना शुरू किया--सुनो यार, कददता है खाकसार, हम सो रहें तुम जागो, फिर हम उठ बैठे, तुम सो रहो, सफ़र यार का है, सोते-जागते राह कार्टे, सफ़र का अंधा कुआँ उन्हीं ह्रंटों से पार्ट ।

यह कद कर खुर्राठ ने एक खोंचेवाले को बुलाया और पूछा--खुटियाँ कितने सेर १ बर्फी का क्या माव ! लड्डू पैसे के के ! बोलो झटपट, नहीं हम जाते हैं। खॉंचे वाले ने समझा, कोई दीवाना है। बोला-पैसे भी हैं या भाव द्वी से पेट मरोगे !

खुर्रट--पैसे नहीं हैं, तो क्या मुफ़्त माँगते हैं ! तौल दे सेर भर मिठाई ।

मिठाई ले कर आज़ाद को ज़िद करके खिलायी, ठंडा पानी पिल्वाया और बोले-- शाम हुई, अन्र सो रहो, हम असबाब ताकते हैं। मियाँ आज़ाद एक दरख्त के नीचे लेटे, खुरोंट ने ऐसी मीठी-मीठी बातें कीं कि उन्हें उस पर यक्रीन आ गया | दिन मर के थके थे द्वी, लेटते ही नींद आ. गयी । सोये तो घोड़े बेच कर, घिर-पैर की खबर नहीं गोया मुर्दों से शर्त लूगायी है | वह एक काइयाँ, दुनिया-भर का न्यारिया, उनको ग़।फ़िल पाया, तो घड़ी, सोने की चेन, चाँदी की मूठवाली छड़ी, चाँदी का गिलौरीदान ले कर चलता हुआ । आध घंटे में आज़ाद की नींद खुली, तो देखा कि खुर्राट ग़ायत्र है, घड़ी और चेन, डब्बा और छड़ी भी ग़ायत्र | चिल्लाने छगे--लूट लिया, जालिम ने छूट लिया । शाँसा दे गया | ऐसा चकमा कमी न खाया। दौड़ कर थाने में इचला की | मगर खुरांट कहाँ, वह तो यहाँ से दस कोस पर था। बेचारे रो-पीट कर बैठ रदे !. थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक चौरादे पर एक जवान को मुदकी घोड़े पर सवार आते देखा । घोड़ा ऐसा सरपट जा रद्द था कि हवा उसकी गद तक को न पहुँचती थी। आँपेरा हो ही गया था, एक कोने में दबक रदे कि ऐसा न हो, कहीं शपेट में भा बायें। इतने में सवार उनके सिर पर आ खड़ा हुआ । झट घोड़े की बाग रोकी और इनकी तरफ़ नज़र भर कर देखने लगा । यह चकराये, माजरा कया है ! यह तो बेतरद घूर रहा है कहीं हँटर तो न देगा ।

जबान- क्यों हज़रत, आप किसी को पहचानते मी हैं! ख़दा की शान, आप और हमको भूल जाँय |

आजाद--प्रियाँ, तुमको धोखा हुआ होगा। मैंने तो कभी तुम्हारी सूरत भी नहीं देखी ।

जवान--लेकिन मैंने तो आपकी सूरत देखी है; और आपकी पहचानता हूँ । क्या इतनी जल्दी भूल गये | यह कद्द कर वह जवान घोड़े से उतर पड़ा और आज़ाद से चिमट गया ।

आजाद--आपको सचमुख धोखा हुआ ।

जवान--भाई, बड़े भुलक्कड़ हो |! याद करो, कॉलेज में इम-तम, दोनों एक ही दर्ज में पढ़ते ये। वह किइती पर हवा खाने जाना और दरिया के मज़े उड़ाना; वह मदारी खोनेगाला, वह उकलेदिस के वक्त उड़ भागना; सब भूल गये ! अब मियाँ आजाद को याद आयी। दोस्त के गले से लिपट गये और मारे खशी के रो दिये ।

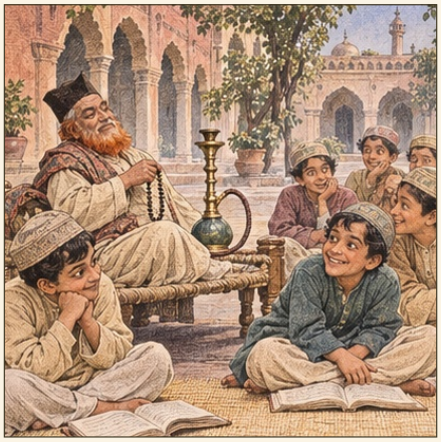
जवान--तुम्हें याद होगा, जब्र में इंटरमीडिएट का दृम्तिहान देने को था, तो मेरे पास फीस का भी ठिकाना न था । रुपये की तलाश में इधर-उघर भटकता फिरता था कि राह में अस्पताल के पास तालाब पर तुमसे मुलाक़ात हुई और तुमने मेरे दाल पर रह्म करके मुझे रुपये दिये । तुम्हारी मदद से मैंने बी० ए० तक पढ़ां।

लेकिन इस वक़्त तुम बड़े उदास नज़र आते हो, इसका क्या सबब है !

आजाद--यार, कुछ न पूछो । एक खुर्राट के चकमे में आ गया। यहीं घाक्ष पर लेट रहा, और वह मेरी घड़ी-चेन बगेरह ले कर चलता हुआ |

जबान--भई वाह ! इतने घाघ बनते हो, और एक खुराट के भरें में आ गये ! आप के बटन तक उतार ले गया और आप को खब्रर नहीं। ले अब कान पकड़िए कि अब फिर किसी मुसाफ़िर की दोस्ती का एतबार न करेंगे | मिठाई तो आप खा ही चुके हैं, चलिए, कहीं बैठ कर वसंतो गाना सुनें ।

मकतब में किसकी ख़ता?



०१

उस्ताद की नज़र

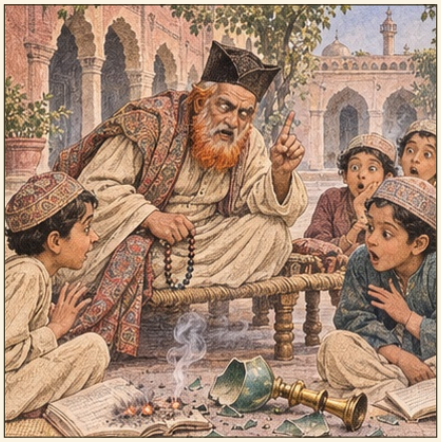
मौलवी साहब की तसबीह खटखटाई। लड़कों ने किताबें खोलीं और झूमने लगे। होंठ हिलते दिखें, बस!



०२

झपकी

चिलम एक लड़के ने भरी, हुक्का दूसरे ने ताज़ा किया। मौलवी साहब की आँख लगी। हुक्का टेढ़ा हुआ…



०३

बेक़सूर शागिर्द

धड़ाम! किताबों पर चिनगारियाँ गिरीं। हुक्का मौलवी साहब ने गिराया था। चपत पड़ी लड़कों को।

HINDI TEXT

प्रसंग ११

एक दिन आज़ाद शहर की सैर करते हुए एक मकतबखाने में जा पहुँचे । देखा, एक मौलबी साहब खटिया पर उकड़ बैठे हुए लड़कों को पढ़ा रहे हैं | आपकी रैंगी हुई दाढ़ी पेट पर लहरा रही है | गोल-गोल आँखें, खोपड़ी घुटी-घुटाई, उस पर चौगोशिया टोपी जमो-जमायी। हाथ में तसब्नीह लिये खटखटा रहे हैं । लॉडे इद-गिरटट गुल मचा रहे हैं । हू-हक मची हुई है, गोया कोई मंडी छगी हुई है। तहजीब कोसों दूर, अदब काफूर, मगर मौलवी साइबर से इस तरह से डरते हैं, जैसे चूहा बिछी से, या अफीमची नाव से । जरी चितवन तीखी हुई, और खलबली मच गयी। सन्न कितात्रें खोले झुम झम कर मौलवी साहब को फुसला रहे हैं। एक शेर जो रटना शुरू किया, तो बला की तरद्द उसको चिमट गये | मतलब तो यह कि मौलवी साहब मुँह का खुलना और ज़बान का हिलना और उनका झमना देखें, कोई पढ़े या न पढ़े, इससे मतलब नहीं | मौलवी साहन् भी वाजब्री ही वाजत्री पढ़े-लिखे थे, कुछ शुद-बुद जानते थे। पढ़ाने के फ़न से कोरे | एक शागिद से चिलम भरवायी, दूसरे से हुबक़ा ताजा कराया; दम-झाँसे में काम लिया, हुक्का गुड-गुड़ाया और घुँआ उड़ाया | शामत यद्द थी कि आप अफ़ीम के भो आदी थे। चीनी की प्याली आयी, अफीम घोली और उड़ायी। एक महाजन के लड़के ने बर्फ़ों मंगवायी, आपने वृत्न ड: कर चखी, तो पीनक ने आ दबोचा । ऊँघे, हुकका टेढा हो गया,गरदन अब जमीन पर आयी, और अन्न जमीन पर आयी। हुकक़ा गिरा और चकनाचूर हो गया । दो-एक लड़कों की कितातों पर चनगारियाँ गिरी । अब पीनक से चौक, तो ऐसे झल्लाये कि किसी लड़के के चपत लगायी, किसी की खोपड! पर धप जमायी, एक के कान गर-माये। पीनक में आ कर खूद तो हुकक़ा गिराया और शागिदों को बेक़सर पीटना अुरू किया। खेर, इतने में एक लड़का किताब ले कर पढ़ने आया । उसने पढ़ा--

विल्म कुसूट कुसादम चु नामा अत गोई,
क़लीदे बाग़े गुल्स्तिन दिल कुसाई बूद |

(जब मैंने तेश खत खोला, तो मेरा दिल खुल गया; गोया वह पत्र खुशी के बाग़ के दरवाजे की कुंजी था।)

अब मौल्वी साहब्र का तरजुमा सुनिए--

तरबुमा-- दिल तेरा खुश, खोला मैंने जो खत तेरा, कह्दे तू कुंजी दरवाजे बाग़-दिल खोलने की थी |

माशा-अबल्लाइ, क्या तग्जमा था | न मोटवी साहब ने खद समझा, न लड़के ने। और दिह्लगी सुनिए कि मौलवी साइबर भी शागिद के साथ पटते जाते हैं और दोनों हिछते जाते हैं। जत्र यह पद चुके, तो दुसरे साइत्र किताब बगल में दत्ाये आ वेंठे ।

मौलवी साहब --अरे गावदी, नयी किताबें शुरू कीं, और चिराग़ी नदारठ, शुक राना छप्पर पर | जा, दोड़ कर दो आने घर से ले आ |

लड़का--मौल्वी साहब, कल लेता आऊँगा। आप तो द्त्ये ही पर टोक देत हैं| आपको अपनी मिठाई ही से मतलब्र है कि मुफ़्त क झगड़े से !

मौलवी-ये झाँस किसी और को देना | अच्छा, अपने बाप की क्रसम खा कि कल ज़रूर लाऊँगा ।

लड़का--मौलबी सादइनब्र के बड़े तिर की कसम, चढते चाँद तक जरूर ल।ऊँगा ।

इस पर सन्न लक हँस पड़ कि कितना ढीठ लड़का है ! क़सम भी खायी तो मौलवी साइबर के सिर की, और सिर भी छोट। नहों, बड़ा ।

मौलवी--चुप गधे, मेरा सिर क्या कद्द है ! अच्छा, पढ़ ।

लड़का तो ऊद्पर्टोंग पढ़ने लगा, मगर मोलाना साहब्र हूँ भी नहीं करते | उन्हें मिठाई की फ़िक्र सवार है । सोच रहे हैं, जो कल दो आने न लाया, तो खूब कोड़े फटकारूँग।, तस्मा तक तो बाकी रखूँगा नहीं ।

दस-पाँच लड़के एक दूसरे को गुदगुदा रहे हैं और मौलवी साहब को दिखाने के लिए जोर-जोर से चिल्ला कर कोई शेर पढ़ रहे हैं ।

आज़ाद को मकतत्र की यद्द द्वाखत ओर लछोंडों की यह चिल्लन-पों देख सुन कर ऐसा रास्सा आया कि अगर पाते, तो मौलवी साइबर को कच्चा ही खा जाते । दिल में सोचे, यह मकतबखाना है या पागलखाना ? जिधर देखिए, गुल-गपाड़ा, धौल-धप्पा हो रहा है। मादूम होता है, भरी बसात में मेटक गाँव-गाँव या पिछले पहर कौवे काँव-काँव कर रहे हैं। घर पर आते द्वी मकतबों की हालत पर यह केफ़ियत लिख डाली--

(१) नूर के तड़केसे झुटपुटे तक लड़कों को मकतजत्रखाने में केद रखना बेहूदगी है। लड़के दस बजे आये, चार बजे छुट्टी पायें, यद्द नहीं कि रिन भर दाँता-किछ-किछ, पदना भी अजीरन हो जाय, और यद्दी जी चादे कि पदने-लिखने की दुम में मोटा सा रस्सा बॉधें, मौलत्री साहब को हवा बतायें और दिल खोल कर गुलछरें उड़ाये ।

(२) यह क्या द्विमाक़त हे कि जितने छड़के हैं, सब्का सबक़ अलग दो-दो चार-चार, दस-दस का एक-एक दर्जा बना लीजिए, मेहनत की मेहनत बचेगी और काम ज़्यादा होगा |

(३) जिधर देखता हूँ, अदब (साहित्य) की तालीम द्वो रद्दी है। ताढीम में सिर्फ अदब दी शामिल नहीं, हिसाब हे, तवारीख है, जुगराफिया है, उकलैट्टिस है; मगर पढ़ाये कौन १ नौलबी साइत्र को तो सो तक गिनती नहीं आती ।

(४) सब्न लड़कों का गुल मचा-मचा कर आवाज़ लगाना महज फ़जूल है। कोई खोंचेवाला, गैंडेरीवाला, चने-परमलवाला इस तरह चिह्छाये, तो मुजायका नहीं; मटर-सटर, गोल-गप्पे, मसाछेदार बेगन, मूली, तुरई, लो तरकारी--यह तो फेरी देनेवालों की सदा है, मकतब को मंडी बनाना हिमाकृत है।

(५) तरजुमे पर ख़ुदा की मार और शैतान कौ फटकार । जाता हूँ बीच एक बाग के, वास्ते लाने अच्छी चीजों के, मैंने देखा मैंने, तू जाता है तू |” वाह, क्या वू-तू मैं-में हे! तरजुमा सही होना चाहिए, यह तो न कोई आवाज़ कसे कि छड़के नंगला बोल रहे हैं ।

(६) पढ़ते वक़्त छड़कों को ह्विलना ऐव है। मगर कहें किससे! मौलवी साइबर तो खुद झमते हैं ।

(७) मतलब ज़रूर समझाना चाहिए; छड़का मतलूभम ही न समझेगा, तो उसको फ़ायदा क्या जाक होगा !

(८) सबक़ को बरजबान रटना बुरी बात है। किताब बन्द की और फर-फर दस सफ़े सुना दिये । दाफ़िज़ा कुछ मज़बूत हुआ सही, मगर सितम यह है कि फिर तोते की तरद् बात के सिवा कुछ याद नहीं रहता ।

(९) छोटे-छोटे छड़कों को बढ़ी-बड़ी किताबें पढ़ाना उनकी ज़िंदगी खराब करना है । ज़रा से टट्टू पर जब दो हाथियों का बोझ छादोंगे, तो ट्टू बेचारा आँखें माँगने लगेगा, या नहीं १ जरा सा बच्चा और पढ़े 'मीना बाज़ार? !

(१०) लड़के को शुरू ही से फ़ारसी पढ़ाना उसका गला घोटना है | पहले उद्ू पढ़ाइए इसके बाद फ़ारसी । शुरू ही से करीमा-मामकीमों पढ़ाना उसकी मिट्टी खराब करना है ! |

(११) मौलवी साहब लड़कों से चिल्म भरवाना, हुक्क़ा ताज़ा करवाना छोड़ दें। इसकी जगह इनको बात-चीत करने और मिलने-जुलने का आदाब सिखायें।

(१२) अफीमची मौल्वी छप्पर पर रखे जाये । मौलबी ने अफीम खायी और लड़कों को शामत आयी । वह पीनक में झुमा करेंगे ।

यह इश्तिहार मोटे क्रम से लिख कर मियाँ आज़ाद रातोरात मकतब के दरवाज़े पर चिपका आये | झट से निकछ करके शहर में भी दो-चार जगह चिपका दिया । दूसरे दिन इश्तिहार के पास लोग ठटठ के ठटठ जमा हुए । किसी ने कहा, सम्मन चिपकाया गया है; कोई बोला, ठेठर का इश्तिद्दार है। बारे एक पढ़े-लिखे साहब ने कद्दा--यह कुछ नहीं है, मौलवी साहब के किसी दुश्मन का काम है | अब जिसे देखिए, कद क़ दा उड़ाता है । भाई वल्लाह, किसी बड़े ही फ़िकरेबाज़ का काम है। मोलवी बेचारे को ले ही डाला, पटरा वः ?िया। मकतबखाने में लड़कों के चेहरे गुलनार हो गये | धत् तेरे की !| बचा रोड 5४५. *माते थे, चपतें लगाते थे, अफीम घोली और सिर पर शेख-सद्दो सवार । अब '" का भाव मादूम होगा । मौलवी साहब तशरीफ़ का बक्वा छाये, तो लडः- उ«-, हना ही नहीं मानते। मौलवी साहब कहते हैं, किताब खोलो | <- _.< जधाव दत हैं, बस मैंह बंद करो। फर्माया कि अब बोला, तो हम बिगड़ जायं+ । शागिदों " कहा, €म खून बनायेंगें। तब तो झल्छाये और डपट कः हा, मैं बढ़ा ग . क्षा हूँ। एक गुरताख ने मुसकिरा कर कहा, फिर हम ठंडा बनायेंगे । दूसरा बोला, किसी ठंडे मुल्क में जाइए। तीसरा बोला, दिमाग़ में गर्मी चढ़ गयी है। मौछवी साहब घबराये कि माजरा क्या है। बाहर की तरफ़ नजर डाली, तो देखा, गोल के गोल तमाशाई खड़े क़हक़द्दे छगा रहे हैं । बाहर गये, तो इश्तिहार नज़र आया । पढ़ा, तो कट गये । दिल द्वी दिल से लिखनेवाले को गालियाँ देने छगे | पाऊँ, तो कच्चा दी खा जाऊँ। इतने डंडे लगाऊँ कि छठी का दूध याद आ जाय | बदमाश ने केसा खाका उड़ाया है ! जभी तो लड़के इतने टीठ द्वो गये हैं। मैं कहता हूँ आम, वे के हैं इमली । अब इज्जत डूबी । मकतबखाने में जाता हैँ, तो खौफ़ है, कहीं छोंडे रोज़ की कसर न निकालें और अंजर-पंजर दीले कर दें। भाग जाऊँ, तो रोटियों के छाले पड़ें | खाऊँ क्या, अंगारे ! आखिर ठान ली कि बोरिया-बंघना छोड़ो मुलागीरी से मुँह मोड़ो । मागे, तो घरपर दम लिया। लड़कों ने जो देखा कि मौलवी साहब पत्ता-तोड़ भागे जाते हैं, तो जूतियाँ बगल म्रें दबा, तस्तियाँ और बसते सैभाल, दुम के

पीछे चले । तमाशाइयों में बातें होने लगीं--

एक--अरे म्रियाँ यद्द मागा कौन जाता है बगठुट ! दूसरा--शैंतान है, शैतान | आज लड़कों के दाँव पर चढ़ गया है, कैसा दुम टबाये भागा जाता है !

अगर सुनिए कि महस्ले मर में खलबली मच गयी । अजी, ऐसे मकतब की ऐसी-तैसी । बरसों से लौडे पीटते हैं, एक हरफ़ न आया। छड़कों की मिट्टी पलीद की | पदढ़ाना-लिखाना खैरसल्लाह, चिलमें भरवाया किये। सबने मिल कर कमेटी की कि मौलवी साहब का आम जल्से में इम्तिहान लिया बाय, और मनादी हो कि जिन साहब ने यह इश्तिहार लिखा है, वह जरूर आये । दिंदोरिया महलले भर में कहता फिरा कि खलक़ खदा का, मुल्क सरकार का, हुक्म कमेटी का कि आज एक जल्सा होगा और मौलवी साहब का इम्तिहान लिया जायगा | बिसने इश्तिदार लिखा है, वद्द भी हाजिर हो |

मियाँ आज़ाद बहुत ख़ुश हुए, शाम को जल्से में जा पहुँचे । जब दो-तीन सौ आदमी, अद्दी-मवाली, डोम-डफालछी, ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे, सब्र जमा हुए, तो एक मेंबर ने फहा--हज़रत, यद्द तो सब कुछ है; मगर मोलवी साहब इस वक़्त नदारद हैं। ए.कतरफा डिगरी न दीजिए,। उन्हें बुल्वाइए,, तब इम्तिहान लीजिए | यों तो वह आयेंगे नहीं । हम एक तदबीर बताये, जो दौड़े न आये, तो मूँछ मुड़ा डालें, द्वाथ कलम करा डार्ले । कददला भेजिए कि किसी के यहाँ शादी है, निकाह पढने के लिए अभी बुलते हैं! लोगों ने कद्दा, खूब यूझी, दूर की यूझी | आदमी मोलवी साइब्र के दरवाजे पर गया और आवाज़ दी--मौल्यी साइब, अजी मौलवी साहब | क्या मर गये १ इस धर में कोई है, या सबको साँप दूँघ गया ! दरवाजा घमघमाया, कुंडी खटलटायी, मगर जवाब नदा-रद | तग्र तो आदमी ने झल्का कर पत्थर फेंकने शुरू किये। दो-एक मौलवी साहब के घुटे हुए सिर पर भी पड़े । मौल्बी साइब बोले, कौन है! आदमी ने कह्ा--बारे आप जिंदा तो हुए. । मैंने तो समझा था, ऊफन की जरूरत पड़ी । चलिए, ईदूखाँ के यहा शादी है, निकाह पढ़ दीजिए | निकाह का नाम सुनते ही मौलाना खमीरी रोटी की तरह फूल गये, अंगरखे का बंद तड़ से टूट गयां। कफ़न फाड़ कर चिल्ला उठे--आया, आया, ठहरे रहो, अमी आया । शिमला खोपड़ी पर जमा, अक्ीक़ का कंठा हाथ में छे, सुरमा लगा घर से चले । आदमी साथ है, दिल में कहते जाते हैं, आज-पो-बारद हैं, ब्रट कर हाथ मारा है, छप्पन करोड़ की तिहाई, द्वाथी के होदे में घुटे | लंबे-छबे डग भरते आदमी से पूछते जाते ई--क्यों मियाँ, अब कितनी दूर मकान है ! पास द्वी है न ! देखें, निकाह पढ़ाई क्या मिलती है ! सवा रुपये तो मामूली है; मगर खदा ने चाहा तो बहुत कुछ ले मरूँगा | आदमी पीछे-पीछे हँसता जाता है कि मियाँ हें किस खयाल में | बारे खटा-खूदा करके वह मंजिल तय हुई, मकान में आये, तो द्ोश उड़ गये । यह कैसा ब्याह है भाई, न ढोल, न शहनाई, हमारी शामत आयी । कनखियों से इधर उधर देख रहे हैं, अक़्ल दंग है कि ये सब के सब हमीं को क्यों घूर रहे हैं । इतने में मीर-मजलिस ने कहा-जिन साहत्र ने इश्तिहार लिखा था, वह अगर आये हों तो

कुछ फर्माये । हि हे आजाद के सामने खरे

हैं, इनसे पूछिए कि मकतबखाने में अफीम क्यों पीते हैं ! जब्र देखिए, पीनक में ऊँष रहे हैं या मिठाई ट्ँग रहे हैं। लड़कों का पदाना खाल्ग जी का घर नहीं कि सिर घुटाया और मुल्छा बन गये, चूड़ी निगली और

पीर जी बन गये |

मौलत्री साइनब्न ताड़ गये कि यहाँ मेरी दुगंति होनेवाली है | भागने ही को थे कि एक आदमी ने टाँग पकड़ कर आँटी बतायी, तो फ़द से जमीन पर आ रहे | अच्छे फँैंसे | खूब निकाह पढ़ाया | मुफ़्त में उल्लू बने | खेर, मियाँ आज़ाद ने फिर कहा--

'म्ौलवी साहब को किसी मज़ार का मुजाविर या कहीं का तकियेदार बना दीजिए, तो खुब मीठे ढुकड़े उड़ायें और डंड पेलें। यह मकतबखाने में छल्हू का दसहरा उनको क्यों बना दिया १ लड़कों की केफ़ियत सुनिए कि दिन भर गुल्ली-डंडा खेला करते हें, चीखते हैं, चिल्लाते हैं, और दिन भर में अठारह पमर्तबा पेशाब करने और पानी पीने जाते हैं। कोई कहता है, मोलवी साहब, देखिए, यह हमारी नाक पकड़ता है, कोई कहता है, यह हमसे लड़ता है । मौलवी साहब को इससे कुछ मतलब नहीं कि लड़के पढ़ते हैं या नहीं। वहाँ तो हिलते जाओ और ऐसा गुरू मचाओ कि कान पढ़े आवाज़ न सुनाई दे, उसमें चादे जो कुछ ऊल-जलूल बको ।!

मौलवी साहब फिर रस्सी तुड़ा कर भागने लगे | छोग लेना-लेना करके दोड़े । गये ये रोज़े बख्शाने, नमाज गले पड़ी। चिल्ला कर बोले--तुम कौन होते हो जी हमारा ऐब निकालनेवाले, हम पढ़ार्ये या न पदढ़ाये, तुमसे मतलब्र !

आज्ाद--हज़रत, आज ही तो पंजे में फँसे दो। रोज़ तोंद निकाले बैठे रहा करते ये। यह तोंद है या बेईमान की कब्र ! या हवा का तकिया! अब पचक जाय, तो सही | खदा जाने, कहाँ का गँवार बिठा दिया है।कल सुबह को इनका इम्तिहान लिया जाय |

मौलवी साहइब---आप बड़े शेतान हैं !

को ।

#

आज़ाद--आप छंगूर हैं; मगर हैरत है कि यह ठुटडी से दुम की कोंपल क्यों -कर फूटी |

इस तरह जल्सा खूतम हुआ । छोगों ने दिल में ठान ली कि कल चाहे ओढे पढ़ें, चादे कड़कड़ाती धूप हो, चाहे भूचाल आये; मगर हम आयेंगे और जरूर आयेंगे। मौलवो साहब से ताक़ीद की गयी कि हज़रत, कछ न आइएगा, तो यहाँ रहना मुश्किल हूं! जायगा--मौलबी साहब का चेहरा उतर गया था, मगर कड़क कर बोले--हम और न आयें, आयें और बीच खेत आयें। दम क्या कोई चोर हैं, या किसी का माल मारा है!

मौलवी साहब घर पहुँचे, से आज़ाद को लगे पानी पी-पी कर कोसने | इसकी जवान सड़े, मुँह फूल जाय; सारी चौकड़ी भूल जाय; आममान से अंगारे बरसे; ऐसी जगह मरे, जहाँ पानी न मिले; डंकू फीवर चट करे; एंजिन के नीचे दब कर मरे | मगर इन गालियों से क्या होता था । रात किसी तरह कटी, दूसरे रोड नूर के तड़के छोग किर जलसे में आ पहुँचे । मगर मौलाना ऐसे ग़ायच हुए, जैसे गधे के सिर से सींग ! बारे यारों ने तत्तो-बंभो करके सिर सुदृलाते, सब्ज बाग़ दिखलाते घसीट ही लिया । [मेयाँ आज़ाद ने पूछा--क्यों मौलबी साइब, किस मनयत्रे में हो ?

मौलवी साहब--सोचता हूँ कि अब्र कौन चाल चरहूँ ! सोच लिया है कि अन्न मुछागीरी छोड़ प्यादों में

नौकरी करेंगे । बस, वतन से जायेंगे, तो फिर लौट कर धर न आयेंरो । अमीर-रारीब सब पर मुसीत्रत पड़तो है। फिर हमारी जिसात क्या ! चारखाने का अंगरखा न सही, गाढ़े की मिरजई सही । मग़र आप एक गरीब के पीछ गाइक क्यों पड़े हुए हैं ! "कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगुआ तेली £!

आज्ञाद- ये झाँसे रहने दीजिए, ये चकमे किसी और को दीजिए ।

मौलवी साहब--खूदा की पनाह ! में आपका युद्धाम और आपको चकमे दूँगा ? आपसे क्या अजे करूँ कि कितना जी तोड़ कर लड़कों को पढ़ाता है | इधर सूरज निक और मैंने मकतत्र का रास्ता लिया । दिन भर लड़कों को फराया। क्या मज्ाल कि कोई लड़का गरदन तक उठा ले। कोई बोला, और भैने टोप जमायी, खेला, ऑर शामत आयी | समझ-बूझकर चलता था, अगर कोई लछड़का मकतब में खिलोना छाता, तो उसे तुरत अँगीठी में डलवा देता। मगर आपने सारी मेहनत पर पानी फेर दिया । आपके सामने मेरी कोन सुनता है ।

मीर-मजलिस ने कहा--मियाँ आाजाद इन्हें बकने दीजिए, आप इनका इम्टि-हान लीनिए ।

मियाँ आज़ाद तो सवाल पूछने के लिए. खड हुए, उधर मोलबी साहब का बुरा हाल हुआ। रंग फ़क़े, कलेजा शक, आँखों में आलू, मुँद पर हवाइयाँ छूट रही हैं, कलेज्ञा धक-धक करता है, द्वाथ-पाँव कॉपने लगे | कछ्विसी तरह खड़े तो हुए, मगर क़ट्म न जमा । पाँव डगमगाये और लड़खड़ा कर गिरे। लोगों ने उन्हें उठा कर फिर खड़ा गिया |

आजाद--यह शेर क्रिस बइर में है-- मैंने कद्दा जो उससे ठुकराके चलछ न ज़ालिम; हैरत में आके बोला--क्या आपजी रहे हैं !

मौलवी साहब--बहर (दरिया) में आप ही गोते ल्गाइए, और ख़दा करे डूब जाइए। जिसे देखो, हमीं पर शेर है। नामाकूल इतना नहीं समझते कि हम मोलबी आदमी लॉडे पढ़ाना जानें या शायरी करना । हमें शेर से मतलब्न ! आये वहाँ से बहर यूछने !

आज़ाद--बेशनो अज नेचूँ हिकायत मी कुनद ;

बज जुदाईहा शिकायत मी कुनद।

इस शेर का मतलब बतलाइए |

मौलवी साहइब--इसका बताना क्या मुश्किल है ! ने कहते हैं चंड्ू की ने को ! तरस, उस जमाने में लोग चंड्र पीते थे और शिकायत करते थे ।

आज्ञाद--बकरी की पिछली टॉगों को फ़ारसी में क्या कहते हैं ?

मौलवी साहब--यह किसी अपने भाई-बंद, बूचड़-क़स्साब से पूछिए | बंदा न छीछड़े खाय; न जाने । वाह, अच्छा सवाल है ! अब मुल्लाओं को बूचड़ों की शागिदी भी करनी चाहिए !

आज्ञाद--हिंद्स्तान के उत्तर में कोन मुल्क है !

मौलवी--खूदा जाने, में क्या देखने गया था कि आपकी तरह मैं भी सैलानी हूँ !

आज्ञाद--सबसे बड़ा दरिया ह्िंदोस्तान में कौन है !

मौलवी--फ़िरात, नहीं, वद्द देखिए, भूला जाता हूँ, अज्जी वही, दजला, दज़ला, लब याद आया |

हाजिरीन--वाह रे गावदी, अच्छी उल्टी.गंगा बद्दायी। फ़ियत और दज़लछा दिंद में है ? इतना भी नहीं जानता |

आज़ाद--चाँद के घटने-बदन का सब्र बताओ १

मौलवी-- वाह, क्या खूब, खूदाई कारखानों में दखल दूँ १ इतना तो किसी की समझ में आता नहीं कि फ्रीमिशन कया है, फिर भला यह कौन जाने कि चाँद कैसे घटता-बढ़ता है | खुदा का हुक्म है, वह जो चाहता है, करता है ।

आजाद- पानी क़्योंकर बरसता दे !

मौलबी--यह तो दादीजान तक को मादूम था। बादल तालाबों, नदियों, कुओं गदों, द्ौजों से घुस-पैठ कर दो-तीन रोज़ खुन्न पानी पीता है; जब पी चुका, तब आस-मान पर उड़ गया, मुँह खोल्य तो पानी रिम-पझ्ि म बरसने छगा । सीधी-सी तो बात है ।

हाजिरीन--वछाह, कया बेपर की उड़ायी है ! आदमी दं। या चोंच ! कहने छगे, ब्रादल पानी पीता है ।

आजाद--गिनती आपको कहाँ तक याद है और पद्दाड़े कहाँ तक !

मौल्वी--जवानी में रपये के ठढके गिन लेता था; अब भी आठ-आठ आने एक दफ़े में गिन सकता हूँ। मगर पहाड़े झिसी हलवाई के छड़के से पूछिए ।

आज़ाद--एक आदमी ने तीन सौ पछत्तर मन गला खरीदा, रात को चोरों ने मौका ताक कर एक सो पचीस मन उड़ा लिया, तो बताओ उस आदमी को कितना पाया हुआ !

मौलवी--यह झगड़ा बौनपुर,के काज़ी चुकायेंगे । में किसी के फटे में पाँव नहीं डाल्ता । मुझे किसी के टयोटे-घाटे से मतलब ! चोरी-चकारी का हाल थानेदारों ते पूछिए । बंदा मौलवी है । मुछा की दौड़ मसजिद तक |

आज़ाद--शाहजहाँ के वक़्त में हिंदोस्तान की क्या हालत थी और अकबर के वक़्त में क्या !

मौलवी--अजी, आप तो गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं !अकबर और शाहजहाँ, दोनों की हड्डियाँ गल कर खाक हो गयी होंगी | अब इस पचड़े से मतलब !

आज़ाद ने हाजिरीन से कद्दा--आप लोगों ने मौलवी साहब के जवाब सुन लिये, अन्न चाहे जो फ़ेसल कीजिए ।

हाजिरीन--फैसला यही है कि यह इसी दम अपना बोरिया:बेंधना सँभाले । यह चरकटा है | इसे यही नहीं मालूम कि बहर किस चिड़िया का नाम है, बादल किसे कहते हैं, दो तक का पहाड़ नहीं याद, गिनती जानता ही नहीं, दज़ला और फ़िरात हिंदोस्तान में बतलाता है ! और चला है मौलवी बनने। लड़कों की मुफ्त में मिट्टी खरात्र करता है |

HINDI TEXT

प्रसंग १२

आज़ाद तो इधर साँडनी को सराय में बाँधे हुए मज़े से सैर-सपाटे कर रहे थे, उधर नवाब साहब के यहाँ रोज़ उनका इंतिज़ार रहता था कि आज आज़ाद आते होंगे और सफ़शिकन को अपने साथ छाते होंगे। रोज़ फ़ाल देखी जाती थी, सगुन पूछे जाते थे | मुसाहन्र लोग नवाब को भड़काते थे कि अब आजाद नहीं छोटने के; लेकिन नवात्र साहब को उनके छौटने का पूरा यक्रीन था ।

एक दिन बेगम साहबा ने नवात्र साहत्र से कहा--क्यों जी, तुम्हारा आजाद किस खोह में घैस गया ! दो महीने से तो कम न हुए होंगे ।

महरी--ऐ.,, वह चंपत हुआ, मुआ चोर ।

बेगम-- ज़ब्ान सँभाल, तेरी इन्हीं बातों पर तो में झला उठती हूँ। फिर कहती है कि छोटी बेगम मुझसे तीखी रहती हैं ।

नवाब--हाँ, आजाद का कुछ द्वाल तो नहीं माद्म हुआ; मगर आता ही हागा ।

बेगम--आ चुका ।

नवातबर- चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मेरा आजाद सफ़शिकन को छा ही छोड़ेगा । दोनों में इल्मो बहस द्वो रही होगी। फिर तुम जानो, इल्म तो वह समंदर है, जिसका ओर न छोर ।

बेगम--(क्द कद्दा लगा कर) इल्मी बहस हो रही होगी १ क्यों साहब, मिर्यों सफ़-शिकन इल्म भी जानते हैं ! में कहती हूँ, आखिर अलाह ने तुमको कुछ रत्ती, तोला, माशा अक़्छ मी दी है?! मुआ बटेर, जरी सी जानवर, काकुन के तीन दानों में पेट भर ज्ञाय, उसे आप आलिम कहते हैं। मेरे मैके पड़ोस में एक सिड्डी सौदाई दिन-रात वाह्वी-तवाही बका करता है | उसकी और तुम्हारी बातें एक सी हैं ।

महरी--क्या कद्दती हो बीबी, उस सौदाई निगोड़े को इन पर से सदक़े कर दूँ !

नवाब--तुम समझी नहीं महरी, अभी तो अल्हड़पने ही के, न दिन हैं इनके । खदा की क्रसम, मुझे इनकी ये दी बातें तो भाती हैं। यह कमसिनी का सुभाव है ओर दो-तीन बरस, फिर यह शोखी और चुलबुछापन कहाँ ! यह जब झिड़कती या घुड़कती हैं, तो जी खुश हं। जाता है ।

महरी--हाँ, हाँ, जवानी तो फिर बावली होती दी है |

बेगम--अच्छा, महरी, ठुकझे अपने बुढ़ापे को कसम, जो झूठ बोले, भला बटेर मी पढ़े-लिले हुआ करते हैं ! मुँह-देखी न कहना, अलछाह लगती कहना ।

महरी--बुढ़ापा ! बुढ़ापा कैसा ! बीबी, बस ये ही बातें तो अच्छी नहीं छगतीं, जब देखो, तब आप बूदी कह देती हैं! मैं बूढ़ी कादे से हो गयी ! बुरा न मानिए तो कई, आपसे भी टाँढ़ी हूँ |

इतने में ग़फ़र खिदमतगार ने पुकारा--हुज़्र, पेचवान भरा रखा है, वहाँ भेज दूँ या बगीचे में रख दूँ १

नवाब--यह चाँदीवाली छोटी गुड़गुड़ी बेगम साहबा के वास्ते भर छाओ। कल बिसवाँ तंबाकू आया है, वही भरना । और पेचवान बाहर छगा दो, हम अभी आये |

यह कह कर नवाब ने बेगम साहबा के हूँ 6ी-हँसी में एक चुटकी छी और बाहर आये । मुसाइबों ने खड़े हो-हो कर सलाम किये। आदाब बना छाता हूँ इज्र, तस-लीमात अजं करता हूँ, खुदाबंद | नवाब साइब जा कर मसनद पर बैठे ।

खोजी--उफ् | मौत का सामना हुआ, ऐसा धचका छगा कि कलेजा बैठा जाता है, हत् तेरे गीदी चोर की ।

नवात्र--क्यों, क्यों, खेर तो है !

खोजी -- हुजूर, इस वक्त बटेरखाने की ओर गया था ।

नवाब--उफ, भई, दिल बेक़रार है। खोजी मियाँ, तुमको तो हमारी तसल्ली करनी चाहिए थी, न कि उद्टे खद ही रोते हो, जिसमें हमारे द्वार्थ-पॉव और फूल जायें। अब सफ़शिकन से द्वाथ धोना चाहिए। हम जानते हैं कि वह खुदा के यहाँ पहुँच गये।

मुताद+ -खदा न करे, ख़दा न करे।

खोजी-- पीनक से चौंक कर) इसी बात पर फिर कुछ मिठाई नहीं खिलगाते |

नवाब--कोई है, इस मरदक की गरदन तो नापता | हम तो अपनी क्रिस्मतों को रो रहे हैं, गद्द मिठाई माँगता है| बेतुका, नमकहराम !

खोजी -- देखिए, देखिए, फिर मेरी गरदन कुंद छुरी से रेती जाती है। मैं मिठाई कुछ खाने के वास्ते थोड़े ही मेंगवाता हूँ। इसलिए मैंगगदा हूँ कि सफ़शिकन का फ़ातिहा पढँ ।

नवाब--शाबाह, जी खुश हो गया ! माफ़ करना, बेअख्तियार नमकदराम का लफ़्ज़ मुँह से निकल गया, तुम बड़े...

मुसाइब--तुम बड़े हछालखोर हो |

इस पर वह क़हक़द्ा पड़ा कि नवाब साहब भी लोटने लगे, और बेग़म ने घर से लोडी को भेजा कि देखना तो, यह कया हँसी हो रही है ।

नवाब--मई, क्या आदमी दो, वल्लाह, रोते को हँसाना इसी का नाम हई । खोज्ी बेचारे को हललस्त्रोर बना दिया ।

खोजी--हुज्र, अब मैं यहाँन रहूँगा। क्या वेवक्त की शहदनाई सब के सं बजाने लगे | अफसोस, सफ़शिकन का किसी को खय'ल तक नहीं ।

नवात्र साहब मारे रंज के मंद ढाँप कर लेट रहे । मुसाहब्रों में से कोई चंडुखाने पहुँचा, कोई अफीम घोलने लगा |

HINDI TEXT

प्रसंग १३

इधर शिवाले का घंटा बजा ठनाठन, उधर दो नाक़ों से सुब्रह् की तोप दगी दना-दन । मियाँ आज़ाद अपने एक दोस्त के साथ सैर करते हुए, बस्ती के बाहर जा पहुँचे। क्या देखते हैं, एक बेल-बूटों से सजा हुआ बैंगछा है। अहाता साफ़, कहीं गंदगी क; नाम नहीं | फूलों-फलों से लदे हुए दरख़्त खड़े श्रम रहे हैं। दरवाज़ों पर चिके पड़ी हुई हैं। बरामदे में एक साहब कुर्सी पर बैठे हुए हैं, और उनके क़रीब दूसरी कुर्सी पर उनकी मेम साहवा बिराज रही हैं । चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है | न कहीं शोर, न कहीं गुल | आज़ाद ने कह्दा--जिंद? का मज़ा तोये लोग उठाते हैं।

दोस्त--बेशक, देख कर रइक आता है।

दोनों आदमी आगे बढ़े । कई छोटे-छोटे टटटू तेज्जी से दौड़ते हुए नज़र आये ! उन पर खूबसूरत काठियाँ कसी हुई थीं और कई लड़के बेठे हुए ईंसते-बोलते चले जाते थे। कपड़े सफ़ेद, जैसे बगुले के षर; चेहरे सुख, जैसे गुलाब का फूल | मियाँ आज़ाद कई मिनट तक उन अँगरेज-लड़कों का उछलना-कूदना देखते रहे । फिर अपने दोस्त से बोले--देखा आपने, इस तरह बच्चों की परवरिश होती है । कुछ और आगे बढ़े, तो सौदागरों की बड़ी-बड़ी कोठियाँ दिखायी दीं। दतनी ऊँची गोया आसमान से बाते कर रही हैं। दोनों आदमी अंदर गये, तो चौज़ों की सफ़ाई और सजावट देख कर दंग रह गये | सुभान-अललाह ! यह कोठी है या शीश-महल | दुनिया भर की चीजे मौजूद । आज़ाद ने कहा--यह तिजारत की बरकत है । वाह री तिजा-रत | तेरे कदम धो-धो कर पिये। इतने में सामने से कई बग्धियाँ आयीं । सब पर अँगरेब बेठे हुए ये । किसी हिंदुस्तानी का कोसों तक पता ही नहीं । गोया उनके लिए घर से निकलना द्वी मना है। और आगे बंढे, तो एक कुतुबखाना नज़र आया | लाखों किताबें चुनी हुईं, साफ-सुथरी, सुनहरी जिल्दें चढ़ी हुईं । आदमी अगर साछ भर जम कर बैठे, तो आलिम द्वो जाय । सुग्ह से आठ बजे तक लोग आते हैं, अखबार और किताबें पढ़ते हैं और दुनिया के द्ालात मालूम करते हैं। मगर इंदुस्तानियों को इन बातों से क्या सरोकार !

दस बजे का वक़्त आ गया। अब घर की सूझी | बस्ती में दाखिल हुए;। राह में एक अमीर आदमी के मकान के दरवाज़े पर दो छड़कों को देखा । नख-सिल से तो दुढस्त हैं; मगर कानों में ऋले, मद्दे-भद्दे कड़े पड़े हैं, अँगरखा मेला-कुचैछा, पाजामा गंदा, द्वाथों पर गद, मुँह पर खाक, दरवाज़े पर नंगे पोव खड़े हैं। मौलवी साइब ड्योढ़ी में बैठे दो और लड़कों को पढ़ा रहे हैं। मगर ड्योदी और पाखाना मिला हुआ है।

मियाँ आज़ाद--कहिए जनाब, वे टटटओं पर दौड़नेवाले अँगरेजों के बच्चे मी याद हैं ! हनको देखिए, मैले-गंदे, दिन भर पाखाने का पड़ोस । भला ये कैसे मज़बूत और तंदुदस्त हो सकते हैं! हाँ, जेवर से अलबत्ते लसे हुए हैं | सच तो यह है कि चाहे लड़का जितने जेवर पहने हो, उसको वह सच्ची खशी नहीं हासिल हो सकती जो उन प्यारे बच्चों को हवा के झोंकों और टापों की खटपट से मिलती थी। लड़का

तड़के गजरदम उठा, हम्माम में गया, साफ-घुथरे कपड़े पहने । यह अच्छा, या यद अच्छा कि लरूचके, पट्टे और बिन्नट्ट के कपड़ों में जकढ़ दिया जाय, जेवर सिर से पाँव तक लाद दिया जाय और गठटैया पर ब्रिठा दिया जाय कि कूड़े के टोकरे गिना करे |

ये बातें हो ही रही थीं कि सात-आठ जवान सामने से गुत्रे। अभी उन्नीख ही बरस का धिन है, मगर गालों पर शरुर्रियाँ, किसी की कमर झुक्री हुई, किसी का चेहरा जद | सुर और सफ़ेद रंग धुआँ बन कर उड़ गया। और तुर्रे यह कि अलिफ के नाम बे नहीं जानते । एक नम्बर अव्वल के चंड़बाज़ हैं, दसरे बला के बातूनी | वह फर्रटे भरें कि भला-चंगा आदमी घनचक्कर हो जाय । एक साहबत्र कॉलेज में तालीम पाते थे, मगर प्रोफेसर से तकरार हो गयी, झट मदरसा छोड़। | दूसरे साहब अपने दाहिने हाथ की दो उँगलियों से बायें हाथ पर ताल बजा रहे हैं--घिन ता घिन ता | दो साहब बहादुर नामी बटेर के घट जाने का अफ़सोस कर रहे हैं। किसी को नाज है कि मैं बाने की कनकइया खूब लड़ाता हूँ, तुककल खूब बढ़ाता हूँ ।

मियाँ आजाद ने कददा--इन लोगों को देखिए, अपनी जिंदगी किस तरह खरात्र कर रहे हैं। शरीफ़ों के लड़के हैं, मगर बुरी सोहबत है। पढ़ना-लिखना छोड़ बैठे । अन्न मटर-गइती से काम है। किसी को क़छम पकड़ने का शंऊर नहीं ।

इतने में दो साहब और मिले । तोंद निकाले हुए, मोटे थलथऊ | आज़ाद ने कहा--इन दोनों को पहचान रखिए। इन अक़्ल के दुष्मनों ने रुपये को दफ़न कर रखा है। एक के पास दो लाख से ज़्यादा हैं और दूसरे के पास इससे भी ज़्यादा; मगर जमीन के नीचे । बीबी और लड़कों को कुछ जेवर तो बनवा दिये हैं, बाक़ी अभलाह-अलाह, खेर-सललाह ! अगर तिजारत करें, तो अपना भी फ़ायदा हो, और दुसरों का भी | मगर यह सीखा दी नहीं। बंगाल-बंक और दिल्ली-बंक तो पहले सुना करते थे, यह जमीन का बंक आज नया सुना ।

दोनों आदमी घर पहुँचे । खाना खा कर लेटे | शाम को फिर सैर करने की सूझी एक बाग में जा पहुँचे । कई आदमी बेंठे हुबक्े उड़ाते थे और किसी बात पर बहस करते थे । बहस से तकरार शुरू हुईं। मिज़ो सईद ने कहा--भई, कलजुग है, कलजुग । इसमें जो न हो, वह थोड़ा । अत्र पुराने रस्मों को लोग दक्रियानूसी बताते हैं, शादी-ब्याद के खचे को फ़िजूल कहते हैं। बच्चों को जेवर पहनाना गाली है । अब कोई इन लोगों से इतना तो पूछे कि जो रस्म बाप-दादों के वक्त से चली आती है, उसको कोई क्योंकर मिठाये !

यका मक पूरत्र की तरफ से शोर-गुल की आवाज सुनायी दी | किसी ने कद्दा, चोर , आया, लेना, जाने न पाये। कोई बोला, साँप है। कोई भेड़िया-भेड़िया चिल्ला उठा । किसी को शक हुआ कि आग लगी | सब्र के सब्र भड़भड़ा कर खड़े हुए, तो चोर न चकार, भेड़िया न सियार | एक मिर्यों साहब लैंगोट कसे छठ हाथ में डिये अकड़े खड़े हैं, और उनसे दस क्दम के फ़ासले पर कोई लाला जी बाँस की खपाच लिये डटे खड़े हैं | इद-गिद तमाशाइयों की भीड़ है। इधर मिर्यों साहब पेतरे बदल रहे हैं, उधर लाला उँगलियाँ मटका-मटका कर गुरू मचा रहे हैं। मिर्ज़ा सईद ने पूछा-- प्रियाँ साहब, खेर तो है ! मिर्यों-क्या अज़े करूँ मिर्जा साहब, आपको द्िल्लगी सूझती है ओर यहाँ जान पर बन गयी दै। यट छाल मेरे पड़ोसी हैं | इनका क़ायदा है कि टर्रा पी कर हज़ारों गालियाँ मुझे दिया करते हैं। आज कोठे पर चढ़ कर सदा के वास्ते छाखों

बातें धुनायीं । अब फ़रमाइए, आदमी कहाँ तक जब्त करे ! छाख समझाया कि भाई, आदमी से ऊँट और इंसान से बेदुम के गधे न बन जाओ, मगर यह बादशाह की नहीं सुनते, में किस गिनती में हूँ ॥ ताल ठोक कर लड़ने को तेयार हो गये । ख़दा न करे, किसी भलेमानस को अनपढ़ से साकिक़ा पड़े।

लछाला-- और सुनिएगा, हम चार-पाँच बरस रूखनऊ में रहे, अनपढ़ ही रहे ।

मियाँ--बारह बरस दिल्ली में रह कर ठुनने क्या सीख लिया, जो अब चार बरस ल्खनऊ में रहने से फ़'जिल हो गये ।

लछाला--यड साट बरस से हमारे पड़ोसी हैं, रत जानते हें कि बरस दिन का त्योहार है; इम शराब ज़रूर पियेंगे; चुस्की ज़रूर छगायेंगे, नशे में गालियाँ जरूर सुंनायेंग । अब्र अगर कोई कहे, शरात्रक़डिया छोड़ दो, तो इम अपनी पुरानी रस्म को क्योंकर छोड़ें !

मिर्जा ससद--अजी लाटा साहब, बहुत बहकी-बहकी बातें न कीजिए | हमने माना कि पुरानी रम्म है, मगर ऐसी रस्म पर तीन हरफ़ ! आप देखें तो कि इस वक्त आपकी क्या हालत है ! कीचड़ में छतपत, सिर-पेर की ख़बर नहीं, भलेमानसों को गालियाँ देत हो और कहते हं। कि यह तो हमारी रस्म है ।

आज़ाद--मिर्ज़ा सईद, जग मुझसे तो आँखें मिलाइए,। शर्माये तो न होंगे १ अमी तो आप कइते थे कि पुरानी रस्म को कोई क्योंकर मिटाये । यह भी तो लाला जी की पुरानी रमम है; जिस तरह होती आयी है, उसी तरह अब भी दहोगी। यह धूप-छाँद की रंगत आपने कहाँ पायी ! गिरगिट की तरह रंग क्यों बदलने लगे १ जनाब, बुरी रग्म का मानना हिंगाक़त की निशानी है।

विजञा सईंद बगलें झाँकने छगे। आजाद और उनके दोस्त और आगे बदे, तो देखते क्या हैं कि एक गैंबार औरत रोती चली जाती है, और एक भर्द चुपके-चुपके समझा रहा है--चुपाई मार, चुपाई भार। मियोँ आज़ाद समझे, कोई बदमाश है| ललकारा, कौन है वे तू , इस औरत को कहाँ भगाये लिये जाता है १ उस गैंवार ने कहा--साइब्र, भगाये नहीं लिये जात हाँ; यो हमार मिहरिया आय, इसमरे इह्ाँ रसम है कि जय मिहरिया मइका से समुरेर जात है, तो दुइ-तीन कोत लो रोबत है।

सईद--वल्लाद, मैं कुछ और ही समझा था। ख़दा की पनाद, रस्म की मिट्टी ख़रात्र कर दी ।

आजाइ--बनजा है, अभी आप उस बाग में क्या कष्ट रहे थे १ बात यह है कि पढ़े-लिखे आदमियों को बुरी रस्मों का मानना मुनासित्र नहीं । यह क्या जरूरी है कि अक़्ल की आँखों को पाकेट में बंद करके पुरानी रस्मों के ढर पर चलना शुरू करें और इतनी ठोकरें खार्यें कि क्रम-क्रदम पर मुँह के बल गिरें ! खरा ने अक़ल इस-लिए नहीं दी कि पुरानी रस्मों में सुधार न करें, बल्कि इसलिए कि जमाने के मुता-विक्र अदल-बदलछ करते रहें | अगर पुरानी बातों की पूरी-पूरी पैरवी की जाती, तो ये जामदानी के कुरते और शरत्रती के अँगगखे नज़रन आते। लोग नंगे फिरते होते । पुछझाव और कबात्र के बदले हम पाढ़े और द्विरन का कचा गोशत खाते द्वोते । खदा ने आँखें दी हैं; मरार अफ़सोस कि हमने बंद कर लीं ।

मिर्जा सईद--तो आप नाच-रंग के जछसों के भी दुश्मन होंगे ! आप कहेंगे कि यह भी बुरी रस्म है !

आजाइ--बेशक बुरी रस्म है। मैं उसका दुच्मन तो नहीं हूँ, मगर खदा ने चाहा, तो बहुत जल्द हो जाऊँगा। यह कितनी बेहूदा बात है कि हम लोग औरतों को रुपये का छालच दे कर इस तरह जलील करते हैं ।

मिर्जा सईद--तो यह कद्‌टिए कि आप कोरे मुल्ला हैं । यह समझ लीजिए कि इन हसीनों का दम ग़तीमत है | दुनिया की चहल-पहल उनके दम से, महफ़िल की रौनक उनके करम से । यहाँ तो जब्र तक तबले की गमक न हो, चाँद से मुखड़े की झलक न हो, कढ़ों की झनकार न दो, छड़ों की छनकार न दो, छमाछठम की आवाज न आये, कमरा न सजे, ताल न बजे, धमा-चौकड़ी न मचे, मेंहदी न *चें, *गरलियाँ न मनाये, शादियाने न बजायें, आवाजें न करें, इत्र में न बसे, ताने न सुनें, सिर न घुनें, गलेब्राजी न हो, आँखों में छाल डोरे न हों, दरात-कब्राब न हो, परियाँ बुल-बुछ की तरह चह्कती न हों, सेवती के फूछ और हिना की टट्टियाँ महकती न हों, क्रहक़दे न हों, चहचहे न हों, तो किस गौसे का दम भर जीने को जी चाहें ! वल्लाह, महफ़िल ब वले कुत्ते की तरह काट खाय---

महफ़िल में गुदगुदाती हो, शोखी निगाह कीं; शीशों से आ रही हो, सदा वाह-बराह की।

इधर जामेमुल (शरात्र) हो, उधर सुराह्दी की कुल-कुल हो, इधर गुरू हो, उघर बुलबुल हो, महफ़िल का रंग खूब जमा हो, सभा बँधा हो, फिर जो आपकी गरदन भी न हिल जाय, तो झुक कर सलाम कर लूँ। अब गौर फ़रमाइए कि ऐसे तायफ़े को, जो डिबिया में बंद कर रखने क़ाबिल है, आप एक क़च्म पिटा देना चाहते हैं !

आजाद - जनाब, आपको अपनी तवायफ़ें मुबारक हों। यहाँ इस फेर में नहीं

पड़ते । ये बातें करते हुए छोग और आगे बंदे, तो क्या देखते हैं कि मस्त हाथी घर एक महंत जी सवार, गेरए कपडे पहने, भभूत रमाये, पालथी मारे, बड़े ठाठ से बैठे हैं। चेले-चापड़ साथ हैं। कोई धोड़े की पीठ पर सवार, कोई पैदल | कोई पीछे बैठा मुरछल हिलाता है, कोई नरसिंघा बजाता है। आजाद बोले-कोई इन महंत जी से पूछे कि आप खुदा की इबादत करते हैं, या दुनिया के मज़े उड़ाते हैं ! आपको इस टीम-टाम से क्या मतलब !

मिर्ज़ा सईंद--कुछ बाप की कमाई तो है नहीं, अहमक़ों ने जागीरें दे दीं, महंत बना दिया । अब ये मौजें करते हैं ।

आज़ाद--जागीर देनेवालों को क्या माद्म था कि उनके बाद महंत लोग यों गुलछरें उड़ायेंगे ! यह तो हमारा काम है कि इन महंतों की गरदन पकड़े, और कहें, उतर हाथी से, ले हाथ में कमंडल |

यकायक किसी ने छींक दिया । सईद बोले--द्वात्तेरे छींकनेवाले की नाक का हूं | यार, ज़रा ठहर जाओ, छींकते चलना बदशगूनी है |

आज़ाद--तो जनाब, हमारा और आपका साथ हो चुका | यहाँ छींक की परवा नहीं करते | आप पर कोई आफ़त आये, तो हमारा जिम्मा ।

अभी दस क़दम भी न गये थे कि बिल्ली रास्ता काट गयी) सईद ने आजाद का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया । भई अजब बेतुके आदमी हो, त्रिल्ली राह काट गयी और तुम सीधे चले जाते हो ! ज़रा झहरो, पहले कोई और जाय, तब हम भी चले |

अब सुनिए कि आध घंटे तक मुँह खोले खड़े हैं | या खुदा, कोई इधर से आये। आज़ाद ने झछा कर कद्दा - मई, हमको आपका साथ अजीरन द्वो गया। यहाँ इन बातों के कायल नहीं | खैर वहाँ से खुदा-खदा

करके चले, तो थोड़ो देर के बाद सईद ने फिर आजाद को रोका--हाँय-हाँय, ख़दा के वास्ते उधर से न बाना । मियाँ अंधे हो, देखते नहीं, गये खडे हैं। आज़ाद ने कहा--गषे तो आप खुद हैं। डंड। उठाया, तो दोनों गधे मागे । फिर जो आगे बढ़े, तो सईद की बायीं आँख फड़की । ग़ज़त्र ही हो गया | द्ाथ-पाँव फूल गये, सारी चौकड़ी भूल गये । बोले--यार, कोई तदबीर बताओ, बायीं आँख बेतरद फड़क रही है । मर्द की बायीं और औरत की दाहनी आँख का फड़कना बुरा शगून है। आज़ाद खिलखिला कर ईंस पड़े कि अजीब आदमी हैं आप ! छींक हुई और ह्ववास ग़ायत्र; बिछी ने रास्ता काटा, और इदोश पैतरे; गये देखे और औसान खता; और जो बायीं आँख फड़की, तो सितम ही हुआ | मियाँ, कहना मानो, इन खुराफ़ात बातों में न जाओ। यह बहस है, जिसकी दवा लुकमान के पास मी नहीं। मेरा और आपका साथ हो चुका। आप अपना रास्ता लीजिए,, बंदा दखसत द्वोता है ।

HINDI TEXT

प्रसंग १४

मियाँ आजाद ठोकरें खाते, डंडा हिलाते, मारे-मारे फिरते थे कि यकायक सड़क पर एक खबसूरत जवान से मुलाक़ात हुई। उसने इन्हें नजर भर कर देखा, पर यह पहचान न सके । आगे बदने ही को थे कि जवान ने कदा-- 2म भी तसलीम की खू डालेंगे ; बेनियाजी तेरी आदत ही सही । आज़ाद ने पीछे फिर कर देखा, जवान ने फिर कहा--- गो नहीं पूछते दरगिज़ वो मिज़ाज; हम तो कहते हैं, दुआ करते हैं | "'कहिए' जनाब, पहचाना या नहीं ! यह उड़नधाइयाँ, गोया कभी की जान-पहचान ही नहीं? । मियाँ आजाद चकराये कि यह कौन साहब हैं | बोले--हज़रत, मैं भी इस उठती ही जयाभी में आँखें खो बैठा । वक्लाह, किस मरदूद ने आपको पहचाना हो । जवान--एं, कमाल किया ! वल्लाह, अन्न तक न पद्चाना ! मियाँ, हम तुम्हारे लैंगोटिये यार हैं अनवर । आज़ाद - अख्खाह, अनवर | अरे यार, तुम्हारी तो.सूरत ही बदल गयी। यह कह कर दोनों गले मिले और ऐसे खश हुए कि दोनों की आँखों से आँसू निकल आये | आज़ाद ने कह्ा-एक वह जमाना था कि हम-तुम बरसों एक जगह रहे, साथ-साथ मटर-गइती की ; कभी बाग में सैर कर रहे हैं, कभी चाँदनी गत में विहाग उड़ा रहे हैं, कभी जंगल में मंगल गा रहे हैं, कभी इल्मी बहस कर रहे हैं , कभी बाँक का शोक़, कभी लकड़ी की धुन । वे दिन अब कहाँ | अनवर ने कहा--भाई, चलो, अब साथ-साथ रहें, जियें या मरे, मगर चार दिन की जिंदगी में साथ न छोड़ें। चलो, जरा बाज़ार की सैर कर आयें। मुझे कुछ सौदा लेना है। यह कद्द कर दोनों चोक चले | पहले बज़ाज़ें में धँसे | चारों तरफ़ से आवाजें आने लगों--आइए, आइए, अजी मियाँ साहब, क्या खरीदारी मंजूर है! खाँ साइब, कपड़ा खरीदिएगा ! आइए, वह-वह कपड़े दिखाऊँ के बाज़ार भर में किसी के पास न निकले | दोनों एक दूकान में ज़ा कर बेठ गये | दुकान में टाट जबिछा है, उस पर सफ़ेद चाँदनी, और लाला नैनसुख या डोरिये का भँगरखा डाटे बड़ी शान से बैठे हैं। तोंद वह फ़रमायशी, जैसे रुपये के दो वाले तरबूज़ | एक तरफ़ तनजेब, शरबती, अद्धी के थानों की कतार है, दूसरी तरफ मोमी छींट और फलालैन की बहार है। अलगनी पर रूमाल क़रीने से लटके हुए लाल-भयूका या सफ़ेद जैसे बगले के पर, या दरे-हरे धानी, जैसे लददबर | दरवाज़ा छाल रैंगा हुआ, पन्नी से मदा हुआ । दीवार पर सैकड़ों चिडियाँ टेंगी हुई । भनवर--भई, स्याह मख़मल दिखाना ।

बज़ाज़ बदल, बदल, जरी खाँ साहब को काली मख्नमरू का थान दिखाओ, बढ़िया |

लाला बरढू कई थान तड़ से उठा लाये -सूतरो, बूटीरार। अनबर ने कई थान देखे, और तब दाम पूछे ।

छाछम--गाज्नों के हिसात्र से बताऊँ, या थान के दाम ।

अनवर- भई, ग़ज़ों के हिसात्र से बताओ । मगर लछाडा, झूठ कम बोलना ।

ल,ला ने क़्दक़द्ा उद्राया--हजुर, हमारी दुकान में एक बात के सित्रा दूसरी नहीं कह | कोन मेल पसंद है ! अनवर ने एक थान पसंद किया, उसकी क्रोमत पूछी ।

लाला--सुनिए खुदाबंद, जी चाहे लोजिए, जी चाहे न लीजिए, मुल दस रुपये ग़ज़ से कम न होगी |

अनवर--एऐं, दस रुपये राज़ ! यार ख़ुश से तो डरो । इतना झठ !

छाला -- अच्छा, तो आप भी कुछ फर्माओ |

अनवर--हम चार रुपये ग़ज़ से टका ज़्यादा न देंगे ।

आज़ाद ने अनवर से कहा -चार रुपये ग़ज़ में न देगा |

अनवर--आप चुपके बैठ रहें, आपको इन बातों में ज़रा भी दस्तरछ नहीं है। 'शैख़् क्या जाने साबुन का भाव ?"

लाला -चार रुपये राज़ तो बाजार मर में न मिलेगी। अच्छा, आप सात के दाम दे दीजिए । बं!लिए, कितनी खरीदारी मंजूर है ! दस ग़ज़ उतारूँ !

अनवर- क्या खूब, दाम चुकाये ही नहीं और ग़जों की फिक्र पड़ गयी । वाजब्री बताओ, वाजत्री । इमें चकमा न दो, हम एक धाघष हैं|

लाला--अच्छा साइन, पाँच रुपये राज लैजिएगा ! या अब भी चकमा है !

अनवर - अब भी मँदगी है, तुम्दारी खातिर से सवा चार सही । बस पाँच ग़ज़ उतार दो ।

लाला ने नाक भौं चढ़ा कर पाँच राज़ मख्क्रमल उतार दी, और कहा --आप बड़े कड़े खरीदार हैं | हमें घाटा हुआ | इन दामों शहर भर में न पाइएगा ।

आजाद--भई, क़सम है खुदा की, मेरा ऐसा अनाड़ी तो फैंस ही जाय और वह गच्च' खाय कि उम्र मर न भूले ।

अनवर--जी हाँ, यहाँ का यद्दी हाल है। एक के तीन माँगते हें।

यहाँ से दोनों आदमी अनवर के घर चले। चलते-चलते अनवर ने कहा--छो खब याद आया | इस फ़ाटक में एक बॉके रहते हैं। जरी मैं उनसे मिल दूँ। मियाँ आजाद और अनवर, दोनों फाटक में हो रहे, तो क्या देखते हैं, एक अबेड उम्र का कड़ियल आदमी कुर्सी पर बैठा हुआ है। घुटन्ना चूड़ीदार, चुध्त, श्ग शिकत नहीं । चुन्टदार अँगरखा एड़ी तक, छाता गोल कद हुआ, चोली ऊँची, नुककेदार माशे भर की कटी हुई टोपी। सिरोही सामने रखी है और जगह-जगद करौली कटार, खाँड़ा, तलवारें चुनी हुई हैं | सछाम-कछाम के बाद अनवर ने कहा--- जनाब, वह बंदूक आपने पचास रुपये की खरीदी थी; दो दिन का वादा था, जिसके छः महीने हो गये; मगर आप साँस-डकार तक नहीं छलेते। बंदूक इजम करने का इरादा हो, तो साफ़-साफ़ कह दीजिए, रोज़ की ठाँय-ठाँय से क्या फ़ायदा !

बाँके-- केती बंदुक, किसको बंदुक ! अपना काम करो, मेरे मुँह न चढ़ना मियाँ, दम बाँके लोग हैं, सैकड़ों को गे, हज़ारों को झाँसे दिये, आप बेचारे क्रिस खेत की मूली हैं ! यहाँ सौ पुश्त से सिपद्गरी हीती आयी है । इम, और दाम दें !

अनवर-वाह, अच्छा बाँकपन है कि आँख चूको, और कपड़ा ग्रायब; कम्मल डाला और लूट लिया | क्या बॉकपन इसी का नाम है ! ऐसा तो डुक्के-उचे किया करते हैं। आज के सातव दिन बार्य दाथ से रुपये गिन दीजिएगा, वरना अच्छा न द्ोगा ।

बाँक ने मूँछों पर ताव दे कर कहा--माद्म हं।ता है, ठुम्द्वारी मौत हमारे हाय बदी दे | बहुत बढ़-बद कर बातें न बनाओ । बाँकों से टराना अच्छा नहीं ।

रस धकरार और तू वू, मैं-में के बाद दोनों आदमी घर चले। इधर इन बाँक का भांजा, जो अखाड़े से आया ओऔए घर में गया, ते क्या देखता है कि सत्व औरतें नाक-भौं चढ़ाये, मुँह बनाये, गुस्से में मरी बैठी हैं । ऐ. खेर तो है ! यह आज सब चुपचाप क्यों बैठे हैं ! कोई मिनकता द्वी नहीं। इतने में उसकी मानी कड़क कर बोली--अब चूड़ियाँ पहनो, चूड़ियाँ ! और बहू-बेटियों में दद् कर बैठ रहो । वह मुआ करोड़ों बातें सुना गया, पक्के पददर भर तक ऊल-जदूल बका किया और तुम्दारे मामू भैंठे सब सुना किये। 'फेरी मुंह पर लोई, तो क्या करेगा कोई |? जब शर्म निगोड़ी भून खायी, तो फिर क्या। यह न हुआ कि मुए कछजिमे को ज़बान ताद से खींच टे।

भांज को जवानी का जोम था ; शेर की तरह बफरता हुआ बाहर आया ओर बोला- मामूजान, यह आज आपसे किससे तकरार दो गयो ? औरते तक झल्ला उठीं और आप चुपके बैठे सुना किये ! वल्ला6, इज्जत छ्ूंब गयी। ले, अब्र जल्दों उसका नाम बताइए, अभी आँतों का ढेर किये दता हू ।

मामू-- अरे, वही अनवर तो है। उसका क़जदार हूँ । दो बातें सुनाये तो भी क्या ? और वह है ही ब्रेचार क्या कि उससे भिड़ता ! वह पिद्दी, मैं बाज़, वह छुबला-पतला आदमी, में पुराना उस्ताद | बोछने का मौका द्ोता तो इस वक्त उसकी ल्यश न फ़ड़कती द्वोती ! ले ग़स्सा थूक दो; जाओ, खाना खाओ; आज मीठे टुकड़े पक्के हैं।

भांजा--क़सम ख़दा की, जब तक उस मरदूद का खून न पी दूँ , तब तक खाना हराम है । मीठे टुकड़ों पर आप ही हृत्ये लगाइए । यह कह कर घर से चल खड़े हुए । मामू ने छठाख समझाया, मगर एक न मानी |

इधर अनवर जब घर पहुँचे, तो देखते क्या हैं, उनका लड़का तड़प रहा है । घत्राये, वह क्या, खेरियत तो है ! लींडी ने कहा--मभैया यहाँ खेल रहे ये कि विःछू ने काट लिया। तभी से बच्चा तड़प कर छोट रहा है। अनवर ने आज़ाद वो वहीं छेड़ा और खुद अस्पताल चले कि झटपट डॉक्टर को बुला लायें। मगर अभी पचास क़रम भी न गये होंगे कि सामने से उस बाँके का भांजा आ निकला । आँखें चार हुई । देखते ही शेर की तरह गरज कर बोला--ले सँभलू जा। अभी सिर खून में लोट रहा होगा | हिला और मैंने हाथ दिया। बाँकों के मुँह चढना खाला जी का घर नहीं । बेचारे. अनवर बहुत परेशान हुए । उधर लड़के की वह ६ लत, इधर अपनी य€ गत | जिस्म में ताक़त नहीं, दिल में हिम्मत नहीं। भागें, तो क्रदम नहीं उठते; ठहरें तो पाँव नहीं जमते । सैकड़ों आदमी इर्द-गिर्द जमा हो गये और बाँके का समझाने लछगे--जाने दौजिए, इनके मुक़ाबिले में खडे होना आपके लिए शमम की बात है। अनवर की आँखें डब्ढबा आयीं। लोगों से बोले---भाई, इस वक्त मेरा बच्चा घर पर तड़प रहा है, डॉक्टर को बुलाने जाता था कि राह में इन्होंने घेरा । अब किसी सुरत से मुझे बचाओ । मगर उस बाँके ने एक न मानी । पैतरा बदछ कर सामने भा खड़ा हुआ। इतने में किसी ने अनवर के घर खबर पहुँचायी कि मिर्यों से एक बाँके से तलवार चल गयी। जितने मुँह उतनी बातें | किसी न कद दिया कि चरका खाया और गरदन खट से अलग हो गयी | यद्द सुनते ही अनवर की

बीबी सिर पीट-पीट कर रोने छगी--लोगो, दौड़ो, हाय, मुझ पर बिजली गिरी । हाय, मैं जोते-जी मर मिटी । फिर बच्चे से चिमंट कर विछाप करने लगी-- मेरे बचे, अब तू अनाथ हो गया, तेरा बाप दगा दे गया | द्वाय, मेरा सोहाग छुट गया ।

मियाँ आजाद यद्द ख़मर पाते ही तीर की तरह घर से निकलछ कर उस मुकाम पर जा पहुँचे | देखा, तो वह जालिम तलवार द्वाथ मं लिये मस्त द्वाथी की तरद चिंघाड़ रहा है | आजाद ने झट से झपुट कर अनवर को हटाया और पैतरा बदल कर बाँके के सामने आं खड़े हुए।। वह तो जवानी के नशे में मस्त था, पहले, हृथकटी का हाथ लगाना चाहा, मगर आज़ाद ने खाली दिया । वह फिर झपटा और चाहा कि चाकी का हाथ जमाये, मगर यह आड़े हो गये |

आजाद--बचा, यह उड़नघाइयाँ किसी गैंवार को बताना। मेरे सामने छक्के छूट जायें, तो सही । आओ चोट पर । वह बॉका झल्ला कर झपदा ओर घुटना टेक कर पाल्ट का हाथ छगाने द्वी को था कि आज़ाद ने पेतरा बदला और तोड़ किया--मोढ़ा | मोदा तो उसने बचाया, मगर आज़ाद ने साथ ही जनेव का वह तुला हुआ द्वाथ जमाया कि उसका मंडारा तक खुल गया | धम से जमीन पर आ गिरा | मियाँ आज़ाद को सबने घेर लिया » कोई पीठ ठाकने छगा, कोई डेंड मलतने लगा । अनवर लपके हुए घर गये । बीबी को बाँछे खिल गयीं, गोया मुदों जी उठा ।

वुसरे दिन अनवर और आज़ाद कमरे में बैठे चाय पी रहे थे कि डाकिया हरी-हरी वरदी फड़काये, छाल-लाछ पगिया जमाये, खासा टेयाँ बना हुआ आया और एक अखबार दे कर लंबा हुआ | अनवर ने झटपट अखबार खोला, ऐनक लगायी और अखबार पढ़ने छगे । पदुते-पढ़ते आखिरी संफ़े पर नज़र पड़ी, तो चेहरा खिल गया ।

आजाद--यद क्यों खरा हो गये भई १ क्या ख़बर है !

अनवर--देखता हूँ कि यह इश्तिहार यहाँ कैसे आ पहुँचा ! अखबारों में इन बातों का क्या जिक्र ! देखिए--

जरूरत है एक अरबत्री " प्रोफेसर की नजीरपुर-कॉलेज के लिए। तनख्वाह दो सो रुपये महीना ।?

आज़ाद--अखबारों में सभी बातें रहती हैं, यह कोई तो नयी बात नहीं। अखबार लड़कों का उस्ताद, जवानों को सीधी रा्ट बतानेवाला, बुडढों के तजुते की कसौटी, सौदागरों का दोस्त, कारीग़रों का हमदर्द, रिआया का वकील, सब कुछ है। किसी कालूम में मुल्की छेड़-छाड़, कहीं नोटिस और इश्तिहार, अँगरेजी अखबारों में तरइ-तरद की बात दर्ज होती हैं और देसी अखबार भी इनकी नकल करते हईं। शतरंज के नक़्शे क्ौमी तमस्छुकों का निखे, घुड़दौड़ की चर्चा, सभी कुछ द्ोता है। जब कमी कोई ओहदा खाली हुआ और अच्छा आदमी न मिला, तो हुककाम इसका इश्तिहार देते हैं। लोगों ने पढ़ा और दरख्वास्त दाग़ दी ऊंगा तो तीर, नहों तुक्का ।

अनबर --अत्र तो नये-नये इश्तिद्दार छपने लगेंगे । फोई नया गंज आजाद करे, तो उसको छपवानरा पड़ेगा--एक नौजवान साक़िन की ज़रूरत है, नये गंज में दकान

माने ऊ लिए; क्योंकि जन्न तक धुआँघार चिलमें न उड़ें, चरस की लछौ आसमान

को खबर न लाये, तब तक गंज की रौनक़ नहीं | अफीमची इश््तिहार ठेंगे क्लि एक एसे आदमी की ज़रूरत है, जो अफीम घोलने में ताक हो, दिन-रात णीनक में रहे प्रगर अफीम घोलने के वक़्त चौंक उठे | आराम-तलब लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे किस्सा कहनेवाले की जरूरत है, जिसकी ज़ब्रान कतरनी की तरद्द चली चाय. जिसके अमीर-हमजा की दास्तान ज़बान पर हो, जमीन और आसमान के कुलात्रे मिलाये झूठ के छप्पर उड़ाये, शाम से जो बकना शुरू करे, तो तड़का कर दे । ख़थशामटपर्सद लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे मुसाइब की ज़रूरत है, जो आठों गाँठ कुम्मैंत हे! हाँ में हो मिलाये, हमको सखावत में दातिम; दिलेरी में रुस्तम, अक्छ में अरस्त बनाये - मुँह पर कहे कि हुजुर ऐसे और हूजूर के बाप ऐसे, मगर पीठ-पीछे गालियां द कि इस गधे को मैंने खूब ही बनाया । बेफ़िक्रे छपवायेंगे कि एक बटेर की जरूरत है, जो बदढ-बढ कर छात लगाता हो; एक मु की, जो सवाये-ड्योटे को मारे; एक मेंदे की, जो पहाड़ से टक्कर लेने में बंद न हो |

इतने में मिज्ञां सईद भी आ बैठे | बोले--भई, हमारी भी एक जरूरत छपया दो। एक ऐसी जोरू चाहिए जो चालछाक और चुस्त हो, नख-सिख्र से दुरुस्त हो, शोख और नंचल हो, कभी-कभी हँसी में गोपी छीनकर चपत भी जमाये, कभी रूठ जाये कभी गुदगुदाये; ख़च करना न जानती हो, वरना हमसे मीज़ान न पटेगी; लाल मुँह हो; सफ़ेद हाथ-पाँव हों, लेकिन ऊँचे कद की न हो, क्योंकि मैं नाठा आदमी हैँ; खाना पकाने में उत्ताद हो, लेकिन दहाज़मा खरात्र दो, हल्की-फुलकी दो चपातियां खाय, तो तीन दिन में इज़ज़म दो; सादा मिज्ञाअ ऐसी हो कि गहने-पाते से मतलब ही न रखे,-हँसमुख द्वो, रोते को हँसाये, मगर यह नहीं कि फटी जूती की तरह बेमी-का दाँत निकाल दे, दरख्यास्त खटाखट आये, हाँ, यह भी याद रहे कि साहत्र के मुँह पर दादी न हो |

आजाद--और तो खेर, मगर यह दादी की बड़ी कड़ी शर्त है। भला क्यों साहब औरतें भी मुछकड़ हुआ करती हैं !

सईद--कौन जाने भई, दुनिया में सभी तरद्द के आदमी होते हैं। जब बेमूँछ के मर्द होते हैं, तो मुँडबाली औरतों का होना भी मुमकिन है। कहीं ऐसा न हो कि पीछे हमारी मुँछ उसके हाथ में और उसकी दाढ़ी हमारे हाथ में हो ।

आजाद--अजी, जाइए भो औरत के भी कहीं दादी होती है !

सईद--हो या न हो, मगर यह पख दम जरूर लगायेंगे ।

आपस में यही मजाक़ हो रहा था कि पडोस से रोने-पीटने की आवाज़ आयी | मालूम हुआ कोई बूढ़ा आदमी मर गया । आजाद भी वहाँ जा पहुँचे। लोगों से पूछा इन्हें क्या बीमारी थी ! एक बूढ़े ने कहा--यह न पूछिए, हुकुम की बीमारी थी ।

आजाद-यह कौन बत्रीमारी हे ! यह तो कोई नया मरज़ माद्म होता है | इसकी अलामतें तो बताइए ।

बूद्ा--क्या बताऊँ, अक् की मार इसका ख़ास सब्त्र है । अस्सी बरस के थे, मगर अक़ल के पूरे, तमीज छू नहीं गयी ! खदा जाने, धूप में बाल सफ़ेद किये थ या नजला हो गया था | हज़रत की पीठ पर एक फोड़ा निकलछा। दस दिन तक इलाज नदारद । दसवें दिन किसी गैवार ने कह दिया कि गुलेअब्बास

के पत्ते ओर सिरका बाँधो। झट-से राजी हो गये । सिरका बाज़ार से खरीदा, पत्ते बाग़ से तोड़ छाये, और सिरके में पत्तों को खूब तर करके पीठ पर बाँधा । दूसरे रोज़ फोड़ा आध अंगुल बढ़ गया । किसी और गोखे ने कह दिया कि भटठकटेया बाघों, यह टोटका है। इसका नतीजा यद्द हुआ कि दर्द और बढ़ गया । किसी ने बताया कि इमली की पत्ती, धतूरा आर गोबर बांधा । वहाँ क्या था, फ़ौरन मंजूर | अब तड़पने छंगे | आग लग गयी ! महस्ले की एक औरत ने कद्दा-मैं बताऊँ, मुझसे क्यों न पूछा । सहल तरकीय है, मुली कं अचार के तीन क़तले लेकर जमीन में गाड़ दो । तीन दिन के बाद निकालछो और कुएँ म डाल दो | फिर उसी कुएँ का पानी अपने हाथ भर कर पी जाओ। उसी दूम चंग न हं। जाओ, तो नाक कटा डालूँ। सोचे, भई, इसने शर्त बढ़ी कही की है। कुछ तो है कि नोक बद छी। झठ मूली के क़तले गाड़े और कुएँ में ढाल पानी भरने लगे उन पर तुर्रा यद्द कि मारे दर्द के तड़प रदे ये | रस्सी हाथ से छूट गयी धम से गिरे, फोड़े में ठेस छगी, तिलमिलाने लगे यहाँ तक कि जान निकल ग्रेयी |

आजाद---अफ़सोस, बेचारे की जान मुफ्त में गयी। इन अक़्छ के दुश्मनों से कोई इतना तो पूछे कि हर ऐरे ज्ेरे की राय पर क्यों इलाज कर बैठते हो! नतीजा यह होता है, या तो मरज़ बढ़ जाता है, या जान निकल जाती है।

HINDI TEXT

प्रसंग १५

मिर्यों आज़ाद एफ दिन चले जाते थे । क्या देखते हैं, एक पुरानी-धुरानी गड़-हिया के किनारे एक दढ़ियल बैठे काई की कैक्रियत देख रहे हैं। कभी ढेला उठा-कर फेका, छप | बुच्चें आदमी और ढौंडे बने जाते हैं । दाढ़ी का भी खयाल नहीं | लत्फ़ यह कि महत्ले भर के लौंडि इ्दर्द-गिई खड़े तालियाँ बज रहे हैं, लेकिन आप गड़हिया की छहरों.ही पर लट्ट हैं । कमर झ्ुझ्माये चारों तरफ ढेडे और ठीकरे दूंढते फिरते हैं। एक दफ़ा कई ढेडे उठा कर फेंके । आज़ाद ने सोचा, कोई पागल है क्या। साफझुथरे कपड़े पहने, यह उम्र, यह वजा, और किस मजे से गड़हिया पर बैठे रैंगरलियाँ मना रहे हैं। यह खबा नहीं कि गाँव भर के लौंडे पीछे तालियाँ बजा रहे हैं। एक लौंडे ने चपत जमाने के लिए हाथ उठाया, मगर हाथ खींच दिया । दूक्र ने पेड़ की भाड़ से कंकड़ी छगायी। तीसरे ने दाढ़ी पर धास फेंकी। चौथे ने कह--मिर्याँ, तुम्हारी दादी में तिनका; मगर मेरा शेर ज़त न प्रिनका | गड़दिया से उठे, तो दूर को सूझी । झप से एक पेड़ पर चढ़ गये, फुनगी पर जा बैठे और बंदर की तरह छगे उचकने | उस टहनी पर से उचके, तो दूसरी डाल पर जा बैठे । उस पर लड़कों को भी बुलाते जाते हैं कि आओ, ऊपर आओ। इप्रली का दरख्त था, इतना ऊँचा कि आसमान से बातें कर रहा था। हज़रत मज़े से बैठे इमली खाते और चियें लड़कों पर फेकते जाते हैं। लौंडे गुल मचा रहे हैं कि मियां, मियाँ, एक चियोँ हमको इधर फेंके, इधर; हाथ ही टूटे, जो उधर फेंके | क्या मज़े से गपर-गपर करके खाते जाते हैं, इधर एक चियाँ भी नहीं फेंकते । ओ कंजूस, ओ मक्ख्ीचूस, ओ बंदर, अरे मुछं:र, एक इधर भी | थोड़ी देर में खटखट करते पेड़ से उतरे | इतने में कमसरियट के तीन-चार द्वाथी चारे और गन्ने से लदे झूपते हुए निकले। आपने लड़कों को तिखाया कि गुल मचा कर कहो--हा थी, हाथी गन्ना दे। हांडों ने जो इतनी शह पायी, तो आसमान सिर पर उठा लिया | सत्र चीखने लगे--हाथी, हाथी, गन्ना दे | एकाएक एक रीक्षाल्ा आ निकण । आपने झट रीछ की गरदन पकड़ी और पीठ पर हो रहे | टिक-टिक-टिक, क्या ट्रू है! रीछ्वाला चिल्ल-पों मचाया ही किया, आपने दो-तीन छ हों को आगे-पीछे अगल-बगल बिठा ही लिया | मज़े से तने बेंठे हैं, गोया अपने वक्त के बादशाह हैं । थोड़ी देर के बाद लड़कों को ज़मीन पर पटका, खुद भी धम से ज़मीन पर कूद पड़े, और झट हँगोट कम, ताढ ठोक, रीछ से कुश्ती लड़ने पर आमादा हो गये । तब तो रीक्ालय चिल्लाया-तभियाँ, क्यों जान के दुमन हुए ही | चबा ही डालेगा ! यह तो हवा के घोड़े पर सवार ये, आव देखा न ताव, चिमट ही तो गये और एक अंटी बतायी तो री चारों खाने चित | ढोंडों ने वह मुल मचाया हरि री७ पूरब भागा, और रीछवाछा पश्चिम | मुह्े भर में क्कद उड़ने लगा । थोंड़ी ही देर के बाद एक भड्ठरी आ निकछा। धोती बाँचे, पोथी बगल में दबाये, रुद्राक्ष की माला पहने, आवाज लगाता जाता दै-साइत बिचारें, सगुन बिचारें। दढ़ियल के क़रीब से गुजरा, तो शिकार इनके द्वाथ आया | बोले--भई, इधर आना । उस्तकी बाँछें खिल गयीं कि पौ बारइ है। अच्छी बोहनी हुई। दढ़ियल ने द्वाथ दिखाया और पूछा--हमारी कितनी शादियाँ होंगी ! उसने

कन्या, मकर, सिंह, वृश्चिक करके बहुत सोच के कह्दा--पाँच। आपने उसको पगड़ी उछाल दी | लड़कों को दिल्लगी सूझी, किसी ने सिर सुदृछाया तो किसी ने चपत लगाया | अच्छी तरह बोहनी हुई | ददियल ने कह्दा--सच कहना, आज साइत देख कर चले थे यायों ही ! अपनी साइत देख लेते हो या औरों द्वी को राह बताते द्वो ! अच्छा, खेर, बताओ, हमारे यहाँ लड़का कब तक होगा १ भबुरी ने कह्दा--बस, बस, आप और किसी से पूछिएगा । भर पाया । यह कह कर चलने द्वी को था कि दढ़ियल ने लड़कों को इशारा किया । वे तो इनको अपना गुरू द्वी समझते ये । एक ने पोथी ली, दूसरे ने माला छिपायी, तीसरे ने पगिया टहला दी। दस-पाँच चिमट गये । बेचारा बड़ी भुश्किल से जान छुड़ा कर भागा और क़सम खायी कि अब इस मुहल्ले में कदम न रखूँगा । इतने में खोंचेवाले ने आवाज़ दी--ग़ुलाबी रेवड़ियाँ, करारी खुटियाँ, दालमो” सलछोने, मटर तिकोने । लींडे अपने-अपने दिल में स्रश दो गये कि दढियल के हुक्म से खोंचा छूट लेंगे और खब मिठाइयाँ चखेंगे। मगर उन्होंने मना कर दिया--खजबरदार, हाथ मत ' बदाना। जब खोंचेवालछा पास आया, तब उन्होंने मोल-तोल करके दो रुपये में सारा खोंचा मोल ले लिया और लड़कों को खूब छका कर खिल्मया | एक दस मिनट के बाद आवाज़ आयी--खीरे लो, खीरे । आपने उचक कर टोकरा उलट दिया | खीरे ज़मीन पर गिर पड़े । जेसे ही लड़कों ने चाहा, खीरे बटोरें कि उन्होंने डॉट बतायी। खीरेवाले के दोनों हाथ पकड़ लिये और लड़कों से कद्दा--खीरे उठा उठा करे इसी गड़हिया में फेंकते जाओ । पचास-साठ खीरे आनन-फानन गडदिया में पहुँच गये । अभी यद्द तमाशा है। ही रहा था कि एक चिढीमार कंपा-जाल लिये हुए आ निकलछा। हाय में तीन-चार जानवर, कुछ झोले के अंदर। सब फड़फड़ा रदे *। कहता जाता है--काला भुजंगा मंगल के रोज । दद्दियल ने पुकारा-आओ मियाँ, इधर आओ । एक भुजंगा ले कर अपने ऊपर से उतार कर छोड़ दिया। चिडीमार ने कहा--टका हुआ । दूसरा जानवर एक लड़के पर से उतार कर छोड़ा | इसी तरह दस-पंद्रह चिढ़ियाँ छोड़ कर चुपचाप छड़े दो गये। गोया कुछ मतलब द्वी नहीं | चिड़ीमार ने कहा--हुज़्र, दाम। आपने फ़र्माया-- तुम्द्दारा नाम | तब तो वह 'चकराया कि अच्छे मिले। बोछा--डुजर, भेली के जान-बर थे। आय बोले--कैसी घेठी और कैसा येछा |! कुछ घास तो नहीं खा गया ! भंग पी गया दे या शराब का नशा है? इधर लड़कों ने जाल-कंपा सत्र टहला दिया । थोड़ी देर रो-पीट कर उसने स्री अपनी राह ठी ।

टदियल ने ८डको को छोड़ा और वहाँ से किसी तरफ़ जाना ही चाहते थे कि आशब्ाद ने क़रीब आ कर पूछा--हज़रत, में बड़ी देर से आपका तमाशा देख रहा हूँ, कभी खीरे गड़हिया में फेके, कभी इमली पर उचक रहे, कभी चिढ़ीमार की ख़बर ली, कमी भडुरी को आड़े हाथों लिया | मुझे खौफ़ है कि आप कह्दीं पागल ने हो जायैं, जल्दी फ़रद खुल्वाइए |

दढ़ियछ--मुझे तो आप द्वी पागल मादूम होते हैं। इन बातों के समझने के लिए बड़ी अक़्छ चाहिए। सुनिए, आपको समझाऊँ। गड़हिया पर बिश्तर जमा कर ढेले फेकने और पेड़ पर उचक कर इमली खाने और द्वाथी से गन्ने माँगने का सबब यह है कि लोंडे भी हमारी देखा-देखी उचक-फाँद में बक़ हो जाये, यह नहीं कि मरियल टट्ट की तरह बहाँ बेंठे, वहीं जम गये। लड़कों को कम से कम दो घंटे रोज खेलना-कूदना चाहिए,, वरना बीमारी सतायेगी। रीछवाले के रोछ पर उचक बैठने रीछ को भगा देने और चिड़ीमार के

जानवरों को मुफ़्त बे कोड़ी-बेदाम छुड़ा देने का सबब यह है कि जब हम बानवरों को तकलोफ़ में देखते हैं, तो केलेज पर साँप लोप्ने लगता है और इन चिड़ीमारों का तो में जानी दुश्मन हूँ। बस चले, तो कालेपानी मिजवा दूँ। जहाँ देखा कि दो-चार भछे मानुस खड़े हैं, छगे जान रों को जोर से दबाने, जिसमें वे चीखें, और छोग उनकी द्वात पर कुछ दे निवदले, इनकी इृश्डियाँ चढ़ जाये । खीरे इसलिए गड़द्या में फिकवा दिये कि आजकल हवा खराब है, खीरे खाने से मला-चंगा आदमी बीमार द्वो जाय। मगर इन कुँजड़ों-कबाड़ियों को इन बातों से क्या वास्ता ! उन्हें तो अपने टकों से मतलब । मैंने समझा, एक कब्राड़िये के नुक़सान से पचासों आदमियों की जान बच जाय, तो क्या बुरा ? देख छा, खोंचेवाढे को हमने अपने पास से दो रुपये खनाखन गिन दिये । अब समझे, इस तमारो का दाल !

यह कद कर उन्होंने अपनी राह्द ली और आज़ाद ने भी दिल में उनकी नेक नीयती की तारोफ़ करते हुए दूसरी तरफ़ का रास्ता लिया । अभी कुछ ही घूर गये थे कि सामने से एक साहब आते हुए दिखायी दिये। उन्होंने आज़ाद से पूछा-- क्यों साइबर, आप अफ़ीम तो नहीं खाते १

आज्ञाद-अफ़म पर खरा की मार | क़सम ले लीजिए, जो आज तक हाथ से भी छुई हो | इसके नाम से नफ़रत है ।

यह कटद्ट कर आज्ञाद नदी के किनारे जा बैठे । वहाँ से पलट कर जो आये, तो क्या देखते हैं कि वही हज़रत जमीन पर पढ़े आँखें माँग रहे हैं। चेहरे पर मुदनी छायी है, हॉठ यूख रहे हैं, आँखों से आँसू बह र६ हैं। न सिर को फ़िक् है, न पाँव की । आज्ञाद चकराये, क्या माजरा है। पूछा-क्यों भई, खैर तो है? अभी तो भले-चंगे थे, इतनी जल्द कायापलट कैसे हो गयी ?

अफ़ीमची--भई, में तो मर मिथ । कहीं से अफ़ीम ले आभो । पिऊँ, तो आँख

खुलें; जान में जान आये | छुत्पन ही से अफ़ीम का आदी हूँ। वक़्त पर व पिले तो जान निकल जाय ।

आज़ाद--अभरे यार, अफ़ीम छोड़ो, नहीं, इसी तरह एकदिन दम निकल जायगा |

अफ़्रीमची--तो क्या आप अमृत पी कर आये हैं ! मरना तो एक रिन सभी को है |

आज़ाद--मिर्यों, हो बड़े तीखे; रस्सी जल गयी, मगर बल न गया ।? पड़े सिसक रहे हो, मगर जवाब, तुर्की ब तुर्की ज़रूर दोगे ।

अफ़्रोमची--जनाब, अफ़ीम लानी हो तो लाइए, वर्ना यहाँ बक-बक सुनने का दिमाग नहीं ।

आज्ञाद--अफ़ीम लानेवाले कोई और ही होंगे, हम तो इस फ़िक्र में बैठे हैं कि आप मरें, तो मातम करें | हाँ, एक बात मानों तो अमी लपक जाऊँ, ज़रा लकड़ी के सहारे से उस हरे-भरे पेड के तले चलो; वहाँ इरी-हरी घास पर लोट मरो, ठंडी-ठंडी हवा खाओ, तब तक में आता हूँ।

अफ़ीमची--अरे मियाँ, यहाँ जान भारी है । चलना-फिरना उठना-बेटना कैसा !

आखिर आज़ाद ने उन्हें पीठ पर छादा और ले चले। उनकी यह हालत कि आँखें बंद, मुँह खुला हुआ; मालूम ही नहीं कि जाते कहाँ हैं। आज़ाद ने उनको नदी में ले जा कर गोता दिया | बस क्रयामत आ गयी । अफ़ीमची आदमी, पानी को सूरत से नफ़रत, लगे चिल्लाने--बड़ा गच्चा दे गया, मारा, पटरा कर दिया ! उम्र भर में आज ही नदी में क़टम रखा; खरा तुझसे समझे; सन से जान निकल गयी ठिद्वुर गया; अरे

जालिम, अन्न तो रहम कर । आज़ाद ने एक गोता और दिया। फिर ताबइतोड़ कई गोते डिये | अब उनकी केफ़ियत कुछ न पूछिए। करोर्डों गाडियाँ टी। आज़ाद ने उनको रेती में छोड़ दिया और लंबे हुए । चल्ते-चलते एक बर गद के पेड़ के नीच पहुँच, जिसकी टहनियोँ आप्तमान से बाते करती थीं और जटाएँ पाताल को ख़बर लेती थीं। देखा, एक हज़रत नशे में चूर एक दुबली-पतली टटुई पर सवार टिक-टिक करते जा रहे हैं ।

आजआद--इस टटुई पर कोन लटा है !

शराबी--अच्छा जी, कोन लदा है ! ऐसा न हो कि कहीं मं उतर कर अं जर-पंजर दीले कर दूँ | यों नहीं पूछता कि इस हवाई घोड़े पर आसन जमाये, बाग डठाये कोन सवार जाता है | आँखों के आगे नाक, यूझे क्या खाक । टद्ढ ऐसे ही हुआ करते हैं!

आजाइ--जनाब, कसूर हुआ, माफ़ कीजिए | सचमुच यह तो तकी नस्ल का पूरा घोड़ा है । खुदा झठ न बुलाये, जमना पारकी बकरी इससे कुछ ही बड़ी द्ोगी।

शरात्री-हाँ, अब्र आप आये राह पर । इस घोड़े की कुछ न पूछिए । माँ के पेः से फुद ऋ्रता निकला था ।

आजाद--जी हाँ, वह तो इसकी आँखे ही कहे देती हैं। घोड़ा क्या, उडन-खटला द।

शराबी--इसकी क्रीमत भी आपको मालम है !

आजाइ--ता साहब ! भला में कया जागे। नाप तो स्पर राधे वश सवार दुए हैं, यहाँ तो टाँगों की सवारी के सिवा और कोई सवारी मयस्सर ही न हुई | मगर उस्ताद कितनी ही तारीफ़ करो, मेरी निगाह में तो नहीं जैँचता |

शराबो-अच्छा, तो इसी बात पर कड़कड़ाये देता हूँ ।

यह कह कर एड़ लगायी मगर टट्टू ने जुंग्रिश तक न की | वह और अचल द्टो गया । अग्र चाबुक पर चाब्रुक मारते हैं, एड छगाते हैं और वह टसकने का नाम तक नहीं लेता। आजाद ने कहा--बस ज़्यादा शेखी में न आइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए ।

यह कह कर आज़ाद तो चले, मगर शरात्री के पाँव डगमगाने छंगे। वाग अब छूटी और अब छूटी | दस कदम चले और बाग रोक ली। पूछा--मियाँ मुसाफिर में नशे में तो नहीं हूँ !

आज़ाद--जी नहीं, नशा कैसा ! आप होश की बातें कर रहे हैं

शरात्री इसी तरह बार-बार आजाद से पूछता था । आखिर जब आज़ाद ने देखा कि यह अब घुहिया पर से लुदका ही चाहते हैं, तो झट घुड़िया को एक खेत में हाँक दिया, और गुरू मचाया कि ओ किसान, देख, यद्द तेरा खेत चराये लेता है। किसान के कान में मनक पड़ी, तो लठ काँपे पर रख लाखों गालियाँ देता हुआ

झपटा । आज चचा बनाके छोड़ूँगा; रोज़ सुअरिया चरा ले जाते थे, आज़ बहुत न के बाद हत्ये चदे दो । नजदीक गया, तो देखता है कि टटुई है और एक

मी उस पर ल्दा है। किसान चाढाक था | बोझा--आप हैं बाबू साहब ! चलिए, आपको धर ले चूँ। वहीं खाना खाइए और आराम से सोइए, | यह कह कर घुड़िया की रास थामे हुए, कॉजीहाउस पहुँचा और

टठुई को कॉजीहाउस में ढकेल कर चंपत हुआ । यह बेचारे रात भर कॉजीद्धाउस में रहे, सुत्रह को किसी तरह पर पहुँचे ।

HINDI TEXT

प्रसंग १६

प्ियों थाज़ाद के पाँव में तो आँधी रोग था। इधर-उधर चक्कर लगाये, रास्ता नापा और पक्ष कर सो रहे | एक दिन साँड़नी की खबर लेने के लिए. सराय की तरफ़ गये, तो देखा, बड़ी चहुल-पहल है | एक तरफ़ रोटियाँ पक रही हैं, दूसरी तरफ़ दाल बधारी जाती है। भटियारियाँ मुसाफ़िरों को घेर-घार कर ला रही हैं, साफ़-सुथरी कोट-रियाँ दिखला रही हैं । एक कोठरी के पास एक मोटा-ताज़ा आदमी जैसे ही चारपाई पर बैठा, पट्टी टूट गयी । आप गड़ाप से झिलेंगे में हो रदे । अब बार-बार उचकते हैं: म्रगर उठा नहीं जाता | चिला रहे हैं कि भाई, मुझे कोई उठाओ | आखिर भठियारो ने दाहना हाथ पकडा, बायीं तरफ मियाँ आजाद ने हाथ दिया और आपको बडी मुश्किल से खींच-खाँच के निकाला । झिलँगे से बाहर आये, तो सूरत बिगड़ी हुई थी । कपड़े कई जगह मसक गये ये | झला कर मठियारी से बोले--वाह, अच्छी चारपाई दी ! जो मेरे दाथ-पाँव टूट जाते, या सिर फूट जाता, तो कैसी होती !

भठियारी--ऐ, वाह मियाँ, (उल्टा चोस कोतवाल को डॉटे !! एक तो छपरखट को चकनाचूर कर डाला, पट्टी के बहत्तर ठुकड़े हो गये, देंगे टका और छह रुपये पर पानी फेर दिया, दुसरे इमीं को छलकारते हं !

आज़ाद--जनाब, इन भठियारियों के मुँह न लगिए, कहीं कुछ कह ब्रैठें, तो मुफ़्त की झेप हो | देख भाल कर बैठा कीजिए | कहाँ से आ रहे हैं?

हकीम--यहीं तक आया हूँ।

आजाद--आप आये कहाँ से हैं !

हकीम--जी गोपामऊ मकान है।

आज़ाद--यहाँ किस ग़रज़ आना हुआ !

हकीम--हकीम हूँ |

आज़ाद--यह कह्विए कि आप तबीन्र है ।

हकीम--तत्रीज आप खुद होंगे, हम हकीम हें |

आजाद---अच्छा साहब, आर हकीम दो सही; क्या यहाँ दहिकमत कीजिएगा ?

हकीम--और नही तो दया, माड झोकने आया हूँ १ या सनीचर पैरों पर सवार था ! मला यह तो फ़र्माइए कि यह केसी जगह है ! छोग किस फैसन के हैं! आब-हवा कैसी है ! क

आब्ाद--यह न पूछिए, जनात्र । यहाँ के बिंदे पूरे घुटे हुए, आठों गाँड कुम्मेत हैं। और आब-हवा तो ऐसी है कि बरसों रहिए, पर सिर में दद तक न हो । पाव मर की खूराक हो, तो तीन पाव खाइए । डकार तक आये, तो मुझे सजा दीजिए |

यह सुन कर हकीम साहब ने मुँह बनाया और बोले--तत्र तो बुरे फँसे !

आज़ाद--क्यों, बुरे क्यों फैंसे ! शौक से दिकमत कीनिए । आब-दहवा अच्छी है, बीमारी का नाम नहीं ।

हकीम--हज़रत, आप निरे बुद्ध हैं। एक तो आपने यद्द गोला मारा कि आब-हवा अच्छी है। इतना नहीं समझते कि आब-हवा अच्छी है, तो हमसे क्या वास्ता, हमें कौन पूछेगा | बस, हाथ पर हाथ रखे मक्खियाँ मारा करंगे | हम तो ऐसे शहर जाना चाहते हैं, जहाँ हैजे का घर हो, बुखार पीछा न छोड़ता हो, दस्त और पेचिश की सत्रको शिकायत हो, चेचक का वह ज़ोर हो कि खूदा की पनाह । तब अलबत्ता हमारी हँड़िया चंद्रे । आपने तो वल्लछाह, आते ह्वी गोला मारा । आप फ़रमाते हैं कि यहाँ पाव भर के बदले तीन पाव ग़िज़ा दज़म होती है। आमदनो <का नहीं और खार्ये चोगुना। तो कहिए, मरे या जिये! बंदा सबेरे ही बोरिया-मैंघना उठा कर चंपत दोगा। ऐसी जगह मेरी बला रहे, जहाँ सब हृट्टे-कट्टे ही नज़र आते हैं| भला कोई खास मरज भी है यहाँ ? या मरज़ का इस तरफ़ गुज़र ही नहीं हुआ !

आज़ाद--हज़रत, यहाँ के पानी में यद असर है कि बरसों का मरीज आये, और एक क़तरा पी ले, तो बस, खासा हट्ठा-कट्टा हो जाय ।

हकीम-पानी क्या अमृत है | तो सह्दी, जो पानी में ज़हर न मिला दिया हो ।

आजाद--जनाब, हजारों कुएँ और पचासों वावलियाँ हैं, किस-किस में जहर मिलाते फिरणगा !

हकीम--खैर भाई, समझा जायगा; मगर बुरे फँसे | इस बक़्त होश ठिकाने नहीं है।ओ भटठियारी, जरी हमको पंसारी की दकान से तोला भर सिकंजबीन तो ला देना।

भठियारी--ऐ, मियोँ, पंसारी यहाँ कहाँ ! किसी फ़क्कीर की दुआ ऐसी है कि यहाँ हकीम और पंसारी जमने दी नहीं पाता । कई दृकीम आये, मगर क्रत्र में हैं। कई पंसारियों ने दूकान जमायी मगर चिता में फूँक दिये गये । यहाँ तो बीमारी ने आने की कसम खायी है।

हकीम-- भई, बड़ा निकम्मा दाहर है। खूदा के लिए. हमें टट्टू किराये पर कर दो, तो रफू-चक्कर हो जायें । ऐसे शद्दर की ऐसी-तैसी ।

इन्हें घता बता कर आज़ाद सराय के दूसरे हिस्से में जा पहुँचे | क्या देखते हैं, एक बुजूगें आदमी बिस्तर जमाये बैठे हैं । आज़ाद बेतक़ल्लफ़ तो थे ही, 'सलाप् अलेक' कद कर पास जा बैठे । वह भी बड़े तपाक से पेश आये । हाथ मिलाया, गले

मिले, मिजाज पूछा । आजाद--आप यहाँ किस ग़रज़ से तशरीफ़ लाये हैं !

उन्होंने जबाब दिया--जनातब, में वकील हूँ । यहाँ वकालत करने का इशदा है। कदिए, यहाँ की अदालत का क्या हाल है !

आजाद--यह न पूछिए ! यहाँ के छोग भीगी जिछी हैं; छड़ना-मिड़ना जानते ही नहीं । साल भर में दो-चार मुकरमे शायद होते हों। चोरी-चकारी यहाँ कभी सुनने ही में नहीं आती । शमीन, आराजी, लगान, पट्टीदारी के मुकदमे कभी सुने ही नहीं । क़ज कोई ले न दे । बकील साहब का रंग उड़ गया । मगर हकीमजी फी तरह झब्ले तो ये नहीं आहिस्ता से बोले-- मुभान अल्लाह, यहाँ के छेग बड़े भरे आदमी हैं। सदा 2नको हमेशा नेक रास्ते पर ले जाय । मगर दिल में अफ़लोस हुआ कि इस टीम-टाम, धघूम-धाम से आये, और यहाँ भी वद्दी दाक के तीन पात | जत्र मुकदमे ही न दोंगे, तो खाऊँगा बया, दुश्मन का सिर | इन्हें भी

शाँसा दे १२ आजाद आगे बंदे, तो देखा, चारपाई बत्रिछाये शहतूत के पेड़ के नीचे एक साहब बैठे हुक्का उड़ा रहे हैं । आजाद ने पूछा-- आपका नाम! वद्द बोले--गुम-नाम हूँ । भाजाद--बतन कहाँ है ! वह--फ़कीर जहाँ पड़ रहे, वहीं उसका घर । आज्ञाद--आपका पेशा क्या है ! वह--खने-जिगर खाना । आज़ाद--तो आप शायर हैं, यद् कहिए। आज़ाद चारपाई के एक कोने पर ब्रेठ गये और बेतक़्ल्डफ़ हो कर ब्ोले-- जनाब, हुक्क़ा तो मेरे हवाले कीडिए और आप अपना कलाम सुनाइए। शायर साहत्र ने बहुत कुछ चुना-चुनी के बआद दूसरे का कलाम अपना कह कर सुनाया-- क्या हाल हो गया है टिले-बेक़रार क आज़ार हो. किसी को इृषाहदी, न प्यार का | मशहूर है जो रोजे-क्यामत जद्यान में; पहला पद्दर है मेरो शबे-इंतिजार का। इमतास देखना मेरी वहशत के बलबले,; आया है धूमधाम से मौसम बहार का। राह उनकी तकते-तकते जो मुदत गुज़र गयी; आँखों को दोसछा न रहद्या इंतिज़ार का। आजाद -सुभान-अछाह, आपका कलाम बहुत द्वी पाकीज है। कुछ और

उत्तादों के काम सुनाइए ।

शायर--बहुत खूब; सुनिए--

दारा दे जाते हैं जब आते हैं

यह शिगूफ़ा नया वह लाते हैं।

आजाद--सुभान-अब्लाह ! दारा के लिए शिगूफा, क्या खूब | शायर--यार तक वार कहाँ पाते हैं;

रास्ता नाप के रह जाते हैं। आज़ाद-- बाह, क्या बोलचाल है !

शायर- फिर जुनूँ दस्त न दिखलाये हमें; आज्न तलवे मेरे खुजलाते हैं। आज़ाद- वाद वाह, क्या जन्नान है ! शायर-- फूल का जाम पिलाओ साक़ी; काटे ताल में पड़े जाते हैं । आज़ाद- फूल के लिए काँटे क्या खूब | शायर--कंधी के नाम से होते हैं शफ़ा; बात सुलझी हुई उल्झाते हैं । आज्ञाद--बहुत खूब । शायर--अच्छा जनाब, यह तो फ़र्माइए, यहाँ के रईसों में कोई शायरी का क्ृदान भी है ! आजाद- किब्ला, यह न पृछिए । यहाँ मारवाडी अछब्त्ता रदते हैं। शायर या मुंशी की सग्त से नफ़रत है। यहाँ के रईसों से कुछ भी भरोसा न रखिए । शायर--तत्र तो यहाँ आना ही बेकार हुआ। आखिर, क्या एक भी रंगीन मिज़ाजे रईस नहीं है ! आज्ञाइ--अब्र आप तो मानते ही नहीं । यहाँ कर रदाँ खूदा का नाम है।

HINDI TEXT

प्रसंग १७

आज़ाद के दिल में एक दिन समायी कि आब किसी मसबिद में नमाज पढें जुमे का दिन है, जामे-मसजिद में खूब जमाव होगा । फ़ौरन मसजिद में आ पहुँचे । क्या देखते हैं, बड़े-बड़े जाहिद और मौलवी, क़ाज़ी और मुफ़्ती बड़े-बड़े अमामे सिर पर बाँधे नमाज़ पढ़ने चले आ रहे हैं; अभी नमाज़ श्रुरू होने में देर है, इसलिए इधर-उधर की बातें करके वक़्त काट रहे हैं। दो आदमी एक दरखइत के नीचे बैठे जिन्न और चुड़ेल की बातें कर रहे हैं। एक साहब नवजवान हैं, मोटे-ताजे; दूसरे साहब बुड्टे हैं, दुबले-पतले । ..बुच्े--तुम तो दिमाग़ के कीड़े चाट गये । बड़े' बककी हो । लाखों दफ़े समझाया कि यह सब दकोसला है, मगर तुम्हें तो कच्चे घड़े की चढ़ी है, तुम कब सुननेवाले हो ।

जबान--आप बुड्/ें हो गये, मगर बच्चों कौ सी बाते करते हैं । अरे साहब, बड़े-बड़े आलिम, बड़े-बड़े माहिर भूतों के कायल हैं। बुढ़ापे में आपकी अक़ल भी सठिया गयी !

बुद्दे-अगर आप भूत-प्रेत दिखा दें, तो टाँग के रारते निकल जाऊँ। मेरी इतनी उम्र हुई, कभी किसी भूत की सूरत न देखी। आप अभी कल के छोड़े हैं, आपने कहाँ देख ली ९

जवान--रोज ही देखते हैं जनाब ! कौन सा ऐसा मुहल्ला है, जहाँ भूत और चुडेल न हों ! अमी परसों की बात है, मेरे एक दोस्त ने आधी रात के वक़्त दीवार पर एक चुड़ल देखी । बाल-बाल मोती पिरोये हुए, चोटी कमर तक ल्टकती हुई ऐसी हसीन कि परियाँ झख मार । वह सन्नाटा मारे पड़े रहे, मिनके तक नहीं | मगर आप कहते हैं, झूठ है ।

बुड्ें- जी हाँ झूठ है--सरासर झूठ । हमारा खयाल वह बला है, जो सूरत बना दे, चला-फिरा दे, बातें करते सुना दे | आप क्या जानें, अमी जुप्ता-जुमा आट दिन की तो पैठाइश है। और मिर्यों, करोड़ बातों की एक बात तो यह है कि में बिग देखे न पतियाऊंगा । लोग बात का बतंगड़ और सुई का भाला बना देते हैं । एक सही, तो निन््यानवे झुठ । और आप ऐसे ढुल्मुल्यक्ीन आदमियों का तो ठिकाना ही नहीं | जो सुना, फौरन मान लिया । रात को दरख्त की फुनगी पर बंदर देखा और थरयराने लगे कि प्रेत झाँक रहा है। बोले और गछा दबोचा । हिले और शामत आयी | अँपेरे-घुप ? तो यों ही हनसान का जी घत्रराता है। जो भूत-प्रेत का खयाल जम गया, तो सारी चौकेड़ी भूल गये। हाथ-पाँव सब पूल गये। बिल्ली ने म्याऊँ किया और जान निकल गयी | चूदे की खड़बढ़ सुनी और बिछ ढूँदढने लगे । अब बो चीज़ सामने आयेगी, प्रेत बन जायगी। यहाँ सब्र पापड़ बेल छुके हैं । कहे निन्न हमने उतारे, कई घुड़ेलों से हमने महस्के खाली कराये । जहाँ दस जूते खोपड़ी पर जमाये और प्रेत ने बक़चा संभाला । यों ग़प उड़ाने को कहिए, तो हम मी ग़प बेपर की डड़ाने लगें। याद रखो, ये ओजझ्े-सयाने सब्र रैंगे सियार हैं। सब रोटी कप्मा खाने के लटके हैं। बंदर न नचाये, मुर्ग न छड़ाये, पतंग न उड़ाये, भूत-प्रेत दी झाडमे लगे |

जवान-- खेर, इस वू-तू हैं-में से क्या वास्ता ! चलिए दमारे साथ। कोई दो-तीन कोस के फ़ासले पर

एक गाँव है, वहाँ एक साहब रहते हैं। अगर आपकी खोपड़ी पर उनके अमल से भूत न चढ़ बैठे, तो मूँछ मुढ़वा डाढूँ । कद्विएगा, शरीफ़ नहीं चमार है। बस, अब चलिए, आपने तो जहाँ जरा सी चढ़ायी और कद्दने लगे कि पीर, पर्यबर, देवी, देवता, भूत-प्रेत स्तन ढकोसला है। लेकिन आज ठीक बनाये जाहएगा।

यह क़द्द कर दोनों डस गाँव की तरफ़ चले | मियाँ आजाद तो दुनिया भर के बेफ़िक्रे थे ही, शौक चर्राया कि चलो, सैर देख आओ | यह भी पुराने खयालों के जानी दुश्मन थे । कहाँ तो नमाज पढ़ने मसजिद आये ये, कहाँ छू-छक्का देखने का शौक हुआ; मसजिद को दुरही से सलाम किया और सीधे सराय चले । अरे, कोई इकक्ा किराये का होगा ! अरे मियाँ, कोई मठियारा इक्का भाड़े करेगा !

भठियारा--ज्ी हाँ, कहाँ जाइएगा !

आज्ञाइ-- सकजमलदी पुर ।

भठियारा-कक्या दीजिएगा !

आजाद--पहले घोड़ा-इक्का तो देखें--'घर घोड़ा नखास मोल |? '

भठियारा--तरह क्या कमानीदार इक्का खड़ा है और यह सुरंग घोड़ी है, हवा से बाते कस्ती जाती है; बैठे और दन से पहुँचे ।

इक्का तैयार हुआ | आज़ाद चले, तों रास्ते में एक साहब से पूछा--क्यों साहब, इस गाँव को सकजमलदीपुर क्यों कह्दते हैं! कुछ अजीब बेढंग सा नाम है। उसने कहा--हसका बड़ा क्रिस्सा है। एक साहब शेख जमाहछद्वीन ये। उन्होंने गाँव बसाया और इसका नाम रक्खा शेखजमालुद्दीनपुरा । गैवार आदमी क्या जाने, उन्होंने शेख का सक, जमाल का जमर और उद्दीन का दी बना दिया |

इक्केवाले से बातें होने लगीं। इक्केवाला बोला--हुजूर, अब रोजगार कहाँ ! सुबह से शाम तक जो मिला, खा-पी बेरातर। एक रुपया जानवर खा गया, दस-बारद आने घर के खर्च में आये, आने दो आने सुल्फ़े-तमाखू में उड़ गये। फिर मोची के मोची । मद्ाजन के पचीस रुपये छह मह्दीने से बेत्राक न हुए। जो कहीं कच्ची में चार-पाँच कोस ले गये, तो पुट्टियाँ घैंस गयीं पैजनी, हाल, घुरा सब निकल गया। दो-चार रुपये के मत्थे गयी । रोज़गार तो तुम्हारी सलामती से तब हो, जब यह रेल उड़ जाय । देखिए, आप ही ने सात गंडे जमछदीपुर के दिये, मगर तीन चक्कर लगा कर |

कोई पौने दो घंटे में आजाद सकब्मलदी पुर पहुँचे । पता-बता तो इनको माद्स था ही, सीधे शाह साहब के मकान पर जा पहुँचे। ठट के ठट आदमी जमा थे | औरत-मर्द टूटे पड़ते थे । एक आदमी से उन्होंने पूछा--क्या आज यहाँ कोई मेला है ! उसने कहा--मेला-वेला नाहीं, एक मनई के मूड़ पर देत्री आयी हैं, तौन मेहरारू, मन सेपू शत देखे आवत हैं। इसी झंड में आज़ाद को वह बूढ़े मियाँ भी मिल गये, जो भूत-जुड़ेल को दकोसल्ा कद्दा करते थे । अकेले एक तरफ़ ले ज्ञा कर कहा--जनातर, मैंने भसजिद में आपकी बातें सुनी थीं। कसम खाता हूँ, जो कभी भूत-प्रेत का क्रायल हुआ हूँ । अन्न ऐसी कुछ तदब्चीर करनी चाहिए कि इन शाह साहब की क़छई खुल जाय । इतने में शाइ साहब नीले रंग का तहमद बाँधे, लंबे-लंबे बालों में हिना का तेल डाले, माँग निकाले, खड़ाऊँ पहने तशरीफ़ लाये। आँखों में तेज भरा हुआ था । जिसकी तरफ़ नज्शर भर कर देखा, वही काँप उठा । किसी ने क्दम"लिये, किसी ने झुक कर सलाम किया | शाह

साहत्र ने गुल मचाना शुरू किया--धूनी मेरी जलती है, जलती है और बलती है, धूनी मेरी जलती है। खड्टी मूँछोंवाला है, छंबे गेसूवाल्ा है, मेरा दरजा आला है। झूम-झम कर जब उन्होंने यह आवाज़ लगायी तो सत्च लोग सन्नाटे में आ गये | एकाएक आपने अक्ड कर कटद्दा--किसी को दावा दो, ठो आ कर मुझसे कुइती लड़े। हाथी को टक्कर दूँ, तो चिग्घाड़ कर भागे; कोन आता है !

अन्न सुनिए, पहले से एक आदमी को सिखा-पदा रखा था। बह तो सधा हुआ था ही, झट सामने आकर खड़ा हो गया ओर बोला--हम लडेंगे। बड़ा कड़ियल जवान था; गैंडे की सी गरदन, शेर का सा सीना; मगर शादह्द साहब्र की तो हवा अंधी हुई थी। लोग उस पहल्वान की द्वालत पर अफ़सोस करते ये कि बेधा हे; शाह साहब चुटकियों में चुर-मुर कर डालेगे।

खेर दोनों आमने-सामने आये और शाह साहब ने गरदन पकड़ते ही इतनी जोर से पटका कि वह बेहोश हो गया। आज़ाद ने बूंढ़े मियाँसे कह्दा--जनात्र, यदद मिली भगत है। इसी तरद्द गैंार छोग मूद्ढे जाते हैं। में ऐसे मक्कारों की कब्र तक से वाकिफ़ हूँ । ये बातें दो दी रही थीं कि शाह साहब ने फिर अकड़ते हुए आवाज़ लगायी--कोई और जोर ल्गाएगा १ मियाँ आज़ाद ने आव देखा न ताव, झट ढैंगोट बाँध; चट से कूद पड़े । आओ उस्ताद; एक पकड़ हमसे भी दो जाय । तत्र तो धाह साइब चकराये कि यह अच्छे बिगड़े दिल मिले। पूछा--आप अगरेजी पढ़े हैं! आजाद ने कड़क कर कह्ा--अँगरेज़ी नहीं, आँगरेजी का बाप पढ़ा हूँ। बस, अब्र सैंभलिए, मैं झा गया । यह कह कर, घुटना टेक कल्शजंग के पेच पर मारा, तो शाद साहब चारों खाने चित जमीन पर धम से गिरे। इनका गिरना था कि पियाँ आज़ाद छाती पर चढ़ बैठे । अब बताओ बच्चा, काट लूँ नाक, कतर हूँ कान, बाँधू ढुम में नमदा | बदमाश कहीं का |! बूढ़े मियोँ ने सपट कर आजाद को गोद में उठा छिया | बाइ उस्ताद, क्यों न हो । शाह साहब उसी टिन गाँव छोड़ कर भागे।

शाह साहब को पटकनी दे कर और गाँव के दुलमुरू-यद्ीन गैंबारों को समझा-बुझा कर आज़ाद बूंदे मिनोँ के साथ-साथ शहर की तरफ चल खड़े हुर । रास्ते में उन्हीं शाह साहब की बातें द्वोने लगीं--

आज्ञाइ--क्पों, सच कद्दिएगा, कैसा अडंगा दिया ! बहुत ब्रिलविला रहे थे | यहाँ उस्तादों की आँखें देखी हैं। पोर-पोर में पंचेती कूट-कूट कर भरी है। एक-एक पंच के दो-दो सौ तोड़ याद हैं । में तो उसे देखते द्वी भाँप गया क्रि यह बना हुआ है । लड़ तिए का तो केंडा ही उसका न था | गरदन मोटी नहीं, छाती चौड़ी नहीं, बटन कटदा-पिटा नहीं, कान टूटे नहीं | ताड़ गया कि घामड है | गरदन पकड़ते ही दब' बेठा ।

बूढ़े मियाँ--अनब्न इस गाँव में भूल कर भी न आयेगा। एक मतेब्रा का ज़िक सुनिए, एक बने हुए! सिद्ध पलछथी मार कर बैठे औ९ छगे अकड़ने की कोई छित्रा कर हाथ में फूल ले, हम चुटकियों में बता देंगे। मेरे बटन में आग छग गयी मैंने कद्दा--अच्छा, मैने फूल डिया, आप बतलाइये तो सही । पहले ता आँखें नीली-यी डी करके मुझे डराने लगे । मैने कहा--हज्ञ रत; में इन गीद्इ-मभक्रियों में नहीं आने का । यह पुतलियों का तमाशा किसी नादान की दिखाओ | बस, बताओ, मर द्वाथ भें क्या है ? थोड़ी दर तक साच-साच कर बोल--पीला फूल है | मैन कहा--विलकुछ झठ । तत्र तो घगये और कहने लगे--मुझे धेग्वा हुआ । पीला नहीं, हरा फूल है। मेने कहा--वाह भाई डाल्बुझकड़ क्यों न ही।! इरा फूल आज तक देखा न सुना, यह नया गुल्ठ खिला । गरा यह कहना था कि उनका गुलाब सा चेहरा कुम्हला गया । कोई उचत्त

वक़्त उनकी बकरी देखता। में जाम में फूल न समाता था। आदिर इतन दशर-मिद्र हुए कि वहाँ स पत्तातोड़ भागे | हम ये सच खेल खेले हुए हूं ।

आजाद--ऐसे हो एक शाह साहब को मैने भी टीक किया था | एक दोस्त के घर गया, तो क्या देखटा हूँ कि एक फ़कीर साहब शान से बैठे हुए हैं और अच्छे-अच्छे परदे-लिखे आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। मैंने पूछा--आवउकी तारीफ़ कीजिए, तो एक साहब ने, जो उस पर ईमान ला चुके थे, दबे दांतों कहदा--शा ह साहब गैबराँ (जिकाल-दशी/ हैं । अपके कमालों के झंडे गड़े हुए हैं। दस-पाँच ने तो उन्हें आसमान ही पर चढ़ा रिया | मैद्रे दिल में कह्य-जचा, तुम्हारी खबर न लो, तो .कुछ न किया । पूछा, क्यों शाह जी, यह तो बताइए, हमारे घर में लड़का कब्र तक दह्ोगा ! शाह जी समझे, यद्द भी निरे चोगा ही हैं | चलो, अनाप-सनाय बता कर उल्लू बनाओ और कुछ ले मरो । मेरे बाप, दादे और उनवे. बाप के परदादे का नाम पूछा। यहाँ याद का यह हाल है कि बाप का नाम तो याद रहता है, दाद जान के नाम किस गधे को याद हो। मगर स्रेर, जो ज़बान पर आया, ऊछ-जंदूल बता दिया। तब फ़र्माते क्या हैं, बचा दो महीने के अंदर द्वी अंदर बेटा ले | मैंने कहा -ईं शाह साहत्र, जया सैंमले हुए | अब तो कहा, अब ने कद्दिएगा | पद्रह दिन तो बंदे की शादी को हुए और आप फ़र्माते हैं कि दो महीने के अंदर ही अंदर लड़का ले | वल्लाह, दुधरा कहता, खून पी लेता । इस फ़िक्करे पर यार लोग खिलखिला फर हँस पड्टे और शाह की के हवास ग़ायय हो गये | दिल में तो करोड़ों ही गालियाँ दी होंगी, मगर मेरे सामने एक न चले | जनाब, उस दयार में लोग उन्हें खुदा समझते थे | शाह्द जी कमी रुपये बरसाते थे, कभी बेफ़स्ल के मेवे मैंगवाते थे, कमी घड़े को चकनाचूर करके फिर जोड़ देते थे। सेकड़ों ही अछसेटे याद थीं, मेरा जवाब सुना, तो हक्का-बका हो गये। ऐसे भागे कि पीछे फिर कर भी न देखा | जहाँ में हूँ, मछा किसी सिद्ध या शाह जी का रंग जम तो जाय |

यही बातें करते हुए लोग फिर अपने-अपने धर सिधारे ।

HINDI TEXT

प्रसंग १८

मि्याँ आजाद एक दिन चले जाते थे, तो देखते क्या हैं, एक चोराहे के नुक्कढ़ पर भंगवाले की दूकान है और उस पर उनके एक छँगोटिये यार बैठे डींग की ले रहे हें"-हमने जो ख़्व कर डाला, वह किसी को पैदा करना भी नसीत्र न हुआ होगा, लाखों कमाये, करोड़ों लुटाये, किसी के देने में न लेने में। आज़ाद ने झुक कर कान में कद्दा--वाह भई उस्ताद, क्यों न हो, अच्छी लंतरानियाँ हैं । बाबा तो आपके उम्र भर बर्फ़ बेचा किये और दादा जूते की दुकान रखते-रखते बूढ़े हुए । आपने कमाया क्या, डटाया क्या ! याद है, एक दफ़े साढ़े छह रुपये की मुहर्रिरी पायी, मगर उससे भी निकाले गये। उसने कद्दा--आप भी निरे शावदी हैं। अरे मियाँ, अब ग़प उड़ाने से भी गये ! भंगवाले की दुकान पर ग़प न मारूँ, तो और कहाँ जाऊं ! फिर इतना तो समझो कि यहाँ हमको जानता कौन है। मिययों आज़ाद तो एक सैल्मनी आदमी थे ही, एक तिपाई पर टिक गये | देखते क्या हैं, एक दरख्त के तले छिरकी का छप्पर पड़ा है, एक तख्त बिछा है, भंगवाला सिल पर रगडें लगा रहा है। लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा । दो-चार बिगड़े-दिल बैठे गुल मचा रहे हैं--दाता तेरी दुकान पर हुन बरसे, ऐसी चकाचक पिछा, जिसमें जूती खड़ी हो। थोड़ा सा धतूरा भी रगड़ दो, जिसमें ख़ब रंग जमे । इतने में मियाँ आज़ाद के दोस्त बोल डठे--उस्ताद, आज तो दृधिया डल्वाओ। पीते ही ले उड़ें। चुल्ल में उल्लू हो जायें। दुकानवाले ने उन्हें मीठी केवड़े से बसी हुई भंग पिलवायी। आप पी चुके, तो अपने दोस्त दरभज को मंग का एक गोला खिलाया और फिर वहाँ से सेर करने चले। इन्हें मुटापे के सबब्च से लोग भदभद कद्दा करते थे । चलते-चलते हरमज ने पूछा--क्यों यार, यह कोन मुहल्ला हे !

भदभदू--चौनीबाजार |

हरभज--वाह, कहीं हो न, यह चिनियाबाज़ार है।

भदभद--चिनियात्राज़ार केसा, चीनीजाज़ार क्यों नहीं कहते ।

,दरमज--हम गली-गली, कूचे-कूचे से वाक्िफ़ हैं, आप इसमें रास्ता बताते हैं ! चिनियाबाज़ार तो दुनिया कहती है, आप कहने छगे चीनीबाज़ार हे ।

भदमद--अच्छा तो खबरदार, मेरे सामने अब चिनियाबाजार न कहिएगा ।

हरभज--अच्छा किसी तीसरे आदमी से पूछो |

आजाद ने दोनों को समझाया--क्यों छड़े मरते हो ! मगर सुनता कोन था। सामने से एक आदमी चला आता था। आज़ाद ने बढ़ कर पूछा--भाई, यह कौन मुहछा है ! उसने कहा--चिनियाबाज़ार । अब हरभज और भदमद ने उसे दिक् करना शुरू किया। चीनीबाज़ार है कि चिनियाबाज़ार, यही पूछते हुए आध कोस तक उसके साथ गये। उस बेचारें की इन भंगड़ों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया | बार-बार कद्दता था कि भई, दोनों सही हैं। मगर ये एक न सुनते थे । जब सुनते-छुनते उसके कान पक गये, तो बह बेचारा चुपके से एक गछी में चला गया । तीनों आदमी फिर आगे चले | मगर वह मसला इल न हुआ। दोनों

एक दसरे को बुरा-मला कहते थे; पर दो में से एक को भी यह तसकीन न होती थी कि चिनियाबाजार और चौनीबाज़ार में कौन सा बड़ा फ़क़ है । हरभज--जानते भी हो, इसका नाम चिनियात्राज़ार क्यों पड़ा ! भदभदर--जानता क्यों नहीं | पहले यहाँ दिसावर से चीनी आ कर बिक्रा करती थी ! हशभमज--तुम्हारा तिर ! यहाँ चीन के लोग आ कर आदबाद हो गये थे, जमी

से यह नाम पढ़ा ; इभद-गावदी हो !

इस पर दोनों गुथ गये । इसने उसको पटका, उसने इसको पटका। भदभद मोटे थे, खूब पिटे ।

आजाद ने उन दोनों को यहीं छोड़ा और ख घूमते-घामत्रे जौदरी बाजार को त रफ़ जा निकले | देखा, एक लड़का झुका हुआ कुछ लिख रहा है। आज़ाद ने छिफ़ाफ़ा दूर से देखते ही खत का मज़बून भाँप लिया | पूछा--क्यों मई इस गाँव का क्या नाम है !

लड़का-टिन को रतोंबी तो नहीं होती १ यह गाँव है या शहर !

आज़ाद-हाँ, हाँ वही शद्दर । मैं मुसाफ़िर हूँ, सराय का पता बता दीजिए ।

लड़का --सराय किस लिए, जाइएगा १ क्या किसी भठियारी से रिड्तेदारी है !

आजाइ--क्यों साइब, मुसाफिरों से भी दिल्लगी | हम तरजुम। करनते हैं | खत हो, अजों हो, दरख्वास्त हो, उसका वह तरजुमा कर दें कि पदनेवाला दंग रद्द जाय ।

लड़का--तब तो जनाब, आप बड़े काम के आदमी हैं। छो, हमारी इस अर्ज़ो का तरजुमा कर दो | एक चवज्नी दूँगा ।

आजाइ--खबेर, लाहए, बोहनी कर ढैं । अर्जी पढ़िए ।

लड़का--आप ही पढ़ लीजिए |

आज़ाइ--(अर्जी पढ़ कर) सुभान-अल्छाह, यह अजों है या घर का दुखड़ा | भला तुम्हारे कितने लड़के-लड़कियाँ होंगी !

' लड़का-अजी, अभी यहाँ तो शादी दी नहीं हुई ।

आज़ाइ--तो फिर यह क्या लिख मारा कि सारे कुनबे का भार मेरे घिर है । ओऔर नौकरी भी क्या माँगत हो कि ज़माने भर का कूड़ा साफ करना पड़े ! तड़का हुआ और बंपुलिस झाँकने लगे; कभी भंगियों से तकरार हो रही है; कभी भंगिनों से चख चल रही है। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है, पढ़ो-लिखो, जम कर मेहनत करो,

नौकरी की तुम्हें क्या फ़िक्र है £ लड़का--आप अ्नों लिखते हैं कि सलाह बताते हैं ! में तो आपसे सल्यह नहीं

पूछता । आजाद--मिर्यों, पढ़ने-लिखने का यह मतलब नहीं है कि नोकरी ही करे । और नहीं, तो बंपुलिस का दारोग़ा ही सही | खासे जौहरी बने हो, ऐसी कौन सी मुसीब्रत आ पड़ी है कि इस नौकरी बर जान देते हो !

इतने में एक लाला साहब क़ल्मदान लिये, ऐनक लगाये, आ कर बैठ गये ।

आज़ाइ--कह्दिए, आपको भी कुछ तरजुमा कराना है !

लाला--जी हाँ, इस अज्ीं का तरजुमा कर दीजिए । मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए ।

आजाद--अच्छा, अपनी अर्जी पढ़िए |

लाला --सुनिए--

गरीबपरवर सलामत,

अपना क्या हाल कहूँ, को३ दो दर्जन तो बाल-बचे हैं। आख़िर, उन्हें सेर-सेर भर भाटा चाहिए या नहीं | जोड़िए कितना हुआ। और जो यह कद्दिए कि सेर भर कोई लड़का नहीं खा सकता, तो जनात्र, गेरे छड़के बच्चे नहीं हैं, कई-कई बच्चों के बाप हैं | इस दिसाब से ८० रुए का तो आटा ही हुआ। १० २० की दा रखिए। बस, में और कुछ नहीं चाहता | मगर जो यह कहिए. कि इससे कम में गुज़र करूँ, तो जनाब, यह मेरे किये न होगा । रोटियों में खरा का भी साझा नहीं ।

'मेरे लियाकत का आदमी इस दुनिया में तो आपको मिलेगा नहीं, हाँ शायद

०:

उस दुनिया में मिल जाय | बच्चे मैं खेला सकता हूँ, बाज़ार से सौदे छा सकता हूँ, बनिये के कान कतर हूँ, तो सद्दी । किस्से-कहानियों का तो में खज़ाना हूँ। नित्य नयी कहानियाँ कहूँ। मौका आ पड़े, तो जुते साफ़ कर सकता हूँ; मेम साहब और बाचा लोगों को गाकर खुश कर सकता हूँ। ग़रज़, इरफ़न-मौज हूँ। पढ़ा-लिखा भी हूँ। बदनसीतरी से मिद्डिल षास तो नहीं हूँ; लेकिन अपने दस्तखत कर लेता हूँ | जी चाहे इम्तह्ान ले लीजिए ।

“अब रही खानदान की बात। तो जनाब, कमतरीन के बुजु गे हमेशा बड़े-बड़े ओहदों पर रदे । मेरे बड़े भाई की बीत्री जिसे फूफी कहते हैं और जिससे मज़ाक़ का भी रिश्ता है, उसके बाप के सपुर के चचेरे भाई नहर के मोहकमे में २० २० महीने पर दारोगा थे। मेरे बाबाजान म्युनिसिपलिटी में सफ़ाई के जमादार थे ओर १० ० महीना मुशहरा पाते थे | चूँकि सरकार का हुक्म है कि अच्छे खानदान के लछोगों की परवरिश की जाय, इसलिए दो-एक बुजुर्गों का जिक्र कर रिया। वरना यहाँ तो सभी ओददेदार थे। कहाँ तक गिनाऊँ |

“अब तो अर्जो में और कुछ लिखना नहीं बाक़ी रह्य | अपनी ग़रीबी का जिक के ही दिया | लियाक्रत की भी कुछ थोड़ी सी चर्चा कर दी और अपने खानदान का भी कुछ जिक्र कर रिया ।

'अब अर्ज है कि हुजूर, जो हमारे आक़ा हैं, मेरी परवरिश करें| अगर मुझ पर हुजूर की निगाह न हुई, तो मजबूर हो कर मुस्ते अपने बाल-बच्चों. की मिच्ते के टापू मे भरती करना पड़ेगा ।!

मियां आज़ाद ने जो यद्द अज़ीं सुनी तो लोटने लगे | इतना हँसे कि पेट में बल पढ़-पड़ गये। जब जरा दँसी कम हुई, तो पूछा -लालछा साहब, इतमा और बता दीजिए कि आप हैं कौन ठाकुर !

लाला--जी, बंदा तो अगिनहोत्री है।

आज़ाद--तो फिर आपके शरीफ़-खानदान होने में क्या शक है। मियाँ, आदमी बनो । जा कर बाप-दादों

का पेशा करो। भाड़ झोंकने में जो आराम है, वह गुलामी करने में नहीं | मुझसे आपकी अज़ों का तरजुमा न होगा ।

HINDI TEXT

प्रसंग १९

एक दिन मियाँ आज़ाद साँड़नी पर खबार हो घूमने निकले, तो एक थिएटर में जा पहुँचे । सेशनी आदमी तो थे ही, थिएटर देखने लगे, तो वक़्त का खयाछ ही न रहा। थिएटर बंद हुआ, तो बारह बब् गये ये | घर पहुँचना मुश्किक था | सोचे, आज रात को सरुराय ही में पड़ रहें | सोये, तो घोड़े बेच कर । भठियारी ने आ कर बगाया-- अबी, उठो, आज तो जैसे घोड़े बेच कर सोये हो ! ऐ लो, वह आठ का गजर बजा | अँगडाइयों पर अँगढ़ाइयाँ के रहे हैं, मगर उठने का नाभ नहीं लेते ।

एक चंड्ूबाज़ भी बेठे हुए थे | बोले--तो तुमको क्या पड़ी है ? सोने नहीं देती । क्या जाने, किस मौज़ में पड़े हैं । लहदरी आदमी तो हुई हैं। मगर सच कहना, कैसा धावत सैलानी है । दूसरा इतना घूमे, तो हलकान हो जाय | और जो बगाना ही मंजर है, तो लोटे की टोंटी से जरा सा पानी कान में छोड़ दो। देखो, कैसे कुलबुला कर उठ बैठते हैं ।

भठियारी ने चुल्लू से मुँह पर छींटे देने शुरू किये। दस दी पाँच बूँदें गिरी थीं कि आज़ाद हाँय-हाँय करते उठ खड़े हुए और बोले--यदह क्या दिलगी है ! कैसी मीठी नींद सो रहा था, लेके जगा दिया !

भठियारी--हतनी रात तक कहाँ घूमते रहे कि अभी नींद ही नहीं पूरी हुई !

आजाद---कहीं नहीं, जरा थिएटर देखने लगा था।

चंद्गज़--सुना, तमाशा बहुत अच्छा होता है । आज इमें भी दिखा देना । मई, तुम्द्ारी बदौलत थिएटर तो देख लें | के बजे शुरू होता है !

आज्ाद--यही; कोई नौ बजे ।

चंडबान--तो फिर मैं चल चुका । नौ बजे शुरू हो, करह बजे खत्म हो। कहीं एक बजे घर पहुँचें। मुहल्ले भर में आग ढूंढें, हुक््क़रा भरें, तवा जमायें, घंटा भर गुड़ः गुड़ायें । पलँग पर जायें, तो नींद उचाट । करवटों पर करवर्ट लें, तब कहीं चार बजते-बजते आँख लगे । फिर जो भलेमानुस चार बजे सोये, वह दोपहर तक उठने का नाम न लेगा । लीजिए, दिन यों गया । रात यों गयी । अब इंसान चंह्ू कब पिये, दास्तान कब सुने, पीनक के मज़े कब उड़ाये ! कौन जाय | क्या गुल्यबो-शिताबो के तमाशे से अच्छा होता होगा ! रीछवाले ही का तमाशा न देखे ! मियाँ ऐंठा सिंह के मज़े न उड़ाये, बकरी पर तने वेंठे हैं, छींक पड़ी और खट से फुँदनीदार टोपी अछग। मई, कोई बेधा हो, जो वहाँ जाय | और फिर रुपये किसके घर.से आयें ! जब से अफीम सोलद्द रुपये सेर हो गयी, तब से तो ग़रीबों का और भी दिवाला निकल गया | और चंद के ठेकों ने तो सत्यानास ही कर दिया । सैल्यनी तो शहर का चूहा-चूहा है, मगर टिकट का नाम न हो | और भई, साफ़ तो यों है कि हम लोग मुफ़्त के तमाशा देखने-ब्रालों में से हैं | मेडा-ठेला तो कोई छटने डी नहीं पाता | सावन भर ऐशाब्ारा के मेले न छोड़े; कभी इमलियों में शल रहे हैं, कभी बंदरों की सैर देंख रहे हैं। बहुत किया, तो एक गंडे के पौड़े लिये । दो पैसे बढ़ाये और साक्रिन की दुकान पर दम लगाया

| चलिए, पाँच-छःह पैसे में मला हो गया। सबसे बड़ी मुसीबत तो यद्द है कि वहाँ नादिरी हुवम है कि कोई धुआँ न उड़ाये, नहीं तो इम सोचे थे कि चंड्ू का सामान छेते चलेंगे और मज़े से किसी कोने में लेटे हुए उड़ाते ज यँगे । इसमें किसी के बाप का कया इजारा !

भठियारिन---भई, टिकट माफ़ हो जाय, तो में भी चर ।

आहाद--उन को क्या पड़ी है मल, जो बंबई से ऊगड़-खंगड़ ले कर इतनी दर बेगार भुगतने आय ! वही बेव्काने बात कहती हो, जिसके सिर न पैर ।

चंड्बाउ--अच्छा, तो तुम्हारी खातिर द्वी सही। तुम भी क्या याद करोगी | एक दिन हम भी चठलन्नी गलायेंगे । तमाशा होता कहां दे !

आजाद--यद्दी छतरमंज़िल में, दस क्रम पर ।

चंडबाज--दस कदम की एक ही कद्दी । 0म्हारी तरह यहाँ किसी के पाँव में सनी-चर तो है नहीं | सात बजे से चलना शुरू करें, तो दस बजे पहुँचें। बग्घी किराये पर करें, ओ एक रुपया आने का और एक रुपया जाने का और ठुक जाय । 'मुफ़ल्सी में आय गीला ।?

आज़ाद--अजी, मेरी सॉड्नी पर बैठ लेना ।

भठियारिन -- मुझे भी उसी पर बिटा लेना । रात का वक़्त है, कोन देखता है।

शाम हुई, तो मियाँ आज़ाद ने साँड़नी कसी और सराय से चले। भटियारी भी पीछे बैठ गयी । मगर चंड्ूबाज़ ने साँडनी की यूरत देखी, तो बेठने की हिम्मत न पड़ी | जब्र साँडनी ने तेज चलना शुरू किया, तो भटियारी बोडी--इस मुई सवारी पर खदा की सँवार | अल्लाह की क़सम, मारे हचकोलों के नाक में दम आ गया। आजाद को शराय्त सुझी, तो एक एड लगायी वह आर भी तज हुई । तब तो भटिया री आग भभूका हो गयी-यदह दिल्लगी रहने दीजिए; मुझे भी कोई और समझे हूं। ! मैं लाखों सुनाऊँगी | ले बस, सीधी तरद्द चलना हो तो चलो; नहीं में चीखती हूँ । पेट का पानी तक हिल गया। ऐसी सवारी को आग लगे। मियाँ आज़ाद ने ज़रा लगाम

। खींना, तो साँडनी बलबलाने लगी । बी भटिवारीं तो समझों कि अब जान गयी ।

देखो, रद छेडछाड अच्छी नहीं। इमें उतार ही दो। लो, और सुनो, जरा से हचकोले में मुँह के बल आ रहूँ, तो चकनाचूर दी हो जाऊे। ठम मुसंडों को इसका क्या डर | रोको, रोको, रोको | हाय, मेरे अछाह, में किस बला में फँस गयी ! मियों, अपने खट। से डरो, बस हमें उतार ही दो । इत्तफाक से साँडनी एक दरख्त की पर्छाहीं देख कर सी मदकी कि दस क्रम पीछे हट आयी । उसका बिचकना था कि बी भठि यारी धम से जमीन पर गिर पड़ी | खदा की मार ! वद्द तो कहो, पक्की सड़क न थी । नहीं तो दृद्डी-पतली चूर-चूर हो जाती ।

चेडबप्न-- 5. बाझ है वरी माँ को, एटकनी भी स्थायी, मगर वही तेवर | दूसरी हयादार हं।ती, तो टाख बरस तक सवार होने का नाम न लेती । खवारी क्या है, जनाक्षा है।

भठियारी--चलिए, आपकी जूती की नोक से । हम बेहया ही सद्दी | क्या झाँसे देने आये हैं, जिसमें मैं उतर १॥ँ और आप मज़े से जम जायें। मुँह थो रखिए, हमने कच्ची गोंलियाँ नहीं खेली हैं ।

मगर इस झमेले में इतनी देर हो गयी कि जब्र थिएटर पहुँचे, तो तमाशा खत्म हो गया था। तमाशाई लोग बाहर निकल रहे थे ।

आज़ाद--लीजिए, सारा मज़ा किरकिरा हो गया ! इसी से मैं तुम छागों को साथ न ले आता था ।

चंड्बाज--औरतों को तो मेले-ठेले में ले ही न जाना चाहिए | इमेशा अल्सेट होती है ।

भठिय, र- जी हाँ, और क्या । भेले-ठेले तो आप जैसे खुर्सटों ही के लिए द्वोते हैं। आज़ाद तमाशाइयों की बातें सुनने लंगे--

एक--यार, इनके पास तो सामान खूब लैस है ।

दूसरगा-वाह, क्या कहना, परदे तो ऐसे कि देखे न सुने । बस, यही यक्रीन होता है कि बारहदरी का फाटक है या परीखाना | जंगल का सामान दिखाया, तो वही बेल-बूटे, वही दूब, वही पेड़, वही झाड़ियों, बस, बिलकुल सुंदरवन माद्म होता है।

तीसरा---और सब्जपरी की तारीफ़ द्वी न करोंगे !

चौथा--हज़रत, वह कहीं लखनऊ में छह मद्दीने भी तालीम पाये, तो फिर आफ़त ही दाये। लाखों दूट के जाय, लाखों ।

दूसरी तरफ़ गये, तो दो आदमी ओर द्वी तरह की बातें कर रहे थे--

एक्र--अजी, धोखा है, धोखा, और कुछ नहीं ।

दूसरा--हाँ, टन-टन की आवाज़ तो आती है, बाकी खेर-सकछाड़ |

अब आज़ाद यहाँ बैठ कर क्या करते । सोचे, आओ, साँड़ना पर बैठे और चल कर सराय में मीठी नींद के मजे लें। मगर बाहर आकर देखते हैं, तो सॉड़नी ग़ायत्र। थिएटर के अद्दाते में एक दरख्त से बाँध दिया था | मालूम नहीं, तड़प कर भागी या कोई चुरा ले गया। बहुत देर तक इधर-उधर ढूँदा किये, मगर साँडनी का पता न लगा ।. उधर और सवारियाँ मी तमाशाइयों को ले-ले कर चली गयीं। तब आज़ाद ने भठियारी से कहा - अब तो पाँव-पाँव चलने की ठहरेंगी।

भठियारी--ना साहब, मुझसे पॉव-पाँव न चला जायगा |

चंडूबाज-- देखिए, कहीं कोई सवारी मिले, तो ले आइए। यह बेयारी पाँव-पाँव कहाँ तक चलेगी !

आज़ाद-- तो तुम्हीं क्यों नहीं लपक जाते !

भठियारी (अब्यरक्खी)--ऐ हाँ, और क्या ! चदने को तो सब से पहले तुम्हीं दौड़्ोगे । तुम्हें बात-चीत करने की भी तमीज़ नहीं ।

आज़ाद---सबारी न मिलेगी, ठंडे-ठंडे घर की राह लो, बात-चीत करते-करते चले चहेंगे ।

दूसरे दिन आड़ाद ने सॉड़नी फे खोने की थाने में रपट कर दी। मगर जिस आदमी को भेजा था, उसने आकर कदहा--हुजुर थानेदार ने रपट नहीं लिखी और आपको बुलाया है।

आजाद--कौन, यानेदार ! हमसे थानेदार से वास्ता ! उनसे कहो कि आपको खद प्रियाँ आजाद ने याद किया है, अभी द्वाजिर हो |

अजारक्खी--ले, बस बैठे रहो | बहुत उजडुपना अच्छा नहीं होता । वाह, कहने छंगे, हम न जायेंगे । बड़े वह बने हैं। आलिर सॉढ़नी की रपट लिखवायो है कि नहीं ! फिर अब दोड़ो-धूपोगे नहीं, तो बनेगी क्मोंकर ! और वहाँ तक जाते क्या चूड़ियाँ टूटती हैं, या पाँव की मेंहदी गिर जायगी १

आजाद--मई, हमसे थानेदार से एक दिन चस्क चल गयी थी। ऐसा न हो, वह कोतवाली के चबूतरे पर बैठ कर ज़ोम में आ जायें तो फिर मैं ले ही पहूँगा। इतना समझ लेना, में आघी बात सुनने का रवादार नहीं | सॉडनी मिले या जहइन्नुम में जाय, इसकी परवाह' नहीं, मगर कोई एंडा-बेंडा फ़िकरा सुनाया और मेंने कुर्सो के नीचे पथ्का । क्यों छुनें, चोर नहीं कि कोतवाल से डरूँ, जुवाड़ी नहीं कि प्यादे की सूरत देखते ही जान निकले, बदमाश नहीं कि मुँह छिपाऊँ, मरियल नहीं कि दो बातें सह जाऊँ। कोई बोला और मैंने दल्वार निकाली; फिर वह नहीं या में नहीं ।

अलारबली- अरे, वह बेचारा तो एक हँसमुख आदमी है। लड़ाई क्यों दोने लगो |

आज़ाद- खेर, तुम्दारी खुशी है, तो चलता हूँ। मगर चलो तुम भी साथ, रास्ते में दो घड़ी दिल्लमी दी होगी ।

आखिर मिर्यों आजाद और अल्रक्खी दोनों थाने चले। एक कानिस्टिब्रि मी साथ था। राह में एक आदमी अकड़ता हुआ जा रहा था। आज़ाद उसका अकड़ना देख कर आग हो गये | क़रीब जा कर -एक धक्का जो दिया, तो उसने पचास छुढकनियाँ खायीं। थोड़ी दूर और चले थे कि एक आदमी चादर बिछाये, डस पर जढ़ी-बूटी फेलाये बैठा ग़प उड़ा रह्दा था। इस बूटी से अस्सी बरस का बूढ़ा जवान हो जाय, इस जड़ी को पानी में घिस कर एक तोछा पिये, तो शेर का पंजा फेर दे। आजाद उसकी तरफ़ झुक पड़े-कद्दो भाई खिलाड़ी, यह क्या स्वाँग सवा है ! आज कितने अक़्छ के अंधे, गाँठ के पूरे जाल में फँसे ! युद्द कद कर एक ठोकर जो मारी, तो सारी बूटियाँ, पत्तियाँ, जड़ें एक में मिल गयीं। और आगे चले, तो ग़ुरू-गपाड़े की आवाज आयी | एक हल्वाई ग्रादक से तकरार कर रहा था |

इलवाई--खाली भज़िया नाहीं बिकत है हमरी दुकान पर, कस-कस देई भछा |

प्राहक--अबे, मैं कहता हूँ, कहीं एक गुद्दा न दूँ |

आज़ाद---गुद्दा तो पीछे दीबिएगा, मैं एक गुदा कहीं आपकी गुद्दी पर न जमाऊँ।

ग्राइक--आप कोन हैं बोलनेठाले (१

आजाद--उस बेचारे हलवाई को तुम क्यों छलछकारते हो !

आलारक्खी--ऐ है, मियां, तुम कोई खदाई फ़ौज़दार हो ! किसी के फटे में ठुम फैन हो पाँव डालनेवाले !

कानिस्टिबिल--भइया, दो बड़े लड़का, बस काव कहों ।

यहाँ से चले, तो थाने आ पहुँचे ।

कानिस्टिबिक---हुज्र, ले आया, वद खड़े हें ।

थानेदार--अख्खाह ! अलारक्खी भी हैं । मैं तो चाल ही से समझ गया था। कुछ बैठने को दो इन्हें, कोई

है ! सच कहना, तुम्हारी चाल से कैसा पहचान लिया !

आजाद--अपने-अपनों को सभी पहचान लेते हैं |

थानेदार--यह कौन बोला ! कोन है भई !

अलारक्खी--ऐ., बस चलो, देख लिया | मुँह देखे की मुहब्बत है। घर की थानेदारी और अब तक मुई सॉड्रनी न मिली । तुमसे तो बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं ।

थानेदार (आज़ाद से)--कट्दो जी, वह सॉडनी तठुम्दारी है न !

आज़ाद--'तुम" का जवात यहाँ नहीं देते; आप? कहिए; मैं कोई चरकटा हूँ ।

भठियारी- हाय मेरे अल्लाह, में क्या करूँ ! यद्द तो जहाँ जाते हैं, दंगा मचाते हैं ।

थाने दार--क्या कुछ इनसे साँठ-गाँठ है ! सच कहना, तुम्हें क्मम दे अपने शेखर सद्दू की ।

अलारक्खी--लछो, तुम्हें माठ्म ही नहीं । अच्छी थानेदारी करते हो । मैं तो इनके घर पड़ गयी हूँन।

थानेदार--तो यद्द कहिए, लाओ भई, साँडनी काँजी-हाउस से निकल्वाओ १

साँड़नी आ मोजूद हुई | मियाँ आज़ाद सवार हुए । भठियारी भी पीछे बैठी ।

आज्ञाद--आज तुम कई आदमियों के सामने हमें अपना मियाँ बना चुकी हो | मुकर न जाना ।

अलारक्खी--जरश चचि सँमाले हुए; कहीं साँडनी पर से द्कल न दूँ ।

अलारक्खी को यकीन हो गया कि आजाद मुझ पर रीझ् गये। अब निकाह हुआ दी चाहता है । यों ही बहुत नखरे फ्िया करती थी, अब और भी नखरे बधारने छगी। नौ का अमल द्वो गया था | चारपाई पर धूप फैली हुई थी, मग़र मकर किये पड़ी हुई थी। इतने में चंड्रबाज़ आये। आते ही पुकाग--मिर्यों आज़ाद, मियाँ आजाद ! अलारक्खी | यह आज क्या है यहाँ, खदा ही खेर करे । एस का अमल और अमी तक खटिया ही पर पड़े हैं| कल रात को तमाशा भी तो न था । (दरख्त की तरफ़ देख-कर और सॉड़नी बैँधी हुई पा कर) जभी खूश खूस सो रहे हैं। अरे मियाँ, क्या साँप सूँघ गया ! यह माजश क्या है! हाँ, अल्लाह कद कर उठ तो बैठ गेर शेला ।

आज़ाद--(अँगड़ाई ले कर) अरे, क्या सु4६ दो गयी !

चंडुबाज--सुत्रद गयी खेलने, आँख तो खोलो, अब कोई दम में करइ की तोप दा चाहती है दन से | देखना, आज दिन मर सुस्ती न रहे तो कहना। वह तो बदाँ आदमी जरा देर करके उठा और हाथ-पाँव टूटने छगे । अब एक काम करो, सिर से नही डाछो।

भाजाद--क्या बक-बक लगायी है, सोने नहीं देता ।

अलारक्ली चुपके-चुपके सत्र सुन रही ऐ, मगर उठतो नहीं। चंद्ूबाज़ उसकी चार-. पाई की पट्टी पर जा बैठे और बोले--ऐ! उठ अब्छाह की बंदी, ऐसा सोना भी क्या ! यह कह कर आपने उसके बिखरे हुए बाल, जो ज़मीन पर लटक रदे ये, समेट कर चार-पाई पर रखे | उधर मियों आजाद की आँख खुल गयी ।

चेंद्बाज (गुदगुदा कर)--उठो, मेरी जान की कसम, बह हँसी आयी, बह मुसकिरायी ।

आज़ाद--ओ गुस्ताख, अलग हट कर बैठ, हमारे सामने यह बेअदत्री !

चंड्ूबाज--उँह-ऊँह, बड़े वारिसअलीखाँ बन बैठे ! मई, आखिर तुमको भी तो जगाया था, अब इनको जगाना शुरू किया, तिनगते क्यों दो भला ! में तो सौधा-सादा, भोला-भा आदमी हूँ ।

आज़ाद--जी हाँ, इमें तो कंधा पकड़ कर जगायाँ। यह मादूम हुआ कि चारपाई को जूड़ी चदी या भूचाल आ गया और उन्हें गुदगुदा कर जगाते द्ो | क्यों बचा !१

अलारक्खी जागी तो थी दी, खिलखिला कर हँस पड़ी, ऐ हट मरदुए, यह परेंग पर आ कर बैठ जाना क्या; मुझे कोई वह समझ रखा है !

चंड्बाज़ ने तेश खा कर कद्ा--वाह-वाह, परलेंग की अच्छी कही । रहें झोपड़ों में और ख्वाब देखें महलों का ।! कभी बाबाराज ने भी पलेँग देखा था ।

अलारक्खी-- मियाँ, मुझसे यह जली-कटी बातें न कीजिएगा जरी। वाह, हम झोपड़ों ही में रहती हैं सही; अब तो एक भलेमानस के घर पड़नेवाले हैं । क्यों मियोँ आज़ाद, है न, देखो, मुकर न जाना ।

आज़ाद-- वाह, मुकरने को एक ही कद्दी, 'नेकी और पूछ-पूछ १?

अलारक्खी--तिस पर मी तुम्हें शरम नहीं आती कि इस उचकके ने'मुझे हाथ लगाया और ठुम मुलर-मुडर देखा किये। दूसरा होता, तो महनामथ मचा देता ।

चंड्रबाज--क्यों लड़वाती हो भला मुफ़्त में ! हमें क्या माद्म था कि यहाँ निकाह की तेयारियों हो रही हैं ।

मियां आज़ाद द्वाथ-मुँद धोने बाहर गये, तो चंड्बाज और अछारक्खी में यों बातें होने लगीं |

चंहबराज- यार, फाँसा तो बड़े मुडढ को ? अब जाने न देना। ऐसा न हो, निकछ जाय । भई, क़सम खुदा की, औरत क्या, बिस की गाँठ हे तू ।

अवारक्खी--मगर तुम भी कितने बेशहूर हो, उसके सामने आपने गुदगुटाना शुरू किया । अन्न वह खटके कि न सटके ! तुम्हारी जो बात है, दुनिया से अनोखी | ताड़ सा क्रद बढाया, मगर तमीज छू नहीं गयी ।

चंढ़बाज-- अब तुमसे झगड़े कौन ! में ब्विसी के दिल को बात थोड़े ही पढ़ा हूँ । मगर मई, पक्की कर लो ।

अलारबखी--हाँ पक्की-पोदी होनी चाहिए । किसी अच्छे वकील से सलाह छो | वह कौन वकील हैं, जो कुम्मेत घोड़े की जोड़ी पर निकलते हें--अजी बही, जो गबरू से हैं अभी |

चंड्बआाज--वकीलों की न पूछो, तेरह सो साठ हैं। किसी के पास ले चलेंगे ।

अलारक्खी-- नहीं, वाह, किसी बृढ़े बकोल के यहाँ तो मैं न जाऊँगी | ऐसी जगह चलो, जो जवान हो, अच्छी सलाह दे |

चंड्बाज़>- अच्छा, आज इतबार है। शाम को मियोँ आज़ाद से कहना कि हमें अपनी बहन के यहाँ जाना है। बस, हम फाटक के उस तरफ दबके खड़ें रहेंगे, ठुम आना । हम-तुम चल कर सब्र मामला भुगता देंगे ।

अलारक्खी-- अच्छा अच्छा, तुम्हें खूब सूझी ।

इतने में आज़ाद मुँह-हाथ घो कर आये, तो अलारक्खी ने कद्दा--हमें तो आज बहन के यहाँ न्योता है,

कोई कच्ची दो घड़ी में आ जाऊँगी।

आज़ाद--जरा साली की सूरत हमें भी तो दिखा दो। ऐसा भी क्या परदा है, कहो तो इम भी साथ-साथ चले चलें |

अलारक्खी -- वाह मियाँ, तुम तो उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ने लगे | यह कह कर अलारक्खी कोटरी में गयी और सोलह सिंगार करके निकली, तो आज़ाद कड़क गये । पटियाँ जमी हुईं, गोरी गोरी नाक में काली-काली छ)ंग, प्यारे-प्यारे मुखड़े वर हलका सा धूँघट, हार्थों में कड़े, पाँव में छड़े, छम-छम करती चली |

चंड्बाज़- उनके सामने चमक-चमक के बातें करना, यह नहीं कि झेपने लगो।

अलारक्खी--मुझे और आप सिखायें ! चमकना भी कुछ सिखाने से आता है। मेरी तो बोटी-बोटी यों ही फड़का करती है। तुम चलो तो, जो मेरी बातों और आँखों बर ढरट्ट न हो जाये, तो अलारक्णी नहीं । कुछ ऐसा करूँ कि वह भी निकाह पर रजामंद दो जाये, तो उनसे और आज़ाद से ज़रा जूती चले ।

वकील साहब अपने बार में तख्त पर बैठे दोस्तों के साथ बाते कर रहे थे कि खिदमतगार ने आ कर कद्दा--हुजुर, एक औरत भायी है। कहती है, कुछ कद्दना है।

दोस्त--कैसी औरत है मई ! जवान है या खप्पट १

खिदमतगार-- हुज्र, यद्द तो देखने से मालूम होगा, मुल है अभी जवान ।

बकील- कहो, सुबह आवे |

दोस्त--वाह-वाह, सुबह की एक ही कही | अज्जी बुछाओं भी । हमारे सिर की कसम, बुलाओ । कहो, टोपी तुम्हारे कदमों पर रख दें ।

अलारक्खी छड़ों को छम-छम करती, अजब मस्थानी चाल से इठलाती, बोटी बोटी फड़काती हुई आयी | जिसने देखा, फड़क गया। सब्र रँगीले, बिगड़े दिल, बेफ़िक्रे जमा थे । एक साहत्र नवात्र थे, दूसरे साइब मुंशी । आपस में मज़ाक होने लगा--

नवाब--बंदगी अज्ज है | खुदा की क्रम, आप एक ही न्यारिये हैं।

मुंशी-- मई, सूरत से तो मलेमानस मादम होते थे, लेकिन एक ही रसिया निकले।

बकील---भई, अब हम कुछ न कहेंगे । और कहें क्या, छा गयी | बी साहिबा, आप किसके पास आयी हैं ! कहाँ से आना हुआ !

अछारकब्खी--अब ऐसी अजीरन हो गयी ।

बकीरू--नहों-नहों, वाह बेठो, इधर तख्त पर आओ।

अलारक्खी--हाँ, बनाइए, हम तो सीघे-सादे हैं साहब ।

नवाब-- आप भोली हैं, बजा है !

वकील--औरत हैं या परिस्तान की परी !

नवाब-- रीक्षे-रीस्े, लो बी, अब पौ-बारद हें |

अल्यरक्खी-- हुजूर, हम ये पौ-बारह और तीन काने तो जानते नहीं, दमारा मतलब निकल जाय, तो आप सब.साहबों का मुँह मीठा कर देंगे ।

दोस्त--आपकोी बातें ही क्या कम मीटी हैं !

इतने में चंहबाज़ भी आ पहुँचे ।

चंढबाज- हुजूर तो इन्हें जानते न होंगे, ये अलारक्खी हैं । इनका नाम दूर-दूर तक रोशन है।

वकीछ-- इनका क्या इनके सारे खानदान का नाम रोशन है |

चंडबाज--सराय में एक आजाद नामी जवान आ कर ठहरे हैं। वद इनके ऊपर जान देते हैं और यह उन पर मरती हैं | कई आदमियों के सामने वह कबूल चुके हैं कि इनके साथ निकाह करेंगे। मगर आदमी हैं रैंगीले, ऐसा न दो कि इनकार कर जायें। बस, इनको यही अज़ है कि हजूर कोई ऐसी तदबीर बतायें कि बह निकल न सकें |

अलारक्खी-- मुझ ग़रीबनी से कोई छप्पन टके तो आपको मिलने नहीं हैं । रद्द, इतना सवाब कीजिए, जिसमें यह झिकंजे में जकड़ जायें ।

मुंशी-- अगर निकाह दही करने का शोक़ है तो हम क्या बुरे हैं !

वकीछ--एक तुम्हीं क्या, यहाँ सब झंडे-तले के शोहदे छटे हुए डन्चे जमा हैं ! जिसको यद्द पसंद करें, उसी के साथ निकाह हो जाय ।

अलरक्खी--हुजुर लोग तो मुझसे दिल्लगी करते हैं ।

वकील--अच्छा, कल आओ तो हम तुम्हें वह्द तरकीत्र बतायें कि तुम भी याद करो।

अलारक्खी-- मगर बंदी ने कभी सरकार-दरबार की सूरत देखी नहीं । आप बका-उत कीजिएगा १!

मुंशी-- हाँ जी हाँ, इसमें मिन्नत द्वी कया है। मगर जानती हो, ये वकील तो रुपये के आशना हैं।

अलारक्खी--वा ह, रुपया यहाँ अल्लाह का नाम है। दम हैं, चादे बेच को ।

बकील--अच्छा, कछ आओ, पहले देखो तो वह क्या कह्दते हैं ।

अलारक्खी अब यहाँ से उठना चाहती थी, मगर उठे कैसे। कनलियों से चंहुबाज़ की तरफ देखा कि अब यहाँ से चछना चादिए। वह भी उसका मतलब समझ्ष गये, बोढे--ऐ: दजूर, जरी घड़ी को तकलीफ़ दीजिएगा, देखिए तो, के बजे हैं ।

अलारक्खी-- मैं अटकल से कहती हूँ, कोई बारह बजे होंगे ।

चंदधबाज--मैं भी कहूँ, यद जम्दाइयों पर जम्दाइयाँ क्यों आ रही हैं। नशे का बक़्त टल गया | इस्य्याइयों की दुकानें मी बढ गयी होंगी । मलाई से भी गये | हजूर, अन्न तो रुखसत कीबिए | अब तो चंहू की छो छगी है, आज सबेरे-सबेरे आजाद की मनहूस सूरत देखी थी, जमी यह हाल हुआ | अलारक्ली--ले खबरदार, अब की कहा तो कहा, अब आजाद का नाम लिया, तो मुझसे' बुरा कोई नहीं; जबान खींच रूँगी। नाइक किसी पर छुद्दा रखना अच्छा नहीं। नधाब--अरे मई, कोई है, देखो, दुकानें बढ़ न गयो हों, तो इनको यहीं चंडू पिल्या दें। जरा दो घड़ी और भी अलारक्खी से सोहबत गरमावें । खिदमतगार--जाने को कद्दिए में

जाऊँ, मुल दुकानें कब की बद गयी हैं; बाज़ार भर में सन्नाटा पड़ा है; चिड़ियाँ चुनगुन तक सो रहीं हैं; अब कोई दम में चक्रियाँ चलेंगी। अलारक्खी--ऐ. क्या आधी रात दल गयी ! ले, अब तो बंदी रुखत होती है | मुँशी--वाह, इस अँधेरी रात में ठोकरें खाती कहाँ जाओगी ! अलारक्खी--नहीं हुजूर, अब आँखें बंद हुई जाती हैं। बस, अब दझखसत । हुज्र, भूलिएगा नहीं । इतनी देर मजे से बातें की हैं । याद रखिएगा लौंडी को । मुंशी --वह हँसते आये, यहाँ से हमें झलाके चले; न बैठे आप मगर दर्दे-दिल उठा के चले। बकील--दिखाके चाँद सा मुखढ़ा छिपाया जुढ़्फ़ों में; दुरंगी हमको जमाने की वह दिखाके चले । नवाब--न था जो कूचे में अपना क्रयाम मद्दे-नजर; तो मेरे बाद मेरी खाक भी उड़ाके चले । खदा के लिए इतना तो इकरार करती जाओ कि कल जहूर मिलेंगे, हाथ पर द्वाथ मारो | अलारक्खी --आप छोगों ने क्या जादू कर दिया; अब रुखसत कीजिए । बकील--यह भी कोई हँसी है कि रुखसत का लेके नाम; सौबार बेठे-बेठे हमें तुम रुत्य चले | नवाब--आँखों-आँखों में ले गये वह दिल; कानों-कानों हमें खबर न हुई। अलारक्खी यहाँ से चली, तो राह में डोंग मारने लगी--क्यों, सब्र के सब हमारी छब्रि पर छोट गये न ! यहाँ तो फ़कोर की दुआ है कि जिस मदफ़िछ में बैठ जाऊं, वहीं कटाव होने छगे | दोनों सराय में पहुँचे, तो देखा, आजाद जाग रहे हैं । अंलारक्खी--आज -क्या है कि पलक्त तक न श्पकी ! यद्द किसकी याद में नींद उचाट है ! आजाद--हाँ, हाँ, जछाओ, दो-दो बजे तक हवा खाओ और हमसे आ कर बातें बनाओ । अल्यरक्खी--ऐ, वाह, यह शक, तब तो मीज़ान पट चुकी | अब इनके मारे कोई भाई-बहन छोड़ दे । अब यह बताओ कि निकाह को कोन दिन ठीक करते दो ! हम आज सबसे कह आये कि मियाँ आज़ाद के घर पड़ेंगे |

आजाद--वया सचमुच तुम सबसे कद्द आयीं ! कह्दीं ऐसा करना भी नहीं में दिलगी करता था। खदा की क़सम फ़क्रत व्लिगी ही थी। मैं परदेशी आदमी, शादी-ब्याह करता फिरूँगा, और 'मटियारी से ! माना कि तुम हो परी, मगर फिर भव्यारिन ही तो ! चार दिन के लिए सराय में आ कर टिके, तो यहाँ से यह ब्रला ले जायें!

अलारक्खी--ऐ. चोंच संभाल मरदुए | और सुनिएगा, हम बला हैं, जिस पर सारे शहर की निगाह पड़ती हैं १ दूसरा कहता, तो खून-खराब कर डालती | मगर करू क्या, क़ौल हार चुकी हूँ । बिरादरी भर में कलंक का टीका छगेगा। बल्ग की अच्छी कह्दी; तुम्दारे मुँह से मेरी एडी गोरी है, चादे मिला लो |

आज़ाद- तो बी साइबा, सुनिए, किसकी शादी और किसका ब्याह !

अलारखी--इन बातों से न निकलने पाइएगा । कल ही तो में नालिश दाग़ती हूँ। इकरार करके मुकर जाना क्या खाला जौ का घर है ! मियाँ, में तो अपनीवाली पर आयी, तो बड़ा घर ही दिखाउँगी । विसी और भरोसे न भूलना । मुझसे बुरा कोई नहीं ।

आज़ाद-- खुदा की पनाह, मैं अब तक समझता था कि मैं द्वी बड़ा घाघ हूँ, मगर इस औरत ने मेरे भी कान काटे । भुला दी सारी चौकड़ी । खुदा तड़का जल्दी से हो, तो मैं दूसरी कोठरी हूँ ।

अल्ारब्स्ती (नाक पर डैंगढीं रख कर;--रो दे, रो दे | इससे छोकरी ही हुए होते, तो किसी भलेमानस का घर बसता । भल्श मजाल पड़ी द्वै कि कोई भठियारी टिकाये !

आजाद-तो सारे शहर भर में आपका राज है कुछ !

अलारबखी- हई है, हुई है, बया हँसी-ठट्ठा है ! कल-परसों तक आटे-दाल का भाव मांद्म हो जायगा !

आज़ाद--चलिए, आपकी बल्ा से !

चेद्रबाज़--बलछा-वछा के भरोसे न रहिएगा। दो-चार दिन ताथेइया मचेगी |

आजाद--जरी आप चुपके बैठे रदहिएगा। यद्द तो कामिनी हैं, लेकिन तुम्हारी मुफ़्त में शामत आ जायगी |

चंड्रबाड़--मेरे मुँह न लगिएगा, इतना कहे देता हूँ ! क

आज़ाद ने उठ कर दो-चार चांटे ब्ड़ दिये। +लारकखी ने बौीच-बचाव कर दिया।

अलाए करे, हाथ टूटें, लेके ग़रीब को पीट डरा |

चंडूबाज--मेरी भी तो दो-एक पड़ गयी जी !

अलारक्खी--ऐ. चुप भी रह, बोलने को मरता है ।

इस तरह छड़-झगढ़ कर तीनों सोये ।

HINDI TEXT

प्रसंग २०

दुसरे दिन सबेरे आज़ाद की आँख खुली, तो देखा, एक शाह जी उनके सिरहाने खड़े उनकी तरफ देख रहे हैं। शाह जी के साथ एक लड़का भी है, जो अलारकतव्ी को दुआएँ दे रहा है । आजाद ने समझा, कोई फ़कीर है, झठ उठ कर उनके सलाम किया । फ़क्कीर ने मुसकियरा कर कहा-हुजूर, मेरा इनाम हुआ | सच कहिएगा, ऐसे बहुरुतिये कम देखे होंगे। आज़ाद ने देखा गच्चा खा गये, अब बिना इनाम दिये गला न छूटेगा | बस, अलारक्खी की भड़कीली दुलाई उठाकर दे.दी। बहुढपिये ने दुलाई ली, झुक कर सलाम किया और लंबा हुआ । लोडे ने देखा कि मैं ही रहद्दा जाता हूँ ! बट कर आज़ाद का दामन पकड़ा । हुज्र, हमें कुछ भी नहीं ! आज़ाट ने जेत्र से एक रुपया निकाल कर फेंक दिया। तब्र अलारक्खी चमक कर आगे बढ़ीं और बोलीं--ह में !

आजाद तुम्दारे लिए जान हाज़िर है।

चंड्बाज़--यह सब जबानी दाखिल है । बीबी को यह खबर ही नहीं कि दुलाई इनाम में चली गयी | उलटे चली हू मागने | यह तो न हुआ कि चाँदी के छड़े बनवा देत, या किसी दिन हमी को दो-चार रुपये दे डाडतवे । जाओ मिर्यों, बस, तुमको भी देख लिया । गो के यार हो, “चमड़ी जाय दमड़ी न जाय ।

अलारक्खी--कहीं तेरे सिर गरमी तो नहीं चद गयी । जरा चैंरिया के पद्दे कतरत्रा डाल । यह चमड़ी और दमड़ी का कोन मौक़ा था। यह बताइए, अब निकाह की कन तंपरारियाँ हैं !

आज्ाइ--अभी निकाह की उम्मेद आपको है ! वल्लाइ, कितनी भोर हो !

अलारब्खी--तो क्या आप निकल भी जायेंगे ! ऐ., में तो चदँगी अदालत ! कह-कह कर भुकर जाना क्या हँसी-ठट्ठा है ! ह

आजाद--तो क्या नालिश कीजिएगा !

अलारक्खी--क्यों, क्या कोई शक भी है | हम क्या किसी के दबैल हैं !

चं2भाज--और गवाह को देख रखिए। दुलाई क्या झप से उठा दी। परायी दुलाई के आप कोन देनेवाले थे ! अजी, में तो वह-वह सवालू-जव्राब कहूँगा कि आपके होश उड़ जायेंगे ।

आज्ञाइ--अच्छी बात है, यइ शौक से नाहिश करें और आप गवाही दें। इन्हें तो क्या कर्टू, पर तुम्हें समझूँगा ।

चैड्वाज - मुझसे ऐसी बातें न कीजिएगा, नहीं मैं फिर गुद्द। ही दूँगा ।

अजारबशी--चल, हट, बड़ा आया वहाँ से गुद्दा देनेवाला । अभी में चिमट जाऊँ, तो चीखने लगें, उत्त पर गुद्दा देंगे ।

आजाइ--तो फिर क्षाइए वकील के यहाँ, देर हो रही है ।

अलारक्खी--तो क्या सचमुच तुम्हें इनकार है ! मियाँ, आँखें खुल जायँगी। जब सरकार का प्यादा आयेगा, तो भागने को जगह न मिलेगी |

चंडूबाज--यह हैं शोहदे, यों नहीं मानने के। चलो चलें, दिन चढ़ता आता है। अभी कंघी-चोटी में तुम्हें घंटों लगंगे और वह सरकारी-दरबारी आदमी ठहरे | मुवक्किछ सुबह-शाम घेरे रहते हैं। जब देखो, बग्पियाँ, टमटम, फिटन, जोड़ी, गाड़ी, हाथी, घोड़े, पालकी, इक्के, ताँगे, याबू, फिनस, म्याने दरवाज़े पर मौजूद ।

आज़ाद--क्या और किसी सवारी का नाम याद नहीं था! आज सरूर खब गदठे हैं।

चंडूबाज--अजी, यहाँ अलारक्खी की बदौलत रोज़ ही सरूर गठे रहते हैं ।

अलारक्खी ने कोठरी में जा कर सिंगार किया और निखर कर चलीं, तो आज़ाद की निगाह पड़ ही गयी । चार आँखें हुई, तो दोनों मुस्किरा रिये। चंड्ूबाज़ ने यह शेर पदा-- उनको देखो तो यह हँस देते हैं ;

आँख छिपती ही नहीं यारी की।

अलारक्खी एक हरी-हरी छतरी लगाये छम-छम करती चली। बिगड़े-दिल आवाजें कसते थे, पर वह किसी तरफ़ आँख उठा कर न देखती थी। चंड्रबाज़ 'हटो, बचो" करते चले जाते थे। जरी हट जाना सामने से । एऐं, क्या छकड़ा आता है, क्यों हट जायें ! अख्खाह, यह कद्दिए, आपकी सवारी आ रही है | लो साहब, हट गये। एक रसिया ने पीछा किया। ये लोग आगे-आगे चले जा रहे हैं और मिर्यों रतिया पीछे-पीछे ग़ज़लें पदते चले आ रहे हैं। चंड्रबाज ने देखा कि यद्द अच्छे बिगड़े-दिल मिले | साथ जो हुआ, तो पीछा ही नहीं छोड़ते। आप हैं कोन ! या आगे बढ़िए या पीछे चलिए । किसी मडेमामस को सताते क्यों हैं ! इस पर अल्गारक्खी ने चंड्रबाज़ के कान में चुपके से कष्टा-यह भी तो शक्रल-सूरत से मलेमानस माद्म होते हैं । हम इनसे कुछ कद्दना है।

चंड्बाज--आप तो वकील के पास चलती थीं, कहाँ इस सिड्धी-सौदई से साँट-गाँठ करने की सूझी ! सच है, दसीनों के मिजाज का ठिकाना ही क्या । बोले-अजी साहब, जरी हधर गली में आइयेगा, आपसे कुछ कहना है।

रसिया-- वाह, 'नेकी और पूछ-पूछ !!

तीनों गली में गये, तो अलारबखी ने कदह्ा-कह्दीं तुम्हारे मकान भी दे ! यहाँ इस गडियारे में क्या कहूँ, कोई आवे, कोई जाय | खड़े-खड़े बातें हुआ करती हैं !

चंड्रबाज़ ने सोचा कि दूसरा गुल खिला चाहता है। पूछा-मिर्यों, तुम्हारा मकान यहाँ से कितनी दूर है । जो काले कोसों हो, तो मैं छपक कर बग्घी किराया कर ढूँ। इनसे इतनी दुर न चला जायगा । इनको दो मारे नज़ाकत के छतरी डी का सैंभालना मारी है।

रसिया--नहीं साहब, दूर नहीं है | बस, फोई दस कदम आइए । रखिया ने छतरी ले ली और खिदमतगार की तरह छतरी लगा कर साथ साथ चलने छगे। चंडूबाज़ ने देखा, अच्छा गावदी मिला । खुद भी छतरी के साये में रईस बने हुए चलने लगे । थोड़ी देर में रसिया के मकान पर आ पहुँचे ।

रसिया--थह आये घर में हमारे, खदा की कुदरत है कभी हम उनको, कमी अपने धर को देखते हैं ।

यहाँ तो सच्चे आशिक हैं । जिसको दिल दिया, उसको दिया ।' जान जाय; माल जाय; इज्जत जाय;

सब्र मंजूर है।

चेड्बाज--अच्छा, अब इनका मतल्ब सुनिए | यह बेचारी अभी अठारइ-उन्नीस बरस की होंगी ! अभी कल तो पेदा हुई हें। अब सुनिए कि इनके मिर्यों इनसे लड़ झगड़ कर हेदराबाद भाग गये । वहाँ किसी को घर में डाल लिया | अब यह अकेली हैं, इनका जी घब्राता है, इतने में एक शौकीन रईस सराय में उतरे, बड़े खबसूरत कहल्के-छल्के के जवान हैं ।

अलारक्खी-मियाँ, आँखें तो ऐसी रसीलौ कि देखी न सुनी ।

चंड्बाज़--ऐ., तो मुझी को अब कद्दने दो | तुम तो बात फाटे देती हो । हाँ, तो मैं कहता था कि इनकी-उनकी आँखें चार हुईं, तो इधर यद्द, उघर वह, दोनों घायल हो गये । पहले तो आँखों ही आँखों में बातें हुआ की । फिर खुल के साफ़ कह दिया कि हम तुमको ब्याहँगे। फिर न जाने क्या समझ कर मुकर गये। अब इनका इरादा है कि उन पर नालिश ठोंक दें ।

रसिया--अजी, उनको भाड़ में झोंको । जो ब्याह ही करना है, तो हमसे निकाह पदवाओ । उनको धता बताभो।

अछलारक्खी--सच कहूँ, तुम मर्दों का इमें एतबार दमडी भर भी नह्ठीं रहा । अब जी नहीं चाइता कि किसी से दिल मिल्ये ।

रसिया--तुमने अभी हमें पह्चिचाना ही नहीं | पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं। इम शरीफ़जादे हैं !

अलारक्खी--लोग यही समझते हैं कि अलारक्खी बड़ी ख़शनसीब है। मगर मियाँ, में किससे कहूँ, दिल का हाल कोई क्या जाने |

चड्बाज--यही देलिए, अजीदावा है

रसिया--अरे, यह किस पागल ने लिखा है जी ! ऐसा भला कहीं हो सकता है कि सरकार आज़ाद से तुम्हारा निकाह करवा ही दे ! हाँ, इतना हो सकता है कि हरजा दिलवा दे | पर उसका सबूत भी ज़रा मुश्किल है ।

आलारक्खी--अज्ी, होगा भी, मसौदा फाड़ डालो । आजाद से अब मतलब ही क्या रहा !

रसिया--हम बतायें, नालिश तो दारा दो। दरजा मिला तो इज ही क्या है। बाक़ी ब्याह किसी के अख्तियार में नहों। उधर तुमने मुक्ररमा जीता, इधर हम बरात ले कर आये।

अलारक्खी --तो चलो, तुम भी वकील के 'यहाँ तक चले चलो न ।

रसिया--हाँ, हाँ, चलो ।

तीनों आदमी वकील के यहाँ पहुँचे। लेकिन बड़ी देर तक बाहर ही टापा किये। यह रईस आगे, वह अमीर आये । कभी कोई महाजन आया। बड़ी देर के बाद इनकी तलबी हुई; मगर वकील साहब जो देखते हईं, तो अल्यरब्खी का मुँद्द उतरा हुआ है, न बह चमक-दमक है, न वह मुसकिराना और लजाना | पूछा-आपिूर, माजरा क्या है ! आज इतनी उदास क्यों हो ! कहाँ बह छबि थी, कहाँ यह उदासी छायी हुई हे ! अलारक्खी ने इसका तो जवात्र कुछ न रिया, फूट-फूट कर रोने छगी । भाँसू का तार बंध गया। बकील सन्नाटे में |

आज यद्द क्या माजरा है, इनकी आँखों में आँधू |

चंहबाज--हुजुर, यह बड़ी पाकदामन हैं। जितनी ही चंचल हैं, उतनी ही सम-झदार । मेरा खदा गवाह है, बुरी राह चछत आज तक नहीं देखा | इनकी पाकदामनी की क़पम खानी-चाहिए | अब यह फ़रमाइए, मुकदमा कैसे दायर किया जाय |

रसिया--जी हाँ, कोई अच्छी तदरीर बताशए। जबरदस्ती शादी तो हो नहीं सकती । अगर कुछ इरजाना ही मिल जाय, तो क्या बुरा ! भागते भूत की लँगोटी ही सही | कुछ तो ले ही मरेंगी।

चेड्बाज़ -- मरें इनके दुब्मन, आप भी कितने फूहड़ हैं, वाह !

बकील--अच्छा, यद्द तो बताइए कि वह रईस कहाँ से आयेंगे, जो कहें कि हमसे और इनसे ब्याह की ठद्दरी थी !

रसिया--अच बता ही दूँ ! बंदा द्वी कहदेगा कि हमसे महीनों से बातचीत है, आज़ाद बीच में कूद पड़े | वल्लाह, वह-वह जवाब दूँ कि आप भी खुश हो जायें ।

वकील--वाह तो फिर क्या पूछना | हम आपको दो-एक चुटकिड़े बता देंगे, कि आप फर्राटे भरने छगिएगा | मगर दो-एक गवाह तो ठहदरा लीजिए ।

चंड्बाज --एक गवाह तो मैं द्वी बैठा हूँ, फर्राटेबाज ।

खैर तीनों आदमी कचहरी पहुँचे । जिस पेड़ के नीचे जा कर बैठे, वहाँ मेला सा लग गया) कचइरी भर के आदमी टूटे पड़ते हैं। धक्रमपका हो रह्दा है। चंड्रभाज वारिसअलोखाँ बने भैठे हुक्क़ा गुड़गुड़ा रहे हैं । जाओ भई, अपना काम करो, आखिर यहाँ क्या मेला है, क्या भेडिया-धसान है |

एक--आप लाये ही ऐसी हैं ।

दूसरा--अच्छा, हम खडे हैं, आपका कुछ इजारा है ! वाह अच्छे आये ।

तीसरा--भाई, जरी दँस-बोल लें, आखिर मरना तो है ही |

जब एक बजा, तो बी अलारक्वी इठलाती हुई सवाल देने चलीं। चैड्बाल एक हाथ में हुक्ा लिये हैं, दूसरे में छतरी । खिदमतगार बने चले जाते हैं | लोग इधर-उधर झुंड के झुंड खड़े हैं; पर कोई बताता नहीं कि भर्ज़ी कहाँ दी जाती है | एक कहता है, दाहने हाथ जाओ । दुसरा कहता है, नहीं-नहीं, बायें-बायें । बड़ी मुदि कल से इनलारा तक पहुँचीं।

डघर आजाद पड़े-पड़े सोच रहे ये कि इस बेफ़िक्री का कहीं टिकराना है ! जो कहीं नवाब ऊँ आदमी छूट तो चोर के चोर बनें और उब्छू के उल्लू बनाये जायें। किसी को मुँह दिखाने लायक न रहें | आवरू पर पर पानी फिर गया। अभी देखिए, क्या क्या होता

है---कहाँ-कहाँ ठोकरें खाते हैं ! इतने में सराय में लेना-डेना फा गुल मचा | यह भी भड्ठभड़ा कर कोटरी से बाहर निकले, तो देखते हैं कि साँडनी ने रस्सी तोड़-ताड़ कर फेक दी है और सराय भर में उचकती फिरती है। पहले एक मुसाफ़िर के टट्टू की तरफ़ झुकी और उसके मारे पुस्तों के बौखला दिया। मुसाफ़िर बेचारा ए.क छग्गा लिये खटाखट हाथ साफ़ ऋर रहा है | फिर जो वहाँ से उछली, तो दो-तीन बैलों का

कचूमर ही निकाछ डाला | गाड़ीवान हाँय-हाँय कर रहा है; लेकिन इस हाँय-दाँय से भला ऊँट समझा किये हैं । यहाँ से झपटी, तो तीन-चार इक्कों के अंबर-पंजर अछूग कर दिये। आज़ाद तोबड़ा दिखा रहे हैं और आर्जे कर रदे हैं| लोग तालियाँ बजा देते हैं, तो वह और भी बोखला जाती है। बारे बढ़ी मुश्किक से नकेल उनके हाथ में आयी। उसे बाँध कर कहीं जाने की तैयारी कर रहें थे कि अलारक्ली और चंड्रबाज़ अदालत के एक मज़कूरी के साथ आ पहुँचे । आज़ाद ने मुँह फेर लिया और मीटे छुरों में गाने लगे-- ठानी थी दिल में, अब न मिलेंगे किसी से हम; पर क्या करें कि हो गये लाचार जी से दम | मजकूरी--हुजूर, सम्मन आया है । आज़ाद--तुम मेरे पास होते हो गोक; जत्र कोई दूसरा नहीं होता ।

मज़कूरी--सम्मन आया है, गाने को तो दिन भर पड़ा है, लीजिए, दस्तखत तो कर दीजिए !

आज़ाद--धो दिया अश्के-नदामत को गुनाहों ने मेरे;

तर हुआ दामन, तो बारे पाक-दामन हो गया ।

मजकू री--अजी साहब, मेरी भी छुनिएगा !

आजाद--क्या इमसे कद्दते हो !

मजकूरी---और नहीं तो किससे कहते हैं !

आज़्ाइ--कैसा सम्मन, लाओ, डरा पर्दे तो। लो, सचमुच ही नालिश जड़ दी ।

मजकूरी ने सम्मन पर दस्तखत कराये और अलारक्खी को घेरा। आज तो हाथ गरमाओ, एक चेद्राश्ाह्दी लओ | अलारक्खी ने कह्दा--ऐ, तो अभी सूत न कपास, इनाम-बिनाम केसा ! मुकदमा जीत जायें, तो देते अच्छा छगे।

मजकूरी--तुम जीती खेल हो बीती । अच्छा, कल आऊऊँगा।

मिर्यों आज़ाद के पेट में चूदे कूदने छगे कि यह तो बेदत्र हुईं। मैंने जरा दिल-बहलाव के लिए, दिल्लगी क्या कर दी कि यद्द मुखोबत ग़ले आ पड़ी | अब तो खेरियत इसी में है कि यहाँ से मुँह छिपाकर भाग खड़े हों। बी अलारक्ली चिला-चिल्लाकर कहने लगीं---अब तो चाँदी है। जीते, तो घी के चिराए जलायेंगे। एक ने फहा--यह न कहा, मुँह मीठा करेंगे; गुलगुले खिलायेंगे। दूसरी ने कहा---न खिलायगी, तो निकाह के दिन दोलक कोन बलायेगा ! आज़ाद मौक़े की ताक में ये ही, अलारक्खी की आँख चूकते ही झट से काठी कसी और भागे । नाके तक तो उनको किसी ने न टोका, मगर जन नाके से' कोई गोली भर के टप्पे पर बाहर निकल गये तो मियाँ <ंडूबाज़ से चार आँखें हुईं | अरे ! राज़ब हो गया, अब धर लिये गये |

चद्धबाज- ऐ.बड़े भाई, किधर की तेयारियाँ हैं ? यह भाग जाना हैंसी-ठटद्ठा नहीं है कि काठी कसी और चल खड़े हुए। आँखों में स्वाक झोंक कर चले आये होंगे । ले बस, उतर पड़ो, आओ, जरी हुका तो पी लो ।

आज़ाद-- इस दम में हम न आयेंगे। ये फ़िकरे किसी गैंवार को दीजिए । आप अपना हुवका रहने दें । बस, अब दम खूब पी चुके। नाकों दम कर दिया बदमाशों ने ! चले थे मृकदमा दायर करने | किस मजे से कद्दते हैं कि हुक्का पिये जाओ । ऐसे ही तो आप बड़े दोस्त हैं !

चंड्रबाड--नेकी का जमाना ही नहीं | दइमने तो कहा, इतने दिन मुलाक़ात रही है, आओ भाई, कुछ

खातिर कर टें, अब खूद। ++), कब मिलना हो ।

आज्ाद-- ख़दा न करे, दम जैसे मनहूर' .. सूरत ख्वाब में भी नज़्र आये।

चंद्रबाज़ ने गुल मचाना शुरू किया--दौड़ो, चोर है, लेना, चोर, चोर | परियाँ आजाद ने चंड्ूबाज़ पर सड़ाक से कोड़ा फटकारा ओर सॉडनी की एक एड़ लगायी। बह हदा हो गयी! शद्दर से बाहर हुए, तो राह में दो मुसाफ़िरों को यों बातें करते सुना--

पदला--अरे मियाँ, आजकल लखनऊ में एक नया गुल खिला है | किसी न्यारिये ने करोड़ों रुपये के जाली स्टाम्प बनाये और लंदन तक में जा कर कूड़े किये। सुना, काबुल में दो जालिये पकड़े गये, झुइकें कस ली गयीं और रेल में बंद करके यहाँ भेज दिये गये । अल्लाह जानता है, ऐसा काल किया कि जौ भर भी प्क् मादूम हो, तो मूँछें मुड़वा लो ! सुना है, कोई, डेट सौ दो सौ बरस से बेचते ये और कुछ चोरी-छिपे नहीं, खुल्लमखुला ।

दूसरा--वाह, दुनिया में भी कैसे-कैसे काइयाँ पड़े हैं। ऐसों के तो हाथ कटवा डाले ।

पहला--वाह, वाह, क्या कदरदानी की है ! उन्होंने ने तो वह काम किया कि हाथ चूम लें, जागीरें दें ।

आज़ाद को पहले मुसाफ़िर की गपोड़ेबाज़ी पर ईंसी आा गयी। वया झप से जालियों को काबुल तक पहुँचा दिया और हिंदुस्तान के रटाम्प लंदन में बिकवाये | पूछा-क्यों साहब, कितने जाली स्टाम्प बेचे !

मुसाफ़िरों ने समझा, यह कोई पुलिस अफ़सर है, टोद्द लेने चले हैं, ऐसा न हो कि हमको भी गिरफ़्तार कर लें | बगलें झाँकने लगे ।

आजाद---आप अभी कहते न ये कि बालिये गिरफ़्तार किये गये हैं !

मुसाफ़िर--कौन ! इम १ नहीं तो [

आजाद-- जी, आप बातें नहीं कर रदे ये कि स्टाम्प किसी ने बनाये और डेढ़ दो सौ बरस से बेचते चठे आये !

मुखाफ़िर-- ३५२, इमकी तो कुछ मादूम नहीं |

आजाद---अमी बताओ सुअर, नहीं हम तुमको बड़ा घर दिखायेगा और बेड़ी पहनायेगा ।

मियाँ आजाद तो उनकी चितवनों से ताड़ गये थे कि दोनों के दोनों चोंगा हैं, मारे डर के स्ट/म्प का लफ्ज़ ज़बान पर नहीं लाते | जैसे ही उन्होंने डॉट बतायी, एक तो बगठुट पच्छिम की तरफ मांगा और दूसरा खड़भड़ करता हुआ पूरब की तरफ | मियाँ आज़ाद आगे बदे । राह में देखा, कई मुसाफ़िर एक पेड़ के साये में बैठे बातें कर रहे हैं--

एक--कोई ऐसी तदबीर बताइए कि छू न रंगे | आजकल के दिन बड़े बुरे हैं ।

दूसरा--इसकी तरकीब यह है कि प्याज़ की गद्ठी पास रखे | या दो-चार कचे आम तोड़ लो, आमों को पहले भून लो, जब पिलविले हों, तो गूदा निकाल कर छिलका फेक दो और ज़रा सी शकर, पानी में घोल कर पी जाओ ।

पहला- कहीं ऐसा ग़ज़ब भी न करना ! पानी में तोचरफ़ डालनी द्वी न चाहिए। पानी का गिल्यस बरफ़

में रख दो, जब खूब ठंडा हो जाय, तब पियो। बरफ़ का पानी नुकसान करता & ;

दूसरा- वाह, छाखों आदमी पीते हैं ।

पहला-- अजी, छाखों आदमी झख मारते ह। लाखों चोरियों भी तो करते हैं, फिर इससे मतलब १ हमने छाखोंों आदमियों को देखा है कि गढ़ों और तालाबों का पानी सफ़र में पीते हैं । आप पीजिएगा ! दज़ारों आदमी धूप में चछ कर खड़े-खड़े तीन-चार छोटे पानी पी जाते हैं । मगर यद्द कोई अच्छी वात थोड़े ही है ।

और आगे बढ़े, तो एक भडुरी आ निकला । वह आज़ाद को पहचानता था । देखते ही बोछला--तुम्हारी नवात्र सहब के यहाँ बड़ी तलाश है जी। तुम ग़ायत्र कहाँ हो गये ये ऊँट ले कर ? अब मैं जा कर कहूँगा कि मैंने प्रशन देखा, तो निकला, आजाद पाँच कोस के अंदर ही अंदर हैं। जब तुम लपदेनी पहुँच जाओगे, तो फिर दमारी चढ़ती कला होगी | तुमकों भी आधोआध बॉट देंगे। मगर भंडा न फोड़ना । चद बाज़ी है|

आज़ाद--वल्लाह, क्या यूझी है | मंजूर है ।

भड्ठरी ने पोथी सँमाल अपनी राह ली ओर नवात्र के यहाँ धर धमके ।

खोजी-- अजी, जाओ भी, तुम्दारी एक बात भी ठीक न निकली |

नवाब- बरसों हमारा नमक तुमने खाया है, बरसों । एक-दो दिन नहीं बरसों । अब इस वक्त कुछ परशन-वरशन भी देखोगे, या बातें ही बनाओगे १ हमको तो मुसत्मान भाई तुम्हारी वजद से काफ़िर कहने लगे और टुम ५ अच्छा सा हुक्म नहीं लगाते।

भडुरी--वह हुक्म लगाऊँ कि पट ही न पड़े !

खोजी-- अबी, डींगिये हो ख़ासे । कहीं किसी रोज़ मैं करौली न मोंक दूँ । दिवा बे-पर की उड़ाने के, बात सीखी दी नहीं। मले आदमी, सार भर में एक दफ़ेंतो सच बोला करो |

झाममन--वाह, सच बोलते, तो क़साई के कुत्ते की तरह फूल न जाते |

नवाब-- यह क्या वाहियात बात !

भडुरी-- हुज्र, हमसे-इनसे हँसी होती है। यह हमें कहते हैं, हम इन्हें । अब आप कोई फूल मन में लें ।

नवाब--ये ढकोसले हमको अच्छे नहीं माद्म होते । हमें साफ़-साफ़ बता दो कि मियोंं आजाद कब्र तक आयेंगे !

भड्डुरी ने उँगलियों पर कुछ गिन-गिना कर कहा--पानी के पास हैं ।

झम्मन- वाह उस्ताद ! पानी के पास एक ही कही । छड़की न लड़का, दोनों तरदइ अपनी द्वी जीत ।

भड्ुरी-- यहाँ से कोई तीन कोस के अंदर हैं ।

दुली--हजूर, यह बढ़ा फ़ेलिया है। आप पूछते हैं; आज़ाद कब्र आयेंगे | यह कहता है, तीन कोस के अंदर द्वी अंदर हैं। सिवा झूठ, सिवा झूठ ।

भडुरी--अच्छा, जा कर देख छो । जो नाके के पास आज़ाद आते न ुमिर्ले, तो नाक कटा डा , पोथी जला हूँ। कोई दिल्लगी है १

नवाब--चाबुक-सवार को बुला कर हुक्म दो कि अभी सरपट जाय ओर देखे, मियाँ अज़ाद आते हैं या

नहीं। आते हों, तो इस भडुरी का आज घर भर दूँ। बस, आाज से इसका कल्मा पढने लगूँ।

चाबुक-सवार ने बाँका मुड़ासा बाँधा और सुरंग घोड़ी पर चढ़ चछा । मगर पचास ही कदम गया होगा कि घोड़ी भड़की और तेज़ी में दूसरे नाके की राह ली। चाबुक सवार बहुत अकड़े बैठे हुए. थे; मगर रोक न सके, धघम से मुँह के बल नीचे आ रहे | खोजी ने नवात्र साइब से कह्दा--हुजर, घोड़ी ने नाज़िस्अली को दे पटका, और क्या जाने किस तरफ़ निकल गयी |

नवाब---चलो, खैर समझा जायगा । ठुम टॉघन कसवाओ और दौड़ जाओ |

खोजी--हुजूर, मैं तो बूढ़ा हो गया ओर रद्दी-सही सकत अफ़ीम ने ले ली | टॉबन है बला का शरीर। कहीं फेक-फाक दे, हाथ-पाँव हूटें, तो दीन-दुनिया, दोनों से जाऊँ। आज़ाद खद भी गये और हम सत्रको भी बला में डाछ गये ।

इधर चाबुक-सवार ने पटकनी खायी उधर छॉडों ने तालियाँ बजायीं। मगर शह-सवार ने गद झाड़ी, एक दूसरा कुम्मैत घोड़ा कसा और कड़कड़ा दिया । हवा से बातें करते जा रहे हैं | बगिया में पहुँचे, तो देखा, सॉड़िनी की काकरेज़ी झूठ झलक रही है और ऊँटनी गरदन झुकाये चौतरफ़ा मटक रही है। जा कर आज़ाद के गले से लिपट गये।

आजाद--कद्दिए, नवात्र के यहाँ तो खेरियत है !

सवार--जी हाँ, खेर-सल्लाह के ढेर हैं। मगर आपकी राद्द देखते-देखते आँखें पथरा गयीं। ओ मियाँ, कुछ और भी सुना ! उस बटेर की क़ब्र बनायी गयी है | सामने जो बेल-बूटों से सजा हुआ मकबरा दिखायी देता है, वद्द उसी का है ।

आजाद--यह कहिए, यार लोगों ने कब्र मी बनवा दी ! व्लाह, क्या-क्या फ़िक्रेआज हैं।

सवार--बस, टुम्हारी ही कसर थी। कह्दो, हमने सुना, खूब गुलछरें उड़ाये। चलो, पर अब नवाब ने याद किया है |

आज़द--एं, उन्हें हमारे आने की कहाँ से ख़बर हो गयी !

सवार--अजी, अब यह सारी दास्तान राह में सुना देंगे ।

आब्ाद---अच्छा, तो पहले आप हमारा खत नवाब के पास ले जायें | फिर हम शान के साथ चलेंगे ।

यह कह कर आज़ाद ने खत लिखा--

आज क्रज्म की बाँछे लिली जाती हैं; क्योंकि प्रियाँ सफ़शिकन की सवारी आती है। हुजुर के नाम की क्रमम, इधर पाताल तक और उधर सातवें आसमान तक हो आया, तब जाके खोज पाया। श्ज्ञाह जी साहब रोज दादें मार-मार कर रोते हैं। कल मैंने बड़ी खशामद की और आपकी याद दिलायी, तो ठंडी आह खींच कर रह गये । बड़ी-बड़ी दलीलें छाँटते ये। पहले फ़रमाया--दरों बज्म रह नेस्त बेगाना रा, मैंने छूटते दी जवाब दिया--कि परवानगी दाद परवाना रा।

'खिल-खिला कर हँस पड़े, पीठ ठोंकी और फ़रमाया-शआात्राश बेटे, नवाब साहब की सोहबत में तुम बहुत बक्र हो गये । पूरे दो दृफ़्ते तक मुझसे रोज बहस रही। आखिर मैंने कहा--आप चलिए, नहीं में ज्द्र

खा कर मर जाऊँगा । मुझे समझाया कि जिंदगी बड़ी न्यामत दै । खेर, तुम्हारी खातिर से चलता हूँ । लेकिन एक छतें यह है कि जब मैं वहाँ पहुँचूँ, तो भवाब के सामने खोजी पर बीस जुते पड़ें। मैंने कौ दिया, तब कहीं आये |!

सवार यद्द खत ले कर इवा की तरह उड़ता हुआ नवाब साहब के यहाँ पहुँचा ।

नवाच--कहो, बेड कि बेटी ! जल्दी बोलो । यहाँ पेट में चूहे कूद रहे हैं ! सावार--हुजुर, गुलाम ने राह में दम लिया हो, तो जरबाना दूँ ।

खोजी - कितने बेतुके हो मिरयाँ | "कहें खेत की, सुन खलिद्ान की ।? भला भपनी कारगुज़ारी जताने का यह कौन मौक़ा है? मारे मशीखत के दुबले हुए जाते हैं!

सवार ने आज़ाद का खत रिया । मुंशी जी पदलें के लिए बुलाये गये । खोजी घत्राये कि आजाद ने यह कब की कसर ली। बोले--हुजूर, यह मियाँ आज़ाद की दरारत है | शाह साहब ने यह शर्त कभी न की होगी। बंदे से तो कभी गुस्ताख़्री नहीं हुई ।

नवाब - खेर, आने तो दो । क्यों भाई मीर साहब, रम्माल ने तो बयान किया था कि सफ़शिकन के दुच्मन जन्नत में दाखिल हुए. । यह मियोँ आज़ाद को कहाँ से मिल गये !

मीर साइब--हुजूर, खुदा का भेद कौन जान सकता है !

भड़ुरी--मेरा प्रश्न कैसा ठीक निकला जो है सो, मानों निशाने पर तीर खट से बैठ गया ।

इतने में अंदर छोटी बेगम को ख़बर हुई। भीडी--इनका जैसा पोंगा आदमी

राई भर में न होगा | जरी-सा तो बटेर और पाजियों ने उसका मकबरा बनवा रिया। रोज कहाँ तक बढ़े ।

लींडी--बीबी, बुरा मानो गा मला, तुम्हें वे राहें ही नहीं मादूम कि मियोँ काबू में आ जायें

बेगम--मेरी जूती की नोक को क्या ग़रज़ पड़ी है कि उनके बीच में बोले । मैं तो आप ही डरा करती हूँ कि कोई मुझी पर तृफ़ान न बाँष दे |

उधर नवाब ने हुक्म दिया कि सफ़शिकन की सवारी धूम से निकले । इतना इशारा गाना था कि खोजी और मीरसाइब लगे जुद्स का इन्तज़ाम करने। छोटी बेगम कोठे रर छड़ी-खड़ी ये तेयारियों देख रही थीं और रिल में हँस रही थीं । उस वक़्त कोई खोबी को देखता, दिमाग नहीं मिलते थे । इसको डॉट, उसको डपट, किसी पर घौल जमायी, किसी के चाँटा लगाया; इसको पकड़ छलाभो, उसको मारो। कभी मसालची को गालियों दीं, कभी पंशाखेवाले पर बिगड़ पड़े । आगे-आगे निश्वान का हाथी था । हरी-हरी झूल पड़ी हुईं | मस्तक पर सेंदुर से गुल-बूटे बने हुए । इसके बाद हिंदोस्तानो गाबा कक्कड़-इय्यम ! इसके पीछे फूलों के तख्त--चमेली खिला ही चाहती है, कलियोँ चिटकने ही को हैं। चंडुबाज़ों के तख्त ने तो कमाल कर दिया। दो-चार पीनक में हैं, दस-पाँच ऊँघे पड़े हुए । कोई चंडूबाब्राना ठाट से पड़ा छील रहा है । एक गैंडेरी चूस रहा है। शिकार का वह समा बाँधा कि बाह जी वाह | एक शिकारी बंदूक छतियाये, घुटना टेके, आँख दबाये निशाना लगा रहा है | बस, दाँय की आवाज आया ही चाहती है | हिरन चौकड़ियाँ भरते जाते हैं। इसके बाद अगरेजी बाजा । इसके बाद घोड़ों की कतार--कुम्मैत, कुछ सुरंग, नुकरा, सब्डा,

अरबी, तुर्की, बैलर छम-छम करते जा रहे हैं। घोड़े ठुलद्धिन बने हुए थे । इसके बाद फिर अरगन बाजा; फिर तामदान, पालकी, नालकी, सुखपाल | इसके बाद परियों के तख्त एक से एक बढ़ कर । सब के पीछे रोशनचौकी वाले ये । रोशनी का इंतज़ाम भी चौकस था । पंशाखे और लाड़टेनें इक-इक कर रही थीं। इस ठाट से जुलूस निकला | सारा शहर यह बरात देखने को फटा पड़ता था। लोग चक्कर में थे कि अच्छी बगत है, दूल्दे का पता ही नेदीं। बरात क्या, गोरख-घंधा है।

जब जुलूस बगिया में पहुँचा, तो आजाद हाथी पर सबार दोकर सफ़शिकन को काबुक में बिठाये हुए चले ।

खोजी--मसल मशहूर है--'सौ बरस के बाद घ्रे के भी दिन बहुरते हैं ।? हमारे दिन आज बहुरे कि आप आये और शाह जी को लाये । नवात्र के, यहाँ सन्नाटा पढ़ा हुआ था । सफ़्शिकन के राम में सब पर मुदंनी छायी हुई थी । बस, लोग यही कहते ये कि आमाद सॉडनी ले कर लंबे हुए । एक मैं ही तुम्दारी हिमायत किया क रता था।

मीर साहब--जी हाँ, हम भी आप ही की तरफ़ से लड़ते थे, हम और यह, दोनों।

आजाट--मभई, कुछ नपूछो । ख़ुदा जाने, क्रिन-किन जंगलों की खाह छानी, तत्र कहीं यह मिकछे ।

स्ोबी -यहाँ लोग राप उड़ा रदे ये | किसी ने कदहा--मभाँड़ों के यहाँ नौकरी कर ली । कोई तूफान बाँबता था दि क्रिसो मठियारी के धर पड़ गये । मगर मैं यही कहे जाता था कि वह शरीफ़ आदमी हैं। इतनी बेहयाई कभी न करेंगे ।

खोजबी और मीर साहब, दोनों आड़ार को मिलाना चादते थे, मगर वह एक दी उस्ताद | समझ गये कि अब नवाब के यहाँ हमारी मी तूती बोलेगी, तभी ये सब हमारी ख़शामद कर रहे हैं। बोले--अबी, रात जाती है या आती है ! अब देर क्यों कर रहे हो ! पंशाखे चद्ाओ | घोड़े चछाओ | जत्र जुदूघ तैयार हुआ, तो आज़ाद एक हाथी पर जा डटे । बटेर की काबुक को आगे रख लिया | ख़ोबी और मोर साहइब्र को पीछे बिठाया और जुद्ूस चछा । चौक में तो पहले द्वी से हुहूढ़ था कि नवाबवाला बटेर बड़ी शान से आ रहा है। लाखों आदमी चौक में तमाशा देखने को डटे हुए थे, छतें फटी पड़ती थीं। बाजे की आवाज़ जो कानों में पड़ी, तो तमाशाई लोग उमड़ पड़े | निशान का द्वाथी झंडे का फुरेरा उड़ाता सामने आया | लेकिन ज्यों ह्वी चौक में पहुँचा, वैते ही दीवानी के दो मज़कूरियों ने डॉट कर कहा--द्वाथी रोक 'लछे। आज़ाद के नाम वारंट आया है|

लोगों के दोश उड़ गये | फ़ेलवात ने जो देखा कि सर झ्ारी आदमी लछाल-छाल पगिया बाँधे, काली-काली वरदी डाटे, ख'की पतदून पहने, चपराम लटकाये हाथी रोके खड़े हैं, तो सिटपिश गया ओर द्वाथी को जिधर उन्होंने कहा उधर ही फेर दिया । जुद्ूस में हुलड़ मत्त गया | कोई तरूत लिये भागा जाता है, कोई झंडे लिये दबका फिरता है। धोड़े थान पर पहुँचे | तामदान और पालकियों को छोड़ कर कहार अड्डे पर द्वो रहे । बाजे-वाले गलियों में घुस यये |

आज़ाद और खोजी मजकूरियों के साथ चले, तो शहर के बाहर जा पहुँचे । एक।-ए.क हाथी जो गरजा, तो खोजी और मीर साहब पीनक से चौंक पड़े ।

खोजी--एऐं, पंशाखते चढ़ाओ, पंशाख्रे | अबे, यह क्या अंपेर मचा रखा है ! जरी यों ही आँख झपक गयी, तो सारी की-कराई मिहनत खाक में मिला दी। अब मैं उतर कर कोड़े फटकारूँगा, तब मानेंगे । लातों के आदमी कहीं बातों से मान हैं !

मीर साहब-हैं, हैं |! ओ फ़ीलबान ! यह द्वाथी कया आतशबाजी से मइकता है! बढ़ा ले चलो | मील-मील, घत-घत । अरे भई खोज्ी, यह किस मैद्ान में आ निकले! आखिर यह माजर क्या है नाई !

खो बी --पंश।खे चदाओ, पंशाख्े । और इन बाजेबालों को क्या साँप सँच गया हे! जरा ओर-जोर छेड़े जाओ | अब तो निहाग का वक़्त है, बिहाग का |

मीर साइब--अज्ी, आँखे तो खोडिए, रोशनी का चिराग़ गुल हो गया । मुसीबत में आ फैंसे । आप वही बेवक़्त की शहनाई बजा रहे हैं। इस जंगल में आपको तरिह्ाग की धुन समायी है।

खोजी--पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे । नहीं, मैं कच्चा पैसा तो दूँगा नहीं। झप से चढ़ाना तो पंशास्े । शात्राश है बेटा |

मीर साहब तो जले-भुने बैठे ही थे; खोज्ी ने जब कई बार पंशाख्ों की रठ छगायी' तो वह शल्ला उठे । खोजी को द्वाथी पर से नीचे टकेल ही तो दिया | अरा-रा-रा धम । कौन गिरा १ जरी टोह तो लेना, कौन गिरा !

आज़ाद--मुम गिरे, तुम | आप ही तो छुदके हैं, टोह क्या ले !

खोजी--अरे, में ! यह तो कहिए, हड्डी-पसली कच गग्री ! यारो, जरी देखना तो, हमारा सिर बचा या नहीं ! मज़कूरी--बचा है, बचा। नाहीं फूट | पहिरि लिदिन सुथना, और चले फारसी छाँटे। ई बोझ उठाव | खोजी--हाँय-हाँय, कोई भज़दूरा समझा है |! शरीफ़ और पाजी को नहीं पदचानता ! ले, अब उतारता है बोस, या नाले में फेक हूँ ह ओ गीदी! छाना तो मेरी करौली । क्या मैं गधा हूँ ! मीर साइब--गधे नहीं, तो ओर हो कौन ! मजकूरी--तें को हँस रे! अरे तें फो हस ? उतर हाथी पर से । उतरत है कि हम आबन फिर, तें अस न मनि है। मीर साइब--कद्द ता किससे है ! कुछ बेघा तो नहीं है! कुछ नाविर हैं, हम, लो आये। मज़कूरी--अच्छा, तो यह बोझ उठा । थरिया-लोटिया रख मूड़ें पर और 'अगुवा । मीर साइब ने नीचे उतर कर देखा, तो सरकारी प्यादा वरदी डाटे खड़ा है । छगे थर-थर कॉपने । चुपके से बोझ उठाया और मचल-मचल कर चलने लगे। दोनों मज्ज-कूरी हाथी पर जा बैठे | खोजी और मीर साहब, दोनों लदे-फँदे गिरते-पढ़ते जाने छगे। खोजी--वाद री क्रिस्मत । क्यों जी मीर साहब, हम तो खुदा की याद में थे, तुमको क्या हुआ था ! मीर साहब--जहाँ आप थे, वहीं मैं मी था। यह सारी शरारत आजाद की है । आज़ाद--जरी चोंच सम्हाले हुए, नहीं मैं उतरता हूँ । चल्ते-चलत तड़का हो गया । खोजी बेले---लो भाई, हमारा तो भोर द्वी दो गया । अब जो बोझ उठा कर ले चले, उसकी सत्तर पुष्त पर लानत | यह कह कर बोझ फेक दिया | जब जग दिन चढ़ा, तो गोमती के किनारे पहुँचे । एक मज़कूरी ने कह्ा--ओ फ़ील्बान, हाथी रोक दे, नहाय लेई । फ़ीलबान--अरे, तो नहा लेना, केमे गर्वेरदल हो ! भआजाद--ऊद्ो खोजी, नद्दाओगे ! खोजो---यों द्दी न गला घोंट डालो ! नदी के पार पहुँचे, तो चंद्रबाज़ की यूरत नजर पड़ी । चंडबाज--बड़े

भाई, सलाम । कहो, खेर सक्लाह ! आँखें तुमको दूँढती थीं, देखने को तरस गये । अब कह्दो, क्या इरादे हैं ! अलारक्खी ने यह ख़त दिया है, पढ़कर चुपके से जवाब लिख दो । आजाद ने खत खोश और पदा---क्यों जी, इसी मुँह से कहते थे कि तुमसे ब्याइ करूँगा ! तुम तो चकमा देकर सिधारे और यहाँ दिल कराहा करता है। नहा धो कर करानशरीफ पर द्वाथ धरो कि न्याह का वादा नहीं किया था ! क्यों नाहक़ इंसाफ़ का गला कुंद छुरी से रेतते हो ! इस खत का जवाब डिखना, नहीं मैं अपनी जान दे दूँगी ।?

आकबाद ने जवाब लिखा---

“सुनो बीबी, हम कोई उठाईगीरे नहीं हैं। हम ठहरे शरीफ़, तुम हो भठियारी । भछा, फिर इमसे क्योंकर बने । अब उस खयार को दिल से निकाल दो | तुम्हारे कारन मजकूरियों की क्रैद में हूँ | तुम्हें मुँह न छगाता, तो इतना जलील क्यों होता ९?

चंड्बाज़ तो खत ले कर रवाना हुए, उधर का क्रिस्सा घुनिए। नवाब झूम-झम कर बगीचे में टहल रहे ये, आँखें फाड़-फ़ाड़ कर देखते ये कि जुद्स अब आया, और अब आया । एकाएक चोबदार ने आ कर कद्दा--खुदाबंद, छुट गये | लुट गये | वह देखो साहब तुम्दारे, लुट गये ।

नवाब---भरे कुछ मुँह से कद्देगा भी, कया ग़ज़त्र हो गया !

“ चोबंदार---खु शर्वंद, बरात को उठाईगीरों ने छूट डिया !

नवाब---बरात १ बरात किसकी ! कद्दीं शाह जी की सवारी से तो मतलब नहीं है ! उफ , द्वाथों के तोते उड़ गये ।

चोषदार--वद देखो साहब तुम्हारे, बारात चली आ रही थी | तमाशाई इतने जमा थे कि छतें फटी पड़ती थीं। देखो साहन्र तुम्हारे , जेसे बादशाह की सवारी हो । मुदा जैक दो चौक में पहुँचे कि देखो साहत्र तुम्हारे, दो चपरासियों ने हाथी को फेर दिया । बस साहब तुम्दारे, सारी बरात तितर-ब्ितर हो गयी | कहाँ तो बाजे बज रहे थे, कहाँ साहब तुम्दारे, सन्नाटा छा गया ।

नवाब--भला शाह जी कहाँ है !

सोबदार--हुजूर, शाह जी को लिये फिरते हैं | यहाँ देखो साहब तुम्हारे--

नवाब--कोई है, श्वधर आना, इसके कछ्े पर खड़े हो, जितनी बार इसके मुँदद से “बह देखो साहब तुम्दारे? निकले, उतने जूते इस पर पड़ें । गधा एक बात कहता है, तो तीन सौ साठ दफ़ “ओ देखो साहब तुम्दारे ।?

चाबुक-सवार - हुजूर, इस वक़्त ग़स्से का मौका नहीं, कोई ऐसी फ़िक कीजिए कि ज़ाइ जी तो छूट आयें |

नवाब---एँ, क्या बद्द भी गिरफ़्तार हो गये !

सवार--जी, आज़ाद, खोजो, हाथी, सब्र के सब पकड़ लिये गये !

नवाब---तो यह कहिए, बेड़े का बेड़ा गया है। हमें यह क्या मालूम था भला, नहीं तो एक गारद साथ कर देते। आख़िर, कुछ माद्म भी हुआ कि यह धर-पकड़ कैसी थी ? सच तो यों है कि इस वक़्त मेरे हाथ-पाँव

फूल गये । रुपये हमसे लो, और दौड़-धूप तुम छोग करो ।

मुसाहबों की बन आयी । अब क्या पूछना रै | आपस में हँडिया पकने रूगी। बल्लाह, ऐसा मौक़ा फिर तो हाथ आयेगा नहीं । जो कुछ लेना दो, ले छो, और उम्र भर चैन करो। इस वक़्त यह बौखलाया हुआ है। जो कुछ कद्दोगे, बेघड़क दे निकलेगा । लेकिन, एक काम करो, दस-पाँच आदमी मिल-लुल कर बातें बनाओ | एक आदमी के किये कुछ न होगा । कह्दीं भड़क गया, तो ग़ज़ब ही हो जायगा | खुदा करे रोज इसी तरह बारंट जारी रहे | मगर इतना याद रखिएगा कि कहीं अंदर खबर हुई, तो बेगम साहव छदूँदर की तरह नावेंगी। फिर करते-धरते कुछ न बन पड़ेगा |

मुबारकक़रम दरवाज़े के पास खड़ी सब घुन रद्दी थी। लडपक कर गयी और छोटी बेगम को बुला छायी | जरी जल्दी-जल्दी कदम उठाइए, ये सब जाने क्या वाही-तबाही बक रहे हैं। मुँह घलस दे पकड़ के | बेगम साहबा दबे पाँव गयीं, तो सुन कर मारे गश़स्से के छाल दो गयीं और नवात्र को अंदर बुलाया ।

मुबारकक़रम--ये हुजूर के मुसाहब, अछाह जनता है, एक ही अड्डीमार हैं, जिनके काटे का मंतर ही नहीं । जो है, वह झूठों का सरदार | मगर हुजूर उनको क्या जाने क्या समझते हैं। पछुआ हवा चलती, तो ठंडा पानी पीते, अब दिन भर शोरे का झला पानी मिलता है पीने को, और खुद ने न्यामत खाने को दी । फिर उन्हें दूर की न सूझे, तो किसे सूझे ।

बेगम--ऐसे ही झूठे खशामदियों ने तो छखनऊ का सत्यानाश कर दिया।

नवाब--यह आज क्या है, क्या !

बेगम--है क्या ! तुम्दारे मुसाहत्र मुँह पर तो तुम्हारी झूठी तारीफ़ें। करते हैं और पीठ पीछे तुम्हें गालियाँ सुनाते हैं । इन सबको दुत्कार क्यों नहीं देते !

इधर तो ये बाते हो रदह्दी थों, उधर मजकूरियों ने आज़ाद को एक भाग़ में उतारा।

खोजी--मियाँ फ़ील्बान, जरी जीना लगा देना ।

फ़ीलबान---अब आपके लिए जीना चनवाऊँ, ऐसे तो खबसूरत भी नहीं हैं आप !

मीर साहइब--जीना क्या ढूँदते हं, हाथी पर से कूरना कौन सो बड़ी बात है।

यह कद् कर मीर साहब बहुत द्वी अकड़ कर दुम की तरफ़ से कूदे, तो घिर नीचे और पाँव ऊपर । रोक रोक, हत् तेरे फ़ीलबान की | सच है, गाड़ोबान, झतुरबान, कोचबान जितने बान है, सब शरीर । छाख बचे, मंगर आधे हो गये | हमारा कला हो जानता है | खय से बोला। वह तो कह्ठिए, मैं ही ऐसा बेहया हूँ कि बातें करता हैँ, दूसरा तो पानी न माँगता ।

खोली खिलखिला कर हँस पड़े | अब कहिए, हमने जो जीना माँगा,तो ह में बनाने लगे।

मीर साइब--मिर्यों, उतरते हो कि दूँ धक्का ।

खोजी बेचारे जान पर खेल कर जैसे ही उतरने को ये कि हाथी उठ खड़। हुआ | या अलो, या अली, बचाइयो, खद्ा, मैं बढ़ा गुनहगार हूँ।

इतना कह चुके ये कि अररर-धम, जमीन पर आ कर ढेर हो गये ।

मीर साहब ने कद्दा--शाबाश मेरे पट्ठे, ले झपाके से उठतो जा।

खोजी--यहाँ दृड्डी-पठलछी का पता नहीं, आप फ़रमाते हैं, उठ तो जा । कितने बेदद हो ! । दो आदमी बहीं बैठे कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। खोजी और मीर साहब तो छकड़ियाँ खोजने लगे कि और नहीं तो सुलफ़ा ही उड़े और आज़ाद इन दोनों अजनबियों की बातें सुनने लगे--

एक--भई, आडिर मुँह फुलये क्योंबैठे हो! क्या मुदर्रम के दिनों में पैदा हुए थे !

दूसरा --हाँ यार, क्यों न कहोगे। यहाँ जान पर बनी है, आप मुदरंम लिये फिरते हैं। हमने बी अलारक्खी से कई रुपये महीने मर के वादे पर छियेथे। उसको दो साल होने आये। अब वह कहती है, या हमारे रुपये दो, या इमारे मुकदपें में गवाद हो जाओ। नहीं तो हम दारा देंगे और बड़ा घर दिखायेंगे। वहाँ चक्की पीसनी होगी। सोचते हैं, गवाददी दें, तो किस बिरते पर । मियाँ आज़ाद की तो सूरत ही नहीं देखी। और न दें, तो बह नालिश जड़े देती हैं। बस, यही ठान छी हे कि आज शाम को झप से चल खड़े द्वों । रेल को खरा सझामत रखे कि भा तो पता भी न मिद्ठे।

दूसरा--अरे मियोँ, वह तरकीब बताऊँ, जिसमें साँप मरे न छाठी हूटे।? तुम मियाँ आज़ाद से मिछ जाओ: उधर अलारक्खी से भी मिले रहो । गवादी में गोल-मोल बाते कद्दो और मूँछों पर ताब देते हुए अदालत से आओ । बचा, तुम द्वो किस भरोसे पर। चार-चार गंडे में तुमको गवाद्द मिलते हैं, जो तड़ से झूठा कऋरान या झूठी गंगा उठा लें। हमको कोई दो ही रुपये दे, करान उठवा ले। जो चाहे कददवा ले। फिर वाहदी द्वो खासे दस मिलते हैं, दस ! तुम्हें झुठ-सच से मतलब ! सच वही है, जिसमें कुछ दवाथ लगे । भई, यह तो कलूजुग है। इसमें सव बोलना हराम है। और बो कुत्ते ने काट हो, तो सच ही बोलिए ।

पहला--हज़रत सुनिए, सच फिर सच है, और झूठ फिर झूठ | इतना याद रखिएगा।

दूसरा--अबे जा, लाया वहाँ से शृठ फिर झूठ है। अरे नादान, इस जमाने में झूठ ही सच है। एक जा सा झ्ृठ्ध बोलने में दस चेहरेशाही आये गये द्वोते हैं। ज़रा छान दिला दी, और दस रुपये इज़म | दस रुपये कुछ थोड़े नहीं होते । हमें किसी से तुम दो गंडे ही रिलवा दो । देखो, इलफ़ उठा लेते हैं या नहीं ।

आजाद--क्यों मई, और जो अपनी बात से फिर जाय, तो फिर कैसी हो | औरत की बात का एतत्नार क्या ! बेहतर है कि अलारक वी से स्टाम्प के काराज़ पर लिखता लो ।

पदला--वल्ाह, क्या सूसी हे ।

दूसरा--कैसा स्टाम्प जी ! हम क्या जानें क्या चीज़ है, बातें कर रदे हैं, आए आये बहाँ से स्टाम्प पर लिखबा लो | क्या दम कोई चोर हैं !

दोनों मबकूरियों ने उपले जछाये और खाना प्रकाने छगे। आज्ञाद ने देखा, भागने का अच्छा मौका हैं। दोनों की आँख बचा कर चल दिये, चट से स्टेशन पर जा कर टिकट ले ढिया और एक दर्ज में जा बेठे । दो-तीन स्टेशनों के बाद रेल एक बड़े स्टेशन पर ठद्दरी | मियोँ आज्ाद ने असब्राब का बग्ब्ी पर झादा और चल खड़े हुए । खट से सराय में दाखिल । एक कोठरी में जा डटे और. बिछौना त्रिछा, खूब, रूहरा-लहरा कर गाने लगे--- बहशत अर्यों हे खाक से मुझ खाकसार की,

भड़के दिरन भी सूँधघके मिट्टी मजार की | एकाएक एक शाह साहब फ़ाल्सई तहमत बाँबे, शरबती का

केसरिया कुरता पहने, माँग निकाले, आँखों में सुरमा लगाये, एक जवान, चंचछ हसीन औरत के साथ आ कर आज़ाद की चारपाई पर डट गये और बोले--बाबा, हमारा नाम क़रमी शाह है। हसीनों पर जान देना हमारा ख़ास काम है। इस बक्त आपने जो यह शेर पढ़ा, तो तबीयत फड़क गयी। मगर बिना शराब के गाने का लुत्फ़ कहाँ? शौक हो, तो कादूँ प्याछा और बोतल, खूब रंग जमे और सरूर गठे ।

आज़ाद-- मैं तो तौबा कर चुका हूँ ।

शाह जी--बच्चा, तौबा केसी ! याद रख, तौबा तोइने के लिए और क़सम खाने के लिए है |

यह कह कर शाह जी ने झोली से सौंफ की विलायती मीठी शराब निकाढी और

बोले--- सब्ज़ बोतल में लाल-छाल शराब; स्रेर ईमान का खुदा द्वाफ़िज । शाह जी मेकदे में बैठे हैं, इस मुसलमान का खदा द्वाफ़िज |

यह कह कर उस जवान औरत की तरफ देख कर शराब को प्बाले में दालने का इशारा किया । नाजनीन एक अदा से आकर आज़ाद की चारपाई पर डट गयी और शराब का का प्याला भरने लगी। भटियारी ने जो यह द्वाल देखा, तो बिजली की तरह चमकती हुई आयी और कड़क कर बोली--ऐ. वाद मिर्यों, अठारइ-अठारह संडों को ले कर खटिया पर बेठते हो, और जो पाटी खट से टूट जाय, तो किसके माये ! ऐसे मुसाफ़िर भी नहीं देखे । एक तो ख़द ही दुबले-पतले हैं, दूसरे दस-दस को ले कर बैठते हैं । ले चारपाई खाली कीजिए, हम ऐसे किराये से बाज़ आये ! आज़ाद की तो भठियारियों के नाम से रूद्द कॉपती थी, चुपके से चारपाई खाली करं दी और जमीन पर दरी ब्िछवा कर आ बैंठे। नाज़नीन ने प्याला आज़ाद की तरफ़ बढ़ाया। पहले तो बहुत नहीं-नहीं करते रहे, लेकिन जब उसने क्रसमें खिला दीं, तो मजबूर द्वो कर प्याला लिया और चढ़ा गये। दौर चलने लगा | वह भर-मरके जाम पिछाती जाती थी और आज़ाद के जिस्म में नयी जान आती जाती थी। अब तो वह मज्ले में आ कर खुछ खेले, खून पी। "मुफ्त की शराब क्राज़ी को भी हलाल दै।? यहाँ तक कि आँखें झपकने लगीं, जबान लडखड़ाने लगी। बहकी-बहकी बातें करने छगे और आख़िर नशे में चूर हो कर घड़ से गिरे । शाह जी तो इस घात में आये ही थे, क्षपाक से कपड़े बाँधे, जमा-जया ली और चलता धंघा किया। औरत भी उनके साथ-साथ लंबी हुई। मिर्यों आज़ाद रात भर बेहोश पढ़े रहे | तड़के आँख खुली, तो हाल पतला । न वह शाह साइंत हैं, न वह औरत, न दरी। जमीन पर पढ़े लोट रहे हैं। प्यास के मारे गले में काँटे पड़े जाते हैं। उठे, तो लड़खड़ा कर गिर पड़े, फिर उठे, फिर मुँह के बल गिरे । बारे बढ़ी मुश्किल से खड़े हुए, पानी छा कर मुँह-द्वाथ घोये और खूब पेट भर कर पानी पिया, तो दिछ को तसकीन हुई । एकाएक चारपाई पर निंगाह पड़ी । देखा सिरहाने एक खत रखा हुआ है। खोल कर पढा-- (क्यों बचा | और पियो | अब वियोगे, तो जियोगे भी नहीं | कितने बड़े पियकड हो, बोतल की बोतल मुँद्द से लगा ली। अब अयनी क्रिश्मत को रोओ । धत् तेरे की ! क्या मजे से माझक़ के पास बैठे हुए गठ-गट उड़ा रहे थे | गठरी धूम गयी न ! भई, हमारी खातिर से एक जाम तो लो | कद्दो, तो उसी के हाथ भेज | ले, अच हम जताये देते हैं, खबरदार, मुसाफ़िर का एतबार न करना, और सफ़र में तो किसी पर भरोसा रखना दी नहीं । देखो, आखिर हम ले-दे कर चल दिये। उम्र भर सफ़र किया मगर आदमी न बने ।!

बह खत पढ़ कर मिर्यों आजाद पर सेकड़ों घड़े पड़ गये । बहुत कुछ गुल-गपाड़ा मचाया, सराय मर को सिर पर उठाया, भठियारे को रो-चार चपते लगायीं, मगर माल न मिला, न मिला । लोगों ने सलाह दी कि जाओ, थाने पर रपट छिखाओ | गिरते-पड़ते थाने में पहुँचे, तो क्या देखते हैं, थानेदार साहब बैंटे दँक रहे हैं-- मैंने फ्लॉ गाँव में अद्ठा रद्द डाकुओं से मुक़ाविला किया और चोतीस वस्स की चोरी बरामद की। सिपाही हू में हाँ मिलाते और भरें देते जाते थे कि आप ऐसे और आप वैप्े, और आप डबल पैसे | इतने में आजाद पहुँचे | सछाम-बंदगी हुई ।

थानेदार--कहि ए, मिजाज कैसे हैं !

आज्ञाइ- मिज्ञाज फिर पूछ लेना, अब गठरी दिलवाओ उस्ताद जी !

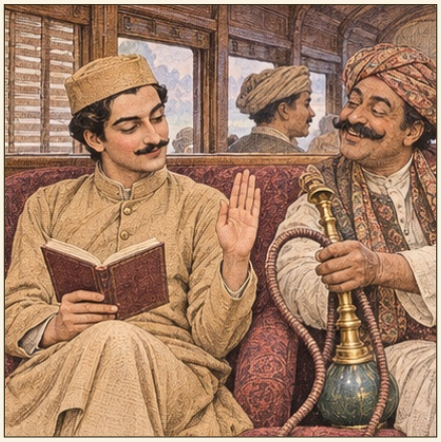
थानेदार--उस्तादजी किस भक्ुए का नाम है, और गठरी कैसी १ आप भंग तो नहीं पी गये ?

आजाद--ज़ा जवान सँभाल कर बातें कीजिएगा । में टंदा आदमी हूँ।

थात्रेदार--अच्छे-अच्छ टेदों को तो हमने सोथा बनाया, आप हैं क्रिसी खेत की मूली ! कोई है ! वह हुलिया तो मिलाओ, हम तो इन्हें देग्वते धो पहचान गये |

जञानांसह ने हुलिया जो मिलाया, तो आल का भो फ़के नहीं ! पकड़ लिये गये हवालात मं हो गये | मगर एक ही छ2 हुए आदमी थे | कानिस्टिवल को वह भर दिये, बातों-बातों में दोस्ती पैदा कर ली कि वह भी उनकी दम्म भरने छूगा । अब उसे फिक हुई कि इनको हवालात से टहछा दे | आखिर रात को पहरेदार की आँख बचा कर हवालात का दरवाज़ा खोल दिया । आजाद चुपके से छिसक गये । दायें-बायें देखते दबे-पाँव जाने लगे | उत आहट हुई, और इनके कान छड़े हुए। बारे खुदा-बू शा करके ग़सस्ता कया | सराय में पहुँचे और भठियारी को किराया ई कर स्टेशन पर जा पहुँचे ।

आमपुर या ख़रबूजानगर?



०१

डिब्बे में पेचवान

आज़ाद नाविल पढ़ रहे थे। पीछे से हुक्के का न्योता आया। उन्होंने पूछा, रेल में आग लग गई तो?



०२

क्या नाम दें?

स्टेशन पर आम और ख़रबूज़ों की टोकरियाँ ही टोकरियाँ थीं। आज़ाद बोले, “आमपुर है या ख़रबूजानगर!”



०३

आमों की गिनती

एक मुसाफ़िर दाढ़ी के हिसाब से आम गिनते थे। मतलब? खाते-खाते गुठलियों और छिलकों का ढेर दाढ़ी तक पहुँच जाए!

HINDI TEXT

प्रसंग २१

मियाँ आजाद रेल पर बैठ कर नाविल पढ़ रहे थे कि एक साहब ने पूछा-- जनाब, दो-एक दम लगाइए,, तो पेचवान हाज़िर है। वल्ल'इ, वह पुआधार पिछाऊँ कि दिल फड़क उठे । मगर याद रखिए, दो दम से ज़्यादा की सनद नहीं | ऐसा न द्वो, आप भैसिया-जोंक दो जायें ।

आज़ाद ने पीछे फिर कर देखा, तो एक बिगड़े-दिल मज़े से बैठे हुक़का पी रहे हैं। बोले, यद कया अंपेर है भाई ! आप रेल ही पर गुड़गुड़ाने छगे; और हुक़का भी नहीं, पेचबान । जो कहीं आग लग जाय, तो !:

बिगड़े दिलड--और जो रेल ही टकरा जाय, तो ! आसमान ही फट पड़े, तो ! इस “तो? का तो जवाब ही नहीं है | ले, पीजिएगा, या बातें बनाइटगा !

आजाद- जी, मुझे इसका शौक़ नहीं है |

यह कह कर फिर नाविल पढने लगे | थोड़ी देश के बाद एक स्टेशन पर रेल ठइटरी, तो खरबूज़े और आम पटे हुए थे | खैंचियाँ की खैंविया भरी रखी थीं। बोढे- क्यों मई, स्टेशन है या आम की दुकान? या खरबूजे की खान ! आम-पुर है या खरबूजानगर !

एक मुसाफ़िर बोले--अजी दज़रत, नज़र न लगाइए । अब की फ़सल तो खा लेने दीजिए | इसी पर तो ज़िंदगी का दार-मदार है। खेत में बेल बढ़ी और यहाँ कच्चे घड़े की चद्दी । आम बाजार में आये और ई जानिब वौराये। आम और खरबूजे पर उधार खाये बैठे हैं| कपड़े बेच खागैं, बरतन नखास में पटील छाये, बदन पर लता न रहे, चूद्दे पर तवा न रहे, उधार लें, छुथना तक गिरवी रखें, बगड़ा करें, झगड़ा कर, मगर ख़रबूजे पर छुरी ज़रूर चले। तड़का हुआ, चाकू ह्वाथ में लिया और खरबूज़े की टोह में चला | बाज़ार है कि मद्क रद्दा है, खरीदार हैं कि टूटे पड़ते हैं । रसीछी खटकिन जवानी की 3:ग में अच्छे-अच्छों को डॉट बताती है । मियोँ, अछग रहो, खैंची पर न गिरे पड़ो । बस, दूर ही से भाव-ताव करो । लेना एक न देना दो, मुफ़्त का झंझट | ई जानिब ने एक तराशा, वूसरा तगाशा, तीसरा तराशा, खूत्र चखे | आँख चूकी, तो दो-चार फॉ्के मुँह में दबायीं और चलते-फिरते नज़र आये | आदमी वया, बंदर हो गये । उधर खरबूज़े गये और आम की फ़सू आयी, मैंदद-माँगी मुराद पायी | जिधर देखिए, ढेर के ढेर चुने हैं। यहाँ सनक सवार हो गयी । देखा और झप से उठाया; तराशा और खाया। माल-असच्ात्र के कूढ़े किये और बरेगिनती डिये | खाने बैठे, तो दो दादी सा गये चार दादी खा गये ।

आनबाद--यह् दादी खाने के क्या माने ?

मुसाफ़िर-- अजी इज़रत, आम इतने खाये कि गुठढी और छिलके दादी तक

पहुँचे ।

के मुसाफ़िर वद डींग दाँक ही रहे ये कि रेल ठहरी और एक चपरासी ने आकर पूछा--फर्कों आदमी कहाँ है !

आजाद---इस कमरे में इस नाम का कोई आदमी नहीं है ।

मुसाफ़ि'र ने चपरासी की सूरत देखी; तो चादर से मुँह छढपेट कर खिढ़की की दूसरी तरफ झाँकने छगे। चपरासी दूसरे दर्ज में चला गया ।

आज़ाद--उस्ताद, तुमने मुँह जो छिपाया, तो मुझे शक होता है कि कुछ दाल में काला जरूर है । भई, और किसी से न कद्दो, यारों से तो न छिपाओ ।

मुसाफ़िर---मुँह क्यों छिपाऊँ जनातन्र, क्या किसी का क़र्ज खाया है, या माल मारा है, या कहीं खून करके आये हैं!

आज़ाद--आप बहुत तोखे हुजिएगा, तो बरवा द्वी दूँगा । ले बस, कचा चिद्ठा कह सुनाओ, वरना में पुकारता हूँ फिर ।

मुसाफ़िर--अरे, नहों-नहीं ऐसा राज़ब भी न करना | साफ़साफ़ बता दें ! इमने अन्रकी फ़सल में खरबूजे और आम खूब छक कर चस्तरें, मगर टका कसम को पास नहीं । पूछो, छायें किसके घर से ! यहाँ पहले तो कज लिया, फिर एक दोस्त का मकान अपने नाम से पटील डाछा । अब न/लिश हुई है, सो हम भागे जाते हैं ।

आजाद--ऐसे आम खाने पर लानत ! केसे नादान द्वो !

मुसाफ़िर-देखिए, नादान-वादान न बनाइएगा । वरना बुरी ठहरेगी !

आज्ञाद--अच्छा बुलाऊँ चपरासी को १

मुसाफ़िर--जनाब, दस गालियाँ दे लीलिए, मगर जान तो छोड़ दीजिए ।

इतने में एक मुसाफ़िर ने कई दर्ज फाँदे, यद उचका, यह आया. यह झपटा और धम से मियाँ आजाद के पास हो रहा ।

मुसाफ़िर--गरीबपरवर |

आजाद -किससे कहते दो ! हम ग़रीबपरवर नहीं अमारपरवर हैं; ग़रीबपरवर हमारे दुश्मन हों ।

मुसाफ़िर--अच्छा साइबर, आप अमोर के बाप-परवर, दादा-परवर सद्दी । इमारा आपसे एक सवाल है |

आजाद---सवाल स्कूल के लड़कों से कोजिए, या वकाछत के उम्मेदवारों से ।

मुसाफ़िर---दाता, ज़रा सुनो तो ।

आजाद--दाता भमंडारी को कहते हैं। दाता! कहीं ओर रहते होंगे ।

मुसाफ़िर--एक रुपया दिलवाओ, तो इज़ार दुआएँ दूँ ।

आज्ञाद--दुआ के तो हम कायल ही नहीं।

मुसाफ़िर--तों फिर गाशियाँ सुनाऊँ ९

आजाद--गालियाँ दो, तो बत्तीसी पेट में हो ।

मुसाफ़िर--अरे ग़ज़ब, लो स्टेशन करीब आ गया। अब बेइज्जत होंगे।

आजाद+-यह क्यों |

मुसाफ़िर--क्ों क्या, टिकट पास नहीं, घर से दो रुपये के कर चले थे, रास्ते में लँगड़े आम दिखायी दिये। राल टपक पड़ी । आव देखा न ताव, दो रुपये टेंट से निकाले ओर आम पर छुरी तेज़ की । अब गिरद में कौड़ी नहीं, 'पास न छत्ता, पान खायें अलबतता ।!

आजाद--वाह रे पेटू | मला बहाँ तक आये क्मोंकर !

मुसाफ़िर-इसकी न पूछिए | यहाँ सैकड़ों ही अल्सेटें बाद हैं।

इतने में रेढ स्टेशन पर आ पहुँची | टिकट-बाबू की काछी-काली टोपी और सफ़ेद चमकती हुई खोपड़ी नज़र आयी | टिकट | टिकट | टिकट निकालो | मियाँ आज़ाद तो टिकट देकर लंबे हुए; बाबू ने इनसे टिकट माँगा, तो छगे बरालें झाँकने । वेल, तुम्हारा टिकट कहाँ !

मुसाफ़िर--बाबू जी, हम पर तो अब्च की साल टिकस-विकस नहीं बँधा |

बाबू -यू फूल | तुम बेटिकंट के चलता है उल्लू |

मुसाफ़िर--क्या आदमी भी उल्लू दोते हैं? इधर तो देखने में नहीं आगा, शायद आपके बंगाल में होता हो ।

टिकट-बाबू ने कानिष्टिबिल को बुला कर इनको हवाढात भिजवाया। आम खाने का मज़ा मिला, मार और गालियाँ खारयीं, सो घाते में ।

घटाटोप अँधेरा छाया है, काछा मतवाला बादल झ्ूम्न-गम कर पूरब की तरफ़ से आया है | वह घनेरी घटा कि हाथ मारा न सूझे । अँधेरे ने कुछ ऐसी हवा बाँधी कि चाँद का चिराग गुल हो गया । यह रात है कि सियहकारों का दिल ह इर एक आदमी जरीब टेकता चल रहा है, मगर कलेजा दद्दल रहा है कि कहीं ठोकर न खायें, कहों मुँह के बल जमीन पर न लक जायें। मियाँ आजाद स्टेशन से चले, तो सराय का पता पूछने छगे। एकाएक किसी आदमी से घिर टकरा गया। वह बोला--अंधा हुआ है क्या ! रास्ता बचा के चल, पतंग रखे हुए हैं, कहीं फट न जायें ।

आज़ाद- ऐं, रास्ते में पतंग केसे ! अच्छी बेपर की उडायी |

पतंगबाज़--भई वल्लाह, क्या-क्या जिंगड़े-दिलों से पाला पड़ जाता है | हम तो नरमी से कददते हैं कि मियाँ जरी दबा कर जाओ, ओर आप तीखे हुए जाते हैं ।

आजाद - अरे नादान, यहाँ हाथ-मारा यूझता ही नहीं, पतंग किस भक्कुट को सूझेंगे । द पतंगबाज--क्या रतोंधी आती है !

आजाद--क्या पतंग बेचने जा रहे हो !

पतंगत्र।ज़--अजी, पतंग बेचें हमारे दुब्मन | हम ख़द घर के अमीर हैं। यहाँ से चार कोस पर एक क़स्त्रा है, वहाँ के रईस हमारे लैंगोटिये यार हैं! उनसे हमने पतंगों का मैदान बदा था । हम अपने यारों के साथ बारहदरी के कोठे पर ये और वह अपने दीवानखाने की छत पर । कोई सात बजे से इधर भी कनक्रब्बे छपके, उधर भी बदे । खूब लमडोरे लड़े | पाँच रुपये फ़ी पेच बदा था। यार, एक पतंग खूब लड़। ।

हमारा माँगदार बढ़ा था और उधर का गोल-दुपन्ना । दस-बारह मिनट दाँव घात के बाद पेच पड़ गये | पहले तो हमारे कन्ने नथ गये, हाथों के तोते उड़ गये; समझे, अब कटे और अब्न कटे; मगर वाह रे उस्ताद, ऐसे कन्ने छुड़ाये कि वाह जी वाह ! फिर पेच लड़ गये। पंसेरियों डोर पिछा दी, कनकव्वा आसमान से जा लगा। जो कोई दम ओर ठहरत तो वहीं जल-मुन कर खाक हो जाता | उतने में हमने ग़ोता देकर एक भबका जो दिया, तो वह काटा । अब कोई कहता है कि हत्ये पर से उखड़ गया; कोई कहता है, डोर उलझ गयी थी। एक कनकव्वे से इमने कोई नौ दस काटे। मगर उनकी तरफ़ कोई उस्ताद आ गया--उसने खींचके वह द्वाथ दिखाये कि खुदा की पनाह [| .हाथ ही हूटे मरदूद के! छक्के छुड़ा दिये। कभी सड़-सड़ करता हुआ नीचे से खींच गया | कभी ऊपर से पतंग पर छाप बैठा । आखिर मैंने हिसाब जो लगाया, तो पचास रुपये के पेटे में आ गया । मगर यहाँ टका पास नहीं | हमने भी एक माल तक लिया है, धर के सोने के कड़े किसी के द्वाथ पटीलेंगे, कोई दस तोले के होंगे, चुपके से उड़ा दूँगा, किसी को कानों-कान ख़बर भी न होगी ।

आजाद---आपके वालिद क्या पेशा करते हैं १

पतंगब्राज--जर्मीदार हैं । मगर मुझे जप्तींदारी से नफ़र्त है | जर्मींदार की सूरत से नफ़रत है, इस पेशे के नाम से नप्नरत है ! शरीफ़ आदमी और लद्ठ लिये हुए मेड़-मेड़ घूम रहे हैं। हमसे यह न होगा । हम कोई मज़दूरे तो हैं नह्दीं | यह गैंवारों ही को मुत्ारक रहे ।

आज़ाद-हुजूर ने ताढीम कहाँ तक पायी है ? आप तो लंदन के अजायबखाने में रखने छायक हैं ।

पतंगबाज--यहीं के तहसीछी स्कूल में कुछ दिन तक घास छीली है।

आज़ाद- क्या घप्तियारा बनने का शोक़ चर्राया था !

पतंगबाजञ--जना त्र, कोई छह-सात बरस पढ़े; मगर गंडेदार पढ़ाई, एक दिन द्वाजिर तो दस दिन नागा । पहले दर्ज का इम्तिहान दिया, मगर लटक गये। अब्बाजान ने कहा, अब हम तुम्हें नहीं पढ़ायेंगे। खेर, इस झंझट से छुट्टी पायी तो पेशकार साहब के लड़के से दोस्ती बदायी | तत्र तक हम निरे जंगली ही थे । हद यह कि हुकक्ा पीना तक नहीं जानते थे । तो वजह क्या १ अच्छी सोहत्रत में कभी बैठे ही न थे। छोटे मिज़ा बेचारे ने हमे हुक्क़ा पीना सिखाया। फिर तो उनके साथ चंद के छींटे उड़ने लगे | पहले आप मुझे देखते तो कद्दते, कब्र में एक पाँव लटकाये बैठा है। बदन में गोइत का नाम नहीं, दड्डी-हड्डी गिन छीजिए । जब से छोटे मिर्ज की सोदबत में ताड़ी पीने लगा, तब से जरा हरा हूँ | पहले हम निरे गात्रदी ही थे | यह पतंग लड़ाना तो अब आया है । मगर अबकी पचास के पेटे में आ गये | छोटे मिर्जा से हमने तदबीर पूछी, तो वल्लाइ, तड़ से बतलाया कि जत्र बहन या भावज या बीबी की आँख चूके, तो कोई सोने की अदद साफ़ उड़ा दो। भई, जिला-स्बूल में पदता, तो ऐसी अच्छी सोददत्रत.

न मिलती ।

आज़ाद-- वाह, आप तो खराद पर चढ़ गये, 'सब गुन पूरे, तुम्हें कौन कददे लैंड्रे !!

पतंगबाज--आप यहाँ कहाँ ठहरेंगे ? चलिए, इस वक्त ग़रीबखाने ही पर खाना खाइए,; सराय में तो तकलीफ़ होगी | हाँ, जो कोई ओर बात हो, तो क्या मुज़ायक़ा, (मुसकिरा कर) सच कहना उस्ताद,

कुछ लसरका है १

आजाद- मिर्यों, यहाँ दिल ही नहीं है पास, मुहब्बत करेंगे कया ! चलिए, आप दी के यहाँ मेहमान हों--यहाँ तो बेफ़िक्री के हाथ बिक गये हैं | मगर उस्ताद, इतना थाद रहे कि बहुत तकलीफ़ न कीजिएगा ।

पतंगबाज्--वल्ण है, यह तो वही मसल हुई कि बस, एक दस सेर का पुलाव तो बनवाइएगा, मगर तकब्छफ़ न कीजिएगा | मानता हूँ आपको |

आज्ञाद और पतंगत्राज़ इक्के पर बैठे । इक्का हवा से बातें करता चछा, तो खट से मकान पर दाखिल। अंदर से बाहर तक ख़बर हो गयी कि मैंझले मियाँ आ गये | मिर्यों आज़ाद ओर वह दोनों उतरे । इतने में एक लौंडी अन्दर से आकर बोली>-चलिए, दड़े साहब ने आपको याद किया है |

पतंगबाज--ऐ, है, नाक में दम कर दिया, आते देर नहीं हुई और बुलाने लगे । चलो, आते हैं । आपके छिए हुवक़ा भर लाओ। हज़रत, कहिए तो जरी वालिद से मिल आजऊँ ! गाना-वाना सुनिए, तो बुलाऊँ किसी को ! इधर लौंडी अन्दर पहुँची, तो बड़े मियाँ से बोली--उनके पास तो उनके कोई दोस्त मसनद-तकिया लगाये बैठे हैं ।

मिर्यो--3नके दोस्तों की न कहो । शहर भर के बदमाश, चोर-मकार, झटठों के सरदार उनके लेंगोटिये यार हैं। भलेमानस से मिलते-जुलते तो उन्हें देखा ही नहीं ।

लोंडी--नहीं मियां, सकल सूरत से तो शरीफ मलेमानुस मादूम द्वोते हैं ।

खेर, रात को आज्ञाद और मँझले मियाँ ने मीटी नींद के मज़े उठाये, सुबह को हवाली-मवाली जमा हुए ।

एक- हुजूर, कछ तो खूब-खूब पंच लड़े, और हवा भी अच्छी थी ।

पतंगबाज-पेंच क्या लड़े, पचास के माथे गयी | खैर, इसका तो यहाँ ग़म नहीं, मगर किरकिरी बड़ी हुई ।

दूसरा--वाह हुजूर, किरडिरी की एक ही कही। क़सम ख़दा की, वह छमडोरा पेंच निकाला कि देखनेवाले दंग रह गये। जमाना मर यही कहता था कि भई, पेंच क्या काया, कमाल किया | कुछ इनाम दिलवाइए, खुदाबंद ! आपके कदमों की कसम, आब शहर भर में उस पेंच की धूम है। चाडीस-पचास रुपयों को भी कोई इक्कीकत हे !

शाम के वक़्त आजाद और मियाँ पतंगबाज बैंटे गप-शप कर रहे ये कि एक मौलबोी साइब लटपटी दस्तार खोपड़ी पर जमाये, कानी आँख को उसके नीचे छिपाये, दूसरी में नरेली का सुरमा लगाये कमरे में आये । उन्होंने अलेकसलेम के बाद जेब से एक इश्क्ति-हार निकाल कर आज़ाद के हाथ में रिया । आज़ाद ने इश्तिदार पढ़ा, तो फड़क गये। एक मुशायरा होनेवाछा था. दूर-दूर से शायर बुलाये गये थे । तरह का मिसरा था-- “हप्रसे उस शोख ने ऐथयारी की” । मोलवी साहब तो उलटे पाँव लंबे हुए, यहाँ मुशायरे की तारीख जो देखते हैं, तो इकतीस फ़रवरी लिखी हुई है | हेरत हुई कि फ़रवरी तो अद्_ाइस और कभी उनतीस ही दिन का मद्दिना होता है, यह इकतीस फ़रवरी कोत सी तारीख है ! बारे मालूम हुआ कि इसी वक़्त मुशायरा था| खेर, दोनों आदमी बड़े शौक़ से पता पूछते हुए गुलाबी बारहदरी में दाखिल हुए । वहाँ

बढ़ी रौनक़ थी। नई-नई बजा, नये-नये फ़ेशन के लोग जमा हैं। किसी का रिमाग़ ही नहीं मिलता; जिसे देखो, तानाशाह बन्ना बैठा है, दुनिया की बादशाहत को जूती की नोक पर मारता है | शायरी के शौकीन उमड़े चले आते हैं। कहीं तिल रखने की जगद् नहीं। जब्र रात भीगी और चाँदनी खूब निखरी, तो मुशायरा शुरू हुआ । शायरों ने चहकना शुरू किया | मजलिस के छोग एक-एक शेर पर इतना चीखे-चिल्लाये कि हॉठ और गले सूख कर काँटा हो गये । ओहो हो-हो, आह्वा हा-हा, वाह-वाह सुभान अल्लाह के दॉगरे बरस रहे थे। शायर ने पूरा शेर पढ़ा भी नहीं कि यार लोग ले उड़े ! वाह इज़रत, क्यों न हो | क्रमम खुदा की ! क़छम ताड दिया ! वल्लाइ, आज इस लखनऊ में आपका कोई सानी नहीं ! एक शायर ने यह ग़ज़ल पढ़ी-- हमको देखा, तो वह हंस देते हैं ; आँख छिपती द्वी नहीं यारी की | महफ़िल के लोगों ने पूरा शेर तो सुना नहीं, यारी को गाड़ी सुन लिया। गाड़ी की, वाह-वाह, क्या शेर फ़रमाया, ग़ाड़ी की | अत्र जिसे देखिए, गुरू मचा रहा है-- गाड़ी की, गाड़ी की । मगर गुछगपाड़े में सुनता कौन है। शायर बेचारा चीखता हे कि हजरत, गाड़ी की नहीं, यारी की; पर यार लोग अपना द्वी राग अलापे जाते हैं । तब तो मिर्यों आज़ाद ने झटछा कर कहा--साइब्रो, अगाड़ी न पिछाड़ी, चौपदिया न पालकी-गाड़ी, खुदा के वास्ते पहले शेर तो सुन लो, फिर तारीफ़ के पुल बाँधो । गाडी की नहीं, यारी की । आँख छिपती ही नहीं यारी की । दुसरे शायर ने यह शेर पढा-- उम्मीद रोजे-वस्छ थी किस बदनसीब को ; क्रिस्मत उलट गयी मेरे रोज़े-सियाह की | हाजिरीन--निगाह की, सुभान-अछाह । निगाह की, हजरत, यह आप ही का हिस्सा है । शायर--निगाह नहीं, रोज़े-सियाह । निगाह से तो यहाँ कुछ माने ही न निकलेंगे । यह कद कर उन्होंने फिर उसी शेर को पढ़ा और सियाद के लफ़्ज़ पर खूब जोर दिया कि कोई साहब फिर निगाह न कह उठें। आधी रात तक हू-इक़ मचता रहा । कान-पड़ी आवाज़ न सुनायी देती थी। पड़ो-सियों की नींद हराम हो गयी । एक-एक शेर पढने की चार-चार दफ़े फ़रेमा इश हो रही है और बीस मरतबा उठा-बैठी, सलाम पर सस्यम और आदाब पर आदाब; अच्छी क्रवायद हुई | छाला ख़शवक़्दराय और मुंशी खसेदराय तीन-तीन सौ शेरों की ग़ज़लें कह लाये थे, जिनका एक शेर भी दुरुस्त नहीं। एक बजे से पढने बैठे, तो तीन बजा दिये | छोग कानों में उँगलियोँ दे रहे हैं, मगर वे किसी की नहीं सुनते ' वहाँ से मियाँ आजाद और उनके दोस्त घर आये | तड़का हो गया था | आज़ाद

तो थोडी देर सो कर उठ गये, मगर मिर्यों पतंगताज़ ने दस बजे तक की ख़बर ली।

आजाद--आज तो आप बड़े सबेरे उठे | अभी तो दस ही बजे हैं। भई, बड़े सोनेवाले हो !

पतंगबाज़-- जनाब, तड़का तो मुशायरे ही में हो गया था। जन्न आदमी सुबह को सोयेगा, तो दस बजे से पहले क्या उठेगा । और, सच तो यों है कि अभी और सोने को जी चाहता है। कुछ मुशायरे के झगड़े का भी हाल सुना १ आप तो कोई चार बजे सो रदे ये | हमने सारी दास्तान सुनी । बड़ी चख चल गयी । मौलवी बंदर और मुंशी फ़ियार में तो छकडी चलते-चलते रह्द गयी । जो मिर्यों रंगीन न हों, तो दोनों में जूती चल जाय ।

आजाद--यह वयों, किस बात पर !

पतंगबाज़-कुछ नहीं, यों ही | मैं तो समझा, अब लकड़ी चली |

आज़ाद-- तो मुशायरा क्या पाली थी ! पूछिए, शायरी को छकडी और बाँक से बया वास्ता ! क़लम का जोर दिखाना चाहिए कि हाथ का | किसी तरद्द बदर और फ़िशार में मिलाप करा दीजिए ।

पतंगबाज़--ऐ, तौबा । मिलाप, मिलाप दो चुका । बदर का यह हालछ है किब्रात की और रास्ता आ गया। और मिर्यों फ़िशार उनके भी चचा हैं। बात पीछे करते हैं, चाँटा पहले ही जमाते हैं ।

आज़ाद--आसछिर बखेडे का सबत्रब क्या १

पतंगवाज़-- सिवा हसद के और क्या कहूँ | हुआ यह कि फ़िशार ने पहले पढ़ा | इस पर मौछवी बदर बिगड़ खड़े हुए कि हमसे पहले इन्हें क्यों पढ़ने दिया गया | इनमें बया बात है। दम भी तो उस्ताद के लड़के हैं। इस पर फ़िशार बोले--अमी बच्चे हो, हिज्जे करना तो जानते नहीं । शायरी क्या जानो। कुछ दिन उस्ताद की जूतियाँ सीधी करो, तो आदमी बनो । बदर ने भारतीने उलट लों और चढद दौड़े | फ़िशार के शागिदों ने भी डंडा सीधा किया । इस पर लोगों ने दौड़ कर बीच-बचाव कर दिया ।

शाम के वक़्त मियाँ आजाद ने कद्दा-- भई, अब तो बैठे-बैठे जी धबराता हे । चलिए, जरा चार-पाँच कोस- सैर तो कर आययें। पतंगबाज़ ने चार-पाँच कोस का नाम सुना, तो घबराये | यह बेचारे महीन आदमी, आध-कोस भी चलना कठिन था, दस कदम चले और हॉफने छगे | कहीं गये मी तो टॉघन पर। भला दस मील कोन जाता | बोले--हज़रत, मैं इस सैर से बाज़ आया । आपको तो डाक के हरकारों में नौकरी करनी चाहिए । मुझे क्या कुत्ते ने काटा है कि बेसबब्र पैंचकोसी चक्कर लगाऊँ और आदमी से ऊँट बन जाऊँ ! आप जाते हैं, तो जाइए, मगर अह्द आहएगा। सच कहते हैं, लंब्रा आदमी अक़ल का दुश्मन होता है। यह गप उड़ाने का वक्त है, या जंगल में घूमने का !

एक मुसाहिब-आप बजा फ़रमाते हैं, मलेमानसों को कभी जंगहू की धुन समायी ही नहीं। और, हुजर के यहाँ धोड़ा-बग्घी सब्र सवारियाँ मोजूर हैं। जूतियाँ चटखाते हुए आपके दुश्मन चलें।

आज़ाद - जनाब, यह नज़ाकत नहीं है, इसको तपेदेक़ कहते हैं। आप पाँच कीस न चलिए, दो ही कोस चलिए, आध ही कोस चढिए |

पतंगबाज--नहीं जनाब, माफ़ फ़रमाइए |

आज्जाद लंबे-लंबे ढग बढ़ाते पश्चिम की तरफ़ खाना डुए ।

HINDI TEXT

प्रसंग २२

मि्याँ आजाद के पाँव में तो सनीचर था। दो दिन कहीं टिक जायें तो तलवे खुजलाने लगें। पतंगब्ाज़ के यहाँ चार-पाँच दिन जो जम गये, तो तत्रीयत घबराने लगी लखनऊ की याद आयी । सोचे, अन्न वहाँ सब मामछा ठंडा हो गया होगा । बोरिया-बैंघना उठाया और शिक्वरम-गाड़ी की तरफ चले | रेल पर बहुत चढ़ चुके थे, अब की शिक्रम पर चढ़ने का शौक़ हुआ | पूछते-पूछते वहाँ पहुँते। डेट रुपये किराया तय हुआ, एक रुपया बयाना दिया | मादूम हुआ, सात बजे गाड़ी छूट जायगी, आप सादे-छद बजे आ जाश्ए। आज़ाद ने असब्ात्र तो वहाँ रखा, अभी तीन ही बजे थे, पतंगबत्नाज़ के यहाँ आ कर ग़प-शप करने छगे । बातों-आातों में पौने सात बत्र गये । शिक्रम की याद आयी, बचा-खुचा असत्राब मज़दूर के सिर पर लांद कर लदे-फँदे धर से चल खड़े हुए । राह में लंबे-लंबे डग धरते, मन्नदूरों को ललकारते चले आते हैं कि तेज चलो, क्रम जल्द उठाओ। जहाँ सन्नाटा देखा, वहाँ थोड़ी दूर दौड़ने भी छगे कि वक़्त पर पहुँचें; ऐसा न द्वो कि गाड़ी छूट जाय | वहाँ ठीक सात बजे पहुँचे, तो सन्नाटा पड़ा हुआ। आदमी न आदमज़ांद | पुकारने छगे, अरे प्रियाँ चपरासी, मुंशी जी, अजी मुंशी जी! क्या साँप दैंध गया ! बड़ी देर के बाद एक चपरासी निकला | कहिए, क्या डाक कीजिएगा !

आजाद--और सुनिए | डाक कीजिएगा की एक ही कही | मियोँ, बयाने का रुपया भी दे चुके ।

चपरासी--अच्छा, तो इस घास पर तिस्तर जमराइए, ठंडी-ठंडी हवा खाहए, या ज़रा बाज़ार फी सैर कर आइए ।

आजाद- ऐं, सैर केसी ! डाक छूटेगी आखिर किस बज़्त!

चपरासी-- क्या मादूम, देखिए, मुंशी जी से पूछ ।

आजाद ने मुंशी जी के पास था कर कहा--अरे साहब, सात बजे बुलाया था, जिसके सादे सात हो गये ! अब और कब तक बेठा रहूँ !

मुंशी जी--जनाब, आज तो आप ही आप हैं, और कोई मुसाफ़िर ही नहीं । एक आदमी के लिए चाढान थोड़े छोडेंगे ।

आकब्ाद--कहीं इस भरोसे. न रहिएगा ! बयाना दे चुका हूँ |

मुंशी--भच्छा, तो ठहरिए |

आठ बज़ गये, नी बज गये, दस बज गये, कोई ग्यारह बजे तीन मुसाफ़िर आये। तब था कर शिक्रम चढी। कोई आध कोम तक तो दोनों धोड़े तेजी के साथ गये, फिर ध्ुरंग ओल गया । यद्ध गिरा, वह गिरा। कोचवान ने कोड़े पर कोड़े जमाना शुरू किया: पर घोड़े ने भी ठात ली कि ददँगा ही नहीं। कोचमैन, धतियारा, बारगीर, सत्र के सब्र ठोक रहे ये; मगर वह खड़ा हाँफता है। बारे बड़ी मुश्किल से फूँक-फूँक कर क़रम रखता हुआ दूसरी चौकी तक आया |

दूसरी चौकी में एक टंदेटू दुबछा-पतला, दूसरा घोड़ा मरा हुआ सा था; हड्डियाँ-हड्डियाँ गिन लीजिए । यह पहले ह्वी से रंग छाये। कोचमैन ने खूब कोड़े भमाये, तब कहीं चले । मगर दस कदम चले थे कि फिर दम लिया। साईस ने आँखें बंद करके रस्सी फटकारनी शुरू की । फिर दस-बीस कदम आहिस्ता-आहिस्ता बढ़े, फिर ठहर गये । खुदा-खदा करके तीसरी चौकी आयी।

तीसरी चौकी में एक दुबला-पतला मुश्की रंग का घोड़ा और दूसरा नुक़रा था। पहले ज़रा चीं-चप्पड, फिर चले । एक-आध कोस गये थे कि कीचड़ मिली, फिर तो क्रयामत का सामना था। घोड़े थान की तरफ भागते ये, कोचमैन रास थामे टिक-टिक करता जाता था, बारगीर पह्वियों पर जोर छगाते थे | मुसाफिरों को हुक्म हुआ कि उतर आइ९; ज़रा इवा खाइए | बेचारे उतरे। आध कोस तक पेदलछ चले। घोड़े क्रम-क्ाः पर मुँह मोड़ देते थे। वह चिल्ल-पों मची हुई थी कि खदा को पनाह । आध कोस के बाद हुक्म हुआ कि अपना-अपना बोझ उठाओ, गाड़ी भारी है । चलिए साहब, सबने गठरियाँ सैंभाली ! सिर पर असबात्र लादे चले आते हैं। तीन घंटे में कहीं चौकी तय हुईं, मुसाफिरों का दम टूट गया, कोचमैन और साईंस के दवाथ कोड़े मारते-मारते और पद्दियों पर ज़ोर लगाते-लगाते बेदम हो गये ।

चौथी चौकी की जोड़ी देखने में अच्छी थी । लोगों ने समझा था, तेज जायगी, मगर जमाली खरबूज़ों की तरह देखने दह्वी भर की थी। कोचवान और बारगीरों ने लाख-लाख जोर लगाया, मगर उन्होंने जरा कान तक न हिलाये, कनौती तक न बदली । बुत बने खड़े हैं, मैदान में अड़े हैं। कोई तो घास का मुद्ठा छाता है, कोई दूर से तोबड़ा दिखाता है, कोई पहिये पर जोर लगाता है, कोई ऊपर से कोड़े जमाता है। आखिर मुसाफ़िरों ने भी उतर कर ज़ोर लगाया, मगर टाँय-टाँय फिस। आखिर घोड़ों के एवज बैल जोते गये ।

पाँचवीं चौकी में आबा आदम के वक्त का एक घोड़ा आया । घोड़ा क्या, खबर था । आँखें माँग रहा था। मक्खियाँ मिन-मिन करती थीं। रात को मी मक्खियों ने इसका पीछा न छोड़ा ।

आजाद--अरे भई, अब चलो न] आदिर यहाँ क्या हो रहा है! रास्ता चलने ही से कटता है।

कोचमैन--ऐ, छो साहब, घोड़े का तो बंदोचध्त कर ले। ए.क ही घोड़ा तो इस चौकी पर है ।

आज़ाद--अबी, दूसरी तरफ भैंस जोत देना ।

एक मुसाफ़िर--या हम एक सहल तदबीर बतायें। मुवाफ़िरों से कहिए, उधर पढ़ें, बोझ अपना-अपना पिर पर छादें और और छगा कर बस्घो को एक चौड़ी तक दकेल ले जायें |

इतने में एक भठियारा अपने टट्ट को टिक-टिक करता चला आता था। कोच-वान ने पूछा -- कहो भाई, भाड़ा करते हो! जो चाद्दे सो माँगो, देंगे। नकद दाम लछो और बग्धी पर बैठ जाओ । एक चौकी तक तुम्दारे ट्टटू को बग्धी में जोतेंगे |

भटियारा--वाह, अच्छे आये ! टटुआ कभी गाड़ी में जोता भी गया है ! मुर्गी के बराबर टट्टू, और जोतने चले हैं शिक्वरम में | यों चाहे पीठ पर सवार हो लो मुदा डाकगाड़ो में केसे चलछ सकता है !

कोचमैन-- अरे भई, तुमको भाड़े से मतलब है, या तकरीर करोगे १ इम तो अपनी तरकीब से जोत लेंगे ।

आज़ाद ने भठियारे से कह्ा-रुपया टेंट में रखो और कहो, अच्छा जोतो। कुछ थक-थका कर आप ही

हार जायेंगे। रुपया तुम्हारे बाप का हो जायगा ! वह भी राजी हो गया। अब कोचमैन ने टट्टू को जोतना चाहा, मगर उसने सैकड़ों ही बार पुष्त उछाली, दुलत्तियाँ झाड़ी और गाड़ी के पास न फटका। इस पर कोचबान ने टट्ू को एक कोड़ा मारा । तब तो भठियारा आग हो गया। ऐ, बाद मियाँ, अच्छे मिले, इमने पहले ही कह दिया था हि हमारा जानवर बस्षी में न चलेगा। आपने जबरदस्वी की । अब गधे की तरह गद-गद पीयने लगे |

बह तो टट्टू को बगल में दाब लंबा हुआ, यहाँ शिक्रम मैदान में पड़ी हुई है। मुसाफ़िर जम्हाइयाँ ले रहे हैं। साइंस चिल्म पर चिलम उड़ाते हैं। सब मुसाफ़िरों ने मिल कर कसम खायी कि अब शिकंरम पर न बैठेंगे । ख़द्ा जाने, क्या गुनाह किया था कि यह मुसीबत, सही | पेटल आना इससे कह्दीं अच्छा ।

पाँचवीं चौकी के आगे पहुँचे, तो एक मुसाफ़िर ने, जिसका नाम लाला पलट था, ठरें की बोतल निकाली और लगा कुजी पर कुजी उड़ाने। मिर्यों आज्षाद का सिमाग मारे बदबू के परेशान हो गया। मज़हब से तो उन्हें कोई वास्ता न था, क्योंकि ख़दा के सिवा और किसी को मानते द्वी न थे, लेकिन बरबू ने उन्हें बेचेन कर दिया । एक दूसरे मुसाफ़िर रिसालदार थे। उनकी जान भी आज्ञात्र में थी। वह शारात्र के नाम पर लाद्दौल पढ़ते और उसकी बू से कोसों भागते थे | जन्र बहुत दिक्र हो गये, तो मियाँ आज़ाद से बोले-हज़रत, यह तो बेदत्र हुई | अनभ तो इनसे साफ़-साफ़ कह देना चाहिए कि खड़ा के वारते इस वक़्त न पीजिए । थोड़ी देर में इमकी और आपको गाछियाँ न देने लगें, तो कुछ द्वारता हूँ । ज़रा आँख रिखा दीजिए जिसमें बहुत बढ़ने न पायें ।

आज्ञाद--खुदा की क्रवम, दिमारा फटा जात; है। आप डपट कर ललकार दीजिए | न माने तो में कान गरमा दूँगा ।

रिसालदार--कहीं ऐसा ग़ज़ब न की जिएगा | पंजे झाइ कर लड़ने को तैयार हो जायगा । शराबी के मुँह छगना कोई अच्छी बात थोड़े है |

दोनों में यही बातें हो रही थीं कि लाला पलटू ने हाँक लगायी -हरे-हरे बारा में गोला बोला, पण आगे, पग पीछे । यह बेतुकी कद्द कर हाथ जो छिह्का, तो रिसालदार की दोनों टाँगों पर शराब के छींटे पड़ गये। हॉय-हाँय, बदमाश, अलग हट |! उठ जा यहाँ से | नहीं तो दूँगा एक लप्पढ़ |

पलटू-- बग्सो राम झड़ाके से; रिसाल्शर की बुढ़िया मर ग्रय्मी फाके से। हमारा बाप गधा था !

रिसालदार - चुप, खोस दूँ बाँस मह में १

पलटू--अजी, तो हँसी-हँसी में रोये क्यों देते हो! वाह, हम तो अपने बाप को बुरा कहते हैं ।

आज़ाद-- कया तुम्हारे बाप गधे थे !

पल्टू--और कोन थे ! आप ही बताइए। उमर भर डोलछी उठायी, मगर मरते दम तक न उठानी आयी |

रिसालदार - क्या कहार था !

पलट - और नहीं तो क्या चमार था, या बेलदार था ! या आपकी तरदद रिसालदार था !

आजाद -है नशे में तो क्या, बात पक्की कहता है ।

पलटू - अजी, इसमें चोरी क्या है ! हम कहार, हमारा बाप कहार |

आज़ाद - कद्दिए आपकी महरी तो खेरियत से है ।

पलटू-- चल शिक्रम, चल घोड़े, बिगुल बजे भोपू-भोंपू । सामने काँटा, दुकान गे आटा, कबडिये के यहाँ भाँठटा, रिसाछार के लगाऊँ यारा |

रिसालदार ऐसा न हो कि मैं नशा-वद्या सन्न हिरन कर दूँ। ज़बान को लगाम दे |

पल्टू--अन्ुछा सईस है ।

आज़ाद-- अबे, साईसी इल्म दरियाव है |

पलठू--तेरा सिर नाव है, तू बनडिछिव है ।

रिसालाार--कोचमेन, बग्घी ठहराओ।

पलटू--को चमेन, बग्षी चलाओ |

मियाँ आज़ाद ने देखा, रिसालदार का चेहरा मारे ग़स्से के छाल हो गया तो उन्होंने बात टाल दी और पूछा--क्यों पलछटू महराज, सच कहना तुमने तो कभी डोली नहीं उठायी ! पल्टू बोले-नहीं, कभी नदों । हों, बरतन माँजे हैं । मगर होश सैभालते ही मदरसे में पढने लगे और अब तार-धर में नौकर हैं। रिसिलदार जौ, लो, पीते हो १ रिसिल्दार के मुँह के पास कुज्जी ले जा कर कहा-पियो, पियो / इतना कहना था कि रिसालदार जल भुनके खाक हो गये, तड़ से एक चाँट रसीद किया दसरा और दिया, फिर तीन-चार और लगाये | पलट मजे से बैठे चपतें खाया किये | फिर एक क़हकद्दा लग कर बोले--अबे जा, बड़ा रिसालदार बना है। नाम बड़ा दरसन थोड़े । एक हैं भी न मरी । रिसालदारी क्या खाक करते हो! चलो, अब

तो एक कुजी पियो । एूँ फिर !

रिसालदरार--भई, इसने तो नाक में दम कर दिया। पीटते-पीटते हाथ थक गये।

फोचमैन--रिसालदार साहब, यद्द क्या गुल मच रहा है !

आजाद --बड़ी बात कि तुम जीते तो बचे | हम समझते थे कि साँप सत्र गया । यहाँ मार धाड़ भी हो गयी, तुम्हें खबर ही नहीं ।

कोचमैन--मार-धाड़ ! यह मार-धाड कैसी !

रिसालदार--देखो यह सुअर शरात्र पी रह्दा है और सबको गालियाँ देता है ! मैंने खब पीटा, फिर भी नहीं मानता ।

लटू--झूठे दो ! किसने पीटा ! कब पीटा ! यहाँ तो एक जुँ भी न मरी ।

कोचमेन--लाला, थोड़ी सी हमको भी पिलाओ।

पलट्ू और कोचमेन, दोनों कोच-बक्स पर जा बैठे और कुज्जियों का दौर चलने लगा । जब दोनों बदमस्त हुए, तो आपतत में चौलधप्पा होने लगा। इसने उसके लप्पड़ लगाया, उसने इसके एक टीप जड़ी । कोचमैन ने पलटू को टकेल दिया । पलट ने गिरते ही पाँव पक्रड़ कर घसीटा, तो कोचमैन भी धम से गिरे। दोनों चिमट गये । एक ने कूले पर लादा, दूसरा बग़छी ड्रवा | मुकका चलने लगा। कोचमैन ने झपट

के पलटू की टैंगड़ी ली, पलटू ने उसके पढ़े पकड़े । रिसालदार को ग़ास्सा आया, तो पलटू के बेभाव की चपतें लगायीं। एक, दो, तीन करके कोई पचास तक गिन गये आज़ाद ने देखा कि में खाली हूँ। उन्होंने कोचमैन को चपतियाना आुरू किया |

आज़ाद--क्यों बचा, पियोगे शरात्र ! सुअर, गाड़ी चलाता है कि शराप्र पीता है !

रिसाल्दार--तोड़ दूँ सिर, पटक दूँ बोतल सिर पर |

पलटू--तो आप क्या अकड़ रहे हैं? आपकी रिसालदारी को तो इमने देख लिया ! देखो, कोचमैन के सिर पर आधे बाल रद गये, यहाँ वाल भी न बॉका हुआ |

रिसाल्दार--बस भई अब हम हार गये |

इस झंझट में तड़का हो गया | मुसाफ़िर रात भर के जगे हुए थे, झपकियाँ लेने लगे। मालूम नहीं, कितनों चौकियाँ आयीं और गयीं | जत्र लखनऊ पहुँचे, तो दोपहर दल चुकी थी |

HINDI TEXT

प्रसंग २३

म्ियाँ आज़ाद शिकरम पर से उतरे, तो शहर को देख कर बाग़-बाग़ हो गये । लखनऊ में घूमे तो बहुत थे, पर इंस हिस्से की तरफ़ आने का कभी इत्तिफ़ाक़ न हुआ था। सड़कें साफ़, कूडे-करकट से काम नहीं, गंदगी का नाम नहीं, वहाँ एक रंगीन कोटी नजर आयी, तो आँखे। ने वदह्द तराबठ पायी कि वाह जी, वाह ! उसकी बनावट और सजावट ऐसी भायी कि सुभान-अल्लाह । चस, दिल में खुत्र ही तो गयी । रविशें दुनिया से निराली, पौदों पर वह जोबन कि आदमी बरसों धूरा करे |

मिर्यों आजाद ने एक दरे-मरे दरख्त के साये में आसन ज्माया | टदनियाँ इवा के झोंकों से झूमती थीं, मेवे के ब्रोञ् से ज़मीन को बार-बार चूमती थीं। आजाद ठंडे-ठंडे हमा के झोंकों का मज़ा ले रहे थे कि एक मुसाफ़िर उधर से गुजारा | भाजाद ने पूछा--क्यों साहब, इस कोठी में कौन रईस रद्दता है !

मुसाफ़ि-- रईस नहीं, एक रईसा रहती हैं ! बड़ी मालदार हैं। रात को रोज बजरे पर दरिया की सैर को निकलती हैं। उनकी दोनों लड़कियाँ भी साथ होती हैं ।

आजाद-क्यों साहब लड़कियों की उम्र क्या होगी !

मुसाफ़िर- अब उमर का हाल मुझे क्या मालूम । मगर सयानी हैं, बड़ी तमीजदार हैं और, बुढ़िया तो आफ़त की पुड़िया ।

आजाद--शादी अभी नहीं हुई !

मुसाफ़िर--अभी शादी नहीं हुई; न कहीं बातचीत है। दोनों बहनों को पढ़ने लिखने और सैर करने के तिवा कोई काम नहीं। सफ़ाई का दोनों को ख्याल है । करा करे, उनकी शादी अच्छे घरों में हो।

आज्ञाउइ--आपने तो वह्द खन्र सुनायी कि मुझे उन लड़कियों को सैर करते हुए देखने का शौक़ हो गया |

मुसाफ़िर--तो फिर इसी जगह बिध्तर जमा रखिए ।

आज्ाइ--आप भी आ ज/यें, तो मज़ा आये |

मुसाफ़िर--आ जाऊँगा।

आजाद--ऐसा न हो कि आप न आर्य और मुझे भेडिया उठा ले जाय |

मुसाफ़ि--आप बड़े रिक्लगीबाज़ मादूम हं।ते हैं। यहाँ अपने वादे के सच्चे हैं । बस, शाम हुई और बंदा यहाँ पहुँचा ।

यह कह कर वह हज़रत तो चलते हुए और आजाद दरख्तों से मेवे तोड़-तोड़ कर खाने छगे । फिर निड़ियों का गाना सुना । फिर दरिया की लहरें देखीं | कुछ देर तक गाते रहे,। यहाँ तक कि शाम हो गयी और वह मुसाफ़िर न आया । आजाद दिल में सोचने लगे, /शायद हजरत झाँसा दे गये। भव शाम मैं क्या बाकी हैं।

आना होता, तो आ न जाते। शायद आज बेगम साहबा बजरे पर सैर भी न करेंगी। सैर करने का यही तो वक़्त है । इतने में मियाँ मुसाफ़िर ने आ कर पुकारा |

आजाद--खेर, आप आये तो ! में तो आपके नाम को रो चुका था।

गृसाफ़िर--खेर, अब हँसिए | देखिए, वह हाथी आ रहा है। दोनों पालकियों भी साथ हैं ।

आजाद--ऋरद्दाँ-कहाँ १ किघर !

मुसाफ़िर--ईट की ऐननक लगाओ | इतनी बरड़ी/पालकी नहीं देख सकते ! हाथी भी नहीं दिखायी देता ! क्या रतौंधी आती है !

आज़ाद--आहा हा ! वह देखिए | ऐं, वह तो दरख्त के साये में रुक रहा ।

मुसाफ़िर - घत्रराइए नहीं, यहीं आ रही हैं। अब कोई और ज़िक्र छेड़िए, जिसमें माल्म हो कि दो मुसाक़िर थक कर खड़े बातें कर रहें! हुं !

आज़ाद--यह आपको खब सूझी | हाँ साहनमन, अपकी आम की फ़सल ख़ब हुई | जिधर देखो, पटे पड़े हैं; मंडी जाइए, खाँचियों की खाँचियों । तरबूज़ को देख आइए, कोई टके को नहों पूछता । और आम के सामने तरबूज़ को कौन हाथ लगाये !

ये बातें हो द्वी रही थीं कि बनरा तैयार हुआ । दोनों बहनें और बेगम साहब उसम बैठी । एकाएक पूरब की तरफ़ से काली मतवाली घटा झूमती हुई उठी और ब्रिजली ने चमकना शुरू किया | मलाह ने बजरे को खूँटे से बॉ दिया। दोनों लड़कियाँ द्वाथी पर बैठी और घर की तरफ़ चलीं। आज़ाद ने कहा -यह बुरा हुआ ! तूफ़ान ने हत्थे ही पर टोंक दिया, नहीं तो इस वक़्त बजरे की सैर देख कर दिल की कली खिल जाती । आखिर दोनों आदमी घृमते-घामते एक बार में पहुँचे, तो म्रियाँ मुसाफ़िर बोले-- हज़रत, अत्र की आम इतनी कसरत से पैद हुआ कि टके सेर नही, टके हजार ढग गये | लेकिन बगीचे वाले का यह हाल है कि जहाँ किसी भलेमानस ने राह चलते कोई आम उठा लिया और बस, चिमट पड़ा । अभी परसों ही की तो बात है। यहाँ से कोई चार कोस पर एक मुसाफ़िर मैदान में चला जाता था। एक काना खुतरा आम टप से जमीन पर टपक पड़ा । मुसाफ़िर को क्या माल्म कि कौन इधर-उधर ताक रहा है, चुपके से आम उठा लिया | उठाना था क्रि दो गैंवारटद 5 छठ कंधे पर रखे, मार सारे का, मार सारे का करते निकल आये । मसाफ़िर ने आम झट जमीन पर पटक दिया। लेकिन एक गँवार ने आते ही गालियाँ देनी शुरू कीं और दूसरे ने घूँसा ताना | मुसाफ़िर भी क्षत्रिय भादमी था, आग द्वो गया। मारे ग़क्े के उसका बदन थर-यर कॉपने लगा। बढ़के जो एक चाँटा देता है, तो एक गैंवार लड़खडाऊके धम से जमीन पर | दूसरे ने जो यह हाल देखा, तो लठ ताना ! राजपूत बग़ली डूब कर जा पहुँचा, एक आँटी जो देता है, तो चारों खाने चित | हम भी कछ एक बाग मे फैंस गये थे | शामत जो आयी, तो एक दरख्त के साये में दोपहरिया मनाने बैठ गये । बैठना था कि एक ने तड़ से गाली दी । अब सुनिए कि गाली तो दी हमकी, लेकिन एक पहलवान भी क़रीत् ह्वी बैठा था। सुनते ही चिमट गया और चिमटते द्वी कूले पर लादा। गिरे मुँह के बल। पहलवान छाप बैठा, हफ्ते गाँठ लिये, हलसींगड़ा बाँध कर आसमान दिखा दिया और अपने शागिददों से कहा - चंद जाओ पेड़ पर, और आम, पत्ते, बौर, टद्दनी जो पाओ, तोड़-तोड़ कर फेंक दो, पेड नोच डालो । लेकिन

छोगों ने समझाया कि उस्ताद, जाने दो; गाली देना तो इनका काम है। यद्द तो इनके सामने कोई बात ही नहीं, ये इसी लायक हैं कि खूब घुने जायें ।

आजाद--क्यों साहब, धुने क्यों जाये ! ऐसा न करें, तो सारा बास मुसाफ़िरों ही के लिए द्वो जाय । लोग पेड का पेड़, जड़ और फुनगी तक चट कर जायें। आप ते समझे कि यह एक आम के लिए कट मरा, मगर इतना नहीं सोचते कि एक द्वी एक करके हज़ार दह्वोते हैं । इस ताकीद पर तो यह द्वाल है कि लोग बाग के बाग़ दूट खाते हैं; और जो कहीं इतनी तू-तू मैं-में न हो तो न जाने क्या हो जाय ।

मियाँ मुसाफ़िर कल आने का वादा करके चले गये। आज़ाद आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि एक आदमी अपने लड़के को गोदी में लिये थपकी दे दे कर छुला रहा है--'आ जा री निदिया, तू »। क्यों न जा; मेरे बाले को गोट सुला क्यों न जा ।? आज़ाद एक दिल्लगीबाज आदमी, जा कर उदसे पूछते क्या हैं--किसका पिछा है ! वह भी एक हां काइयाँ था, बोछा-दूर रद्द, क्यों पिछा पड़ता हैं ! आज़ाद यह जवात् सुन कर खुश द्वो गये । बोले--उस्ताद, हम तो आज तुम्हारे मेहमान होंगे । ठुम्दारी हाजिरजवात्री से जी खश हो गया। अब रात द्वो गयी है, कहाँ जायें! उस हँसाड़ आदमी ने इनकी बड़ो खातिर की, खाना खिलाया और दोनों ने दरवाजे पर ही लंबी तानी । तड़के मियाँ आजाद की नींद खुली | हँसोड़ को जगाने छगे। क्यों हजरत, पड़े सोया द्वी कीजिएगा या उठिएगा भी; वाह रे माचा-तोड़ ! बारे बहुत हिलारे-इलाने पर मियाँ हँसोड़ उठे और फिर लेट गये; मगर पैताने की तरफ सिर करके ; इतने में दो-चार दोस्त और आ गये । वाह भई, वाह, इम दो कोस से आये और पद्दाँ अभी खाद डी नहीं छोड़ी ! भई, बड़ा सोनेवाला है। इमने मैंह-हाथ घोया, हुक्का. णिया, बालो में तेल डाछा चपातियाँ खायीं , कपड़े पहने और टहलते हुए यहाँ तक आये; मगर यद्द अमी तक पड़े द्वी हुए हैं। आखिर एक आदमी ने उनके कान में पान डाल दिया | तत्र तो आप कुलबुलाये । देखो, देखो, हैं-हैं नहीं मानते ! वाह, अच्छी दिल्लगी निकाली है ।

ए.क दोस्त--जरा आँखे तो खोलिए ।

हँसोड--नहीं खोलते । आपका कुछ इजारा है !

दोस्त - देखिए, यद मियां आज़ाद तशरीफ़ लाये हैं, इधर मौलवी साहबत्र खड़े हैं| इनसे तो मिलिए, सो-सो कर नहूसत पं, ! रखी है ।

मौलवी-- अजी हजरत !

हँसोड---भई, दिक् न करो, हमें सोने दो। यहाँ मारे नींद के बुरा दाल है, आपको दिल्लगी सूझती है ।

आजाद--भाई साहब !

हँसोड---और सुनिए | आप भी आये वहाँ से जान खाने । सबेरे-सबेरे आपको बुलाया किस गधे ने था! भलेमानस ऐ म्रकानः पर जाने का यह कौन वृक्त, है भला ! कुछ आपका क़ज़ तो नहीं चाहता ! चलिए, बोरिया-बैंधघना उठाइए। (आखें खोल कर) अख्खा, आप, हैं ! माफ़ कीजिएगा । पैंने आपकी आवाज़ नहीं पहचानी ।

मौलवी -- कद्दिए, ख़ाकसार की आत्राज़ तो पहचानी ! या कुछ मीन-मेख है !

हँसोड़-- अख्खा, आप हैं । माफ़ कीजिएगा, में अपने आपे में न था।

मौलवी--हृजरत, इतना भी नींद के हाथ त्रिक जाना भला कुछ बात है ! आठ बजा चाहते हैं और आप पढ़े सो रहे हैं। क्या कल रतजगा था ! खैर, में तो रुख-सत होता हूँ; आप दृकीम साहब के नाम खत लिख भेजिएगा । ऐसा न द्वो कि देर हो जाय | कहीं फिर न लढ़क रद्दिएगा | आपकी नींद से हम हारे |

हँसोड़--अच्छा मियाँ आजाद, और बातें तो पीछे होंगी, पहले यह बतलाइए, कि खाना वया खाइएगा १ आज मामा बीमार हो गयी है और घर में भी तब्रीयत अच्छी नहीं है। मैंने रोज़्े की नीयत की है। आप भी रोज़ा रख छें। फ़ायदे का फ़ायदा और सवाब का सवाब |

आज़ाइ--रोज़ा आपको मुचारक रहे | अल्लाह मियाँ हमें यों हीं ही बख्श देंगे ! यह दिल्लगी किसी और से कीजिएगा ।

हँसोड--दिल्गी' के भरोसे न रहिएगा। मैं खरा आदमी हूँ । हाँ, खब याद आया । मौलवी साइब खत लिखने को कद गये हैं। दो पैसे का खून और हुआ । कल भी रोज़ा रखना पड़ा |

आज़ाद--दो पेसे क्यों ख़च कीजिएगा १ अब तो एक पेसे के पोस्थ्काड चले हैं।

हँसोड---सख ! एक डब्ल में | मई अँगरेज बड़े हिकमती हैं | क्यों साहब, वह पोस्टकार्ड कहाँ बिकते हैं !

आज़्ाद-- इतना मी नहीं जानते ! डाकखाने में आदमी मेजिए ।

हँस।इ--रोशनअली, डाकखाने से जा कर एक आने के पोस्टकाड ले आओ।

रोशन--मियाँ, मैं देहाती आदमी हूँ । अँगरेजी नहीं पढ़ा ।

हँसोइ-- अरे भई, तुम कहना कि वह लछिफ़ाफ़े दीजिए, जो पैप्ते-पैसे में मरिकते हैं। जा झट से, कुत्ते की चाल जाना और बिल्ली की चाल आना |

रोशन--अजी, मुझत्रे कहिए, तो मैं गधे की चाल जाऊँ और त्रिसखोपड़े की चाल आऊँ। मुल डाकवाले मुझे पागल बनायेंगे। भला आज तक कहीं पैसे में लिफ़ाफ़ा बिका है !

ईंसोड--अबे, तुझे इस हुजत से क्या वास्ता ! डाकखाने तक जायगा भी, या यहीं बैठे-बैठे दलीलें करेगा !

रोशन डाकखाने गया ओर पोस्टकाडे ले आया | भिर्यों हँसोड़ झपट कर क़लूम-दावात ले आये और खत लिखने बैठे । मगर पुराने ज़माने के आदमी थे, तारीफ़ 'के इतने लंबे-लंबे जुमले लिखने शुरू किये कि पोस्टकार्ड भर गया और मतलब खाक न निकछ । बोले--अब कहाँ छिखें !

आज़ाद--दो टप्पी बात लिखिए । आप तो छगे अपनी लियाक़त बघारने ! दूसरा लीजिए ।

हँसोड़ ने दूसरा पोस््टकार्ड लिखना शुरू किया---जनात्र, अब हम थोड़े में बहुत सा हाल लिखेंगे । देखिए, बुरा न मानिएगा । अब वह जमाना नही रहा कि वह बीघे भर के आदाब लिखे जायें। वह लंबी चौड़ी दुआएँ दी जायेँ। वह घर का कच्चा चिट्ठा कह सुनाना अब रिवाज़ के ख़िलाफ़ है। अब्म तो हमने क़सम खायी है कि जब क़लम उठायेंगे, दस सतरों से ज्यादा न लिखेंगे इसमें चाहे इधर की दुनिया उधर दो नाय । अब आप भी इस फ़ेशन को छोड़ दीजिए ।? अरे, यह ख़त भी गया । अब तो तिल 7 उने की भी जगह

नहीं । लीजिए, बात करते-करते दो पैसे का खन हो गया | इस. ॥। पैसे का टिक्रट छाते, तो खरं का खर्र लिख डालते |

आज़ाद--. रेखूँ तो; आपने क्या लिखा है। वाह-वाह इस पैंवाड़े का कुछ ठिकाना है। अर ताहइब, मतलब से मतलब रखिए.। बहुत बेहूदा न बकिए। खेर

अब तीसरा फाड़ लीजिए । मगर क़ल्म को रोके हुए। ऐसा न हो कि आप फिर बाही-तब्ाही लिखने लगें।

हँसोड़-- अच्छा साहब, यों ही सही | ब8, खास-खास बातें ही लिखूँगा ।

यह कह कर उन्होंने यह ख़त लिखा--"जनाब फ़ज्नीलठतमआब मौलाना साहब, आप यह पेसदूचा लिफ़ाफ़ा देख कर घबरायँगे कि यह क्या बडा है। डाकखानेवालों ने यह नयी फुलझडी छोड़ी है। आप देखते हैं, इसमें कितनी जगह है। अगर मुख्तसर न लिखँ तो क्या करूँ। लिखनी तो बहुत सी बातें हैं, पर इस लिफ़ाफ़े को देख कर सब आरजएँ दिल मं रही जाती हैं। देखिए, अभी लिखा कुछ भी नहीं, मगर कागज़ को देखता हूँ, तो एक तरफ़ सब्र का सब्च लिप गया | दूसरी तरफ़ लिखें, तो पकड़ा जाऊँ ।? लो साहब, यहद्द पोस्टकाड भी ख़तम हुआ ! मियां आज़ाद, ये तीनों पैसे आपके नाम लिखे गये । आप चाहे दें ठका नहीं, ठेकिन सछाह आप ही

नेदीथी। के आज़ाद- मैंने यह कब्र कह था कि आप ख़त में अपनी बिंदगी की दास्तान

लिख भेजें ! यह खत है या रॉड का चर्खा ! इतने बड़े हुए, ख़त लिखने की लियाक्त नहीं । समझा दिया, सिखला रिया कि ब6, मतलब से मतलब रखो। मग़र तुम कब्र मानने लगे | खदा की कसम, तुम्हारी सूरत से नफ़रत हो गयी । बस, बेतुकेपन की ह्रद हो गयी ।

हँसोड-- वाह री क्विष्मत ! तीन पैसे गिरह से गये और उल्दू के उल्लू बने | भला आप ही लिखिए, तो जानें। देखें तो सही, आप इस जरा से काराज़ पर कुछ मतलब क्योंकर लिखते हैं। इसके लिए तो बड़ा भारी उत्ताद चाहिए, जो पिस्ते पर हाथी की तस्वीर बना दे ।

आज्षाद--आप अपना मतलूत्र मुझसे कहिए, तो अभी लिख एूँ।

हँसोड़-- अच्छा सुनिए--मौलवी जामिनअछी आपकी खिदमत में पहुँचे होंगे। उनको वह तीस रुपयेवाली जगह दिला दीजिएगा। आपका उम्र भर एहसान होगा । बस, इसी को खूब बढ़ा दीजिए ।

आज़ाद--फिर वही झक ! बढ़ा क्यों दूँ १ यह न कहा कि बस, यही मेरा मतलब है, इसको बढ़ा दीजिए । लाओ पोस्टकाड, देखो, यों लिखते हँ--

'इज़रत सलामत, मोलबी जामिनअली पहुँचे होंगे। वह तीस रुपयेवाला ओहदा उनको दिलवा दीजिए, तो एद्सान होगा । उम्मेद है कि आप खेरियत से होंगे

लो, देखो, इतनी सी बात को इतना बढ़ाया कि तीन-तीन खत लिखे और फाड़े ।

हँसोड़-- खूब, यह तो अच्छा दुम-कटा ख़त है ! अच्छा, अब पता भी तो लिखिए ।

आजाद ने सीधा-सादा पता लिख कर हँसोड़ को दिखलाया, तो आप पूछने लगे-- क्यों साहब, यद्द तो

शायद वहाँ तक पहुँचे द्वी नहीं। कहीं इतना जग सा पता लिखा जाता है १ इसमें मेरा नाम कहाँ है, तारीख कहाँ है |

आज़ाद--आपका नाम बेवकूफ़ों की फ़िहरिस्त में है ओर तारीख डाकखाने में |

हँसोड--अच्छा लाइए, दो-चार सतरें मैं भी बढ़ा दूँ ।

हज़रत ने जो लिखना शुरू किया, तो पते की तनफ़ भी लिख डाला ।--थोड़े लिखने को बहुत समझिएगा । आपका पुराना गुलाम हूँ । अब कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ती ।

आजाद-हैं-हैं | ग़ारत क्रिया न इसको भी !

हँसोड-- क्यों, जगह बाकी है, पूरा पेसा तो वसूल करने दो ।

आजाद--जी, पेसा नहीं, एक आना वसूल हो गया | एक ही तरफ़ मतलब छिखा जाता है, दुसरी तरफ़ सिर्फ़ पता । आपसे तो हमने पहले ही कह दिया था।

यह याते दो ही रदह्दी थीं कि कई लड़के स्कूल से निकले उनमे एक बड़ा शरीर था। किसी पर धप जमायी, किसी के चपत लगायी, किसी के कान गरमा दिये । अपने से व्योदे-दूने तक को चपतियाता था। आज़ाद ने कहा-देखो, यह लौंडा कितना बदमाश है ! अपने दूने तक की खबर लेता है ।

हँसोड-- भई, खदा के लिए इसके मुँह न लगना । इसके काटे का मंतर ह्वी नहीं | यह स्कूल भर में मशहूर है। हजरत दो दफे चोरी की इछत में धरे गये। इनके मारे महल्ले भर का नाकों दम है। एक क्रिस्सा सुनिए। एक दफ़े इजरत को शरारत का शौक़ चर्राया, फिर सोचने की जरूरत न थी। फ़ौरन यूझती है । शराग्त तो इसकी खमीर में दाखिल है | एक पाँव का जूता निकाल कर हजरत ने एक आहल-मारी पर रल दिया | जूते के नीचे एक किताब रख दी । थोड़ी देर बाद एक लड़के से बोले--यार, ज़रा वह कितात्र उतारो, तो कुछ देख-दाख छूँ; नहीं तो मास्टर साइब बेतरद ठोकेंगे। सीघा-सादा लड़का चुपके से वह किताब उठाने गया । जैसे कितात्र उठायी, वैसे द्वी जूती मुँह पर आयी | सत्र लड़के खिलखिला कर हंस पड़े । मास्टर साहब अंगरेज थे । बहुत ही झला कर पूछा--यदह्द किसकी जूती का पाँव है !

अब आप बैठे चुपचाप पढ़ रहे हैं। गोया इनसे कुछ वास्ता द्वी न था | मगर इनका तो दर्जा भर दुश्मन था। कसी लड़के ने इशारे से जड़ दी । मास्टर ने आपको बुलाया और पूछा--बेल, दूसरा पाँव कहाँ तुम्हारा १ दूसरा पाँव किडर !

लड़का--पाँव दोनों ये हैं ।

मास्टर--बेल, जूती, जूती !

लड़का--जूती को खावे तूती ।

मास्टर---त्रेंच पर खड़ा हो ।

लड़का--यदह्द सज़ा मंजूर नहीं; कोई और राजा दीजिए ।

मास्टर--अच्छा, कल के सबक को सौ बार लिख लाना |

लड़का - वा ह-वाह, और सब्रक् याद कब करूँगा ?

मास्टर--अच्छा, आठ आना जुर्माना ।

दूसरे दिन आप आठ आने लाये, तो मोटे पैसे खट-खट करके मेज़ पर डाल दिये । मास्टर ने पूछा--अठन्नी क्यों नहीं लाया १ बोले--यह झर्त नहीं थी ।

इसी तरह एक बार एक भलेमानस के यहाँ कह आये कि तुम्दारे लड़के को स्कूल में हैजा हुआ है | उनके घर में रोना-पीटना मच गया । लड़के का बाप, चचा, भाई, मामू , सब दौड़ते हुए स्कूल पहुँचे। औरतों ने आठ-आठ आँखू रोना शुरू किया । वे लोग जो स्कूल गये, तो क्या देखते हैं, लड़का मज़े से गंद खेलता है । अजी, और क्या कहें, इसने अपने बाप को एक बार नमक के धोखे में फिटकरी खिला दी, और उस पर दुर्रा यह कि कहा, क्यों अब्बाजान, कैसा गहरा चकमा दिया !

शाम के वक़्त बूढ़े मियाँ आजाद के पास आ कर बोले---चलिए,, उधर बबरा तैयार है [| आज़ाद तो उनकी ताक में बैठे ही थे, हँसोड़ को के कर उनके साथ चल खड़े हुए. । नदी के किनारे पहुँचे, तो देखा, बजरे लहरों पर फर्राटे से दौड़ रहे हैं। एक दरखत के साये में छिपकर यह बहार देखने छगे । उधर उन दोनों हसीनों ने बजरे पर से किनारे की तरफ़ देखा, तो आज़ाद नज़र पड़े | शरम से दोनों ने मुँद्द फेर लिये । लेकिन कनखियों से ताक रही थीं | यहाँ तक कि बजरा निगाहों से ओझल हो गया ।

थोड़ी देर के बाद आज़ाद उन्हीं बूढ़े मियोँ के साथ उम्त कोठी की तरफ़ चले, जिसमें दोनों लड़डियाँ रहती थीं। क़दम-क्दम पर शेर पढ़ते थे, ठंडी साँसे भरते थे और छिर घुनते थे । द्वालत ऐसी खराब थी कि क्दम-क़रम पर उनके गिर पड़ने का लौफ़ था। दँसोड़ ने जो यद्द कैफ़ियत देखी. तो झपट कर मियोँ आशर का द्वाथ पकड़ लिया और समझाने लगे । इस रोने-धोने से क्या फ़ायदा १ आखिर यह तो सोचो कि कददोँ जा रद्दे दो! वहाँ तुम्हें कोई पहचानवा भी है ! मुफ़्त में शरमिंदा होने को क्या जहूरत १

आज़ाद--मई, अन्र तो यह सिर है और वह दर | बस, आतःइ है और उन

बुतों का कूचा । हँसोड--यद महज गादानी है; यही हिमाक़त की निशानी है। मेरी बात मानो, बूढ़े मियाँ को फँसाओ, कुछ चढाओ, फिर उनकी सलाह के मुताबिक़ काम करो, बेसमझे-बूस्े जाना और अपना सा मुँह लेकर वापस आना हिमाक़त है | | ये बातें करते हुए दोनों आदमी कोठी के क़रीब पहुँचे । देखा, बूढ़े मियोँ इनके इंतजार में खड़े हैं। आजाद ने कहा--हज़रत, अब तो आप ही रास्ता दिखायें, तो मंजिल पर पहुँच सकते हैं; वर्ना अपना तो द्वाल ख़राब है । बूढ़े मियाँ-- भई, हम तुम्दारे सच्चे मददगार और पक्के तरफ़्दार हैं। अपनी तरफ़ से तुम्दारे लिए कोई बात उठा न रखेंगे। लेकिन यहाँ का बाबा, आल्म द्वी निशला है। यहाँ परिंदों के पर जलते हैं । हवा का भी गुजर होना मुश्किल है। मगर दोनों मेरी गोद की खिलायी हुई हैं, मौका पा कर आपका ज़िक्र ज़रूर करूँगा। मुश्किल यही है कि एक ऊँचे घर से पैशाम आया है, उनकी माँ को शौक़ चर्राया है कि वहीं ब्याह हो | आजाद--यह तो आपने बुरी ख़बर सुनायी ! क़सम ख़दा की, मेरी जान पर बन जायगी | बूंदे मियाँ--सत्र कीजिए, सब्र | दिल को दार्स दीजिए। अब इस वक़्त जाइए, सुबह आइएगा | आज़ाद रुखसत द्वोने ही वाले थे, तो क्या देखते हैं, दोनों बहने झरोखों से झाँक रही हैं। आजाद ने यह शेर पदा-- हम यही पूछते फिरते हैं जमाने भर से; जिनकी तकदीर बिगड़ जाती है, क्या करते हैं? झरोखे में से आवाज़ आयी--- जीना भी आ गया मुझे, मरना भी आ गया ; पहचानने लगा हूँ

तुम्हारी नज़र को मैं। इतना सुनना था कि मियाँ आज़ाद की आँख मारे खृशी के डत्रडबा आयीं। झरोखे की तरफ़ फिर जो ताका, तो वहाँ कोई न था। चकराये कि किसने यद्द शेर पढ़ा | छलावा था, टोना था, जादू था, आखिर था क्या ! इतने में बूढ़े मियाँ ने इशारे से कद्दा कि बस, अब जाओ और तड़के आओ । दोनों दोस्त घर की तरफ़ चले, तो मियाँ इँसोड़ ने कहा- हज़रत, खदा के वास्ते मेरे घर पर कूद-फाँद न कीजिएगा बहुत शेर न पढ़िएगा, कहीं मेरी बीबी को ख़बर हो गयी, तो जीना मुश्किल हो जायगा | आज़ाद- क्या बीबी से आप इतना डरते हैं |आखिर स्त्रौफ़ कादहे का ? ईंसोड-- आपको इस झगड़े से क्या मतलब १ वहाँ ज़रा भले आदमी की तरह बैठिएगा, यह नहीं कि गुल मचाने लगे। जो सुनेगा, वह समझेगा कि कहाँ के शोहदे जमा हो गये हैं ।

आजाद--समझ गया, आप बीबी के गुलाम हैं। मगर हमें इससे क्या वास्ता । आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से !

दोनों आदमी घर पहुँचे, तो छौंडी ने अन्दर से आ कर कहा--वेगम साहवा आपको कोई बीस बेर पूछ चुकी हैं। चलिए, बुलाती हैं। मियों हँसोड़ ने ड्योढ़ी पर क़दम रखा ही था कि उनकी बीत्री ने आड़े हाथों ही लिया । यद्द दिन-दिन भर आप कहाँ ग़ायत्र रहने छगे ! अब तो आप बड़े सैलानी दो गये । सुबह के निकले-निकले धाम को खबर ली । चलो, मेरे सामने से जाओ । आज खाना-वाना खेर-सल्लाह है। इलवाई की दुकान पर दादा जी का फ़ातिद्ा पढ़ी, तंदूरी रोटियाँ उड़ाओ । यहाँ किसी को कुत्ते ने नहीं काटा कि वक्त-बे-वक्त चूल्दे का मुंह काछा किया जांय |” भले आदमी दो-एक घड़ी के लिए कहीं गये तो गये; यद्द नहीं कि दिन-दिन भर पता ही नहीं । अच्छे हथकंडे सीखे हें ।

हँसोड़ ने चुपके से कह्दा--ज़रा आहिस्ता-आहिस्ता बातें करो। बाहर एक भलामात्तस टिका हुआ है। इतनी भी क्या बेहयाई !

इस पर वह चमक कर बोली--बस, बस, जब्वान न खुलवाओ बहुत | तुम्हें जो दोस्त मिलतो. है, वद्दी ग ..सवार, जिसके घर न द्वार, जाने कहाँ के उल्फ़ती इनको मिल जाते हैं, कभी किसी शरीफ़ आदमी से दोस्ती करते नहीं देखा । चलिए, अन्न दूर हूनिए, नहीं हम बुरी तरह पेश आयेंगे। मुझसे बुरा कोई नहीं ।

मियाँ दैंसोड़ बेचारे की जान अज़ाब में कि घर में बीबी कोसने सुना रद्दी है, बाहर मियाँ आजाद आड़े हाथों छेंगे कि आपकी बीबी ने आपको तो खैर जो कुछ कहा, वह कह्दा ही मुझे क्यों ले डाला! मैंने उनका क्या बिगाड़ था ! अपना सा मैं ले कर बाहर चले आये और आज़ाद से कद्दा--यार आज रोज़े की नीयत कर लछो | बीबी-जान फ़ौज़दारी पर आमदा हैं। बात हुई और तिनक गयीं। महीनों द्वी रूठी रहती हैं। मगर कया करूँ, अमीर की छड़की हैं, नहीं तो में एक झल्ला हूँ | मुझे यह मिज़ाज कहाँ पसंद । इसलिए भई, आज फ़ाक़ा हे ।

आजाद--फ़ाक़ा करें आपके दुष्मन | चलिए, किसी नानबाई हलवाई की दूकान पर | मज़े से खाना खायें !

हैं सोड--अरे यार, इतने ही होते तो बीती की क्यों सुनते | टका पास नहीं, हलवाई क्या हमारा मामू है!

आजाद--इसकी फ़िक्र न कीजिए. । आप हमारे साथ चलिए और मज़े से मिठाई चखिए । वह तदबीर

सूझी < कि कभी पट द्वी न पड़े।

दोनों आदमी बाज़ार पहुँचे । आज़ाद ने रास्ते में हँसोड़ को समझा-बुझ्चा दिया। इंसोड़ तो इलबाई की दुकान पर गये और आजाद जरा पीछे रद्द गये। हँसोड़ ने जाते दी जाते हलवाई से कहा--मियाँ आठ आने के पैसे दो और आठ आने की पैंचमेल मिठाई । हलवाई ने ताज़्ी-ताज़ी मिठाई तौल दी और आठ आने पैसे भी गिन दिये | हँसोड़ ने पैसे तो गाँठ में बाँचे और मिठाई उसी की दुकान एर चखने छगे । इतने में मियाँ आज़ाद भी पहुँचे और बोले--भईछाछा, जा. सन »े लड़ तो एक रुपये के तौल देना। उसने एक रुपये ? “गेर उनके हाथ में दी। इतने में मियाँ हँसोड़ ने लकड़ी उठायी और अपनी राह चले | हलवाई ने छछकारा--मियाँ, चले कहाँ ! पहले रुपया तो देते जाओ ।

हँसोड--रुपया | अच्छा मज़ाक़ है ! अबे, क्या तूने रुपया नहीं पाया । यहाँ पहले रुपया देते हैं, पीछे यीदा लेते हैं। अच्छे मिले | क्या दो-दो दफ़े रुपया छोगे १ कहीं मैं थाने में रपट न लिखवा दूँ ! मुझे भी कोई गैंवार समझे हो ! अभी चेहरेशाही दे चुका हूँ । अब क्या किसी का घर लेगा !

अब इलवाई ओर हैँसोड़ में तकरार होने लगी। बहुत से आदमी जमा हो गये | कोई कहता है, लाला घास तो नहीं खा गये हो; कोई कहता है, प्रियाँ एक रुपये के लिए नियत डामाडोल न करो; ईमान सलाम्रत रहेगा, तो बहुत रुपये मिलेंगे ।

आज़ाद--छालछा, कहीं इसी तरद्द मेरा भी रुपया न भूल जाना

हझवाई--क्या, आपका रुपया १ आपने रुपया किसको दिया !

अब जो झुनता है, वद्दी हलवाई को उल्लू बनाता है। छोगों ने बहुत कुछ लानत-मल्ननत की कि शरीफ़ आदमी को बेइब्ज़त करते हो । इतने में उस हलवाई का बुद्डा बाप आया, तो देखता क्या है कि दूकरान पर भीड़ छगी हुई है। पूछा, क्या पाजरा है ! क्या दुकान छट गयी ! एक बिगड़े-दिल ने कद्ा--अजी, छुट तो नहीं गयी मगर अब तुम्हारी दुकान की साख जाती रद्दी | अभी एक भलेमानस ने खन से रुपया फेका । अब कहंता है कि हमने रुपया पाया ही नहीं। उसको छोड़ा, तो दूसरे शरीफ़ का दामन पकड़ लिया कि तुमने रुपया नहीं दिया; दार्लोंकि वह बेचारे सैकड़ों क्समें खाते हैं क्रि मैं दे चुका हूँ। हलवाई बड़ा तीखा बुद्धा था, सुनते ही आग दो गया । झब्छा कर अपने लड़के की खोपड़ी पर तान के एक चपत लगायी और बोला--ऋद्ता हूँ कि मैग न खाया कर, मानता ही नहीं । जा कर बैठा दूकान पर |

मियोँ आजाद आर दँसोड़ ने मज़े से डेढ़ रुपये की मिठाई बाँध ली, और आट आने के पैसे घाते में । जब घर पहुँचे, तो ख मिठाई चखी। बची बचायी अंदर भेज दी | हँसोड़ ने कहा--यार इसी तरह कहीं से रपया ग्लिवाओ, तो जाने। अज़ाद ने कदा--यह कितनी बड़ी बात है ?! अभी चलो | मगर किसी से माँग मूँग कर कुछ अरार्फियाँ बाँध लो। मियाँ ईँसोड ने अपने एक दोस्त से शाम को लौटा देने के वादे पर कुछ अशर्फियाँ लीं! दोनों ने रोशनअछी को साथ लिया और बाज़ार चले | पहले एक महाजन को अशर्फियाँ रिखायीं और परखबायीं । बेचते हैं, खरी-तोटी देख लीजिए. | मद्दाजन ने उनको खूब कसौटी पर कसा और कद्दा-- उन्नीस के द्विसाब से लेंगे। तत्र हँसोड़ दूसरी दुकान पर पहुँचे । वहाँ भी अशार्फियाँ गिनवायी और परखवायीं । इसके बाद आज़ाद ने तो अशर्फियाँ ले कर घर की राह ली और मियाँ हँसोड़ एक कोटी में

पहुँचे ; वहाँ कहा कि हमको दो सौ अश्यर्फियाँ खरीदनी हैं। महाजन ने देखा, आदी शारीफ़ है, फ़ोरन दो सो अशर्फ़ियाँ उनके सामने ढेर कर दीं | बीस रुपये की दर बतायी | हँसोड ने महाजन के मुनीम से एक पर्चे पर हिसाब लिखवाया और अशर्फ़ियाँ बाँध कर कोठी के बाहर पहुँचे | गुल मचा-- हाँय-हाँय, लेना-लेना, कहाँ-क्हाँ ! मिर्यों हँसोड़ पैतत बदल सामने खड़े दो गये | बस, दूर द्वी से बात चीत हो | सामने आये और मैंने ठुला हाथ दिया |

महाजन--ऐ साहब, रुपये तो दीजिए !

इंसोड--केसे रु पये ! दम नहीं बेचते ।

महाजन- क्या कहा, नहीं बेचते ! क्या अशर्फ़ियाँ आपकी हैं !

हँसोड-- डी, और नहीीं तो क्या आपके बाप की हूं ! हम नहीं बेचते, आपका इजारा है कुछ १ आप हैं कोन जबदंस्ती करनेवाले १

इतने में आज़ाद भी वहाँ आ पहुँचे । देखा, तो महाजन और उनके मुनीम जी गुल मचा रहे हैं--ठुम अशर्फ़ियाँ लाये कब थे ? और दँसोड़ कद रहे हैं, दम नहीं बेचते । सैकड़ों आदमी जमा ये । पुलीस का एक जमादार भी आ पोजुद हुआ |

जमादार- यह क्या झगड़ा है लाला चुन्नामल ! वह नहीं बेचने, तो जबरदस्ती क्यों करते हो ” भपने माल पर सबको अख्तियार है ।

महाजन-- अच्छी पंचायत करते हो जमादार ! यहाँ चार दज्जार रुपये पर पाना फिरा जाता है, आप कहते हैं, जाने भी दो | ये अशर्फ़ियोँ तो हमारी हैं। यह मियां खरीदने आये थे, हमने गिन दीं | बस, बाँध बूँघ कर चल खड़े हुए |

एक आदमी--वाह, भल्य कोई तात भी है | यह अकेले, आप दस | जो ऐसा हं।ता, तो यह कोठी के बाहर भी आने पाते ?! आप सब मिल कर इनका अचार न निकाल लेते ? इतने बड़े महाजन, और दो सौ अरार्फ़ियों के लिए ईमान छोड़े देते हो !

जमादार--बुरी बात !

हँ सोड---दे खिए, आप बाज़ार भर में 4रियाफ़्त कर लें कि इमने कितनी दूकारना में अशफ़ियाँ दिखलल्ायी और परखवायी हैं?! बाज़ार भर गवाह है, कुछ एक-दो आदमी वहाँ थोड़े थे ! इसको भी जाने दीजिए. | यह पर्चा पढ़िए | अगर यह बेचते होते, तो बीस को दर से हिसात्र लगाते, या सादे उन्नीस से ! ऋफ़त में एक शरीफ के पीछे पंडे है, लेना एक न देना दो ।

आखिर यह तय हुआ कि वाज़ार में चल कर तहइक़ीकात की जाय । मियाँ हँसोड़ साहूकार, उनके मुनीम, जमादार और तमाशाई, सत्र मिलकर बाज़ार चले। वहाँ तहक़ीकात की; तो दल्लालों और दुकानढायें ने >त्राह्द दी कि बेशक इनके पास अशफ़ियाँ थीं और इन्होंने परखवांयी भी थीं। अभी-अभी यहाँ से गये थे ।

जमादार- लाला साहब, अब खेर इसी में है कि चुपके रहिए; नहीं तो बेदत्र

टठह रेगी । आपकी साख जायगी और मुनीम की दशामत आ जायगी। महाजन--क्या अंबेर है ! चार हजार रुपयों पर पानी पड़ गया, इतने रुपये कभी उम्र भर में नहीं जमा किये थे, और जो है, हमी को उल्लू

बनाता है। खेर साहब, लीजिए, दृाथ धोये !

तीनों आदमी घर पहुँचे, तो बाँछें खिली जाती थीं। जाते दी दो सौ अशार्फ़ियों खन-खन करके डॉल दीं।

आज़ाद--देखा, यों लाते हैं । अब ये अशर्फियाँ हमारी भाभीजान के पास रखो |

हँसोड़--भाई, तुम एक ही उस्ताद हो | आज से मैं तुम्हारा झागिद हो गया |

आज़ाद--ले, भाभी से तो ख़श-खबरी फह्द दो | बहुत मुँह फुलाये बेठी यीं ।

मियाँ हेंसोड़ ने धर में जा कर क़ुद्दा--कहाँ हो | क्या सो रहीं !

बीवी--क्या कमाई करके लाये हो, डपट रहे हो !

हँसोड़-- (अशर्फ़ियाँ खनका कर) लो, इधर आओ, बहुत मिजाज न करो | ये लो, दस हजार रुपये की अशर्फ़ियाँ।

बीबी--ये बुते किसी और को दीनिएगा | ये तो वहीं हैं, जो अभी मिर्जा के यहाँ से मैंगवायी थीं ।

हँसोड--वह यह हैं, इधर |

बीवी--देखूँ, (खिलखिला कर) किसी के यहाँ फाँदे थे क्या! आख़िर लाये किसके घर से ! ब, चुपके से हमारे संदुकचे में रख दो ।

हैं सोड--क्यों न दो, मार खायें ग़ाज़ी मियाँ, माल खायें मुज़ाबिर ।

बीबी--सच बताओ, कहाँ मिल गयी ! तुम्हें हमारी क़सम |

हँसोइ--यह उन्हीं की करामात है, जिन्हें तुम शोहदा और छा बनाती थीं ।

बीती--मियों, हमारा क़ुयूर माफ़ करो। आदमी की तबीयत हमेशा एक सी थोड़े ही रहती हैं। में तो तुम्हारी लॉडी हूँ ।

आजाद-- बाहर से) दम भी सुन रहे हैं भाभी साहब ! अभी तो आपने हमारे भाई बेचारे को डपट लिया था, घर से बाहर कर रिया था; हमको जो गालियाँ दीं, सो घाते में । अन्न जो अशर्फियाँ देखीं, तो प्यारी बीबी बन गयीं। अब इनके कान ने गरमाइएगा; यह बेचारे बेजाप के हैं ।

बीबी ने अन्दर से कहा--आप हमारे मेहमान हैं | आपको क्या कहूँ, आएकी हँसी सिर आँखों पर |

HINDI TEXT

प्रसंग २४

बड़ी बेगम साहबा पुराने ज़माने की रईसज़ादी थीं, टोने टोटके में उन्हें पूरा विश्वास था | ब्रिछली अगर घर में किसी दिन आ जाय, तो आफ़त हो जाय । उल्लू बोला और उनक्की जान निकली | जूते पर जूता देखा और आग हो गयीं। किसी ने सीटी बजायी और उन्होंने कोसना शुरू किया | कोई पाँव पर पाँव रख कर सोया और आपने ललकारा । कुत्ता गली में रोया और उनका दम निकल गया । रास्ते में काना मिला और उन्होंने पालकी फेर दी | तेली की सूरत देखी और खून सूख गया । किसी ने ज़मीन पर लकीर बनायी और उसकी शामत आयी । रास्ते में कोई टोक दे, तो उसके सिर हो जाती थीं। सावन के मद्दीने में चारपाई बनवाने की क़मम खायी थो | जब देखा कि लड़कियाँ सयानी द्वो गयीं तो शादी की फ़िक्र हुईं। ऊँचे-ऊँचे घरों से पेग़ाम आने लगे ! बडी लड़की हुस्नआरा की शादी एक रईस के लड़के से तय हो गयी। हुस्नआरा पटी-लिखी औरत थी | उसे यह कब मंजूर हो सकता था कि तब्िना देखे-भाले थ्ादी हो जाय । जिसकी सूरत ख्वाब में भी नहीं देखी, जिसकी लियाक़रत और आदत की जरा भी खत्रर नहीं, उसके साथ हमेशा के लिए बाँध दी जाऊँगी । सद्देलियाँ तो उसे मुबारकबाद देती थीं और उसकी जान पर बनी हुई थी। या खदा, किससे अपने दिल का दर्द कहूँ ! बोदूँ ; तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें ताने दें कि यह छड़की तो सवार को खड़े-खड़े घोड़े पर से उतार ले | दिल ही दिल में बेचारी कुदने लगी। अपनी छोटी बदन सिपहआरा से अपना दुःख कहती थी और दोनों बहनें गले मिल कर रोती थीं ।

एक दिन दोनों बहनें बैठी हुई अखबार पढ़ रही थीं | उसर्भ एक शरीर लड़के की दास्तान छपी हुई थी। पढने लगीं--

“यह इज़रत दो बार क्रेई भी रह चुके हैं, और अफ़सोस तो यह है कि एक रईस के साहबज़ादे हैं। परसों रात को आपने यद्द शरारत की कि ए.क रईस के यहाँ कूदे और कोठरी का ताला तोड़ कर अंदर घुकने छगे। मद्दाजन की लड़की ने जो आइट पायी तो कुल्बुला कर उठ खड़ी हुई और अपनी माँ को जगाया। बरी जागो तो, बिल्ली ने तेल का धढ़ा गिरा दिया; त्रिल-बिल ! उसकी माँ गड़बड़ा कर जो उठी, तो आप कोठरी के बाहर एक चारपाई के नीचे दबक रहे। उसने अपने लड़के को जगाया। वह जवान ताल ठोक कर चारपाई पर से कूदा, चोर फा कलेजा कितना १ आप चारपाई के नीचे से घबरा कर निकले । महाजन का लड़का भी उनकी तरफ़ झपट पड़ा और उन्हें उठा कर दे मारा । तत्र उस बदमाश ने कमर से छुरी निकाली और उस महाजन के पेट में भोक दी। आनन-फानन जान निकल गग्री । पड़ोसी और चौकीदार दौड़ ५> और उस शरीफ़जादे को गिरफ्तार कर लिया। अब वह ह्ववालात में है। अफ़सोस की बात तो यहद्द है क्रि उसकी शादी नवात्र फरेदूँजँग को लड़की से करार पायी थी जिसका न.म हुष्नआरा है ।?

यह लेख पद कर हुस्नआरा आठ-आठ आँसू रोने लगी | उसकी छोटी बहन उसके गले से चिमट गयी और उसको बहुत कुछ समझा बुझा कर अपनी बूढ़ी माँ के पास गयी । अखबार दिखा कर बोली - देखिए,

क्या गज़ब्र हो गया था, आपने बेदेखे-भाले शादी मंजूर कर ली थी। बूदी बेग्म ने यह ह्ाल सुना, तो सिर पीट कर बेलीं--- बेटी, आज तड़के जब्र मैं पलंग से उठी, तो पट से किसी ने छींका और मेरी बायों आँख भी फड़कने लूगी। उसी दम पाँव-तले पिट्टी निकछ गयी। में तो समझती ही थी कि आज कुछ असगुन होगा । चलो, अल्लाह ने बड़ी खेर की। हुस्नआरा को मेरी तरफ़ से छाती से लगाओ ओर कह दो कि जिसे तुम पसंद करोगी, ज्सी के साथ निकाह कर दूँगी।

सिपहआर अपनी बहन के पास आयी, तो बाँछें, खिली हुई थीं। आते ही घोली -- लो बहन, अब तो मैंह-माँगी मुराद पायी ! अब उदास क्यों बैठी हो ! खुदा-क़सम, वह ख़श-खबरी सुनाऊँ कि जी खश हो जाय ।

हुस्नआरा- ऐ है, तो कुछ कहोगी भी । यहाँ क्या जाने, इस वक़्त किस गम में बैठे हैं, यह खुशी का कोन मोक़ा है !

सिपहआरा--ऐ. वह, हमयों बता चुके । बिना मिठाई लिये न बतावेंगे | अम्माँ-जान ने कद दिया कि आप जिसके साथ जी चाहे, शादी कर लें। वह अब दखल न देंगी | हाँ, शरीफ़ज़ादा ओर कब्ले-ठल्ले का जवान हो |

हुस्नआरा - खूबसूरती औरतों में देखी जाती है, मरदों को इससे क्या काम ! हाँ, काला-कलूटा न हो, बस |

सिपहआरा--श्रह्द आप क्या कहती हैं । “आदमी-आदमी अंतर, कोई द्वीरा कोई कैंकर ।? क्या चाँद में गरहन लगाओगी !

हुस्नआरा--ऐ, तो सूत न कपास, कोरी से लठम-लठा !

इतने में बुढ़े मियाँ पीर बख्श ने आवाज़ दी--बेटी, कहाँ हो, में भी आऊँ !

सिपद्आरा--आओ, आओ. , तुम्हारी ही तो कसर थी। आज सबेरे-सबरे कहाँ थे ! कल तो बजग ऐसा डांवाडोल होता था, जैसे तिनका बहा चला जाता है। कलेजा धक-घक करता था ।

पीरबख्श-- तुमसे कुछ कहना है बेटी! देखो, तुम हमारी पोतियों से भी छोटी हो । तुम दोनों को मैंने गोदियों खिलाण है, और तुम्दारी माँ दमारे सामने ब्याह आयी हैं । तुम दोनों को मैं अपने बेटे से ज़्यादा चाहता हूँ । में जो कहूँ, उसे कान छगा कर सुनना । तुम अब सयानी हुई । अन्न मुझे तुम्हारी शादी की फ़िक्र है। पहले तुमसे सलाह ले , तो बेगम साइच से अजे करूँ। यों तो कोई लड़की आज तक बिन न्यादही नहीं रही; लेकिन वर उन्हीं लड़कियों को अच्छा मिलता है, जो ख़श-नसीब हें । तुम्हारी माँ हैं तो पुरानी लकीर की फ़कीर, मगर यह मेरा जिम्मा कि जिसे तुम पसंद करो, उसे वह भी मंजूर कर लेंगी। आजकल यहाँ एक शरीफ़ नौजवान आकर टहरे हैं | सूरत शाइज़ादों की सी, आदत फ़रिइतों की सी, चलन भलेमानसों का सा, बदन छरहरा, दाढ़ी-मुँछ का नाम नहीं । अमी उठती जवानी है । शेर कहने में, ब्ोलचाल में, इल्म व कमाल में अपना सानी नहीं रखते । तसबीर ऐसी खींचने कि बोल उठे | बाँक-पटे में अच्छे-अच्छे बाँकों के दाँत खट्टे कर दिये। उनकी नस नस में खजियाँ कूट-कूट कर भरी हैँ । अगर हुस्नआरा के साथ उनका निकाह हो जाय, तो खत दो । पहले तुम देख लो । अगर पसंद आये, तो तुम्दारी माँ से ।ज़क्र करूँ | हाँ,

यद्द वही जवान हैं, हो बजरे के साथ तुमको देखते हुए बार में जा रदे थे | याद आया !

हुस्नआरा--वहाँ तो बहुत से आदमी थे, क्या जाने, क्रिसको कद्द ते हो | वेदेखे-भाले कोई क्या कहे |

सिपहआरा--मतलल्ूब यह कि दिखा दो । भत्ता देखें तो, हैं केसे !

पीरबख्श--ऐसे जवान ते हमने आज तक कभी देखे न थे। वह नूर है कि निगाह नहीं ठहरती | क़सम खूदा की, जो बात करे, रीक्ष जाय ।

हुस्नआ/ःरा--हम बतावे, जब हम बजरों पर हवा खाने चढें तो उन्हें भी वहाँ लाओ १ हम उनको देख ७, तब तुम अम्माँ से कहो |

यहाँ ये बातें हो रही थीं, उधर मियाँ आज़ाद अपने हँसोड़ दोस्त के साथ इसी कोठी को तरफ़ ग्हलते चले आ रहे थे। गस्स्ते में आठ-दस गधे मिले | गधेवाला उन सब्रों पर कोडे फटकार रहा था। »ाज़ाद ने कदह्दा-- क्यों भई, आखिर इन गधों ने तुम्हारा क्या जिगाड़ा है, जो पीटते जाते हो ! कुछ खुदा का भी खौफ़ है, या नहीं ! गधेवाले ने इसका तो कुछ जवाब न दिया, गद से एक और जमायी | तत्न तो मियाँ आजाद आग हो गये | बढ़ कर गधेवाले के कई चोंट लगाये, अबे श्वाखिर इनमें जान है या नहीं! अगर न चलते, तो इम कहते--स्रैर यों ही सही; खासे जा रहे हैं

खटाखट, और आप पीट रहे हैं । हँसोड--आप कोन होते हैँ बोलनेवाले ! उसके गधे हैं, जो चाहता है, करता है ।

आज़ाद--भई, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि किसी बेज़बान पर कोई आदमी जुल्म करे और हम बैठे देखा करें ।

कोई दस हो क़दम आगे बढ़े होंगे कि देखा, एक चिड़ीमार कंपे में लासा लगाये टट्टी पर फ्ते जमाये चिड़ियों को पकड़ता फिरता हे । मियाँ आजाद आग भभूका हो गये | इतने में शक तोता जाल में आ फँसा । तब रो मि्याँ आजाद बौखला गये | गुल प्रचा कर कहा--ओ चिडीमार, छोड़ दे इस तोते को, अभी-अभी छोड़ । छोड़ता है या आऊँ ! चिडीमार दृका-बक्का हो गया। बोला--साहब, यद्द तो इमारा पेशा है | आखिर इसको छोड दें, तो करें फिर कया ! आज़ाद बोले--भीख माँग, मज़दुरी कर मगर यह पेशा छोड दे । यह कद्द कर आपने झोला, कंपा, जाल, सब्र छीन-छान लियां । झोले को जो खोला तो, सब जानवर फुर से उड़ गये। इतना ही नहीं, कंपे को काट-कूट कर फेफा, जाल को नोच-नाच कर बराचर क्रिया । तब जेब से निकाल कर दस रुपये चिड्ठीमार को दिये और बड़ी देर तक समझाया | ईस।ड--यार, तुम बड़े बेटनर आदमी हो | मुझे तो ऐसा माद्म होता है कि तुम सनक गये हो | आजाद--भई, तुम समझते ही नहीं कि मेरा असर मतलब क्या है ! हैँ सो इ---आप अपना मतलब रहने दीज्िए । मेरा-आपका साथ न द्वोगा । कहीं आप किसी बिगड़े-दिल से भिड़ पड़े, तो आपके साथ मेरी भी शामत आ जायगी | आज़ाद--अच्छा, गुस्से को थूक दीजिए | चलिए हमारे साथ । हँसोड--अब तो रास्ते में न लड़ पड़िएगा ! आजाद --कद्ट तो दिया कि नहद्ीं। दोनों आदमी आगे चले, तो क्या देखते हैं, राह्द में एक गाड़ीबान बैल की दुम ऐंट रहा है। आजाद ने ललकारा--अबे ओ गाड़ीवान, खबरदार, जो आजन्न से बैल की दुम ऐंटी । हँसोड---फिर वही बात | इतनी जढ्दी भूल गये १ आज़ाद चुप हो गये । दोनों आदमी चुपचाप चलने लगे । थोड़ी देर में कोठी

के करीब जा पहुँचे । एकाएक बूढ़े मियाँ पोरबज्श आते रिखायी दिये। अलेकसलेम के बाद बातें दोने लगीं | आजञाद---कद्दिए, उधर भी गये थे १ पीरबर्श--हाँ साहब, गया क्यों न था। सबेरें-सबेरे जा पहुँचा और आपकी इतनी तारीफ़ की कि पुल बाँध रिये | ओर फिर आप जानिए,, गोकि बंदा आलिम नहीं, फ़ाज़िल नहीं, मुंशी नहों, लेकिन बड़े-बड़े आलिमों की आँखें तो देखी हैं, ऐसी छच्छेदार बातें कीं कि आपका रंग जम गया । अब आपको देखने को बेक़रार हैं । हाँ, एक बुरी पख यह है कि आपका इम्तिहान लेंगी। ऐसा न हो कि वद्द कुछ पूछ बैठें और आप बग़लें झाँकने लगें। ईंसोड -भई, इम्तिहान का तो नाम बुरा । शायद रह गये, तो फिर १ आजाद -फिर आपका सिर ! रह जाने की एक ही कहद्दी । इप्तिहान के नाम से आप जैपे गौलों की जान निकलती है या मेरी ! पीरबख्श --तो में जा कर कद्द दूँ कि वह आये हैं । यह कह कर पीरबरूश घर में गये और कद्ा--बह आये हैं, कद्दो, तो बुछा लाऊँ। घिपद्दआरा ने कद्दा--अजनबी का खट से घर में चला आना बुरा | पहले उनसे कहिए, चल कर बाग़ की सैर करें । पीर्रख्श बाहर गये ओर मियाँ आज़ाद को ले कर बाग़ में ८दलने छगे। दोनों बहनें झरोखों से देखने लगीं। -सिशक्आरा बोली--बहन, सचमुच यह तो तुम्दारे लायक हैं। अल्लाह ने यह जोड़ी अपने द्वाथों से बनायी है । हुस्नआरा--ऐं. वाह, कैसी नादान हो ! भला शादी-ब्याह भी यों हुआ करते हैं !

सिपहआरा-मैं एक न मादूँगी ।

हुस्नआरा--मुझसे क्यों झगड़ती दो, अम्माँजान से कद्दो ।

सिपदआरा-- अच्छा, तो मैं अम्माँगान के यहाँ जाती हूँ; मगर देखिए, मुकर न जाइएगा ।

यह कहकर सिपहआरो बड़ी बेगम के पास पहुँची और आजाद का जिक्र छेड़ कर बोली--अम्माँजान, मैंने तो आज तक ऐसा खूबसूरत आदमी देखा ही नहीं । शरीफ़, दँसमुख और पंढे-लिखे । आप मी एक दफ़े देख लें।

बड़ी बेगम ने सिपहआरा को छाती से लगाया और हँस कर कद्दा--तू मुझसे उड़ती दै १ यद्द क्यों नहीं कहती कि घछिखायी पढ़ायी आयी हूँ ।

सिपहआरा--नहीं अम्माजान, आप उन्हें जरूर बुलायें।

बेगम --हुस्नआरा से भी पूछा ! वद क्या कहती हैं !

सिपहआरा--ब्रह तो कहती हैं, अम्माँजान जिससे चाहें, उससे करें। मगर दिल उनका आया हुआ दै।

बेगम--अच्छा, बुलवा लो ।

सिपहआरा वहाँ से लोटी, तो मारे खुशी के उछली पड़ती थी। फ़ोरन पीरबख्दय को बुला कर कद्ा--आप मियाँ आज़ाद को अन्दर लाइए। अम्माँजान उन्हें देखना चाहती हैं |

जग देर में पीरबझख्श मियाँ आजाद को लिये हुए बेगम के पास पहुँचे ।

आजाद--आदाब बजा छाता हूँ।

बेगम--जीते रहो बेश) आओ, इधर आकर ब्रेठों। मिजाज तो अच्छे हैं ! सिपहआरा तुम्हारी बड़ी तारीफ़ करती थी, और बेशक़ तुम द्वो इस लायक्। तुमको देख कर तबीयत बहुत खुश हुई !

आजाद--आपकी जियारत का बहुत दिनों से शौक़ था । सच है, बड़े-बूदों की क्या बात है !

बेगम -- क्यों बेटा, हाथी को ख्वात्र में देखे, तो केसा !

आज़ाद--बहुत बुरा । मगर हाँ, अगर द्वाथी किसी पर अपनी सूँड फेर रहा हो, तो समझना चाहिए कि आयी हुई बला टल गयी ।

बेगम-- शाबाश, तुम बड़े लयक़ हो |

बेगम साइबर ने मियाँ आज़ाद को बड़ी देर तक बिठाया और साथ ही. खाना खिलाया । आज़ाद हाँ में हाँ मिलाते जाते थे और हिल ही दिल में खिलखिलाते थे | जब शाम हुई, तो आज्ञाद रुखसत हुए।

आसमान पर बादल छाये हुए थे, तेज इवा चल रही थी, मगर दोनों बहनों को बजरे पर सैर करने की धुन समायी। दरिया के किनारे आ पहुँचीं। पीरबख्श ने बजरा खोला और दोनों बदनों को बिझाः कर सैर कराने छगे । बजरा बहाव पर फर्रटे से बदा जाता था। ठंडी-टंडी हवा. काली-काली घटाएँ, सिपह्आरा की प्यारी-प्यारी बातें, बूँदों का गिरना, लहरों का थिरकना अज़ब बहार दिखाता था। इतने में दवा ने बह जोर बाँधा कि मेदा उछलने लगा। अब बजरे कि यद्द हालत है कि डॉवाडोल हो रहा है। यह ड्ूरत्रा, वह डूबा | पीरबरूदा था तो खुर्राण, लेकिन उसके भी हाथ-पाँव फूल गये, सैर-दरिया की कहानियाँ सब्र भूल गये । दोनों बहने काँपने छगीं । एक दूसरे को हसरत की निगाह से देखने लगीं। दो की दोनों रो रही थीं । मियोँ >ज़ाद अभी तक दरिया के किनारे टहल रहे थे। बजरे को पानी में चक्कर खाते देखा, तो होश उड़ गये। इतने म एक दफ़े ब्रिजी चमकी। सिपहआरा डर कर दौड़ी, मरार मारे घबराहट के नदी में गिर पड़ी । ड्बते ह्वी पहले गोता खाया और ढगी द्वाय-पाँव फटफटाने । ज़रा देर के बाद फिर उभरी और फिर गोता खाया । आज्ञाद ने यह कैफ़ियत देखी, तो झटपट कपड़े उतार कर धम से कूद ही तो पढ़े । पहली डुबकी मारी, तो सिपाहआरा के बाल हाथ में आये। उन्होंने झप से जल्फ़ को पकड़कर खींचा, तो वह उभरी। यह वही सिपहआरा है, जो किसी अनजान आदमी को देख कर मुँह छिपा लेती और फुर्तों से भाग जाती थी। मियाँ आजाद उसे साथ लिये, माही चीरते और खड़ी लगाते बजरे की तरफ चले । छेकिन बजरा हवा से बातें करता चला जाता था। पानी बल्लियों उछलता था। आज्ञाद ने जार से पुकारा--ओ मियाँ पीरबख्श, बजरा रोको, खदा के वास्ते रोको, पीरबरख्श के होश-हवाश उड़े हुए थे । बजरा ख़दा की राह पर जिधर चाहता था, जाता था । प्रियाँ आज़ाद बहुत अच्छे तैराक थे; लेकिन बरसों से आदत छुटी हुई थी। दम फूल गया इस्तिफ़ाक़ से एक मैंवर में पड़ गये । बहुत ज़ोर मारा, मगर एक न चल सकी | उस पर एक मुसीत्रत यह »र हुई कि सिपद्दआरा छूट गयी। आज़ाद की आँखों से *सू निकल पड़े । फिर बड़ी फुर्ता से झपटे, छाश को उमारा और लादकर चले । मगर अब देखते हैं, तो बजरे का कहीं पता ही नहीं। दिल में सोचे, बजरा दूत गया और हुस्नआश रूद्दरों का लक़मा बन भयो। अब मैं सिपहआरा को दे-लादे कहाँ तक जाऊँ। लेकिन दिल में ठान ली कि चाहे बचूँ, चाहे डूबूँ, सिपह-आरा को न छोड़ूंगा। फिर चिल्लाये--यारो, कोई मदद को आओ। एक बुद्ढा आदमी किनारे पर खड्डा यह नज़ाश देख रहा था । आज्ञाद को इस हालत में देख-कर आवाज दी--शाबाश बेटा, शात्राश | में अभी आता हूँ। यह कह कर उसने कपड़े उतारे और लँगोट बाँध कर धम से कूद ही तो पड़ा। उसकी आवाज का मुनना,या कि मियाँ आज़ाद को दारस हुआ, वह्द तेज़ी के

साथ चलने लगे । बुडें आदमी ने दो ही हाथ खड़ी के लगाये थे कि साँस फूछ गयी और पानी ने इस जोर में यपेड़ा दिया कि पचास ग़ज़ के फ़ासले पर हो रहा। अब न आज़ाद को वह सूझता है और न उसको आज़ाद नज़र आते हैं। मलाह ने बजरे पर से बुद्डे को देख लिबा | समझा कि मिर्यों आज़ाद हैं। पुकारा--अरे भई आजाद, जोर करके इधर आओ | बुद्डें ने बहुत हाय-पैर मारे, मगर न जा सका। तथ पीरबर्श ने डॉड़ सेंभाले और बुद्े की तरफ चले। मगर अफ़सोस, दो-चार ही हाथ रह गया था कि एक मगर ने भाड़ सा मुँह खोल कर बुडढे को निगल लिया । मछाह ने सिर पीटकर रोना शुरू किया--हाय आज्ञाद, तुम भी जुदा हुए, बेचारी सिपहआरा का साथ दिया, यह आवाज़ मिर्यों आज्ञाद के कानों में मी पड़ी। समझे, वही बुड़टा, जो टीले पर से कूदा था, चिल्ला रहा है। इतने में बजरा नज़र आया तो बार-बार हो गये । अब यह बिलकुल बेदम हो चुके थे; लेकिन बजरे को देखते ही हिम्मत बैंध गयी | ज़ोर से खड़ी लगानी शुरू की। बज्रे के क़रीब आये, तो पीरबख्श ने पह-चाना। मारे खुशी के तालियाँ बजाने छगे। आज़ाद ने सिपहआरा को बच्चरे में लिटा दिया ओर दोनों ने मिल कर उसके पेट से पानी निकाला | फिर लिया कर अपने बैग में से कोई दवा निकाली और उसे पिला दी। अब हुस्नआरा की फ़िक्र हुई | वह बेचारी बेहोश पड़ी हुई थी। आजाद ने उसके मुँह पर पानी के छींटे दिये, तो ज़रा होश आया । मगर आँखें बंद । द्ोश आते ही पूछा - प्यारी सिपहआरा कहाँ है ! आजाद जीते बचे १ पीरबररूश ने पुकार कर कहा--आज़ाद तुम्हारे सिरहाने बैंटे हैं और पिपआरा तुम्हारे पास लेटी हैं। इतना सुनना था कि हुस्नआरा ने आँख खोली और आज़ाद को देख कर बोली--आजाद, मेरी जान अगर तुम पर से फ़िदा हो जाय, तो इस वक्त मुझे उससे ज्यादा खशी हो, जितनी सिपहआरा के बच जाने से हुई | में सच्चे दिल से कहती हूँ, मुझे तुमसे सची मुहब्बत है |

इतने में दवा का असर जो पहुँचा, तो सिपहआरा भी अहिस्ता से उठ बैठी | दोनों बहने गले मिल कर रोने लगीं। हुस्नआरा बार-बार आज़ाद की बलाएँ लेती थी। मैं ठम पर वारी हो जाऊँ, ठमने आज वह किया, जो दूसरा कभी न करता ' हवा बंध गयी थी, बजरा आहिस्ता-आहिस्ता किनारे पर आ लगा । आज़ाद ने घास पर लेट कर कहा | उफ़, मर मिटे !

हुस्नआरा--बेशक सिपहआग की ज्ञान बचायी, मेरी जान बचायी, इस बेचारे बुद्रे की ज्ञान बचायी | इससे बढ कर अग्र और क्या होगा !

पीरबख्श --मिर्यों आज्ञाद, खुदा तुमको ऐसा बुड्ा करे क्रि तुम्हारे परपोते मुझसे बड़े दो-होकर तुम्हारे सामने खेलें। मेंने कुछ और ही समझा था | एक आदमी तैरता हुआ जाता था। मैंने समझा, तुम हो ।

आज्ञाट-हाँ, हाँ, मैं तो उसे भूल ही गया था | फिर वह कहाँ गया १

पीरबख्श--क्था कहूँ, उसको तो एक मगर निगल गया ।

आज्ञाद--अफ़सोस ! कितना दिलेर आदमी था। मुझे मुसीबत में देख कर धम से कूद पड़ा ।

सिपदआरा -मुझ नसीबों-जछी के कारन उस बेचारे की जान मुफ़्त में गयी । मेरी आँखों में अँधेरा सा छाया हुआ है । इस दरिया का सत्यानाश द्वो जाय | जिस वक्त में अपना गिरना और सोते छगाना याद करती हूँ, तो रोएँ खड़े हो जाते हैं । पहले तो मेंने खूब हाथ पाँव मारे, मगर जब नीचे बैठ गयी तो मुँह में पानी जाने छगा। मैंने दोनों दवाथों से मुँह बेद कर लिया | फिर मुझने कुछ याद नहीं ।

हुस्तआरा--जड़े गाढ़े वक़्त काम आये |

पीरबख्श--अब आप जरा सो रहिएगा, तो थकावट कम हो जायगी ।

तीनों आदमी थक कर चूर दो गये थे । वह्दीं दरी-हरी घास पर लेटे, तो तीनों की आँख लग गयी । चार घंटे तक ठतोते रहे | जब नींद खुली, तो घर चलने की ठद्दरी । पीरबख्श ने कद्दा--इस वक्त् तो बजरे पर सवार होना दिमाक़त है | सड़क-सड्क चलें।

आजाद--अजी, ते! क्या हर दम तूफ़ान आया करता है |

दोनों बहनों ने कद -हम तो इस वक्त बजरे पर न चढ़ेंगे, चादे इधर की दुनिया उधर हो जाय |

आज़ाद ने कद्दा--जो इस वक्तु झिझ्क गयीं, तो उम्र भर खोौफ़ लगता रहेगा ।

हुस्नआरा--चलिए, रहने दीजिए, अब तो मारे थकाबट के आपके बदन में इतनी ताक़त भी नहीं रही होगी कि किसी की लाश को दो क्रदम भी ले चलिए. । ना साहब, बंदी नहीं जाने की । बजरे की सूरत देखने से बदन काँपता है । हम वुम्हें भी न जाने देंगे।

सिपहआरा--आप बजरे पर बैठे, और इम इधर दरिया में फाँद पड़े !

आखिर यह तय हुआ कि पीरत्ररुश बजरा छायें और तीनों आदमी ऊपर-ऊपर घर की तरफ़ चले ।

आज़ाद ने मौका पाया, तो बोले--अब तो इमसे कभी परदा न होगा ! हम आपको अपना दिल दे चुके | हुस्नआरा ने कुछ जवाब न दिया, शरमा कर सिर झुका लिया ।

रात बहुत ज्यादा ब्रीत गयी थी। आजाद पीरबख्दा के साथ सोये। सुबह को उठे, तो क्या देखते हैं, हुस्नआरा के साथ उनकी दो फुफेरी बहनें छप्राछम करती चली आती हैं। एक का नाम जहानआरा था, दुसरी का गेतीआरा। दोनों बहनों ने आज़ाद को झरोखे से देखा। तब्र जद्दानआरा हुस्नआरा से बोली--बहन, तुम्हारी पसंद की में कायल हो गयी | ऐसा बाँका जवान हमारी नज़र से नहीं. गुजरा ।

सिपहआरा--हम कद्दते न ये कि मिर्यों आज़ाद सा तरहदार जवान कम होगा । फिर, मेरी तो उन्होंने जान ही बचायी है।जब तक जिऊँगी, तब तक उनका दम भरूँगी।

इतने में पीरबख्ग भी आ पहुँचे। जहानआरा ने उनसे कद्दा-क्यों जी, इन सन से सफेद बालों में खिलाब क्यों नहीं लगाते ! अब तो आप कोई दो सौ से ऊपर होंगे | क्या मरना बिलकुल भूल बैठे ! तुम्हें तो मौत ने भी साँड़ की तरह छोड़ दिया !

पीरबख्श--बेटी, बहुत कट गयी, थोड़ी बाक़ी है ! यह मी कट जायगी। खिजाब लगा कर रूसियाह कोन द्वो !

सिपदआरा- आजाद से तो-अब कोई परदा है नहीं | उन्हें भी न बुला लें !

गेतीआरा--कमी को जान-पदचान द्ोती, तो मुज़ायक़ा न था ।

आजाद ने सामने से आकर कहा--फ़क़ीरों से भी जान-पहचान की जरूरत ! फ़क्कीरों से कैसा परदा !

गेतीआरा--यह फ़क्ीर आप कत्र से हुए !

आज्ाद--जब से हसीनों की सोहबत हुई । गेतीआरा--आप शायर भी तो हैं | अगर तत्रीयत हाजिर हो,

तो इस मिसरे पर एक ग़ज़ल कहिए--- मरजें-इश्क लछादवा देखा | आज्ाद-- तबीयत की तो न पूछिए, हर वक़्त हाजिर रहती है; रहा दिमारा, वह अपने में नहीं । फिर भी आपका हुक्म केसे टाढूँ। सुनिए-- शेख, काबे में तूने क्या देखा; हम बुतों से मिले; खुदा देखा | सोज-नाछा ने कुछ असर न किया; हमने यह साज् भी बजा देखा। आह ने मेरी कुछ न काम किया; हमने यह तीर भी छगा देखा। हर मरज् की दवा मुक़रर है. मरजे-इश्क़ लादवा देखा | शकले नाखुन हे गरचे अबरुए-यार ; पर न इसको गिरहकुशा देखा। हमने देखा न आशिके आज़ाद ; और जो देखा तो मुब्तिला देखा!

गेतोआरा--माशा-अल्लाह, केसी हजिर तबीयत !

आज़ाद--इन्साफ के तो यहद्द माने हैं कि मेंने आपको खश किया, अब आप मुझको खुश करे |

गेतीआरा--आप कुछ फ़र्माएँ, में कोशिश करूँगी।

मा तो मेरी सूरत ही से ज़ाहिर है कि अपना दिल हुस्नआरा को दे चुका हूँ ।

गेतीआरा--क्यों हुस् आरा, मान क्यों नहीं जातीं ! यह बेचारे तुम्हें अपना दिल दे चुके ।

हुस्नआरा--ताह, क्या सिफ़ारिश है ! क्यों मान ले, शादी भी कोई दिलगी हे ! मैं बेसमझे-बूसे हाँ न करूँगो | घुनिए साहब, में आप की अदा, आपकी वफ़ा, आपकी चाल-ढाल, आपकी लियाक़त और दराफ़त पर दिल और जान से आशिक हूँ; मगर यह याद रखिए, मैं ऐसा काम नहीं करना चाहे, जिससे पढ़ी-लिखी औरत बदनाम हों । हमें ऐसा चाल-चलन रखना चाहिए, जो औरों के लिए नमूना हो। इस शहर की सब औरतें मुझे देखती रददती हैं कि यह किस तरफ़ को जाती है। आपको कोई यहाँ जानता नहीं। आप पहले यहाँ शरीफ़ों में इज्ज़त पेदा कीजिए, आपके यहाँ पंद्रहयं दिन मुशायरा हो और छोग आपभो जाने। कोई कोठी किराये पर लीजिए ओर उसे खूब सजाइए, ताकि लोग समझें कि सर्ख के का आदमी है और रोटियों को मुहताज नहीं। दारीफ़ज़ादों के सिवा ऐरों-गेरों से सोहबत न रखिए और हर रोज़ जुमा की नमाज़ पढने के लिए मसजिद जाया कीजिए ! लेकिन दिखावा भी ज़रूरी है। एक सवारी भी रखिए और सुत्रह-शाम हवा खाने जाइए, अगर इन बातों को आप मानें, तों मुझे शादी करने में कुछ उज्र नहीं | यों तो मैं आपके एह-सान से दबी हुई हूँ, लेकिन आप समझदार आदमी हैं, इसलिए मैंने साफ़-साफ़ समझा दिया ।

आजाद--रेसे समझदार होने से बाज़ आये | हम रॉवार ही सही। आपने जो कुछ कहा, सब हमें मंजूर है; लेकिन आप भी मुझे कभी-कभी यहाँ तक आने की इजाजत दीजिए और आपकी ये बहने मुझसे मिला करें |

गेतीआरा--जरी फिर तो कहिएगा ! आपको अपनी हुस्नआरा से काम है, या उनकी बहनों से ! हुस्नआरा ने आपसे जो कुछ कहा, उसको गौर कीजिए | अभी जल्दी न कीजिए | आप शरात्र तो नहीं पीते !

आजाद---शरात्र की सूरत और नाम से नफरत है ।

हुस्तआरा--फिर आपके पास बज़रे पर कहाँ से आयी, जो आपने सिपदहआरा को पिशयी ।

आजाद--वबाह, वह तो दवा थी ।

जहानआरा--ऐ, बाजी, भेया कब्र से सो रहा है। जरा जगा दो। दो घड़ी खेलने को जी चाहता है ।

गेतीआरा--ना, कद्दी ऐसा राज़ब भी न करना । बच्चे जब्र सोते हों, तो उनको जगाना न चाहिए । उनको जगाना उनकी बाद को रोकना है ।

हुस्नआरा--इस वक़्त हवा बड़े जोर से चल रही है और तुमने भैया को बारीक शरबती पहना दी है। ऐ दिलबहार, फलालेन का कुर्ता नीचे पहना दो । यद्द रुएया कौन भैया के हाथ में दे गया ? और जो खेलते-खेलते मुँह में ले जाय तो १

दिलबहार--ऐ: हुजूर, छीन तो ढूँ, जन्न बढ़ दे मी | वह तो रोने छगता है ।

हुस्नआरा-देखो, हम किस तरक्ीब्र से ले लेत हैं, भला रोवे तो, (चुमकार कर) भैया, (तालियाँ बजा कर) भैया, ला, ठुझ्े चीज मँगा दूँ ।

यह कह कर हुस्नआरा ने छड़के को गुदगुदाया । लड़का हँस पड़ा और रुपया हाथ से अलग ।

दिलबहर--मौसी को केसे चुपचुपाते रुपया दे दिया और इमने द्वाथ द्वी लगाया था कि गुल मचाने लगा |

गेतीआग--उम्र भर तुमने लड़के पाले, मगर पालना न आया। बच्चों का पालना कुछ हँसी-खेल थोड़े ही है।

दिलबहार---अभी मेरा सिन ही क्या है कि ये बातें जानूँ |

गेतीआरा--देखो, रात को दरणत के तले बच्चे को न सुलाया करो। बच्चा बीमार हो जाता है ।

दिलबहार--हाँ, घुना है, छड़के भूत-प्रेत के श्पेट में आ जाते हैं |

हुस्नआरा-- झपेट और भूत-प्रेत सत्र दकोसछा है। रात को दरख्त के नीचे सोना इसलिए बुरा है कि रात को दरख्त से जहरीली हवा निकलती है।

इधर तो ये बातें ह्वो रही थीं, औरतों की ताढीम का ज़िक्र छिड़ा हुआ था,, दुस्नआरा औरतों क्री तालीम पर जोर दे रही थी, उधर मिर्यों पीरबज़ौ्श को बाल बनवाने का शौर्क जो चरोया, तो इजाम को बुलवाया | इजाम बाल बनाते-बनाते कहने लछगा-- हुजूर, एक दिन में सराय में गया था, तो वहाँ यह भी टिके हुए थे-- यही जो जवान से हैं, गोरे-गोरे, बजरे पर सैर करने गये थे--हाँ, याद आ गया मियाँ आजाद, वह भी वहाँ मिले। वह साहब तुम्हारे, उस सराय की मठियारी से" शादी करने को थे, मुठ फिर निकल गये। उसने इन पर नालिश जड़ दी, तो बढ से भागे । उस भठियारी को ऊँट पर सवार करके रात को लिये फिरते ये । पीरबख्दा ने यह किस्सा सुना, तो सज्नाटे में आ गये। बोले--ख़ब्रद/र, और किसी से न कहना |

HINDI TEXT

प्रसंग २५

मियाँ आजाद हुस्नआरा के यहाँ से चले, तो घूमते-घामते हँसोड़ के मकान पर पहुँचे और पुकारा | लोंडी बोली कि वह तो कहीं गये हैं, आप बैठिए ।

आज़ाद--भाभी साहब से हमारी बंदगी कह दो और कहो, मिज़ाज पूछते हैं।

लौंडी--बेगम साहबा सलाम कहती हैं और फ़र्माती हैं कि कहाँ रदे !

आजाद--श्धर-उधर मारा-मारा फिरता था |

लोंडो--वह कहती हैं, हमसे बहुत न उड़िए । यहाँ कच्ची गोलियाँ नहीं खेलों । कह्िए,, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी हे। यह बजरे पर हवा खाना और यहाँ आ कर बुत्ते बताना ।

आज्ाद--आपसे यह कोन कच्चा चिटद्ठा कह गया !

लॉडी--कइती हैं कि मुझसे भी परदा है ! इतना तो बता दीजिए कि बरात किस दिन चढ़ेगी ! हमने सुना है, हुस्नआरा आप पर बेतरह रीक्ष गयीं। और, क्यों न रीसें, आप भी तो माशाअल्ाह गत्ररू जवान हैं ।

आजाद--फिर भाई किसके हैं, जैसे वह खबयूरत, वैसे हम ।

छोडी-फ़र्माती हैं कि धोंधली रहने दीजिए ।

आजाद--भाभी साहब, यह घूँघट केसा १ हमसे केसा परदा !

इतने में किसी ने पीछे से मियाँ आज़ाद की ओंखें बंद कर लीं ।

आज़ाद चिल्ला उठे--भाई साहब |

इँसोड-- वहाँ तो आपने खब रंग जमाया ।

आजाद--अजी, आपकी दुआ है, में भला क्या रंग जमाता । मगर दोनों बहनें एक से एक बढ़ कर हैं। हुस्नआरा की दो बहनें और आयी थीं। वल्लाह, खब-मज़े रहे ।

ईंसोड--ख़शनसीब हो भाई, जहाँ जाते हो, वहीं पौ-बारदद होते हैं। वल्लाह, मान गया |

आज़ाद--मगर भाई, एक ग़लछती हो गयी । उन्होंने किसी तरह भाँप लिया कि में शरात्र भी पीता हूँ ।

हंछोड--बड़े अहमक़ हो भई, कोई ऐसी हरकत करता है। तुम्हारी यूरत से नफ़-रत हो गयी ।

आजाद--अजी, मुझे तो अपनी सूरत से आप नफ़रत द्वो गयी । मगर अनत्र कुछ तदबीर तो बताओ १

ईसोड--उसी बुड़ढे को साँटो, तो काम चछे |

इस क्ज़त दोनों आदमी खाना खा कर लेटे । बब शाम हुई, तो दोनों हुश्नआरा की तरफ़ चले | भरी बरसात के दिन, कोई गोली के टप्पे पर गये होंगे कि पश्चिम की तरफ़ से मतवाली काली घद्ा श्रुमती हुई आयी और दम के दम में चारों तरफ़ अँधघेरा छा गया | दुकानदार दुकानें श्रूपट बंद करने लगे। खोंचेवालों ने खोंचा सैंभाला, और लंबे हुए । कोई टट्ट को सोंटे पर सोंटा छगाता है; किसी का बैल दुम दबाये भागा जाता

है । कदहार पालकी उठाये, क़दम जमाये उड़े जाते हैं, ददने जंगी बायें चरखा-हँ-हूँ-हूँ । पैदल चलनेवाऊे तेज कदम उठाते हैं, पाँयचे चढाते हैं। किसी ने जूतियाँ बग़ल में दबायीं और सरपट मागा। किसी ने कमर कसी और घो& को एँड दी | अँपेरा इस ग़ज़ब का है कि राह सूझती ही नहीं, एक पर एक भद-भद करके गिरता है ओर मियाँ आज़ाद क़हक़हे लगाते हैं | क्यों दृब्रत, पूछना न पाछना और धमाक से छुद्क जाना |

आजाद--बस, और थोड़ी दूर रह गया है ।

ईसोड--आपको थोड़ी दुर होगा, यहाँ तो कदम भर चलना मुश्किल हो रहा है। जरी देख-भाल कर कदम उठाइएगा । उफ् , दवा ने क्या जोर बाँचा, मैं तो बल्लाह, काँपने लगा | अगर सलाह हो, घर पलट चलें। वह लीजिए, बूँदें भो पढ़ने लगीं । किसी भमले-मानुस के पास जाने का भल्ण यह कोन मौक़ा दे।

आज़ाद--अर्जी, ये बातें उससे कीजिए, जो अपने होश में हो । यहाँ तो दीवाना-पन सवार है ।

इतने में बड़ी बेगम का महल नज़र पड़ा । आश्ाद ने मारे खर्शी के गोपी उछाल दी । तब तो हँसोढ़ ने बिगड़ कर उसे एक अंधे कुएँ में फेक दिया और कद्दा--बस तुममें यद्दी तो ऐब है कि अपने आपे में नहीं रहते । “भोछे के घर तीतर, बाहर रखे कि मीतर !?

आजाद--या तंग न कर नासेह नादोँ, मुझे इतना,

या लाके दिखा दे दहन ऐसा, कमर ऐसी ।

तुम रूखे-फीके आदमी, चेहरे पर भूसा उड़ रह्दा है| तुम ये मुहब्बत की बातें क्या जानो !

जब्न महल के क़रीब पहुँचे, तो चौकीदार ने ललकारा- कौन ! मियोँ हँसोड़ तो झिश्चके, मगर, आज़ाद ने बढ़ कर कहा--हम हैं, हम ।

चौकीदार--अजी, हम का नाम तो फ़र्माइए, या ठंडी-ठंडी हवा खाइए |

आजाद--हम ! हमारा नाम मियोँ आज़ाद है। तुम दिल्बहार को इचिला कर दो |

खैर, किसी तरह आजाद अंदर पहुँचे । बुस्नआरा उस वक़्त सो रही थीं और सिपहआरा बैठी एक शायर का दीवान पढ़ रही थी . आज़ाद की खबर मुनते ही बोली--कहाँ हैं कहाँ, बुत्म छाओ । पियाँ आजाद मकान में दाखिल हुए ।

सिपहआरा--बह आयें घर में हमारे

खुदा की कुदरत है कभी हम उनको, कभी अपने धर को देखते हैं।

आजाद--यह रूखी खातिरदारी कब तक होगी ! हमें दृल्हा भाई कब से कंहिएग ! सिपहआरा--खदा वह दिन दिखाये तो |

आजाद--आपकोी बाजी कहाँ हें !

सिपहआरा--आज कुछ तबीयत नासाज़ है। दिल्वहार, जगा दो + कहो मियों

आजद आये हैं | शा 8 अँगड़ाई लेती अठखेलियाँ करती चलीं और आजाद के क़रीब आ कर गयीं |

आज़ाद-- इस वक़्त हमारे दिल की कली खिल गयी ।

सिपहआरा - क्यों नहीं, फिर मुँह-माँगी मुराद भी तो मिल गयी।

आज़ाद--आखिर अब हम कब्र तक तरसा करें ! आज मैं बेकबुलवाये उठूँ, तो आज़ाद नहीं |

हुस्नआरा--हमारा तो इस वज़्त बुरा हाल है | नींद उमड़ी चली आती है। अब हमें सोने जाने दीजिए ।

आज़ाद---(दुपट्टा पाँव से दबाकर) हाँ, जाइए, आराम कोजिए |

हुस्नआरा--शरारत से आप बाज नहीं आते ! दामन तो .दबावै हैं और कहते हैं, जाइए-जाइए, क्योंकर जायें !

आजाद -- दुषट्टे को फेक जाइए ।

हुस्नआरा--बजा है,. यह किसी और को सिखाइए, (बैठकर) अब साफ़ कद्द दूँ।

आजाद--बरूर; मगर आपके तेवर इस वक़्त बेढब हैं, खुदा दी ख्वेर करे | जो कुछ कद्दना हो कद्ट डालिए । खुदा करे, मेरे मतलब की बात मुँद से निकले !

हुस्नआरा--आप लायक हैं, मगर एक परदेसी आदमी, ठौर न ठिकाना, धर न बार | किसी से आपका ज़िक्र 4.८, तो क्या कहूँ ? किसके लड़के हैं ! किसके पोते हैं ! किस खानदान के हैं ! शहर मर में यही खबर मशहूर दो जायगी कि हुस्नआरा ने एक परदेसी के साथ शादी कर ली | मुझे को इसकी परवा नहीं; लेकिन डर यह है कि कहीं इस निकाह से लोग पढी-छिखी ओरतों को नीची नज़र से न देखने लगे। बात वह करनी चाहिए कि धब्बा न छगे। मैं पढले मी कद चुकी हूँ और अब फिर कहती हूँ कि शहर में नाम पैदा कीजिए, श्जुत कमाइए, चार भले आदमियों में आपकी क़दर दो |

आज़ाद--कहि ए, आग में फाँद पड़े १

हुस्नआय-- माशा-अछाइ, कद्दी भी तो निराढी ! अगर आप आग में फाँद पड़े, तो लोग आपको सिड्धी समझेंगे ।

सिपहआरा--कोई किताब लिखिए !

हुस्नआरा--नहीं; कोई बद्ादुरी की दात हो कि जो सुने, वाह-वाह करने छगे, और फिर अच्छी अच्छी रईसज़!दियाँ चाहूँ कि उनके साथ मिर्यों आजाद का ब्याह हो जाय | एस वक़त मौका भी अन्छा है। रूम और रूस में लड़ाई छिडनेयाली है |

रूम को मदद करना आपका फ़ज़जें है। आप हूम की तरफ़ से लड़िए और ज़वाँमर्दी के जौहर दिखाइए, तमग्गे छटकाये हुए आइए, तो फिर हिंदोस्तान मर में आप ही की चर्चा हो । आजाद---मंजूर, दिलोजान से मंजुर । जाऊँ और बीच खेत जाऊँ। मरे, तो सीघे जन्नत में जायेंगे । बचे, तो तुमको पाये | सिपहआरा--मेरे तो छड़ाई के नाम से होश उड़े जाते हं। (हुस्नआरा से चिमट कर) बाजी, तुम कैसी बेदर्द हो, कहाँ काले कोठों भेजती हो ! तुम्हें ख़दा की कसम, इस खयाल से बाज़ आओ । आज़ाद जायेंगे, वो फ़िर उनकी सूरत देखने को तरस जञाओगी | दिन-रात आँसू बद्दाओगी । क्यों मुफ़्त में किसी की जान की दुश्मन हुई हो ! किनारे दरिया पहुँच के पानी पिया नहीं एक बूँद तिस पर , चढ़ी है मोज़ों की हमसे स्योरी हुबान आँखे बदल रहे हैं। यह कहदते-कहते शिपहआरा की आँखों से गोल-मोल आँसू की बुँदें गिरने लगीं । हुस्तआरा--हैं-हैं, बहन, यद्द मुफ़्त का रोना धोना अच्छा स्वॉग है, वह मुबारक दिन मेरी आँखों के सामने फिर रह्या है, जब

आज़ाद तमगे लटकाये हुए इमारे दर-वाड़े पर खडे होंगे | मियों आजाद पर इस वक्त वह जाबन था कि ओहोहो, जवानी फटी पड़ती थी । आँखें सुखे, जैसे कबूतर का खून; मुखड़ा गोरा, जैसे गुलाब का पूछ; कपड़े वह बाँके पहने थे कि सिर से पॉव तक एक-एक ंंग निखर गया था; टोपी वह बडी की बाक-पन भी छोट जाय; कमर से दोहरी तलवबारें लटकी हुई | हुस्नआरा को उनका चाँद सा मुखड़ा ऐसा भाया कि जी चाहा, इसी वक्त निकाह कर दूँ; मगर दिल पर ज़ब्त किया । आजाद--आज हम घर से मौत की तलाशी में ही निकले थे-- जब से सुना कि मरने का है नाम जिंदगी ; सिर से कफ़न को बाँधे क़ातिल को दूँदते हैं । सिपद्आरा--प्यारे आज़ाद, ख़दा के वास्ते इस खयाल से बाज़् आओ | आजाद--या हाँथ तोड़ जायेंगे, या खोलेंगे नक्रात्र | हुस्नआरा सी बीजी पाना दिछगी नहीं । अब दम फिर शादी का हर्फ़ भी जबान 'र छायें, तो जर्वोमद नहीं । अब हमारी इनकी शादी उसी रोज होगी, जब हम मैदान से सुखेरू हो कर छौटेंगे । हम सिर कटवायें, जख्म पर जख्म खायेंगे मगर मैदान से क्रम न दययेंगे '. सिपहआरा--जो आपने दालान तक भी क़दम रखा तो इम रो-रो कर जान दे देंगे। आजाद-तठुम घबराओ नहीं, जीते बचे, तो फिर आयेंगे। इमारे दिल से हुस्न आरा की और तुम्दारी मुहब्बत जाती रहे, यह मुश्किल है। तुम मेरी खातिर से रोना-घोना छोड़ दो । आखिर क्या छड़ाई में सब के सत्र मर दी जाते हैं !

सिपहआरा--इतनी दुर जा कर ऐसी ही तकदीर हो, तो आदमी लौटे । अब्न मेरी जिंदगी मुहाल है। मुझे दफ़ना के जाना । अल्लाह जाने, किन-किन जंगलों में रहोगे, कैसे-कैसे पहाड़ों पर चढ़ना होगा, कहाँ-कहाँ लड़ना-भिड़ना होगा | एक जशा सी गोली तो हाँथी का काम तमाम कर देती है, इन्सान की कोन कहे । तुम वहाँ गोलियाँ खाओगे और हम दिन-रात बैठे-बैंठे कुदा करेंगे | एक-एक दिन एक-एक बरस हो जाएगा ! और फिर क्या जाने, आओ न आओ, छड़ाई-चदाई पर जाना कुछ हँसी थोड़े ही है। यह तो तुम्हीं मरदों का काम है। इम तो यहीं से नाम सुन-सुन कर काँपते हैं ।

हुस्नआरा--मेरी प्यारी बहन, जरा सब्र से काम लो |

सिपहआरा --न मानूँगी, न मानूँगी ।

हुस्नआरा--सुन तो लो |

सिपदआरा--जी, बस, सुन चुकी | खून कीजिए, और कहिए, सुन तो लो |

हुस्नआरा--यह क्या बुरी-बुरी बातें मुँह से निकालती हो। हमें बुरा मालूम होता है। में उनक़ो जबरदस्ती थोड़े द्वी मेजती हूँ। वद्द तो आप जाते हैं|

सिप९आरा--समुंदर समुंदर जाना पड़ेगा | कोई तूफ़ान आ गया, तो जहाज़ ही हब जायगा ।

आजाद--अब रात ज्यादा आयी, आप लोग आराम करें, हम कल रात का यहाँ से कूच करेंगे |

सिपदआरा--इस तरह जाना था, तो हमारे पास दिल दुखाने आये क्यों थे ! (हाँय पकड़ कर) देखे , क्योंकर जाते हैं,

आजाद--दिलोजिगर खून द्वो चुके हैं|

हवास तक अपने जा चुके हैं ।

वही मुहब्बत का द्ोसला है,

हजार सदमे उठा चुके हें हुस्नआरा--द्वाय, किस गज़ब में जान पड़ी | हाथ पाँव टूटे जाते हैं, आँखें जल रही हैं | आजाद, अगर मुझे दुनियाँ में किसी की चाह है, तो तुम्हारी | लेकिन दिल से लंगी हे कि तुम रूसियों को नीचा दिखाओ । मरना-जीना मुक़दर के द्वाथ है । कौन रद्द है, ओर-कौन रदेगा !

ताज में बिनके टकते थे गौहर;

ठोकरें खाते हैं वद सर-ता-सर |

है न शीरी न कोहकन का पता ;

न किसी जा है नरू-दमन का पता;

यही दुनियाँ का कारखाना है;

यह उलट फेर का जमाना है।

आजाद- हम तो जाते हैं, तुम सिपहआरश को समझाती रहना | नहीं तो राह में मेरे कदम न उठेंगे । कल रात को मिल कर कूच करूँगा ।

हुस्नआरा--बहन, इनको जाने दो, कल आयेंगे |

सिपहआरा--जा इए, मैं आपको रोकनेवाली कौन !

आज़ाद यहाँ से चले कि सामने से मरियाँ चंड्रबाज़ आते हुए मिल गये । गले से लिपट कर बोले--वल्लाह, आँखे आपको द्ूँढ़ती थीं । यूरत देखने को तरस गये । वह जो चलते वक़्त आपने तान कर चाबुक जमाया था, उसका निशान अब तक बना है । बारे मिले खूब | बी अलारक्खी तो मर गयीं, बेचारी मरते वक़्त खदा की कसम अल्लाह-अल्लाइ कहा कीं ओर दम तोड़ने के पहले तीन दफ़ा आजाद-आजाद कह कर चल बसीं |

आज़ाद ने चंह्ृबाज़ की सूरत देखी, तो हाथ-पाँव फूछ गये | रूस का जाना और तमगे छटकाना भूल गये । सोचे, अब इजत खाक में मिली । लेकिन जब चंद्ूबाज़ ने बयान किया कि अलारक्खी चल बर्तीं और मरते वक़्त तक मेरे ही नाम की रट लगाती रहीं, तो बड़ा अफ़तोस हुआ । आँखों से आँयू बहने लगे। बोले--भाई, तुमने बुरी खबर सुनायी । द्वाय, मरते वक़्त दो बातें भी न करने पाये ।

चंड्बाज़--क्या अजे करूँ, क्तम खदा की, इस प्यार और इस हसरत से तुम्हें याद किया कि क्या कहूँ । मेरी तो रोते-रोते हिचकी बैंध गयी । ज़रा सा भी खटका होता तो कदृतीं--आज़ाद आये । आप अपना एक रूमाल वहाँ भूल आये हैं, उसको इर रोज देख लिया करती थीं, मरते वक्त कह्ा कि हमारी कत्र पर यह रूमाल रख देना।

आज्ाद--(रो कर) उफ , कलेजा मुँह को आता है। मुझे क्या मालूम या कि" उस ग़रीब को मुझसे इतनी मुहब्बत थी।

चंडबाज--एक गुलदस्ता अपने हाथ से बना कर दे गयी हैं कि अगर मियों आज़ाद आ जायें, तो उनको दे देना और कहना, अब हश्रन में आपकी खूरत देखेंगे ।

आज़ाद--मई, इसी वक़्त दो । ख़दा के वास्ते अभी लाओ। में तो मरा बेमौत लाओ, गुलदस्ता जरा चूम

ढूँ। आँखों से लगाऊं, गले से लगाऊं |

चंद्बाज़--(आँसू बहा कर) चलिए, में सराय में उतरा हुआ हूँ । गुलदस्ता साथ है। उसको जान से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ ।

दोनों आदमी मिल कर चले, राह में अलारक्खी के रूप-रंग और भोली-भोली बातों का जिक्र रहा । चलते-चलते दोनों सराय में दाखिल हुए | मियाँ आज़ाद जैसे ही चंड्ूबाज़ की फोठरी में घुप्के, तो क्या देखते हैं कि बी अलारक्खी बगले के पर जैता सफ़ेद कपड़ा पहने खड़ी हैँ । देखते ही मियाँ आज़ाद का रंग फ़क़ हो गया । चुप, अब हिलते हैं न बोलते हैं ।

अलारक्खी--(तालियाँ बजा कर) आदात्र अज करती हूँ । जरी इधर नजर कीजिए | यह कोसों की राह तय करके हम आप ही की ज़ियारत के लिए आये हैं और आपको हमसे ऐसी नफ़रत कि आँख तक नहीं मिलाते ! बाद्द री क्रिस्मत! अब जरा सिर तो हिलाइए, गरदन तो उठाइए, वह चाँद सा मुखढड़ा तो दिखाइए ! हाय, क्या जुल्म है, जिन पर हम जान देते हैं, वह हमारी सूरत से बेज़ार हैं ! कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी हैं ! ज़रा हमको तो उनका जोबन दिखाओ । इमने सुना, कभी-कभी बजरों पर दरिया की सैर को जाती हैं, कमी इमजोलियों को ले कर जश्न मनाती हैं। क्यों इज़रत, हम बक रहे हैं! हमारा ही ल्टू पिये, जो इधर न देखे | आजाद--खुदा की क़रसम, सिफ़ तुम्हीं को देखने आया हूँ। चंड्बाज--भई, आज़ाद की रोते-रोते हिचकी बंध गयी थी । क्रसम खदा की मैंने जो यह फ़िक्रा चुस्त किया कि अल्ारक्खी ने मरते वक्त आजाद-आज़ाद कह के दम तोड़ा, तो यह बेहोश हो कर गिर पड़े । अलारक्खी--खेर, इतनी तो ढारस हुई कि मरने के बाद भी हमको कोई पूछेगा । लेकिन--- आये तुरबत पे बहुत रोये, किया याद मुझे ; खाक उड़ाने लगे, जब कर चुके बरबाद मुझे ।

आजाद--अलारक्खी, अब इमारी इज्जत तुम्हारे हाथ हे । अगर तुम्हें हमसे मुहब्बत है, तो हमें दिक़ न करो । नहीं हम संखिया खा कर जान दे देंगे। अगर हमें जिल्मना चाहती हो, तो इमें आज़ाद कर दो ।

अलारक्खी--सुनो आजाद, दम -भी शरीफ़ज़ादी हैं, मगर अल्लाह को यही मंजूर था कि हम मठियारी बन कर रहें । याद है, हमारे बूंढ़े मियाँ ने तुम्हें खत दे कर इमारे मकान पर भेजा था और-तठुम कई दिन तक हमारे घर का चक्कर लगाते रहे ये ? हम दिन-रात कुदा करते ये। आखिर बह तो कब्र में पाँव लटकाये बैठे दी थे, चल बसे । उस दिन हमने मसजिद में घी के चिराग़ जलाये। मुकदर खींच कर यहाँ छाया। लेकिन अल्लाह जानता है, जो मेरी आँखे किसी से लड़ी हों। तुमसे न्याह करने का बहुत शौक़ था, लेकिन तुम राजी न हुए। अब हमने सुना दे कि हुस्नआरा के साथ तुम्हारा निकाह इहोनेवाला है। अल्लाइ मुबारक करे । अब हमने आपको इजाजत दे दी, खुशी से ब्याह कीजिए; लेकिन इमें भूछ न जाना। छोडी बन कर रहूँगी, मगर तुमको न छोड्/ंगी ।

आजाद--उफ् , तुम वद्द हो, जिसका उस बूदे से ब्याइ हुआ था १ यह भेद तो अब शुल्त । मगर दाय, अफ़सोस, तुमने यह क्या किया। तुम्दारी माँ ने बड़ी ही बेइछफी की, जो तुम-जैठी कामिनी का एक बुड़ढे के साथ ब्याद्व कर दिया |

अन्यरक्वी--अपनी तकदीर |

देर तक आज़ाद बैठे अव्म रक्खी को तसलछी देते रददे । फिर गब्म छुड़ा कर,

चकमा देकर निकर खड़े हुए। कूछ द्वी दूर आगे बढ़े थे कि तबले की थपक कानों में आयी । घर का रास्ता छोड़ महफ़िल में जा पहुँचे। देखा, वहाँ खूब घमा चौकड़ी मच रही है | एक ने राजल गायी, दूसरी ने ठुमरी, तीसरी ने टप्पा। आजाद एक ही रसिया वहीं जम गय । अब इस सनक की देखिए कि रगोर की महफ़िछ और आप इंतजाम करते हैं, किसी हुक्क़े की चिल्म भरवाते हैं, किसी गुड़गुड़ी को ताजा करवाते हैं; कभी ठुमरी की फ़र्माइश की, कमी गऱाज़छ की। दस-पंद्रह गैंवारों ने जो गाने की आवाज सुनी, तो धँस पड़े । मियाँ आज़ाद ने उन्हें धक्के दे कर बाहर किया। मालिक मकान ने जो देखा कि एक शरीफ़ नोजवान आदमी इंतज़ाम कर रहे हैं, तो इनको पास बुलाया, तपाक से बत्रिठाया, खाना खिलाया | यही बहार देखते-देखते आज़ाद ने रात काट दी । वहाँ से उठे, तो तड़का हो गया था |

मियाँ आजाद को आज ही रूम के सफ़र की तैयारी करनी थी। इसी फ़िक्र में बदहवास जा रहे थे । क्या देखते हैं, एक बाग में झुले पड़े हैं; कई लड़कियों द्वा य-पाँव में मेंहदी रचाये, गले में हार डाले पंग लगा रही हैं और सब्र की सब्न छुरीली आवाज से लहरा-लहरा कर यों गा रही हैं---

नदिया-किनारे बेला किसने बोया, नदिया-किनारे; बेला भी बोया, चमेली भी बोयी बिच-बिच बोया रे गुलाब, नदिया-किनारे |

आजाद को यद्द गीत ऐसा माया कि थोड़ी देर ठहर गये | फिर खद झूले पर जा बैठे और पेंग लगाने लगे । कभी-कभी गाने भी लगते, इस पर लड़कियाँ खिल-खिला कर हँस पढ़ती थीं। एकाएक क्या देखते हैं कि एक काला कलूटा मरियलछ सा आदमी खड़ा लडकियों को घूर रह्दा है | आज़ाद ने कई बार यह केफ़ियत देखी, तो उनसे रद्दा न गया, एक चपत जमा ही तो दी । टीप खाते दी वह झल्ला उठा और गलियाँ दे कर कहने लगा--न हुईं विछायती इस वक़्त पास, नहीं तो भुद्ठा सा सिर उड़ा देता । और जो कट्दीं जवान होता, तो खोद कर गाड़ देता । और, जो कहीं भूखा होता, तो कच्चा ही खा जाता। और जो कहीं नशे की चाट होती, तो घोल के पी जाता ।

आज़ाद पहचान गये, यह मियाँ खोजी थे । कौन खोजी ! नवाब के मुसाहब | कोन नवाब ! वही बटेरबाज़, जिनके सफ़शिकन को दूँदने आजाद निकले थे। बोले-- अरे, भाई खोजी हैं ! बहुत दिनों के बाद मुलाक़ात हुई। मिजाज तो अच्छा हे !

खोजी--जी हाँ, मिजाज तो अच्छा है; लेकिन खोपड़ी भन्ना रही है। भला हमने तुम्दारा क्या बिगाड़ा या । वह तो कहद्दिए में तुम्हें पहचान गया; नहीं तो इस वक़्त जान से मार डाल्ता ।

आज़ाद--इसमें क्या शक, आप हैं ही ऐसे दिलेर | आप इधर कैसे आ निकले !

खोजी-- आप ही की तलाश में तो आया था !

आज़ाद--नवाब तो अच्छे हैं !

खोजी--अजी वह गये चूर्हे में | यहाँ सर भन्ना रह्या है। ले अब चलो, तुम्हारे साथ चलें | कुछ तो खिलबाओ यार । मारे भूख के बेदम हुए बाते हें ।

आजाद--हाँ, हाँ चलिए खूब शौक से । दोनों मिल कर चले, तो आज़ाद ने खोजी को शराब की दूकान

पर ले जा कर इतनी शराब पिलायी कि वह टें द्वो गये, उन्हें वद्दी छोड़ मियाँ दँसोड के घर जा पहुँचे ।

मिर्यों हँसोड़ बहुत नाराज़ हुए कि मुझे तो ले जा कर हुस्नआरा के मकान के सामने खड़ा कर दिया और आप अंदर द्वो रहे | आधी रात तक तुम्हारी शह देखता रहा । यह आख़िर आप रात को थे कहाँ !

आज़ाद अभी कुछ जवाब देनेवाले ही थे कि एक तरफ से मिर्यों पीरब्श को आते देखा और दूसरी तरफ से चंडूबाज़ को | आप दूर ही से बोले-अजीब तरद फे आदमी हो मियाँ ! वहाँ से कह कर चले कि अभी आता हूँ, पल मर की भी देर न होगी, ओर तब के गये-गये अब तक सूरत नहीं दिखायी, अलारबखी बेचारी दादें मार-मार कर रो रही हैं । चलिए. उनके आँसू तो पोंछिए ।

मियाँ पीरबख्श ने बातें सुन्ीं, तो उनके कान खड़े हुए । इजाम के मुँद से तो यह सुन ही चुके थे कि प्रियों आजाद किसी सराय में एक भठियारिन पर लटदू हो गये थे, पर अब तक हुस्नआरा से उन्होंने यद्द बात छिपा रखी थी । इस वक़्त जो फिर वही जिक्र सुना, तो दिल में सोचने छगे कि यहाँ तो लड़कियों को रात-रात भर नींद नहीं आती; हुस्नआरा तो किसी कदर जब्त भी करती हैं, मगर सिपहआरा बेचारी फूट फूट कर रोती है; और यहाँ यह है कि कान पर जूँ तक नहीं रंगती। बोले-- आप चल रहे हैं, या यहाँ बेठे हुए बी अलारक्खी के दुखड़े सुनिएगा ? अगर कह्दीं दोनों बहनें सुन लें, तो केसी हो ! बस, अब भलमंसी इसी में है कि मेरे साथ चले चलिए; नहीं तो हुस्नआरा से हाथ घोइएगा और फिर अपनी फूंटी क्रिश्मत का रोइएगा ।

चंडबाज़- मिरयाँ, होश की दवा करो १ भरा मजाल है कि यद्द अलरक्खी को छोड़ कर यहाँ से जाये । क्या खब, दम तो सैकड़ों कुएँ झाकते यहाँ आये, आप बीच में बोलनेवाले कौन ! |

आज़ाद-- अजी, इन्हें बकने भी दो, हम तुम्हारे साथ अलारक्खी के पास चलेंगे । उस मुहब्बत की पुतलो को दगा न देंगे। तुम घबराते क्यों हो ! खाना तैयार है, आज मीठा पुलाव पकवाया है; तुम जरा बाज़ार से रपक कर चार आने की बालाई ले लो | मज़ें से खाना खायें । क्यों उस्ताद, है न मामले की बात, लाना हाथ ।

चंडुबाज़ बालाई का नाम सुनते ही खिल उठे । झप से पैसे लिये और छुढकते हुए. चले बालाई लाने । मिर्यों आज़ाद उन्हें बुत्ता दे कर पीरबख्श से बोकै- चलिए हजरत, इम ओर आप चरलें। रास्ते में बातें होती जायैंगी ।

दोनों आदमी वहाँ से चले । आज़ाद तो डब्बल चाल चलने लगे, पर मियाँ पीर-बरूश पीछे रह गये। तब बोले---अजी, ज़रा कदम रोके हुए चलिए. । किसी जमाने में हम भी जवान ये। अब यद्द फ़मोंइए कि यह अलारक्खी कौन है ! जो कहीं हुस्न-आरा सुन पायें, तो आपकी यूरत न देखें; बड़ी बेगम तो तुमको अपने मद्दल के एक मील इधर-उधर फटकने न दें। आप अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अब दादी-वादी होना खेर-सस्लाह है। सोच छोजिए कि अगर वहाँ इनकी बात चली, तो क्या जवाब दीजिएगा ।

आज़ाद--जनाब, यहाँ सोचने का मरज़ नहीं । उस उक्त जो जबान पर आयेगा, कह जाऊँगा। ऐसी वकालत करूँ कि आप भी दंग हो जायें--जचान से फुलझड़ी छूटने लगे ।

इतने में कोठी सामने नज़र आयी और ज़रा देर में दोनों आदमी महल में दाखिल हुए | सिपद्आरा तो

आज़ाद से मिलने दौड़ी, मगर हुस्नआरा अपनी जगह से न उठी। वह इस बात पर रूठी हुई थी कि इतना दिन चढ़ आया और मिरयाँ आज़ाद ने सूरत न दिखायी ।

हुस्नआरा--बद्दन, इनसे पूछो कि आप क्या करने आये हैं !

आज़ाद--आप खुद पूछिए । क्या मुँह नहीं हे या मुँह में जब्ान नहीं हे !

सिपहआरा--यह अब तक आप कहाँ गायब रहे !

हुस्नआरा -- अजी, इमें इनकी क्या परवा । कोई आये या न आये, हम किसी के हाथ तिके थोड़े ही हैं ।

सिपदआर/--ताजी की आँखे रोते-रोते छाल हो गयीं ।

हुस्नआरा--पूछो, आखिर आप चाहते क्या हैं १

आजाद--पूछे कौम., आखिर आप जद क्यों नहीं पूछतीं--

कहूँ क्या में हुझसे कि क्या चाहता हूँ, जफ़ा हो चुकी, अन्न वफ़ा चाहता हूँ। बहुत आशना हैं जमाने में, लेकिन -- कोई दोस्त दर्देआशना चाहता हूं। हुस्नआरा--इनसे कह दो, यहाँ किसी की वाह्दी-तबाही #॥कवाद सुनने का झौक़ नहीं है| मालूम है, आप बड़े शायर की दुम हैं ! सिपहआरा--बहन, तुम छाख बनों, दिल की लगी कहीं छिपाने से छिपती है । हुस्नआरा--चलो, बस, चुप भी रहो । बहुत कलेजञा न पकाओ | हमारे दिल पर जो गुज़र रही है, हमी जानते हैं। चलो, हम और तुम कमरा खाली करे दें, जिसका जी चाहे बैठे, जिसका जी चाहे जाय । हयादार के लिए एक चुल्लू काफ़ी है। यह कद्द कर हुस्नआरा उठी और सिपहआरा भी खड़ी हुई। मियाँ आजाद ने सिपद्षआरा का पहुँचा पकड़ लिया । अब दिल्लगी देखिए कि मिर्यों आज़ाद तो उसे अपनी तरफ़ खींचते हैं और हुस्नआरा अपनी तरफ घसीटती हुई कह रही हैं--हमारी बहन का द्वायथ कोई पकड़े, तो दाथ द्वी टूटे । जब इमने टका सा जवान दे दिया, तो फ़िर यहाँ आनेवाला कोई कोन ! वाह, ऐसे हयादार भो नहीं देखे ! आज़ाद--साइब, आप इतना खफ़ा क्यों होती हैं ! खुदा के वास्ते ज़रा बैठ जाइए | माना कि हम खतावार हैं, मगर हमसे जवाब तो सुनिए ! ख़दा गवाह है,

हम बेकपर हैं ।

हुस्नआरा--बस बस, जबान न खुल्वाइए । बस अब रुखसत | आप अब छह महीने के बाद सूरत दिखाइएगा, दम भी कलेजे पर पत्थर रख लेंगे। यह कह कर हुस्नआरा तो वहाँ से चली गयी और मिर्यों आज़ाद अकेले बैठे-बैंटे सोचने लगे कि इसे केसे मनाऊँ। आखिर उन्हें एक चाल सुझी | अरगनी पर से चादर उतार लो और मेँद ढाँप कर लेट रहे । चेहरा बीमारों का सा बना लिया और कराइने लगे। हइत्तिफ़ाक़ से मियाँ पीरबर्श उस कमरे में आ निकले। आज़ाद की सूरत जो देखी, तो होश उड़ गये। जा कर ट्डुस्नआरा से बोले--बल्द पलेंग बिछिवाओ, मियों आज़ाद को बुखार हो आया है। हुस्नआरा- हैं हैं, यह क्या कद्दते हो | पॉव-तले से मिट्टी निकल गयी | सिपहआरा--कलेजा धड़-धड़ करने लगा ! ऐसी सुनानी अल्लाह सातवें दुश्मन को भी न सुनाये । हुश्नआरा- हाय भेरे अछाह, मैं क्या करूँ | मैंने अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी । ज़रा देर में पलेंग ब्रिछ गया | हुस्नआरा, उसकी बहन, पीरबख्श और दिलबहार चारपाई के पास खड़े हो कर आँसू बहाने लगे। दिलबहार--मियाँ, किसी हकीम जी को बुलाओ | सिपहआरा--चेहरा कैसा

जर्द हो गया ! पीरबर्श--मैं अभी जा कर हकीम साहइब्र को लाता हूँ । हुस्नआरा--इकीम जी का यहाँ क्या काम है! ओर, यों आप चाहे जिसको बुलाये | मियाँ पीरबख्श तो बाहर गये और हुस्नआरा परलेँग पर जा बैठी, मिर्यों आजाद का सिर अपने जानू पर रखा । सिपहआरा फूलों का पखा झलने लगी । हुस्नआरा-मेरी ज़बान कट पदें। मेरी द्वी जली-कटी बातों ने यद्द बुखार पैदा किया । यह कद्द कर उसने आहिस्ता-आहिस्ता आज़ाद की पेशानी को सहलाना श्रुरू किया । आज़ाद ने आँखें खोल दीं और बोले-- मेरे जनाज़े को उनके कूचे में नाहक अहबाब लेके आये; निगाहे-हसरत से देखते हैं वह रुख से परदा हृटा-इटा कर । सहर है नज़दीक, शब है आखिर, सरा से चलते हैं हम मुसाफ़िर ; जिन्हें है मिलना, वे सब हैं हाजिर, जरस से कह दो, कोई सदा कर । हुस्नआरा -- क्यों इज़रत, यह मक्कारी ! सदा की पनाह, मेरी तो बुरी गत हो मयी ।

अज़ाद--ख़ा उसी तरह इन नाजुक हाथों से फिर माथा सहलाओ हुस्न आरा-- मेरी बला जाती है, वह वक़्त ही ओर था। आजाद--मैंने कद्दा जो उनसे कि शब्र को यहीं रहो ;

आँखें झुकाये बोले कि किस ए.तबार पर !

हुस्नआरा--आपने आखिर यह स्वॉग क्यों रचा १ छिपाइए नहीं, साफ़-साफ़ बताइए ।

आजाद--अब कद्दती द्दो कि तुम मेरी महफ़िल में आये क्यों ; आता था कोन, कोई किसी को बुलाये क्यों ! कहता हूँ साफ़साफ़ कि मरता हूँ आप पर ; जाहिर जो बात हो, उसे कोई छिपाये क्यों ! यहाँ मारे बुखार के दम निकल रहा है, आप मक्र समझती हैं । यहाँ दोनो में यद्दी नोकझोंक हो रही थी, इतने में मियाँ खोजी पता पूछते हुए आ पहुँचे । लोजी-मियाँ होत, जरा आजाद को तो बुलाओ । दरवान--किससे कहते दो १ आये कहाँ से ! द्वो कोन ! सोजी--ऐं, यह तो कुछ बातूनी सा माद्म होता है । अबे, इचला कर दे कि ख्वाजा साहब आये हैं । दरवान--ख्वाजा साहब | हमें तो जुलादे से मालूम होते द्वो। भलेमानसों की सूरत ऐसी ही हुआ करती हैं ! आज़ाद ने ये बातें सुनी, तो बाइर निकल आये और खोजी को बुला लिया । स्ोजो--भाई, ज़रा आईना तो मँगवा देना ।

आजाद- यह आईना क्या होगा ! बंदगी न सलाम, गत न चीत, आते ही आते आईना याद आया । बंदर के हाथ में आईना भला कोन देने लगा !

खोजी-अजी मैँगवाते हो या दिलछगी करते हो | दरवान से हमसे झोड़ दो गयी । मरदुद कद्दता है, तुम्दारी सूरत भलेमानसों की सी नहीं। अब कोई उससे पूछे, फिर बया चमार की सी है, या पाजी की सी |

आजाद- भई अगर सच पूछते हो, तो तुम्हारी सूरत से एक तरह का पाजीपन भरसता है। खुदा चादे पाजी बनाये, मगर पाजी की सूरत न बनाये । पर अब उसका इलाज ही क्या !

खोजी- वाद, इसका कुछ इलाज ही नहीं ! डाकटरों ने मुरदे तक के जिला लेने का तो बंदोबस्त कर लिया है; आप फ़रमाते हैं, इलाज दी नहीं | अब पाजी न बनेगे, पाज्ी बनके जिये तो क्या ।

आजाद--कल हम रूम जानेवाले हैं, चलते हो साथ !

खोजी--न चले, उस पर भी लानत, न ले चले, उस पर भी लानत |!

आज़ाद-- मगर वहाँ चंद्र न मिलेगा, इतना याद रखिए ।

खोजी--अजी अफ़ीम मिलेगी कि वह भी न मिलेगी ? बस, तो फिर हम अपना चंड्र बना लेंगे । हमें ज़रूर ले चलिए |

आज़ाद अंदर जा कर बोले--हुस्नआरा, अब रुखसत का वक़्त क़रीब आता जाता है; दँसी-खशी रुखसत करो; खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे ।

हुस्नआरा की आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे । बोली--द्वाय, अंदरवाला नहीं मानता । उसको भी तो समझाते जाओ । यद्द किसका होकर रहेगा !

आज्ञाद--तुम्द्ारी यह द्वालत देख कर मेरे कदम रुके जाते हैं । अग्र हमं जाने दो । जिंदगी छार्त है, हम फिर मिलेंगे और जश्न करेंगे । यह .कहद कह आज़ाद बाहर चले आये और खोजी के साथ चले । खोजी ने समझा था, रूम कहीं लखनऊ के आस-पास होगा । अब जो सुना कि सात समुंदर पार जाना पड़ेगा, तो हक्का-बक्का हो गये । हाँय-पाँव काँपने लगे | भई, हम समझते थे, दिल्लगी करते हो। यह क्या मालूम था कि सचमुच तंग-तोबड़ा चंदा कर भागा द्वी चाहते हो | मियाँ, तुम लाख आलिम फ़ांजिल सही, फिर भी लड़के ही हो | यद्द खयाल दिल से निकाल डालो । एक जरा सी चने के बराबर गोली पड़ेगी, तो टाँय से रह्द जाओगे। आपको कभी मोर्चे पर जाने का शायद इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ । खुदा भलेमानस को न ले जाय। गजबत्र का सामना होता है । वह गोली पड़ी, यह मर गया। दाँय-दाँय की आवाज़ त कान के परदे फट जाते हैं। तोप का गोला आया और अठारदइ आदमियों को गिरा दिया । गोला फटा और बहत्तर टुकड़े हुए, और एक-एक टुकड़े ने दस-दस आदम्रियों को उड़ा दिया | जो कहीं तलवार चलने लगी, तो मौत सामने नज़र आती है, बेमौत जान जाती दे । खटाखट तलवार चल रही है और दलज़ारों आदमी गिरते जाते हैं । सो भई, वहाँ जाना कुछ खाला जी का घर थोड़े द्वी है। खदा के लिए उधर रुख न वरना । और, बंदा तो अपने हिसाब, जानेवाले को कुछ कहता है। हम एक तर-कीब बताये, वह काम क्यों न कीजिए कि हुस्नआरा आपको खद रोक़ें और टांखों क्रसमें दें। आप अंदर जा कर बैठिए और हमको चिक के पास बिठाइए | फिर देखिए, मैं केसी तक़रीर करता हूँ कि दोनों बहनें काँप उठें; उनको यक्रीन हो जाय कि मियाँ आजाद गये और अंटागफ़ील हुए. | मैं साफ़-साफ़ कद्द दूँगा कि भई आजाद जंग अपनी तसवीर तो खिंचवा छो। आखिर अब तो जाते ही हो | वल्लाह, जो कहीं यह तक़रीर सुन पायें, तो इश्र तक तुम्हें न जाने दें और झप से शादी हो जाय ।

आज्षाद--त्रस, अब और कुछ न फ़रमाइडेगा। मरना-जीना किसी * अखित-यार की बात तो है नहीं; छाखों आदमी कोरे आते हैं ओर हज़ारों राह चलते लोट जाते हैं। हुस्नआरा हमसे कहे कि टर्की जाओ और हम बातें बनायें, उसको धोखा दें | जिससे मुहब्बत की उससे फ़रेब ! यह मुझसे हरगिज़ न होगा, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय । आप मिर्यों इसोड़ के यहाँ जाइर और उनसे कद्टिए कि हम अभी आते हैं। दम पहुँचे और खाना खा कर लंबे हुए । खोजी तो गिरते-पड़ते चले, मगर दो कदम जा कर फिर पलटे । भई, एक बात तो सुनो । क्या-क्या पकवा रखेँ ! आज़ाद बहुत द्वी झल्लाये। अजब नासमझ आदमी हो ! यह भी कोई पूछने की बात है भला | उनके यहाँ जो कुछ मुमकिन होगा, तेयार करेंगे। यह कहकर आज़ाद तो अपने दो-चार दोस्तों से मिलने चले, उधर मिरयाँ खोजी हँसोड़ के घर पहुँचे । जा कर गुल

मचाना शुरू किया कि जल्द खाना तैयार करो, मियाँ आज़ाद अभी-अभी जानेवाले हैं। उन्होंने कहा है कि पाँच सेर मीठे ठुकड़े, सात सेर पुलाव, दस सेर फीरनी, दस दी सेर खीर, कोई चौदह सेर जरदा, कोई पाँच सेर मुरब्बा और मीठे अचार की अचारियाँ जल्द तैयार हों । मियाँ हँसोड़ की बीबी खाना पकाने में बक़् थीं । द्ार्थोद्दाथ सब सामान तैयार कर दिया । मियाँ आज़ाद शाम को पहुँचे ।

हँसोड़-- कांहेए, आज तो सफ़र का इरादा है। खाना तैयार है; कहिए, तो निकल्वाया जाय । बर्फ़ भी मैंगवा रखी है ।

आज्ञाइ--खाना तो इम इस वक़्त न खायेंगे, जरा भी भूख नहीं है |

हँसोड़--खेर, आप न खाइएगा, न सही । आपके और दोस्त कहाँ हैं ! उनके साथ दो निवाले तुम भी खा लेना ।

आज़ाद--दोस्त केसे ! मैंने तो किसी दोस्त के लिए खान। पकाने को नहीं कहा था !

हँसोड़ - और सुनिएगा ! क्या आपने अपने ही लिए दस सेर खीर, अठारद् सेर मीठे कड़े और ख़दा जाने क्या-क्या अलृम-गल्लम पकवाया है ।

आजाद--आपसे यह कहा किस नामाकूल ने !

ईसोड--खोजी ने, और किसने ! बैठे तो हैं, पूछिए न ।

आजाद--खोजी तुम मरभुखे ही रहे | यह इतनी चीजें क्या सिर पर लाद कर ले जाओगे १ लाहौल बिला कूबत ।

खोजी-- लाहौल काददे की ! आप न खाइए, में तो डट कर चख चुका। रास्ते के लिए मी बाँध रखा है ।

आजाद - अच्छा, तो अब बोरिया-बंघना उठाइए, लादिए-फाँदिए |

खोली-- जनाब, इस वक़्त तो यद्द दाल है, जैसे चूहे को कोई पारा जल दे | अब बंदा लोट मारेगा । और यद्द तो बताओ, सवारी क्या है!

आजाद-- शक्कझा ।

खोजी- ग़ज़ब ख़ुदा का ! तब तो मैं जा चुका । इक्के पर तो यहाँ कभी सवार दी नहीं हुए । और फिर खाना खा कर तो मर ही जाऊँगा ।

खैर, मियाँ आज़ाद ने झटपट खाना खाया और असन्नाब् कस कर तेयार हो गये । खोजी पड़े खर्राटे ले रद्दे थे; रोते-गाते उठे । बाहर जा कर देखते हैं, तो एक समंद घोड़ी पूरी, रा मरियल टट्टू। आज़ाद धोड़ी पर सवार हुए ओर मिरयाँ हँसोड़ की बीबी से बोले--भाभी, भूल न जाइएर!_ भाई साहब तो भुलककढ़ आदमी हैं, आप याद रखिएगा। आपके हाथ का खाना उम्र-मर न भूदेंगा । उन्होंने रुख-सत करते हुए कहा--जिस तरद्द पी० दिखाते हो, ख़दा करे, उसी तरह मुंह भी दिखाओ। इमाम जामिन को सौंपा ।

अब सुनिए कि मियाँ खोजी ने अपने मरियछ ट्टू को जो देखा, तो घबराये,। घोड़े पर कभी ज़िन्दगी भर सवार न हुए थे । छाल चाहते हैं कि सवार हो जायें, मगर हिम्मत नहीं पड़ती | यार छोग डराते हैं-- देखो, देखो, वद्द पुस्त उछाली, वह दुलूत्ती झाड़ी, वह मुँह खोल कर लपका; मगर टट्ट खड़ा है, कान तक नहीं

हिलाता । एक दफ़े आँख बंद करके दृज़रत ने चाहा कि छद लें, मगर यारों ने तालियाँ जो बजायीं, तो टट्टू भागा और मियाँ खोजी मद से जमोन पर | देखा, कट्दते न थे कि हम इस ट्टू पर न सवार होंगे। मगर आज़ाद ने घड़ी दिल्लगी देखने के लिए हमको उल्दू बनाया। वह तो कहो, हड्डी-पसल्ओी बच गयी, नहीं तो चुरमुर ही हों जाती। खेर, दो आदमियों ने उनको उठाया और छाद कर घोड़ी की पीठ पर रख दिया। उन्होंने लगाम द्वाथ में ली ही थी कि एक बिगड़े-दिल ने चाबुक जमा दिया। ट्टू दुम दब्रा कर भागा और मियाँ खोजी छुद़क गये। बारे आज़ाद ने आ कर उनको उठाया ।

खोजी--अब क्या रूम तक बराबर इस ट्टू ही पर जाना होगा !

आज़ाद-- और नहीं क्या आपके वास्ते उड़नखटोला आयेगा !

खोजी--भछा इस टट्टू पर कौन जायेगा !

आज़ाद-ट्टू, आप तो इसे टाँघन कह्दते थे !

खोजी-- भई, हमें आजाद कर दो | हम बाज आये इस सफ़र से !

आज़ाद- अरे बेवकूफ़, रेल तक इसी पर चलना द्ोगा | वहाँ से बंबई तक रेल पर जायेंगे ।

मियाँ आजाद और खोजी आगे बढ़े । थोड़ी देर में खोजी का टट्ट भी गरमाया और आज़ाद की घोड़ी के पीछे क्दम बदाकर चलने लगा। चलते-चलते य्ट्टू ने दइरारत की | बूट के हरे-भरे खेत देखे, तो उधर लपका । किसान ने जो देखा, तो ल्ट्ट ले कर दौड़ा और छगा बुरा-मछा कहने। उसकी जोरू भी चमक कर छपकी और कोसने छगी कि पल्वष्टया मर जाय, कीड़े पड़ें, अभी-अभी पेट फटे, दादढ़ीआार की ढहास निकले | और किसान भी गालियाँ देने लगा-अरेग्रो टष्टू कौन सार केर आय १ सयूर हमरे खेत में पेटाय दिदहिस | मियाँ खोजी गाछियाँ खा कर बिगड़ गये। उनमें एक सिफ़्त बह थी कि बे-सोचे-समझे लड़ पड़ते थे; चाहे अपने से दुगुना-चौगुना हो, वह सिमट ही जाते थे। गुस्से की यह खासियत है कि जब आता है, कमजोर पर | मगर मियों खोली का गुस्सा मी निराछा था, बह जब आता था, शहब्ोर पर । किसान ने उनके ट्ट को कई छह जमाने, तो मियाँ खोबी तड़ से उतर कर किसान से गुथ गये। वह गैंवार आदमी, बदन का करारा और यह दुबले-पतले महीन आदमी, हवा के झोंके में उड़ जाये । उसने इनकी गरदन दबोची और गद से ज़मीन पर फेका । फिर उठे, तो उसकी जोरू इनसे चिम्तट गयी और लगी हाथापाई द्योने । उसने घूँता जमाया ओर इनके पट्टे पकड़ कर फेका, तो चारों खाने चित । दो थप्पड़ भी रसीद किये--एक इधर, एक उघर | किसान खड़ा हूँस रहा है कि मेद्दरोरू से जीत नाहीं पावत, यह भुसंडन से का लड़िहै भछा | किसान की जोरू तो ठोंक-ठाँक कर चल दी, और आपने पुकारना शुरू किया-क़सम अब्चा-जान की, जो कहों छुरा पास होता, तो इन दोनों की छाश इस वक़्त फ़ड़कती होती । वह तो कह्विए, खुदा को अच्छा करना मंजूर था कि मेरे पास छुरा न था, नहीं तो इतनी करोलियाँ भोंकता कि उमर भर याद करते। खड़ा तो रह यो गीदी ! पर गाँववालों ने खुब क़ह्क़ह्दा उड़ाया | एक ने पूछा--क्यों मियाँ साहब, छुरी दोती तो क्या भोंक कर मर जाते ! इस पर प्रियाँ लोजी और भी आग दवा गये |

मियाँ आज़ाद कोई दो गोली के टप्पे पर निकल गये थे । जत्र खोजन्नी को पीछे न देखा, तो चकराथे कि माजरा क्या है ! घोड़ी फेरी और आ कर खोजी से शेलि--- यहाँ खेत में कब्र तक पड़े रहोगे १ उठो,

गद झाड़ो ।

स्ोजी--क़रौली न हुई पास, नहीं तो इस वक़्त दो लाशे यहाँ फड़कती हुई देखते।

आजाद--अजी, वह तो जब देखते तब देखते, इस वक्त तो तुम्हारी लोभ देख रहे हैं।

उन्होंने फ़िर खोजी को उठाया और टट्टू पर सवार कराया | थोड़ी देर में फिर दोनों आदमियों में एक खेत का फ़ासला दो गया । खोजी से एक पठान ने पूछा कि शेस्त्र जी, आप कहाँ रहते हैं ! हज़रत ने झट से एक कोड़ा जमाया और कहा-- अबे, हम शेस्त्र नहीं, झशजा हैं। वह आदमी रास्से से आग हो गया और टाँग पकड़ कर घसीटरा, तो खोजी खट से जमीन पर | अब चारों खाने चित पड़े हैं, उठने का नाम नहीं लेते! आज़ाद ने जो पीछे फिर कर देखा, तो टद्ट आ रहा है, मगर स्त्रोजी नदारद । पलटे, देखें, अब क्या हुआ। इनके पास पहुँचे, तो देखा, फिर उसी तरह जमीन पर पड़े करौली की हाँक लगा रहे हैं ।

आज़ाद--तुम्हें शम नहीं आती |! कप्रजोरी मार खाने की निश्ज्ञानी! दम नहीं है, तो कटे क्यों मरते हो ! मुफ्त में जूतियाँ खाना कौन जवाँमरदी है !?

खोजी---बल्लाह, जो क़रोली कहीं पास हो, तो चलनी ही कर डार्दू | वद्द तो कहिए, खेरियत हुई कि करौली न थी, नहीं तो इस १क़्त कब्र खादनी पड़ती ।

आजाद---अभत्र उठोगे भी, या परसों तक यों ही पड़े रह्दोगे | तुपने तो अच्छा नाक में दम कर दिया ।

खोजी--अजी, अब न उठेंगे, जब तक क़रौली न छा दोगे, बस अब्र बिना करौली के न बनेगी ।

आज्ञाद--बस, अन्न बेहूडा न बको; नहीं तो मैं अबकी एक लात जमाऊँगा ।

खेर, दोनों आदमी यहाँ से चले तो ख़ोबी बोले--यहाँ जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा है। उस किसान की मुसंदी औरत ने तो कचूमर ही निकाल डाछा। मगर कसम है खुदा की, जो कहीं क़रौली पास होती, तो ग़ज़ब ही हो जाता। एक को तो जीता छोड़ता द्वी नहीं ।

आज़ाद-खदा गंजे को पंजे नहीं देता। क़रौडी की आपको इमेशा तलाश रही, मगर जत्र आये, पिट ही के आये, जूतियाँ ही खायीं। खैर, यद्द दुखड़ा कोई कहाँ तक रोये, अभ यह बताओ कि हम क्या करें ! जी मतला रहा है, बंद-बंद टूट रहा है, आँखें भी जलती हैं ।

खोजी-- लैनडोरी आ गयी | अब इजरत मी आते होंगे |

आजाद--यह लैनडोरी कैसी ? और हज़रत कौन १ मैं कुछ नहीं समझा । ज़रा बताओो तो !

खोजी--अभी लड़के न हो, बुखार की आमद है। भाँखों की जलन, जी का मतलाना, बदन का टूटना, सत्र उसी की अलामतें हैं। इस वक़्त घोड़े पर सवार हो कर चलना बुरा है। अब आप घोड़े से उतर पड़िए और चल कर कहीं लेट रहिए, कद्दना मानिए |

आज्ञाइ--यहाँ कोई अपना घर है, जो उतर पड़ूँ ! किसी से पूछो तो कि गाँव कितनी दूर है। खुदा करे, पास ही हो, नहीं तो मैं यहीं गिर पढ़ँगा और क्रत्र भी यहीं बनेगी । |

खोजी--अजी, ज़रा दिल की सैभालो। कोई इतना घषराता है ! क्त्र केसी ! ज़रा दिल को ढारस दीजिए |

आज़ाद--वल्लाह, फुँका जाता हूँ, बदन से आग निकल रही है ।

सोजी--पह गाँव सामने ही है, ज़रा घोड़ी को तेज़ कर दो ।

आज़ा ने घोड़ी को ज़रा तेज़ किया, तो वद्ड उड़ गयी। खोजी ने भी कोड़े पर कोड़ा जमाना झुरू किया। मगर लदूदू टट्ट कहाँ तक जाता ! आछिर खोजी ने झल्ला कर एक एड़ दी, तो टट्टू अगले पाँव पर खड़ा हो गया और मिर्यों खोजी सैमल न सके, धम से ज़मीन पर आ रहे। अच टटट्टू पर बिगड़ रहे हैं कि न हुई क़रोली इस वक़्त, नहीं तो इतनी भोंकता कि बिलबिलाने लगता | खैर, किसी तरद्द उठे, ट्टु को पकड़ा और लद् कर चले | दो-चार रिछगीबाज आदमियों ने ताडियाँ बजायी और कहना शुरू किया--छदा है, छदा है, लेना, जाने न पाये । खोज्जी बिगड़ खड़े हुए | हटो सामने से, नहीं तो हंटर जमाता हूँ । मुझे भी कोई ऐसा-बैसा समझे हो | में सिपाद्दी आदमी हूँ। नवात्री में दो-दो तलवारें कमर से लगी रहती थीं। अब लाख कमजोर हो गया हूँ, लेकिन अब भी तुम जैसे पचास पर भारी हूँ। लोगों ने खूब हँसी उड़ायी | जी हाँ, आप ऐसे दी जर्वोमर्द हैं। ऐसे सरमा दोते कहाँ हैं।

खलोजी - उतरू घोड़े से, आऊँ !

यारों ने कहा--नहीं साहब, ऐसा ग़ज़ब भी न कीजिएगा ! आप ठहरे पहलवान और सिपाही आदमी, कहीं मार डालिए आ कर तो कोई क्या करेगा |

इस तरद्द गिरते-पड़ते एक सराय में पहुँचे और अंदर जा कर कोटरियाँ देखने लगे । सराय भर में चक्कर लगाये, लेकिन कोई कोठरी पसंद न आयी | भठियारियाँ पुकार रही हैं कि मियां मुसाफ़िर इधर आभो, इधर देखो, खासी साफ-सुथरी कोठरी है। टषट्ट बाँधने की जगह अलग । इतना कहना था कि मिर्यों खोजी आग हो गये। क्या कद्दा, टष्ट है, यह पीगू का टॉघन है। एक भठियारी ने चमक कर कहा--टाँघन है या गधा ! तब तो खोजी झललाये और छुरी ओर क़रौली की तलाश करने लगे । इस पर सराय भर की भठियारियों ने ऊन्हें बनाना शुरू किया। आखिर आप इतने दिक़ हुए. कि सराय फे बाहर निकल आये और बोले--भई, चलो, आगे के गाँव में रहेंगे | यहाँ सब्र के सब शरीर हैं । मगर आज़ाद में इतना दम कहाँ कि आगे जा सकें | सराय में गये और एक कोठरी में उतर पड़े। खोजी ने भी वहीं बरिघ्तर जमाया । साईस तो कोई साथ था नहीं, खोजी को अपने ही हाथ से दोनों जानबरों के खरेरा करना पड़ा । भठियारी ने समझा, यह साईस है।

भठियारी--ओ साईस भेया, जरा घोड़ी को उधर बाँधो ।

खोजी--किसे कहती है री, साईंस कौन है !

भठियारी--ऐ तो जिगड़ते क्यों द्वो मिर्यों, साईस नहीं, चरकटे सही ।

आज़ाद--चुप रहो, यह हमारे दोस्त हैं ।

भनटठियारी-दोस्त हैं, सूरत तो मलेमानसों की सी नहीं है।

ख्रोजी--भई आजाद, ज़रा आईना तो निकाल देना | कई आदमी कहद्द चुके । आज में अपना चेह-: जरूर देखूँगा। आखिर सबत्र क्या कि जिसे देख्को, यही कहता हई |

आज़ाद--चलो, वाहियात न बको, मेरा तो बुरा हाल है ।

भठियारी ने चारपाई त्रिछा दी और आज़ाद लेटे |

खोजी ने कद्दा--अब तब्रीयत केसी है ! आजाद - बुरी गत है; जी चाहता है, इस वक़्त जहर खा हैँ ।

खोजी--जुरूर, और उसमं थोड़ी संखिया भी मिला लेना ।

आजाद--मर कमत्रस्त, दिछगी का यह मौका है !

खोज्जी--अत्र बूढ़ा हुआ, मरूँ किस पर। मरने के रिन तो आ गये । अब तुम ज़रा सोने का खयाल करो | दो-चार घड़ी नींद आ जाय, तो जी इलका हो जाय |

इतने में भठियारी ने आ कर पूछा - मिर्यों कैसे हो !

आज़ाद- क्या बताऊँ, मर रहा हूँ।

भठियारी-- किस पर !

आजाद---उम पर ।

भठियारी--खुंदा की संवार ।

आजाद--किस पर ! भठियारी ने खोजी की तरफ़ इशारा करके कहा--श्न पर खोजी--अफसोस, न हुई करौली | आजाद-द्दोती, तो कया करते ! खोजी--भोंक लेते अपने पेट में । आज़ाद--भई, अब कुछ इलाज करो, नहीं तो मुफ़्त में दम निकल जायगा। भठियारी--एक हकीम यहाँ रहते हैं । में बुलाये लाती हूँ। यह कद् कर बी मठियारी जा कर दृकीम जी को बुला लायी । मिर्यों आज़ाद देखते हैं, तो अजब ढंग के आदमी--धघोती बाँधे, गादे की मिरज्नई पहने, चेहरे से देहाती-पतन बरस रहा है, आदमियत छू द्वी नहीं गयी । आजाद--हकीम साहब, आदाब | हकीम--नाहीं, दबवाव नाहीं । बुखार में दाबे नुकसान दहोत है। आजाद--आपका नाम ! इकीम--हमारा नाम दाँगद । आज़ाद--दाँगलू या जाँगलू ! हकीम--नुस्खा लिखे ! अज़ाद--जी नहीं, माफ़ कीजिए. | बस, यहाँ से तशरीफ़ लें जाइए | हकीम--बुखार में अक-बक करत हैं, चाँद के पट्टे कतरवा डाछो | सोजी- कुछ बेधा तो नहीं हुआ ! न हुई क़रोली, नहीं तो ताँद पर रख देता । हकीम-भाई, इमसे- इनका इलाज न दो स किहै | अब एक होय, तो इलाज करें | यो पागल को है हो ! हमका अलई का पछवा बकत है ससुर । आखिर खोजी ने झला कर उनको उठा दिया और यह नुझ्ता लिखा--- आदबुखारा दो दाना, तमरदिंदी छद्द माशा, अक गावजबों दो तोला | आज्ञाइ--यह नुस्खा तो आप कल पिलायेंगे, यहाँ तो श़त-भर में काम दी तमाम हो जायगा । सत्रोजी - इस वक़्त बंदा कुछ नहीं देने का। हाँ, आदू का पानी पीजिए, पाँच दाने भिगाये देता हूँ | खाना इस वक़्त कुछ न खाना। आज़ाद-वाह, खाना न मिला, तो मैं आप ही को चट कर जाऊँगा। इस भरोसे न रहिएगा । खोजी--वल्लाह, एक दाना भी आपके पेट में गया और आप बरस भर तक यों ही पड़े रहे । आद का पानी भी घूँट-घूँट करके पीना । यह नहीं कि प्याला मुँह से छगाया और गट-गट पी गये । यह कद कर खोजी ने चंदन घिस कर आजाद की छाती पर रखा । पालक के पत्ते

चारपाई पर त्रिछा दिये। खीरा काट कर माथे पर रखा और ज़रा सा नमक बारीक पीस कर पाँव में मला । तलवे सहलाये ।

आज्ञाद--यहाँ तो कोई हकीम भी नहीं |

खोजी--अजी, हम ख़द इलाज करेंगे । हकीम न सही, हकीमों की आँखें तो देखी हैं ।

आज़ाद--इलाज तक मुज़ायक़ा नहीं, मगर मार न डालना भाई ! हाँ, जरा इतना एहसान करना ।

आज़ाद की बेचैनी कुछ कम हुई, तो आँख लग गयी । एकाएक पड़ोस की कोठरी से शोर गुल की आवाज़ आयी । आज़ाद चौंक पड़े और पूछा--यह केसा शोर है ? भठियारी, तुम ज़रा जा कर उनको लडकारो।

स्ोजी---कद्दों कि एक शरीफ़ आदमी बुखार में पड़ा हुआ दे। ख़दा के वास्ते जरा खामोश द्वो जाओ |

भठियारी-मियाँ, में ठदरी औरतजात और वे मरदुए । और फिर अपने आपे में नहीं । जो मुशी पर पिल पड़े, तो क्या कहूँगी ! हाँ, भठियारे को भेजे देती हूँ।

भठियारे ने जा कर जो उन शराबियों फो डाटा, तो सब के सब्न उस पर टूट पढ़े और चपतें मार-मार कर भगा दिया । इस पर भठियारी तेश में आ कर उठी और उँगडियाँ मटका कर इतनी गालियाँ सुनायीं कि शराबियों का नशा हिरन हो गया । वे इतना डरे कि कोठरी का दरवाज़ा बंद कर लिया |

लेकिन थोड़ी देर में फिर शोर हुआा और आज़ाद की नींद उचट गयी .खोजी को जो शामत आयी, तो शरात्रियों की कोठरी के दरवाज़े को इस जोर घमाया कि चूल निवल आयी १ सब शराबी झल्लाकर बाहर निकल आये «,.९ खोजी पर बेभाव की पड़ने लगी। उन्होंने इधर-उधर छुरी और क़रौली की बहुत कुछ तलाश की, मगर खब पिटे | इसके बाद वे सब्र सो गये, रात भर कोई न मिनका । सुबह को उस कोठटरी से रोने की आवाज़ आयी । खोजी ने जा कर देखा, तो एक आदमी मरा पड़ा है ओर बाक़ी सब खड़े रो रहे हैं। पूछा, तो एक शराबी ने कदहा--भाई, हम सब्च रोज शराब पिया करते हैं। कल की शराब बहुत तेज़ थी। हमने बहुत मना किया; पर बोतल की बोतल खाली कर दी। रात को हम लोग सोये, तो इतना अल-बत्ता कहा कि कलेजा फुँका जा रहा है। अब जो देखते हैं, तो मरा हुआ है । आप तो जान से गया और इमको भी क़त्ल कर गया |

खोजी --रज़ब हो गया ! अब तुम घरे जाओगे और सज़ा पाओगे !

शराबी--हम कहेंगे कि साँप ने काटा था ।

खोजी --कहीं ऐसी भूल भी न करना ।

शराबी--अच्छा, भाग जायेंगे |

खोजी ---तब् तो जरूर ही पकड़े जाओगे | लोग ताड़ जायैंगे कि कुछ दाल में काला है|

शराबी--अच्छा, हम कहेंगे कि छुरी मार कर मर गया और गले में छुरी भी भोंक देंगे ।

खोजी--यह बात हिमाक़त है, में जैसे कहें, वैसे करो | तुम सब के सब रोओ और सिर पीटो | एक कद्दे कि मेरा सगा भाई था। दूसरा कद्दे कि मेरा बहनोई था; तीसरा उस्ते मार्मू बताये । जो कोई पूछे कि क्या हुआ था, तो गुर्दे का दर्द बताना । खूब चिल्ला-चिा कर रोना । जोयों आँवू न आवें तो मिरचे लगा छो। आँखों में धूल झोंक लो। ऐसा न हो कि गड़बड़ा जाओ और जेलखाने जाओ ।

इधर तो शरातबियों ने रोना-पीटना शुरू किया, उधर किसी ने जा कर थाने में जड़ दी कि सराय में कई

आदमियों ने मिल कर एक मद्दाजन को मार डाला । थाने-दार और दस चौकीदार रप-रप करते आ पहुँचे। अरे ओ भठियारी, बता, वह महाजन कहाँ टिका हुआ था !

भठियारिन--कन महाजन १ किसी का नाम तो लीजिए |

थानेदार--तेरा बाप, और कौन !

भठियारिन--मेरा बाप १ डसकी तालाश है, तो क़त्रिस्तान जाइए ।

थानेदार--खून कहाँ हुआ !

भठियारिन--खूब ! अरे तोबा कर बंदे ! खून हुआ होगा थाने पर ।

थानेदार--अरे इस सराय में कोई मरा है रात को !

भठियारिन--हाँ, तो यों कहिए। वह देखिए, बेचारे खड़े रो रदे हैं। उनके भाई थे। कल दर्द हुआ । रात को मर गये |

थानेदार--लछाश कहाँ है !

शराबी--हुजूर, यह रखी है। द्वाय, हम तो मर मिटे । घर में जा कर क्या मुंह दिखायेंगे, किस मुँह से अब धर जायँगे । किसी डाक्टर को बुलवाहए, जरा नब्ज तों देख लें |

थानेदार--अजी, अब नब्ज में क्या रखा है। बेचारा बुरी मौत मरा । अब इसके दफ़न-कफ़न की फ़िक्र करो।

थानेदार चछा गया, तो मिर्यों खोजी ख़ब खिल-खिला कर हँसे कि वल्लाह, क्या बात बनायी है | शरात्रियों ने उनकी खूब आवभगत की कि वाद्द उस्ताद, क्या झाँसा दिया। आपकी बदौलत जान बची; नहीं तो न जाने किस मुसोत्रत में फँस ज्ञाते।

थोड़ी ही देर बाद किसी कोठरी से फिर झोर-गुल सुनायी दिया ।

आज्ाद--अब यह कैसा गुल है भाई ! क्या यह भी कोई शराबी है।

मठियारिय--नहीं, एक रईस की लड़की दै। उस पर ए.क परेत आया है । ज़रा

सी रड़की, लेकिन इतनी दिलेर द्दो गयी है कि किसी के सैंभाले नहीं सैभलती । आज़ाद--यह सब दकोसछा है | भठियारिन--ऐ) वाह, ढकोसला है। इस लड़की का भाई आगरे में था और वहाँ से पाँच सौ रुपये अपने बाप की थैली से चुरा लाया | यहाँ जो आया, तो लड़की ने कहा कित् चोर है, चोरी करके आया है।

आजाद---अजी, उस लड़के ने अपनी बहन से कद दिया होगा; नहीं तो भला उसे क्या खबर द्वोती !

भठियारी--भला ग़ज़लें उसे कहाँ से याद हैं !

आजाद- इसमें अचरज की कौन सी बात है ! तुम्हें भी दो-चार ग़ज़लें याद दही होंगी !

भठियारी--मैं यद्द न मानूंगी । अपनी आँखों देख आयी हूँ ।

आज़ाद तो खिचड़ी पकवा कर खाने लगे और मिर्यों खोजी घास लाने चले | जब घसियारी ने बारद आने माँगे, तो आपने क़रोली दिखायी | इस पर घसियारी ने गद्दा इन पर फेक दिया। बेचारे गट्ठे के त्रौज्

से जमीन पर आ रहे | निकलना मुश्किल हो गया। लगे चीखने--न हुई क़रौली, नहीं तो बता देता । अच्छे अच्छे डाकू मेरा लोहा मानते हैं। एक नहीं, पचासों को मैंने चपरगद्टू किया है। यह घसियारिन मुझसे लड़े । अब उठाती है गद्ठा या आ कर करौली भोंक दूँ !

लोगों ने ग़ठा उठाया, तो मिर्यों खोजी बाहर निकले | दादी-मूँछ पर मिट्टी जम गयी थी, लत-पत हो गये थे। उधर आज़ाद खिचड़ी खा कर लेटे ही थे कि क्रे हुई और फ़िर बुखार हो आया | तड़पने लगे | तब तो खोजी भी घत्रराये। सोचे, अब बिना इकीम के काम न चलेगा १ भठियारी से पूछ कर हकीम के यहाँ पहुँचे ।

हकोम साइब पालको पर सवार हो कर आ पहुँचे ।

आज्ञाद- आदात बजा लाता हूँ ।

खोजी--बेहद कमजोरी है। बात करने की ताक़त नहीं |

हकीम--यह आपके कौन हैं !

खोजी--जी दजूर, यद्द गुलाम का लडका है !

हकीम--आप मुझे मसखरे मादूम होते हैं ।

खोजी--जी हाँ, मसखरा न होता, तो लड़के का बाप द्वी क्यों होता !

आजाद--जनाब, यह बेहया-बेशम आदमी है । न इसको जूतियाँ खाने का डर, न चपतियाये जाने का खोफ़ । इसकी बातों का तो खयाल ही न कीजिए ।

खोजी--हकीम साहब, मुझे तो कुछ दिनों से बवासीर की शिकायत हो गयी है ।

हकीम--अजी, मैं ख़द इस शिकायत में गिरफ़्तार हूँ । मेरे पास इसका आज़-माया हुआ नुस्खा मौजूद है।

लोजी---तो आपने अपने बाकसीर का इलांड क्यों न किया !

, आज़ाद -- खोजी, तुम्हारी शामत आयी है। आज पिटोगे ।

खैर, दृकीम साहब ने नुस्खा लिखा और झरुखसत हुए । अब सुनिए कि नुस्खे में लिखा था--रोग़न-गुल । आपने पढ़ा रोग़नगिल, यानी मिट्टी का तेल। आप नुस्खा बैंधवा फर लाये और मिट्टी के तेल में पका कर आज़ाद को पिलाया, तो मिट्टी के तेल की बदबू आयी । आज्ञाद ने कद्दा--यद बदबू कैसी है ! इस पर मिर्यों खोजी ने उन्हें खूब ही छलकाग । वाह, बड़े नाजक-मिजाज हैं, अब कोई इत्र पिछाये आपको, या केसर का खेत चराये, तब आप खुश हों । आजाद चुप हो रहे, लेकिन थोड़ी ही देर बाद इतने ज़ोर का बुखार चदा कि खोजी दौड़े हुए दृकीम साहब के पास गये और बोले--जनाब, मरीज़ बेचैन है। और क्यों न दो, आपने भी तो मिट्टी का तेल नरख्ते में लिख दिया ।

हकीम--मिट्टी का तेल कैसा १ में कुछ समझा नहीं।

सो जी--जी हाँ, आप काहे को समझने लगे । आप ही तो रोगन-गिल लिख

आये थे |

हकीम-- अरे भले आदमी, क्या राज़त्र किया | केसे जाँगलुओं से पाला पड़ा

है ! हमने लिखा रोगन-गुल, और आप मिट्टी का तेल दे आये | वल्लाह, इस वक़्त अगर जाप मेरे मकान पर न भाये होते, खड़े-खड़े निकलवा देता ।

खोजी--आपके हवास तो खुद ही टिकाने नहीं । आपके मकान पर न आया

होता, तो आप निकलवा कहाँ से देते ! जनाब, पहले फ़स्द खुलवाइए ।

यह कह-कर मियाँ खोजी लौट आये । आज़ाद ने कहा-- भाई, हकीम को तो

देख चुके, अब कोई डॉक्टर लाओ |

खोजी--डॉक्टरों की दवा गरम होती है। बुखार का इलाज इन लोगों को

माल्म ही नहीं ।

आज़ाद--आप हैं अहमक |! जा कर चुपके से किसी डॉक्टर को बुला छाइए |

सोजी पता पूछते हुए अस्पताल चले और डॉक्टर को बुला लाये !

डॉकक्ूटर--जब्ान दिखाओ, जवान |

आज़ाइ--बहुत खूब !

डॉक्टर--आँखें दिखाओ !

आजाद--आँखे दिखाऊँ, तो घबरा कर भागों ।

डॉक्टर--क्या बक-बक करता है, आँख दिखा ।

9२ डोक्टर साइब ने नुस्खा लिखा और पीस ले कर चंपत हुए। आज़ाद ने चार घंट उनकी दवा की, मगर प्यास और बेचनी बढ़ती गयी । सेरों बर्फ़ पी गये, मगर तसकीन न हुई। उद्टे और पेचिश ने नाक में दम कर दिया । बझुबह-दोते मियाँ खोजी एक वेद्यराज को बुला लाये। उन्होंने एक गोढी दी और शहद के साथ चया टी । थोड़ी देर में आज़ाद के हाय-पाँव अकड़ने छगे | खोजी .बहुत घबराये और दौडे वैद्य को बुलाने । राह में एक होम्योपैथिक डॉक्टर मिल गये | यह उन्हें घर-घार कर छाये। उन्होंने एक छोटी सी शीशी से दवा की दो बूँद पानी में डाल दीं ' उसः पीते ही आजाद की तबीयत और भी बेचैन हो गयी |

मियाँ गज़ाद ने दो-तीन दिन में इतने हत्दीभ, डाक्टर और वेद्य बदले कि अपनी द्वी ट्री पलीद कर ली। इस कदर ताक़त भी न रही कि खटिया से-उठ सकें । खोज ने अब उन्हें डॉटना शुरू किया--सौर सोहए ओस में ! जरा सी लंगी बाँध ली और तर त्रिछौने पर सो रहे | फिर आप बीमार न हों, तो क्या हम हों | रोज कहता था कि ओस में सोना बुरा है; मगर आप सुनते किसकी हैं । आप अपने को तो जाली नूस समझते हैं और बाक़ी सबको गधा । दुनिया में बस, एक आप ही तो बुकरात हैं । भठिषारी--ऐ, तुम भी अज़ीब आदमी द्वो | भला कोई बीमार को ऐसे डॉटता है! जब अच्छे दो जायें, तो खूब कोस लेना। और जो ओस की कहते हो, तो मियां, यह तो आदत पर है। हम तो दस बरस से ओस ही में सोते हैं। आन तक जुकाम भी जो हुआ हो, तो क़सम ले लो । आज़ाइ-कोसने दो । अब यहाँ घड़ी दो घड़ी के और मेहमान हैं | अब मरे। न जाने किस बुरी साइत घर से चले थे। हुस्नआरा के पास ख़त भेज दो कि इमको भरा कर देख

जाये | आज इस वक़्त सराय में लेटे हुए बातें कर रहे हैं, कल परसों तक क़न् में होंगे-- आग्रोश-लहदद में जब कि सोना होगा ; जुज़ खाक, न तकिया, न त्िछौना होगा | तनहाई में आह कोन होवेगा अनीस ; हम हं।वंगे और कब्र का कोना दहोगा।

वोजी-मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हें सरसाम न द्वो जाय ।

भठियारी--चुप भी रहो, आखिर कुछ अक़्ल भी है !

आज़ाद--मेरे दिन दी बुरे आये हैं | इनका कोई क़यूर नहीं ।

भठियारी--आपने भी तो हकीम की दवा की | हकीम छटकाये रहते हैं ।

आज़ार--खुदा इकीमों से बचाये। मूँग को खिचड़ी दे-दे कर मरीज को अध-परत कर डालते हैं। उस पर प्याले भर-भर दवा । अगर दो महीने में भी खटिया छाडी, तो समझिए कि बड़ा खशनसीब था ।

खोरी--जी हाँ, जब डॉक्टर न थे, तब तो सब मर ही जाते थे ।

आज़ाद-- खेर, चुप रहो, सिर मत खाओ | अन्न हमें सोने दो ।

मियाँ आजाद की आँख लग गयी। खोज़ी भी ऊँघपने लगे! एक आदमी ने आ कर उनको जगाया और कटद्दा--मेरे साथ आइए, आपसे कुछ कद्दना है । खोजी ने देखा, तो इनकी खासी जोड़ थी । उनसे अंगुल दो अंगुल दबते ही थे ।

खोजी--तो आप पिले क्यों पड़ते हैं ! दूर ढी से किए, जो कुछ ऋददना हो |

मुसाफ़िर-मिर्यों आजाद कहाँ हैं !

खूजी--आप अपना मतलब कहिए। यहाँ तो आज़ाद-वाज़ाद कोई नहीं है | आप अपगा खास मतलब कहिए |

मुसाक़ररिर--अज़ी, आज़ाद हमारे बहनोई हैं। हमारी बदन ने भेजा है कि देखो कहाँ हैं ।

खोजौ--उनकी शादी तो हुई नहों, बदनोई क्योंकर बन गये !

मुसाफ़िर--कितने अक़्ल के दुच्मन हो | भला कोई बेवजह किसी को अपना बहनोई बनावेगा !

खोबी--भला आज़ाद की बीबी कहा हैं ! हमको तो दिखा दीजिए |

मुसाफ़िर--अजी, इसी सराय के उस कोने में। चलो, टिखा दें । तुमसे क्या चोरी है ।

मियाँ खोली कोठरी के अंदर गये। बालों में तेल डाला | सफ़ेद कपड़े पहने | लाल फुँदनेदार टोपी दी। मियाँ आजाद का एक खाकी कोट डाटा और जब खब बन-ठन चुके, तो आईना ले कर सूरत देखने लगे । बस, ग़ज़ब ही तो हो गया । दाढ़ी के बाल ऊँचे-नीचे पाये, मूँछें गिरी पड़ीं। आपने कैंची ले कर बाल बराबर करना शुरू किया | कैंची तेज थी, एक तरफ़ की मूँछ त्रिलकुल उड़ गयी । अब क्या करते, अपने पाँव में कुद्दाड़ी मारी । मजबूर होकर बाहर आये, तो मुसाफ़िर उन्हें देख कर हँस पड़ा । मगर आदमी था चालाक, जब्त किये रहा और खोजी को साथ ले चला । जा कर क्या देखते हैं कि एक औरत, इत्र में बसी हुई, रंगीन कपड़े पहने चारपाई पर सो रही है। ज़ुल्फ़ें काली नागिन की तरह लद्दशती हुई गरदन के इर्द गिदे पड़ी हुई हैं। खोजी लगे आँखें सेकने | इतने में उस औरत ने आँखें खोल दीं और खोजी को देख कर ललकारा--ठुम

कौन हो ! यहाँ क्या काम !

खोजी--आपके भाई पकड़ लाये |

औरत--अच्छा, पंखा झलो, मगर आँखें बंद करके । खबरदार मुझे न देखना ।

खोजी पंखा झलने लगे और उस औरत ने अ ुठ-मूठ आँखें बंद कर ढीं। ज़रा देर में आँख जो खोली, तो देखा कि खोजी आँखें फाड-फाड कर देख रहे हैं । उसका आँखे खोलना था कि मियाँ खोजी ने आँखें सब ज़ोर से बंद कर लीं ।

औरत--क्यों जी, घुरते क्यों हो |! बताओ, क्या सज़ा दूँ !

खोजी--इत्तिफ़ाक़ से आँख खुल गथी ।

भौरत- अच्छा बताओ, मियाँ आज़ाद कहाँ हैं !

उधर मियोँ आबाद की आँख जो खुली, तो खोजी नदारद | जब घंटों हो गये और खोज् ी न आये, तो उनका माथा ठनका कि कमज़ोर आदमी हैं दी, किसी से टराये होंगे, उसने गरदन नापी होगी । भठियारे को भेजा कि जा कर जरा देखो तो । उसने ईंस कर कद्दा--जरी से तो आदमी हैं, भेड़िया उठा ले गया होगा। दूसरा बोला--आज हवा सन्नाटे की चलती है, कहीं उड़ गये होंगे। आखिर भदि यारी ने कद्दा कि उन्हें तो एक आदमी बुला कर ले गया है | खोजी खूब बन-ठन कर गये हैं |

आज़ाद के पेट में चूदे दौड़ने लगे कि खोजी को कौन पकड़ ले गया। गिड़ गिड़ा कर भठियारी से कहा--चादे जो हो, खोजी को छाओ | किसी से पूछो-पाछो । आखिर गये कहाँ १ ०

इधर मियोँ खोजी उस औरत के साथ बैंठे दस्तरख्वान पर हत्ये लगा रहे ये खाते जाते ये और तारीफ़ें करते जाते ये | एक छक्मा खाया और कई मिनट तक तारीफ़ की । यद्द तो तारीफ़ ह्दी करते रदे, उधर मियाँ मुसाफ़िर ने दस्तरख्वान साफ़ कर दिया । खोजी दिल में पछताये कि हमसे क्या हिमाक़त हुई | पहले खूब पेट-मर खा लेते, फिर चाहे दिन भर ब्रेठे तारीफ़ करते | उस औरत ने पूछा कि कुछ और लाऊँ ! शर्माइएगा नहीं। यदद आपका घर है। खोजी कुछ माँगनेवाले ही थे कि मियाँ मुसाफ़िर ने कहा--नहीं जी, अनत्र क्या हैजा कराओगी ! यद्द कह कर उसने दस्तरख्वान हटा दिया और खोजी मुँह ताकते रह गये | खाना खाने के बाद पान की बारी आयी दो ही गिलौरियाँ थीं | मुसाफ़िर ने एक तो उस औरत को दी और दूसरी अपने मुँह में रख ली । ख़ोजी फिर मुँह देख कर रह गये। इसके बाद मुसाफ़िर ने उनसे कद्दा-मियाँ होत, अरे भाई, ठुमसे कहते हैं।

लोजी--किससे कद्द ते द्वो जी ? क्या कहते हो !

मुसाफ़िर-- यही कहते हैं कि ज़रा पलंग से उतर कर ब्रैठों | क्या मजे से बरात्रर जा कर डट गये ! उतरा कि मैं पहुँचूँ ! और देखिएगा, आप पलंग पर चद कर बैं े हैं। अपनी इसियत को नहीं देखता ।

खोजी--चुप गीदी, न हुई क़रोली, नहीं तो भोंक देता ।

औरत-- करोली पीछे दँदिएगा, पहले जरा यहाँ से खिसक कर नीचे बैठिए ।

खोजी--बहुत अच्छा, अब बेहूँ तो तोप पर उड़ा देना ।

मुसाफ़िर-- ले चलो, उठो, यह लो, झाड़ । अभी झाड़ दे डालो ।

खोजी--झाड़ तुम दो | हमको भी कोई भड़भूजा समझा है १ हम ख्ानदानी आदमी हैं | रईसों से इस तरह बातें कहता है गीदी !

मुसाफ़िर-- हमें तो नानबाई सा मालूम होता है। चलिए, उठिए, झाड़ दीजिए । बड़े रईसज़ादे बन कर बैठे हैं। रईसों की ऐसी ही सूरत हुआ करती है!

खोजी ने दिल में सोचा कि जिससे मिलता हूँ, वह यही कद्दता है कि मलेमानस की ऐसी सूरत नहीं होती | और, इस वक़्त तो एक तरफ़ की मूँछ दी उड़ गयी है, मला-मानस कौन कहेगा । कुछ नहों, अभ हम पहले मुँह बनवायेंगे | बोले-अच्छा,ढखसत ।

मुसाफ़िर--वाह, क्या दिलगा है | बैठिए, चिलम भरके जाइएगा |

मियाँ खोजी ऐसे झल्लाये कि चिमट द्वी तो गये । दोनों में चपतत्राज़ी होने लगी | दोनों का क़द कोई छद्द छह ब्रालिश्त का, दोनों मरियल, दोनों चंड्बाज । यह आहिस्ता से उनको चपत लगाते हैं, वह धीरे से इन णर घप जमाते हैं। उन्होंने इनके कान पकड़े इन्होंने उनकी नाक पकड़ी । उन्होंने इनको काट खाया, इन्होंने उनको.नोच लिया | और मज़ा यह कि दोनों रो रहे हैं। मियाँ खोजी करौली की धुन बाँधे हुए हैं। आखिर दोनों होंप गये । न यह जीते, न वह | खोजी लड़खड़ा कर गिरे, तो चारों खाने चित । उस हसीना ने दो-तीन धौछ ऊपर से जमा दिये | इनका तो यह हाल हुआं, उधर मियोँ मुसाफ़िर ने चक्र खाया और धम से जमीन पर। आखिर हसीना ने दोनों को उठाया और कद्दा--बस, लड़ाई हो चुक्ी। अब क्या कट दी मरोगे ! चलो, बैठो ।

खोजी--न हुई क़रोली, नहीं तो भोंक देता | द्वात् तेरे को !

मुसाफ़िर-वह तो मैं हाँप गया, नहीं तो दिखा देता आपको मज़ा । कुछ ऐसा-बैठा समझ लिया है | सैकड़ों पेच याद हैं ।

हसीना--खबरदार, जो अब किसी की जबान खुली! चलो, अब चले मियाँ आज़ाद के पास | उनकी भी तो ख़बर लें, जिस काम के लिए यहाँ तक भाये हैं ।

शाम हो गयी थी। हसीना दोनों आदमियों के साथ आज़ाद की कोररी में पहुँची, तो क्या देखती है कि आज़ाद सोये हैं और भमठियारी बैठी पंखा इल रही है | उसने चट आज़ाद का कंधा पकड़ कर दिलाया | आज़ाद की आँखें खुल गयीं । आँख का खुलना था कि देखा, अलारक्खी सिरहाने खड़ी हैं और मियोँ चंडूबाज़ सामने खड़े पाँव दबा रद्दे हैं। आजाद की जान सी निकल गयी। कलेजा धड़-पड़ करने लगा, होश पैतरे हो गये। या खुदा, यहाँ यह कैसे पहुँची ! किसने पता बताया! जरा त्रीमार। हलकी हुईं, तो इस बला ने आ दबोचा--

एक आफ़त से तो म*मरके हुआ था जीना; पड़ गयी और यह केसी, मेरे अलाह, नयी |

स्तोजी--हज़रत, उठिए, देखिए, सिरहाने कौन खड़ा है | वल्लाहइ, फड़क जाओ तो सही |

आज़ाद--(अलारक्ली से) बैठिए-बैठिए, खूब मिलीं !

सोजी--अजी, अभी हमसे और आपके साले से बड़ी ठाँय-ठाँय दो गयी । वह तो कहिए, क़रौली न थी,

नहीं सालारजंग के पलस्तर बिगाड़ दिये होते |

आज़ाद ने खोजी, चंड्रबाज़् और *भठियारी को कमरे के बाहर जाने को कहा | जब दोनों अकेले रह गये, तो आजाद ने अलछारक्खी से कह्ा--कद्ठिए, आप केसे तश-रीफ़ लायी हैं ! इम तो वह आज़ाद ही नहीं रहे । वह दिल ही नहीं, वह उमंग ही नहीं । अब तो रूम ही जाने की धुन है|

अलारक्खी--प्यारे भाज़ाद, तुम तो चले रूम को, हमें किस के सुपुर्द किये जाते हो ! न हो, जमीन ही को सौंप दों । अब हम किसके हो कर रहें !

आजाद--अब इमारी इज़ूत और आबरू आप दी के हाथ है। अगर रूम से जीते बापस आये, तो तुमको न भूलेंगे । अछाह पर भरोसा रखो, वही बेड़ा पार करेगा। मेरी तत्रीयत दो-तीन दिन से अच्छी नहीं हे । कल तो नहीं, परसों जरूर रवाना हूँगा।

खोजी--(भीतर आ कर) बी अलारक्खी अभी पूछ रद्दी थीं कि मुझको किसके सुपुर्दं किये जाते दो; आपने इसका कुछ जबाब न दिया। जो कोई और न पिल्े, तो इमीं यद्द मुसीबत सहैँ । हमारे द्वी सिपुदें कर दीनिए। आप जाइए, हम और यह यहाँ रहेंगे |

आजाद--तुम यहाँ क्यों चक्के आये १ निकलछो यहाँ से |

अलारक़्खी बड़ी देर तक आज़ाद को समझाती रही--हमारा कुछ खयाल न करो, हमारा अछाह मालिक है। तुम हुस्नआरा से क़ौल हारे हो, तो रूम जाओ और ज़रूर जाओ, खदा ने चाहा तो सुखंरू दो कर आओगे | में भी जा कर हुस्न-आरा ही के पास रहूँगी। उन्हें तसब्ली देती रहूँगी। ज़रा जो किसी पर खुलने पावे कि मुझसे-तुमसे क्या ताल्डक़ है। इतना खयाल रहे कि जहाँ-जदौँ डाक जाती हो वहाँ-वहाँ से खत बराबर भेजते जाना । ऐसा न हो कि भूछ जाओ । नहीं तो वह्द कुढ-कुद कर मर ही जायैंगी । और, मेश तो जो हाल है, उसको खदा दी जानता है। अपना दुःख किससे कहूँ !

आज्ञाद - अलारक्खी, खदा की कसम, हम तुमको अपना इतना सच्चा दोस्त नहीं जानते थे । तुमको मेरा इतना खयाल ओर मेरी इतनी मुहब्बत है, यह तो आज मादम हुआ ।

इस तरह दो-तीन घंटे तक दोनों ने जाते की । जत्न अलारक़्खी रबाना हुई, तो दोनों गले मिल कर खब रोये ।

HINDI TEXT

प्रसंग २६

आज़ाद ने सोचा कि रेल पर चलने से हिंदोस्तान की द्वालत देखने में न आयेगी | इसलिए वह लखनऊ के स्टेशन पर सवार न द्टो कर घोड़े पर चले थे । एक शहर से दूसरे शहर जाना, जंगल और देहात की सैर करना, नये-नये आदमियों से मिलना उन्हें पसंद था । रेल पर ये मौक़े कहाँ मिलते । अलारक्खी के चले जाने के एक दिन बाद वह भी चले। घृमते-धामते एक क्रस्बे में जा पहुँचे । बीमारी से तो उठे ही थे, थक कर एक मकान के सामने बिस्तर बत्रिछाया और डट गये। मिर्यों स्रोजी ने आग सुलगायी और चिलम भरने लगे। इतने में उस मकान के अंदर से एक बूढ़े निकले और पूछा--आप कहाँ जा रहे हैं !

आज़ाद--इरादा तो बड़ी दूर का करके चला हूँ, रूम का सफ़र है, देखे पहुँचता हैँ या नहीं।

बूढ़े मियाँ-- खुदा आपको सुख्रू करे । हिम्मत करनेवाले की मदद खुदा फरता है । आइए, आराम से घर में बेठिए । यद्द भी आप द्वी का घर है !

आज़ाद उस मकान में गये, तो क्या देखते हैं कि एफ जवान औदत चिक उठाये मुसकिर रही है। आज़ाद ज्यों ही फशे पर बैठे वह दइसीना वाहर निक्कल आयी और बोली--मेरे प्यारे आज़ाद, आज बरसों के बाद तुम्हें देखा । सच कहना, कितनी जल्दी पहचान गयी । आज मैंह-माँगी मुराद पायी ।

म्रियाँ आज़ाद चकराये कि यह हसीना कोन है, जो इतनी मुहब्बत से उरेश आती है । अब साफ़ साफ़ केसे कहें कि हमने तुम्हें नहीं पहचाना | उस हसीना ने यह बात ताड़ ली और मुसकिरा कर कहां --

हम ऐसे हो गये अल्लाह-अकत्र, ऐ: तेरी कुदरत ।
हमारा नाम सुन कर द्वाथ वह कानों पे घरते हैं ।

आप और इतनी जरूर इसमें भूल जायें | हम वह हैं जो लड़कपन मे तुप्दारे साथ खेला किये हैं| तुम्हारा मकान हमारे मकान के पास था। मैं तुम्दारे बाग में रोज़ फूल चुनने जाया करती थी। अब समझ्षे कि अब भी नहीं समझे १

आज़ाद--आहाइा, अब समझा, ओफ् ओह ! बरसों बाद तुम्हें देखा। मैं भी सोचता था कि या खुदा यह कौन है कि ऐसी वेशख्रिषइक हो कर मिली | मगर पहचा नते, तो क्यों कर पहचानते ! तब्न में और अब में जमीन-आसमान का फ़क़ है। सच कहता हैं जीनत, तुम कुछ भौर ही हो गयी हं।।

जीनत--आज किसी भले का मुँह देख कर उठी थी। जब से तुम गये, जिंदगी का मजा जाता रहा--- यह हसरत रह गयी किस-किस मज़े से जिंदगी कटती ; अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बारावाँ अपना ।

आज़ाद--यडाँ भी बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलीं, लेकिन तुम्हें देखते द्वी सारी कुल-

फ़तें दूर हो गयीं-- तब लुस्ंप्रे-जिंदगी है, जब अब्र हो, चमन दो ; पेशे-नजर हो साक़ी, पहलू में गुल्बदन हो ।

यहाँ अख्तर नहीं नज़र आती !

जीनत--है तो, मगर उसकी शादी हो गयी । तुम्हें देखने के लिए बहुत तड़पती थी । उस बेचारी को चचाजान ने जान-बूझ कर खारी कुएँ मं ढकेल दिया । एक छुब्चे के पाले पड़ी है, दिन-रात रोया करती है। अब्बाजान जब से धिधारे, इनके पाले प९ हैं। जब देखो, सोटा लिये कल्ले पर खड़े रहते हैं। ऐसे शोहदे के साथ ब्याह दिया, निसका ठौर न ठिकाना । में यह नहीं कहती कि कोई रुपयेवाला या बरद्दादुशाह के खानदान का होता। ग़रीब आदमी को लड़की कुछ रारीब्रों ही के यहाँ खूब रहती है। सबसे बड़ी बात यह है कि समझदार हो, चाल-चलन अच्छा हो; यह नहीं कि पढ़े न लिखे, नाम मुहम्मदफ़ाहिल; अलिफ़ के नाम बे नहीं जानते, मगर दावा यह है कि हम भी हैं पाँचवें सवारों में | हमारे नजदीक जिसकी आदत बुरी हो उससे बढ़ कर पाजी कोई नहीं | मगर अब्च तो जो होना था, सो हुआ; तुम रुब जानते दो आज़ाद कि साली को अपने बहनोई का कितना प्यार द्वोता हे; मगर क़सम लो, जो उसका नाम केने को भो जी चाहता हो। बीघ्री का जेवर सब बेच कर चट कर गया--कुछ दाँव पर रख आया, कुछ के औने-पौने किये। मकान-वकान सब इसी जुए के फेर में घूम गया ! अब टकें-टक को मुहृत।ज है। डर माल्म होता है कि किसी दिन यहाँ आ कर कपड़े-छत्ते न उठा ले जाय | चचा को उसका सब हाल माद्म था, मगर लड़की को भाड़ में झोंक ही दिया। आती द्वोगी, देखना, कैसी घुल के काँटा हो गयी है। हृडडी-दड्डी गिन छो | ऐ! अख्तरी, जरी यहाँ आओ । मिर्यों आजाद आये हैं ।

ज़रा देर में अर्तर आयी । आजाद ने उसको और उसने आज़ाद को देखा, तो दोनों बेअख्तियर खिल-खिल्ण कर हैंस पड़े । मगर जरा ही देर में अख्तर की आँखें मर आयी और गोल-गोल आँसू टप-टप गिरने लगे | आज़ाद ने कह-- बहन, इम तुम्हारा सत्र हाल सुन चुके; पर क्या करें, कुछ बस नहीं। अल्लाह पर भरोसा रखो, वह्दी सबका मालिक है | किसी हालत में आदमी को घत्ररराना न चाहिए। सत्र करनेवालों का दर्जा बड़ा द्वोता है ।

इस पर अख्तर ने और भी आठउ-आठ आँसू रोना शुरू किया ।

जीनत बोली--बदहन, आज़ाद बहुत दिनों के बाद आये हैं। यह रोने का मोक़ा नहीं।

आज़ाद--अख्तर, वह दिन याद हैं, जब्र तुमको हम चिढ़ाया करते थे और तुम अंगूर की टट्टी में रू कर छिप रहती थीं; दम हूँढ कर तुम्हें मना लाते थे और फिर चिदाते थे ! इमको जो तुम्हारी दोनों की मुदृब्बत है, इसका हाल हमारा खदा ही जानता है। काकझ, खदा यह दिन न दिखाता कि मैं तुमको इस मुसीत्रत में देखता। तुम्हारी वह सूरत ही बदछ गयी ।

अख्तर-भाई, इस वक़्त तुमको क्या देखा, जैसे जान में जान आ गयी । अब पहले यह बताओ कि तुम यहाँ से जाओगे तो नहीं ! इधर तुम गये, और उधर हमारा जनाज़ा निकला । बरसों बाद तुम्हें देखा है, अन्न न छोड़गी ।

इसी तरद्द बातें करते-करते रात हो गयी । आजाद ने दोनों बहनों के साथ खाना खाया । ततब्र जीनत चबोली--आज पुरानी सोहबतों की बहार आँखों में फिर गयी । आइए, खाना खा कर चमन में चल | बाग़ तो वीरान है; मगर चलिए, ज़रा दिल बहलायें । कसम लीजिए, जो मद्दीनों चमन का नाम भी लेती हों--

नजर आता है गुल आजर्दा, दुश्मन बारात्ों मुझको बनाना था न ऐसे बोरस्ताँ में आशियाँ मुझको |

खाना खा कर तीनों ज्ाग़ की सैर करने चले |

आज़ाद--ओहो हो, यह पुराना वरख्त है। इसी के साये में हम रात-रात बैठे रहते ये | आद्ाहा, यद्द वह रविश है, जिस पर हमारा पाँव फिसला था और इम गिरे, तो अख्तर खूब खिल-खिला कर हँसी । तुम्दारे यहाँ एक बूटी औरत थी, जैनब की माँ।

अख्तर--थी क्यों, क्या अब नहीं है ! ऐ वह हमसे ठमने ह्रद्टी-कट्टी है; ग्तासी कटौता सी बनी हुई है ।

आज़ाद-क्या वह बूढ़ी अभी तक ज़िंदा है ! कया आक्रत्त के बोरिये बटोरेगी !

चलते-चलते बाग में एक जगह दीवार पर लिखा देखा कि मिर्यों आज़ाद ने आज इस ब्ाग़ की सैर की ।

इतने में जीगत के बूढ़े चचा आ पहुँचे और बोले--भई, हमने आज जो तुम्हें देखा, तो खयाल न आया कि कहाँ देखा है | खूब आये । यह तो बतलाओ, इतने दिन रहे कहाँ ? जीनत तुम्हें रोज़ याद किया करती थी, उठते-बैठते तुम्हारा ही नाम जबान पर रहता था ? अत्र आप यहीं रहिए | जीनत को जो तुमसे मुहब्बत है, वह उसका और तुम्हारा, दोनों का दिल जानता द्वोगा | मेरी दिली आरजू है कि तुम दोनों का निकाह दो जाय । इसी बाग़ में रहिए और अपना पर सँभालिए | मैं तो अब गोरी बैठ कर खदा की बंदगी करना चाहता हूँ ।

मियाँ आजाद ये बातें सुन कर पानी-पानी ह। गये | हाँ! कहें, तो नहीं बनती नहीं? कहें, तो शामत आये । सन्नाटे में थे कि कहें क्या । आखिर बहुत देर के बाद बोले--आपने जो कुछ फ़रमाया, वह आपकी मेहरबानी है। में तो अपने को इस लायक नहीं समझता । जिसका ठौर न ठिकाना, वह जीनत के काबिल कब्र हो सकता दे !

मियां आजाद तो यहाँ चैन कर रहे थे, उधर मियाँ खोजी का हाल सुनिए । मियाँ आज़ाद की राह देखते-देखते पीनक जो आ गयी, तो टट्टू एक किसान के खेत में जा पहुँचा । किसान ने लककारा--अरे, किसका टट्टू है! आप जरा भी न बोले । उसने ख़ब गालियाँ दीं। आप बैठे सुना किये । जब उसने टट्ट को पकद्टा और काँजी होस ले चला, तत्र आप उससे लिपट गये | उसने झल्ला कर एक धक्का ज दिया, तो आपने बीस लुद़कनियाँ खायीं। वद्द टट्ट को ले चछा। जब खोजी ने देखा कि बह द्वारी-जीती एक नहीं मानता, तो आप धम से टट्ट की पीठ पर हो रहे ' अन्न आगे आगे किसान, पीछे-पीछे टट्ट और टट्ट को पीठ पर खोजो । राह चलते लछोग देखते थे। खोजी बार-बार क़रोली की हाँक लगाते थे। इस तरद्द कॉजीहोस पहुँचे । अन्न कॉजीहौस का चपरासी और मुंशी बार-बार कद्दते हैं कि हज़रत, टट्टू पर से उतरिए इसे इम भीतर बंद करें; मगर आप उतरने का नाम नहीं लेते; ऊपर बैंठे-बैंठे करौली और तमंचे का रोना रो रहे हैं। आख़िर मजबूर हो कर मुंशी ने खोजी को छोड़ दिया । आप <द्ढनू ल्यि हुए मूँछों पर ताव देते घर की तरफ़ चले, गोया कोई किला जीत कर आये हैं।

उधर आजाद से अख्तर ने कद्दा -क्यों भाई, वे पहेलियाँ भी याद हैं, जो तुम पहले बुझवाया करते ये १ बहुत दिन हुए, कोई चीसतों सुनने में नहीं आयी |

आज़ाद--अच्छा, बूझिए---

आँ चीसस्त दहन दइजार दारद;

(वह क्या है जिसके सौ मुँह होते हैं)

दर हर दहने दो मार दारद;

(हर मुँह में दो साँप द्वोते हैं)

शाहेसस्त नशिस्ता वर सरे-तख्त ।

(एक बादशाह तख्त पर त्रैठा हुआ है)

आँ रा दमा दर शुमार दारद ।

(उसी को सत्र गिनते हैं) अख्तर--हज़ार मुँह । यह तो बड़ी टेढी खीर है ! जीनत--गिनती कैसी !

आजाद--कुछ न बतायेंगे | ज्ञो ख़दा की बंदगी करते हैं, वह आपी समझ जायेंगे। अख्तर--अह्दा हा, मैं समझ गयी । अल्लाह क! क्रसम, समझ गयी । तसवीह्रू है क्यों केसी बूझी !

आज़ाद--हाँ । अच्छा, यद्द तो कोई बूझे---

राजा के घर आयी रानी,

ओऔषट-घाट वह पीवे पानी ।

मारे लाज के हनी जाय,

माहक चोट परोसी खाय |

जीनत- भई, हमारी समझ में तो नहीं आता । बता दो, बस, बूझ चुकी । अख्तर- वाह, देखो, बूझते हैं | घड़ियाल है । आज़ाद-- वल्लाह, खूब बूझ्ी । अब की बूशिए--

एक नार जब सभा में आदचे,

सारी सभा चकित रह जावे।

चातुर चातुर वाके यार,

मूरल देखे मुँह पसार। जीनत--जो इसको कोई बूझ दे, तो मिठाई खिल्शऊँ | आज़ाद--यदद इस वक़्त यहाँ है । बस, इतना इशारा बहुत है | अख्तर--हम द्वार गये, आप बता दें । आज्ञाद--बता ही दूँ , यह पहेली हे । जीनत--अरे, कितनी मोटी बात पूछी और हम न बता सके |! अख्तर--अच्छा, बस एक और कह दीजिए । लेकिन अबकी कोई कहानी कहिए।

अच्छी कहानी हो, लड़कों के बहलाने की न हो |

आज़ाद ने अपनी और हुस्नआरा की मुहब्बत की दास्तान बयान करनी शुरू की। बजरे पर सैर करना, सिपहआरा का दरिया में छृतबना ओर आजाद का उसको निकालना, हुस्नआरा का आज़ाद से रूम जाने के लिए कहना और आज़ाद का कमर बाँध कर तैयार हो जाना, ये सारी बातें बयान कीं ।

अख्तर - बेशक सच्ची मुहब्बत थी ।

आजाद--मगर मियां आशिक वहाँ से चले, तो राह में नीयत डावॉडोछ हो गयी । किसी और के साथ झादी कर ली ।

अख्तर- तोबा ! तोबा ! बड़ा बुरा किया | बस, जबानी दाखिला था |

जीनत--सश्ची मुहब्बत होती, तो हूर पर भी आँख न उठाता | रूम जाता और फिर जाता । मगर वह कोई मकक्कार आदमी था |

आज़ाद--वह आशिक में हूँ और माशूक़ हुस्नआरा है। मैंने अपनी ही दास्तान बुनायी और अपनी ही हालत बतायी । अब जो हुक्म दो, वह मंजूर, जो सलाह बताओ बह क़बूछ | रूम जाने का वादा कर आयी हूँ, मगर यहाँ तुमको देखा, तो अन्न कदम नहीं उठता । क्रमम ले छो, जो तुम्हारी मर्जी के खिलाफ़ करूँ।

इतना सुनना था कि अख्तर की आँखें डब्रडत्रा आयीं और ज़ीनत का मुँदद उदास हो गया । सिर झुका कर रोने छगी।

अख्तर--तो फिर आये यहाँ क्या करने !

जीनत--तुम तो हमारे दुश्मन निकले । सारी उमंगों पर पानी फेर दिया--

शिकवा नहीं है आप जो अब पूछते नहीं ; वह शक़छ मिट गयी, वह शब्राहत नहीं रही ।

अख्तर--बाजी, अब इनको यही सलाईइ दो कि रूम जायैं। मगर जब वापस आयें, तो हमसे भी मिले, भूल न जायें ।

इतने में बाहर से आवाज़ आयी कि न हुई क़रौली, वर्ना खन की नदी बहती होती, कई आदमियों का खून हो गया होता । वह तो कहिए, खैर गुज़री | आज़ाद ने पुकारा--क्यों भाई खोजी, आ गये !

खोजी--वाह-वाह ! क्या साथ दिया! हमको छोड़ कर भागे, तो ख़बर भी न ली | यहाँ किसान से डंडा चल गया, कॉजीहौस में चौकीदार से लाठी-पोंगा हो गया; मगर आपको क्या ।

आजाद - अजी चलो, किसी तरह आ तो गये !

खोजी--अजी, यही बूढ़े मिरयाँ राह में मिले, वह यहाँ तक ले आये। नहीं ते सचमुच घास खाने की नौबत आती ।

प्रियाँ आजाद दूसरे दिन दोनों बहनों से रखसत हुए। रोते-रोते ज़ीनत की हिचकियाँ बंध गयीं। आज़ाद भी नर्म-दिल आदमी थे । फूट-फूट कर रोने छगे। कहा--मैं अपनी तसबीर दिये जाता हूँ, इसे अपने पास रखना | मैं ख़त बराबर भेजता रहूँगा | वापस आऊँगा, तो पहले तुमसे मिर्दूगा, फिर किसी से | यद्द कह कर दोनों बहनों को पाँच-पाँच अशर्फ़ियाँ दीं। फिर ज़ीनत के चचा के पास जा कर बोले---आप बुजगे हैं, लेकिन इतना हम ज़रूर कहेंगे कि आपने अखइ्तरी को जीते जी मार डाढछा । दीन का रखा न दुनिया का । आदमी अपनी लड़की का ब्याह करता है, तो देख लेता है कि दामाद कैसा है; यह नहीं कि शोहदे और बदमादा के साथ ब्याह कर दरिया। अब आपको लाक्िम है कि उसे किसी दिन बुलाइए, और सम झाइए, शायद सीधे रास्ते पर आ जाय ।

बूढ़े मियाँ--क्या कहें भाई, हमारी क्रिस्मत ही फूट गयी। क्या हमको अख्तरी का प्यार नहीं है ! मगर

करें क्या ! उस बदनसीब को समझाये हौन ! किसी की सुने भी ।

आजाद--खेर, अब ज़ीनत की शादी ज़रा समझ-बूझ कर कीमजिएगा। अगर जीनत किसी अच्छे घर ब्याही जाय और उसी का शोहर चलन का अच्छा हो, तो अख्तर के भी आँसू पुँछें कि मेरी बहन तो ख़श है, यही सही । चार दिन जो कहीं बहन के यहाँ जा कर रहेगी, तो जी खद होगा, बड़ी दारस होगी। अब बंदा तो रुखसत होता है, मगर आपको अपने ईमान और मेरी जान की कसम है, ज़ीनत फी शादी देख-भाल कर कीजिएगा ।

यह कह कर आशक्षाद घर से आहइर निकले, तो दोनों बहनों ने चिल्ल।-चिल्ला कर रोना शुरू किया |

आज़ाद--प्यारी अख्तर और प्यारी ज़ोनत, खुदा गवाह है, इस वक़्त अगर मुझे मौत आ जाय, तो समझ, जी उठा । मुझे खब मादूम है, मेरी जुदाई तुम्हें अखरेगी लेकिन क्या करूँ, किसी ऐसी-बैसी जगह जाना होता, तो खैर, कोई मुजायक़ा न था मगर एक ऐसी मुद्िम पर जाना है, जिससे इनकार करना किसी मुसलमान को गवारा नहीं हो सकता | अब मुझे हसी-खुशी रख्सत करो । जीनत ने कलेजा थाम कर कद्दा--जाइए । इसके आगे मुँह से एक बात भी

न निकली । अख्तर--जिस तरह पीठ दिखायी, उसी तरह मुँह भी दिखाओ |

HINDI TEXT

प्रसंग २७

मियाँ आजाद और खोजी चलते-चलते एक नये क़स्बे में जा पहुँचे और उसकी सैर करने लगे | रास्ते में एक अनोखी सन्न-धज के जवान दिखायी पड़े | सिर से पैर तक पीले कपड़े पहने हुए,, दीले पाँयचे का पाज़ामा, केसरिये फेचुल-लोट का भंगरखा, केसरिया रेंगी दुपल्ली टोपी, कंधों पर केसरिया रूमाल, जिसमें लचका टका हुआ | सिन कोई चालीस साल का ।

आज़ाद--क्यों मई खोजी, मला भाँपो तो, यद्द किस देश के हैं |

खोजी--शायद काबुल के हों ।

आजाद--काबुडियों का यह पहनावा कहाँ होता दे !

खोज़ी--वाह, खूब समझे ! क्या काबुल में गधे नहों होते !

आजाद--जहुरा हज़रत की चाल तो देखिएगा, केसे कूंदे झाड़ते हुए चले जाते हैं । कभी जरी के जूते पर निगाह है, कभी रूमाल फड़काते हैं, कभी अँगरखा चम-काते हैं, कभी लचके की झलक दिखाते हैं। इस दादी-मूँठ का भी खयाल नहीं। यह दादी और यद्द लूचके की गोट, सुभान-अल्ा |

खोजी--आपको ज़रा छेड़िए तो; रिछगी ही सही ।

आज़ाद--जनाब, आदाबअजे है। वल्लाह, आपके लिब्रास पर तो वह जोबन है कि आँख नहीं ठहरती, निगाह के पाँव फिसले जाते हैं ।

जर्देपोश--(शर्मा कर) जी, इसका एक ख़ास सबत्र है|

आज़ाद--वह क्या ! क्या किसी सरकार से वर्दी मिली है ! या, सच कहना उस्ताद, किसी नाई से तो नहीं छीन लाये !

जद पोश-- (अपने नौकर से) रमज़ानी, जरा बता तो देना, हमें अपने मुंह से कहते हुए शरम आती है।

रमजानी--हुजूर, मियोँ का निकाह दोनेवाला है। इसी पहनावे की रस्म है हुजूर !

आज़ाद-रस्म की एक ही कददी | यह अच्छी रस्म है--दादी-मुँछराले आदमी, और लचका, वन्नत पद्ठा लगा कर कपड़े पहनें ! अरे भई, ये कपड़े दुलद्दिन के लिए हैं, या आप-जैप्ते मुठक्कड़-फकड़बेग़ के लिए. : ख़दा के लिए इन कपड़ों को उतारो, मरदों की पोशाक पहनो |

इधर आज़ाद तो यह फटकार छुना कर अलग हुए, उधर खिदमतगार ने मिरयाँ जदंपोश को समझानां झुरू फिया--मियाँ, सच तो कद्दते थे | ज़िस गली-दूँचे में आप निकल जाते हैं, लोग तालियाँ बजाते और हँसी उडाते हैं।

जदेपोश - हँसने दो जी; हँसते ही घर बसते हैं ।

. स्तदमतगार--मियोँ, मैं ज़ादिल आदमी हूँ, मु बुरी बात बुरी ही है । हम

ग़रीब आदमी हैं, फिर भी ऐसे कपड़े नहीं पहनते ।

मियाँ आज़ुद उधर आगे बंदे तो क्या देखते हैं, एक दुकड़ी सामने से आ रही है। उस पर तीन नौजवान रईस बड़े ठाट से बेंठे हैं। तीनों ऐनकबाज़ हैं। आजाद बोले--यह नया फेशन देखने में आया। जिसे देखो, ऐनकबत्राज़्। अच्छी-खासी आँखें रखते हुए भी अंधे बनने का शौक !

मियाँ आज़ाद को यह करबा ऐसा पसंद आया कि उन्होंने दो-चार दिन यहीं रहने की ठानी । एक दिन घूमते-घामते एक नवाब के दरबार में जा पहुँचे । सजी-सजायी कोठी, बड़े-बड़े कमरे | एक कमरे में गलीचे बिछे हुए, दूसरे में चौकियाँ, मेज, मसहरियाँ क़रीने से रखी हुईं | खोजी यह ठा2-बाट देख कर अपने नवाब को भूल गये । जा कर दोनों आदमी दरबार में बैठे | खोजी तो नवातरों की सोहबत उठाये थे, जाते द्दी जाते कोठी की इतनी तारीफ़ की कि पुर बाँध दिये--हजूर, खदा जानता है, क्या सजी-सजायी कोठी है। क्रपम है हुसेन की, जो आज तक ऐसी इमा रत नज़र से गुजरी हो । हमने तो अच्छे-अच्छे रईसों की मुसाहबत की है, मगर कहीं यद्द ठाट नहीं देखा | हुजूर बादशाद्दों की तरह रहते हैं। हुजूर की बदौलत इजारों ग़रीजों-शरीफ़ों का भला होता है। खदा ऐसे रईस को सलामत रखे ।

मुसाहब--अजी, अभी आपने देखा क्या है ! मुसाहब लोग तो अब आ प्ले है । शाम तक सब आ जायँगे । एक मेले का मेला रोज़ लगता है |

नवाब- क्यों साइब, यह फ्रीमेशन भी जादूगर है शायद! आएिर जादू नहीं, तो है क्या !

मुसाइब--हुजुर बचा फ़रमाये हैं | कुछ दिन हुए, मेरी एक फ्रीमेशन से मुलाक्रात

हुई । मैं, आप जानिए, एक ही काइयाँ। उनसे खूब दोस्ती पैदा की | एक दिन मैंने

उनसे पूछा, तो बोले--यह वह मज़हब दे, जिससे बढ़ कर दुनिया में कोई मज़हन ही नहीं । क्यों नहीं दो जाते फ्रीमेशन ! मेरे दिल में भी आ गयी | एक दिन उनके साथ फ्रीमेश्नन हुआ । वहाँ हुजुर, करोड़ों लाशें थीं। सब की सत्र मुझसे गले प्रिलीं और हूँसीं | में बहुत ही डरा । मगर उन लोगों ने दिलासा दिया--इनसे डरते क्यों हो ! हाँ, खबरदार, किसी से कहना नहीं; नहीं तो ये लाश कच्चा ही खा जार्यगी | इतने में खदाबंद, आग बरतने लगी और मैं जल-भुन कर खाक हो गया। इसके बाद एक आदमी ने कुछ पद कर फूँका, तो फिर दृद्दा-कट्टा मौजुद ! हुजूर, सच तो यो दै कि दूसरा द्धोता, तो रो देता, लेकिन मैं ज़रा मी न घबराया। थोड़ी देर के बाद एक देव जैसे आदमी ने मुझे एक हौज़ में दकेल दिया। मैं दो दिन और दो रात वहीं पड़ा <द्धा | जब निकाछा गया, तो फिर टैयाँ सा मौजूद । सब्रकी सल्यह हुई कि इसको यहाँ से निकाल दो । हुज़ुर, ख़दा-खुदा बरके बचे, नहीं तो ज्ञान द्धी पर बन आयी थी (

ग़प्पी - हुल्र्, सुना है; कामरूप में औरतें मर्दों पर माश पढ़ कर फूँकती और बकरा, बेल मधा, वगैरह बना डालती हैं। दिन मर बकरे बने, में-में किया किये, सानी खाया किये, रात को फिर मर्द के मर्द । दुनिया में एक से एक जादूगर पड़े हैं।

खदामदी--हुजूर, यह मूठ क्या चीज़ है ! कल रात को हुजूर तो यहाँ आराम फ़रमाते थे, में दो बजे के वक़्त क़रान पद कर टहलने लगा, तो हुजूर के सिरहाने के ऊपर रोशनी सी हुई । मेरे तो होश उड़ गये ।

मुसाहब-द्ोश उड़ने की बात ही है |

खुशामदी--हुजूर, मैं रात भर जागता रद्दा और हुजूर के पहूँग के इर्द-गिद पहरा दिया किया ।

नवाब--तुम्हें करान की क़सम ।

खशामदी--हुजूर की बदौलत मेरे बाल-बच्चे पछते हैं; मला आपसे और झूठ बोलूँ ! नमक की क्रमम, बदन का रोआँ-रोआँ खड़ा दो गया। अगर मेरा बाप भी होता; तो मैं पहरा न देता; मगर हुजुर का नमक जोश करता था।

जमामार--हुज्र, यहाँ एक जोड़ी ब्रिकाऊ है। हुजुर ख़रीदें, तो दिखाऊँ। क्या जोड़ी है कि, ओद्दोहदोहो | डेढ इज़ार से कम में न देगा |

मुसाहत्र--ऐ., तो आपने खरीद क्यों न ली | इतनी तारीफ़ करते हो और फिर हाथ से जाने दी ! ह्वुजर, इन्हें हुक्म हो कि बस, ख़रीद ही लायें! बादशाही में इनके यहाँ भी कई घोड़े थे; सवार भी खूब होते हैं; और चाबुक-सवारी में तो अपना सानी नहीं रखते ।

नवाब--मुनीम से कहो, इन्हें दो हजार रुपये दें, और दो साईस इनके साथ जायें।

जमामार मुनीम के घर पहुँचे और बोले--लाछा जवाहिरमछ, सरकार ने दो हजार रुपये दिलवाये हैं, जल्द आइए |

जवादिरमल--तो जल्दी काहै की है ! ये रुपये होंगे क्या !

जमामार--एक जोड़ी ली जायगी। उस्ताद, देखो, हमको बदनाम न करना | चार सौ की जोड़ी है। बाकी रहे सोलह सौ। उसमें से आठ सी वार लोग खायँगे बाकी आठ सो में छह सौ इमारे, दो सो तुम्हारे | है पक्की बात न !

जवाहिर्मल--तुम लो छह सो, और हम लें दो सौ ! मिर्यों भाई हो न | अरे यार, तीन सौ हमको दे, पाँच सो तू उड़ा । यद्द मामले की बात है !

जमामार--अज्ी, मिर्यों भाई की न कहिए. | मियाँ भाई तो नवाब भी हैं, मगर अलाइ मियाँ की गाय | तुम तो लाखों खा जाओ, मगर गादे की लँगोटी लगाये रहो । खाने को हम भी खायंगे, मगर शरत्रती के शँगरखे डाटे हुए नवाब बने हुए, क्रोरपा भौर पुछाव के बगैर खाना न खायँगे । तुम उचाली खिचड़ी ही खाओगे | खैर, नहीं मानते, तो जैसी तुम्दारी मरज्जी ।

मियाँ जमामार जोड़ी ले कर पहुँचे, हो दरबार में उसकी तारीफ़े होने लगीं। कोई उसके थूथन की तारीफ़ करता है, कोई माथे की, कोई छाती की | खुशामदी बोले--वल्ला ह, कनौटियाँ तो देखिए, प्यार कर लेने को जी चाहता है ग़प्पी - हुज्र, ऐसे जानवर क्रिस्मत से मिलते हैं। कसम खदा की, ऐसी जोड़ी सारे शहर में न निकलेगी | दा

मतलबी--हुजूर, टो-दो हज़ार की एक-एक घोड़ी है। क्या ख़बसूरत हाँय-पाँव हैं। और मज़ा यह कि कोई ऐब नहीं | हु ड़

नवाब-- कल शाम को फिटन में जोतना | देखें केसी जाती है ।

रप्पी--हुजूर, आँधी की तरह जाय, क्या दिललगी है कुछ |

रात को मियाँ आज़ाद सराय में पढ़ रहे। दूसरे दिन शाम को फिर नवाब साहब के यहाँ पहुँचे | दरबार जमा हुआ था, मुसाहब लोग राप्पें उड़ा रदे थे। इतने में मसजिद से अजान की आवाज़ सुनायी दी । मुसाहबों ने कहा- हुजूर, रोज़ा खोलने का वक़्त आ गया ।

नवाब--क़सम कुरान की, हमें आज तक मादूम ही न हुआ कि रोजा रखने से फ़ायदा क्या होता है ! मुफ़्त में भूखों मरना कौन सा सवाब है ! हम तो हाफ़िन के चेले हैं, वह भी रोज़ा-नमाज़ कुछ न मानते थे ।

आज़ाद--हुजूर ने खूब कहा--

दोश अज् मश्जिद सुए मैखाना आदम पीरे मा ; चीस्त याशने तरीकत बाद अर्जी तदबीरे मा |

(कल मेरे पीर मसजिद से शराबखाने की तरफ़ आये। दोस्ती, बतछाओ, अब में क्या करूं ह)

खशामदी--वाह-वाह, क्या शेर है| सादी का क्या कहना !

ग़प्पी--सुना, गाते भी खूब थे । त्रिहाग की धुन पर सिर धुनत हैं ।

भाज़ाद दिल में खूब हँसे। यह मसखरे इतना भी नहीं जानते कि यह सादी का शेर है या दाफ़िज़ का | और मज़ा यह कि उनको बतिद्दाग भी पसंद था ! केसे-कैसे गोखे जमा हैं |

धुसाइब--हुजूर, बजा फ़रमाते हैं । भूखों मरने से भला खुदा क्या खुश होगा!

नवाब--भई, यहाँ तो जब से पैदा हुए, क़सम ले छो, जो एक दिन. भी फ़ाक़ा किया हो | फिर भूख में नमाज़ की किसे सूझती है !

खशामदी--हुजूर, आप ही के नमक की क़सम, दिन-रात खाने ही की फ़िक्र रहती है ! चार बजे और ढौंडी की जान खाने लगे--लहसुन ला, प्याज़ छा, कबातर पके, तोबा !

हिंदू मुसाहब-- हुजुर, हमारे यहाँ भी दत रखते हैं लोग, मगर हमने तो हर बते के रिन गोस्त चखा |

खशामदी- शात्राश लाला, शाब्राश | वल्ाह, तुम्हारा मज़हद पक्का है ।

नवाब--पढ़े-लिखे आउमी हैं, कुछ जाहिल-वार थोड़े ही हैं ।

खोजी--वाइ-बाह, हुजूर ने वह बात पेदा की कि तौबा ही मली ।

खुशामदी--वाह शुई, क्या तारीफ़ की है। कहने लगे, तौबा ही भली | किस जगल से पकड़ क आये हो भई १ तुमने तो वह बात कही कि तौबा ही भमछी | खदा के लिए जरी समझ-बूझ् कर बोला करो |

ग़प्पी--ऐ हज़रत, बोले क्या, बोलने के दिन अब गये | बरसात हो चुकी न !

खोजी--मियाँ, एक-एक आओ, या कहो, चौमुखी लड़ें। हम इससे भी नहीं डरते । यहाँ उम्र भर नवाबों ही की सोहबत में रहे | तुम लोग अभी कुछ दिन सीखो। आप, और हम पर मुँह आयें। एक बार हमारे नवात्र साहब के यहाँ एक इज़रत आये, बड़े बुलक्कड़ | आते ही मुझ पर फ़िक़रे कसने लगे | बस, मैंने जो आड़े द्वाथों लिया, तो झेप कर एकदम भागे । मेरे मुकाबले में कोई 2हरे तो भछा ! ले बस आइए, दो-दो चोंचें हों । पाली से नोकदम न भागो, तो मूँछे मुड़वा डालें ।

मुसाइब--आइए, फिर आप भी क्या याद करेंगे। बंदे की जन्नान भी वह है कि कतरनी को मात करे । जत्नान आगे जाती है, बात पीछे रह जाती है ।

खोजी - जान क्या चर्खा है रॉड का | खदा झूठ न बुछारे, तो रोटी को हुजूर छोती कहते होंगे | ¬

मुसाहबर --जब ख़दा झूठ न बुलाये, तब तो । आप और झूठ न बोलें । जब्न से होश सेभाल,, कभी सच बोले ही नहीं । एक दफ़े धागे से सच्ची बात निकल आयी थी, जिसका आज तक अफ़सोस हे ।

सोजी--और वह उस वक़्त जब्च आपसे किसी ने आपके बाप का नाम पूछा था और आपने जबदी में साफ़-साफ़ बता दिया था।.

इस पर सब्च के सब हँस पड़े और खोजी मूँछों पर ताव देने लगे । अभी ये बातें हं। ही रही थीं कि एक टुकड़ी आयी, और उतर पर से एक हसीना उतर पड़ी । वह पतली कमर को लचकाती हुई आयी, नवात्र का मतनद घसीटा और बड़े ठाट से बैठ गयी ।

नवात्र - मिज़ाज शरीफ !

आबादी--आपकी बला से !

मुसाहत्र--हुज्र, ख़दा की क्रतम, इस वक़्त आप ही का जिक्र था ।

आबादी - चल झूठे ! अली की सँवार तुझ पर और तरे नवात्र पर |

मुसाहब - खूदा को क़सम |

आबादी--अब्र हम एक, चपत जमायेंगे। देखो नवाब, अपने इन गुगों को मना करो, मेरे मुँह न लगा करें।

इतने में एक महरी पॉच-छह बरस के एक लड़के को गोद में लायी ।

आन्रादी--हमारी बहन का लड़का है। लड़का क्या, पहाड़ी मैना है। भेया, नवाब को गालियाँ तो देना । क्यों नवात्र, इनको मिठाई दोगे न !

नवाब--हाँ, अभी-अमी '

लछड़का--पहले मिठाई छाओ, फिल हम दाली दे देंगे ।

अब चारों तरफ़ से मुसाहिब बुलते हैं--आओ, हमारे पास आओ। लड़के ने नवाब को इतनी गालियाँ दीं कि तौबा दी मी । नवात्र साहब खुब हँसे और सारी महफ़िछ लड़के की तारीफ़ करने छगी । खुदावंद, अब इसको मिठाई मेंगवा दीजिए | नवाब--अच्छा मई, इनको पाँच रुपये की मिठाई छा दो | आबादी --ऐस इटो भी ! आप अपने रुपये रहने दें । क्या कोई फ़क़ीर है ! - नवाब--अच्छा, एक अशर्फ़ीं की छा दो । आबादी - भेया, नवाब को सलाम कर लो । नवाब--अच्छा, यह तो हुआ, अब कोई चीज़ सुनाओ। पीलू की कोई चीज़ द्ो, तुम्हें कसम हे | आबादी--ऐ, हठो भी, आज रोज़े से हूँ । आपको गाने की सूझती है । फ़शे पर कई नीबू पड़े हुए थे। बी साइबा ने एक नीबू दाहने हाथ में छिया और दूसरा नीबू उसी द्वाथ से उछाला और रोका । फई मिनट तक इसी तरह उछाला और रोका कीं। छोग शोर मचा रहे हँ--क्या तुले हुए; हाथ हैं, सुभान-अलाद ! वह बोलीं कि भरा नवाब, तुम तो उछालो। जब जानें कि नीबू गिरने न पाये । नवाब ने एक नीबू द्वाथ में लिया और दूसरा उछाला, तो तड़ से नाक पर गिरा । फिर उछाला, तो खोपड़ी पर तड़ से । आबादी--बस, जाओ भी। इतना भी शऊर नहीं है । नवाब--यह उँगली में कपड़ा कैसा बँधा है ! आबादी--अश्नो, देखें, कितनी अक़ल है । नवाब--यह क्या मुशकिल है, छालियाँ कतरती द्ोगी ।

आबादी--हाँ, वह खून का तारं बैंधा कि तोबचा | मैंने पानी डाला और कपड़ा बाँध दिया । मुसाहब--हुजूर, आज इस शहर में इनकी जोड़ नहीं है । नवाब--भला कभी नवाब खफ़क़ानहुसैन के यहाँ भी जाती हो ! सच-सच कहना । आबादी--अछी कौ सैंवार उस पर ! इज कर आया है। उस मनहूस से कोई इतना तो पूछे कि आप कहाँ के ऐसे बड़े मौलवी बन बैठे ! नवाब - जी, बजा है, जो आपको न बुलाये, वह मनहूस हुआ ! आबादी- बुढायेगा कौन १ जिसको ग़रज़ होगी, आप दोड़ा आवेगा | आजाद और खोजी यहाँ से चले, तो आजाद ने कद्दा--आप कुछ समझे ! यह जोड़ी वही थी, जो रोशनअछी खरीद लाये थे । खोजी--यदह कौन बड़ी बात है, इसी में तो रईसों का रुपया खच होता है । इनकी सोहबत में जब नेठिए खब् ग़प्प उड़ाइए और झूठ इस क़दर बोलिए कि जमीन-आसमान के कुछावे मिलाइए | रंग जम जाम, तो दोनों हाथों से छूटिए और सोने की ईंट बनवा कर संदुक में रख छोड़िए । लेकिन ऐसे माल को रहते न देख ; माद्म नहीं इंतता, किधर आया और किधर गया ! आज़ाद--यह नवाब बिलकुल चोंगा है । खोनी--और नहीं तो क्या, निरा चोंच |

आजाद-- खदा करे, ये रईसजादे पढ-लिख कर भले आदमी दो जायँ।

खोजी--अरे, खदी न करे माई, ये जाहिल ही रहें तो अच्छा । जो कहीं पदढ-लिख जायें, तो फिर इतने मलेमानसों की परवरिश कौन करे !

तीसरे दिन दोनों फिर नवाब की कोठी पर पहुँचे ।

खोजी-- खदा ऐसे रईस को सलामत रखे। आज यहाँ सन्नाटा सा नज़र आता है; कुछ चहल-पहल नहीं है ।

मुसाहब-- चहल-पहल क्या खाक द्वो! आज मुसीबत का पहाड़ टूट पढ़ा |

आजाद--खदा खेर करे, कुछ तो फ़रमाइए ।

नवात्र - क्या अज करूँ, जब बुरे दिन आते हैं, तो चारों द्वी तरफ़ से बुरी ही बुरी बातें सुनने में आती हैं। घर में वज़ा-हमल (प्रसव) दो गया ।

आज़ाद-- यह तो कुछ बुरी बात नहीं | वजा-हमल के माने लह्वका पेदा होना । यह तो खुशी का मौक़ा है ।

मुसाहब- हमारे हुजूर का मंशा इस्क्रात-हमछ (गर्मपात) से था ।

खुशामदी -- अजी, इसे वज़ा-हमला भी कहते हैं-- लुग़त देखिए ।

नवात्र - अजी, इतना द्वी होता, तो दिल को किसी तरह समझा लेते | यहाँ ले एक और मुसीब्बात ने आ घेरा ।

मुसाहब--(ठंडी साँस ले कर) खदा दुड्मन को मी यह दिन न दिखाये।

खश।मदी--हजरत, क्या अज़े करूँ, दुजुर का एक मेदा मर गया, कैसा तैयार था कि क्या कहूँ, गैंडा बना हुआ ।

ग़प्पी--अजी, यों नहीं कद्दते कि गेंडे को टकरा देता, तो टेंकरके भागता। एक दफ़े मैं अपने साथ बाग़ ले

गया | इत्तिफ़ाक़ से एक राजा साहब पाठे पर ज़वार बड़े उठाठ से आ रहे थे । बंदा मेंढ़े को ऐन सड़क पर लिये हुए डटा खड़ा दहै। सिपाही ने ललकारा कि हटा बकरी को सड़क से । इतना कद्दना था कि मैं आग ही तो हो गया । पूछा--क्या कहा माई १ फिर तो कहना । तिपाही आँखें नीली-पीली करके बोछा--हटा बकरी को सामने से, सवारी आती है। तब तो जनाब, मेरे खून में जोश आ गया | मैंने मेदे को ललकारा, तो उसने झपट कर हाथी के मस्तक पर एक टक्कर लगायी । वह आवाज आयी । जैसे कोई दरख्त ज़मीन पर आ रहा हो | बंदर डाल-डाल चोखने लगे, बैंदरियाँ बच्चों को छाती से लगाये दबुक रहीं, तो वजइ क्या, उनको मेंदे पर भेड़िये का घोखा हुआ ।

खोजी--मेढे को भेड़िया समझा ! मगर वल्लाह, आपको तो बेदूम का लूंगूर समझा होगा !

ग़प्पी--बस हजरत, एक टक्कर लगा कर पीछे हटा और बदन को तोल कर छलाँग जो मारता है, तो हाथी के मस्तक पर | वहाँ से. फिर उचका, तो पीलवान के माय पर एक टक्कर लगायी, मगर आहिस्ता से । ज़रा इस तमीज को देखिएगा, समझा कि इसमें द्वाथी का सा जोर कहाँ। मगर राजा का अदब किया । अब मैं छास्स छाख जोर करता हूँ, पर वह किसकी सुनता है ! ग़स्सा आया, सो आया, जैसे सिर पर भूत सवार हो गया। छुडा कर फिर लपका और एक, दो, तीन, चार--वस, ख़दा जाने, इतनी टक्करें लगायीं कि हाथी हवा हो गया और चिंघाड़ कर भागा | आदमी पर आदमी गिरते हैं। आप जानिए, पाठे का बिगड़ना कुछ हँसी ठट्ठा तो है नहीं। जनाब, वही मेढा आज चल बसा |

आजाद--निहायत अफ़सोस हुआ |

खोजी--सिन शरीफ़ क्या था !

नवाब--सिन क्या था, अभी बच्चा था |

मुसाहब्न-- हुजूर, बह आपका दुश्मन था, दोस्त न था ।

नवाब--अरे भई, किसका दोस्त, केसा दुश्मन | उस बेचारे का क्या क्रपूर ! वह तो अच्छा गया; मगर हम सब्रकों जीते-जी मार डाला !

आजाद--हज़रत, यह दुनिया सराय-फ़ानी है। यहाँ से जो गया, अच्छा गया | मगर नौजवान के मरने का रंत्र होता है ।

मुसाहब---और फिर जवान केसा कि होनहार | हाथ मर कर रद्द गये यार, बस

ओर क्या करें । आज़ाद - मरज़ क्या था ?

मुसाहब--क्या मरज़ बतायें। बस, क्रिस्मत ही फूट गयी ।

खुशामदी--मगर क्या मौत पायी है, रमज़ान के महद्दीने में, उसकी रूह जन्नत में होगी | तूबा# के तले जो घास है, वह चर रहा द्ोगा ।

इतने में एक महरी गुलबदनु का रुँदुगा, जिसमें आठ-आठट अंगुल गोल्ट लगी थी, फड़काती और गुलाबी दुपट्टे को चमकाती आयी और नवाब्र के कान में झुक कर बोली--बेगम साहिबा हुजूर को बुलाती हैं ।

नवाबं--यह नादिरी हुक्म ! अच्छा साहब, चलिए । यहाँ तो बेगम और मद्दरी, दोनों से डरते हैं।

नवाब साहब अंदर गये, तो बेगम ने खूब द्वी आड़े द्वों लिया--ऐ, मैं कहती हूँ, यह कैसा रोना-धोना है ! कहाँ की ऐसी मुसीबत पड़ गयी कि आँखें खून की बोटी बन गयीं ! मेढ़े निगोडे मरा ही करते हैं। ऐसी अक़ल पर पत्थर पड़े कि मुए जानवर की जान को रो रहे हैं। तुम्हारी अक़्छ को दिन-दिन दीमक चाटे जाती है क्या ! और इन मुफ़्तखोरों ने तो आपको और भी चंग पर चढ़ाया है। अलाह की कसम, भगर आपने रंज-वंज किया, तो हम ज़मीन-आसमान एक कर देंगे। आख़िर वह मेद्दा कोई आपका, . .बस, अब क्या कहूँ । भीगी बिल्ली बने गटर-गटर सुन रहे हो ।

नवाब--तुम्दारे सिर की कुसम, अब दम उसका जिक्र भी न करेंगे। मगर जब आपकी बिल्ली मर गयी थी, तो आपने दिन-भर खाना नहीं जाया था ! अब हमारी दफ़े आप गुर्राती हैं !

स्थगों का एक वृक्ष |

मुसाहब--(परदे के पास से) वाह हुजूर, बिछी के लिए गुर्गना भी क्या खूब । वलाह, जिले से तो कोई फ़िकरा आपका खाली नहीं होता ।

बेगम--देखो, इन मुए मुसंडों को मना कर दो कि ड्योढ़ी पर न आने पायैं |

दरआन ने जो इतनी शह पायी, तो एक डॉट बतायी । बस जी, सुनो, चलते-फिरते नज़र आओ | अब ड्योदी पर आने का नाम लिया, तो तुम जानोगे | बेगम साहबा हम पर खफ़ा होती हैं। तुम्हारी गिरह से क्या जायगा, हम सिपाही आउठमी. हम तो नौकरी से हाथ धो बैठेगे ।

मुसाहब्र सिपाही से तो कुछ न बोले, मगर बडात्रड़ाते हुए चले। छोगों ने पूछा --क्यों मई, इस वक़्त नाक-भौं क्यों चढ़ाये हो ! बोले--अजी, क्या कहें, हमारे नवात्र तो बस, बछिया के बाबा ही रहे | बोची ने डपट लिया | जन-मुरीद है जी! आबहरू का भी कुछ खयाल नहीं । औरतजात, फिर जोरू और उल्टे डाँट बताये और दाँदी-मूँछोंवा ले हो कर चुपचाप सुना करें ! वल्लाह, जो कहीं मेरी बीबी क़हती, तो गला ही घोट देता । यहाँ नाक पर मक्खो तक बैठने नहीं देते ।

आज्ञाद--भई, गुस्से को थूक दो। गुस्सा इराम होता है। उनकी बीज्ी हैं, चादे घुड़कियाँ सुनें, चाहे झिड़कियाँ सहें, आप बीच में बोलनेवाले कौन ! और फिर जिसका खाते हो, उसी को कोसते हो ! उस पुर दावा यह है कि नमकहलाल और कट मरनेवाले छोग हैं ।

इतने में नवात्र साइबर बाहर निकले । अमीरों के दरबार में आप जानिए, एक का एक दुश्मन होता है ।सैकडों चुग़लूखोर रहते हैं। हरदम यही फ़िक्र रहती है कि दूसरे की चुराली खाये और सबको दरबार से निकलवा कर हमी-हम नजर आयें | दो मुसाइब्रों ने सलाह की कि आज नवाब निकले, तो इसकी चुग़ली खायें और इसको खड़े-खड़े निकलवा दें । नवात्र को जो आते देखा, तो चिल्ला कर कहने लगे-- सुना भई, बस, अब जो कोई कल्मा कहा, तो हमसे न बनेगी। जिसका खाये, उसी की गाये। यह नहीं कि जिसका खायें उसी को गालियाँ सुनायें। नवात्र साहब की चाहे आप पीठ पीछे जन-मुरीद बतायें, या भीगी बिल्ली कहें, मगर खबरदार जो आज से बेगम साइबा की शान में कोई गुस्ताख्ली की, खून ही पी टेंगा ।

नवाब--(त्योरियाँ बदल कर) क्या !

दाफ़िज़ जी--कुछ नहीं हुजूर, खेरियत है।

नवाब- नहीं, कुछ तो है ज़रूर ।

रोशनअली-- तो छिपाते क्यों हो, सरकार से साफ़-साफ़ क्यों नहीं कह देते! हुजूर, बात यह है कि मियाँ साहथ जब देखो तब्र हुज़्र की दजो किया करते हैं। लाख-लाख समझाया, यह बुरी बात है, मियां कद कर, भाई कह कर, बेटा कह कर, बाबा कह कर, द्वाथ जोड़ कर, हर तरह समझाया, मगर यह तो लातों के आदमी हैं, बातों से कब्न मानते हैं। हम भी चुपके हो रहते थे कि भई, चुगली कौन खाये; मगर आप जनानी ड्योदी से. . .हुजूर, बस, क्या कहैँ, अब और न कदलाइए ।

नवाब--हनको हमने मौकूफ़ कर दिया |

मियाँ मुसाइब तो खिसके । इतने में मटरगइत आ पहुँचे और नवाब को सलाम करके बोले- खुदावंद, आज खूब्र सेर रुपाटा किया। इतना घृमा कि दाँगों के टट्ट की गसामचियोँ दद करने लगीं। कोई इलाज बताइए ।

दाफ़िज जी - धास खाइए या, किसी सालोन्री के पास जाएए !

नवाब--खूब ! ट्टटू के लिए घास और सालोन्नी की अच्छी कह्दी। अब कोई ताज़ा-ताज़ा खबर सगाइए, बासी न हो, गरमागरम |

मटर इत- वह ख़बर सुनाऊँ कि मदहफ़िछ भर को छोटपोंट कर दूँ हुजूर, किसी मुल्क से चंद परीज़ाद औरतें आयी हैं। तमाशाइयों की भीड़ लगी हुई है। सुना, थिएटर में नाचती हैं और एक-एक क़दम और एक-एक ठोकर में आशिक़ों के दिल को पामाल करती हैं । उन्हीं में से एक परीजाद जो दन से निकल गयी, तो बस, मेरी जान सन से निकल गयी । दरिया किनारे खोमे पड़े हैं। वहीं इंदर का अखाड़ा सजा हुआ है। आज शाम को नौ बजे तध्याशा होगा ।

नवाब--भई, तुमने खूब मज़े की खबर सुनायी । ईंजानिब जरूर जायैंगे |

इतने में खदायारखाँ, जिन्हें ज़रा पहण नवाब ने मौकूफ़ कर दिया था, आ बैठे और बोले--हुजूर, इधर ख़दाबंद ने मौकूफ़ी क' हुक्म सुनाया, उधर घर पहुँचा, तो जोरू ने तलाक़ दे दी | कद्दती है, 'रोटी न कपरा, सेत-मेत का भतरा ।?

आज़ाद - हुजूर, इन ग़रीबर पर रहम कीजिए । नौकरी की नोकरी गयी और बीबी की बीबी ।

नवाब - हाफिजजी, इधर आओ, कुल द्वाल ठीक-ठीक बताओ |

हाफिज़--हुजूर, इन्होंने कहा कि नवाब तो निरे बछिया के ताऊ ही हैं, जन-मुरीद | और बेगम साहइबा को इस नाबकार ने वह-वह बातें कहीं कि बस, कुछ न पूछिए ! अजीब शेतान आदमी है। आप को यक्रीन न आये, तो उन्हीं से पूछ लीजिए ।

नवाब--क्यों मियाँ आजाद, सच कहो, तुमने क्या सुना !

आज़ाद--हुजूर, अब जाने दीबिए, कुधुर हुआ | मैंने समझा दिया है ।

हाफ़िज़--यह बेचारे तो अभी अभी समझा रहे थे कि ओ गीदी, तू अपने मालिक़ को ऐसी-ऐसी खोटी-खरी कहता है !

नवाब--(दरबान से) देखो जी हुसेन अली, आज से अगर खदायारख्षों को आने दिया, तो-तुम जानोगे | खड़े-खड़े निकाल दो । इसे फाटक में क़दम रखने का हुक्म नहीं । : ख़दायार--हुजूर, गुलाम से भी तो घुनिए । आज मिर्यों रोशनअली ने मुझे ताड़ी पिला दी और यही मनयूत्षा था कि यह नशे में चूर हो, तो इसे किसी ढिम में निकलवा दें। सो हुज्र, इनकी मुराद बर आयी। मगर हुजूर, मैं इस दर को छोड़ कर और जाऊँ कहाँ ! खुदा आपके बाल-बच्चों को सलामत रखे, यहाँ तो रोआँ-रोआँ हुजूर के लिए दुआ करता है | हुजर तो पोतड़ों के रईस हैं, मगर चुरालखोरों ने कान भर दिये-- खूदा के ग़ज़त्र से जरा दिल में काँप चुग़लखोर के मुँह को डसते हैँ साँप नवाब--अच्छा, यह बात है। खबरदार, आज से ऐसी बेअदबी न करना | जाओ, हमने तुमको बहाल किया मुसाहबों ने गुल मचाया--वाह हुज्र, कितना रहम है। ऐसे रईस पैदा काहे को होते हैं। मगर ख़दायार खाँ को तो उनकी जोरू ने बचा लिया। न वह तलाक देती, न यह बहाल होते | वललाह, जोरू भी क्रिस्मत से मिलती है |

HINDI TEXT

प्रसंग २८

दुसरे दिन नौ बजे रात को नवात्र साहब और उनके मुसाहब थिएटर देखने चले ।

नवाब--भई, आब्ादीजान को भी साथ ले चलेंगे |

मुसाइब--ज़रूर, ज़रूर । हुजूर, उनके बगैर मज़ा किरकिरा हो जायगा |

इतने में फिटन आ पहुँची और आजञदीजान छम-छम करती हुई आ कर मसनद पर बेठ गयीं ।

नवाब--वल्लाद, अमी आप ही का ज़िक्र था |

.आबादी--9मसे लाख दफ़ कह दिया कि हमसे झूठ न धोला करो। हमें कोई देहाती समझा है !

नवाब--खदा की क्रसम, चलो, तुमको तमाशा दिखा छलायें। मगर मरदाने कपड़े पहन कर चलिए, वर्ना हमारी बेइजती होगी |

आबादी ने तिनग कर कद्दा--जो हमारे चलने में बेआबरूई है, तो सलाम |

यह कद्द कर वह जाने को उठ खड़ी हुईं | नवात्र ने दुपट्टा दबा कर कहां-- हमारा ही खून पिये, जो एक कदम भी आगे बढ़ाये, हमीं को रोये, जो रूठ कर जाय ! दाफिज़ जी, जरा मरदाने कपड़े तो लाइए |

ग़रज आबादीजान ने अमामा सिर पर बाँधा; चुंस्त अँगरखा और कसा हुआ घुटन्ना, टाटबाफी बूट, फ़ैदना झलकता हुआ, उनके गोरे बदन पर खिंल उठा । नवाब साहब उनके साथ फिटन पर सवार हुए और मुसाहब्रों में कोई बग्घी पर, कोई टम-टम पर, कोई पालकी-गाड़ी पर लदे हुए तमाशा-षर में दाखिल हुए। मगर आधादीजञान जल्दी में पाज़ेत्र उतारना भूल गयी थी। वहाँ पहुँच कर नवात्र ने अब्वल दर्ज के दो टिकट लिये और सरकस में दाखिल हुए ! लेकिन पाज़ेत्र की छप-छम ने वह शोर मचाया कि सभी तमाशाइयों की निगाह इन दोनों आदमियों की तरफ़ उठ गयीं | जो है, इसी तरफ़ देखता है; ताड़नेवाले ताड़ गये, भाँपनेबाले भाँप गये । नवात्र साहब अकड़ते हुए एक कुर्सी पर जा डुटे और आत्रादीजान भी उनकी बगल में बैठ गयों । बहुत बड़ा शामियाना टैंगा हुआ था | बिजली की बत्तियों से चकाचौंध का आलम था । बीचो-बीच एक बढ्य मैदान, इर्द-गिद कोई दी हजार कुर्सियाँ। खीमा मर जग-मंग कर रहा था। थोड़ी देर में दस-बारह जवान घोड़े कड़कड़ाते हुए मैदान में आये और चक्कर काटने छगे, इसके बाद एके जवान नाजनीन, आफ़त की परकाला, घोड़े पर सवार, इस शान से आयी कि महफ़िल भर पर आफ़त ढायी। सारी मद फ़िल मस्त दो गयी । वह घोड़े से फ़ुती के साथ उचकी और फिर पीठ पर आ पहुँची । चारों तरफ़ से बाह-वाह का शोर मच गया। फिर उसने प्रोड़े को मैदान में चक्कर देना शुरू किया। घोड़ा सरपट जा रहा था, इतना तेज कि निगाह न ठहरती थी | यकायक वह लेडी तड़ से जमीन पर कूर पड़ी । घोड़ा ज्यों का त्यों दौढ़ता रहा । एक दम में बढ झपट कर फिर पीठ पर सवार द्वो गयी उस पर इतनी तालियाँ ब्नीं कि खीमा भर गूँज उठा | इसके बाद शोरों की लड़ाई, बंदरों की दौड़ और खुदा जाने, कितने और तमाशे हुए । ग्यारह बजते बजते तमाशा खतम हुआ। नवाब साहब घर पहुँचे, तो ठंडी साँस भरते थे

और मियाँ आज़ाद दोनों हाथों से सिर धुनते , थे । दोनों मिस वरजिना (तमाशा करनेवाली औरत ;, की निगाहों के शिकार द्वो गये ।

हाफिज जी बोले--हुजूर, अभी मुश्किल से तेरह-चौदह बरस का सिन होगा, और किस फुर्ती से उचक कर घोड़े की पीठ पर हो रहती थी कि वाह जी वाद्द । मियाँ रोशनअली बड़े शहसवार बनते थे | कलम ख़दा को जो उनके बाप भी कब्र से उठ आयें, तो यह करतत्र देख कर होश उड़ जायें ।

नवाब--क्या चाँद सा मुखड़ा है ।

आवादीजान--यह कहाँ का दुखड़ा है ! दम जाते हैं ।

मुसाहब--नहीं हुजूर, ऐसा न फ़र्माइए, कुछ देर तो बैठिए ।

लेकिन आबादीजान रूठ कर चली ही गयीं अभ्न नवाब का यह हाल है कि मुँह फुलाये, ग़म की सूरत बनाये बरेठे सर्द आहैँ खींच रहे हैं। मसाहब सब बेटे समझा रहे हैं; मगर आपको किसी तरह सत्र ही नहीं आता | अब जिंदगी बवाल है, जान जंजाल है । यह भी फ़ख है कि हमारा दिल किसी परीज़्ाद पर आया है शहर भर में धूम हो जाय कि नवाब साहब को इश्क़ चर्राया है--

ताकि मशहूर हों हज़ारों में; हम भी हैं पाँचवें सवारों में ।

मुसाहत्रों ने सोचा, हमारे शह देने से यह हाथ से जाते रहेंगे, इसलिए वह चाल चलिए कि 'साँप मरे न लाठी टूटे ।! छगे सब्र उस औरत की हज! करने । एक ने कहा--भाई, जादू का खेल था। दूसरे बोले--जी हाँ, मैंने दिन के वर देग' था, न वह रंग, न वह रोगन; न वह चमक-दमक, न वह जोबन; रात की परी .ले की टट्टी है । आखिर मिस वरजिना नवात्र की नजरों से गिर गयी । बोले--जाने भी दो, उसका ज़िक्र दही क्या । तब मुसाहत्रों की जान में जान आयी। नवात्र साहब के यहाँ से रखूसत हुए, तो आपस में बातें होने लगीं--

हाफ़िज़ जी - हमारे नवात्र भी कितने भोले-भाले रईस हैं |

रोशनअली---अजी, निरे बछिया के ताऊ हैं। खदायारखाँ ने ठीक ही तो कद्दा था।

बदायारखाँ--और नहीं तो क्या झूठ बोले थे ! इमें लगी-लिपटी नहीं आती। चाहे जान जाती रहे, मगर खशामद न करेंगे ।

हाफ़िज़ जी--भई, यह आज़ाद ने बड़ा अडंगा मारा है। इसको न पछाड़ा, तो हम सब नजरों से गिर जायेंगे ।

रोशनअली--अजी, मैं तरकीब बताऊँ, जो पट पड़े, तो नाम न रखैँ। नवाष

श्ड डरपोक तो हैं ही, कोई इतना जा क्रर कह दे कि मियाँ आज़ाद इश्तिहारी मुजरिम हैं। बस, फिर देखिए, क्या तायेया मचत्ी है| आप मारे खौफ़ के घर में घुस रहें और ज़नाने में तो कृदराम ही मच जाय। आज्ञाद और उनके साथी अफ़ीमची, दोनों खड़े-खड़े निकाल दिये जायें ।

खशामदी--वाह उस्ताद, क्या तर्ड से सोच लेते हो | वल्लाह, एक ही न्यारिये हो ।

रोशनअलछो-- फिर इन झाँसों के बग्ेर काम भी तो नहीं चलता

हाफ़िज़ जी-हाँ, खूब याद आया। परसों तेग़बद्दादुर दक्खिन से आये हैं। बेचारे बड़ी तकलीफ़ में हैं। हमारे सच्चे दोस्तों में हैं। उनके लिए एक रोटी का सहारा हो जाय, ते अच्छी | आपमें से कोई छेड़ दे तो जरा, बस, फिर मैं ले उड़े गा.। मगर तारीफ़ के पुल बाँध दीजिए। नवाब को झाँसे में लाना कोई बड़ी बात तो है नहीं । थाली के बैंगन हैं ।

'हाफ़िज जी--एक काम कीजिए, कल जब सब्र जमा हो जायें, तो हम पहले छेड़ें कि इस दरबार में हर फ़न का आदमी मौजूद है और रियासत कहते इसी को हैं कि गुनियों को परवरिश की जाय, शरीफ़ों को क़दरदानी हुजूर ही का हिस्सा है।इस पर कोई बोल उठे कि और तो मत्र मौजूद हैं, बस, यहाँ एक ब्रिनबरटिये की कसर है | फिर कोई कहे कि आजकल टक्खिन से एक साहब आये हैं, जो त्रिनवट के फ़न में अपना सानी नहीं रखते | दो-चार आदमी हाँ में हाँ मिला दें कि उन्हें वह-वह पेंच याद हूँ कि तलवार छीन ले; जरा से आदमी, मगर सामने आये और त्रिजली की तरह तड़प गयें | हम कहँगे-- दछाह, आप लोग भी कितने अहमक़ हैं कि ऐसे आदमी को हुजूर के सामने अब्च तक पेश नहीं किया और जो कोई रईस उन्हें नौकर रख ले तो फिर केसी हो १ बस, देख लेना, नवात्र ख़द ही कहेंगे कि अभी-भभी छलाओ | मगर तेग़बहादुर से कह देना कि खूब बाँके बन कर आयें, मगर बातचीत नस्मी से करें, जिसमें हम लोग कहेंगे कि देखिए ख़दावंद, कितनी शशफ़त है। शिन लोगों को कुछ आता-जाता नहीं, वे द्वी ज्मीन पर क्रदम नहीं रखते ।

मुसाइत्र--मंगर क्यों मियां, यह तेशबहादुर हिंदू हैं या मुसलमान ? तेग़बहादुर तो हिंदुओं का नाम भी छुआ करता है। किसी द्विंदू के घर मुहरंम के ट्रिनों में लड़का पंदा हुआ ओर इमामबत्रख्श नाम रख दिया । हिंदू भी कितने बेतुके होते हैं कि तोथ द्वी भी । पूछिए कि वुम जो ताज़िये को सिजदा करते हो, दरगाहों में शरबत पिलछाते दा, इमामबाड़े बनवाते दो, तो फिर मुसलमान द्वी क्यों नहीं दो जाते ।

हाफ़िज् जी-- मगर तुम लोगों मं भी तो ऐसे गौखे हैं जो चेचक र +.'लिन को बुलाते हैं, चौराड़े पर गधे को चने खिलाते हैं, जनमपत्री बनवाते हैं | क्या यह द्ंिदू-

पन नहीं है १.इसकी न ऋहिए | े उधर मिरयाँ आजाद भी मिस वरजिना पर लट्टु हो गये। रात तो किसी तरह

फख्बटें ६. बरछ दार काटी, मुब्द्द होते ही मिस वरजिना के पास जा पहुँचे । उसने जो मियोँ आजाद की यूरत से उनकी दाल्त ताइ ली, तो इस तरह चमकफ-चमक कर चलने लगी कि उनकी जान पर आफ़त ढायी। आज़ाद उसके सामने जा कर खड़े हो ग़ये; मगर मुँह से एक लफ़्ज़ भी न निकला | बरजिना--मालूम होता है, या तो तुम पागल हो, या अभी पागलखाने से रस्सियाँ तुडा कर आये हो | आज़ाद--हाँ, पागल न होता, तो तुम्हारी अदा का दीवाना क्यों द्योता ! वरजिना--बेहतर है कि अभी से द्ोश्न में आ जाओ, मेरे कितने ही दीवाने पागलखाने की सैर कर रहे हैं | रूस के तीन जनरल मुझ पर रीक्षे, यूनान में एक रईस लट्टू हो गये, ईंगलिस्तान के कितने ही बाँके आहें भरते रहे, जरमनी के बड़े-बड़े अमीर साये की तरह मेरे साथ घूमा किये, रूम के कई पाशा जहर खाने पर तैयार हो गये | मगर- दुनिया में दरश्माबाज़ी का बाजार गरम है, किसी से दिल न मिलाया, किसी को मुँह न लगाया । हमारे चाहनेवाले को लाज़िम है कि

पहले आईने में अपना मुँह तो देखे | आज़ाद--अब मुझे दीवाना कद्दिए या पागछ, में तो मर मिश-- फिरी चब्म-बुते-बेपीर देखो ; हमारी गदिशे-तकरीर देखो। उन्हें है तौक़ मन्नत का गर्रों बार ; हमारे पाँव की जंजीर देखो। वरजिना--मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है । क्यों जान देने पर तुले

हुए हो ? आज़ाइद--जी कर ही क्या करूँगा ! ऐसी जिंदगी से तो मौत ही अच्छी ।

वरजिना--आ गये तुम भी झाँसे में | अरे भिर्यों, में औरत नहीं हूँ, जो तुम सो में । मगर क़सम खाओ कि किसी से यह बात न कहोगे | कई साल से मैंने यद्दी भेष बना रखा है | अमीरों को दूटने के लिए इससे बढ़ कर ओर कोई तदबीर नहीं । एक-एक चितबन के हज़ारों पॉड लाता हूँ, फिर भी किसी को मुँह नहीं लगाता । आज 0पम्हारी बेक़ररी देख कर तुमको साफसाफ बता दिया। आजाद--अच्छा. मर्दाने कपड़े पद्न कर मेरे सामने आओ, तो मुझे यक्रीन आये | मिस वरजिना ज़रा देर में कोट और पतलून पहन कर आज़ाद के सामने आयी भर बोलै--अन्न तो तुम्हें यक्कीन आया, मेरा नाम टामस हुड है। अगर तुमको वे चिट्ठियाँ दिखाऊँ, जो ढेर की ढेर मेरे पास पड़ी हैं, तो हँसते-हँसते तुम्हारे पेट में बरः पड़ जाय | देखिए, एक साहइबत्र लिखते हैं-- जनाज़ा मेरा गली में उनकी जो पहुँचे ठद्धराके इतना कहना; उठानेवाले हुए हैं माँदे सो थकके काँधघा बदल रहे हैं। दूसरे साइबर लिखते हैं-- हम भी कुश्ता तेरी नैरंगी के हैं यार .<; ओ जमाने की तरह रंग बदलनेव:जे |

एक बार इटली गया, वहाँ अक्सर अमीरों और रहईसों ने मेरी दावतें कीं और अपनी लड़कियों से मेरी मुलाक़ात करायी | में कई दिन तक उन परियों के साथ हवा खाता रहा। और एक दिछगी सुनिए। एक अमीरजादी ने मेरे हाथों को चूम कर कहा कि हमारे मियाँ तुमसे शादी करना चाहते हैं| वह कहते हैं कि अगर तुमसे उनकी शादी न हुई, तो वह ज़हर खा लेंगे। यह अमीरजादी मुझे अपने घर ले गयी । उसका शोहर मुझे देखते ही फूल उठा और ऐसी-ऐसी बातें कीं कि मैं मुश्किल से अपनी हँसी को जब्त कर सका ।

आज़ाद बहुत देर तक टामस हुड से उनकी जिंदगी के क्रिस्से सुनते रहे | दिल में बहुत शरमिंदा ये कि यहाँ कितने अहमक़ बने | यह बातें दिल में सोचते हुए सराय में पहुँचे, तो फाटक ही के पास से आवाज़ आयी, लाना तो मेरी करौली, न हुआ तमंचा, नहीं तो दिखा देता तमाशा | आज़ाद ने ललकारा कि क्या है भाई, क्या है, हम आ पहुँचे | देखा, तो खोजी एक कुत्ते को दुष्कार रहे हैं ।

HINDI TEXT

प्रसंग २९

आज तो निराला समा है | ग़रीब, अमीर, सब रैंगरलियाँ मना रहे हैं। छोटे-बड़े खुशी के शादियाने बजा रहे हैं। कहीं बुलबुछ के चहचहे, कद्दीं कुमरी के क़हद-कहे | ये ईद की तैयारियाँ हैं । नवात्र साइब्र की मसजिद का हाल न पूछिए | रोज़े तो आप पहले ही चट कर गये थे; लेकिन ईद के दिन धूमधाम से मजलिस सजी | नूर के तड़के से मुसाहबों ने आना शुरू किया और मुबारक-मुबारक को आवाज़ ऐसी बुलंद की कि फ़रिश्तों ने आसमान को थाम लिया, नहीं तो जमीन और आसमान के कुलावे मिल जाते |

मुसाहब--खदा ईद मुबारक करे । मेरे नवाब जुग जुग जिये ।

हाफ़िज़ जी---बरस दिन का दिन मुन्नारक करे ।

रोशनपछे छदा हुजूर की ईद मुबारक करे |

नवाब--आपको भी मुग्रारक हो । मगर सुना कि आज तो ईद में फ़क़ है। भई, आधा तीतर और आधा बटेर नहीं अच्छा ।

मुसाहब-- हुजूर, फिरंगीमहल के उलमा ने तो आज द्वी ईद का फतवा लगाया है|

नवाब--मभला चाँद कल किसी ने देखा भी !

मुसाहब--हुजूर, पक्के पुल पर चार भिवश्तियों ने देखा, राजा की बाज़ार में दाफ़िज़ जी ने देखा और मेरे घर मं भी देखा ।

नवाब--आपकी बेगम साहब का सिन क्या है ! हैं कोई चौदह-पंद्रहद बरस की !

मुसाहब ने शरमा कर गरदन झुका ली |

नवाब---आप अपनी बेगम साहबा की उम्र तो छिपाते हैं, फिर उनकी शहादत ही क्या ! बाक़ी रहे हाफ़िज़ जी, उनकी आँखें पढ़ते-पढ़ते जाती रहीं; उनको दिन को ऊँट तो सूझता. ही नहीं, मला सरेशाम, दोनों वक़्त मिलते, नाखून के बराबर चाँद क्या सूझेगा !

आज़ाद--ह ज़रत, मैंने और मिंयाँ खोजीने कल शाम को अपनी आँखों देखा |

नवाब- तो तीन गवाहियाँ मोतबर हुई | हमारी ईद तो हर तरह आज है।

इतने में फिटन पर से आघ्रादीजान मुसकिराती हुई आयी |

नवात्र--आइए-आइए, आपकी ईद किस दिन हे !

आबादीजान--क्या कोई भारी जोड़ा बनवा रखा है १ फटे से मुँह शम नहीं आती !

नवाब--ईद कुरबाँ है यही दिन तो है कुरबानी का ;

आज तलवार के मानिंद गले मिल कातिल ।

हमको बया,' यहाँ तो तीसों रोजे चट किये बैठे हैं । दोवक़्ता पुलाव उड़ता था ।

यह फ़िक्र तो उसको होगी जो दीन का टोकरा सिर पर लादे-लादे फिरते हैं ।

आबादी--इन्हीं छच्छनों तो दोज़ख में जाओगे |

नवाब--खेर, एक तसकीन तो हुई ! आपसे तो वहाँ ज़रूर गले पिलेंगे |

मुसाहब--पमुमान-अल्लाह ! क्या खत्र सूझी, वललाह, खब सूझी ! क्या गरमा-गरम लतीफ़ा कहा है |

इतने में चंपा छोडी अंदर से घत्ररायी हुई आयी । छूट गये, छूट गये | ऐ, हुजूर. चोरी हो गयी | सब मूस ले गया ।

नवाब--क्येा, क्या, चोरी हो गयी | कब !

चंपा--रात को, और कब ? इस वक़्त जो बेगम साहबा कोठरी में जाती हैं, तो रोशनी देखते ही आँखों तले अँघेरा छा गया । जा कर देखती हैं, तो एक पिल्का । कपड़े-लपत्ते सच तितर-बितर पड़े हैं ।

मुसाहब्र--ऐ ख़दावंद, कल तो एक बजे तक यहाँ दरबार गरम रहा । मालूम होता दे, कोई पहले ही से घुसा बैठा था । -

नवाब---जरी हमारी ततल्वार तो लाना भई ! एद्तियात शर्ते है। शायद छिपा बैठा हो ।

तलवार ले कर घर में गये, तो देखते हैं कि बेगम साहबा एक नाजक पढहेंगड़ी पर सिर पकड़े बैठी हैं, और लौडियाँ समझा रही हैं. कि नवात्र की सलामती रहे, एव से एक बढ़िया जोड़ा बन जायगा । आप घबराती काहे को हैं! नवात्र ने जा कर कोठरी को देखा और तलवार हाथ में लिये- पैतेरे बदलते हुए घर-भर का मुआयना किया । फिर बेगम से बोले--इमारा लहू पिये, जो रोये । अ'खिर यह रोना काहे का: माल गया, गया !

छोंडी--हाँ, सच तो फ़रमाते हैं| जान की सलामती रहे, माल भी कोई चीज है?

बेगम--आज ईद के दिन खुशियों मनाते, डोमनियाँ आतीं, मुचरारकबादियाँ गातीं, दिन भर धमा-चौकड़ी मचती, रात' को रतजगा करते, सो आज यह नया गुल खिला | मगर गहने की संदूकची छोड़ गया, इतना एद्सान किया | अमी तक कलेज्ा धक-धक कर रहा है।

नवाब--हमारे सिर की कसम, लो उठो, मुँह घो डालो। ईद मनाओ, हमा«ा ही जनाज़ा देखे जो चोरी का ग़म करे । दो हज़ार कोई बड़ी चीज़ है !

आखिर बहुत कहने-सुनने पर बेगम साहबा उठीं | लॉडी ने मेँह घुलाया। नवाय साहब ने कदा--तुम्हें वल्लाइ, हँस तो दो, वह दॉठ पर हँसी आयी | देखो मुसकिराती हो | वह नाक पर आयी |

बेगम साहना खिलखिला कर हँस पड़ों और घर-भर में कह कद्दे पडने छूगे । यो बेगम साहबा को देसा कर नवात्र साहब बाहर निकले, तो मुसाहब, हवाली-मवाली खिदमतगार गुल मचाने लगे--हुजूर, कुछ तो बतलाइए, यद्द मामला क्या हे ! आखिर किधर से चोर आया ! कोई कद्दता है--हुजूर, बधर के भदी के चोरी नहीं होती; हमको उस हरशिन पर शक है। ह्ववशिन अंदर से गाश्याँ दे रही है-- अल्लाह करे झूठे पर बिबलो गिरे, आसमान फट पड़े। किसी ने कद्दा -खदावं चौकीदार की शरारत है। चौकीदार है कि लाखों

क़समें खाता दै। घर भर में हर-बोंग्र मचा हुआ है। इतने में एक मसखरे ने बढ़ कर कहा--हुजर, क़सम है क़रान की, हमें मादूम है। भला ब्बे भला, हम पहचान गये, हमसे उड़ कर कोई जायगा कहाँ !

मुसाहइब--मालूम है, तो फिर बताते क्यों नहीं !

मसखरा--अजी, बताने से फ़ायदा क्या १ मगर मातम मुझको बेशक है। इसमें सुबदा नहीं । ग़लत हो, तो हाथ-हाथ बदते हैं ।

नवाब---अरे, जिस पर तुझे शक है, उसका नाम बता क्यों नहीं देता ।

मुसाहब -- बताओ, तुम्हें खदा की क्रम । किस पर ठुमको शक है ! आखिर किसको ताका है ! भई, हमको बचा देना उस्ताद |

मसख़रा--(नवाब साहब के कान में) हुजूर, यह किसी चोर का काम है।

मुसाहब--क्या कहा हुजूर, किसका नाम लिया !

नवाब--(दस कर) आप चुपके से फ़रमाते हैं, यह किसी चोर का काम हे |

लोगों के हँसत हँसते पेट में बल पड़-पड़ गये । जिपे देखो, लोट रहा है । इतने में रेल के एक चयरासी ने आ कर तार का लिफ़ाफ़ा दिया। लिफ़ाफ़ा देखते द्वी नवाब साहत्र का चेहरा फ़के हो गया, हाथ-पाँव फूछ गये। बोले--भई, किसो अंगरेजीदों को बुलाओ और तार पढ़वाओ । खदा जाने, कहाँ से गोला आया है ।

मुसाहब--क्यों मियोँ जवान, यह तार बड़े साइज़्र के दफ़्तर से आया है न!

चपरासी--नाहीं, रेलघर ऐ आवा है ।

मुसाहबर--वाह रे अंगरेजो, अल्लाह जानता है, अपने फ़न के उस्ताद हैं। और सुनिए, जल्दी के लिए अब तार की ख़बर मी रेल पर आने लगी । वाह रे उस्ताद अक्ल काम नहीं करती ।

दाफ़िज़ जी--खुदा जाने, यह तार बोलता क्योंकर दे ! आखिर तार के तो जान नहीं होती !

खिदमतगार एक अगरेजीदाँ को ले आया । तार पढ़ा गया, तो मादम हुआ कि किसी ने मिरज़ापुर से पूछा है कि ईद आज है, या कल होगी !

मुसाइब्र--यह तो फ़रमाइए, भेजा किसने १

बाबू --निसारहुसेन ने ।

नवाब--समझ गया। मिरज़ापुर में हमारे एक दोस्त हैं. निसारहुसेन । उन्हीं ने तार भेजा होगा । इसका जवाब किसो से डिखराइ८ जिसमें आज दो पहुँच जाय। एक रुपया, दो रुपया, जो खर्च हो, दारोग़ा से रिलवा दो। और मियां नुदरत को तारधर भेजो और कहो कि अगर बातू कुछ माँगे तो दे देना। मगर इतना कई देना कि खबर जरूर पहुँचे । ऐसा न दो कि कहीं राह में रुक रहे, तो ग़ज़त्र ही हो

जाय |

मियाँ नुदरत्तल्खनऊ के आदमी, नखास के बाहर उम्र भर क़दम ही नहीं रखा । वह क्या जानें कि तारघधर किस बला का नाम है। राह में एक-एक से पूछते जाते हैं-- क्यों भई, तारघर कहाँ हैं! आखिरकार एक चपरासी ने कहा--कलकी बरक के सामने है। मियोँ नुदरत घत्ररा रहे थे, बुरे फँसे यार, तारघर में न जाने

क्या वारदात हो । हम अँगरेजी क़ानून-वानून नहीं जानते । देखें, आज क्या मुखीबत पड़ती हे ! खेर, खदा मालिक है। चलते-चलते कोई दो घंटे में ऐशबाग़ पहुँचे । यहाँ से पता पूछते-पूछते चले हुसेनगंज । वहाँ एक बाबू सड़क पर खड़े थे। उनसे पूछा--क्यों बाबूजी, तारधर कहाँ है ! उन्होंने कह्दा, सामने चले जाओ। फिर पलटे । बाबू जी एक रुपया लाया हूँ और लिखवाना यह है कि आज ईद सुन्नियों की है, कल शियों की होगी । भला वहाँ बैठा रहूँ ! जब खबर पहुँच जाय, तब्र आऊँ! बाबू ने क्टा--ऐसा कुछ जरूरी नहीं। खैर, तारघर पहुँचे, तो कलेजा धक-धक कर रहा है कि देखिए, जान दर्योकर बचती है। थोड़ी देर फाटक पर खड़े रहे और वहाँ से मारे डर के बैरँग वापस । राह में दोनों रुपये उन्होंने भुनाये ओर बीती के लिए पँचमेल मिठाई चैंगेल में ले चले। गस्ते में यही सोचते रहे कि नवाब से यों चकमा चलेंगे, यों झाँसा देंगे । चेन करो | उस्ताद, अब तुम्हारे पौ-बारह हैं। इल-वाई की दुकान और दादा जी का फ़ातिदा, धर में जो खश-खश घुसे, तो बीबी देखते ही खिल गयीं। झपय कर चेंगेड उनके हाथ से'छीनी । देखा, तो मुँह में पानी भर आया । बरफ़ी पर चाँदी का वरक् लगा हुआ, इमतियाँ ताजी, लड्डू गरमागरम | पेड़े वह, जो मथुरा के पेड़ों के दाँत खट्टे कर दें। दो-तीन लड् और एक बरफ़ी तो देखते ह्वी देखते चट कर गयीं। पेड़ा उठाने ही को थीं कि मिर्यों नुद्रत ने झलला कर पहुँचा पकड़ लिया और बोले- अरे, बस भी तो करोगी! एक लडड खाया, मैं कुछ न वोला; दूसरा निकाल्यृ, मैं चुपचाप देखा किया | तीसरे लड्डू पर हाथ बढ़ाया, बरफ़ी खायी और अब चली पेड़े पर द्वाथ डालने | अब खाने-पीने की चीज में टोके कौन, इतनी बड़ी लूमड़ हो गयीं, मगर त्रिल्ड ही बनी रहीं। मर-भुक्खों की तरह मिटाई पर गिर पड़ने के क्या माने १ दो प्यालियाँ लाओ, अफ़ीम घोछो, पियो। जन्न खूब नशे गठे, तो मिठाइयाँ चखो । खुदा की क्रसम, यह अफ़ीम भी नेमत की माँ का कलेजा है।

बीची---(तिनक कर) बस, नेमत की माँ का कलेजा तुम्हीं खाओ | खाओ, चाहे भाड़ में जाओ। वाह, आज इतने बड़े त्यौहार के दिन प्रिठाई क्या लाये कि दिमारा ही नहीं मिलता । मोती को सी आब उतार छी। एक पेड़े के खातिर पहुँचा धरके मरोड़ डाला ।

इतने में बाइर से आवाज़ आयी--मिर्यों नुदरत हैं !

बींौनी-- सुनते हो, या कानों में ठेठियाँ हें! एक आदमी गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रद्दा है, दरवाजे को चूल से निकाले डालता है। बोछते क्यों नहीं ! कहीं चोरी करके तो नहीं आाये हो !

बचत ्

नुदरत--जरी आहिस्ते-आहिस्ते बातें करो । बीबी--ऐ. हे, सच कद्िएगा । हम तो ख़ब् गुल मचायेंगे। मामा, हम परदे में हुए जाते हैं । जा कर उनसे कद्द दो--घर में घुसे त्रैठे हैं ।

े ०३02 नहीं, यद्द दिल्लगी अच्छी नहीं। कह दो, नवात्र साइबर के यहाँ ह॥|

मामा--(बाहर जा कर) मिर्यों, क्या गुल मचा रहे हो १ में तो समझी, कहीं से

दौड़ आयी है। वद्द तो सबेरे नवात्र साहब के यहाँ गये थे, अभी आये नहीं । जो मिले, तो भेज दीजिएगा ।

पुकारनेवाला--यह केसी बात १ नवाब साहब के यहाँ से तो हम भी अभी-अभी आ रहे हैं। वहाँ दुँदस

मची हुई है कि चल कहाँ दिये। अच्छा भाभी साहब से कही, आज ईद के दिन दरवाजे पर आये हैं, कुछ सेवइयाँ-वेवश्याँ तो खिलाये। हम तो बेतकल्दफ़ आदमी हैं । तकाजा करके दावत लेते हैं ।

मामा ने अंदर से ले जा कर बाहर बरामदे में एक मोढ़ा डाल दिया। उधर मियों बीबी थे त5शर होने लगी ।

मियाँ-- अजी, टाल भी दो । ऐसे-ऐसे मुफ़्तस्वोरे बहुत आया करते हैं। मामा, तुम भी पागल ही रहीं | मोढ़ा डालने की भला क्या ज़रूरत थी !

ब्रीन्री--ऐ! वाह | हम तो जरूर खातिर करेंगे। यह अच्छा कि नवाब के यहाँ जा कर हमको गैंवारिन बनाये ! इसमें तुम्हारी नाक न कटेगी !

बीत्री ने एक तदइतरी में पाँच-छह डलियाँ मिठाई की करीने से लगाकर उस पर रशमी हरा रूमाल ढक विया और मामा से कहा--जाओ, दे आओ । मियाँ नुदरत की रूद्द पर सदमा हुआ कि चार-पाँच डली तो बीजत्री बातें करते-करते चख गयीं ओर पाँच-छदह अब्र निकल गयीं । ग़ज़ब ही हो गया । मामा मिठाई ले कर चली, तो ब्योदी में दो लड् चुपके से निकाल कर एक ताक़ में रख दिये। इत्तिफ़ाक़ से एक छोकरा देख रद्दा था। जैसे मामा बाहर गयी, वैसे द्वी दोनों लछडड मज़े से खा गया | चलिए, चोर के घर में मोर पेठा | मुसाहब ने रूमाल हटाया, तो कहा--वाह, भाभी साहब तो भाई साहब से भी बढ कर निकलीं | यह हाथी के मुह में जीरा । खेर, पानी तो छाओ। इज़्रत ने मिठाई खायी और पानी पिया, तो पान की फ़र्माइश की | ब्रीत्री ने अपने हाथ से दो गिलौरियाँ बनायीं | मुसाइत्र ने चखीं, तो हुक़का माँगा । नुदरत ने कहा-देखा न, द्वाथ देते दी पहुँचा पकड़ लिया। मिठाई लाओ, पान खिलाओ, पानी पिलाओ, हुक्क़ा भर लछाओ; ग्रोग" बात्रा के घर में बैठे हैं। इन मुज़ियों की तो कब्र तक से मैं वाक़िफ़ हूँ । और एक इस पर क्या मोकूफ़ है। नवात्र के यहाँ जितने हैं, सब गुरगे, मुफ़्तखोरे, पराया माल ताकनेवाले । मामा, जा कर कह दो, हुक्ा यहाँ कोई नहीं पीता । लेकिन बीबी ने हुकक़ा भरवा कर भेज ही दिया। जब पी चुके, तो बाहर से आवाज़ दी कि मामा, चारपाई यहाँ मौजूद है। ज़रा दरी या गलीचा दे जाइएगा | अब ठीक दोपहर में कोन इतनी दूर जाय। ज़रा कमर संधी कर छें। तब तो मियाँ नुदरत ख़ब ही झल्लाये। आखिर शैतान का मनसूत्रा क्या है ! देख रद्दा है कि मालिक घर में नहीं है; फिर यह दरवाज़े पर चारपाई पर सोना क्या माने ! और मुझसे-इ9से कहाँ का ऐसा याराना है कि अः ही भाभी साहब से फ़रमाइशें होने लगीं ।

इधर मामा ड्योदी में गयी कि लडु चुपके-चुपके खाय । ताक में हँठ मारा, पर लडुओं का कहीं पता नहीं। छोकरे ने पूछा --मामा, वहाँ क्या दूँढ रही हो ! वह तो चूहा खा गया | सच कहन।, कैसी हुई ! चूदे ने तुम्हारे अच्छे कान कतरे !

मुसाइब--मामा जी, जरी दरी दे जाइए ।

मामा---यहाँ दरी-वरी नहीं है।

मुसाह+--हम जानते हैं, बड़े भाई कद्दीं इस वक़्त ईद मिलने गये हैं । बस, समझ उजाहए |

नुदरत ने कहा--खुश हुईं ! कुछ समझी मी १ अब यह इस फ़िक्र में हैं कि तुमकों हमको लडप्रा दे । और मिठाई भेजो | गिलौरियों चखाओ !

जब मियाँ 6७इब चंपत हुए, तो मियाँ नुदरत भी चैंगेल की तरफ बढ़े और अफ़ीम की पीनक में खूब छक कर मिठाई चखी । फिर चले नवाब के घर | कदम-क़दम पर फ़िक़रे सोचते जाते हैं। बारे दाखिल हुए, तो लोगों ने आसमान सिर पर उठाया |

नवाब--शुक्र है, जिंदा तो बचे ! यह आप अब तक रदे कहाँ आग्विर !

मुसाहब--हुजूर, तारघर तो यह सामने है |

हाफ़िज--हाँ, और नहीं तो क्या १ बात करते तो आदमी पहुँचता है ।

रोशन अली--कौन, मुझसे कद्टिए, तो इतनी देर में अठारह फेरे कर्रू ।

नुदरत--हाँ भाई, घर बैठे जो चाहे कद्ठ लो, कोई जाय, तो आटे-दाछ का भाव माढ्म हो । चलते-चलते आँधी-रोग आ जाता है। बकरी मर गयी और खानेवाले को मज़ा ही न आया | आप लोग थान के टर्रे हैं। कहने लगे, दो क़दम पर है । यहाँ से गये सआदनगंज वहाँ से घनिया महरी के पुल, वहाँ से ऐशनज्नाग़, वहाँ से गनेशर्गंज, वहाँ से अमीनात्राद होते हुए तारघर पहुँचे । दम टूट गया, शल हो गये, मर मिटे, न खाना, न दाना । आए लोग बैठे-बैठे यहाँ जो चाहे फ़रमायें, कद्दने और करने में फ़के है ।

नावत--तो इस टॉय-टोय से वास्ता, यह कहिए, ख़बर पहुँची कि नहीं !

नुदरत--खुदावंद, भला मैं इसका क्या जवाब दूँ ! ख़बर दे आया। बाबू ने मेरे सामने खट-खट किया, साहब ने रुपये लिये, चपरासियों को इनाम दिया | चार रुपये अपनी जब से देने पड़े । वह तो कह्दिए, वहाँ मेरे एक जान-पहचान के निकल आये, नहीं बे7ग वापस आना पड़ता |

नवाबर--खैर, तसकीन हुई । अब फ़र्माहए, इतनी देर कहाँ हुई !

नुदरत--खुदावंद, जढ्दी के मारे बग्धी किराये करके गया था; लौदती बार उसने वह पलटा खाया कि मैं तो समझा, बस, कुचल ही गया । मगर खदा कार-साज है, गिरा तो, लेकिन बच गया। कोई दो घंटे तक कोचवान बम ही दुरुस्त किया किया । इससे देर हुई । हुज्र, अभ्न घर जाता हूँ ।

नवाब--अरे भई, खाना तो खाते जाओ । अच्छा, चार झाययें वे हुए और बग्बी के किराये के भी कोई तीन रुपये हुए होंगे ! सात रुपये दारोगा से ले लो।

नुटरत--नहीं खदवंद, झूठ नहीं बोदूँगा । चाहे फ़ांक़ा करूँ, मगर कहूँगा सच ही । यही तो गुलाम में जौद्दार है । दो रुपये और पाँच पैसे रिये | देखिए, खुदा को मुँह दिखाना है ।

नवाब--दारोगा, इनको दस रुपये दे दो | सच बोलने का कुछ इनाम भी तो दूं ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३०

दूसरे दिन सुबह को नवाब साहब ज़नानखाने से निकले, तो मुसाइबों ने झक-झुक कर सल्यम किया | खिदमतगार ने चाय की साफ-सुथरी प्यालियाँ और चमचे ला कर रखे । नवात्र ने एक-एक प्याली अपने हाथ से मुसाहबों को दी और सबने गरम-गरम दुधिया चाय उड़ानी शुरू की । एक-एक घूँट पीते जाते हैं और राप भी उड़ाते जाते हैं ।

मुसाहब--हुजूर, कश्मीरी खूब चाय तेयार करते हैं ।

हाफ़िज--हमारी सरकार में जो चाय तैयार होती है, सारी ख़दाई में तो बनती न होगी । जरा रंग तो देखिए । हिंदू भी देखे, तो मुँह में पानी भर आये |

रोशनअली--कुरबान जाऊँ हुजूर, ऐसी चाय तो बादशाह के यहाँ भी नहीं बनती थी | खदा जाने, मियाँ रहीम कहाँ से नुरखा पा गये । मगर ज़रा तलखी बाक़ी रह जाती है।

रहीम--सुभान अछाह ! आप तो बादशाहों के यहाँ चाय पी चुके हैं और इतना भी नहीं जानते कि चाय में तलसत्री न हो, तो वह चाय दी नहीं ।

खिदमतगार--खुदावंद, शिवदीन हलवाई हाज़िर है |

नवाब--दारोजा जी, इस हलवाई का हिसात्र कर दो, और समझा दो कि अगर खराब या सड़ी हुई बासी मिठाई भेजी, तो इस सरकार से निकाल दिया जायगा। परसों बरफ़ी खराब भेजी थी | घर में शिकायत करती थीं ।

दारोग़ा--छुनते हो शिवदीन ! देखो, सरकार क्या फ़रमाते हैं ? ख़बरदार जो सड़ी-गली मिठाई भजी । अब तुमने ममक़हरामी पर कमर बाँधी है ! खड़े-खड़े निकाल दिये जाओगे !

हलवाई--नहीं खदावंद, अव्वल माल दूँ, अव्वल | चाशनी जरा बहुत आ गयी, तो दाना कम पड़ा | कड़ी हो गयी | चाशनी की गोछी देर में देखी, नहीं तो इस दूकान की बरफ़ी तो शदहरभर में मशहूर है। वह लज्जठी होती है कि ओठ बैंधने लगते हैं |

दारोग़ा--चलो, तुम्दारा हिसाब कर दें | ले बतत्यओ, कितने दिन से खर्चे नहीं पाया, और तुम्दारा क्या आता है !

इलवाई--अगले महद्दीन में २० रु० और कुछ आने की आयी थी। और अबकी १० तारीख अँगरेजी तक कोई खत्तर या अस्सी की |

दारोग्रा--अजी, तुम तो गद्देबाजियाँ करते हो | सत्तर या अस्सी, सौया पाँच सौ; उस महीने में उतनी और इस महीने में इतनी । यह बखेड़ा तुमसे पूछता कौन है ! हमें तो बस, गठरी बता दो, कितना हुआ !

हलवाई-- अच्छा, हिसाब तो कर रूँ, (थोड़ी देर के बाद) बस, १४२ रुपये और दस आने दीजिए । चाहे

दिसाव कर लीजिए, बोलता जाऊँ।

दारोग़ा--अजी, तुम कोई नये तो हो नहीं । बताओ इसमें यारों का कितना है? सच बोलना लाला | (पीठ ठोंक कर) आओ, वारे-न्यारे हों । क्यों, है न !

हलवाई--ब्स, सौ हमको दे दो, बयालीस तुम ले लो। सीघा-सीधा मैं तो यह जानता हूँ ।

दारोग़ा---अच्छा, मंजूर | मगर बयालीस के बावन करो । एक सो तुम्हारे, बावन हमारे । सच कहना, दोनों महीनों में चालीस की मिठाई आयी द्ोगी या कम १

हलवाई--अजी हुजूर; अब इस भेद से आपको क्या वास्ता ? आपको आम खाने से गरज़ है, या पेड़ गिनने से | सच-सच यह कि सत्र मिला कर अड़तीस रुपये की आयी होगी । मुल वज्जन में मार देता हूँ । सेर मर लड्डु माँग भेजे, हमने पाव सेर कम कर +िये। |

दारोगा--ओह, इसकी न कहिए, यहाँ अँधेर-नगरी चौपट-राज है। यह दिमाग किसे कि तौलने बैन ! मियाँ छखलुट, बीत्री उनसे बढ़ कर | दस के पचास लो, और सेर के तीन पाव भेजो | मज़े हैं। अच्छा, ये सौ रुपये गिन छो और एक सौ बावन की रसीद हमें दो ।

हल्वाई--यह मोल-तोछ है। सौ और पाँच हम लें और बाक़ी हजूर को मुबा-रक रहें |

अब सुनिए, मियाँ खोजी ने ये सारी बात सुन लीं। जब शिवदीन चला गया, ते बढ़ कर बोले--अजी, हज़रत, आदाबरज़ है। कहिए, इसमें कुछ यारों का भी हिस्सा है ! या बावन के बावन खुद ही इज़म कर जाओगे और डकार तक न लोगे १ अब हमारा और आपका साझा न होगा, तो बुरी ठहरेगी।

दारोगा--क्या ? किससे कहते हैं आप ! यह साझा कैसा ! मंग तो नहीं पी गये हो कहीं ! यह क्या वाह्दी-तब्राही बक रहे हो ? यहाँ बेहदा बकनेवाल। की जबान खींच ली जाती है| तुम टुकडगर्दों को इन बातों से क्या वास्ता !

खोजी--(कमर कस कर) ओ गीदी, कसम ख़दा की, इतनी क़रौलियाँ भोंकी हों कि याद करो । मुझे भी कोई ऐशा-वैसा समझे दो! मैं आदमी को दम के दम में सीधा बना देता हैं । किसी और भरोसे न भूलिएगा । क्या खूब, अड़तीस के डेट सौ दिलवाये, पचास खद उड़ाये और ऊपर से गुराता है मदक | अभी तो नवाब साइब से सारा कच्चा चिट्ठा जड़ता हूँ । खड़े-खड़े न निकाल दिये जाओ, तो सह्दी । हम भी तमाम उम्र रईसों की ही सोहच्त में रहे हैं, घास नहीं छीछा किये हैं । बाय हाथ से बीस रुपये इधर रख दीजिए। बस, इसी में खैर है; वर्ना उल्टी आँतें गले ' पढ़ेंगी । अब सोचते क्या हो ? ज़रा चों-चपड करोगे, तो क़लूई खोल दूँगा | बोलो, अब क्या राय है ?! बीस रुपये से ग़म खाओगें, या ज़िब्ठलत उठाओगे १ अभी तो कोई कानोंकान नहीं छुनेगा, पीछे अलबत्ता बड़ी टेटी खीर है ।

दारोग़ा--वाह री फूटी क्रिस्मत | आज सुबरह-सुबह बोहनी अच्छी हुई थी, अच्छे का मैंह देख कर उठे ये; मगर हज़रत ने अपनी मनहूस सूरत दिखायी । अब बावन में से आपको ब्रीस रुपये, रक्रम की रक्रम निकाल दें, तो हमारे पास क्या खाक रहे ! और हाँ, खब याद आया, बावन किस मरदूद को मिले। सेंताल्सि ही तो हमारे दृत्ये चदे । दस तुम भी लो भई । (गदन में द्ाथ डाठ कर) मान जाओ उस्ताद । हमें ज़रूरत थी इससे कद्दा, वरना क्या बात थी। और फिर इम-तुम जिंदा हैं तो सैकड़ों दटगे मियाँ, ये हाथ दोनों दूटने दी

के लिए हैं, या कुछ और !

खोजी--दस में तो हमारा पेट न भरेगा । अच्छा भई, पंद्रह दो ।

आखिर दारोगा ने मजबूर हो कर पंद्रह रुपये मियाँ खोजी को नज़र किये ओर दोनों आदमी जाकर महफिल में शरीक़ हुर | थोड़े द्वी देर बैठे होंगे कि चोबदार ने आकर कहा - हुजुर, वह बजाज आया है, जो विलायती कपड़ा बेचता है। क़ल भी हाजिर हुआ था; मगर उस वक़्त मौका न था, मैंने अर न किया |

नवातर-दारोग़ा से कहो, मुझे क्या घडी-घड़ी आके परचा जड़ते हो। (दार।गा से) जाओ भई, उसको भी लगे द्वाथों भुगता ही दो। झंझट क्यों बाक़ी रह जाय | कुछ ओर कपड़ा आया है विलायत से ! आया हो, तो दिखाओ; मगर बाबा मोल की सनद नहीं ।

बज़ाज--अब कोई दूज तक सब्च कपड़ा आ जायगा। ओर, हुजूर ऐसी बातें कहते हैं ! भला, इस ड्यौट्री पर हमने कभी मोल-तोल को बात की है आज तक ! और यों तो आप अमीर हैं, जो चाहे कहें, मालिक हैं हमारे ।

दारोगा और बज़ाज़ चले । जन्न दारोगा साहत्र की खपरेल में दोनों जा कर बैठे, तो प्रियाँ खोड़ी भी रेंगते हुए चले और दन से मौजूद ! दारोगा ने जो इनको देखा, तो कादो तो बदन में ल्हू नहीं; मुदनी सी चेहरे पर छा गयी ! चुप ! हवाइयाँ उड़ी हुईं । समझे कि यह खोजी एक ही कोइयाँ हे | इससे खदा पनाह में रखे | सुत्रह् को तो मरदूद ने हत्थे ही पर टोक दिया, और पंद्रह पटीले । अब्र जो देखा कि बज्ञाज आया, तो फिर मौजूद । आज रात को इसकी टॉम न तोड़ी दो, तो सही । मगर फिर सोचे कि गुड़ से जो मरे, तो जहर क्यों दें। आओ इस वक़्त चुनीं-चुनौं करें, फिर समझा जायगा | बोले--आओं भाईजान, इधर मोढ़े पर चैटौी | अच्छी तरह भई ! हुका लाओ, आपके लिए ।

तवज्ञाज़ सदर-आज़ार का रहनेवाला एक ही उस्ताद था। ताड़ गया कि इसके बैठने से मेरा और दारोग़ा का मतलब खन्त दो जायग[! किसी तदबीर से इसफो यहाँ से निकालना चाहिए। पहले तो कुछ देर दारोगा से इशारों में बाते हुआ कीं । फिर थोड़ी देर के वाद बज़ाज़ ने कदहा-मियाँ साइबर, आपको यहाँ कुछ काम है !

खोजी--तम अप्रनी कद्दो छालाजी, इमसे क्या वास्ता !

बज़ाज--तुम यहाँ से उठ जाओ। उठते हो कि मैं दूँ एक छात ऊपर से ।

ना

श्रे

खोज़ी--ओ गीदी, ज़बान सैंभाल; नहीं तो इतनी क़रौलियौं भोंकूगा कि खून-खराब द्वी जायगा |

बज़ाज़--उढूँ फिर में !

ख्तोजी--उठके तमाशा भी देख ले !

बजाज़--बेधा है क्या!

खोजी--बल्ला ह, जो बे-ते क्रिया, तो इतनी करोलियाँ* *

खोजी कुछ और कहने ही को थे कि बजाज ने बैठे-बेठे मुँह दबा दिया ओर एक चपत जमायी । चलिए, दोनों गुंथ गये । अब दारोग़ा जी को देखिए। बीच बचाव किस मज़े से करते हैं कि खोजी के दोनों हाथ पकड़ लिये और कमर दबाये हुए. हैं और बज़ाज़ ऊपर से इनको ठोक रद्दा है। दारोगा साइब गला फाड-फांड कर गुल मचाये जाते हैं कि मियाँ, क्यों लड़े मरते हो ! मई, घौल-घप्पे की सनद नहीं । लोजी अपने दिल में झल्ला रहे हैं कि अच्छे मीरफ़ैसली बने। इतने में किसी ने नवात्र साहब से जा कर कह दिया कि पियाँ सोनी, दारोगा और बज़ाज़ तीनों मुँये पड़े हैं। उसी वक़्त बजाज़ भी दौड़ा हुआ आया और फ़रियाद की कि हुजूर, इम आपके यहाँ तो सस्ता माल देते हैं, मगर यह खोजी हिसात्र-कितात्र के वक़्त सर पर सबार हो गये | लाख-लाख कहा किये कि भई, हम अपने माल का भाव ठम्दारे सामने न बतायेंगे; मुल इन्होंने हरी मानी न जीती, और उल्टे पजे झाड़ के चित-पट की टह्वायी । कमज़ोर, मार खाने की निशानी। मैंने वह गुद्दा दिया कि छठी का दूध याद करते होंगे। दारोगा भी रोते-पीटते आये कि दोहाई है, चारपाई की पट्टी तोड़ डाठी, खासदान तोड़ डाछा और सेकड़ों गालियाँ ट्री ।

मियाँ सत्रोजी ऐसे धषियाये गये और इतनी बेभाव की पड़ी कि चअस, कुछ पृढ़्िए गहीं । नवाब ने पूछ--आखिर झगड़ा क्या था !

दारोगा--हुजुर यह खोजी बड़े ही तीखे आदमी हैं | बात-बात पर करौली भोंकते हैं, और गीदी तो तकिया-कलाम है | इस वक़्त लाला बलदेव ही से भिड़.पड़े । वह तो कहिए, मैने बीच-बचाव कर दिया । बर्ना-एक-आध का सिर ही फूट जाता ।

बज।ज---बड़े झब्ले आदमी हैँ। दारोगा जी बेचारे न आ जाँय तो कपडे-वपड़े फाड़ डाल ।

खोजी--तो अन्न रोते कादे को हो! अब यह दुग्बड़ा लेके क्या बैठे हो |

नवा4--लप्पा-डग्गी तो नहीं हुई ।

खोजी--नहीं हुजूर, शरीफ़ों मे कही द्वाथा-पाई होती है भला ! हमने इनको टलकारा, इन्हों ने हमको डाँटा, मगर कुंदे तोल-तौल कर दोनो रह गये | भलेमानस प्र हाथ उठाना कोई दिलग्गी हे ! ... ग्ेर, मिर्यों खोजी तो महफ़िल में जा कर बैठे और उधर लाला बलदेव और दारोगा साहब हिसाब करने गये।

दारोग़ा--हाँ भाई, बताओ ।

लाला--अजी बताये क्या, जो चाहे दिलवा दो |

दारोग़ा--पहले यह बताओ, तुम्हारा आता कया है ! सौ, दो सौ, दस, बीस, पचास जो हो, कह दो |

लाला -दारोग़ा जी, आजकल कपडा बड़ा मैँहगा है।

दारोगा - लाला, तुम निरे गावदी ही रहे । हमको मैंदगे-सस्ते से क्या वास्ता ! हमको तो अपने हक़ से मतलब | तुम तो इस तरह कहते हो, जैसे हमारी गिरह से जाता है।

लछाला-फिर तो ७०३) निकालिए ।

दारोग़ा---त्रस, अरे प्रियाँ, अभ्रकी इतने दिनों में सात-सादे सात सौ ही की नौबत आयी !

लछाला--जी हाँ, आप से कुछ परदा थोड़े ही है। दो सौ और पचपन रुपये का कपड़ा आया है; अंरर-

बाहर, सच्च मिला कर । मगर परसों नवाब साहब कहने लगे | कि अबकी तो तुम्हारा कोई पाँच-छह्द सौ का माल आया होगा । मैंने कहा कि ऐसे मौक़े पर चूकना गधारन है। वह तो पाँच-छट्द सो बताते थे, मेरे मुँह से निकल गया कि हिसाब किये से मालूम होगा । मुल कोई आठ-सात सौ का आया होगा । तो अब्र ७०३) ही रखिए । इसमें हमारा और आपका समझौता हो जायगा ।

दारोग़ा--अजी, समझोता कैसा, हम-तुम कुछ दो तो हैं नहीं; और हमारे-तुम्दारे तो बाप-दादा के वक्त से दोस्ताना है। बोलो, कितने पर फ़ेसला होता है !

लाल[--बस, दो सौ छब्त्रीस तो हमको एक दीजिये और तीन सो और दीजिए । इसके बाद बे सो आपका |

दारोग़ा--(हँस कर) अच्छा भई, मंजूर | हाथ पर हाथ मारो । मगर ७५३) इ६० ६ आ० की रसीद लिखो, जिनमें मालूम हो कि आने-पाई से हिसाब लेत है |

ल/ला--बड़े काइयाँ हो दारोग़ा जी ! अजी, २९७) रु० ६ आ० कुल आपका १

स्वोजी--बटिक आपके बाप का ।

यह आवज़ सुन कर दोनों चौंके। इधर-उघर दंखते हैं, कोई नज़र ही नहीं आता | दारोग़ा के हवास ग़ायत्र । बज़ाज़ के बदन में खून का नाम नदीं। इतने में फिर आवाज आयी--कह्दो, कुछ यारों का भी हिस्सा है ! तत्र दोनों के रहे-सददे होश और भी उड़ गये ।

अब सुनिए--मियाँ खोजी खपरेल के पिछवाड़े एक मोखे की राह से सब सुन रहे ये | जब कुछ कारवाई खतम हो गयी, तो आवाज्च लगायी । खेर, दारोगा और लाला बलदेव ने उनको द्वंद निकाला और लछ्ो-पत्तो करने लगे |

बजाज - हमारा क़यूर फिर माफ़ कीजिए |

. दारोग़ा--अजी, ये ऐसे आदमी नहीं हैं | ये बेचारे किसी से लड़ने-मिडने वाले

नहीं । बाक़ी लड़ाई-झगहा तो हुआ ही करता है। दिल में कुदरत आयी और साफ़ हो गये |

खोजी--ये बातें तो उम्र भर हुआ करेंगी | मतल्न की बात फ़रमाइए । लाओ कुछ इधर भी ।

दारोगा--जो कहो |

खोजी--सौ दिलबाइए पूरे। एक सौ लिये बगैर न टलूँगा । आज तुम दोनों ने मिल कर हमारी खूब मरंम्मत की है।

दरोग़ा--यद्द तीस रूपए तो एक लीजिए और यह दस का नोट | बस | और जो अल्सेट कीजिए, तो इससे भी हाथ धोइए ।

खोजी--खेर लाइफ, चालीस द्वदी क्या कम हैं ।

दारोशा--हम समझते थे कि बस, हमी-हम हैं; मगर आप हमारे भी गुरु पेदा हुए।

मियाँ खोजी और दारोग़ा साहब हाथ में हाथ दिये जा कर महफ़िल में बैठे, गोया दोनों में दाँत-काटी रोटी यी | मगर दारोग़ा का बस चलता, तो खोजी को कालेपानी ही भेज देते, या जिंदा चुनवा देते । मदफ़िल

में लतीफ़े उड़ रदे थे ।

नुदरत--हुजूर, आज एक आदमी ने हमसे पूछा कि अगर दरिया में नहायैं, तो मुँह किस तरफ़ रखें । हमने कहा कि भाई, अगर अक्लमंद हो, तो अपने कपड़ों की तरफ़ झख रखो, बर्ना चोर उठा ले जायगा। और आप गौते दी खाते रह जायैंगे |

हाफ़िज्--पुराना लतीफ़ा है।

आजाद--ए.क हकीम ने कटद्दा कि जन्न तक में त्रिन ब्याहा था, तो बीज्ीवाले गूँगे हो गये थे और अब जो शादी कर ली, तो ए.क-एक मुँह में सौ-सो जबाने हैं |

इतने में गंधी ने आ कर सलाम किया |

नवाब--दारोग़ा जी, इनकी भी भुगता दो |

दारोगा और गंघी खपरैल में पहुँचे, तो दारोगा ने पूछा--कितना इत्र आया !

गंधी--देखिए, आपके यहाँ तो लिखा होगा ।

दारोगा--हाँ, लिखा तो है। मगर खुदा जाने वह काराज़ कहाँ एड़ा है। तुम अपनी याद से जो जी में आये, बता दो ।

गंधो--२५ रु० तो कल के हुए, और ८० 5० उधर के। बेगम साइब ने अब की इत्र की भरमार दी कर दी । क़राबे के क़राबे खाली केर दिये ।

दारोग़ा--अच्छा भई, फिर इसमें किसी के बाप का कया इज़ारा। शौकीन हैं, रईसज़ादी हैं, अमीर हैं। इत्र उन्हीं के लिए है, या हमारे आपके लिए १ अच्छा, तो कुछ ११५ रु० हुए न ! तुम भी क्या याद करोगे । छो, सौ ये हैं और तीन नोट पाँच-पाँच के ।

गंधी--अच्छा लीजिए, यद्द इत्र की शीशी आपके लिए लाया हूँ ।

दारोग़ा--किस चीज़ का है !

गंधी--सूँघिए, तो मादूम हो । खुदा जानता है, १० रु० तोले में झड़ाझड़ उड़ा जा रहा है।

मियाँ गंधी उधर रवाना हुए, इधर दारोग़ा जी खुश-खश चले, तो आवाज आयी कि उस्ताद, इस शीशी में यारों का भी द्िस्सा है। पीछे फिर के देखते हैं, तो मिर्यों खोन्ी धूमते हुए चले आते हैं |

दारोग़ा--यार, तुमने तो बेतरह पीछा किया

खोजी--अब की तो तुमको कुछ न मिला । मगर इस इच्न में से आधी शीशी

लैगे। दारोग़ा-अच्छा भई, ले लेना । तुमसे तो कोर ही दबी है। दोनों आदमी

जा कर मदृफ़िल में फिर शरीक हो गये |

HINDI TEXT

प्रसंग ३१

एक दिन पिछले पहर से खटमलों मे मियाँ खोजी के नाक में दम कर दिया। दिन भर का खून जोंक की तरह पी गये । हज़रत बहुत ही झल्लाये; चीख उठे, छाना क्रौी, अभी सबका खून चूस दूँ। यह हाँक जो औरों ने सुनी, तो नींद हराम दो गयी । चोर कां शक हुआ । लेना लेना, जाने न पाये। सराय भर में हुछड़ मच गया। कोई आँखें मल्ता हुआ अंपेरे में ट्टोलता है, कोई आँखें फ़ाड-फाड़ कर अपनी गठरी को देखता हे, कोई मारे डर के आँखें बंद किये पड़ा है। मियाँ खोजी ने जो चोर-चोर की आवाज़ घुनी, तो ख़द भी गुल मचाना धुरू किया-लछाना मेरी करौली । ठहर [मैं भी आ पहुँचा | पीनक में सूस्त गयी कि चोर आगे भागा जाता है, दौड़ते-दौड़ते ठोकर खाते हैं तो अरर्र धों ! गिरे भी तो कहाँ, जहाँ कुम्हार के हंडे रखे थे | गिरना था कि कई हंडे चकनाचूर हो गये | कुम्हार ने ललकारा कि चोर-चोर | यह उठने ही को थे कि उसने आकर दबोच, लिया और पुकारने लगा--दौड़ो-दौड़ो, चोर पकड लिया | मुसाफ़िर और भठियारे सब के सब दौड़ पड़े। कोई डंडा लिये है, कोई लटठ बाँधे । किसी को क्या मादूम कि यद्द चोर है, या मिरयाँ खोज्ी । खब बेभाव की पड़ी । यार लोगों ने ताक ताक कर जज्नाटे के द्वाथ लगाये । खोजी की सिद्टी-पिद्दी भूल गयी; न करौली याद रही, न तमंचा | जब खूब पिट-पिटा चुके, एक मुसाफ़िर ने कह--भई, यद्द तो ख़ोजी मादूम होते-हैं। जब चिराग़ जलाया गया, तो आप दबके हुए नज़र आये | म्रियाँ आज़ाद से किसी ने.जा कर कह दिया कि तुम्हारे साथी खोजी चोरी की इल्लत में फँसे हैं, फिसी मुसाफ़िर को टोपी घुरायी थी। दूसरे ने कहा--नहीं-नहीं, यह नहीं हुआ | हुआ यह कि एक कुम्हरर की हाँड़ियाँ चुराने गये थे | मुल जाग हो गयी |

मियाँ आज़ाद को यह बात कुछ जैँची नहीं। सोचे, खोजी बेचारे चोरी-चकारी क्या जानें । फिर चोरी भी करते तो द्ाँडियों की ! दिल में ठान ही कि चलें और खोजी को बचा लछार्ये। चारपाई से उतरे ही थे कि देखा, खोजी साहब झशमते चले आते हैं ओर बड़बड़ाते जाते हैँ--हत् तेरी गीदी की, बड़ा आजाद बना है। चार- 'पाई पर पड़ा जरं-खर किया किया और हमारी ख़बर ह्वी नहीं |

आज़ाद--खैर, हमको तो पीछे गालियाँ देना, पहके यद्द बताओ कि द्वाथ-पाँव तो नहीं टूटे !

खोजी-- हाथ-पाँव ! भजी, आप उस वक़्त होते तो देखते कि बंदे ने क्या-क्या जौहर दिखाये | पचास आदमी घेरे हुए ये, पूरे पचास, एक कम न एक ज़्यादा, और में फुलझड़ी बना हुआ था । बस, यह कैफ़ियत थी कि किसी को अंटी दी धम से जमीन पर, किसी को कूले पर लाद कर मारा। दो-चार मेरे रोत्र में आ कर थरथरा के गिर ही तो पड़े । दस-पाँच की ह्ड्डी-पसली चकनाचूर कर दी। ज़ो सामने आया, उसे नीचा दिखाया ।

आजाद--सच !

खोजी--खुदाई भर में कोई ऐसा जीवटदार आदमी दिखा तो दीनिए ।

आज़ाद--भई, खदाई भर का हाल तो खदा दी को खब मालूम दे। मगर इतनी गवाही तो दम भी देंगे कि आप-सा बेहया दुनिया भर में न होगा ।

दोनों आदमी इस वक़्त सो रहे, दूसरे दिन सबेरे नवाब साइब के यहाँ पहुँचे ।

आजाद--जनाव, रुखसत होने आया हूँ । जिंदगी है, तो फिर मिलेगा ।

नवाब- क्या कूच की तैयारी कर दी १ भई, वापस आना, तो मुलाकात जरूर करना ।

आज़ाद और खोजी रुखसत हुए, तो खोजी पहुँचे ज़नानी. ब्योदी पर और दर-बान से बोले--यार, ज़रा बुआ ज़ाफ़रान को नहीं बुछा देते । दरबान ने आवाज़ दी--बुआ ज़ाफ़रान, तुम्दारे मियाँ आये हैं ।

बुआ जाफ़रान के मिर्यों खोजी से बिलकुल मिलते-छुलते ये, ज़रा फ़क नहीं । वही सवा बालिश्त का क़द, वही दुबले-पतलछे दहाथ-पाँव | जाफ़रान उनसे रोज़ कहद्दा करती थी--तुम अफ्रीम खाना छोड़ दो । वह कब छोडनेवाले ये मलछा । इती सथत्र से दोनों में दम मर नहीं बनती थी । ज्ञाफ़रान ने जो बाहर आ कर देखा, तो दृज़रत पीनक छे रहे हैं| जल-भुनकर खाक द्वी तो हो गयी | जाते ही मिर्यों खोबी के पढे पकड़ कर एक, दो, तीन, चार, पाँच याँटे लगा ही तो दिये । खोजी का नशा हिरन हो गया | चौंक कर बोले--लाना तो करौली, खोपड़ी पिछपिली हो गयी । हाथ छुडा-कर भागना चाद्या; मगर वह देवनी नवाब का माल खा-खा कर हथनी बनी फिरती थी | इनको चुरमुर कर डाला । इधर गुल-गपाड़े की आवाज़ हुई, तो बेगम साहबा, मामा, लोंडियाँ, सब्र परदे के पास दोड़ीं ।

बेगम--जाफ़रान, आखिर यह है क्य' ! रुई को तरह इस बेचारे को ठूम के घर दिया ।

मामा --हुज्र, ज्ाफ़रान का क्रदर नहीं, यह उस मरदुए का क़बूर है जो जोरू के हाथ बिक गया है। (खोबी के कान पकड़ कर) जोरू के हाथ से जूतियाँ खाते हो, और ज़रा चूँ नहीं करते (

खोजी--हाय अफ़सोस ! अजी, यह जोरू किस मरदूद की दे । खुदा-खुदा करो ! भल्ण मैं इस हुडुदंगी, काली-कलूटी डाइन के साथ न्याह करता ! मार-मार के मुरकस निकाल लिया ।

बुआ जाफ़रान ने जो ये बातें छुनीं, तो वह आवाज़ ही नहीं । गौर करके देखते हैं, तो यद कोई और ही है । दाँतों के तले उँगली दबाकर खामोश दो रहीं ।

लाडी--ऐ वाह बुआ जाफ़रान | इतनी भी नहीं पदचानतीं। यह बेचारे तो नवात्र साहत्र के यहाँ बने रहते थे । आजिर तुमको सूझी क्या बैगम साहब ने भी जाफ़रान को खूब आड़े द्वाथों लिया | इतने से किसी ने नवात/॥ साहब से सारा क्रिस्सा कष्द दिया | महफ़िल भर में ककहा पड़ गया ।

नवाब--आफ़रान की सज़ा यही है कि खोजी को दे दी जायें ।

खोजी--बस, युलाम के हाल पर रहम कीनिए। ग़ज़ब ख़ुदा का | मिर्यों के धोखे-धोखे में तो इसने दमारे हाथ-पाँव ढीले कर दिये और जो कद्दी सचमृच मिर्यों ही होते, तो चटनी द्वी कर डालती । क्या कहें, कुछ बस नहीं चलता, नहीं नवात्री होती, तो इतनी क़रौलियोँ भोंकी होतीं कि उम्र भर याद करती । यहाँ कोई ऐसे-वैसे नहीं । घास नहीं खोदा किये हैं ।

बड़ी देर तक अंदर-बाहर क़हक़हे पड़े, तब दोनों आदमी फिर से रुखसत हो कर चले | रास्ते में मियाँ आजाद मारे इँसी के छोट-छोट गये ।

स्तोजी--जनाब, आप हँसते क्या हैं! मैंने भी ऐसी-ऐसी चुटकियाँ ली हैं कि जाफ़रान भी याद ही करती होगी |

आज़ाद--मिर्षों ड्ब मरो जा कर | एक औरत से हाथापाई में जीत न पाये !

स्तोजी--जी, वह औरत सौ मद के बराबर है | चिमट पड़े, तो आपके भी ह्वास उड़ जारयें।

दोनों आदमी सराय पहुँच कर चलने की तैयारी करने लगे ! खाना खा कर बोरिया-बक़चा सैंभाल स्टेशन को चले |

खोजी--हज़रत, चलने को तो हम चलते हैं, मगर इतनी शर्ते आपको क़बूल करनी होंगी--

(१) करोली हमको ज़रूर ले दीजिए ।

(२) बरस भर के लिए अफ़ीम ले लीजिए । मैं अपने लादे-लादे फिरलूँगा। बर्ना जैंभाइयों पर जैँ भाइयों आयेंगी और बेमौत मर जाऊँगा । आप तो औरतों की तरह नशे के आदी नहीं; मगर मैं बग्रेर अफ़ीम पिये एक क़दम न चर्दूगा । परदेस में अफ़ीम मिले, या न मिले, कहाँ ढूँदता फिरूँगा |

(३) इतना बता दीजिए कि वहाँ बुआ जाफ़रान की सी डंडपेल देबनियाँ तो नज़र न आयेंगी ! वकाह, क्या कस-कस के लछातें लगायी हैं, और क्या तान-तान के मुक्केबाज़ी की है कि पलेथन ही निकाल डाला ।

(४) सराय में हम अब तमाम उम्र न उतरेंगे, और जो जद्दाज़ पर कुम्हार हुए तो हम डूब ही मरेंगे । हम ठहरे आदमी भारी-मरकम, कहीं पाँद फिसल गया और एक-आध हँडा टूट गया, तो कुम्दार से ठाँय ठाँय ६, जायगी |

(५) जिस रईस की सोहबत में बजाज आते द्वोंगे, वहाँ हम न जायेंगे ।

(६) जहाँ आप चलते हैं, वहाँ कॉजीहोस तो नहीं है: गधे के धोखे में कोई हमको कान पकड़ के कॉनीद्दौस पहुँचा दे ।

(७) टट्टू पर हम सवार न होंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो ज!य ।

(८) मीठे ण्लाव रोज पक्के ।

(९) हमको मिर्यों खोजी न कहना | जनाब ख्याजा साहब कहां कीजिए | यदद खोजी के क्या माने !

(१०) मोरने पर हम न जायेंगे। दूट-मार में जो कुछ दाथ आये, वह हमारे पास रखा जाय |

(११) गोली खाने के तीन घंटे पहले और मरने के दो घड़ी पहले इसमें बतछा देना |

(१२) अगर हम मर जायें, तो पता छगा कर हमारे बालिद के पास ही हमारी लाश दफ़न करना । अगर पता न लगे, तो किसी क़बरिस्तान में जा कर सबसे अच्छी कबर के पास हमको दफ़न करना । और लिख देना कि यह इन के वालिद की क्रबर है |

(१३) पीनक के वक़्त हमको हरगिज़ न छेड़ना ।

आजाद--3म्हारी सब शर्तें मंजूर । अब तो चलिएगा |

सोजी--एक बात और बाक़ी रह गयी !

भआाज़ाद--लगे हाथों वह भी कह डालिए ।

खोजी--मैं अपनी दादीजान से तो पूछ ढूँ ।

आज़ाद--क्या वह्द अभी जिंदा हैं ! खुदा शृठ न बुलाये, तो आप कोई पचास के पेटे में होंगे ! और वह इस द्विसाब से कम से कम क्या डेढ़ सौ बरस की भी न होंगी !

खोजी--अजी, में दिछगी करता था। उनका तो ह्वड्डियों तक का पता न द्वोगा।

स्टेशन पर पहुँचे। गुल-रपाड़ा मचा हुआ या। दोनों आदमी भीड़ काट कर अंदर दाखिल हुए, तो देखा, एक आदमी गेरुए कपड़े पहने खड़ा है। फ़कीरों की सी दाढ़ी, बाढ़ू कमर तक, मूँछें मुड़ी हुईं, कोई पचास के पेटे में | मगर चेहरा सुख, जैसे छाल अंगारा; आँखें आगमभूका |

आज़ाद--(एक सिपाही से) क्ये. भई, कया यह कोई फ़कीर हैं !

सिपाही--फक्रीर नहीं, चंडाल है । कोई चार महीने हुए, यहाँ आया और एक आदमी को सन्ज़ बाग़ दिखा कर अपना चेला बनाया। रफ़्ता-रफ़्ता और लोग भी शागिद हुए । फिर तो हक्षरत पुअने छगे । अब कोई तो कद्दता है कि बाबा जी ने दस सेर मिठाई दरिया में डाल दी और दूसरे दिन जा कर कहां--गंगा जी, हमारी अमानत हमको वापस कर दो | दरिया रूहरें मारता हुआ बाबा जी के पास आया और दस सेर गरमागरम मिठाई किसी ने आप ही आप उनके दामन में बाँध दी । कोई क्रसमें खा-ला कर कद्दता है कि कई मुर्दे इन्होंने जिंदा कर दिये । एक साइब ने यहाँ तक बढ़ाया कि एक दिन मूसकाधार मेंह बरस रहा था और इन पर बूँद ने असर न किया । कोई फ़रिड्ता इन पर छतरी छगाये रहा ।

आनबाद--चिकने घड़े बन गये |

सिपाही--कुछ -पूछिए नहीं | उन लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि यह क्ैदखाने प्ले निकल जायेंगे; मगर तीन दिन से हवालात में हैं, और अब सिद्टी-पिट्टी भूली हुई है । मैं जो उधर से आऊँ-जाऊँ, तो रोज़ देखैँ कि भीड़ लगी हुई है; मगर औरतें ज़्यादा और मद कम। जो आता है, वह सिज्दा करता है आपकी देखा-देखी मैं गया, मेरी देखा-देखी आप गये। बान्ना जी के यहाँ रोज़ दरबार लगने लगा ।

एक दिन का ज़िक्र है कि बाबा जी ने अपनी कोठरी में ढाट के नीचे दस-पाँच रुपये रख दिये और चुपके से त्राहर निकल आये | जबत्र दरबार जम गया, तो एक आदमी ने कद्ा--वाबा जी, हमको कुछ दिखाइए | बिना कुछ देखे इम एक न मानेंगे। बाबा जी ने आँखें नीली-पीली कीं और शेर की तरह गरजे--लोगों के होश उड़ गये। दो-चार डरपोक आदमियों ने तो मारे डर के आँखें बंद कर हीं। एक आदमी ने कहा--बाबा, अनजान है। इस पर रहम कीजिए । दूसरा बोला--नादान

है, जाने दीजिए । 'फ़कीर-- नहीं, इससे पूछो, क्या देखेगा !

आदमी--बाज्ा, मैं तो रुपयों का भूखा हूँ |

फ़कीर--बचा, फकीरों को दौलत से क्या काम ! मगर तेरी खातिर करना भी जरूरी है। चछ, चल, चल | बरसो, बरसो, बरतो । खन, खन, खन | अच्छा बच्चा, कुटी में देख; टाठ का कोना उठा। खुदा ने तेरे लिए कुछ भेजा ही होगा। मगर दाहना सुर चलता हो, तभी जाना; नहीं तो धोखा खायगा | वहाँ कोई डरावनी सूरत दिखायी दे, तो डर मत ज्ञाना; नहीं तो मर जायगा ।

बाबा जी ने कुटी के एक कोने में परदा डाल दिया था ओर उस परदे में एक आदमी का मुंह काला करके त्रिठा दिया था | अब तो आदमी डरा कि न जाने केसी भयानक सूरत नज़र आयेगी। कहीं डर जाऊँ, तो जान ही जाती रहे | बात जी एक-एक से कद्दते हैँ, मगर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती ! तत्र एक नौजवान ने उठ कर कहा--लीजिए, में जाता हूँ ।

'फ़कीर--बचा, जाता तो है, मगर जरा सैंभल कर जाना ।

(नौजवान बेधड़क कोठरी में घुत गया। टाट के नीचे से रुपए निकाल कर जेबत्र में रख लिये और चलने ही को था कि परदे में से वह काला आसक्मी निकल पड़ा और जवान की तरफ मुँह खोल कर झपटा। जवान ने आव देखा न ताव, लकड़ो उसकी इलक़ में डाल दी और इतनी चोटें लगायीं कि त्रौखछा दिया । जब्र वह रुपये लिये अकड़ता हुआ बाहर निकला, तो हवाढी मग्राली सत्र दंग कि यद्द तो खश-खुश आते हैं और हम समझे ये कि अब इनकी लाश देखेंगे ।

'त_ौजवान--(फ़कीर से) कद्दिए हज़रत, और कोड करामात दिखाइएगा !

'फ़क्ीर--बच्चा, तुम्हारी जवानी पर हमें तरस आ गया '

प्ौजवान--पहले जा कर अंदर देखिए तो आपके देव साहब की कया द्वालत है! जरा मरहम-पट्टी को जिए ।

'अगर वर्दों समझदार छोग होते, तो समझ जाते कि बाबा जी पूरे ठग हैं: मार वहाँ तो सभी जाहिल ये , मे समझे, बेशक बाबा जी ने नौजवान पर रहम किया | खेर बाबा जी ने खूब हाँथ-पाँव फैलाये । एक दिन किसी महाजन के यहाँ गये । वहाँ महल्ले भर के मर्द और औरतें जमा हो गयीं। रात को जब सब छोग चले गये, तो इन्होंने महाजन के छड़के से कहदा--हम तुमसे बहुत खश हैं। जो चाहे माँग ले । लड़का इनके क्रदमों पर गिर पड़ा। आपने फ़रमाया कि एक कोरी हाँडी लाओ, चूल्हा गरम करो; मगर छकड़ी न हो, कंडे हों | कुम्हार ने सब सामान चुयकियों में लेस कर दिया | तब आपने छोहे का एक पत्तर मैंगवाया। उसे होंडी में ५/थी भर कर डाल दिया | पानी को ले कर कुछ पढ़ा | थोड़ी देर के बाद एक पुढ़िया दी और कहा--वह सफेद दवा उसमें डाल दे । थोड़ी देर के बाद जब मद्दाजन का लड़का अंदर गया, तो बाबा जी ने लोहे का पत्तर निकाल दिया और अपने पास से सोने का पत्तर हाँड़ी में डाल दिया, और चल दिये। महाजन का लड़का बाहर आया, तो बाबा जी का पता नहीं | हॉड़ी को जो देखो, तो लोहे का पत्तर गायब, सोने का यक्का मौजूद । महछ्े भर में शोर मच गया । छोग बाबा जी को ढूँदने छगे |, आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि एक मालदार की बीबी ने चकमें में आ कर अपना पाँच-छ हजार का जेवर उतार दिया। बाबा जी जेवर ले कर उड़ गये। साल भर तक कहीं पता न चला | परसों पकड़े गये हैं |? थोड़ी देर के बाद गाड़ी आयी । दोनों आदमी जा बैंठे ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३२

सुबह को गाड़ी एक बड़े स्टेशन पर रुकी । नये मुसाफ़िर आ-आ कर बैठने लगे | मियाँ खोजी अपने कमरे के दरवाज़े पर खड़े घुड़कियाँ जमा रहे थे--आगे जाओ, यहाँ जगह नहीं है; क्या मेरे सिर पर बैठोगे ! इतने में एक नौजवान दूढूददा बराती कपड़े पहने आ कर गाड़ी में बेठ गया। बरात के और आदमी असब्ातर लद्वाने में मसरूफ़ थे | दुलद्दिन और उसकी लौंडी ज़नाने कमरे में बैठायी गयी थीं । गाड़ी चलनेवाली ही थी कि एक बदमाश ने गाड़ी में घुस कर दुल्दे की गरदन पर तलवार का ऐसा हाथ लगाया कि सिर कट कर घड़ से अलग हो गया | उस बेगुनाह की लाश फड़कने छगी। स्टेशन पर कुहराम मच गया । सैकड़ों आदमी दौड़ पड़े और क़ातिल को गिरफ़्तार कर लिया | यहाँ तो यह आफ़त थी, उधर दुलद्विन और महरी में और दी बातें ह रही थीं ।

दुलहिन--दिलबहार, देखो तो, यह गुल कैसा है ! जरी झाँक कर देखना तो !

दिलबहार--हैं-हैं! किसी ने एक आदमी को मार डाला है। चबूतरा सारा लहू-लह्ान है ।

दुलहिन--अरे राजब । क्या जाने, कौन था बेचारा |

दिलबद्दार-- अरे | बात क्या है ! लाश के सिरहाने खड़े तुम्हारे देवर रो रहे हैं।

एक दफ़े लाश की तरफ़ से आवाज़ आयी--हाय, भाई, तू किधर गया | दुल-हिन का कलेज़ा धक-धक करने लगा। भाई-भाई करके कोन रोता है। अरे गाजर ! वह घत्ररा कर रेल से उतरी और छाती पीटती हुई चली । लाश के पास पहुँच कर बोली--द्वाय, छुट गयी ! अरे लोगो, यहद्द हुभा क्या !

दिलबहार- हैं-हैं दुलहिन, तुम्हारा नसीब फूट गया ।

इतने में स्टेशन की दो-चार औरतें-- तार-बाबू की बीबी, गार्ड की लड़की, ड्राइ-बर की भतीजी वगैरह ने आ कर समझाना शुरू किया। स्टेशन मातमसरा बन गया । लोग लाश के इद-गिदे खड़े अफ़सोस कर रहे ये | बड़े-बड़े संगरिल आठ-आठ आँयू रो रहे थे। सीना फटा जाता था। एकाएक दुल्द्विन ने एक टंडी साँस ली, जोर से द्वाय करके चिक्लायी और अपने शौहर की छाश पर धम से गिर पड़ी । चंद मिनट में उसकी लाश भी तड़प कर सर्द हो गयी | लोग दोनों छाशों की देखते थे, और हैरत से दाँतों ऊँगली दबाते थे । तक़दीर के कया खेल हैं, दुलहिन के द्वाथ-पाँव में मेंहदी लगी हुई, सिर से पाँव तक जेवरों से लददी हुईं; मगर दम के दम में कफ़न की नौबत आ गयी । अमी स्टेशन से एक पालको पर चढ़ कर आयी थी, अब ताबूत में जायगी । अभी कपड़ों से इत्र की महक आ रही थी छि काफ़ुर की तदबोरें होने लगीं। सुबह को दरवाज़े पर रोशनचौकी और शहनाई बज रही थी, अब मातम की सदा है। थोड़ी ही देर हुई कि शहर के छोग छतों और दूकानों से बरात देख रदे थे, अब जनाज देखेंगे। दिलबहार दोनों लाशों के पास चैठी थी; मगर आँयुओं का तार बैंधा हुआ था। वद्द दुलदिन के साथ खेली थी । दुनिया उसकी नजरों में अँधेरी होगयी थी। दूल्हा के खिदमतगार क्रातिल को ज़ोर-ज़ोर से जूते और थप्पड़ लगा रहे थे और मरनेवाले को

याद करके दाड़ें मार-मार के रोते थे । खेर, स्टेशन मास्टर ने लाशों को उठवाने का इंतजाम किया। गाष्टी तो चली गयी । मगर बहुत से मुसाफ़िर रेल पर से उतर आये | बला से टिकट के दाम गये । उस फ़ातिल को देख कर सबकी आँखों से खन टपकता था। यही जी चाहता था ऊि इसको इसी दम पीस डालें। इतने में लाल कुर्ती का एक गोरा, जो बडी देर से चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था, ग़स्से को रोक न सका, जोश में आके झपटा और कातिल की गरदन पकड्ठ कर उसे खब पीटा । आज़ाद और मिर्यों खोजी भी रेल से उतर पड़े थे। दोनों लाशों के साथ उनके घर गये । राह में हजारों आदमियों की भीड़ साथ द्वो गयी। जिन लोगों ने उन दोनों की सूरत ख्वाब में भी न देखी थी, जानते भी न थे कि कौन हैं और कहाँ रहते हैं, वे भी बार-जार रोते थे । औरतें बाजारों, झरोखों और छतों पर से छाती पीटती थीं कि खुदा ऐसी घड़ी सातवें दुश्मन को भी न दिखाये। दुकानदारों ने जनाज़े को देखा और दूकान बढ़ा के साथ हुए। रईसजादे सवारियों पर से उतर-उतर पड़े और जनाज़े के साथ चले | जब दोनों लाशें घर पर पहुँची, तो सारा शहर उस जगह मौजूद था। दुलद्विन का बाप हाय-हाय कर रहा था और दूल्हे का बाप सब्र की सिल छाती पर रखे उसे समझाता था - भाई सुनो, हमारी और तुम्हारी उम्र एक है, हमारे मरने के दिन नजदीक हैं। ओर दो-चार बरस बेहयाई से जिये तो जिये, वर्ना अब चल:-चलाव है | किसी को हम क्या रोयें | .जिस तरह तुम आज अपनी प्यारी बेटी को रो रहे हो, इसी तरद हजारों आदमियों को अपनी औलाद का ग़म करते देख चुके हो । इसका अफ़सोस द्वी क्या १- वह खदा की अमानत थी, खदा के सिपुद कर दी गयी | उधर क्रातिल पर मुक़दमा पेश हुआ और फाँसी का हुक्म हो गया। सुबह के वक़्त क्रातिल को फाँसी के पास लाये। फाँसी देखते ही बदन के रोएँ खड़े हो गये । बड़ी ह्सरत के साथ बोला--सब माइयों को सलाम | यह कद्द कर फाँसी की तरफ़ नजर की और ये शेर पढे-- कोई दम कीजिए किसी तौर से आराम कहीं; चैन देती दी नहीं गरदिशे अय्याम कहीं। सेद छागर हूँ, मेरी जल्द ख़बर ले सैयाद; दम निकल जाय तड़प कर न तहे दाम कहीं। खोजी--क्यों मिर्यों, शोर तो उसने कुछ बेत़ुके से पढ़े । मछा इस वक़्त शेर का क्या जिक्र था। आज़ाद--चुप भी रहो । ठस बेचारे की जान पर बन आयी है, और तुमको

मजाक यूक्षता है-- उन्हें कुछ रह्म भी आता है या रब, वक्ते खँ:रेजी; छुरी जब हल्क्रे-आज्ि़ज़ पर रवाँ जल्लाद करते हैं।

क्रातिल फाँसी पर चंदा दिया गया और लाश फड़कने लगी। इतने में लोगों ने देखा कि एक आदमी घोड़ा कड़कडाता सामने से आ रहद्दा है। वह सीधा जेलखाने में दाखिल हुआ और चिल्ला कर बोला--खुदा के वास्ते एक मिन्रिट की मुहत दो | मगर वहाँ तो छाश फड़क रही थी। यद्द देखते द्वी सवार धम से घोड़े से गिर पढ़ा और रो कर बोला--यह तीसरा था । जेल के दारोगा ने पूछा--तुम कोन हो ! उसने फिर आहिस्ता से कद्दा--यह् तीसरा था । अब एक ए.क आदमी उससे पूछता है कि मिर्यों, ठम कौन हो और रोक छो, रोक छो की आवाज़ क्यों दी थी ! वद्द सबको यही जवाब देता है--यदहद तीसरा था ।

आज़ाद--आपकी हालत पर अफ़सोस आता है |

सवार-भई, यद्द तीसरा था।

इनसान का भी अजब हाल है। अभी दो ही दिन हुए कि शहर भर इस क्रातिल के खुन का प्यासा था।

सब दुआ कर रदे ये कि इसके बदन को चील-कौए खायें । वे भी इस बूढ़े की हालत देख कर रोने लगे | कातिल की बेरहमी याद न रही । सत्र लोग उस बूढ़े सवार से हमदर्दो करने छगे ! आखिर, जब बूढ़े के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो यों अपना किस्सा कहने लगा--

मैं क्रीम का पठान हूँ | तीन ऊपर सत्तर बरस का सिन हुआ । खुदा ने तीन बेटे दिये । तीनों जवान हुए और तीनों ने फाँसी पायी। एक ने एक क़ाफ़िले पर छापा मारा । उस तरफ़ लोग बहुत थे । काफ़िलेवालों ने उसे पकड़ लिया और अपने-आप एक फाँसी बना कर लटका दिया । जिस वक़्त उतकी लाश को फाँसी पर से उतारा में भी वहाँ जा पहुँचा । लड़के की लाश देख कर ग़श की नौबत आयी मगर चुप । अगर ज़रा उन लोगों को मालूम दो जाय कि यह उसका बाप-है; तो मुझे मी जीता न छोड़ें । एकाएक किसी ने उनसे कह दिया कि यह उसका बाप दहै। यह सुनते दी दस-पंद्रह आदमी चिपट गये और आग जला कर मुझसे कहा कि अपने छड़के की लाश को इसमें जला | भाई, जान बड़ी प्यारी होती है। इन्हीं द्वाथों से, जिनसे लड़के को पाला था, उसे आग में जला विया ।

अब दुसरे ल्डके का हाल सुनिए--त्रह्द रावलपिंडी में राह-राह चला जाता था कि एक आदमी ने, जो घोड़े पर सवार था, उसको चाबुक से हटाया | उसने झल्ला कर तलवार प्यान से खींची और उसके दो टुकड़े कर डाले । द्वाकिम ने फाँसी का हुक्म दिया । और आज का हाल तो आप छेगों ने खद ही देखा। इस लड़की के बाप ने करार किया था कि मेरे बेटे के साथ निकाह पढ़वावेगा । लड़के ने जब देखा कि यद्द दुसरे की बीबी बनी, तो आपे से बाहर हो गया !!

प्रियाँ आजाद और खोजी बढ़ी हसरत के साथ वहाँ से चले ।

खोजी--चलिए, अन् किसी दुकान २" अफ़ीम खरीद लें।

आज़ाद--अजी, भाड़ में गयी आपकी अफ़रीम। आपको अफ़ीम की पढ़ी हे, यहाँ मारे गम के खाना-पीना भूल गये ।

खोजी-- भई, रंज घड़ी दो घड़ी का है। यद्द मरना-जीना तो लगा दी रहता है।

दोनों आदमी बातें करते हुए जा रहे थे, तो क्या देखते हैं कि एक दूकान पर अफीम श्डाशड बिक रही है। खोजी की बाँछें खिल गयीं, मुरार्दे मिल गयीं। जाते ही एक चवन्नी दुकान पर फेंकी । अफ़ीम ली, लेते द्वी घोढी और घोलते ही गठ-गट पी गये ।

खोजी--अब आँखें खुलीं ।

आज्ञाद--यों नहीं कहते कि अब आँखें बंद हुईं !

खोजी- क्यों उस्ताद, जो हम दाकिम हो जायें, तो बड़ा मजा आये । मेरा कोई अफ़ीमची भाई किसी को क़त्ल भी कर आये, तो बेदाग छोड़ दूँ।

आज्ञाद--तो फिर निकाले भी जल्द जाइए ।

दोनों आदमी यही बातें करते हुए एक सराय में जा पहुँचे । देखा, एक बूढ़ा हिंदू जमीन पर बेठा चिल्म पी रहा है।

आजाद--राम-राम भई, राम-राम !

बूढा--सलाम साहब, सलाम । सुथना पहने हो और राम-राम कहते हो !

आजाद--भरे भाई, राम और खदा एक ही तो हैं। समझ का फेर है। कहाँ जाओगे !

बूढा- गाँव यहाँ से पाँच चौही है। पहर रात का घर से चलेन, नहावा, पूजन कीन, चबेना बाँधा ओर टंडे-टंडे चले आयन । आज कचहरी माँ एक तारीख हती । साँझ ले फिर चले जाब । जमींदारी माँ अब कचहरी धावे के सेघाय और का रहिगा !

आज़ाद--तो जमींदार हो ! कितने गाँव हैं तम्दारे !

बूटा- ऐ. हजूर, अब यो समझो, कोइ दुइ हजार खरच-बरच करके बच रहत हैं ।

आज़ाद ने दिल में सोचा कि दो इज़ार साल की आमदनी और बदन पर दंग के कपड़े तक नहीं ! गाढ़े की मिरक्षई पहने हुए. है; इसकी कंजूसी का भी ठिकाना है ! यह सोचते हुए, दूसरी तरफ़ चछे, तो देखा, एक कालीन बड़े तकल्लफ़ से बिछा है और एक साहब बड़े ठाट से बेंठे हुए हैं। जामदानी का कुरता, अद्धी का अँगरखा, तीन रुपये की सफ़ेद टोपी, दो-दाई सौ की जेबघड़ी, उसकी सोने की जंजीर गले में पड़ी हुईं । करीब ही चार-पॉच भले आदमी और बेठे हुए हैं और दोसेरा तंबाकू उड़ा रहे हैं । आडाद ने पूछा, तो प्तादूम हुआ, आप भी एक जमींदार हैं। पाँच-छह कोस पर एक कुसबे में मकान हे | कुछ 'सीर? भी द्वोती है। जमींदारी से सौ रुपए प्राहवार की बचत होती है ।

आज़ाद-- यहाँ किस ग्रज से आना हुआ | रईस--कुछ रुपये कर लेना था, मगर महाज़न दो रुपये सैकड़ा यूद माँगता है ।

मयाँ आज़ाद ने जमींदार साहब के मुंशी को इशारे से बुलाया, अलग ले जा कर यों बातें करने लगे--

आज़ाद--हज़रत, हमारे जरिये से रुपया लीजिए | दस हजार, बीस हज़ार, जितना कहिए; मगर जागीर कुक करा लेंगे और चार रुपये सैकड़ा सद लेंगे ।

मुंशी--वाह ! नेकी और पूछ-पूछ | अगर आप चौदह हज़ार भी दिला दें, तो बड़ा एद्सान हो | और, सद चाहे पाँच रुपए सैकढ़ा लीजिए तो कोई परवा नहीं | सद देने में तो हम आँधी हैं ।

आजाद--अस, मिल चुका । यह सद की कया बात-चीत है भला १ हम कहीं सद ढिया करते हैं ! मुनाफ़ा नहीं कहते !

मुंशी - अच्छा हुजूर, मुनाफ़ा सद्दी |

आज़ाद--अच्छा, यह बताओ कि जत्र सौ रुपये महीना बच रहता है, तो फिर चोदह हज़ार कल क्यों लेते हैं !

मुंशी--जनाब, आपसे तो कोई परदा नहीं । सौ पाते हैं, और पाँच सौ उड़ाते हैं। अच्छा जाना खाते हैं, बारीक और कीमती कपड़े पहनते हैं, यह सब्र आये कहाँ से ! बंक से लिया, महाजनों से लिया; सब चौदह्द हजार के पेटे में आ गये । अइ कोई टका नहीं देता ।

आज्जाद दिल में उस बूढ़े ठाकुर का इन रईस साहब से मुक़ाबिला करने लगे । यह भी जमींदार, यह भी जम्ींदार; उनकी आमदनी डेट सौ से ज़्यादा, इनकी मुश्किल से सो; वह गादे की 'घोती और गादे की

मिरजई पर खश हैं और यह शर बती और जामदानी फडकाते हैं| वह ढाई ततले का चमरोधा जूता पहनते हैं यहाँ पाँच रुपया की सलीमशाही जूतियाँ । वह पालक और चने की रोटियाँ खाते हैं ओर यहद्द दो वक़्त शीरमाल और मुर्रापुलाव पर हाथ छगाते हैं, बह टके ग़ज़ की चाल चलते हैं, यहाँ दवा के घोड़ों पर सवार। दोनों पर फटकार ! वह कंजूस और यह फ़ड़ूलखर्च । वद्द रुपये को दफ़ुन किये हुए, यद्द रपये लटाते फिरते हैं | वह खा नहीं सकते, तो यह बचा नहीं सकते |

शाम्र को दोनों आदमी रेल पर खबार हो कर पूना जा पहुँचे ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३३

रेल से उतर कर दोनों, आदमियों ने एक सराय में डेरा जमाया और शहर की सैर को निकले | यों तो यहाँ की सभी चीजें भडी मादूम होती थीं, लेकिन सबसे ज़्यादा जो बात उन्हें पसंद आयी, वह यह थी कि औरतें बिला चादर और घुँघट के सड़कों पर चलती-फिरती थीं । शरीफ़ज़ादियाँ बेहिजाब नक़ाब उठाये; मगर आँखों में हया और शर्म छिपी हुई ।

खोजी--क्यों मियाँ, यह तो कुछ अजब रस्म है ! ये औरतें मुँह खोले फिरती हैं । शर्म और दया सब भून खायी | वल्लाह, क्या आज़ादी है ! . आज़ाद--आप ख़ासे अहमक़ हैं। अरब में, अजम में अफगानिस्तान में, मिसर में, तुर्किस्तान में, कहीं भी परदा है ! परदा तो आँख का होता है ।.कहीं चादर हया सिखाती है ! जहाँ घूँघट काढ़ा, और नज़र पड़ने लगी ।

खोजी- अजी, मैं दुनिया की बात नहीं चलाता । हमारे यहाँ तो कद्दारियाँ और मालिनें तक परदा करती हैं, न कि शरीफ़ज़ादियाँ ही | एक क़दम तो बेपरदे के जाती नहीं ।

* आज़ाद--अरे मियाँ, नक़ाब को शर्म से क्या सरोकार ! आँख की हया से बढ कर कोई परदा द्वी नहीं; हमारे मुल्क में तो परदे का नाम नहीं; मगर हिंदुस्तान का तो बाबा आदम ही निराला है| .

खोज्जी-- आपफा मुल्क कोन १ जरा आपके मुल्क का नाम तो सुनूँ।

आजाद-- कशमीर । वही कशमीर जिसे शायरों ने दुनिया का फ़िरदौस माना है। वहाँ हिंदू-मुसलमान औरतें बुरक़ा ओद कर निकलती हैं; मगर यह नहीं कि औरतें घर के बाहर क्दम द्वी न रखें | यह रोग तो हिंदुस्तान ही में फैला है |! इम तो जब्र तुर्की से आयेंगे, तो यहीं बिस्तर जमायेंगे और हुस्नआरा को साथ ले कर थआज़ादी के साथ हवा खायेँगे।

खोजी--यार, बात तो अच्छी है, मगर मेरी बीबी तो इस लायक़ ही नहीं कि हवा खिलाने ले जाऊँ। कौन अपने ऊपर तालियाँ बजवाये ! फिर अन्न तो बूदी हुई और रंग भी ऐसा साफ़ नहीं ।

आज़ाद--तो इसमें शरम की कौन सी बात है ? आप उनके काले मुँह से झेपते क्यों हैं!

खोजी--जब ह्बश जाऊँगा, तो वहाँ हवा खिलाऊँगा | आप नई रोशनी के लोग हैं। आपकी हुस्नआरा आपसे भी बढ़ी हुईं, जो देखे फड़क जाय कि क्या चाँद-सूरब की जोड़ी है | ऐसी दक़्ल-सरत हो, तो हवा खिलाने में कोई मुजायक़ा नहीं। इम अब क्या जोश दिखायें; न वह उमंग है, न वह तरंग |

आज़ाद--हम कहते हैं, बुआ ज़ाफ़रान को ब्याह लो और एक टट्टूलेदो। बस, इसी तरह वह भी बाज़ारों में हवा खाये ।

खोजी--(कान पकड़ कर) या ख़ुदा, बचाइयों । पीच पी, हजार निआमत खायी | मारे चपतों के खोपड़ी गंजी कर दी थी | क्या वह भूल गया !

आजाद--यहाँ से बँबई भी तो क़रीब है ।

खोजौ--भरे ताजब | क्या जहाज पर बैठना होगा १ तो भई, मेरे लिए अफ़ीम लेदो।

पूने से बंचई तक दिन में कई गाड़ियाँ जाती थीं। दोनों आदमियों ने सराय में पहुँच कर खाना खाया और बंबई रवाना हुए । शाम हो गयी थी। एक होटल में जा कर ठहरे | आज़ाद तो दिन भर के थके हुए थे, लेय्ते ही खर्राटे लेने लगे। ल्ोजी अफ़ीमची आदमी, नींद कहाँ १ इसी फ़िक्र में बैठे हुए थे कि नींद को क्योंकर बुलाऊँ। इतने में क्या देखते हैं क्रि एक लंबी-तडंगी, पैंचहत्थी औरत चमकती-दम-कती चली भाती है। पूरे सात फुट का क़द, न जौ-भर कम, न जौ-मर ज़्यादा । धानी चादर ओदे, इठला-इठछा कर चलती हुई मियाँ खोजी के पास आ कर खड़ी हा गयी | खोजी ने उसकी तरफ़ नज़र डाली, तो उसने एक तीखी चितवन से उनको देखा और आगे चली । आपको शरारत जो सूझी तो सीटी बजाने लरो । सीटी की आवाज़ सुनते ही वह इनकी तरफ़ झक पड़ी और छम्ताछम करती हुई कमरे में चली आयी । अब मियाँ खोजी के हवास पैतरे हुए कि अगर आज़ाद की आँख खुल गयी, तो ले ही डालेंगे; और जो कहीं रीक्ष गये, तो हमारी खैरियत नहीं | हम बस, नीबू और नोन चाट कर रद्द जायँगे । इशारे से कदह्ा--जरी आहिस्ता बोलो |

औरत--भरे वाद्द मियोँ ! अच्छे मिले ।

वोजी--मियाँ आजाद सोये हुए हैं ।

औरत--इनका बडा लिदाज़ करते द्वो; क्या बाप हैं तुम्हारे !

खोजी-- ख़दा के वास्ते चुप भी रहो ।

औरत- चलो, हम-तुम दूसरी कोठरी में चल कर बैठें ।

दोनों पास की एक कोठरी में जा बेठे । औरत ने अपना नाम केसर बतलाया और बोली--अल्लाह जानता है, तुम पर मेरी जान जाती है। खदा की क़सम, क्या हाथ-पाँव पाये हैं कि जी चाहता है, चूम दूँ । मगर दादी मुडवा डालो ।

खोजी--(अकड़ कर) अभी क्या, जवानी में देखना हमको !

क्या खूब अभी जवानी शायद आनेवालडी है। कुछ ऊपर पचास का सिन हुआ, और आप अभी लड़के ही बने हुए. हैं। उस औरत ने आपको . उँगलियों पर नचाना शुरू किया, लेकिन आप समझे कि सक्तुच रीक्ष ही गयी और भी घफलने लगे।

औरत--डील-डौल कितना प्यारा है कि जी ख़श हो गया । मगर दादी मुड्वा डालो ।

खोजी---अगर मैं कसरत करूँ, तो अच्छे-अच्छे पहलवानों को छड़ा हूँ ।

औरत-ज़रा कान तो फटफटा छो, शाब्राश |

खोजी--एक बात कहूँ, बुरा तो न मानोगी !

औरत--बुरा मारनूँगी, तो ज़रा खोपड़ी सहला दूँगी

खोजी--जाँबरूशी करो, तो कहूँ ।

औरत--(चपत लगा कर) क्या कद्दता है, कद्द ।

खोजी -भई, यह धौल-धप्पा शरीफ़ों में जायज नहीं ।

औरत -तुझ्न मुए को कौन निगोड़ी शरीफ़ समझती है ।

एक चपत और पड़ी | खोजी ने त्योरियाँ बदछ कर कहा--भई, आदत मुझे पसंद नहीं । मुझे भी ग़स्सा आ जायगा ।

औरत--आँखें क्या नीली-पीली करता है ! फोड़ दूँ दोनों आँख !

खोजी-- अब दमारा मतलब तो इस झंझट में खब्त हुआ जाता है। अब तो बताओ, कुछ माँगे, तो दोगी !

औरत--हाँ, क्यों नहीं, एक लप्पड़ इधर और दूसरा उधर | क्या माँगते हो !

खोजी--कहना यह है कि ...मगर कहते हुए दिल काँपता है |

औरत-- अब में तुमको ठीक न बनाऊँ कही १

खोजी--तुम्दारे साथ ब्याह करने को जी चाहता है ।

ओऔरत- ऐ., अभी तुम बचे हो। दूध के दाँत तक तो टूटे नह्दीं। ब्याह क्या करोगे भला !

खोजी--वाइ-वाइ ! मेरे दो बच्चे खेलते हैं। अमी तक इनके गज्दीक लीडि ही हेंदम।

औरत--अच्छा, कुछ कमाई-वमाई तो निकाल और दादी मुढवा ।

खोजी--(दस रुपये दे कर) लो, यह हाज़िर है |

औरत--देखँ । ऊँदद, दवाथी के मुँद्द में जीरा !

खोजी-- लो, यह्द पाँच और लो | अजी, मैं तुमको बेगम बना कर रखूँगा ।

औरत-- अच्छा, एक शर्त से शादी करूँगी | तड़के हर से स्ये स्गत बार सलाम करना और मैं सात चपतें लगा ऊँगी ।

खोजी--अजी, बल्कि और दस |

औरत--अच्छा, इसी बात पर कुछ और निकालो।

खोजी- छो, यह पाँच और लो। तुम्हारे दम के लिए सत्र कुछ हाजिर है।

औरत ने झठ से मियोँ खोजी को गोद में उठा लिया ओर बगल में दबा कर ले चली, तो खोजी बहुत चकराये | छाख हाथ-पाँव मारे, मगर उसने जो दबाया, तो इस तरह ले चली, जैसे कोई चिड़ीमार जानवरों को फड़फड़ाते हुए ले चले। अब सारा जमाना देख रहा है कि खोजी फडकते हुए जाते हैं और वह औरत छम-छम करती चली जाती है |

खोजी-- अभ्च छोड़ती है, या नहीं १

औरत--अब उम्र-भर तो छोड़ने का नाम न दैंगी। हम भलेमानसों की बहू-बेटियाँ छोड़ देना क्या जाने । बस, एक के सिर हो रहीं। भागे कहाँ जाते हो मियां ।

स्वोजी--मैं कुछ क्रेदी हूँ !

औरत--(चपत लगा कर) और नहीं, कौन है तू ! अब में कहद्दीं जाने भी हँगी !

खोजी पीछे इटने लगे, तो उसने पट्टे पकड़ कर स्वूब बेभाव की लगायी | अब यह झल्लाये और गुल मचाया कि कोई है १ लाना क़रौली १ बहुत से तमाशाई खड़े हँस रहे थे ।

एक--क्या है मियाँ ! यह धर पकड़ केसी !

औरत--आप कोई काज़ी हैं १ यह दमारे मिर्यों हैं; हम चाहे चपतियायें चादे पीटें | किसी को क्या !

दुसरा--मेहरारू गर्दन दाबे उठाये लिये जात है, वद्द करौली निकारत है।

खोजी---बुरे फँसे | यारो, जरा मिर्यों आज़ाद को सराय से बुलाना ।

औरत ने फिर खोजी को गोद में उठाया और मशक की तरह पीठ पर रख कर पसक दरियाव, ठंडा पानी? कद्दती हुई ले चली |

एक आदमी--कैसे मर्द हो जी ! औरत से जीत नहीं पाते ! बस, इजत डुत्रो दी त्रिलकुल ।

खोजी--अजी, इस औरत पर शेत्तन की फटकार | यह तो मरदों के कान काटती है ।

इतने में मियाँ आज़ाद की नींद खुली, तो खोजी ग़ायत्र|। बाहर निकले, तो देखा खोजी को एक औरत दबाये खड़ी है । छलकार कर कद्दा--तू कोन है ! उन्हें छोड़ती क्यों नहीं !

औरत ने स्लोजी को छोड़ दिया और सलाम करके बोली--हुजर, मेरा इनाम हुआ | में बहुरुपिया हूँ ।

दूसरे दिन खोजी मियाँ आज़ाद के साथ शहर की सैर करने चले, तो शहर मर के लोडि-लद्दाड़िये साथ, पीछे-पीछे तालियाँ बजाते जाते हैं । एक बोला--कहो चड़ा, बीती ने चाँद गंजी कर दी न ! हत् तेरे को | दुसरा बोला--ऋद्दो उस्ताद, खोपड़ी का क्या रंग हे !

बेचारे खोजी को रास्ता चलना मुश्किल हो गया | दो-चार आदमियों ने बहु-रुपिये की तारीफ़ की, तो खोजी जरू-भुन कर खाक़ द्वो गये । अब किसी से न बोलते हैं, न चालते | दुम दबाये, डग बढ़ाये, गर्दन, भ्वुकाये पत्तातोड़ भाग रहे हैं। बारे ख़दा-ख़दा करके दोपहर को फिर सराय में आये | नी की ठंडी-ठंडी छाँह में लेट गये, तो एक भठियारी ने मुसकिरा के कद्दा--गाज पड़े ऐसी औरत पर, जो मिर्यों को गोद में उठाये और बाज़ार भर में नचाये । ग़रज़ सराय की भडठियारियों ने खोजी को ऐसा उँगलियों पर नचाया कि ख़दा की पनाह ! ऐसे झेंपे कि करौली तक भूल गये |

इतने में क्या देखते हैं कि एक ल्म्बे डील-डोल का खूबसूरत जवान तमंचा

श्दद कमर से लगाये, ऊदी पगड़ी सिर पर जमाये, बाँकी-तिर्छी छवि दिखाता हुआ अक-इता चला आता है। मठियारियाँ छिप-छिप के झाँकने लगीं। समझी कि मुसाफिर, है, बोलीं--मियाँ, इधर आओ, यहाँ बिस्तर जमाओं। मिर्यों मुसाफिर, देखो, केसा साफ-सुयरा मकान है ! पकरिया की ठंडी-ठंडी छाँद है, ज़रा तो तकलीफ़ द्वोगी नहीं । सिपाही चोला--हमें बाजार से कुछ सौदा खरीदना है। कोई इमारे साथ चले, तो सौदा खरीद कर हम आ जायें । एक भठियारी बोली--चलिए, हम चलते हैं | दूसरी बोली-- लौंडी हाजिर है। सिपाही ने कहा--मैं किसी परायी औरत को नहीं ले जाना चाहता । कोई पढ़ा-लिखा मर्द चले, तो पाँच रुपये दें | मिर्यों खोजी के कान में जो भनक पड़ी, तो कुल्बुला कर उठ बैठे और कद्दा--में चलता हूँ, मगर

पाँचों नक़द गिनवा दीजिए । मैं अल्सेट से डरता हूँ । सिपाही ने झट से पाँचों गिन दिये | रुपये तो खोजी ने टेंट में रखे और सिपाही के साथ चले । रास्ते में जो इन्हें देखता है, करहक़रद्ा लगाता है--बचा की खोपड़ो जानती द्वोगी, छठी का दूध याद आ गया होगा | जब चारों ओर से बौछारें पढ़ने लगीं तो स्त्रोजी बहुत द्वी झछाये और गुल मचा कर एक-एक को डॉटने छंगे । चलते-चलते एक अक्रीम की दुकान पर पहुँचे ।

सिपाही--कद्दो भई जदान, है शोक ! पिलवाऊँ !

खोजी--अजी, में तो इस पर आशिक हूँ ।

सिपादी ने मियोँ खोजी को खुन्न अफ़ीम पिछायी | जब खूब सरूर रैंठे तो सिपाददी ने उनको साथ लिया औंर चला। बातें होने लगीं। खोजी शेले--भई, अफ़ीम पिलायी है, तो मिठाई भी खिलवाओ । एद्सान करे, तो पूरा ।

सिपाहदी--अजी, अभी लो। ये चार गंडे की पैंचमेल मिठाई इल्वाई की दुकान से लाओ | ;

हलवाई की दुकान से खोजो ने लड़-लडड के खूब मिठाई ली और झमते हुए चले । भूख के मारे रास्ते द्वी में डलियाँ निकाल कर चखनी शुरू कर दीं। सिपाही कनखियों से देखता जाता था; मगर आँख चुरा लेता था। आखिर दोनों आदमी एक बजाज़ की दुकान पर पहुँचे । सिपाही ने खोजी की तरफ़ इशारा करके कहा-- इनके अँगरखे के बराबर जामदानी निकाल दीजिए |

बजाज- हुजूर, अपने ठोंगरले के लिए लें, तो कुछ हमें भी मिल रहे । इनका तो अंगरखा और पाजामा सब राज़ भर में तैयार है।

खोजी--निकालो, जामदानी निकाछो । बहुत बातें न बनाओ | अभी एक धक्का दूँ, तो पचास लुद्कनियाँ खाओ ।

बजाज--लीजिए, क्या जामदानी है। बहुत बढ़िया ! मोल-तोल दस रुपये गज । मगर सात रुपये राज़ से कौड़ी कम न होगी ।

सिपाही--भमई, हम तो पाँच रुपये के दाम देंगे।

पढ़ाज--अब तकरार कौन करे । आप छह के दाम दे दें। .

तिपाही -- अच्छा, दो राज उतार दो ।

सिपाही ने बज़ाज से सत्र मिला कर कोई पचीस रुपये का कपड़ा लिया और गद्ठा बॉध कर उठ खड़ा हुआ |

बजाज --रुपये !

सिपाही--अमी घर से आकर देंगे ! ज़रा कपड़े पसंद तो करा लायें। यह हमारा साला बैठा है, हम अभी आये |

वह तो ले-दे कर चल दिया । ख़ोजी अकेले रह गये । जत्न बहुत देर हो गयी, तो बज़ाज़ ने गर्दन नापी--कहाँ चले आप | कहाँ, चले कहाँ!

खोजी---हम क्या किसी के गुलाम हैं !

बजाज--गुलाम नहीं हो तो और द्वो कोन ! तुम्हारे बहनोई तुमको बिठा कर कपडा ले गये हैं।

खोजी पीनक से चोंके थे । सिपाई और बजाज में जब बातें हो रही थीं तब्र वह पीनक में थे | झला कर बोले--अबे किसका बहनोई ! और कौन साछा ! कुछ वाही हुआ है !

इतने में एक आदमी ने आ कर खोजी से कहा---तुम्हारे बहनोई तुम्हें यह खत दे गये हैं| खोजी ने खोल कर पढ़ा तो लिखा था---

'हत् तेरे की, क्यों ! खा गया न झाँसा ? देख, अबकी फिर फाँसा । तत्र की ब्रीत्री बनके चपतियाया, अत्र की बद्दनोई बनके झाँसा दिया ! और भफ़ीम खाओगे ?!

खोजी अरे !? करके रह गये। वाह रे बहुरुपिये, अच्छा पनचक्कर बनाया । खेर, और तो जो हुआ, वद्द हुआ, अब यहाँ से छुटकारा कैसे हो | बजाज इस दम टुटरूँ टू, और करौली पास नहीं। मगर एक दफ़े रोब जमाने की ठानी । दुकान के नीचे उतर कर बोले--इस फेर में भी न रहना । मैंने बड़े-बड़ों की गदमें टीली कः - हैं |

बजाज--यह रोत्र किसी और पर जमाहएगा | जब्न तक आप के बहनोई ने आयेंगे, दूकान से हिलने न दूँगा ।

बारे थोड़ी ही देर में एक आदमी ने आ कर बज़्ाज़ को पचीस रुपये दिये और कहा--अन्न इनको छोड़ दीजिए ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३४

इधर तो ये बातें हो रद्दी थीं, उघर आज़ाद से एक आदमी ने आकर कहां-- जनाब, आज मेला देखने न चलिएगा १ वह-वह यूरतें देखने में आती हैं कि देखता ही रह जाय । नाज़ से पार्यंचे उठाये हुए, शर्म से जिस्म को चुराये हुए ! नशए-बादए शत्राव से चूर, चाल मस्ताना, हुस्न पर मग़रूर । सैकड़ों बल कमर को देती हुई, जाने ताऊस कब्क लेती हुई ।

“चलिए और प्रियाँ खोड्ी को साथ लीजिए । आज़ाद रैंगीले थे ही, चट तैयार हो गये । सज धज कर अकड़ते हुए चले । कोई पचास कदम चले होंगे कि एक झरोखे से आवःश आयी --

खदा जाने यह आराइश करेगी क़त्छ किस-किसको; तलब होता है शानः आइने को याद करते हैं।

मियाँ आजाद ने जो ऊपर नज़र की, तो झरोले का दरवाज़ा खोजी की आँख की तरह बंद दो गया। आज्ञाद हेरान कि खुदा, यह माजरा क्या है! यह जादू था, छलावा था, आखिर था क्या १ आज़ाद के साथी ने यह रंग देखा, तो आहिस्ते से कहा--हजरत, इस फेर में मं पड़िएगा |

इतने में देखा कि वह नाजनीन फिर नक्ाय उठाये झरोखे पर आ खड़ी हुई और अपनी महरी से बोली--फीनस तैयार कराओ, हम मेले जायँगे । आज़ाद कुछ कहनेवाले ही थे कि ऊपर से एक काराज़ नीचे आया । आज़ाद ने दौड़ कर उठाया, तो मोटे कल्म से छिखा था-- 'दिलूगी करती हैं परियाँ मेरे दीवाने से? । आज्ञाद पढ़ते ही उछछ पड़े | यद्द शेर पढा-- हम ऐसे दो गये अल्लाहो-अकबर ! ऐ. तेरी कुदरत; हमारे नाम से अब हाथ वह कानों पे घरते हैं /? इतने में एक महरी अंदर से आयी और मुसकिरा कर मियाँ आज़ाद को इशारे से बुलाया | आज़ाद खुश-खूश मद्दताबी पर पहुँचे, तो दिल बारा बाग़ हो गया । देखा, एक हसीना बड़े टाट-बाट से एक कुर्सो परबैठी है| मियाँ आज़ाद को कुसों पर बैठने का इशारा किया और बोली-मालूम होता है, आप चोट खाये हैं; किसी के जुब्फ़ में दिल फैंसा है-- खुलते हैं कुछ इश्तियाक्र के तौर; रुख मेरी तरफ़, नज़र कहीं और । आकबाद ने देखा तो इस नाजनीन की शक़्छ व दूरत हुस्तआरा से मिलती थी |

वही सूरत, वही गुलाब सा चेहरा ! वही नशीछी ओंर्खे ! बाल बराबर भी फ़र्के नहीं। बोले--बरसों इस कचे की सैर की; मगर अब दिल फँसा चुके ।

हसीना--तो ब्रिसमिल्लाह, जाइए ।

आजाद--जैसी हुजुर की मरज़ी ।

हसीना- बाह री, बददिमागी | कहिए, तो आपका कच्चा चिद्ठा कद्द चर्दे ! मियाँ आजाद आप ही का नाम है न! हुस्नआरा से आप द्वी की शादी होनेबाली हैन!

आजाद--ये बातें आपको कैसे माद्म हुई !

इसीना--क्यों, क्या पते की कही | अब बता ही दूं! हुस्नआरा मेरी छोटी चचाजाद बहन है। कमी-कभी

ख़त आ जाता है। उसने आपकी तसवीर भेजी हे और लिखा है कि उन्हें बंबई में रोक लेना । अब आप हमारे यहाँ ठहर । मैं आपको आजमाती थी कि देखे, कितने पानी में हैं। अब मुझे यक्लीन आ गया कि हुस्नआरा से आपको सच्ची मुहब्बत है |

आजाद-- तो फिर मैं यहीं उठ आरँ !

हसीना--जरूर ।

आजाद--शायद आपके घर में किसी को नागवार गुजरे !

हसीना--वाह, आप खूब जानते हैं कि कोई शरीफ़जादी किसी अजनबी आदमी को इस तरद्द बेघड़क अपने यहाँ न बुलायेगी । क्या मैं नहीं जानती कि तुम्हारे भाई साइब किसी गेर आदमी को बैठे देखेंगे, तो उनकी आँखों से खून ट्पकने लगेगा ! मगर वह तो खुद इस वक़्त तुम्हारी तलाश में निकले हैं | बहुत देर से गये हुए हैं, आते ही होंगे। अब आप मेरे आदमी को भेज दीनिए । आपका असबाब ले आये |

आजाद ने खोजी के नाम यह रुका लिखा-- ख्वाजा साहब,

असबाब ले कर इस आदमी के साथ चले आइए । यहाँ इत्तिफ़ाक से हुस्नआरा की बहन मिल गर्यी । यार, हम-तुम दोनों है क्रिस््मत के धनी । यहाँ अफ़रीम की दूकान

भी करीब दी है | तुम्हारा

आज़ाद 7

HINDI TEXT

प्रसंग ३५

खोजी ने दिल में ठान ली कि अब जो आयेगा, उसको खब गौर से देखूँगा अब की चकमा चल जाय, तो टॉग की राह निकल जाऊँ। दो दफ़े क्या जानें, क्या बात हो गयी कि वह चकमा दे गया। उड़ती चिढ़िया पकड़नेवाले हैं। हम भी अगर यहाँ रहते होते, तो उस मरदूद बहुरुपिये को चचा द्वी बना कर छोड़ते

इतने में सामने एकाएक एक घसियारा धास का गद्ठा सिर पर लादे, पसीने में तर आ खड़ा हुआ ओर खोजी से बोछा--हुजुर, घास तो नहीं चाहिए !

खोज: --(खनत्र ग़ोर से देख कर) चछ, अपना काम कर | हमें घास-वास कुछ नहीं चाहिए | घास कोई ओर खाते होंगे ।

घसियारा--ले लीजिए हुजूर, इरी हरी दूब हे ।

सखोजी--चल बे चछ, हम पहचान गये । हमसे बहुत चकमेबाज़ी न करना बचा । अब 4. पलेथन द्टी निकाल डार्दंगा | तेरे बहरुपिये की दुम में रस्सा |

इत्तिफ़ाक से घसियारा बहरा था। वद् समझा, बुलाते हैं। इनकी तरफ़ आने लगा । तब तो मिर्यों खोजी ग़स्सा जन्त न कर सके और चिल्ला उठे--ओ गीदी नस, आगे न बढ़ना; नहीं तो सिर धघड़ से जुदा होगा । यह कह कर लपके और गद्टठा पकड़ कर चाहा कि घसियारे को चपत ल्गावें । उसने जो छुड़ाने के लिए ज़ोर किया, तो प्रियाँ खोजी मुँह के बल जमीन पर आ रहे और गद्ठा उनके ऊपर गिर पड़ा। तब आप गट्ठे के नीचे से गुरोने लगे--अबे ओ गीदी, इतनी क़रौलियाँ मोंकूँगा कि छठी का दूध याद आ जायगा । बदमाश ने नाकों दम कर दिया। बारे बड़ी मुश्किल से आप गट्ठे के नीचे से निकले और मुँह फुलाये बेठे थे कि आजाद का आदमी आ कर बोला-चलिए, आपको प्रियाँ आज़ाद ने बुलाया है ।

स्तोज्ी--किससे कहता है ! कंबझत अब की सैदेसिया बन कर आया | तब की घसियारा बना था । पहले औरत का भेस बटछा | फिर सिपाही बना | चल, माग ।

आदमी--दक्का तो पट लीजिए. ।

खो>--मैं जलती-बलतं। लकड़ी से दाग दूँगा, समझे १ मुझे कोई लौड़ा मुक़रेर किया है * रेरे जैसे बहुरुपिये यहाँ जेब में पड़े रहते हैं ।

आदर ने जा कर आज़ाद से सारा हाल कहा--हुज्र, वह तो कुछ झल्लाये से मादूम होते हूँ | मैं लाख-छाख कट्दा किया, उन्होंने एक तो सुनी नहीं । बस, दूर ही दूर से गुराते रहे ।

आज़ाद--खत का जबाब लाये ?

आदमी--नारीर (वर, कहता जाता हूँ कि करीब फटकने तो दिया नहीं जवाब किससे काता ' ये बातें हो दी रही थीं कि उस हसीना के शौहर आ पहुँचे और कहने छगे--- शहर भर घुम आया, सेकडों चक्कर

लगाये, मगर मियाँ आज़ाद का कहीं पता न चला । सराय में गया, तो वहाँ खबर मिली कि आये हैं | एक साहब बैठे हुए थे, उनसे एका तो बड़ी दिलगी हुई । ज्यों ही मैं करी गया, तो वह कुलबुछा कर उठ खड़े हुए-- कौन १ आप कौन ! मैंने कहा--यहाँ मियाँ आजाद नामी कोई साहब तशरीफ़ लाये हैं ! बोले--फिर आपसे वास्ता ! मैंने कहा --साहब, आप तो काटे खाते हैं | तो मुझे

ग़ौर से देख कर बोले --इस बहुरुषिये ने तो मेरी नाक में दम कर दिया । आज मले-मानस की सूरत बना कर आये हैं।

बेगम--जरी ऊपर आओ देखो, हमने मियाँ आज़ाद को घर बैठे बुलवा छिया। न कहोगे।

आज़ाद--आदात्र बजा लाता हूँ।

मिरजा--हजरत, आपको देखने के लिए आँखें तरसती थीं |

आज़ाद- -मेरी वजह से आपको बड़ी तकलीफ़ हुई ।

मिरज़ञा--जनाब, इसका जिक्र न कीनिए। आपसे मिलने की मुद्दत से तमन्ना थी।

उधर मियाँ खोजी अपने दिल में सोचे कि बहुरुपिये को कोई ऐसा चमका देना चाहिए कि वह भी उम्र भर याद करे। कई घंटे तक इसी फ़िक्र में ग़ोते खाते रहे । इतने में मिरज़ा साइब का आदमी फिर आया । खोजी ने उससे ख़त ले कर पढ़ा, तो लिखा या--आप इस आदमी के साथ चले आइए, वनों बहुरुपिया आपको फिर घोखा देगा | माई, कहा मानों, जल्द आओ | खोजी ने आज़ाद की लिखावट पहचानी, तो असबाब वगेरह समेट कर खिदमतगार के सिपुर्द किया और कद्दा--तू जा, हम थोड़ी देर में आते हैं। खिदमतगार तो असबाब ले कर उघर चला, इधर आप बहुरुपिये के मकान का पता पूछते हुए जा पहुँचे | इततिफ़ाक से बहुरुपिया घर में न था, और उसकी बीती अपने मेके भेजने के लिए कपड़ों का एक पासेल दयना रही थी। तीस रुपये की एक गड्डी भी उसमें रख दी थी । पासेल तैयार द्वो चुका, तो छौंडी से बोली-- देख, कोई पढा-लिखा आदमी इधर से निकले, तो इस पासेल पर पता लिखवा छेना। लौंडी राद्द देख रही थी कि मियाँ खोबी जा निकले |

स्वोजी--क्यों नेकबरूत, ज़रा पानी पिला दोगी !

लौंडी यद्द सुनते द्वी फूल गयी | खोजी की बड़ी खातिरदारी की, पान खिलाया, हुका पिलाया और अंदर से पार्सल ला कर बोली--मियाँ, इस पर पता तो लिख दो |

खोजी--अच्छा, लिख दूँगा । कहाँ जायगा १ किसके नाम है ! कौन भेजता है !

लोंडी--मैं बीन्री से सब हाल पूछ आऊँ, बतलाऊँ |

खोजी--अच्छी बात है, जल्द आना ।

क्ोंडी दोड कर पूछ आयी और पता-ठिकाना बताने लगी ।

खोज़ी चकक्मा देने तो गये ही ये, झट पासल पर अपना लखनऊ व! गठ' लिख दिया और अपनी राद छी। छोंडी ने फ़ौरन डाकख़ाने में पास दिया और रजिश्ट्री कराके चलती हुईं । थोड़ी देर के बाद बहुरुपिया जो घर में घुसा, तो बीबी मे कहा--तुम भी बड़े भुलकड़ हो। पाल पर पता तो लिखा ही न था। इमने लिखवा

कर भेज दिया |

बहुरुपिया-देखूँ , रसीद कहाँ है ! (रसीद पढ़ कर) ओफ़ ! मार डाला । बस,

ख़ज़न ही हो गया । बीबी--सेर तो है ! बहुरुपिया--तुमसे क्या बताऊँ ! यह वहीं मद है, जिससे मैंने कई रुपये ऐंटे

थे। बड़ा चकमा दिया |

HINDI TEXT

प्रसंग ३६

पियाँ आजाद मिरजा साइब के साथ जहाज़ की फ़िक्र में गये। इधर खोजी ने अफ़ीम की चुस्की लगायी और परलेंग पर दराज़ हुए। जैनब लॉडी जो बाहर आयी, तो इज़रत को पीनक में देख कर खूब खिलखिलायी और बेगम से जाकर बोली-- बीबी, जरी परदे के पास आइए, तो छोट-लोट जाइए। मुआ खोजी अफ़ीम खाये आंधि मुँह पड़ा हुआ है। जरी आइए तो सद्दी | बेगम ने परदे के पास से झाँका,' तो उनको एक दिलगी सूझी । झप से एक बत्ती बनायी और जैनब से कहा कि ले, चुपके से इनकी नाक में बत्ती कर | जैनब एक ही दारीर; विस की गाँठ । वह जो करे बत्ती में तीता मिचे लगा लायी और खोजी की खटिया के नीचे घुस कर मिर्यों खोज्ी की नाक में आधी बत्ती दाखिल ही तो कर दी । उफ़ | इस वक़्त मारे हँसी के लिखा नहीं ताता । खोजी जो कुछ बुला कर उठे, तो आःछीं, छींछीं, ओ गेद--अःछीः । ओ गौदी कहने को थे कि छोंक आ गयी, और बिगड़े । ओ ना--भाछ । ओ नामा-कूछ कहने को थे कि छींक ने जब्ान बंद कर दी। इत्तिफ़राक़ से पड़ोस में एक पुराने फैशन के मले आदमी नौकरी की तलाश में एक द्वाकिम के पास जानेवाले थे । वह जैसे ही सामने आये, वैसे ही खोजी ने छोंका । वेचारे अंदर चले गये। पान खाया, जरा देर इधर-उधर टहले । फिर ड्योदी तक पहुँचे कि छींक पड़ी । फिर अंदर गये । चिकनी डली खायी। रवाना होने ही को ये कि इधर आःछीं की आवाज़ आयी और उधर बीजी ने लौंडी दौड़ायी कि चलिए, अंदर बुलाती हैं । अंदर जाके उन्होंने जूते बदले, पानी पिया और रुख्सत हुए.। बाहर आ कर इक्के पर बैटने दी को थे कि खोजी ने नाक की दुनाली बंदूक से एक और फैर दाग़ दी। तब तो बहुत द्दी झलाये । हृत् तेरी नाक काहूँ और पाऊँ तो कान भी राफ़ कतर ढूँ। मर्दक ने प्िचों की नास ली है क्या ! नाक क्या नकंछींकनी की झाड़ी है। मनहूस ने घर से निकलना मुश्किल कर दिया । बोषी अंदर से बोली कि नाक ही कटे मुए की । ज़री जैनत्र को बुला कर पूछो तो कि यह किस नकटे को बसाया है! अल्लाह करे, गधे की सवारी नसीत्र दो ।

म्रियाँ-बीब्री पानी पी-पी कर बेचारे को कोस रहे ये । उधर खोजी का छो कते-छींकते हुलिया बिगड़ रहा था | बेगम साहवा घर के अंदर हँसी के मारे लोटी पड़ती थीं। मगर वाह री जैनत्र ! बह दम साथे अब तक चार्पाई के नीचे दबकी पड़ी थी । मगर मारे हँसी के बुग हाल था। जब छींकों का जोर जरा कमर हुआ, तो उन्होंने गुल मचाया, ओ गीदी, भला वे बहुरुपिये, निकाली न कसर तूने ! अच्छा बचा, चतचा ही बना कर छोड़ें तो सही । चारपाई से उठे, मंद हाथ घोया ।! टठंडे-टंडे पानी से खूब तरेड़े दिये; खोपड़ी पर खूब पानी डाआ, तभ जरा तसकीन हुई । बैठ कर अहु-रुपिये को कोसने लगे---खदा करे, साप काटे मरदूद को। न जाने मेरे साथ क्या ज़िद पड़ गयी है। कल तेरे छप्पर पर चिनगारी न रख दी, तो कहना ।

यों कोसते हुए उन्होंने सब दरवाज़े बंद कर लिये कि बहुरुपिया फिरन आ जाय । अब तो जैनब चकरायी । कलेजा धक-धक करने लगा ओर क्रीत्र था कि चीख कर निकल मागे, मगर जब मिर्यों खोजी चारपाई

पर दराज़ दो गये और नाक पर हाथ रख लिया, तो जे न की जान में जान आयी। चुपके से खिसकती हुई निकली और अंदर भागी |

बेगम--जाओ, फिर नाक में बत्ती करो।

' जेनब --ना बीबी, अब मैं नहीं जाने की | सिड़ी-सौदाई आदमी के मुंह कौन लगे।

जैनब का देवर दस बरस का छोकड़ा बड़ा ही शरीर था। नस-नस में शरारत भरी हुई थी। कमरे में जाके झाँका, तो देखा, इज़रत पीनक ले रहे हैं। कुत्ता घर में बैंधा था। झट उसको जैजीर से खोल जंजीर में रस्सी बाँधी और बाहर ले जा कर चारपाई के पाये में कुत्ते को बाँध दिया । खोजी की टाँग में भी वही रस्सी बाँध दी और चंपत द्वो गया। कुत्ते ने जो भूँकना शुरू किया, तो खोजी चौंक कर उठे । देखते हैं तो टाँग में रस्सी और रस्सी में कुत्ता। अन्न इधर खोजी चिल्लाते हैं, उधर कुत्ता चिल्लपों मचाता है । जेनब्र दौड़ी हुई घर में से भायी। खेर तो है! क्या हुआ ! भरे, तुम्दारी टाँग में कुत्ता कौन बाँध गया!

खोजी--यह उसी बहुरुपिये मर्दक का काम है, किसी और को क्या पड़ी थी !

जेनब--मगर, मुआ आया किधर से ! किवाड़े तो सब बंद पड़े हुए हैं ।

सोड्ी-यही तो मुझे भी हैरत है। मगर अब की मेने भी नाक पर इस ज़ोर से हाथ रखा कि बहुरुपिया भी मेरा लोद्दा मान गया होगा। मगर यह तो सोचो कि

आंया किस तरफ़ से जैनब--मिर्यों, कहते डर माल्म होता है। इस जगह एक शेतान रद्दता है |

खोजी--शैतान ! अजी नहीं, यद्द उस बहुरुपिये ही का काम है ।

जैनब--अत्र तुम यों योड़े द्वी मानोगे । एक दिन शैतान चारपाई उलट देगा, तो मादम होगा |

खोजी--यद बात थी, तो अब तक हमसे क्यों न कद्दा भरा ! जान लछोगी किसी की १

जैनब-में भी कहूँ कि बंद दरवाज़े से कुत्ता आया कैसे ! मेरा माथा ढनका था, मुदा बोली नहीं |

खोजी --अब आज़ाद आर्ये, तो उनको आड़े हाथों ढूँ। वह भूत चुड़ेंढ एक के भी कायल नहीं | सोयें तो मालमं हो ।

खोजी तो इसी फ़िक्र में बैठे बैठे पीनक लेने छगे । आज़ाद और मिरजा साहब भाये. वो उन्हें ऊँपते देख कर दोनों हँस पड़े ।

आजद--(खोजी के कान में) क्या पहुँच गये !

खोजी ने हाँक लगायी--बहुरुपिया, बहुरुपिया', और इस ज़ोर से आज़ाद का हाथ पकड़ लिया कि अपने हिसाब चोर को गिरफ़्तार किया था । आँखें तो इज़रत की बंद हैं, मगर बहुरुपिया बहुरुपिया गुर मचाते जाते हैं। मिर्यों आज़ाद गे इस जोर से झटका दिया कि हाथ छूट गया और खोजी फट से मुँह के बल जमीन पर आ रहे । आज़ाद ने गुल मचाया कि भागा, भागा, वह बहुरुपिया भागा जाता है | खोजी भी 'लेना-लेना? कहते हुए छपके । दस ही पाँच क्रम चल कर आप हाफ गये और बोले--'निकल गया, निकल गया ।' मैंने तो गर्दन नापी थी, मगर नाली बीच में आ गयी इससे बच गया, वनों पकड़ ही लेता । हर आज़ाद--अजी, मैं तो देख ही रहा था कि आप बहुरुपिये के कल्ले तक पहुँच गये थे ।

इतने में एक क़ाज़ी साहब मिरयाँ आज़ाद से मिलने आये। आज़ाद ने नाम पूछा, तो बोले---अब्दुल कुद्दूस ।

खोजी--ब्ज़ा ! उस्तु खुदूदूस | यह नयी गढ़त का नाम है ।

आज़ार-- गिद्वायत गुस्ताख आदमी हो ठुम | बस, चोंच सैंमालो |

खोजी की आँखें बंद थीं। जब आज़ाद,ने डॉट बतायी तो आपने आँखें खोल दीं। क्राज़ी साहब पर नज़र पड़ी । देखते ही आग हो गये और बकने छगे--और देरिलएगा जरी, मरदूद आज मौलाना बन फैर आया है। भई, गिरगिट के से रंग बदलता है। उस दिन घसियारा बना था; आज मौलवी बन बैठा !

काजी साहब बहुत झेपे । मगर आज़ाद ने कहा कि जनाब, यह दीवाना है| यों ही ऊल जलूल बका करता है।

जब क्राज़ी साहब चले गये, तब आज़ाद ने खोजी को खूब ललकारा--नामा-कुल ! बिना देखे-माले, बेसमझे-बूझे, जो चाहता है, बक देता है। कुछ पढ़े-लिखे होते, तो आदमियों की कदर करते। लिखे न पढ़े, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल |

खोजी--जी हाँ, बछ, अब एक आप ही बड़े लक़मान बने हैं। हमको यह समझाते हैं कि कोई गधा है। और यहाँ अरबी चाटे बैठे हैँ। अफ़आल, फ़ालुआ मा फ़ालअत। और सुनिए--राक्मम् , राह्मा, ग़लमू |

मिरजा--यह कोन सोशणा हे भाई !

खोजी--जी, यह सीग़ा अल्लम-रल्लम है: यहाँ दीवान के दीवान जबान पर हैं । मगर मुफ़्त की शेखी ज़ताने से क्या फ़ायदा !

मिरज़ा साइब के घर के सामने एक तालाब था। खोजी अमी अपने कमाल की डींग मार दी रदे थे कि शोर मचा--एक लड़का डूब गया । दौड़ो, दौड़ो। पैराक अपने क्रतब दिखाने लगे | कोई पुल पर से कूदा घम । कोई चबूतरे से आया तड़ | कोई माही चीरता है, कोई खड़ी लगा रद्दा है। नेसिखिये अपने किनारे ही पर हाथ पांव मारते हैं, और डरपोक आदमी तो दूर से द्वी सैर देख रहे हैं। भई, पानी और आग से ज़ोर नहीं चलता, इनसे दूर ही रहना चाहिए ।

आज़ाद ने जो शोर सुना तो दोड़े हुए पुलठ पर आये और धम से कूद पढ़े | गोता लगाते द्वी उस लड़के का हाथ मिल गया । निकाल कर किनारे लाये, तो देखा, जान बाक़ी है| लोगों ने मिल कर उसको उलटा लटकाया | जब पानी निकल गया, तो लड़के को होश आया ।

अब सुनिए दि. वह लड़का बंबई के एक पारसी रईस झरस्तम जी का इकलौौता लड़का था । अभी आज़ाद लड़के को होश में लाने की फ़िक्र ही कर रदे थे कि किसी ने जात्म्ट रुस्तम जी को यह खबर सुनायी । बेचारे दौड़े आये और आज़ाद को गले से व्य लिया।

रुस्तम-- आपने अपने लड़के को हबने से बचाया। बंदा आपका बहुत शुक्र-गुज़ार है ।

आजाद--अगर आपस में इतनी हमदर्दी भी न हो, तो आदमी ही क्या १

खोजी--सच है, सच है । हम ऐसे शेरों के तुम ऐसे शेर ही द्वोते हैं | में भी अगर यहाँ होता, तो ज़रूर

कूद पड़ता। मगर यार, अब दुआ माँगनी पड़ी कि यह मोटी तोंदवाला भी किसी दिन ग़ोता खाय, तो फिर यारों के गहरे हैं ।

आज़ाद--(पारसी से) मैं बड़े मौक्के से पहुँच गया !

रुस्तम--अपने को बड़ी खुशी का बातचीत |

खोजी-- कुछ उल्लू का पट्ठा मालूम द्वोता है |

रुस्तम--काल आप आवे, तो हमारा लेडी लोग आपको गाना सुनावें ।

खोजी--अजी, क्या बेवक़्त की शहनाई बजाते हो ! अज्ी, कुछ अफ़ीम घोलो, चुस्की लगाओ, मिठाई मँगवाओ | रईस की दुम बने हैं।

आजाद-- कल मैं जरूर आऊँगा |

रईस--आप तो अपना का बाप है|

खोजी--ब्कि दादा | खब पहचाना, वाह पढे !

रुस्तम जी आज़ाद से यह वादा ले कर चले गये, तो खोजी और आजाद भी घर आये । शाम को रुस्तम जी ने पाँच हजार रुपयों की एक येली आज़ाद के पास भेजी और ख़त में लिखा कि आप इसे जरूर क़बूल करें। मगर आज़ाद ने शुक्रिये के साथ लौटा दिया |

HINDI TEXT

प्रसंग ३७

जरा ख्वाजा साहब की क़िता देखिएगा | वल्लाहइ, इस वक़्त फोटो उतारने के काबिल है। न हुआ फोटो | सुबह का वक़्त है। आप खारुए की एक लुंगी बाँचे पीपल के दरख्त के साये में खटिया बिछाये ऊँध रदे हैं, मगर गुड़गुड़ी भी एक द्वाथ में थामे हैं। चाहे पिय न, मगर चिलम पर कोयले दहकते रहें ! इत्तिफ़ाक़ से एक चील ने दरइ्त पर से बीट कर दी। तब आप चौंके और चौंकते द्दी आ ही गये। बहुत उछड्रे-कूदे और इतना गुड मचाया कि मुहल्छला भर सिर पर उठा लिया । दृत् तेरे गीदी की, हमें भी कोई वह समझ लिया है। आज चील बन कर आया है। करौली तो वहाँ तक पहुँचेगी नहीं; तोड़ेदार बंदूक होती, तो वह ताक के निशाना लगाता कि याद ही करता ।

आजाद--यदह किस पर गर्म हो रहे हो ख्वाजा साहब !

खोजी--आर ऊपर से पूछते हो, किस पर गर्म हो रहे हो ! गर्म किस पर होंगे ! वही बहुरुपिया है, जो मोलवी बन कर आया था |

मिरजा---तो फिर अब उसे कुछ सज़ा दीजिए |

खोजी--सज़ा क्या खाक दूँ! मैं ज़मीन पर, बह आसमान पर | कहता तो हूँ कि तोड़ेदार बंदूक मँगवा दीजिए, तो फिर देखिए, केसा निशाना छगाता हूँ। मगर आपको कया पड़ी है | जायगा तो गरीब ख्जाजा के माथे ही |

मिसरज्ञा--हम बतायें, एक जीना मैंगवा दं और आप पेड़ पर चढ़ जायें; भाग कर जायगा कहाँ |

खोजी--(उछल कर) लाना हाथ ।

मिर्जा साहब ने आदमी से कहा कि बड़ा जीना अंदर से लेआओ; मगर जल्द लाना । ऐसा न द्वो कि बैठ रहो ।

खोजी--हाँ मियोँ, इसी साल आना । मेरे यार, देखो, ऐसा न हो कि गीदी भाग निकले।

आदमी जब अंदर सीढ़ी लेने गया, बेगम ने पूछा--सीढी क्या हो !

आदमी- हूजूर, वह्दी जो सिदड्डी हैं खफ़कान, उन पर कहीं चील ने बीट कर दी; तो अब्च सीढ़ी लगा कर पेड़ पर चरेंगे ।

हँसोड़ औरत, खूब ही खिलखिलायीं और फोन, छत पर जा पहुँचों। आगत्री टुपट्टा खिसका जाता है, जुड़ा खुला पड़ता है और जैनत्र को ललकार रही हैं कि उससे कद्दो, जल्द सीढ़ी ले ज्ञाय। मियाँ खोजी ने सीदी देखी, तो कमर कसी और कॉपते हुए जीने पर चढ़ने छगे। जब आपछिरी जीने पर पहुँच कर दरख्त की टहनी पर ब्रेठे, तो चील की तरफ़ मुँह करके बोले--गाँस लिया, गाँस लिगा; फाँस लिया, फाँस लिया, हत् तेरे गीदी की, अब जाता कहाँ है ! छे, अब में भी कहले पर आ पहुँचा | बचा, आज ही तो फँसे हो ।

रोज झाँसे देकर उडंछू हो जाया करते थे । अब सोचो तो, जाओगे किघर से ! ले, आइए बस, अब चोट के सामने । मैंने भी करौली तेज कर रखी है |

इतने में पीछे फिर कर जो देखते हैं, तो जीना ग़ायब् | लगे सिर पीटने । इधर चील भी फुर से उड़ गयी | इधर के रद्दे न उधर के | बेगम साहबा ने जो यह केफ़ियत देखी, तो तालियाँ बजा कर हँसने लगीं |

खोजी--यह मिरजा साइब कहाँ गये | जरी चार आँखें तो कीजिए हमसे । आखिर हमको आसमान पर चढ़ा कर ग़ायत्र कहाँ हो गये ? अरे यारो, कोई साँस डकार ही नहीं लेता । अरे मियाँ आज़ाद ! मिरज़ा साहब ! कोई है, या सब मर गये ! आखिर हम कब्र तक यहाँ टैंगे रहें !

बेगम--अल्लाह करे, पीनक आये |

खोजी-- यह कौन बोला १ (बेगम को देख कर) वाह हुजूर, आपको तो ऐसी दुआ न देनी चाहिए |

मियाँ आजाद सोचे कि खोजी अफ़ीमी आदमी, ऐसा न हो, पाँव डगमगा जायें, तो मुफ़्त का खून हमारी गर्दन पर हो । आदमी से कदहा--ज़ीना लगा दो । बेगम ने जो सुना, तो हज़ारों क़समें दीं--खबरदार, सीढ़ी न लगाना। बारे सीटी छगा दी गयी और खोजी नीचे उतरे । अब सबसे नाराज़ हैं। सबको आँखें दिखा रहे हैं---. आप लोगों ने क्या मुझे मसखरा समझ लिया है। आप लोगों जैसे मेरे लड़के होंगे ।

इतने में एक आदमी ने आ कर मिरज़ा साइब्र को सलाम किया ।

मिरजा- बंदगी । कहाँ रहे सलारी, आज तो बहुत दिन के बाद दिखायी दिये।

सलारी -- कुछ न पूछिए खुदावुंद, बड़ी मुसीबत में फँसा हूँ ।

मिरजा--क्या है क्या ? कुछ बताओ तो !१

सलारी--क्या बताऊँ, कद्दते शर्म आती है । परसों मेरा दामाद मेरी लड़की को लिये गाँव जा रहा था । जब्न थाने के क़रीब पहुँचा, तो थानेदार साहब धोड़े पर सवार हो कर कहीं जा रहे थे । इनको देखते ही बरग रोक ली और मेरे दामाद से पूछा--ठुम कौन हो ! उसने अपना नाम बताया । अब थानेदार साहब इस फ़िक्र में हुए कि मेरी लड़की को बहला कर रख लें और दामाद को घता बता दें | बोले-- बदमाश, यह तेरी बीबी नहीं हो सकती | सच बता, यह कौन है ? और तू इसे कहाँ से मगा लाया है !

दामाद--यह मेरी जोरू है।

थानेदार--सुअर, हम तेरा चालान कर देंगे। तेरी ऐसी क्रिस्मत कहाँ कि यह हसीना तुझकी मिले ! अगर तू हमारी नौकरी कर ले तो अच्छा; नहीं तो हम चालान करते हैं । (औरत से) तुम कीन हो, बोलो १ ८

दामाद--दरोग़ा जी, आप मुझसे बार्ते कीजिए! ।

मेरी लड़की मारे शर्म के गड़ी जाती थी ! गईन छका कर थर-थर कोंपती थी अपने दिल में सोचती थी कि अगर जमीन में गढ़ा हो जाता, तो में धैंस जाती | सिपाही अछग छ एार रहा है और थानेदार अलग कहले पर सवार

दामाद--मेरे साथ ।केसी सिपाही को भेज दीजिए । माल्म हो जाय कि यह मेरी व्याहता बीबी है या नहीं ।

थानेदार--चुप बदमाश, में बदमाशों की आँख पहचान जाता हूँ । ठुम कहाँ के ऐसे खशनसीब हो कि ऐसी परी तुम्दारे हाथ आयी | यह सब़ बनावट की बातें हैं ।

सिपाही--हाँ, दारोगा जी, यही बात है ।

आखिर थानेदार साइब मेरी लड़की को एक दरख्त की आड़ में ले गये और सिपाही ने मेरे दामाद को दूसरी तरफ़ ले जाके खड़ा किया | थानेदार बोला--नीबी, जरा गर्दन तो उठाओ । भला तुम इस परकटे के काबिल हो ! खुदा ने चेहरा तो नूर सा दिया है, लेकिन शौहर लंगूर सा ।

लड़की - मुझे वह लंगूर ही पसंद है ।

इधर तो थानेदार साइचर यह इजद्दार ले रहे थे, उधर सिपाही मेरे दामाद को और ही पट्टी पटा रहे थे। भाई, सुनो, सुबेदार साहब के सामने तो मैं उनकी सी कह रहा था। न कहूँ, तो जाऊँ कहाँ ? मगर इनकी नीयत बहुत खराब है। छटा हुआ गुरगा है ।

दामाद--और कुछ नहीं, बस, में समझ गया कि फाँसी ज़रूर पाऊँगा। उन तो मुझे चाहे जाने दे या न बाने दे में इसे बेमारे न रहूँगा । अब बेइज़्ज़ती में बाक़ी क्या रद्द गया ।

थानेदार--सिपाही, सिपाही, यह कहती हैं कि यह आदमी इन्हें भगा लाया है।

लड़की--जिसने यह कद्दा हो, उस पर आसमान फट पड़े ।

दामाद--अब आपकी मरज़ी क्या हे १ जो हो, साफ़-साफ़ कहिए ।

खैर, थानेदार साहब एक कुर्सा पर डट गये और मेरी छड़कों से कद्दा कि तुम इस सामनेवाली कुर्सी पर बैठो । अब खयाल कीजिए कि गृद्दस्य औरत बिना घुँघट निकाले कुएँ तकपानी भरने भी नहीं जाती, वह इतने आदमियों के सामने कुर्सी पर कैसे चेठती । सिपाही श़क-इ्चुक कर देख रददे थे और वह बेचारी गर्दन इ्काये बुत की तरद्द खड़ी थी। तब थानेदार ने धमक कर कहा--तुम दस बरस के लिए भेजे जाओगे । पूरे दस बरस के लिए !

दामाद--जब कोई जुर्म साबित द्वो जाय ।

यानेदार--हाँ, आप क़ानून भी जानते हैं ! तो हम अब जाब्ते की कारंवाई करें।

दामाद--यह कुल कारंवाई ज़ाब्ते ही की तो है। खेर, इस वक़्त तो आपके बस में हूँ, जो चादे कीजिए । मगर मेरा ख़दा सब देख रहा है ।

थानेदार--तृम हमारा कहा क्यों नहीं मान लेते ? हम बस, इतना चाहते हैं कि तुम नौकरी कर लो और अपनी जोरू को ले कर यहीं रहा करो |

दामाद--आपसे मैं अब भी मिन्नत से कट्टता हूँ कि इस बात को दिल से निकाल डालिए । नहीं तो बात बढ़ जायगी |

इतने में किसी ने पीछे से आ कर मेरे दामाद की मुशके फस लीं ओर ले चले, और एक सिपाही मेरी लड़की को थानेदार साहब के घर की तरफ़ ले चछा | अब गत का वक़्त है । एक कमरे में थानेदार लडकी के पैरों पर गिर पडा । उसने एक «कर दी और झपट कर इस तेजी से भागी कि थानेदार के होश उड़ गये

। अब गौर कीजिए कि कमसिन औरत, परदेस का वास्ता, आँधेरी रात, रास्ता गुम, मिर्यों नदारद | सोची, या ख़दा, कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ! कभी मियाँ की मुसीबत पर रोती, कमी अपनी हालत पर | इस तरह गिरती पड़ती चली जाती थी कि एक तिलंगे से भेंट हो गयी | बोला--कौन जाता है ! कौन जाता है छिपा हुआ ! लड़की थर-थर कॉपने लगी। डरते-डरते बोली--ग़रीब औरत हूँ । रास्ता भूल कर इधर निकल आयी । आखिर बड़ी मुश्किल से कानों का करन-फूछ दे कर अपना गला छुड़ाया । आगे बढ़ी, तो उसका शौहर प्रिल गया । सिपाहियों ने उसे एक मकान में बंद कर दिया था, मगर वह दीवार फाँद कर निकल भागा आ रहा था। दोनों ने खूदा का शुक्र किया और एक सराय में रात काटी । सुबह को मेरे दामाद ने थाने-दार को घोड़े पर से खींच कर इतनी लकड़ियाँ मारीं कि बेदम हो गया । गाँववाले तो थानेदार के दुष्मन थे ही, एक ने- भी न बचाया; बल्कि जब देखा कि अधमरा हो गया, तो दो-चार ने छातें भी जमायीं। अत्र मेरा दामाद मेरे घर में छिपा बैठा है| बतलाइए, - क्या करूँ !

खोजी- मुझे तो माल्म होता है कि यह भी उसी बहुरुपिये की शरारत थी |

सलारी- कौन बहुरुपिया १

मिरज़ा--तुम्हारी समझ में न आायेगा | यह किस्सा-तलब बात है।

सलारी--तो फिर मुझे क्या हुक्म होता है ! हम तो गरीब टके के आदमी हैं । मगर आन्ररूदार हैं ।

आजाद- बस, जा कर चेन करो। जब शोर-गुल मचे, तो आना। सलाह की जायगी |

सलारी ने सलाम किया और चला गया |

HINDI TEXT

प्रसंग ३८

खोजी ने एक दिन कहा--अरे यारो, क्या अंधेर है। तुम रूम चंलते-चछते बुद्दें हो जाओगे। रप्रीचें सुनीं, दावतें चखीं, अब बक्रचा सैंभालो और चलो ' अन्न चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, हम एक न मानेंगे | चलिए, उठिए । कूच बोलिए ।

आज्ञाइ--मिरजा साहब, इतने दिनों में खोजी ने एक यही वो भात पक्की कही | अन्न जहाज्ञ का जल्द इंतिज्ञाम कीनिए ।

खोजी--पड़ले यह बताश्ए कि कितने दिनों का सफ़र है !

आजाद--इससे क्या वास्ता १ हम कभी जहाज पर सवार हुए हों तो बतायें ।

खोजी--जहाज़ ! हाय ग़ज़ब ! क्या तरी-तरी जाना होगा १ मेरों तो रूह काँपने लगी । भेया, में नहीं जाने का !

आज्ञाद--भ ही, चलो भी, वहाँ तुरकी औरत के साथ तुम्हारा ब्याह कर देंगे |

सत्रोजी--खुश्की-खश्की चलो तो भई, मैं चढ़ूँगा | समुद्र में जाते पाँव डग-मगाता है।

मिरज्ञा--जनात्र, आपको शर्म नहीं आती ! इतनी दूर तक साथ आये, अब साथ छोड़ देते दो ! डूब मरने की बात है ।

खेजी -क्या खबर | यों भी छूबूँ और वों मी डूबूँ। खश्की ही खइकी क्यों नहीं चलते ! ड डे

मिरज्ञा--आप भी वाह, निरे चोंच ही रहे | खश्को की राह से कितने दिनों में पहुँचोगे भला ! ख़श्क़ी की एक द्वी कही |

खो जी --अब आपसे हुजत कौन करे | जहाज का कौन एतत्रार । ज़रा किसी सूराख की राह से पानी आया, ओर बम, पहुँचे जहन्नुम सीधे ।

आजाद -तो न चलोगे ! साफ़-साफ़ बता दो | अभी सबेश है ।

स्रोजी--चलें तो बीच खेत, मगर पानी का नाम सुना और कलेज्जा दहल उठा । भला क्यों साहब, यह तो बताइए कि समुद्र का पाट गंगा के पाद से कोई दूना होगा या कुछ कम-बेश !

मिरज्ञा--जी, बस, और क्या। चलिर, आपको समुंदर दिखलावे न, थोड़े दही फ़ासले पर है।

खोजी--क्यों नहीं । हमको ले चलिए और झप से चपरगट्टू करके जहाज पर तिठा दीजिए । एक शर्त से चलते हैं| बेगम साहबा जमानत करें | हमारे सिर की क्रसम खाये कि जबरदस्ती न करेंगे ।

आज्ाद--इसमें क्या दिक्कत है। चलिए, हम बेगम साहबा से कहलाये देते हैं। आप और आपके बाप, दोनों के सिर की क्रम खा लें तो सही

मिरज्ञा--हाँ- हाँ, बह जमानत कर देंगी । आइए, उठिए |

मियाँ आजाद और मिरज़ा, दोनों मिछ कर गये और बेगम से कद्दा--इस सिड़ी से इतना कद देना कि तू बहद्दाज़ देखने जा। ये लोग छक्षबरदस्ती सवार नकरेंगे । बेंगंम साहबा ने जो सारी दास्तान सुनी, तो तिनक कर बोलीं कि इम न कहेंगे | आप लोगों ने जरा सी बात न मानी और सीढ़ी हद ली। अच्छा, खेर, परदे के पास बुला छो ।

खोजी ने परदे के पास आ कर सलाम किया; मगर जवाब कोन दे | बेगम साहबा तो मारे ईंसी के छोटी जाती हैं। मियाँ आज़ाद के खंयाल से अपनी चुलंबुलाहट पर लब्नाती भी हैं और खिलखिलाती भी। शमे और हँसी, दोनों ने मिल कर रुखसारों को और भी हुर्ख कर दिया । इतने में खोजी ने फिर दाँक लगायी कि हुजूर ने गुलाम को क्यों याद फ़रमाथा है !

मिरज़ा--कद्दती हैं कि हम जमानत किये लेते हैं। .

खोजी- आप रहने दीजिए, उन्हीं को कहने दीजिए ।

. _बेगम--ख्वाजा साहब, बंदगी | आप क्या पूछते हैं। ..

खोजी--ये लोग मुझे जद्दज दिखाने लिये जाते हैं। जाऊँ या न जाऊँ! थ्रो हुक्म हो, वह करूँ। |

बेगम--कभी भूले से न जाना । नहीं फिर के तल आओगशे ॥

खोजी--आप इनकी जमानत क्रती हैं । है

बेगम--मैं किसी की जामिन-वामिन नहीं होती। 'ज़र दीजिए जामिन न हूजिए ये डुबो हो दंगे .। मुई क़रोली रखी ही रहेगी । ह

खोजी--चलिए,, बस, हृद हो गयी । अब इम नहीं जाने के ।

आजाद--भई, तुम जरा साथ चल कर सैर तो देख आमो |

खोजो--वाह ! अच्छी सैर है। किसी की जान जाए, आपके नज़दीक सेर है । उस जानेवाले पर तीन इरफ़ ॥ ३६ |

खेर, समझा-सुझा कर दोनों आदमी छोजी को : के जले । जब समुद्र,के किनारे >पहूँचे तो. छोजी उसे देशते दी कई कदम, प्रीछे इटे, और चीख पड़े । फिर दस पाँच कदम पीके खिसके और रोने लगे। या ख़दा, बचाइए ! लहरें देखते डी. किसी,ने " कलेजे को -मरस्नोस्त लिया-॥ ह

रजा--क्या लुत्फ़ है | ख़दा की क़सम, जी चाहता है, फाँद ही पड़:

है धाहवे हीत्द-फड़ी, थूल ये: फौटने काँदने का इयदा हू करना । हम्ादार के छिए एक चुस्दू। काल है । आह कह पाफद | ६ 5 आलाद- भजब मसखरा एक आँब से, शेत्ा शअमाँख से ईंसता है । ... # हरे में: गोचा समा 72५ जाये | खोज्ी ने नो उन्हें गौर से. देखा, तो

| 0 निरज़ा साइब से बोल>-ये कौन है भई.| इनुदी तो कुछ बजा डी निराली है । भा, ये इमारी भाछों समझ ऊँगे

मिरज़ा--हाँ हाँ, खूब | उर्दू खूब समझते हैं ।

खोजी--(एक मल्छाह से) क्यों मई माँशी, जहदाज़ पर कोई चगह ऐसी मी है जहाँ समुंदर नज़र न

आये और हम आराम से बैठे रहें! सच बताना उस्ताद ! अजी, हम पानी से बुत खाते हैं मई !

माँतती- इम आपको ऐसी जनह वेठा देंगे, जहाँ पानी क्या, आसमान तो युझ ही न पड़े ।

खोबी--अरे, तेरे कुरबान । एक बात और बता दो | गन्ने मिलते जाँयगे राह में या उनका अकाछ है !

माँशी--गन्ने वहाँ कहाँ ! क्या कुछ मंडी है ! अपने साथ चादे बितने ले चलिए।

खोजी--हाथ, गैंडेरियों ताज़ी-ताज़ी खाने में न आर्येगी। भरा इलवाई की दुकान तो होगी ! आख़िर ये इतने शौक़ीन अफ़ीमची जो जाते हैं, तो खाते क्या हैं !

माँशी - अजी, थो चाहो, साथ रख स्थे |

खोजो--ओर जो मैँह-हाथ घोने को पानी की ज़रूरत हो तो कहाँ से आवे!

आख़द--यागल है पूरा! इतना नहीं समझता कि समुंदर में जाता है और

पूछता है कि पानी कहाँ से आयेगा ।

खोजी--तो आप क्यों उलझ पड़े ! आपसे पूछता कौन है ! क्यों यार माँशी भय हम गन्ने यहाँ से बाँध ले चले और जद्दाज़ पर चूलें, मगर छिछके फेकेंगे कहाँ | आखिर हम दिन भर में चार-छद पोंड़े खाया ही चाहें ।

आज़्ाद--यह बढ़ी ठेदी खीर है, गनन््नों के छिलके खाने पड़ेंगे ।

खोबी-«आपसे कौन बोलता है ! क्यों मई, जो क़रोली बाँध तो हज तो नहीं है कुछ !

माँह्ी--लेसन ले लीजिएगा, और क्या हज है !

खोजी--देखिए, एक बात तो मादम हुई न ! अच्छा यह बताओ कि बहुरुपिये तो नहाज़ पर नहीं चढ़ने पाते !

माँझो--चाहे जो सवार हो। दाम दे, सवार हो छे |

खोजी--यह वो तुमने बेढदब सुनायी । जद्दाज़ पर कुम्दार तो नहीं होते !

माँझी--आज तलक कोई कुम्दार नहीं गया।

खोजी--ऐ, मैं तेरी ज़बान के करबान। बड़ी दारस हुई। खेर कुम्हार से तो बचे । बाक़ी रहा बहुरुपिया । उस गीदी को समझ ढूँगा। इतनी करौलियाँ भोँढूँ याद ही करे। हाँ, बत एक ओर बात मी बता देना! यह क्रेर तो नहीं है कि आदमी घुबह-शाम जरूर ही नहाय !

माँशी--मादूम देता है, अफ्रीम बहुत खाते हो

खोजी--हाँ खूब पहचान गये। यह क््योंकर बूक्ष गये भाई ! शौक हूं निकाद !

माँक्षी-- राम-राम | हम अफ्रीम छूते तक नहीं ।

खोजी--ओ गीदी ! टके का आदमी और झख मारता है। निकादँ क़रौली !

मिजा-हाँ, हाँ, ख्वाजा साहब ! देखिए, जरी करौली म्यान ही में रहे ।

खोजी--खैर, आप लोगों की खातिर है। वर्ना उधेड़ कर धर देता पाजी को | आप लोग बीच में न पड़ें, तो भुरकुस ही निकाल दिया होता ।

इतने में घोड़े पर सवार एक अँगरेज आ कर आजाद से बोला-इस दरख्त का क्या नाम है !

आज़ाद -इसका नए ते मुझे माद्म नहीं। हम लोग जरा इन बातों की तरफ कम ध्यान देते हैं |

अँगरेन-- हम अपने मुल्क की सब्र घास फूस पहचानता है ।

खोजऔ--विलायत का घसियारा माद्म होता है |

अंगरेज--चिड़िया का इल्म जानता है आप !

आज्ञाद--जी नहीं यह इत्म यहाँ नद्ठीं सिखाया जाता ।

अंगरेज--चिड़िया का इल्म हम खूब जानता है |

खोजी--चिड़ीमार हे लंटन का | बस, क़लई खुल गयी |

अँगरेज घोड़ा बढ़ा कर निकल गया । इधर आज़ाद और मिरजा साइब्र के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये ।

HINDI TEXT

प्रसंग ३९

शाम के वक़्त मिरजा साहब की बेगम ने परदे कै पास आ कर कह्ा- आज इस वक़्त कुछ चहल-पहल नहीं है; क्या खोजी इस दुनिया से सिधार गये !

मिरज़ा--देखो खोजी, बेगम साहबा क्या कैह रही हैं ।

सतोजी--कोई अफीम तो पिलवाता नहीं, चहल-पहले कहाँ से हो! ल्तीफ़े मुनाऊँ, तो अफ्रीम पिलवाइएगा !

बेगम--हाँ, हाँ, कह्दो तो। मरो भी, तो पोस्ते ह्ी के खेत में दफ़नाये जाओ | काफ़र की जगह अफ़ीम हो, तो सह्दी ।

स्रोजी-- एक खश्नवीस थे | उनके क़र्म से ऐसे हरूफ़ निकलते ये, जेसे साँचे के दले हुए. ! मगर इन हज़रत में एक सख्त ऐब यह था कि ग़लत न लिखते थे ।

आज़ाद- -कुछ जाँगलू हो क्या !

स्तोजी-- खुदा इन लोगों से बचाये । भई, मेरे तो नाकों दम हो गया। बात पूरी सुनी नहीं और एतराज़ करने को मौजूद | बात काटने पर उधार खाये हुए हो । मरा मतलब्न यह था कि वह् ग़लत न लिखते थे; मगर ऐब यह था कि अपनी तरफ़ से कुछ मिला देते थे । एक दफ़े एक आदमी को कुरान लिखाने की ज़रूरत हुई सोचे कि इनसे बढ़ कर कोई ख़शनवीस नहीं, अगर दस-पाँच रुपये ज़्यादा भी खर्च हों, तो बला से, लिखवायेंगे इन्हीं से ।

बेगम--ऐ. वाह री अक़ल ! कोई आप ही के से जाँगलू होंगे। गली-गलो तो छापेखाने हैं। कोई छपा हुआ क़रान क्यों न मोल ले लिया !

खोजी--हुजूर, वह सीघे-सादे मुसलमान थे। मंतिक (न्याय) नहीं पढ़े ये। खैर, साहब खुशनवीस के पास पहुँचे क्षीर कह्दा--हज़रत, ज्जे उजरत माँगिए, दूँगा; मगर अजजे यह है, कहिए, कहूँ, कहिए, न कहूँ | ख़शनवीस ने कहा--ज़रूर कहिए। खदा की कसम, ऐसा लिखैँ कि जो देखे, फड़क जाय | वह बोले--हजरत, यह तो सद्दी है, लेकिन अपनी तरफ़ से कुछ न बढ़ा दीजिएगा | ख़शनवीस ने कहा-- क्या मजाल आप इतमीनान रखिए, ऐसा न दोने पावेगा | खेर, वह हज़रत तो घर गये, इधर मियाँ खशनवीस लिखने बेठे | जद्द ख़तम कर चुके, तो किताब ले कर चले | लीजिए हुजूर क़रान मौजद है । उन्होंने पूछा--एक बात साफ़ फ़रमा दीजिए। कहीं अपनी तरफ़ से तो कुछ नही मिला दिया ? ख़शनवीस ने कहा--जनाब, बंद्रंलते या बढ़ाते दुए हाथ कॉपते थे। मगर इसमें जगह-जगह शैतान का नाम था। मैंने सोचा, खुदा के बलाम में शैतान का क्या जिक्र ! हसलिए कहीं आपके बाप का नाम ल्खि दिया, कहीं अपने बाप का ।

बेगम--त्रस, यद्दी लतीफ़ा हे ! यह तो सुन चुकी हैँ |

खांजी--इस धाँघठी की सनद नहीं। जब अफ्रीम पिछाने का वन्त आश तो धाँधली करने लगीं !

मिरजा साहब बोले--अजी, यह पिलवों् या न पिलवावें, मैं पिलवाये देता हूँ । यह कह कर उन्होंने एक याली में थोड़ा सा कत्था घोछ कर खोजी को पिछा दिया । खोली को दिन को तो उँट सूझता न था; रात को कत्थे और अफ्रीम के रंग में था तमीज करते | पूरा प्याछा चढ़ा लिया और अफ़ीम पीने के खबारू से पीनक डेने सके । मगर जब ,त ज़्यादा गयी तो आपको अँगड़ाइयाँ आने लगी; अम्हाइयों की डारकम्ट गयी, आँखों से पानी जारी हो गया। डिबिया जेब से निकाली कि शायद कुश्खिरवन-उर- न पढ़ी-पडायी हो, तो इस दम जी जायें। मगर देखा, तो सफाचट | करछुटसन से जान निकछ गयी । आघी रात का वक़्त, अत्र अफ़ीम आये ते कहाँ से ! श्षोके, मई, चादे श्घर की दुनिया उघर हो जाय, अफ्रीम कहीं न कहीं से दढूँद दी जंकंगे | दन से चछ ही तो लड़े हुए । गली में सिपाही से मुठभेड़ हुई |

सिपाही--कौन !

खेजी--हम हैं उ्वाजा साहन ।

सिपाही--किस दफ़्तर में काम करते हो !

खोबी->-पुल्सि के दफ्तर में। मानिकजी-माईजी की जगह पर आज से काम ररते हैं। यार, इंस वक़्त कहीं से जरा सी अफीम लाओ, तो बड़ा एहसान हो! भादिर उस्ताद, पाछा हमीं से पड़ेगा । तुम्हारे द्वी दफ़्तर में हैं ।

सिपाही-- हाँ, हाँ, लीजिए, इसी दम | मैं तो ख़द अफ्रीम खाता हूँ | अफ़ीम तो छो यह है, मगर इस वक़्त घोलिएगा काहे में !

खोजी--वबाइ | सिपादी हो कि बातें ! घर की हुकूमत है ! सरकारी सिपाही

सोजी--वाह सूबेदार साहब | बड़े बुरे वक़्त काम आये। हम, आप बानिए, अक्लीमची आदमी, शाम को अफ़ीम खाना भूल गये, आधी रात को. यार आया | डिविया खोली, तो सन्नाटा | ले, कहीं से पानी और प्याली दिखवाओ, तो जी उठें ।

खैर, सिपाही ने खोजी को खूब अफ़ीम पिलवायो | यहाँ तक कि घर को छौटे, वो रास्ता भूल गये । एक भमलेमानसु के दरवाशब्रे पर पहुँचे, तो पीनक में सूझी कि यही मिरला साहन का मकान है। लगे जैजीर लड़खड़ाने--खोलो, खोलों। मई अँब तो खड़ा नहीं रहा जाता | दरवाज़ा खोल देना |

खवाना साहब तो बाहर खड़े गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते हैं, और अंदर उस मकान में म्रियोँ का दम निकला जाता है। कोई एक ऊपर दस बरस का सिन, खेल-कूद के दिन, खोजी के भी चचा, दुबले-पतके हाथ-पाँव, क्रद तीन कम सवा दो इंच का । सिवा हड्डी और चमड़े के गोइत का कहीँ नाम महीं । और उनकी बीबी स्वांसी टेवनी, इृष्टी-कट्टी मुसंडी, बड़े डीढ-डोल की औरत, उठती जवानी, मगर एक आँख की कानी | एक घूँसा तानके.र्गवे, तो शीदी लंघौर का मुरकस निकछ जाय | कोई दो-तीन कम बीस बरस की उप्र । दोनों मीठी नींद सो रहे थे कि खोजी ने धमधमाना शुरू किया। ।

मियाँ--या ख़ुदा, बचाइयो । इस अघेरी रात में कौन आंया ! मारे डर के रूह कॉपती है; मगर जो बीबी फो जंगाऊँ और मर्दाने कपड़े पहना कर ले जाऊँ, तो यर हजरत भी काँपने लछगें।

सोबी--सोलो, मीठी नींद सोनेवालो, खोलो । यहाँ जाते देर नहीं हुई, और किवाड़े इ्प से बंद कर लिये

! खटिया-बटिया सब्च ग़ायत्र कर दी !

मियाँ-- बेगम, बेगम, क्या सो गयीं !

वहाँ सुनता कोन है, जवानी की नींद है कि दिलछगी। कोई चारपाई भी उलट दे, तो कानों-कान खबर न हो। सिर पर चक्की चले | तो भी आँख न खुले | मियाँ आँखों को मारे डर के एक द्वाथ से बंद किये बीबी के सिरहाने खड़े हैँ; मगर थर-थर काँप रहे हैं। आखिर एक बार किचकिचाके खूब जोर से कंघा दिलाया और बोले--ओ बेगम, सुनती हो कि नहीं ! बगी हैं, मगर दम साथे पड़ी हैं । बेगम--(हाथ झटक-कर) ऐ. हटो, लेके कंधा उखाड़ डाछा। अल्लाह करे, ये हाथ टूट | इमारी मीठी मीठी नींद खराब कर दी। खदा जानता है, में तो समझी, द्ालाडोला आ गया | खुदा-खदा करके जरा आँख लगी, तो यह आफ़त आयी । अब की जगाया, तो तुम जानोगे। फिर अपने दाँव को तो बैठ कर रोते हैं। येहया, चल दर हो |

मियाँ--अरे, क्या फिर सो गयी ! जैसे नींद के हाथों त्रिक गयो हो। बेगम, छुनती दो कि नहीं !

बेगम--क्या है क्या ! कुछ मुँह से बोछोगे भी ! बेगम-बेगम की अच्छी रट लगायी है | डर लगता हो तो मुँह ढोप कर सो रह्दो | एक तो आप न सोर्ये, दुसरे हमारी नींद भी इराम करें ।

खोजी--अरे, मई खोलो | मर गया पुकारते-पुकारते।

मियाँ--बेगम ख़दा करे, बहरी हो जायें। देखो तो यहाँ किवाड कौन तोड़े डाल्ता है ! बंदा तो इस अऑधियारी में हुमसनेवाला नहीं । जरी तुम्हीं दरवाजे तक जा कर देख लो |

बेगम-:: जी ! मेरी पैजार उठती है । तुम्हारी तो वह्दी मसल हुई कि 'रोटी खाय दस-बा रह, दूध पिये मटका सारा, काम करने को नन्हां बेचारा !! पहले तो में औरत जात डर गयी तो फिर कैसी हो ! चोर-चाकर से बीबी को पिडवाते हैं । मर्द बने हैं, जोबआा से कहते हैं कि बाहर जा कर चोर से जलड़ो |

सखोजी--अजी, बेगम साहब, खुदा की कसम, अफ़ीम लाने गया था । जरी दरवाजा खुलवा दीजिए | यह मिरजा साहब, और मौलाना आज्जाद तो मेरी जान के दुश्मन हैं।

बेगम ने जो अफ़ीम का नाम सुना, तो आग-मभूका हो गयीं। 37 कर प्रिय्रों क एक लात लगायी और ऊपर से कोसने ल्गीं--हुस अफ्रीम को आग छगे, पीनेवाल का सत्यानाश हो जाय । एक तो मेरे माँ बाप ने इस निखट्ट के खूँटे में बाधा, दुसरे इसके माँ-बाप ने अफ़ीम इसकी घुट्टी में डाल दी। क्यों जी, तुमने तो कसम खायी थी कि आज से अफीम न पिऊँगा १ न तुम्हारी क्रम का एतबार, न ज़बान का | कसम भी क्या मूली-गाजर है कि कर-कर करके चत्रा गये |

मियॉ--< गद झाइ-पोंछ कर) क्यों जी, और जो मैं भी एक लात कसके जमाने के लायक़ होता तो फिर कैसी ठद्वरती !

बीबी-में तो पहले बातों से समझाती हूँ और कोई न समझे तो फिर लातों से खबर लेती हूँ। में तो इस फ़िक्र में हूँ कि तुमको बिला-पिछा कर ह्दट्टा-कट्टा बना दूं, पड़ोसी ताने न दें । और तुम पियो अफ्रीम तो जी जले या न जले !

मियाँ साइबर दिल ही दिल में अपने माँ-बाप को गालियाँ दे रदे थे | यहाँ धान-पान आदमी, ब्रीबी लाके बिटठा दी देवनी। वे तो ब्याह करके छुट्टी पा गग्ने, छातें हम खानी पड़ैती हैं। में ता समझा कि अपना काम

ही तमाम ह। गया; मगर बेहया ज्यों का स्यों मौजूद । बोले---तुम्हारी जान जी कसम, कोन मरदट चेड् के क़रीब भी गया हो | आज या कभी अफ्रीम की सूरत भा देखी हो। और यों खामख्वाह बदगु-मानी का कौन सा इलाज है। जरी चलके देखों तो! आखिर है कौन ! आव देखा न ताव, कस कर एक छात जमा दी, बस । ओर जो कहीं कमर टूट जाती !

ख़ोजी पीनक में जंजीर पकड़े थे | इधर मियाँ-ब्रीजरी चले, तो इस तरह कि त्रीती आगे-आगे चिमटा हाथ में लिये हुए और मिर्यों पीछे-पीछे मारे डर के आँख बंद किये हुए | दरवाज़ा खुला, तो खोजी धम से गिरे सिर के बल ओर मिर्यों मारे खौफ़ के सोजी पर अर-र-र करके आ रहे | बीत्री ने उपरूसे दोनों को दबोचा । खोजी का नशा हिरन हो गया। निकल कर भागे तो नाक की सीध पर चलत हुए मिरज़ा साहब के मकान पर दाखिल ! वहाँ देखा, ग्विद्मतगार पड़ा खर्राटे ले रहा है | चुपके ' से अपनी खटिया पर व्राज़ हुए; मगर मारे हँसी के बुरा हाल था। सोचे, इम तो ये ही, यह मिर्यों हमारे भी चचा निकले |

HINDI TEXT

प्रसंग ४०

सुबह का वक़्त था। मियाँ आज़ाद पलँग से उठे तो देखा, बेग्म साहबा मूह खोले बेतकब्लुफ़ी से खड़ी उनकी ओर कनखियों से ताक रही हैं। मिरजा साहब का आते देखा, तो बदन को चुरा लिया, और छलाँग मारी, तो जैनब की ओट में थीं !

पिरज़ा- कद्ि्ए, आज क्या इरादे हैं !

आज्ाद-- इस वक़्त हमकी किसी ऐसे आदमी के पास ले चलिए, जो दुरकी के मामलों से खूब वाकिफ़ हो | हमे वहाँ का कुछ दाल मातम ही नहीं | कुछ सुन तो 2 । वहाँ के रंग-टंग तो माल्म हों ।

मिरज़ा--बहुत खब; चलिए,, मेरे एक दोस्त हेडमास्टर हैं। अहत ही जहीन और पग़रवाश आदमी ई।

आजाद तैयार हुए तो बेगम ने कहा--ऐए, तो कुछ खाते तो जाआ | ऐसी अभी 4या जल्दी है ?

आज़ाइ--जी नही । देर होगी ।

बेगम--अच्छा, चाय तो पी लीजिए,

थोड़ी देर में दोनों आदमियों ने चाय पी, पान खाये ओऔन चले। देडमाम्टर व मकान थोड़ी ही दूर था, खट से दाखिल । सलाम वबल्मम के बाद आज्षद ने रे और रूस की लड़ाई का ताज़ा हाल पूछा ।

हेडमास्टर--तुरकी की हालत बहुत नाज़क हो गयी है ।

खोजी-- यह बताइए कि वहाँ तोप ठग रही है या नहीं १ दनादन को आवा : कान में आती है या नहीं !

हेडमास्टर-दनादन की आवाज तो यहाँ तक आ चुकी; मगर लड़ाई छिट्ट गया! हे और खूब जोरों से हो रही है ।

स।जी--उफ , मेरे अलाह | गहाँ तो जान ही निकल गयी ।

आजाद-- मियाँ, द्विम्मत न हारो। खा ने चाहा, तो फ़तइ है |

स्ोजी-- अजी,द्विम्मत गयी भाड़ में, यहाँ तो क्राफ़िया तंग हआ जाता है|

आज़ाद--लछड़ाई रूस से हो रही है, या आद में १

हेडमास्टर-- आपस ही में समझिए | अक्सर सूबे ब्रिगट गये ओर लड़ाई हं रही है ।

आज़ाद- यह तो बुरी हुई ।

खोजी-- बुरी हुई, तो फिर जाते क्यों हो १ क्या तबाही आयी है !

हेडमास्टर- सर्विया की फौज सरहद को पार कर गयी । तुरकों से एक लड़ाई भी हुई । सुना है कि सर्विया हार गया । मगर उसका कहना है कि यह सब ग़लूत है । हं डटे हुए हैं, और तुरकों को बासिनिया की' सरहद पर ज़क दी |

खोजी---अब मेरे गये बगैर बेड़ा न पार होगा । क्रसम खदा की, इतनी करौडियाँ भोंकी हों कि परे के परे साफ़ हो जायें । दिलग्गी है कुछ |

हेडमास्टर--दूसरी ख़बर यह है कि सर्विया और तुरकों में सख्त लड़ाई हुई, मगर न कोई हारा, न जीता । सर्विया वाले कहते हैं कि हमने तुरकों को भगा दिया |

खोजी--भई आज़ाद, सुनते हो ? वापस चलो । अबी, शर्त तो यही है न कि तमरी छटका कर आओ ! आप वापस चलिए मैं एक तमग़ा बनवा दँगा।

कुछ देर तक मियाँ आजाद और देडमास्टर साइब में यही बातें होती रहीं। दस बजते-बजते यहाँ से रुखसत हो कर घर आये। जब खाना खा कर बैठे तो बेराम साहबा ने आज़ाद से कद्ा--हजरत, ज़रा इस मिसरे पर कोई मिसरा लगाइए---

इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवायी नहीं ।

आजाद--हाँ-हाँ ुनिए-- ग़ेर देखे उनकी सूरत इसकी ताब आयी नहीं; इसलिए. तसबीर जानाँ' ***** नहीं ।

उसकी फ़रक्त जेहन में अपने कभी आयी नहीं;

इसलिए. तसवीर जानो *"'* 'नहीं । बेगम--कऋद्दिए, आपकी खातिर से तारीफ़ कर दें। मगर मिसरे जरा फीके हैं | आजाद--अच्छा, ले आप ही कोई चटपटा मिसरा कहिए | बेगम-ऐ., हम औरतज्ात, भला शेर-शायरी क्या जानें। और जो आपकी

यही मरश्ी है, तो लीनिए-- छोहे-दिल ढूँढा किये पर द्वाथ ही आयी नहीं, इसलिए... ... «««« नहीं ।

खोजी--वाह, बेगम साहब ! आपने तो सुलेमान .सावजी के भी कान काटे | पर अब ज़रा मेरी उपन भी सुनिएगा--- पीनके-अफ़यूँ से डुक फ़रसत कभी पायी नहीं, इसलिए. ... «-« -- नहीं। इस मिसरे का सुनना था कि मिरना साहब, उनकी हँसोड़ बीबी और मियाँ आबाद- हँसते-हँतते छोट गये । अमी यही चर्चा'हो रहौ थी कि इतने में एक आदमी ने बाइर से आवाज़ दी | मिरजा ने बैनब से कहा कि जाओ, देखो तो कौन है ! मियाँ खलीफ़ा हों तो कहना, इस वक़्त हम बार न बनवायेंगे | तीसरे पहर को आ जाइए । जैनब आटा गूँध रही थी | "अच्छा? कह कर चुप हो रही। आदमी ने फिर बाहर से आवाज दी। तब तो जैनब को मजबूर हो कर ठठना ही पड़ा। नांक-माँ चद्ाती, नौकर को जली-कटी सुनाती चली । थो है, मेरी ही खान का गाहक है। बिसे देखो, मेरा ही दुश्मन | वाह, एक काम छोड़ दूसरे पर ऊपको। अबकी चाँद हो, तो मैं तनख्याह लेके अपने घर बैठ रहूँ | क्यों, निगोड़ी नौकरी का मी कुछ अकाल है ! जैनब का क्रायदा था कि काम सब्न करती थी, मगर बड़त्रड्डा कर। बात-बांत पर तिनक जाना तो गोया उसकी घूँटी में पड़ा था। मगर अपने काम में चुस्त थी। इसलिए! उसकी खातिर द्वोती थी । मुँह फुला कर बाइर गयी | पहले तो जाते ही खिदमतगार को खूब आड़े द्वाथों लिया--क्या घर भर में . मैं ही अकेली हैं ! जो पुकारता है, मुझी को पुकारता है। मुए उल्लू के मुँद् में नाम पड़ गया है ।

खिदमतगार ने कद्ा-मुझसे क्यों बिगड़ती हो ! यद्द मियाँ आये हैं; हुजूर से जा कर इनका पैग़ाम कह दो । मगर ज़रा समझ-बूझ कर कद्दना । सब बातें सुन छो अच्छी तरह |

जैनब-- (उस आदमी से) कौन दो जी ! क्या कहते हो! तुम्हें भी इसी वक़्त आना था १

आदमी--मल्लाद हूँ, और हूँ कौन ? जा कर अपने मियाँ से कह दो, आज जहाज रवाना दोगा । अमी दस घंटे की देर दे । तैयार हो जाइए ।

चैनब ने अंदर जा कर यह खबर दी।| बेगम साहइबा ने जहाज़ का 5!म सुना, तो धक से रह गयीं। चेहरे का रंग फीका पड़ गया । कछेजा घड़-घड़ करने लगा । अगर बन्त न करतीं, तो आँख जारी हो जाते ।

मिरजा--लीनिए हज़रत, अब कूच की तैयारी कीजिए |

आजाद--तैयार बैठा हूँ। यहाँ कोई बड़ा लंबा चौड़ा सामान तो करना नहीं । एक बैग, एक दरी, एक छोटा, एक लकड़ी | चलिए, अलाइ-अलाइ, खेरसलाह । वक़्त पर दन से खड़ा हूँगा ।

खोज़ा--यहाँ भी वही हाल है। एक डिबिया, एक प्याली, चंद पीने की एक निगाली; एक क्रतार, एक दोना मिठाई का, एक चाकू, एक क्रर्ौी; बस, अछाह अलाइ, खेरसल्लाह । बंदा भी कील-काँटे से दुरुस्त है !

यह सुन कर मियाँ आजाद और मिरजा साहब- दोनों हँस पड़े । मगर बेगम साहना के होंठों पर हँसी न आयी । मिरजा साहम्र, तो उसी वक़्त मब्लाह से बातें करने के लिए. बाहर चछे गये और यहाँ मियों आज़ाद और बेगम साहबा, दोनों अक्रेले रह गये । कुछ देर तक बेगम ने मारे रंज के सिर तक न उठाया । फिर बहुत सैँमल कर बोलीं-मेरा तो दिख बैठा जाता है ।

आबाद--आप धबराइए नहीं, मैं जल्दी वापस आऊँगा |

बेगम--हाय, अगर इतनी ही उम्मेद होती, तो रोना कादे का था !

आजाद--सब्र को हाथ से न जाने दीजिए, । छुदा बड़ा कारसाज़ हे ।

बेगमन--आँखों में अँपेरा सा छा गया | क्या आन ही जाओगे! आज ही ! तुम्हारे जाने के बाद मेरी न जाने क्या हालत होगी!

आज़ाद--खुदा ने चाहा, तो दँती-खुशो फिर मिलेंगे |

इतने में मिरज़ा साहब ने आ कर कहा कि सुन्रह को तड़के जहाज रवाना होगा ।

बेगम--यों जाने को सभी जाते हैं, छाखों म्द-औरत हर साल हज फर आते हैं; मगर लड़ाई में शरीक होना ! बस, यही खयाल.तो मारे डालता है ।

आज़ाइ-ये लाखों -आदमी जो ल़ड़ने जाते हैं, क्या सब के सब मर हींजाते हैं! फिर क़ज़ा का वक़्त कौन टाल सकता है १ जैसे यहाँ, वैसे वहाँ ।

मिरज़ा--भई, भेरा तो दिल गत्राही देता है कि आप सुखेरू हो कर आयेंगे | और यों तो जिंदगी और मौत खूटदा के हाथ है ।

बेगम -ये सत्र बातें तो में भी जानती हूँ ! मगर समझाजऊँ किसे !

मिस्जा-जब् जानती हो, तत्र रोना-घोना बेकार है। हाथ-मुँह धो डालो । जेनतर, पानी लाओ | वहीं तो ठममें ऐच है कि सुत्रह का काम शाम को और शाम का काम सुबह को करती हो। लछाआ पानी झटपट |

जैनब--या अल्लाह ! अब आलू छीटँ या पानी लाऊँ !

आखिर जैनत्र दिल ही रिल में बुरा-भव्य कहती पानी लायी | बेगम ने मुँह धोय! और बोलीं-अब्र मैं कोई ऐसी ब्रात न कहेंगी, जिससे मियाँ आजाद को रंज हो |

सोीनीर--अजी मियोँ आजाद | चलने का वक़्त करीत्र आया। कुछ मेरी भी फ़िक्र है ? वह करोली लेते ही लेत रह गये १ अफीम का क्या बंदोचस्त किया ! यार, कही ऐसा न हो कि अफीम राह में न मिले और हम जीत जी मर मिटे । जरी जैनब के, ब्राज़ार तक आज कर काई साठ-सत्तर क़तारें तो नम नम मेंगवा दीजिए. । नहीं तो मे जीता न फिलगा |

जैनब--हाँ, जनब ही ता बर भर में फालतू है | लपक कर बाज़ार से ले क्यों नद्दी आते ! क्या चूडियाँ टूट जायेगी? और मे औीरतज्ञात अफ़ोम लेने कहाँ जाऊँगी नला ?

ब्रेगम--रास्ते में इस पगले के सबत्र से खूब चहल-पहल ३हेगी।

आज़ाद-हां, इसी लिए तो लिये जाता हूं । मगर देग्विए, क्या क्या बेहूदगियों करते हैं !

सोजी--अजी, आपसे सी कदम आगे रह, ते सही |

मिरज़ा--हसमें क्या शक है ? लेकिन उस तरफ़ कोई बहुरुपिया हुआ, तो कैसी ८हरेगी ?

खोजी--सच कहता हें, इतनी क़रौलियाँ भोकूँ कि याद करें। में दगशानेवाली उ3छटन भे रिसाछवार था | अवध मं ख़दा जाने कितनी गठियाँ जीत लीं |

वेगम-- ऐ रिसालशर साहब, आपकी क़रीली क्या हुई।! मोर्चा खा गयी हो तो साफ़ कर लीजिए | ऐसा न हो, मोरचे पर म्यान ही में रहे |

जैनब --रिसालदार साहब, हमारे लिए वहाँ से क्या छाइएगा !

सोजी--अभजी, जीते आने, तो यही बड़ी बात है। यहाँ तो बदन काँप रहा है |

इन्हीं बातों में चलने का वक़्त आ गया। आजाद ने अपना और खोजी का तामान बाँधा | बग्धी तैयार हुई। जब मियोँ आज़ाद ने चलने के लिए लकड़ी उलयी, तो बेगम बेचारी बेअख्तियार रो दीं। काँपते हुए हाथों से इमामजामिन्र की अशरफ़ी बाँधी और कहा--जिस तरह पीठ टिखाते हो, उसी तरह मुंह भी दिखाना |

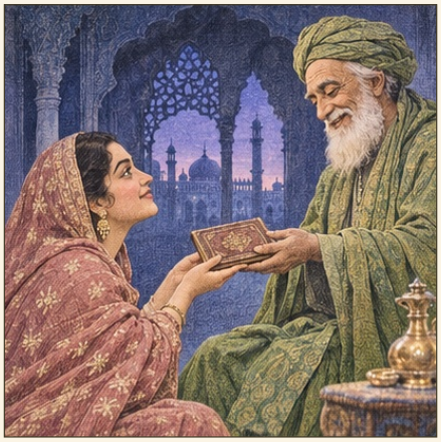
म्ियाँ आजाद, मिरज्े और खोज्ी जा कर बअग्वी पर बेठे | जब गाड़ी चली, तो लोजी बोले- हमसे कोई नहाने को कहेगा, तो हम क़रोली ही भोंक दंगे ।

मिरज़ा--तो जब्र कोई कहे न !

खोजी--हाँ, बस, इतना याद रखिएगा जरा । और, दम यह*भी बताये देते है कि गन्ना चूस-चूस कर समुद्र के बाप में फेकेग, और जो कोई बोलेगा, तो दबोच बैटंग । हाँ, ऐसे-वैसे नहीं हैं यहाँ !

सामने समुद्र नज़र आने लगा |

एक ख़त, दो बहनें



०१

सपने में एक किताब

हरे कपड़ों में एक बुज़ुर्ग ने हुस्नआरा को किताब दी। उसमें तूफ़ान से बेख़ौफ़ रहने का शेर निकला।



०२

कौन पढ़ेगा?

सुबह आज़ाद का ख़त आया। दोनों बहनें उसे पहले पढ़ना चाहती थीं। आख़िर सिपहआरा ने पढ़ सुनाया।



०३

एक टोकरी, दो हाथ

पाँच रुपये की पंचमेल मिठाई आई। दोनों बहनें उसे लेने लपकीं। टोकरी हुस्नआरा को मिली।

HINDI TEXT

प्रसंग ४१

हुस्नआरा मीठी नींद सो रही थी। ज्वात्र में क्या देखती है कि एक बूंदे मियाँ सब्ज कपड़े पहने उसके क़रीब आ कर खड़े हुए और एक किताब दे कर फ़रमाया कि इसे लो और इसमें फ़ाल देखो । हुस्नआरा ने किताब ली और फ़ाल देखा, तो यह

शेर था -- हमें क्या खोफ़ है, तूफ़ान आवे या बला टूटे ।

आँख खुल गयी तो न बूंदे मियाँ ये, न किताब । हुस्नआरा फ़ाल-वाल की क्रायछ न थी; मगर फिर भी दिल को कुछ तसकीन हुई । सुबह को वह अपनी बहन सिपह-आरा से इस ख्वाब का जिक्र कर रही थी कि लोंडी ने आज़ाद का ख़त ला कर उसे दिया । हुस्नआरा--हम पढ़ेंगे | सिपहआरा--वाह, दम पढ़ेंगे | हुस्नआरा--(प्यार से झिड़क कर) बस, यही बात तो हमें भाती नहीं । सिपहआरा--न भावें, धमकाती क्या हो ! हुस्नआरा- मेरी प्यारी बहन, देखो, बड़ी बहन का इतना कहना मान जाओ । लछाओ खत खुदा के लए | सिपहआरा-इम तो न देंगे। हुस्नआरा--तुम तो खाहमख्वाह जिद करती हो, बच्चों की तरह मचली जाती हो । सिपहआरा-- रहने दीजिए, वाह-वाह ! हम आजछषाद का खत न पढे ! यह कहकर सिपदहनरा ने आज़ाद का खत पढ़ सुनाया-- “अब तो जाते हैं हिंद से आजाद, फिर मिलेंगे अगर खुदा छाया। आज जहाज पर सवार दह्वोता हूँ । दो घंटे और दिदुस्तान में हूँ। उसके बाद सफ़र, सफ़र, सफ़र । मैं खुश हूँ । मगर इस खयाल से जी बेचैन है कि तुम बेक़रार होगी | अगर यह मालूम हो जाता कि ठुम भी खुश हो, तो जी जाता । अब तो यही

धुन है कि कब रूम पहुँचूँ । बस, रुख्सत ।

- तुम्हारा आब्ाद |

“हाँ, प्यारो सिपहआरा को खूब समझाना | उनका दिल बहुत नर्म है। इस बक़त खोजी पानी की सूरत देख कर मचल रहे हैं |!

हुस्नआरा--यद मुआ खोज्जी अमी जीता ही है !

सिपदआरा--उसे तो पानी का नाम घुन कर जूड़ी चंद भाती थी |

हुस्नआरा--आखिर बेचारे .जद्दाज पर खबार हो गये | .अब देखे, रूम से कब खत आता है !

सिपहआरा--अब तो फ़ाल पर ईमान छायी ! देखा, में कया कहती थी ! अन्न मिठाई खिलवाइए | जरी, कोई यहाँ आना | पाँच रुपये की पंचमेल मिठाई वाओ। हुस्नआरा--यह क्या खन्त है ! सिपहआ रा--आपकी बला से । एक डली तुम भी खा लेना हुस्नआरा - खूब | पाँच रुपये की मिठाई, और उसमें इमको एक डी मिले ! आते ही आते आधी न चख जाऊँ, तो कहना | सिपहआरा--वाह, दे चुकी में | ऐसी कच्ची नहीं हैं । हुस्नआरा--भला, किताब से आगे का द्वाल क्या माठस द्ोगा ! मुझे बड़ी हँसी आती हद, जब कोई फ़ाल देखता है। आँखें बंद किये हुए थोड़ी देर बड़बढ़ाये, और किताब खोली । फिर अपने-अपने

तौर पर मतलब निकालने छगे । यह सब्च दकोसल! है । हमको बड़े उस्ताद ने सबक़ पढ़ाया है| थोड़ी देर में सिपाद्दी ने बाहर से आवाज दी कि मामा, मिठाई ले जाओ । सिपइ-आरा दौददी- मुझे देना । हुस्नआरा अलग फुर्ती से झपटी कि हभें,इमें । अब मामा बेचारी किसको दे, एक चंगेल, दो गाहक । उसने हुस्नआरा को चंगेली दे दी । हुस्नआरा--अब बतलाइए, खाने में रूग्गा लगाऊँ ! बरफ़ी पर चाँदी के चमकते हुए. वर्क कितनी बहार देते हैं । सिपहआरश+--मामा, तुम दीवानी हो गयी हूं। कुछ ! रुपये हमने दिये थे या इन्होंने ! पराया माल क्या झप से उठा दिया ! वाह-बाह ! हाँ-हाँ--कहती जाती हें, सुनती दी नहीं । मामा--वह आपकी बढ़ी... सिपहआरा--चलछो, बस रहने भी दो । ऊपर से बातें बनाती हो । सिपहआरा ने मिठाई बाँटी, तो मामा हुस्नआरा की बूढ़ी दादी को भी उश्षमें से दस-पाँच डलियाँ दे आयी। बूटी -- यह मिठाई केसी ! मापा--हुज्र, हुस्नआरा ने फ़ाल देखी थी । बूदी --फ़ाल कैपी ! माना--चिट्ढठी आयी थी कहीं से । बूद्धी--चिट्टी. केसी ! मामा-«बीती, वही जो हैं, देखिए, क्या नाम है उनका जदाई | बूदी--जदाई कैसी ! छा, मेरी छड़ी तो दे । बूटी बेगम कंमर झ्ुकाये, लठिया टेकते हुए चीं। आ कर देखा, दोनों बहन मिठाई चख रही हैं । बूदी--यह मिठाई केसी आयी है ! सिपहआरा---अम्माँजान, हुस्नआरा इमसे शर्त हारी है। कहती थीं, हमारे दीवान-हाफ़िल में चार सौ सफ़े हैं; मेंने कह्दा, नहीं चार सौ चालीस हैं।

बूटी--यह बात थी ! मामा सठिया गयी है क्या ! जाने क्या-क्या बकती था।

शाम के वक़्त दोनों बहनें सहेलियों के साथ हाथ में हाथ दिये छत पर अठखेलियाँ कर रही' थीं। एक ने दूसरे के चुटकी ली, क्रिसी ने किसी को गुदगुदाया, ज़रा खयाल नहीं कि तिमंजिले पर खड़ी हैं, जरा पाँव डगमगाया तो ग़ज़ब दी हो जाय | हवा सन-सन चल रही थी | एकाएक एक पतंग आ कर गिरी। सिपहआरा ने लपक कर लूट लिया | आहाहा, इत पर तो किसी ने कुछ लिखा है--माहीजालवाला पतंग, सब्र की सब्र दौड़ पड़ीं | हुस्नआरा ने ये शेर पढ़ कर सुनाये--

बहुत तेज़ हे आजकल तीरे मिजर्गों; कोई दिल निशाना हुआ 'चाहता है | मेरे कतब्छ करने को आता है कातिल: तमाम आज क्षिस्सा हुआ चाहता है।

हुस्न आरा का माथा ठनका कि कुछ दाल में काछा है। ताड़ गयी कि कोई नये आशिक पैदा हुए, मुझ पर या सिपहआरा पर हौदा हुए। माद्म नहीं, कौन है ! कहीं मुझे बरहर देख तो नहीं लिया ! दिमाग़ फिर गया है मुए का | जब सब्र रह्दे लियाँ अपने-अपने घर चली गयों तो हुस्तआरा ने बहन से कहा--तुम कुछ समझी ! यह पतंग पर क्या लिखा था ! तुम तो खेल रही थीं; मे उस नक्त से इसी फिन्र में हूं कि माजरा क्या है !

सिपदहआरा -कुछ-कुछ तो मैं भी समझती हूँ; मगर अब किसी से कहो-सुनो नहीं।

हस्नआरा--लच्छन बुरे हैं । इस पतंग को फाड-फूड़ कर फेक दो । कोई देखने नपाये।

इतने में खिमतगार ने मामा को आवाज़ दी और मामा बाहर से एक लिफ़ाफ़ा ले आयी । हुस्नआरा ने जो लिफ़ाफ़ा लिया, तो मारे खशबू के दिमाग़ तर दो गया फिर माथा उनका ! खशबू कैसी | मामा से बोली--किसने दिया है !

मामा--ए.क आदमो खिदमतगार को दे गया है। नाम नहीं बताया। दिया और लंबा हुआ ।

सिपह आरा--खोलो तो, देखो है क्या !

लिफ़ाफ़ा खोला, तो एक खत निकला | लिखा था--एक ग़रीब मुसाफ़िर हूँ, कुछ दिनों के लिए आपके पड़ोस में आ कर ठट्द रा हूँ । इसलिए कोई रोर न समझ्लि- 'छगा । सुना है कि आप दोनों बहनें शतरंज खेडने में बक॑ हैं | यह नक़्शा भेजता हूँ । मेरी खातिर से इसे हल कर दो, तो बड़ा एइसान हो मैंने तो बहुत दिमारा छड़ाया पर नक़्शा समझ में न आया।..

-मिरज़ा हुमायूँ फ़र ।! इस खत के नीचे शतरंज का एक नक़्शा दिया हुआ था | सिपदआरा--त्रा जी, सच कहना, ग्रह तो कोई बड़े उत्तताद माद्म होते हैँ । मगर तुम जरा गौर करो, तो चुटकियों में इल कर लछो। तुम तो बड़े-बड़े नक्शे इल कर लेती हो | मला इसकी क्या हक़ीक़त है !

हुस्नआरा--बहन, यह नक़्शा इतना आसान नहीं हे । इसको देखो तो अच्छी तरह । मगर यह तो सोचो कि भेजा किसने है !

सिपहआरा--हुमायूँ क़र तो किसी शाहज़ादे ह्वी का नाम होगा। मामा को बुछाओ और कहो, सिपाही से पूछे, कौन लाया था ! क्या कद्दता था ? आदमी का पता मिल जाय, तो भेजनेवाले का पता मिला दाखिल है |

मामा ने बाहर जा कर इशारे से सिपाही को बुलाया ।

सिपाही--कद्दो, क्या कहती दो !

मामा--जरी, इधर तो आ ।

सिपाही--वहाँ कोने में क्या करूँ आनके | कोई वहाँ होले-हौले बातें करते देखेगा, तो क्या कहदेगा | यहाँ से निकलवा दोगी क्या !

मामा--ऐ! चछ छोकरे ! कल का लौडा, केसी बातें करता है ! छोटी बेगम पूछती हैं कि जा आदमी लिफ़ाफ़ा लाया था, वह किघर गया १ कुछ मालूम है !

सिपाही--वह तो बस छाया, और देके चम्पत हुआ; मगर मुझे मादूम है, वह, सामनेवाले बाग़ में एक शाहज़ादे आनके टिके हैं, उन्हों का चोबदार था ।

हुस्नआरा ने यह सुना, तो बोली--शाहज़ादे तो हैं, मगर बदतमीज ।

सिपह आरा---यह क्यों !

हुस्नआरा - अव्वल तो किसी कुँआरी शरीफ़ज़ादी के नाम ख़त भेजना बुरा, दूसरे पतंग गिराया | ख़त भेजा, वह भी इश्र में बसा हुआ ।

सिपहआरा--बा जी, यह तो बदगुमानी है कि खत को इत्र से बसाया | शाह-जादे हैं, हाथ की ख़शबू ख़त में भी आ गयी | मगर ख़त अदब से लिखा है ।

हुस्तआरा--उनको खत भेजने की जुरंत क्योंकर हुई। अन्न ख़त आये, तो न लेना, खबरदार । वह शाहज़ादे, हमारा उनका मुक्रात्रठा कया ! और फिर बदनामी का डर।

सिपहआरा - अच्छा, नक़्शा तो सोचिए | इसमें तो कोई बुराई नहीं !

हुस्नआरा ने बीस मिनट तक गौर किया और तत्र हँस कर बोली - लो, हल कर दिया। न कद्दोगी । अल्लाह जानता है, बढ़ी टेढी खीर है। लाओ, फिर अब्न जवात्र तो लिख भेजें । मगर डर भादूम होता है कि कहीं उँगली देते दी पहुँचा न पकड़ लें। -जाने मी दो । मुफ़्त की बदनामी उठाना भला कौन सी दानाई दै !

सिपहआरा->नहीं-नहीं बहन, जहूर लिख भेजो। फिर चाहे कुछ न लिखना ।

हुस्नआरा--अच्छा, लाओ लिखें, जो होना होगा, सो होगा !

सिपदेआरा - हम बतायें। खत-बत तो लिखो नहीं, बस, इस नक्शे को हल करके डाक में भेज दो ।

१८

HINDI TEXT

प्रसंग ४२

शहर से कोई दो कोस के फ़ासले पर एक बाग है, जिसमें एक आलीशान इमारत बनी हुई है | इसी में शाहजादा हुमायूँ फर आ कर ठद्रे हैं। एक दिन शाम के वक़्त शाहेलादा साहब बाग़ में सेर कर रहे थे और दिल ही दिल में सोचते जाते ये कि शाम भी हो गयी मगर ख़त का जवाब न आया । कहीं इमारा ख़त भेजना उन्हें बुरा तो न माद्म हुआ । अफ़सोस, मैंने जल्दी की। जल्दी का काम शैतान का। अपने खत और उसकी इबारत को सोचने छगे कि कोई बात अदब के ख़िलाफ़ जवान से निकल गयी हो तो राजब्र ही हो जाय । इतने में कया देखते हैं कि एक आदमी साँड़नी पर सवार दुर से चला आ रहा है। समझे, शायद मेरे खत क्रा जवाब छाता होगा। खिदमतगारों से कहा कि देखो, यह कौन आदमी है ! ख़त लाया है या खाली हाय आया है ! आदमी लोग दौड़े दी ये कि साँडनी सवार हवा दो गया |

थोड़ी देर में एक चपरासी नज़र आया | समझे, बस, यद्द क़ासिद है। चपरासी ने दरबान को खत दिया और शाहज़ादा साहब की बाँछें खिल गयीं। दिल ने गवाही दी कि सारी मुरादें मिल गयीं। ख़त खोला, तो एक लेक्चर का नोटिस था। मायूस हो कर खत को रख दिया और सोचा कि अब खत का जवाब आना मुश्किल है | ग़म ग़छत करने को एक ग़ज़ल गाने छगे । इतने ही में डाक का हरकारा लाल पगिया जमाये, धानी दगछा फड़काये, लहबर तोते की यूरत बनाये आ पहुँचा और खत दे कर रवाना हुआ | शाइज़ादे ने खत खोला और इनारत पदी तो फड़क गये । द्वाय, क्या प्यारी ज़बान है, क्या बोल-चाल है। जब्ान और बयान में भी निगाह की तरह जादू कूट-कूट कर भरा है। उस नाजुक ह्राथ के सदक्े, जिसने ये सतरें लिखी हैं | लिखते वक़्त कलाई लचकी जाती होगी। एक-एक लफ़्ज से शोखी टपकती है, एक-एक हरफ़ से रंगीनी झलकती है। और नक्शा तो ऐसा हल किया कि क़लूम तोड़ दिये । आपघिर मं लिखा था--

इश्क़ का हाल बेसवा जाने,
हम बहू-बेटियाँ ये क्या जानें !

खूद ही शेर पटते थे आर खद ही जवाब देते थे ।

एकाएक उनके एक दोस्त आये और बोले--कहिए, कुछ जवाब आया !

या धता बता दिया !

शाहजादा- वाह, घता तुम जैसों को बताती द्ोंगी। छो, यह जवाब है।

दोस्त--(लिफ़ाफ़ा पढ़ कर) वाह, बड़े अदब से खत लिखा है |

शाहजादा--जनाब, कुछ बाजारी ओरतें थोड़े हैं। एक-एक लफ़न्न से शराफ़त बरसती है ।

दोस्त-फिर पूछते क्या हो ! गहरे हैं। हमें न भूलिएगा । अब शाहज़ादे को फ़िक्र हुई कि किसी तरह मुलाक़ात की ठदरे | बने या बिगड़े | जत्र आमने-सामने ज्रात हो, तब दिल को चेन आये। सोचते-सोचते आपकों एक हिकमत सूझ ही गयी | मूँछों का सफ़ाया कर दिया, नकली बाल लगा लिये, ज्ञन:ने कपड़े

पहने और पालकी पर सवार द्वो कर हुस्नआरा के दरवाज़े पर जा पहुँचे | अपन महरी को साथ ले लिया था। महरी ने पुकारा-भरे, कोई है ! जरी अंदर लबर कर दो कि मिरज़ा हुमायूँ फ़र की बहन मिलने आयी हैं । बड़ी बेगम ने जो सुना, तो आ कर हुसस्नआरा से बोलीं -जरा करीने से तैठाना तमीज़ से बातें करना। कोई भारी सा जोड़ा पहन लो, समझी ! हुस्नआरा--अम्माँजान, कपड़े तो बदल हिये हैं ! बड़ी बेगम--देखूँ । यह क्या सफ़ेद दुपट्टा हे ! हुस्नआरा--नहीं, अम्माँजान, गुलाबी है। वही जामदानी का दुपट्टा जिस; कामदानी की आड़ी ब्रेल है | बडी बेगम - बेटा, कोई और भारी जोड़ा निकालो | हुस्नआरा--ह में तो यही पसंद है । इतने में आशिक बेगम पाछकी से उतरीं और जा कर ब्रोलीं--आदाब बज लाती हूँ । हुस्नआरा--तस्लीम ! आइए | आशिक--आओ बहन, गले तो मिर्ले । दोनों बहने बेक्षिझक आशिक्र, बेगम से गले मिलीं | सिपह आरा-- आमद हमारे घर में किसी महलक़ा की है ; यह शाने किर्दगार यह कुदरत ख़दा की है। हृश्लआरा-- यह कौन आया है रख कर फूल, मुए अंबर अफ़शों में . सता इतरायी फिरती है जो इन रोजों गुकिश्ष्तों में । आशिक्र-- सफ़दर" जो से राजे मुहब्बत अर्योंन हो दिल आशनाए-दद हो, छब पर फ़र्गों न हो । सिपहआरा--आपने आज गरीबों पर करम किया । हमारे बड़े नतीत्र | आशिकर--बहन, हमारी तो कई दिन से ख्वाहिश थी कि आपसे मिलें, मगर फिर हम सोचे कि शायद आपकू नागबार हो | हम तो गरीब हैं। अमीरों से मिलते हुए जरा वह मातम होता है। हुस्नआरा--बना है। आप तो खुदा के फ़ज्छ से शाहबज़ादी हैं, हम तो आपको रिआया हैं |

आशिक़--आप दोनों बहनें एक दिन कोठे पर टहल् रही थीं, तो हुमायूँ फ़र ने मुझे बुला कर दिखाया था| हुस्नआरा ने गिलौरी बगा कर दी और आशिक बेगम ने उन्हीं के ह्वाथो से खायी | कत्था केबड़े में बसा हुआ, चाँदी-सोने का वक़ लगा हुआ, चिकनी डली और इलायची । ग़रज़ कि बड़े तक़ल्लछफ़ वाली गिलौरियाँ थी । थोड़ी देर के बार तरह-तरह के खाने दस्तरख्वान पर चुने गये और तीनों ने मिछ कर खाना खाया । खाना खा कर आभक बेगम ने बेतक़छफ़ीो से हुस्नआरा को रानों पर सिर रख दिया और लेट रहीं। सिपहआरा ने उठ कर कश्मीर का एक दुशाला उदा दिया और क़रीत्र आ कर बैठ गयी। आशिक़--बहन, अल्लाह जानता है, तुम दोनों बहनें चाँद को भी शरमाती हो । हुस्नआरा--और आप ! अपने जोबन से नहीं यार खबरदार इनोय ; नाज़ी अंदाज से वाक्रिफ़ नहीं ज़िनहार हइनोज | तीनों में बहुत देर तक बातें होती रहीं । दस बजे के क़रीब आशिक बेगम उठ बैठीं और फ़रमाया कि बहन, अब इम रुख्सत होंगे । जिंदगी द्वै तो फिर मिलेंगे | सिपहआरा-- बेचेन कर रहा है क्या-क्या दिलोजिगर को ; हरदम किसी का कद्दना, जाते हैं हम तो घर को । इस तरह मुहब्बत की बातें करके आशिक बेगम रुख्सत हुईं और बाते वक़्त कद गयीं कि एक दिन आपको हमारे यहाँआना पड़ेगा । पालकी पर सवार ही कर आशिक बेगम ने मामाओं, ,खिदमतगारों और दरबानों को दो-दो अश्यर्फ़ियाँ इनाम की दीं और चुपके से मामा का एक तसबीर दे कर कहा कि यह दे देना | कहागें ने तो पाछकी उठायी और मामा ने अंदर जा कर तसवीर दी । हुस्न आग ने देखा, तो धक से रह गयीं | तसबीर के नीच लिखा था-- प्यारी, मे आशिक़ वेगम नहीं हूँ, हुमायूँ फ़र हूँ । अब अगर तुमने बेवफ़ाई की तो जहर ग्या कर जान दे दूंगा !! हुम्नआर। - बहन, गाज़न्र ही गया ! सिपद्ठ आरा-कक््या, हुआ क्या !? बोलो ते। ! हु आारा--लछों, यह तसवीर देखो । मिप्रद्ेआरा -(तसवीर देंख कर) अरे, ग़ज़ब दो गया | इसने तो बड़ा जुल दिया । हुस्नभआारा -(हारे की कोछ नाक से

+िकाल कर) बहन, में तो यद्द खा करसो रहती हैं । सिपद आार!--(काल छीन ब.र) उफ जाकि! ने बड़ा धोखा दिया ।

हुस्नआरा--हम गले मिल चुकों | जालिम जानू पर सिर रख कर सोया ।

लिपदहआरा--मगर बा जी, इतना तो सोचो कि बहन कदद-कद्द कर बात करते ये। बहन बना गये हैं ।

हुस्नआरा--यह सब बातें हैं | किसकी बहन और कैसा भाई |--

वह यों मुझे देख कर गया है; खाल उसकी जो खींचिए,, सज़ा दे !

सिपहआरा--वाह ! किसी की मजाल पड़ी है जो हमसे शरारत करे!

हुस्नआरा--ख़बरदार, अब उससे कुछ वास्ता न रखना । आदमियों को ताकीद कर दो कि किसी का ख़त बेसमझे-बूझे न ले, वर्ना निकाल दिये जायँगे !

सिपहआरा--जरी सोच लो। लोग अपने दिल में क्या कहेंगे कि अभी तो इतने जोश से मिलीं और अभी यह नादिरी हुक्म ।

हुस्नआरा--हाँ. सच तो है। अभी तक हमो तुम जानते हैं |

सिपहआरा- कहीं ऐसा न हो कि वह किसी से जिक्र कर दें |

हुस्नआरा--इससे इतमिनान रखो । वह शोहदे तो हैं नहीं ।

सिपदआरा- वाह, शोददे नहीं, तो और हैं कौन ! शोहदों के सिर पर क्या सींग दोते हैं !

हुस्न आरा--अनत्र आज से छत पर न चदना |

सिपदआरा--वाह् बहन, बीच खेत चढ़ें। किसी ने देख द्वी लिया तो क्या ! अपना दिल साफ़ रहना चाहिए।

हुस्नआरा-मुझे तो ऐसा मादूस होता है कि शाहज़ाद साहब तुम्हारी फ़िक् में हैं ।

सिपहआरा--चलिए,, बस, अब छेड़खानी रहने दीजिए |

हुस्नआरा--भरे वाइ ! दिल में तो खुशी हुई ढंगी। चाहे जब्ान से न कद्दो ।

सपहआरा-- आप भी क्या वाही-तबाद्दी बकरी ४ ?

हुस्नआरा--आखिर बुरा क्या है ! शाहलज़ादे हैं कि नहीं। और सूरत तो तुम देख ही चुको हो । ला आज के दुसरे ही महीने दरवाजे पर शहनाई बच्ती द्वोगी ।

सेपहआरा--हम उठ कर चले जायेंगे, हाँ |! यह हँसी हमका गवारश नहीं ॥

हुस्नआरा - खुदा की कसम, में दिल्लगी से नहीं कहती । आश्चिर उस बेचारे में क्या बुराई है ! हसीन, मालवार, शौकीन, नेकत्ररूत ।

सिपहआरा-ब्रस, और दस-पाँच बातें कहिए न |

सपहआरा के दिल पर इन यातों का बहुत नगड़ा असर हुआ | आदमी की पत्नायत भी क्या जल्द पछटा खाती है | अभी तो हुमायूँ फ़र को बुरा-भल्य कह रही पीं और अब दिल ही दिल में खिली जाती हैं कि हाँ, है तो सच | आखिर उनमें ऐज दी क्या है!

दोनों बहनों में तो ये बाते हो रही थीं और वह महरी, जो आशिक बेगम के साभ आयी थी, दरवाज़े पर चुपकी खड़ी सुन रही थी। जब हुस्नआरा चुप हुई, तो उसने अंदर पहुँच कर सलाम किया । हुस्नआरा--कोन हो १ महरी- हुजूर, में हैँ अच्छन । हुस्न आरा -- कहाँ से आयी हो ! महरी--आप मुझे इतनी जल्द भूल गयीं ! बेगम साहबा ने भेजा है । हुस्नभारा- बेगम साहबा कौन ! महरी--वही आशिक़ बेगम जो आपसे मिल गयी हैं | हुस्नआरा--कहो, क्या पेग़ाम भेजा है | मदहरी --(मुसकिरा कर) हुजूर को ज़रा वहाँ तक तकलोीफ़ दी है । महरी का मुसकिराना दोनों बहनों को बहुत बुरा लगा । मगर करतीं क्या हरी उन्हें चुप देख कर फिर बोली-बेगम साहबा ने फ़रमाया है कि अगर कुछ हज हो, तो इस वक़्त हमारे यहाँ आइए । सिपहआरा--कह्द देना, हमें फ़ुरसत नहीं । महरी--उन्दोंने कटद्दा है कि अगर आपको फ़रसत न हो, तो में खूद ही आा ऊँ। सिपहआरा--जी, कुछ जरूरत नहीं हैं । बस, अब दूर द्वी स सत्यम है | की: त्न आज से तुम न आना यहाँ। छुना कि नहीं ! महरी--बहुत अच्छा | लौंडी हुक्म बज्ा लावेगी। बेगम साहबा की जेसी करी, बेसी ही हुजूर की । सिपहआरा--चलो, बस । बहुत बातें न बनाओ । कह देना, खर इसी में ह कि ब कोई खत वत न आये । शाहलज़ादे हैं, इससे छोड़ दिया, कोई दूसरा होता ते। [न हो जाता । इतने बड़े शाहज़ादे और ग़रीत्र शरीफ़ज़ादियों पर नज़र डालते हैं । प] चले, तो वह सज़ा दूँ कि उम्र भर याद करें। वाद्य ! अच्छा जाल फेंछाया है । हुस्नआरा-- बस, अब खामोश भी रहदो | कोई सुन लेगा। अन्न कुछ कद्दो न नो । (महरी से) चलो, सामने से हटो | महरी--हुजूर, जानब्रशी हो तो अज करूँ । हुस्नआरा--अब तुम जाओ, हमने कई दफ़े कह दिया | नहीं पछताओगी ।! महरी रवाना हुई | क़सम खायी कि अब नहीं आने की। सिपद्दआरा का चेद्टरा रे ग़रसे के लाल-मभूका हो गया | हुस्नआरा समझाती थीं कि बहन, अब और तों का खयाल करो । लेकिन सिपदआरा ठंडी न द्वोती थीं। बहुत देर के बाद लीं--बस, माद्म हुआ कि कोई शोहदा है; अगर सश्ची मुहब्बत है, तो हमा र शर्म के साथ जाहिर करना चाहिए. था इस बेतुकेपन से !

HINDI TEXT

प्रसंग ४३

शाहज़ादा हुमायूं फ़र महरी को भेज कर टहलने लगे, मगर सोचते जाते थे कि कहीं दोनों बदन ख़फ़ा न हो गयी हों, तो फिर बेढदब ठहरे । बात की बात जाय, और शायद जान के भी छाछे पढ़ जायें। देखें, महरी क्या खबर छाती है। खुदा करे, दोनों महरी को साथ ले कर छत पर चली आवें । इतने में महरी आयी और मुँह फुला कर खड़ी द्वो गयी |

शाहज़ादा--कहो, साफ़-साफ़ |

« महरी--हुजूर, क्या अर्ज़ करूँ !

शाहजादा--बह तो हम तुम्हारी चाल ही से समझ गये थे कि बेढब हुई | कहद चलो, बस ।

महरी--अब लॉडी वहाँ नहीं जाने की ।

शाहज़ादा- पहले मतलब की बात तो बताओ कि हुआ क्या !

महरी--मैंने जा कर परदे के पास से सुना कि आप ही की बातें चुपके-चुपके कर रही हैं | में जो गयी, तो बड़ी बहन ने रुखाई के साथ बातें कीं, और छोटी बहन तो बस, बरस ही पढ़ीं। में खड़ी काँप रही थी कि किस मुसीजत में पड़ी। बहुत तेज होके बोलीं -अब् न आना, नहीं तो तुम जानोगी। और उनसे भी कान खोलके कह देना कि बहुत चल न निकलें | बहुत ही बिगड़ी । मैं चोर की तरह चुपके-चुपके सुनती रही ।

हुमायूँ--अफ़सोस | तो बहुत ही बिगड़ी !

महरी--क्या कहूँ हुजूर, अपने आपे दी में नहीं थीं ।

हुमायूँ--हमने बड़ी राछती की । पहले तो हमें जाना न था, और गये तो पह-चनवाना न था।

महरी--अब जाने वाने का इरादा न कीजिएगा !

दुसरे दिन हुमायूँ फ़र छत पर निकले, तो क्या देखते हैं कि हुस्नआरा बेगम अपने कोठे पर चदी हैं ओर मैंह पर नक़ाब डाले खड़ी हैं। इतने में सिपहआरा भं ऊपर आयी ओर शाइलज़ादे को देखते ही उचक कर आड़ में हो रहीं। दम के दम मे हुस्नआरा भी आँखों से ओझल हो गयीं। बेचारे नज़र मर कर देखने भी न पाये थे कि दोनों नज़र से ग़ायत्र हो गयीं। सोचे, ऐसी ही हया फट पड़ी थी, तो कोठे पर क्यों आयी!

अब उधर की केफ़ियत सुनिए. | हुस्नआरा को मालूम द्वी न था कि हज़रत इस वक़्त कोठे पर टहल रहे हैं । जब सिपहआरा ने कोठे पर आ कर श्जाहज़ादे को देख लिया तो चुपके से कह्दा--तहन, यहीं बेठ जाओ, वह ताक-आझाँक से बाल न आववेंगे हुस्नआरा ने छलाँग भरी, तो खट से नीचे । सिपट्ठआरा भी डचक कर जीने पर जा पहुँची !

हुस्न आरा--पटकी पड़े । ऐ! वाह, अच्छा घर परख लिया है ।

सिपहआरा-मेरा बस चले, तो उसका घर उजड़वा दूँ।

हुस्नआरा--यह क्या सितम करती दो ! घर आजाद करते हैं या उजइवाते हैं !

सिपहआरा--जा जी, अल्लाह खेर करे। यह मुआ जब्र देखो, कोठे पर खड़ा रहता है ।

हुस्नआरा-तो तुम काहे को अपनी ज़बान खराब करती हो! आदमी ही तो वह भी है !

सिपहआरा--बा जी, तुम चाहे मानो, चादे न मानो; यह मुआ अहुरुपिया हे कोई |

इतने में एक ढींडो ने आ कर कहा-लीजिए, बड़ी बेगम साइबर ने यह मिठाई टी है| वह जो उस दिन आयी नहीं थीं, उन्होंने मिठाइयों के दो ख्वान भजे हैं।

लॉडी की लड़की का नाम प्यारी था। उसने मिठाई जो देखी, तो तुतला कर बोली--जला सी हमें दीजिए ।

सिपदेआरा-अरे वाह, इनको दीजिए । बड़ी वह बनके आयी हैं | अच्छा, इतना बता दे कि के ब्याह करेगी १

प्यारी--पहले मिठाई दीजिए, तो बता $ ।

सिपहआरा--तो मिल चुकी । गदेया में मुँह घो आ |

प्यारी-- मैं एक खसम करूँगी, औल फिल छोड़के दुसछा | और फिल तीसला । फिल चौथा | उन सब्चकों छात माल माल के निकाल दैंगी। ले, अभ्र दीजिए |

सिपहआ:रा--जा अब्र न देगी |

हुम्नआरा-दे दो, दे दा, रो रही है ।

सिपह आरा--अच्छा छे, मगर पानी न पीने दँगी।

प्यारी--हाँ, न पीरऊंगी । छाओ तो जला ।

इस पर कहकदा पड़ा । जरा सी लड़को और केसी बातें बनाती है । इतने मं बड़ो बेगम आ कर बोलीं - अरे, नुम्दारी वही गोहयाँजी उस दिन आयो थीं, उन्हीं के यहाँ से मिठाई के दा ख्यान आये हैं । एक औरत साथ थी.। कह गयी है कि दोनों बहनों को कल बुल्यया है । सो कल किसी वक़्त चछी जाना, घड़ी दो घड़ी दिल बहलाके चली आना । नहीं तो मुफ़्त की शिकायत होगी ।

दुस्नआग--+ छ की कल के हाथ है अम्मॉजान !

बेगम साइबा तो चली गयीं | इधर हुस्नआग का रैग उड़ गया | ब्रोी--बहन, यह टेद्दी खीर है ।

सिपदआरा--एक काम कीजिए । अब वे खुशामद के काम न चलेगा। उनके

।म एक खत लिखिए और साफ़-साफ़ मतलब समझा दीजिए । मुए को अच्छे-अच्छे लटके याद हैं| जब इधर दाठ न गली, तो अम्माँनान से छासा लगाया और वह भी कितनी भोली हैं ! एकाएक दरवाजे पर एक नया गुल खिला। दस बारह आदमियों ने प्रिलछ कर गाना शुरू किया-- मान करे नँदलाल सों, सोहागिन जचा मान करे नैंदछाल सों । दूध-पूत और अन्न-धन-लच्छमी गोद खिलाये नंदलाल सों | मान० । दस पाँच आदमी गाते हैं। दो-चार ताल देत जाते हैं। 4-एक मजीरा बजाते हैं | एक हजरत दोलकी थप-थपाते हैं । घर भर में खलबली मच गयी कि यह माजंरा क्या है ? लड़का किसके हुआ है! बड़ी बेगम

बेवा, दोनों बहने कुँआरी । यह क्या अंधर है भई ! मामा- भरे, तुम कोन लोग हो ! कई आदमा-ऐ., हुजुर, खुदा सलामत रखे । भाँड हैं । एक साहब हिनहिना कर बोले-मेरे बछे डे की कुछ न पूछो । यह माँ के पेट ही से दिनद्िनाता निकला था | दूसरे साइब ने उचक कर फ़रमाया - हें-हैं-हें, दो बागे हैं, और उधर तालियाँ बज रही हैं। 'मान करे नैंदलाल. . .? बड़ी बेगम-- अरे लोगों, यह है क्या ? यह टिन-दह्दाड क्या अंधेर हैं ? इन निगोड़े भाँड़ों से पूछो--आये किसके यहाँ हैं ! दरबान--चुप रही जी, आखिर कहाँ आये हो ! एक माँड-- वाह शेरा, क्यों न हो । क्या दुम हिलाके भेके हो । दरबान--आखिर तुम लोगों से किसने क्या कहा? कुछ घास तो नहीं खा गये हो १ पमरामा-- यह क्या ग़ज़ब करते है | भाँड-- जब पट बुरे को जान पर, और आँख लड़े हमसे | सिपाही-मिर्यां, कसम खा कर कहते हैं कि यहाँ लड़का वहका नहीं हुआ । तुम मानते ही नहीं हो । भॉड--वाह जवान ' क्या न हो, खड़ी नंठे और नदी दादी । सिएधही--(आहि रता) भला रछड़का हांगा किसके ? दा लड़कियाँ, वे कुआरी ईैंगी; एक बडी बेगम, वह वी लप्पट । ओर तो कोई औरत ही नहीं; तुम यह बक क्या रहे हो ' भाँड--यह अच्छी + लगी है भई, फिर उस मर्दक ने कहा ही क्यों था ! सिपाहदी--यह कॉटे किसके बोये हुए हैं ! भाँड- अरे साहब, कुछ न पूछिए । बड़ा चक्रमा हो गया ।

दरबान--ले, अब मजीरा वजीरा हटाओ; नहीं तो यहाँ ठीक किये जाओगे ।

भाँड--वल्लाह, हो बड़े नमऋहलाल ।

उधर दोनों बहनों में यों बातें होने लगीं--

सिपहआरा--यह उसी की शरारत है।

हुस्नआरा-किनकी ! नहीं; तोषा |

सिपहआरा--आप चाहे न मानें, हम तो यही कहेंगे ।

हुसनआरा--बहन, वह शाहज़ादा हैं, उनसे यह हरकत नहीं हो सकती |

सिपहआरा--अच्छा, फिर ये भाँड क्यों आये ? अगर किसी ने बहका कर भेजा नहीं, तो आये केसे !

हुस्नआरा-हाँ, कहती तो सच हो; मगर अल्लाह जानता है, उससे ऐसी हर-कत नहीं हो सकती |

सिपहआरा--आप मेरे कहने से उन्हें एक खत लिख भेजिए कि फिर ऐसी हर-कत की, तो हम जहर ही खा लेंगे |

हुस्नआरा खत लिखने पर राजी हो गयीं ओर यों खत लिख।--

“हया से मुँह न मोड़ेंगे, सताये जिसका जी चाहे;

वफ़ादारी में हमको आजमाये जिसका जी चाहे | कभी मानिदे ग़ौहर आतभ्रू सफदर” न जायेगी; बजाहिर खाक में हमको मिलाये जिसका जी चादे।

अरे जाल्मि, कुछ खदा का डर भी है ! क्यों जी, शरीफ़ों को ये द्वी हरकतें होती है ! शर्म नहीं आती | बहन बना कर अब ये शरारत करते हो ! ये ही मरदों के काम हैं ! अगर अब किसी को भेजा तो हम हीरे को कनी खा लेंगी। खून तुम्हारी गदन पर होगा । आखिर तुम अपने दिल में हमको समझते क्या हो! अगर भूत प्तिर पर सवार है, तो कहीं और मुँह काछा कीजिए | हम घरगिरस्त शरीफ़ज्ादियाँ, इन बातों

से क्या वास्ता १ दिल लेना जानें न दिल देना ।

काँटों में न हो अगर उलझना,
थोड़ा लिखा बहुत समझना ।!

हुमा फ़र के पास जब्र यह खत पहुँचा तो बहुत शरमाये। समझ गये कि यहों हमारी दाल न गलेगी | दिल में इरादा कर लिया कि अब भूल कर भी ऐसी चारलें न चलेंगे |

HINDI TEXT

प्रसंग ४४

हुस्तआरा और सिपहआरा, दोनों रात को सो रही थीं कि दरबान ने आवाज दी--मामा जी, दरवाज़ा खोलों |

मामा - टिल्पहार, देखो कौन पुकारता है !

दिल्गरहार-ऐ, वाह, क्विर खोल क्यों नहीं देतीं

मामा-मेरी उठती है जूती; दिन भर की थक्री-मांदी हूं ।

दिलबहार--और यहाँ कौन चंदन-चोकी पर बैठा है !

इबान-अजी, लड़ लेना पीछे, पहले कियोंटे खोल जाओ |

मामा - इतनी रात गये क्यों आफ़त मचा रखा है !

2रघान--अजी, खोला तो, सवारियाँ आयी हैं !

हुस्नआरा--कहों से ! अरे टिलबरहार ! मामा ! क्या सब्र की सत्र मर शमी ! अद्र हम जायें 7२८९० खोलने !

हुप्नआरा को आवाज सुन कर सब्र की सब्र एक दम उठ खड़ों हुई। मामा ने परदा करा कर सवारियाँ उतरवायीं |

सिपहआरा---अखहा रूहअफ़ज़ा बहन हैं, और बहारबेगम | आइए, बंदगी ।

ये दोनों हुस्नआरा की चचरी बहनें थीं। दोनो की शादी हो चुकी थी | सद्ु-रल से दोनों बहनों से मुछाक्रात करने आयी थीं। चारों बहने गछे मिल्लों। खसैर-आफ़िबत के बाद हुस्नआरा ने कहा--ठो बरस के बाट आप लोगो से मुलाकात हुई ।

परहारबंगम--हाँ, और क्या !

सत्र को सब बाते करते-करते सो गयी । सुबह को हुस्नआरा ने बड़ी बेगम से दोनों बहनों के आने की खन्नर सुनायी ।

बड़ी बेगम--जभी मेरी बायीं आँख फड़कृती थी। मैं मी कहूँ कि अल्लाह, क्या खुशखबरी सुनूँगी । कहाँ, हैं कहाँ, जरा बुलाओ तो ।

हुस्नआरा--अमी सो रही हैं ।

बडी बेगम--ऐ, तो जगा दे बेटा ! अच्छी तो हैं !

हुस्नआरा ने आ कर देखा, तो दोनों ग़ाफ़िल सो रही हैं | रूहअफ़ज़ा की ल“

॥ली नागिन की तरह बल खा कर तकिये पर से पढँग के नीचे लहरा रही हैं। बहार-

भैगम का दुपह्टा कहीं है, दुलाई कहीं | हाथ सीन पर रखे हुए खरोटे ले रही हैं।

हुस्नआरा--अज्ी, सोती ही रहिएगा ! अम्माँजान बुलाती हैं |

रूहअफ़ज़ा-बहन, अब तक आँखों में नींद भरी है। नमाज पद दूँ, तो चदूँ।

हुस्नआरा--(बहारबेगम का हाथ हिला कर) ऐ बहन, अब उठो ।

बहारबेगम--अलाह, इतना दिन चढद आया ! सारे घर में घूप फेल गयी ।

हुस्नआरा--उठिए, अम्माँजन बुला रही हैं |

बहारबेगम--रूहअफ़जा को तो जगाओ ।

सिपहआरा- वह क्या बैठी हैं सामने ।

दोनों ने उठ कर नमाज़ पढ़ी और बड़ी बेगम के पास चलीं | रूहअफ़ज़ा जाते हो बड़ी बेगम से चिमट गयीं | बहार भी उनसे गले मिलीं और अदब के साथ फ़श पर बैठी ।

बढ़ी बेगम--क्यों रूदअफ़ज़ा, अब तो उस ब्रीमारी ने पीछा छोड़ा ! क्या कहते हैं, तोता. मुझे तो उसका नाम भी नहीं आता ।

सिपहआरा--(मुसकिरा कर) डेंगू बुखार | आप तो रोज-रोक्ष भूल जाती हैं |

बडी बेगम - हाँ, वही डंकू ।

सिपहआरा- डंकू नहीं, डेंगू ।

रूदअफ़ज़ा- अब एक महोने से पीछा छुटा है कहीं। मेरी तो जान पर जन आयी थी ।

बड़ी बेगम- चेहरा कैसा जर्द पड़ गया है !

ब्रहारबेगम--अत्र तो आप इन्हें अच्छी देखती हैं। यह तो घुल कर काटा द्दो गयी थीं |

बड़ी वेगम-- हकीम मुहम्मदह्त्सेन ने इलाज किया था न वहाँ !

रूहअफ़ज्जा- जी नहीं, एक डॉक्टर था |

बड़ी बेगम--ऐ: है, भूले से इलाज न करना डागडर-वागडर का |

रूहअफ़ज़ा- मैं तो उसकी बरेली ही न समझूँ। कहे, जवान दिखाओ । जत्र मुंह दिखावें_तत्र तो जब्ान टिखावें ! मैंने कहद्दा--यह तो ह्रश्न तक नहीं होने का। फ़र नब्ज देखी, तो हाथ परदे से निकाल लिया और कहा, चूड़ियाँ उतार डालो । मैंने सोने की चुड़ियाँ तो उतार डालीं, मगर शोशे की एक चूड़ी पहने रही । तत्र कहने लगा, हमसे बातें करो । तत्र तो मैंने दूल्हा भाई को बुलाया और कह्दा-- वाह माहब, आप तो अच्छे डॉक्टर को छाये ! मुंह क्या, हम तो एडी भी न दिखावे और कहता है, हमसे बातें करे | यहाँ निगोड़ी गिटपिट किसे आती है ! बस, दर-गुक़री ऐसे इलाज से । आप इनहें घता बताइए । इतने में उसने घड़ी जेब से निकाली और कहने टगा-- गिनती गिनो | सुनिए, जैसे लड़कियों, के मदरसे में इम्तहान ले रह हों। आपिर मैंने एक-दो-पाँच-बीस-ग्यारइ--अनाप-शनाप बका । बड़ी कड्वी दवाइयाँ टीं ' बारे बच गयी ।

बढ़ी बेगम--त्रहार | यह तुम महींनों खत क्यों नहीं भेजती हो!

बरहास्वेगम--अम्माँजान, खतों को तो मैं तार बाँध दूँ, मगर जत्र कोई लिखने-बाला भी दी ।

रूहअफ़ज्ञा-यह तो गिरस्ती के धँधे में ऐसी. पड़ गयों कि पदा'लिखा सः लीपट कर दिया |

नी घर >»£ा

हुस्नआरा--और दुल्झ् माई ने तो खत लिखने को क़तम खायी है ।

रूहअफ़ज़ा - दिन भर ब्रैठे शेर कहा करते हैं ।

बड़ी बेगम --कहो, तुम्हारी सास तो अच्छी हैं !

बहारबेगम--हाँ, न मुझे मौत आती है, न उन्हें ।

हुस्नआरा--कल परसों तक दूल्हा भाई यहाँ आवेंगे, तो मैं उनके सब झाड़ैंगी | ः

बड़ी बेगम--त्रहार, सच्ची बात तो यद्द दे कि तुम भी ज़रा तेक्-मिज़ाज हो |

सिपहआरा--ज्ञो एक गर्म और एक नम ही,, तो बात बने | और जो दोनों तन हुए, तो केसे बने १

बहारबंगम --अबत् तुम अपनी सास से न लड़ना | तुम नर्म ही रहना । मेरे ता नाक मे दम आ गया ।

बड़ी बेगम---अब की मिरज़ा यहाँ आयें, तो समझाऊँ |

बहारबेगम- अम्माजान, मुझसे उनसे इश्न तक न बनेगी। जा काई लाडी-बाँटी भी झुझस अच्छी तरह बाते करे, तो जल मरती हैं। और मैं जान-बूझ कर और जलाता हूं ।

हुस्नआरा--बह न, मिल-जुल कर रहना चाहिए ।

बदारवेगम--जनत्र तुम ससुराल जाओगी, ऐसी ही स;।स पाओगी और फिर मि *-जुद कर रहोगी, तो सात बार सलाम करूँगी |

रूहअफ़ज्ञा--झगड़ा सारा यह है रि दृल्हा भाई इनकी खातिर बहुत करते हैं !

बस, इनकी सास जली मरती हैं कि यह जोरू की खातिर क्यों करता है ?

बहारबेगम--अल्लाह जानता है, हज़ारों दफे तरह दे जाती हूँ; मगर जत्र नहीं रहा जाता, तो में भी बकने लगती हूँ | मुझे तो उन्होंने बेहया कर रिया । लत वह ए.क कहती हैं, तो में दस सुनाती हूँ ।

बड़ी बेगम-- (पीठ ठोक कर) शाबराश !

हुस्नआग--मेरी तरफ़ से पीठ ठोक दीजिएगा ।

धहारबेगम--बहन, अभी किसी से पाला नहीं पड़ा। हमको तो ऐसा दिक़ कर रखा है कि अज्लाह करे, अब वह मर जायें, या हम |

यारों बहने यहाँ से उठ कर अपने कमरे में गयीं और बनाव-सिंगार करने लगीं। हुस्नआरा, सिपआरा और रूइअफ़जा तो बन-ठन कर मौजूद हो गयीं; मगर बहार-बेगम अभी बाल ही सँवार रही थो ।

रूहअफ़ज़ा--इन्हें जत्र देखो, बाल ह्वी सँवा.' करती हैं |

बदारबेगम--तुम आये दिन यही ताना दिया करती हो।

रूहअफ़जा-ऐसी तो सूरत भी नहीं अलाह ने बनायी है !

बहारबेगम ने कोई दो घंटे में कंघी-चोटी से फ़गग़त पायी | फिर चारों निकल कर बाते करने लगी । सिपद्ठआरा डी कतरती थीं, हुस्नआर गिलौरियोँ बनाती थीं. रूहअफ़जा एक तसवीर की तरफ़ग़ौर से देखती थीं; मगर बहारबेगम की निगाह आईने ही पर थी । सिपहआरा--अरे, अत्र तो आईना ठेख चुकीं !

या घंटों सूरत ही देखा कीजिएगा ! बहारबेगम - तुम कहती जाओ, हम जवाब ही न देंगे । रूहअफ़ना--अल्लाह जानता है, इन्हें यह मरज है। सिपहआरा--हाँ, मालूम तो होता है। तहारबेगम --तुम श्त्र बहनें एक हो गयीं । अपनी ही जवान थकाओगी | हुस्नआरा - रूहअफ़ज़ा, तुम उठ कर आईने पर कपड़ा गिरा दो । रूहअफ़जा--चिढ़ जायँगी । हुस्नआरा--हाँ अहन, बताओ तो, यह बात क्या है १ सास से बनती क्यों नहीं

नुमस्ते ! बहारबेगम--ऐसी सास को तो बस, चुपके से ज़हर दे दे। कुछ कम सत्तर की

होने आयी, अभी खासी कठोता सी बनी हैं। मेरा हाथ पकड़ लें, तो छुड़ाना मुश्किल हो जाय । मुई देवनी है |

हुस्नआरा-क्या यह भी कोई ऐज् है !

बहारबेगम --एक दिन का ज़िक्र सुनो, किसी के यहाँ से महरी आयी । कुछ मेवे लायी थी | वह उस वक़्त झूठ-मूठ कुगन-शरीफ़ पढ़ रही थीं। महरी ने आके मुझको सल्यम किया और मेवे की तह्तरी सामने रख दी । बस, दिन भर मुँह फुलाये रहीं ।

हुस्नआरा--मगर बातें तो बड़ी मीठी-मीठी करती हैं ।

बहारबेगम--एक दिन किसी ने उनको दो चकोतरे रिये। उन्होंने एक चकोतरा मुझको भेजा और एक मेरी ननँद को ।,वह उनसे भी बढ़ कर बिस की गाँठ | जा कर माँ से जड़ दिया कि भाई ने इमको आधा सड़ा हुआ चकोतरा दिया और भाभी को बड़ा सा | अस, इस पर सुत्रह से शाम तक चरखा कातती रहीं ।

हुस्नआरा- में एक बात पूछूँ! सच-सच कहना । दुल्द्या माई तो प्यार करते हैं ?

बहारबेगम - यही तो खेर है ।

हुस्नआरा--दिल से ?

बहारबवेगम-- दिल और जान से

हुस्नआरा--भला, माँ से बनती है !

बआाहारबेगम-- वह खूद जानते हैं कि बुढ़िया चिड़चिड़ी औरत है ।

हुस्नआरा--बरहन, बह तो बडी हैं ही, मगर तुम मी तेजी के मारे उनको और जलाती हो | जो मिलके चलो, वह तुम्हारा पानी भरने लगें |

ब्रह्मबेगम--अच्छा तुम्हीं बताओ, कैसे मिल के चहँ ?

हुस्नआरा---अब को जन्न जञाओं, तो अदब के साथ झुक कर सलाम करो |

बहारबेगम--किसको !

हुस्नआरा--अपनी सास को, और किसको !

बहारबैगम--वाह ! मर जाऊँ, मगर सलाम न करूँ मुरटार को ।

हुस्नआरा---बस, यही तो बुरी बात है ।

बहारवेगम--रहने दीजिए, बस । वह तो हमको देख कर जल मरें, और इम उनको झुकके सलाम करें। एक दिन मामा से बोलीं कि हमारा पानदान उसको क्यों दे आयी / मेरे मुँह से बस, इतनी-सी बात निक्छ

गयी कि मेरी सास काहे को हैं, यह्द तो मेरी सोत हैं | बस, इस पर इतना तभिगड़ीं कि तोता ही भली !

हुस्न आरा--बहन, तुमने भी तो राजत्र किया । तुम्हारे नजदीक यह इतनी सो ही बात थी १! सास को सोत बनाया, और उसको इतनी सी ही बात कहती हो | अगर तुम्हारी बहू आये और तुम्हें सौत बनाये, तत्र देखूँगी, उछलती-कूदती हो कि नहीं ।

सिपहआरा---उफ् | बड़ी बुरी बात कहद्दी ।

रूहअफ़जा- तो अब बन चुकी तस |

बद्दारबेगम--त्म सबको उसने कुछ रिशवत ज़रूर दी है। जब कहती हा, उसी कोसी।

सिपहआरा--हमारी बहन, और एसी मुँह फ़ट | स|ःस को सौत बनाये !

हुस्नआ--कौर फिर शरमाये न शरसमाने दे ।

बहारबेगम--अच्छा बताइए, तो पहले झुकके सलाम करूँ ख़ुब जमीन पर सो कर ! फिर !

हस्नआरा--मेरे तो बहन, रोंगटे खड़े हो गये कि उुमसे यह कहा क्योंकर गया !

बहारबेगम--त्रताओ-बताओ । हमारी कसम, बताओ |

हुस्नआरा---म हँसोगी, और हम होगा रंज ।

बहारबेगम- नहीं, दँसेंगे नहीं | बोलो |

हुस्नआरा--जा कर सलाम करो।

बहारबेगम--जो वह जवाब न ढ, तो अपना-सा मुँह ले कर रह जाऊे!

सिपड्आरा--जाह ! ऐसा हो नहीं सकता |

हुस्नआरा--न जवाब दे, तो कदमों पर गिर पड़ी ।

अहारबेगम-मेरी पैज़ार गिरती है क़रदमों पर | वह जैसा मेरे साथ करती हैं, बेसा उनकी आँखों, घुटनों के आगे आये ।

हुस्तआरा--खच्े तो उजला है, या कंजूस है !

बद्दारबेगप-- तीन सो वसीके के हैं, ढाई सौ गाँव से आते हैं। नकद कोई डेढ़ लाख से ज्यादा ही ज़्यादा होगा । मकान, बाग दुकानें अलग हैं। वकालत में कोई छह सात सो का मद्दीना मिलता है |

हुस्नआरा--ठुमको- क्या देते ईं !

बहारबेगम--बुढ़िया से चुरा कर मेरे ऊपर के ख्व के लिए सौ रुपये मुक़रर हैं ।

सिपहआरा--रूहअफ़ज़ा बहन, ठम्हारे मिर्यों कया तनख्वाह पाते हैं !

रूहअफ़जा--चार सौ हुए हैं। चार-पाँच सी जमीन से मिल जाते हैं |

हुस्नआरा--तुम्हारी सास तो अच्छी हैं ।

रूहअफ़ज़ा--हाँ, बेचारी बड़ी सीधी हैं | हाँ, उनकी लड़की ने अल्बत्ता मेरी नाक में दम कर दिया है। जब आती है, रोज़ माँ को भरा करती है |

सिपदआरा--तहारबेगम जो वहाँ होतीं, तो उनसे मी न बनती।

बदहारबेगप--अच्छा, चुप ही रहिएगा, नहीं तो काट खाऊँगी | बड़ी वह बनके आयी हैं ।

इतने में काली-काली घटा छा गयी। <“ंडी-टंडी हवा चलने छगी। बहार ने कहा--जी चाहता है, छत पर से दरिया की सैर करें। सबने कहद्दा - हौं-हाँ, चलिए । मगर हुस्नआरा को याद आ गयी कि हुमायूँ. फ़र ज़रूर खबर पायेंगे और कोठे पर आऊ सतायेंगे | लेहिन मजबूर थी | चारों चौकड़ियाँ भरती हुई छत पर जा पहुँचीं | हवा इस जोर से चलती थी कि दुपट्टा खिसका जाता था। गोरा-गोरा बदन साफ नज़र आता यथा | किसी ने जा कर हुमायूँ फ़र से कद्द दिया कि इस वक़्त तो सामने-वाला कोठा इंदर का अखाड़ा हो रहा है। उनको ताब कहाँ १ चट से कोठे पर आ पहुँचे । सिपहआरा ऊपर के कमरे में हो रहीं। रूदअफ़जा वहीं बैठ गयीं | हुस्नआरा ने एक छलाँग भरी, तो रावटी में । मगर बहारबेगम ने बेठत्र आँखें लड़ायीं । हुमायूँ फ़र ने बहुत झुक कर सलाम किया |

बहारबेगम--आँखें ही फूर्ट, जो इधर देखे ।

हुमायूँ--(द्वाथ के इशारे से) अपना गला आप काट डारूँगा ।

बहारबेगम--शौक से ।

नन्ृहीं-नन्द्रीं बूँदे पड़ने लगीं और चारों परियाँ नीचे चल दीं। मिरजा हुमाये फ़र मुँह ताकते रद्द गये ।

हुस्नआरा--(बहार से) आप तो खुब डटके खड़ी द्वो गयीं ।

बहारबेगम --क्पों, कया कोई घेछ कर पी जायगा ! में इन्हें जानती हूँ, हुमाये फ़तोहें।

सिपहआरा--तुम क्योंकर जानती हो बहन !

बदारबेगम-ऐ वाह, और सुनिएगा लड़कपन में इम खेला किये हैं। इनके साथ | खूब चपतें जमाया किये हैं इनको ! इनकी माँ और दादी में खूब झोटमझोटा हुआ करता था।

इतने में मामा ने आ कर कद्ठा-बड़ी बेगम साहदलब्रा ने ये मेवे भेजे हैं ।

सिपदआरा--देखूँ । ये चिलग़ोजे लेती जाओ |

प्यारी--हम की दीजिए ।

सिपहआरा-- इनको दीजिए. । “पीर न शहीद, नकटों को छापा !” सबके बदले इनको दीजिए |

हुग्नआरा-- अच्छा, पहले सल्टाम कर ।

चारों बहनों ने मजे से मेत्रे चले । एक दूसरी के हाथ से छीन-छीन कर खाती थीं। जवानी की उमंग का क्या कहना ! उधर मिरजा हुमायूँ फ़र अपनी छत पर खडे यह शेर पढ़ रहे थे-- न मुड़ कर भी बेदद क्रातिल ने देखा, तड़पते रहे नीम भा कैमे-कैमे । जब बड़ी देर तक छत पर किसी को न देखा तो, यह शेर जपान पर छाये-- कर बदामोंज (रकीब) ने क्या तुमको सिखाया है हाय ! आज वह आँख्ख, वह चमक, वह इशारा ही नहीं।

HINDI TEXT

प्रसंग ४५

एक दिन हुस्नआरा को सूझी कि आओ, अब की अपनी बहनों को जमा करके एक लेक्चर दे । बहारबेगम बोलीं - क्या ! क्या दोगी !

हुस्नआरा--लेक्चर-लेक्चर । लेक्चर नहीं सुना कभी १

ब्रहारबेगम--लेक्चर क्या बला है !

हुस्न आरा - वही, जो दूर्हा भाई जलसों में आये दिन पढ़ा करते हैं |

बह|रबेगम - तो हम क्या तुम्हारे दूल्हा भाई के साथ-साथ घुमा करते हैं! जाने कहाँ -कहाँ जाते हैं, क्या पढ़-पढ़के सुनाते हैं। इतना हमको माद्म है कि शेर बहुत ऋहते हैं। एक दिन हमसे कहने लगे--चलो, तुमको सैर करा लायें। फिटन पर औठ लो । रात का वक्त है, तुम दुाले से खूब मुंह और जिस्म चुरा लेना | मैंने कानों पर हाथ धरे कि न साहब, बंदी ऐसी सेर से दरगुजरी। वहाँ जाने कौन-कौन हो, हम नहीं जाने के |

सिपहआरा--अब्न की आवें तो उनके साथ हम जरूर जायें |

बहारबेगम -- चलो, बैठो, लड़कियाँ बहनोदइयों के साथ यों नहीं जाया करतीं ।

रूह अफ़ला-मगर सुनेगा कोन ! दस-पाँच लड़कियाँ और भी तो हों कि हमी-तुम टुग्रू हूँ!

मिपहआरा - देखिए, मे बुलवारती है । अभी मामा को भेजे देती हूँ।

हुस्नआरा - मगर नज़ीर का न बुलवाओ। उनके साथ जानीबेगम भी आयेगी उह बात बात में शास्त्र निकालती हैं। उन्हें खब्त है कि हमसे बंद कर कोई हसीन दी नहीं | 'शक़्ल चुड़ैलों की, नाज़ परियों का?; दिन-रात बनाव-सवार ही में लगी रहती हैं !

सिपहआरा--फिर अच्छा तो है ! बद्दार्बंगम से भिड़ा देना ।

थोड़ी देर मे ढोलियों पर-डोलियाँ और बनधियों पर बग्धियाँ आने लगीं। दरबान बार-बार आवाज़ देता था कि सवारियोाँ आयी हैं। लडियाँ जा-जा कर मेहमानों के सवारियों पर से उतरवाती थीं और वे चमक-चमक कर अंदर आती थीं। आखिर में जानीबेगम ओर नज़ीरबंगम भी आयीं । जानीबेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी; आँखें नाचती रहती थीं | नजीरबेगम मोली-माली शरमीली ठड़की थी। शरम से आँखें झुकी पदती थीं। जब सर आ चुकीं, तो हुस्नआरा ने अपना लेक्चर सुनाना शुरू किया--

'मेरी प्यारी बहनो, सात-बहुओं के झगड़े, ननैंद-मावजों के बखेड़े, बात-बांत पर तकरार, मियाँ-चीबी की जूती-पैजार से खदा की पनाहइ | इन बुरी बातों से खदा बयाये। भलेमानमों की बहू-बेटियों में ऐसी बात न आने पाये । इस फूट की इमारे दी देश म :”“ “जारी है कि सास की जुबान पर कोसना जारी है, बहू मसरूफ़ गेरिया व जारी है और मियाँ की अक़छ मारी है। ननैंद भावन से मुंह फुलाये हुए, भाव नंद

से त्योरियाँ चद्ाये हुए । बहू दिचकियाँ ले ले कर रोती है, सास ज्दर खा कर सोती है । और, जो सास ग़स्सेवर हुई और बहू जवान की तेज, तो मार-पीट की नौत्त पहुँचती है ' मियाँ अगर बीवी की सी कहें, तो अम्माँ की घुड़कियाँ सहें, अम्माँ की सी कहें, तो त्रीब्री की बातें सुनें । माँ उधर, बीची इधर कान भरती है, वह इनके और यह उनके नाम से कानों पर द्वाय धरती हैं ।

"मगर ताली एक हाथ से नहीं बजती | सास मली हो, तो बहू को मना ले; और बहू आदमी हो, तो सास को आदमी बना ले। एक शरीफ़जादी ने अपनी मामा से कहद्दा कि हमारी सास तो हमारी सौत हैं | ख़द जाने, उनकी जबान से यह बात कैसे निकली | इत पर भी उन्हें दावा है कि दम शरीफ़ज़दी हैं। अगर वह हमारी राय पर चलें, तो उनकी सास उन्हें अपने सिर पर त्रिठायें। वद्द सीधी जा कर सास के कदमों पर गिर पड़ें और आज से उनकी किसी बात का जवाब न दे ; क्या उनकी सास का सिर फिर गया है, या उन्हें बावले कुत्ते ने काटा हैं? बह अगर सास की खि:मत करे, हो दुनिया भर की सासों में कोई ऐसी न मिले, जो छेड़ कर बहू से लड़े |

"अब सोचो तो ज़रा दिल में, इस तक़रार और जूती-पैजार का अंजाम क्या है ! घर में फूट, एक दूसरे की सूरत से बेजार, लोंडियों-बाँदियों में ज़्कील, सारी दुनिया में बदनाम, घर तबाह । एक चुप हजार बला को टालती है, फ़साद को जहन्नुम में डालती है। हाँ, जो यह खयाल हो कि सास एक कहें, तो दस सुनायें, वह दो बातें कहें, तो बीस मरतबे उनको उल्लू बनायें, तो बस, मेल हो चुका | सास न हुई, भूनी पूँग हुई | आख़िर उसका भी कोई दर्जा है या नहीं ! या बस, बहू समृराल में जात ही मालकिन बन बैठे, सास को ताक़ पर रख दे और मियों पर हुकूमत चज्ाने लगे ! अब में आप लोगों से इतना चाहती हूँ कि सच-सच अपनी-अपनी सासों का हाल बयान कीनिए ।?

एक--अल्लाह करे, हमारी सास को आज रात ह्वी को हैजआ हो |

दुसरी--अलछ्यह करे, हमारी सास को हैज़ा हो गया दो |

तीसरी --अल्लाह करे, हमारी सास ऐसी जगह मरे, जहाँ एक बूँद पानी न मिले।

बद्ारबेगम >या खा, मेरी सास के पाँव में बावला कुत्ता काटे और वह भैंक-मूँक कर मरे |

चोथी--हम तो अपनी सास को पहले ही चट कर "ये। जहन्तुम चडछी गयीं ।

पाँचवीं--सास तो सास, हमारी नर्जैंद ने नाक में दम कर दिया |

जानीबेगम --मेरी सास तो मेरे आगे चूँ नहीं कर सकतीं। बोलीं, और मैंने गला घोंगा ।

इस लेक्चर का और किमी पर तो ज्यादा नहीं, मगर नज़ीरबेगम पर बहुत अमर हुआ । हुस्नआरा से बोलीं--बहन, हम कल से आया करेंगे, हमें कुछ पदाओगी !

हुस्नआरा-हौं, हाँ, ज़रूर आओ।

जानीबेगम--ऐ. बाह, यह क्या पढ़ायेंगे भला ! हमारे पास आओ, तो हम रोज़ पढ़ा [दया कर |

नर रबेगम--आपके तो पड़ोस ही में रहते हैं हम, मगर बहन, तुम तो हुड़दंगा सिखाती हो | दिन भर कोटे पर घोड़े की तरह दौड़ा करती हो, कभी नीचे कभी ऊपर |

जानीबेगम--(नजीरबेगम का दहवाथ पकड़ कर) मरोड़ डादूँ हाथ !

नशीर--देखा, देखा; बस, कभी हाथ मरोड़ा, कभी ढकेल दिया ।

जानीयेगम--(नजीर का गाल काट कर) अब खुश हुई !

सिप्तेआय -ऐ: वाह, लेके गाल काट लिया |

जानीबेगम--फिर औरत हैं, या मर्द हैं कोई !

नजजी रवेगम--अब आप अपनी मुहब्बत रहने दें ।

जब सब मेहमान तिरा हुए, तो चारों बहनें मिलकर गयीं और बड़ी बेगम के साथ एक ही दस्तरस्वान पर खाना खाया | खाते वक्त यों गुफ्तगू हुई--

बहा वेगम--हुस्नआरा की शादी कहीं तजवीजी !

बड़ी बेगम--हाँ, फ़िक्र में तो हूँ ।

ब्रहा वैगम--फ़िक नहीं अम्माजान, अब दिन-दिन चढ़ता है।

बड़ी बेगम--अपने जान तो जब्दी ही कर रही हूँ |

ब्रहारबंगम --जर्दी क्या दो-चार बरस में !

रूह अफ़जञा--बह न, अछाइ-अलाह करो ।

ब्रहरबेगम -बेचारी तिपहआरा भी ताक रही हैं कि हम इनका भी जिक्र के |

मिपह भारा - देखिए, यह छेरखानी अच्छी नहीं, हाँ !

बड़ी बंगय--(मुस्करा कर) तुम जानो, यह ?'यं।

बढद्ारबंगम--अभी कछ शाम ही को तो तुमने कहा था कि आमौजान से हमारे ब्याह की मिफ़ारिशि करो । आज मृकरती हो ! भला खाओ तो क़सम कि तुमने नहीं कहा !

सिपह आरा--आह, जग जग सी बात पर कोई कृसम खाया करता है !

रूहअफत्रा--पानी मरता है कुछ !

मिपहआरा--जी हाँ, आप भी बोलीं !

रूदअफजा--अच्छे , क़्मम खा जाओ न |

सिपह आरा--काई की खायें!

बढ़ी ेगम--ै, तो चिद्तती क्यों द्वो बेटी !

सिउद्ठभारा--अम्माँजान, झुठ-मृठ लगाती है । चिट नहीं !

छकहअफ्ज्ञा-तकया | झुटठनूठ !

सिपदृक्ार--और नहीं ता क्या ?

४६ खजे शा

रूहअफ़ज़ा--अच्छा, हमारे सिर की क़सम खाओ |

सिपहआरा -- अल्छाह करे, में मर जाऊँ।

रूहअफ़ा--चलो बस, रो दीं। अब कुछ न कहो |

बहारबेगम -- अम्मॉजान, एक रईस हैं। उनका लड़का कोई उन्नीस-बीस बरस का होगा ! खदा जानता है, बड़ा इसीन है। आजकल सिकन्दरनामा पढ़ता है ! बड़ी बेगम- खाने पीने से खश हैं ! रूहअफ़जा--खुश ? आठ तो घोड़े हैं उनके यहाँ। बढहा+वेगम--अम्मॉजान, वह लड़का हुस्नआरा के ही लायक है। दो लड़के दोनों लायक, होशियार, नेकचलन । हमारे यहाँ दूसरे-तीसरे आया करते हैँ । रूहअफ़ज़ा--जरूर मंजूर कीजिए । बड़ी बेगम--अ-छा, अच्छा, सोच <। हुस्नआरा ने यह बात चीत सुनी तो होश उड़ गये । खदा ही है करे। ये दोनों बहने अम्माजान के पक्का कर रही है। कहीं मंजूर कर लें, तो गजब ही हो जाय | बेचारे आजाद वहा नूसीवतें झेल रहे हैं, और यहाँ जश्न हो! इस फ़िक्र से उससे अन्छी तरह खाना भी न खाया गया । अपने कमरे में आ कर लेट रद)! और मेंइ दोँप कर सत्र गेयी | खाना खाने के बाद वे तीनों भी आयी और द्रुस्नआर को लेटे देख कर झजलायीं ।

बहारत्रेगम --मकर करती होंगी। सोयेगी क्या अभी |

मसिपठ आरा--नहीं बहन, यह तकिये पर सिर रखते ही सा जाती हैं |

न्न आन ह रॉ पर राज रत ही नॉट

पहारतगम--जी हाँ, सुन चुकी है । एक तुमको तकिये पर । आ जाती है, दूसरे इनको ।

रूहअफ़ज्ञा- (गुदगुद्ा कर) उठो बहन, हमारा ही सन विये, ऊं। थ उठे | मेर भेहन न, उठ वेठा | शात्राश ?

मतिपहआरा--सोने दीजिए । आँखे मारे नींद के पतयाली हो २८. है ।

वहारवेगम--रसीली मतवालियों ने जादू डाला । हमारे यहाँ पड़ोस में रोज तालीम होती है | मगर हमारे मियाँ को इसकी बड़ी चिंद्र है झि औरत नाच देखें या गाना सने । मद्रों की भी क्या हालत है | घर की जोरू से गाते ने झरं, भाहर शेर | अछाह जानता है, इम तो उन सत्र मुईद बेसवाओं को एडी-चोटी पर कुरभान कर ८ | एक ने मिससी की थड़ी जमायी थी, जैसे बत्तलल ने कोच 5 यी ही ।

रूह अफ़ता--(हुस्नआरा को चूम कर) उठो बहन !

हुस्नआरा--(ओर्खे खोल कर) सिर में दर्द है।

ब्रहारब्रेगम -- संटली-रंगों से माना दिल मिला;

टूदे सर की किसके माय जायगी | हुस्नआरा- यहाँ इन झगड़ों में नहीं पड़ते | बद्दारबेगम--द दुरुस्त ।

(4

रूहअफ़जा--ज़रूर किसी से आँख लड़ायी है, इसी से नींद आयी है। अच्छा अब सच-सच कह दो, किससे दिल मिला है (--दिल दीजिए तो यार तरदृदार देख कर | सिपदहआरा ओर क्या [-- पाद्यूक कीजिए तो परीज़ाद कीजिए | हुसस्नआरा-- किसी से मिलने का अब हौसला नहीं है जाँ; बहुत उठाये मज्ने उनसे आशना हो कर | रूदअफ़जा-बस, बहुत बातें न बनाइए । हम सब सुन चुकी हैं। भला किसी पर दिल

नहीं आया, तो आँखों से आँसू क्यों कर निकले १ जरी, आइने में सूरत देखिए | सिपहआरा--ऐ, बहन, यह घान-पान आदमी, जरी सिर में दर्द हुआ, और लेट रहीं । बहारबेगम-- लड़की बातें बनाती है। इमको चुटकियों पर उडाती है। हुस्नआरा-- अब आप जो चाहे कहें | यहाँ न कोई आशिक है, न कोई माधश्ूक | रूदअफ़जा - उड़ो न | कद्द चलूँ सत्र ? हुस्सआरा--हाँ, हाँ, कद्दिए | सौ काम छोड़के । आपको खुदा की क़सम । रूदअफ़ज़ा-- अच्छा, इस वक़्त दिल क्यों भर आया ! हुस्न आरा-- दिल ही तो है न संग व खिइत, दर्द से भर न आये क्यों, « रोयेंगे हम हजार बार, कोई हमें रुलाये क्यों! बदहारवेगम-- (तालियाँ बजा कर) खुल गयी न बात ? हूहअफ़ज़ा- जादू वह, जो सिर पर चढ़के बोले । हुस्नआरा--मैंह में जान है, जो चाहो, ब्को।

बहारबेगम--अच्छा, बड़ी सच्ची हो, तो एक बात करो | हम एक हाथ में कोई चोज़ लें और दूसरा द्ाथ खाली रखें। फिर मुद्री बाँधके आयें, और तुम एक हाथ पर हाथ मारो । जो खाली द्वाथ पर पड़े, तो तुम झूठी | दूसरे द्ाथ पर पडे, तो इम झुठे ।

हुस्नआरा-पऐ है, उोकरियों का खेल |

रूदअफ़जा--अक़्खाह, ओर आप हैं क्या !

विपदआरा--अच्छा, आप आइए । मगर हम दोनों द्वाथ देख लेंगे ।

बद्ारबेगप्--दाँ- हाँ, देख लेना |

बहारबेगम ने दूसरे कमरे में जा कर एक छोटी-सी शीशे को गोली दाहिने दाथ में रखी ओर बायोँ द्वाथ खाली । दोनों मुद्रियाँ खूब जोर से बंद कर लीं और आ कर ब्ोलीं--अच्छा, मारो हाथ पर हाथ ।

हुस्नआरा--ये वाहियात बातें हैं ।

रूहअफ़जा--तो कॉपी क्यों जाती हो !

सिपहआरा- बा जी, बोलो, किस हाथ में है !

हुस्नआरा--उषरवाले में |

सिपहआरा--नहीं जा जी, धोखा खाती हो | हम तो बाये हाथ पर मारते हैं |

बहारबेगम - (बायोँ दह्ाथ खोल कर) सलाम |

सिपदआरा--अरे, वह हाथ तो दिखाओ |

बहा रबेगम--देखो । है शीशे की गोली कि नहीं !

हुस्नआरा-देखा ! कद्दा था कि उस द्वाथ में है। कहा न माना |

रूहअफ़ज़ा--कहद्दिए, अब तो सच है !

हुस्नआरा--ये सब दकोसले हैं ।

बहारबेगम-- अच्छा बहन, अब इतना बता दो कि प्रिया आजाई कौन हैं ?

हुस्नआरा - क्या जानें, क्या वाही-तत्राही बकती हो |

बहा रबेगम---अब छिपाने से क्या होता है भला | सुन ता चुट ही हैं हम .

हुस्न आरा--बताये क्या, जब कुछ बात भी हो !

सिपहआरा--इन दोनों बढ़नों ने ख्यात्र देखा था कल मादूम होता हे |

हुस्नआरा--हाँ, सच कहा | ख्यात्र देखा होगा ।

रूहअभफ़जा-ख्वाब तो नहीं देखा; मगर मुना है कि सूरत-शक्ल में करोड़ों में एक हैं ।

बहारबेगम- हुस्नआरा ने तो अपना जोड़ छाँट लिया, अत्र सिपहआरा या निकाह हुमायूँ फ़र के साथ हो जाय, तो दम समझें कि यह बड़ी खशनसीज हैं '

सिपहआरा--मेरे तो तलवों को भी न पहुँचे |

हुस्नआरा--वूती का कौए से जोड़ लगाती हो !

बहारबेगम-- वाह, चेहरे से नूर बरसता है । जी चाहता है हि घंटों देखा कर | अम्माँ से आज ही तो कहूँगी में ।

हुस्नआरा--कह दीजिएगा, धमकाती क्या हो !

सिपहआरा--आपके कहने से द्ोता क्या है ! यहों कोई पसंद भो करे !

रूहअफ़ना-- इनकार करोगी, तो पछताओगी ।

HINDI TEXT

प्रसंग ४६

सबेरे हुस्नआरा तो कुछ पढ़ने लगी और बहारबेगम ने सिंगारदान मैंगा कर निखरना शुरू किया |

हुस्नआरा--बस, सुबह तो सिंगार, शाम तो सिंगार। कंधी-चोटी, तेल-फुलेल । इसके सिवा तुम्हें और किसी चीज से वास्ता नहीं। रूहअफ़ज़ा सन कहती हैं कि तुम्हें इसका रोग है ।

बद्ारबेगम-- चलो, फिर तुम्हें क्या ! तुम्हारी बातों में सत्याल बैंट गया, माँग टेदी हो गयी ।

हुस्नआरा-है-है ! ग़ज़त्र हो गया । यहाँ तो दूल्हा भाई भी नहीं हैं !. आखिर यह निखार दिखाओगी किसे १

बद्ारबेगप--हम उठ कर चले जायैंग। तुम छेडती जाती हूं। और यह मुझ छपका सीधा नहीं रहता ।

हुस्नआरा--अब तक मॉग का खयाल था, अब छपके का खयाल है ।

बहारबेगम--अच्छा, एक दिन हम तुम्हारा सिंगार कर दें, खूदा को कसम, वह जोबन आ जाय कि जिसका हक़ है |

हुस्नआग - फिर अब साफ़साफ़ कहलाती हैं। तुम छाख बनो-ठनो, हमारा जोबन खदाव्वद होता है। दम बनाव-चुनाव की क्या जरूरत भला !

बहारबेगम-- अपने मुँह मियाँ मिट बन लो ।

हुस्नआरा--अच्छा, सिपहआरा से ०छो । जा यह्ट कहें वह ठीक ।

ष्पिपहआरा--जिस तरद्द बहार बहन निखरती हैं, उस तरह अगर तुप भी निखरा, तो चाँद का टुकड़ा बन जाओ | नुम्हारे चेहरे पर मुर्खी और सफ़ेदी के सिवा नमक भी अहुत है | मगर वह गोरी-चिट्टी हैं बस, नमक नहीं ।

रूहअफ़जा-सच्ची बात तो यह है कि हुस्नआरा हम सबमें बढ़-चद कर हैं।

इतने में एक फिटन खड़खड़ाती हुई आयी, मुइकी जोर्डा जुती हुईं । नवाद्न खर-शेदअली उतर कर बड़ी बेगम के पास पहच और सत्झम किया । ह

“ही बेगम--आओ बेटा, बायीं आँख जब फड़कती है, तब कोई न कोई आता जुरू? है। उस दिन आँख फड़की, तो लड़कियाँ आयीं | यह रूद्रअफ़जा की क्या दालत द्वो गयी है !

नवाब साहब- अब तो बहुत अच्छी हैं ! मगर परहेज नहीं करतीं | ताता मिचे न ही, तो खाना न खायें। फिर भला अच्छी क्योंकर हों ?

यहाँ से बातें करके नवाब साहब उस कमरे में पहुँचे, जिसमं चारों बहनें बेटी थीं। नवाब साइनच्र का लिबरास देखिए, जुर्याब खाकी रंग का, घुटन्ना चुस्त, कुर्ता सफ़ेद फलालैन का । उस पर स्याइ बनात का दगला और हरी गिरंट की गोट । बाकी नुक्के-दार टोपी । पाँव में स्थाह बारनिश का बूट, एक सफ़ेद

दुलाई ओदे हुए । हुस्नआरा और सिपहआरा ने नीची गरदन करके बंदगी की । रूहअफ़जा ने कहा--आप बे इसला किये हमारे कमरे में क्यों चले आये साहब !

नवाब साइब--हुक््म द्वो, तो छौट जाऊं ।

बहारबेगम शौक से। बिन बुलाये कोई नहीं आता | लो सिपहआरा, अब इनक साथ बग्घी पर हवा खाने जाओ |

मिपहआरा--वाह, क्या झुठ-मूठ छगाती ह।। भला मेने कब्र कहां था !

रूहअफ़ज़ा--हम गवाह हैं|

नवात्र साहइब--अच्छा, फिर उममे ऐज़ ही क्या है !

इतने भें रूदअफ़ज एक शीश की तइतरी मे चिकनी इ।लयां रख कर लायी । नवाब साहब ने दा उठा कर खा हीं और "साख थू, आख थू !! करत-करत बलि-- पानी मंगाओ खूढा के वास्त । |

यह जिकनी डी असल मं मिद्ठ) को थी। चारों बहनों ने कदकहा लगाया और हजरत त्र- ० 2५ ' जब्र मुंह थी चुके, ता सिप्दआग ने एक गिलोरं दी |

नवाब साइब --(गिलोरी खाछ कर) अब ब्रे देख भाले खानेवाले का ऐसी-तसी । क्दी इसमे मिग्प न झोंक दा हों | इस उक्त तो भृखय लगी हुई हैं। आँत कुलहु अल्लाह पद रही हैं ।

हुस्नआरा--जासी खीर खाइए, तो लाऊँ !

नवाब साहब--नेकी और पूछ-पूछ ?

टुस्नआरशा जा कर एक कुफ़ली उठा छायी। नव्रात्र साइब ने घड़ी खुशी से ली, पगर खोलते हैं तो मंदकी हचक कर नि%छ पड़ी !

नवाब साहब-- सूप ' यह रहअफ़ज्ा से भी बट कर निकली , बड़ी बी तो बड़ी भी, छाटी वी मुभान अल्लाह ।!

रात का नवाब साहब आराम करने गये, तो बहारबेगम ने पृउऊ.--कहो, तुम्दारी अम्माँजान तो जीती हैं ? या इलक गयी !

नवाब लाहब क्या बेतुका उड़ाती हे, स्थाहमख्याह दिल दूखाती हो। ऐसी बात करती हू के सारा शौक टंडा पड़ ज्ञता है |

बहा रबेगम--हाँ, उनका तो मुहब्बत फट पड़ी है तुमको । अतीस धार का दूध पिलाया है कि नहीं !

नवाब साहत्र- - इसी से आने की जी नहीं चाहता था।

ब्रह्मरवेगम--ता क्यों आये ? क्या चकलछा निभांडा उजड़ गया है ? या बाजार मं किसी ने आग लगा दी !

नब्ात्र साइब-- अच्छा, इस वक़्त तो ख़दा के लिए ये बाते न करो १ कोई छह दिन के बाद मुलाकात हुई है ।

बहारबेगम--क्या कहीं आज और ठिकाना न लगा !

नवाब साहब-तुम तो जैसे लड़ने पर तैयार हो कर आयी दो ।

बहा रबेगप--क्यों ! आज प्राटन साइबर न अनोगे ! कोट-पतदून पहनके न जाओगे ! मुझसे उड़ते हो !

नवाब साहब रंगीन-मिजाज आदमी ये । बहारबेगम को उनके सैर-सपाटे बुरे मालूम होते थे | इसी सब्रत्र से कभी-कभी मियाँ-त्रीबी में चख चल जाती थी। मगर अबकी मरतत्रा बहारबेगम ने एक ऐसी बात सुनी थी कि आँखों से खून बरसने लगा था | एक दिन नवाब साहब कोट-पतटन डाट कर एक बँगले पर जा पहुँचे और दरवाज़ा खटखराया । अंदर से आदमी ने आ कर पूछा--आप कहाँ से आते हैं ! आपने कहा - हमारा नाम प्राटन साहब है! मेम सादइबत्र को बुडाओ। अब पुनिए, एक कुंजड़िन जो पड़ोस में रहती थी. वहाँ तरकारी बेचने गयी हुई थी | वह इन हज़रत को पहचान गयी और घर में आ कर बहारबेगम से कच्चा चिट्ठा कह छुनाया । बेगम सुनते ही आग-भभूका हो गर्यी और सोर्ची कि आज आने तो दो, कैसा आड़ेदद्वार्थों लेती हूँ कि छठी का दूध याद आ जाय। मगर उसो दिन यहाँ चली आयी और बात ज्यों की त्यों रह गयी । मरी तो ब्रैठी दी थीं, इस वक़्त मौक़ा मिला, तो उबल पड़ीं। नवात्र ने जो पते-पते की सुनी, तो सन्नाटे में आ गये ।

बहारबेगम-- किए प्राटन साइच, मिजाज तो अच्छे हैं ?

नवात्र साहत्र-तुम क्या कहती द्वो ! मेरी समझ दी में नहीं आता कुछ ।

बहारबेगम--हाँ, हाँ, आप क्या समझेंगे। दम हिंदोस्तानी और आप खासी विलायत के प्राटन साहब ! हमारी बोली आप क्या समसझेंगे !

नवात्र साइच-- कहीं भंग ते! .नहीं पी गयी हो !

महा रवेगम - अब भी नहीं शरमाते !

नवाब साहब--खूदा गवाह है, जो कुछ समझ में भी आया हो |

बहासबेगम -जलाये जाओ और फ़िर कहों कि धुओँ न निकले। मैं क्या जानती थी कि तुम प्राटन साहब बन जाओगे !

इधर तो प्रियाँ-बीबी में नोक-झोंक हो रही थी, उधर उनकी सालियाँ दरवाजे के पास खड़ी चुपके-चुपके झाँकती और सारी दास्तान सुन रही थीं। मारे हँसी के रहा ने जाता था। आखिर जब्र एक मरतत्रा बहार ने जोर से नवाब का द्वाथ झटक कर कहा- आप तो प्राटन साहब हैं, में आपको अपने घर में न घुसने दूँगी--तो सिपहआरा खिलणिला कर हँस पड़ी । बहार ने हँसी की आबाज सुनी, तो धक से रह गयी। नवात्र भी दक्का-बका हो गये |

नवाब साहब---तुम्हारी बहनें बढ़ी शोख हैं ।

रूहअफ़ज़ा -- अहन, सलाम !

सिपदेआग--दृल्दा भाई, बंदगीअर्ज |

दुस्नआरा--मैं मी प्राटन साहव को आटाबअर्ज करती हूँ । नवाब साह१--समझा दो, यह बुरी बात है।

सिपहआरा--जिगढ़ते क्यों हो प्राट्न साहज ! बहारबेगम--(कमरे से निकल कर) ऐ, तो अब भागी कहाँ

जाती हो ! रूहअफ़जा--बहन, अन् जाइए । प्राटन साहब से बातें कीजिए । बरहारबेगम--आओ-आओ', तुम्हें खुदा की कसम | सिपहआरा - कोई भाई-बंद अपना हो, तो आये | भलछा प्राटन साइबर को क्या मुँह दिखाये ! नवाब साहइघ्र- इस प्राटन के नाम ने तो हमे खूजब झंडे पर चढ़ाया! कैसे क्सवा हुए ! बहारबेगम--अपनी ऋखतों से । सिपहआरा-- अब तो क़लई खुल गयी ? तीनों बहनों ने नवरात्र साइबर को खूब आड़े हाथों लिया। वेचारे बहुत अंपे जब ने चली गयीं, तो बहारबेगम ने भी प्राटन साहत्र का कूर माफ़ कर दिया-- दिलों में कहने-छुनने से अटाबत आ ही जाती है : जत्र आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है |

HINDI TEXT

प्रसंग ४७

आज हम उन नवरात्र साहब के दरबार की तरफ चलते ह, जहाँ यानी और आज़ाद ने महीनों मुसाइत्रत की थी और आज़ाद बटेर की तालाश में महीनों सैर-सपारे करते रहे थे | शाम का वक़्त था। नत्राब साहब एक मसनद पर शान से बैटे हुए थे | इद-गिद मसाहब लोग बैठे हुक़के गुड़गुड़ाते ये। बी अलारब्खी भी जा कर मसनद का कोना दबा 4-२ बैठी ।

नत्रात्र साहब-यों आइए, भ्री साहबत्र !

अलारक्खो--- खिसक कर) बहुत खूब !

मुसाहब--(दूसरे मुसाहब् के कान में) क्या जमाना है, वाह | हम शरीफ़ और शरीफ़ के लड़के और यद्द इज्जत कि जूतियों पर बैठे हैं । कोई टके को नहीं पृछता |

नुदरत-- यार, क्या कहें, अब्चाजान चकलेदार थे, जिसका चाहा, भुद्रासा सिर उड़ा दिया | डेका सामने बजता था | इन्हीं आँखों के सामने दोनों तरफ़ आदमी झुक-झुक कर सलाम करते थे, और इन्डीं आँग्बों यह भी देख रहे हैं कि बेसवा आ कर मसनद पर त्रेठ गयी और हम नीचे बेटे हैं | वाह री क्रिस्मत ! फूट गयी |

नवाब साहब- आपका नाम क्या है बी साहच !

अलारक्खी -- हुजूर, मुझे अलागक्ली कहते हैं |

नथात्र साहब--क्या प्यारा नाम है !

नुदरत-हुजूर, चांद आप बुरा मानें या भला. हम तो ब्रीच खेत कईंगे कि आपके यहाँ शरीफ़ों को कदर नहीं | ग़ज़ब खदा का, यह टके की बाज़ारी औरत मंसनद पर आके त्रठ जाय और हम शरीफ़ लाग ठाकरे खायें! आसमान नहीं फट पड़ता ' कैसे-कैसे गौस्वे रईस जमा है दुनिया में |

इतना कहना था कि हाफ़िज़ जी बिगड़ खड़े हुए और लपक के नुदर्त के मुंह पर एक रूप्पड़ जमाया ! वह आदमी थे करारे, लप्पड़ खाते ही आग हो गये। झपट+क हाफ़िज़ जी को दे पटका | इस पर कुल मुसाहब और हवाली-मवाली उठ खड़े हुए ।

एक--छोड दे बे !

दुमरा--शतनी छात टगाऊँगा कि भुरकस निकल जायगा |

तीसग-- मद के, जिसका नप्तक खाता है, उसी को गालियाँ मुनाता है !

नवात्र साहब्र--निकाल दो इसे बाहर ।

हाफ़िज़्ञ - देग्पिए तो नमऋदहराम की बातें

नवाब साहब -आज से दरबार मं न आने पाये |

तीन-चार आदमियों ने मिल कर हाफ़िज जी का छुड़ाया. दरबार में हुस्लड मचा हुआ था । अलारक्खी खड़ेखड़े थरथराती थीं और नवात्र साइबर उनको दिलासा देते बाते थे ।

एक मुसाहत्र--(अलारक्खी से) ऐ. हुजूर, आप न घत्रराये ।

दूसरा मुसाइब्र--वल्लाइ बी साहबा, जो आप पर जरा भी आँच आने पाये |

नवाबर--तुम तो मेरी पनाह में दो जी !

अलारक्खी--जी हाँ, मगर स्रौफ़ मादूम होता है ।

नवाब --अभी उस मूजी को यहाँ से निकलवाये देता हूँ ।

हा फ़िज्--हुजूर, वह बाहर खड़े सत्रको गालियाँ दे रहे हैं ।

सबने प्रिल कर मिरयाँ नुदरत को बाहर तो निकाल दिया; पर वद्द टर्ग आदमी था, बाहर जा कर एंडी-बेंडी सुनाने लगा--ऐसे रईस पर आसमान फट पढ़े, जो इन टके-टके की औरतों को शरीफ़ों से अच्छा समझे | किसी जमाने में हम भी हाथी-नशीन थे | चौद ह-चोदह द्वायी दमारे दरवाज़े पर झूमते थे। आज इस नवबद्द रईस ने हमको फ़श पर बिठाया और मालजादी को ग्रसनद पर जगह दी। खदा इस मर्दक से समझे ! ह

नवात्र साहब -यह कौन गुल मचा रहा है।

एक मस/हब---वही है हुजूर ।

दूसरा मुसाहब--नहीं हुजुर, वह कहाँ ! बह भागा पत्तातोड़। यह कोई फ़क़ीर है | भूखों मरता है ।

नवाब--कुछ टिल्वा दो भई !

एक मुसाहत्र ने दारोगा जी की बुलाया और उनसे दस रुपये ले कर गहर चला। जब्र उसके लौट आने पर भी बाहर का शोर न बंद हुआ, तो नवाब ने खिदमत-गार को भज्ञा कि देख, अब कोन निला रहा है ! खिटमतगार ने बाहर जा कर जो देखा, तो प्ियाँ नुदरत खड़े गालियाँ सुना रहे हैं। जन्म वह नवात्र साहब के पास जाने लगा, तो दारोगा जी ने उसे रोक कर समझाया--अगर तुमन 2ीक-ठीक बतलछा विया, तो हम तुमको मार ही डालेंगे। खबरदार, यह न कहना के मिरयाँ नुदरत ग़ालियाँ दे रहे हैं। बल्कि यों बयान करना कि वह फ़क्कीर तो टस रुपये ले कर चल दिया, मगर और कई फ़क्कीर, जो उस वक़्त वहाँ मौजर थे, आपको दुआएँ दे रहे हैँ । उनका मव्राल है कि हुजूर के दरबार से कुछ उन्हें भी मिले ।

नवात्र साहब्च ने यह सुना, तो उन्हें यक्नरीन आ गया । बेचारे भोले-भाले आदमी थे, हक्स विया कि इसी वक़्त सब फ़क्ीरों को इनाम मिले, कोई दरबार से नासुराद न लौटे; वर्ना मैं ज़हर खरा कर मर जाऊंगा |

हाफ़िज़ -दारोग़ा जी, इन फ़क़ीरों को चालीस रुपये दे दीजिए ।

नवाब--क्या, चालीस |! भला सो रुपये तो ०#सीम करो !

मुसाहब--ऐ., खूदा सलामत रखे |

हाफ़िज़--वाह-वाह, क्यों न ही मेरे नवाब ।

दारोगा ने सौ रुपये लिये और बाइर निकले । कई भुसाहब भी उनके साथ-साथ बाहर आ पहुँचे !

एक- ऐसे गौखे रईस कहाँ मिलेंगे !

दूसरा-क्या पागल है, वल्लाह !

हा फ़िज- बेवकूफ, काठ का उल्दू |

दारोगा--कह देंगे कि दे आये |

हाफ़िज--लेकिन जो फिर गुल मचाये !

दारोग़ा---अजी, उसको निकाल बाहर कर दो | दो धक्के |

सबने मियाँ नुदरत को घेर लिया और कोसों तक रगेदते हुए के गये। वह गालियाँ देते हुए चले | अलारब्खी को भी खब कोसा ।

नवाब ने लाखों क़समें दीं कि अलारक्खी खाना खायें और कुछ दिन उसी वागीचे में आराम से रहें; मगर अलारक्खी ने एक न मानी। मियाँ नुदरत का उसे बार-बार ताने देना, उसे टके की औरत और बेसवा कहना उसके दिल में काटे की तरह खटक रहा था | उसकी आँखों में आँसू भर आये |

नवाब - सच कहिए बी साहबा, आखिर आप क्यों इस क़रर रंजीदा हैं। अगर मुझसे कोई ख़ता हुई हो, तो माफ़ करो |

अलारकखी-जाने हमें इस वक़्त क्या याद आया | आपसे क्या बतायें | दिल हीतोहै!

नवाब-मुझसे तो कोई क़सूर नहीं हुआ !

अलारक्खा- हुजूर, ये सब क्रिस्मत के खेल हैं। हमारी सी बेहया जिंदगी किसी की न हो! माँ बाप ने अंधे कुएँ में दकेल दिया; आपतो चैन उडाया किये, हम भाड़ में झोंक गये | इमारे बूढ़े मियाँ शादी करते ही दूसरे शाहर में जा बसे | हम उनके नाम को रो बैठे । जब वह अंटागफ़ील हो गये, तो हमारी माँ ने बड़ा जश्न किया और एक दूसर छड़के से शादी टहरायी | मगर अम्पाँ से किसी ने कह दिया--खबर-दार, लड़की को अब न ब्याहना, भलेमानसों में बेवा का निकाह नहीं होता | बस, अम्माँ चट से बदल गयीं । आखिर मैं एक रात को घर से निकल भागी | लेकिन उस दिन से आज तक जैसी पाक पैदा हुई थी, वैसी ही हू। आज़ उस आदमी ने जो मुझे टके की औरत और बेसवा बनाया, तो मेरा दिल मर आया | कमम छे लीजिए, जो मियों आजाद के सिवा किसी से कभी आँखें छड़ी हों |

नवात्र - कौन, कोन ! किसका नाम तुमने लिया ?

हाफ़िज--अच्छा पता ढगा | वह तो नदाब साहब के दोस्त हें

नवाब--हमको उनकी खजत्रर मिले, तो फौरन बुलवा लें ।

अलछारक्वी--वह तो कहीं बाहर गये हैं। कुछ टिनों हमारी सराय में ठहरे थे | अच्छे खुबसुरत जवान हैं। उनको एक मोले-माले नवाब मिल गये थे । नवात्र ने एक बटेर पाला था । मियाँ आज्ञा ने उसे काबुक से निकाल कर छिपा लिया । नवाश्र के मुसाहबों ने बटेर की खूब तारीफ़ें कीं । किसी ने कहा, करान पढ़ता था; किसी ने कहा, रोज़े रखता था | सबने मिल कर नवात्र को उल्द बना लिया । मियों आज़ाद ड़ शा

को ऊँटनी दी गयी कि ज्ञा कर बटेर ढूँढः लाओ। आजाद उँटनी ले कर हमारे यहाँ बहुत दिन तक रहे |

नवाब साहब्र मारे शर्म के गले जाते थे । उम्र भर में आज ही तो उन्हें खयाल आया कि ऐसे मुसाहत्रों से नफ़रत करना लाजिम है। मुसाहत्रों ने लाख-लाख चाहा कि रंग जमायें, मगर नवाब और भी बदगिमाग हो गये ।

नवाब -वह भोला-माला नवाब में ही ह। आपने इस वक्त मेरी आँखें खोल दीं।

मुसाहब--रा रीबप रवर, खूदा जानता है, हम छोग कट मरनेवाले हैं ।

नवाब--ब्रस, हम समझ गये ,

हाफ़िज़--हुजूर, तोप-दम कर दीजिए, जो जरा खता हो । दम लोग जान देने बाले आदमी हैं ।

नवात्र - बस, चिढ़ाओ नहीं | जत्र कलई खुल गयी |

मुसाहब--खूदा जानता है |

नवाब--अब्च करसमें खाने की कुछ जरूरत नहीं। जा हुआ सी हुआ, आगे समझा जायगा |

अनारक्खी--जं मुझको माल्म होता, तो यह जिक्र ही कभी न करती |

नवाब - एद्ा ४ फूसम, तुमने मझ पर और गेरे बाप पर, दोनों पर इस वक़्त

एहसान किया । तुम ज़िक्र न करतीं, तो मं हमेशा अंधा बना रहता, तुमने तो इस वक़्त मुझे जिला लिया |

मुसाहब--जिसने ज़ो कह दिया, नहीं हजूर ने मान लिया । बस, यही तो खराबी है | ज़रा हमारी खिदमतों की देखे, तो हमको भोतियों मं तोटें-- कसम ख़दा की-- प्रोतियों मं तोल ।

नवात्र - मेरा बस चले, तो तुम सबका कालेपानी भेज दूँ । और ऊपर से बाते बनाते हो ? बटेर भी रोजा रखते हैं ?

हाफ़िज़-खख़दावंद, खुदा की खुदाई में क्या कुछ बइईद है।

नवाब--चछो बस, खुदाई में दखल न दो । मादूम हुआ, बड़े दीनदार हो | मेरा बस चले, तो तुमको ऐप्ती जगह क़'ल करूँ, जहाँ पानी तक न मेले ।

हाफ़िज़--अगर कोई क़सूर सात्ित हो, तो कत्ल कर डालिए ।

समुसाहइब--खदाअंद, वद्द आज़ाद एक ही गुर्गा है, बढ़ा दगात्राज |

अलारक्खी--बस, बस, उनको न कुछ कहिएगा। उनका सा आदमी कोई होतोले।!

नवाब--क्या शक हैं। खेर, अब मी सबेरा है, सरते छूटे |

अलारक्खी - छूटे तो सस्ते | ऐ हाँ, यह कहाँ की नमकहत्णलो है कि बटर के रोज़ादार और नमाजी बना दिया १ जो सुनेगा, क्या कहेग। !

नवाब--नमकदलाल के बच्चे बने हैं !

मुसाहब--खूदावंद ! नो चाहे, कह लीजिए, हम लोग हुजत और तकरार थोड़े ही कर सकते हं |

नवाब--अजी, तुम तो जहर दे दो, संखिया खिला दो ! खूब देख चुका |

अलारक्खी--ऐसे बेईमानों से खुदा बचाये |

मुसाहच--हाँ, मसनद पर बैठ कर जो चाहो कह लो | बज़ार में झोटमझोट करती फिरती हो, और यहाँ आके बातें बनाती हो |

नवात--बस, जबान बंद करो । मेरा दिल खट्टा हो गया |

मुसाहब-जो हम ख़तावार हों, तो इमारा खुदा हमसे समझे । जरा भी किसी बात में नमकहरामी की हो, तो हम पर आसमान फट पड़े। हुजूर चाहे न मानें, मगर दुनिया कहती है कि जैसे मुसाहत्र हुजूर को मिले हैं, वेसे बड़े खश क्रिस्मतों को मिलते हैं ।

नवाब -यों कद्टों कि जिसकी क्रिस्मत फूट जाती है, उसको तुम जैसे गुर्गे मिलते हैं। बस, आप लोग बोरिया-बँघना उठाइए और चलते-फिरते नज़र आइए ।

मुसाहब--हुजूर, मरते दम तक साथ न छोड़ेंगे, न छोड़ेंगे ।

हा फ़िलइ---यह दामन छोड़ कर कहाँ जायें ?

मिरजा- कहीं ठिकाना भी है !

हाफ़िज़--ठिकाना तो सब्र कुछ हो जाय, मगर छोड़ कर जाने को भी जब जी चाहे | जिसका इतने दिन तक नमक खाया, उससे भला अछग द्वोना केसे गवारा हो ! मार डालिए, मगर हम तो इस ड्योदीसे नहीं जाने के । यह दर और यह सर । मरें भी, तो हुजुर ही की चौखट पर, और जनाज़ा भी निकले, तो इसी दर-वाजे से !

नवाब--त्रातें न बनाओ | जहाँ सींग समाय, चले जाओ |

हा फ़ज--हुजुर को खूटा सछामत रखे। जहाँ हुजूर का पीना गिरे, वहाँ हमारा खुन ज़रूर गिरेगा ।

मगर नवाब साहब इन चकरमों में न आये। खिदमतगारों को हुक्म दिया कि इन सरब्ों को पकड़ कर बाहर निकाछ दो। अगर न जाये, तो ठोकर मार कर निकाल दा |

अब बी अलारक्खी का भी हाल धृनिटय। उनको म्रियाँ नुदरत की बातों का ऐसा कलक हुआ, दिल पर ऐसी चोट हूगी कि अपने कुछ जेवर और असन्नाषर बेच कर बस्ती के बाहर एक टीले पर फ़कीरों की तरह रहने लगीं। क़०म खा ली कि जब तक आज़ाद रूम से न छोटेंगे, इसी तरह रहूँगी ।

HINDI TEXT

प्रसंग ४८

जिस जहाज पर मियाँ आजाद ओर खोजी सवार थे, उसी पर एक नौजवान अँगरेज अफसर और उसकी मेम भी थी | अँगरेज का नाम चार्ल्स अपिल्टन था और मेम का वेनेशिया। आज़ाद को उदास देख कर बेनेशिया ने अपने शौहर से पूछा--इस जेंटिलमैन से क्योंकर पूछें कि यह बार-बार लंबी साँस क्यों ले रहा है !

साहब -तुम ऐसे-वैसे आदमियों को जेंटिल्मैन क्यों कद्दती हो ? यह तो निगर (काला आदमी) है।

मेम--निगर तो हम दृत्रशी को कहते हैं | यह तो गोरा-चिट्टा, खुबसूरत आदमी है।

साइब्र--तो क्या खूबयूरत होने से द्वी कोई जेंटिलमेन हो जाता है ! ईंगर्लेड के सत्र सिपाददी गोरे होते हैं, तो क्या इससे ये सत्र के सत्र जेटिलमैन हो गये ?

मेम--छम तो अपनी दलीढछ से आप क्रायल हो गये। जब्र गोरे चमड़े से कोई जेंटिलमैन नहीं द्वोता, तो फिर तुम सप क्यों जटिलमन कहलाओं ! और इन लोगों को निगर क्यों कहो १! वाह, अच्छा इंसाफ ह !

इतने में जहाज के एक कोने से आवाज़ आयी कि ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो लाश फड़कती द्ोती ।

प्रियाँ आबाद डरे कि ऐसा न हो, मियाँ स्वेजी किसी अँगरेज से लड़ पढ़ें, अफीम की लहर में किसी से बेवजह झगड़ पड़ें । क़रीब जा कर पूछा--यह क्यों बिगड़े जी ! किस पर गुल मचाया !

खोजी --अजी, जाओ भी, यहाँ शिकार द्वाथ से जाता रहा। वल्लाह, गिरफ़्तार दी कर लिया था। गीदी को पाता, तो इतनी करीीलियाँ छगादा कि छठी का दूध याद आ जाता । मगर मेरा पाँव फिसल गया और वह निकल गया !

आज्ञाद--नुम्दें एक ऑआँच की हमेशा कसर रह जाती है। यह था कौन !

खोजी--था कौन, वद्दी बहुरूपिया | और किसको पड़ी थी भला !

आज्ञाइ--बहुरूपिया !

खोजी--जी हाँ, बहुरूपिया ! बड़ा ताज्जुत हुआ आपको !

आज़ाद--भई हाँ, ताब्जुत कहीं लेने जाना है । क्या बहुरूपिया भी जहाज पर सवार हो लिया है ! बड़ा लागू है भई !

खोजी--सवार नहीं हुआ, तो आया कहाँ से १

आज्ञाद--क्या सोते हो खोजी, या पीनक में हो ?

खोजी--खोजी की ऐसी-तेसी | फिर तुमने खोजी कहा हमको '

आज्ञाद--माफ़ करना भई, कपूर हुआ |

२ छो

खोजी--वाह, अच्छा क़सूर हुआ ! किसी के जूते लगाइए और कहिए, ऋसर हुआ । जब देसो, खोजी-खोजी ।

आज़ाद--अच्छा जनाब ख्वाजा साहब, अब तो राज़ी हुए ! यह बहुरूपिया कहाँ से आ गया !

खोजी--अरे साहब, अब तो ख्वाब में मी आने लगा । अभी में सोता था, आप आ पहुँचे । मेरे द्वाथ में उस वक़्त अफीम की डिबिया थी। फेंकके डिबिया और लेके कतारा जो पीछे झ्पटा, तो दो कोस निकल गया | मगर शामत यह आयी कि एक जंगह ज़रा सा पानी पड़ा था ! मेरी तो जान ही निकछ गयी | फिसला, तो आरा रा राधों।!

आज्ाद--क्या गिर पड़े ! जाओ भी !

खोजी--बस, कुछ न पूछिए | मेरा गिरना ऐसा माद्म हुआ, जैसे हाथी पहाड़ से गिरा | घदाम-घड़ाम !

आज़ाद--इसमें क्या शक है! आपके दाथ-पाँव ही ऐसे हैं। वह तो कहिए, बड़ी खेरियत गुज़्री !

खोजी--और क्या ! मगर जाता कहाँ हे गीदी | रगेद के मारूँ। यहाँ पल्टन में सबेदारी कर चुके हैं । '

मेम और साहब, दोनों मियाँ आज़ाद और खोजी की बातें सुन रदे थे । साहतन्र तो उद् खबर समझते थे, मगर मेम साहब कोरी थीं। साहब ने तजुमा करके बताया तो वेनेशिया भी मारे हँसी के लोट गयी | यह इंच मर का आदमी, एक-एक माशे के हाथ पाँव ओर आपके गिरने से इतनी बड़ी आवाज़ हुई कि जैसे हाथी गिरे !

साहब--सिड़ी है कोई । जाने क्या वाही-तब्राही बकता है ।

मेम--तुम चुप रहो | दम इस जेंटिलमैन से पूछते हैं, यह कौन पागल है ।

साहइब--अच्छा, मगर हिंदोस्तानी बदतमीज़ होते हं। तुम इससे बातें न करो।

मेम "-अच्छा, तुम्दीं पूछो ।

इस पर साहब ने उँगली के इशारे से आज़ाद को बुलाया । आजाद भछा कब मुननेवाले थे | बोले द्वी नहीं। साइब्र पछटनी आदमी, चेहरा मारे ग़स्से के छाल है| गया । ख़याल हुआ कि वेनेशिया तालियाँ बजायेगी कि एक निगर तक मुखातितर न हुआ, बात का जवाब तक न दिया | वेनेशिया ने जब यद्द हालत देखी तो इठ-छाती और मुस्काराती हुई प्रियाँ आज़ाद की तरफ़ गयी। आज़ाद लेडियों से बोलने चालने के आदी तो थे ही, एक खुब्सरत लेडो को आते देखा, तो टोपी उतार कर सछाम किया और पूछा --आप कह्दों तशरीफ़ ले जायेंगी !

मेम--घधर जा रही हूँ । यह ठिगना आदमी कौन है ! ख़ब बातें करता है। दँसते हँसते पेट में बल पड़-पड़ गये ।

आजाद--जी हाँ, बड़ा मसखरा है |

मेम--चार्ली, यह तो कहते हैं कि वह तौना मसखरा है ।

साइब--हसकी बातें बड़े मजे की होती हैं ।

साहब का ग़स्सा ठंडा हो गया । आज़ाद का डील-डौल देख कर डर गये | इधर उधर की बातें होने लगीं। इतने में जहाज़ पर एक टरिलगीत्राज़ को सूझी कि आओ खोजी को बनायें। दो-चार और शोदहदे उससे मिल गये । जब देखा कि मिर्यों खोजी पीनक में सो गये, तो एक आदमी ने दो छाल मिरचें उनकी नाक मं डाल दीं | खोजी ने जो आँख खोली, तो मारे छींकों के बीखला गये । बावले कुत्ते की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे | मेम और साहब तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगे।

आजाद--जनाब ख्वाजा साहब !

खोजी--बस, भ्लग रहिएगा, आका छों |

आजाद---आखिर यह हुआ क्या ! कुछ बताओ तो !

खोजी--चलिए, आपको क्या; चाहे जो कुछ हुआ ! आ...छीं |

आज़ाद- यार, यद्द उसी बहुरूपिये की शरारत है ।

खोजी--देखिए तो, कितनी क़रोलियाँ भोंकी हों कि आ. . .छीं | याद दी तो करे--छो ।

आज़ाद--मगर तुम तो गिर-गिर पड़ते हो मियां! एक दफ़े जी कड़ा करके पकड़ क्यों नहीं लेते !

खोजी--नाक में पमिरचें डाल दीं। गीदी ने ।

आज़ाद--अबकी आप ताक में बेठे रद्दिए। बस, आते ही पकड़ लीजिए | मगर है त्रढ़ा शरीर, सचमुच नाक में दम कर दिया |

खोजी--कुछ ठिकाना है | नाक में मिरचें झोंकने की कौन सी दिल्लगी है !

आजाद --और क्या साहब, यह बेजा बात है ।

खोज्जी--बेजा-वेजा के भरोसे न रहिएगा, मैं किसी दिन हाथ-पाँव दढीले कर _ हूँगा | कहाँ के बड़े कड़ेखाँ हैं आप ! मैंने भी सूबेदारी की है ।

आज़ाद--तो आप मेरे हाथ-पाँव क्यों ढीले करते हैं! मैंने तो आपका कुछ बिगाड़ा नहीं |

खोजी--[आँखें खोल कर] अरे ! यह आप थे ! भई, माफ़ करना । बस, देखते जाओ, अब गिरफ़्तार द्वी किया चाहता हूँ गीदी को ।

आज़ाद--लेकिन, जरा होशियार रहिएगा ! बहुरूपिया गया जहन्नम में, ऐसा न दो, कोई हज़रत रुपये-पैसे गायब कर दें, बेवकूफ़ कद्दीं का ! अबे गधे, यहाँ बहू रूपिया कहाँ !

खोजी--बस, चोंच सैभालिए, बंदा चलता है। दोस्ती हो चुकी । कुछ आपके गुलाम नहीं हैं । और सुनिए, हम गधे हैं । क्या जाने कितने गधे हमने बना डाछे |

आज्ञाद--खेर, यही सही | लेकिन जाइएगा कहाँ ! यहाँ भी कुछ ख़र्की है !

खोजी--अरे ओ जहाक्ष के कप्तान ! जहाज़ रोक ले--अभी रोक ले ।

साहब--वह यों न सुनेगा । दो-चार हाथ करौली के छगाइए, तो फिर सुने |

इतने में हाजरी खाने का वक़्त आया। आजाद ने बेतकल्लफी के साथ उन दोनों के साथ खाना खाया | फिर तीनों टइलने लगे। आज़ाद को वेनेशिया की एक-एक छवि भाती थी और वह हसीना कभी शोखी

से इठलाती थी, कभी नाज के साथ मुसक्रिराती थी । इतने में खोजी ने यह शेर पढा--

गर तुम नहीं तो ओर बुते मद्दजबीं सद्दी,
इमको तो दिलगी से ग़रज़ है, कहीं सद्दी ।

आज़ाद ने जो यह शोर सुना, तो खोजी के पास आ कर बोले--यह क्या राजब करते हो जी ! इसका शौहर शेर खूब समझ लेता है ।

खोजी--वह गीदी इन इशारों को क्या जाने ।

आजाद--ठुम बड़े शरीर हो ।

खोजी--क्यों उस्ताद, हमी से यह उड़नघाइयाँ बताते हो, क्यों १ सच कहना, हुस्नआरा के लगभग है कि नहीं । बम्बईवाली बेगम भी ऐसी ही शोख थी ।

वेनेशिया ने खोजी को मुसकिराते देखा, तो उँगली के इशारे से बुलाया । खोजी तो रेशाखतमी द्वो गये । बहुत ऐंठते और अकड़ते हुए चले | गोया लंघौर“ पहलवान के भी चचा हैं। वाह, क्यों न हँ।। इस वक़्त ज़रा पाँव फिसले, तो दिलगी दो | मेम साहब के पास पहुँचे ।

आजाद--टोपी उतार कर सलाम करो खोजी |

खोजी का लफ़्ज़ सुनना था कि ख्वाजा साइबर का ग़स््सा एक सो बोस दर्जे पर ज्ञा पहुँचा । बस, पलट पड़े और पलटते ही उलटे पाँव भागने लगे ।

आजाद--ओ गीदी, जो पलट गया, तो इतनी क़रीलियाँ भोंक्री होंगी कि छठी का दूध याद आ गया होगा ।

मेम--क्यों खोजी, क्या मुझसे खफ़ा हो गये १

आजाद--क्यों मई, क्या शैतान ने फिर ऊँगठी दिखा दी ! मिर्यों खोजी ?

खोजी--खोजी पर ख़दा की मार ! खोजी पर शैतान की फटकार ! एक दफ़ा खोजी कह्दा, मैं खून पी कर रह गया, अब फिर दोहराया । खुदा जाने, कब्र का दिया इस गादे वक्त काम आया। नहीं तो मारे क़रौलियों के भुद्दा सा सिर उड़ा देता | लाख गया-गुज़रा हूँ, तो क्या हुआ, उम्र भर रिसालदारी की है, घास नहीं खोदी |

मेम-अच्छा, यद्द खोजी के नाम पर बिगड़े | इम समझे, हमसे रूठ गये ।

खोजी--नहीं मम साहब, कैसी बात आप फ़रमाती हैं !

आज़ाद--ज़्रा इनसे इनकी बीती जान का ह्वाल पूछिए | उसका नाम बुआ ज़ाफ़रान है | देवनी दे देवनी |

खो. ने बुआ जाफ़रान का नाम सुना, तो रंग फ़क़ हो गया ओर सहम कर आँख बंद कर लीं। आज़ाद नेज> वेनेशिया मे सारा क्रिध्सा कहा, तो मार हँसी के छोर वोट गयी।

HINDI TEXT

प्रसंग ४९

एक आलीशान महल की छत पर हुस्नआरा और उनकी तीनों बहने मीठी नींद सो रही हैं। बहारबेगम की जुल्फ़ से अम्बर की लपटे त्याती थीं; रूहअफ़जा के घूँघरवाले बाल नौजवानों के मिज़ाज की तरह बल खाते थे; सिपह्ठआरा की मेंहदी अजब लत्फ़ दिखाती थी और हुस्नआरा बेगम के गोरे-गोरे मुखड़े के गिर कालछी-काली ज़ुल्फ़ों को देख कर धोखा होता था कि चाँद ग्रहण से निकछा है |

ह्धर तो) चारों परियाँ बेखबर आराम में हैं, उधर शाहज़दा हुमायूँ फ़र अपने दोस्त मीर साहब से इधर-उधर की बातें कर रहे हैं |

मोर- कुछ अड़ोसी-पड़ोसियों का तो हाल कहिए | दोनों हसीनें नज़र आती हैं या नहीं !

शाहज़ादा--अर मर्थों, अब ते। चौकड़ी है। एक से एक बढ-चढ़-कर । सत्र मस्त हैं। मगर बला की हयादार ।

मीर--यह कहिए, गहरे हो उस्ताद !

शाइजादा--अजी, अभी ख्वाब देख रहा था एक महसी हुस्नआरा का खत लायी है। खत पढ़ रहा था कि आप बला की तरह आ पहुँचे । जी चाहता है, गोली मार दूं ।

मभीर-कक्यों साहब, आपने तो कान पकड़े थे |

शाहजादा--दिल पर काबू भी तो हो !

मीर--कलंक का टीका लगाओगे ! ख़दा के लिए फिर तोबा करो । आखिर चारों छोकड़ियों में से आप रीक्षे किस पर ! था चारों पर हल आया है !

शाहज़ादा-- चार निकाह तो जायज हैं !

मीर--तो यह कहिए, चारों पर दाँत हैं ।

शाहज़ादा-- नहीं मियाँ, हँसता हूं | दो ही तो कुंआरी हैं |

ये बातें हो ही रही थीं कि एकाएक मदल्ले में चोर-चोर का गुल मचा । कोई चिराग़ा जलाता है कोई बीबी के जेवर ट्टोलता है। चारों तरफ खलबली मच गयी । पूछने से मालूम हुआ कि बड़ी बेगम साहबा के धर में चोर घुसा था। शाह-जादे ने जो यह बात सुनी, तो मीर साहब से बोले--भई क़ा तो अच्छा है। चलो, इस वक़्त जरा हो आय । इसी बहाने एहसान जताये !

मीर--सोच छो, ऐसा न हो, पीछे मेरे माथे जाय । तुम तो शाहज़ादे बन कर क्रूट जाओगे, उल्लू मैं बनूँगा | आखिर वहाँ चल कर क्या कह्दीगे !

शाहजादा--अजी, कहूँगे क्या ! बस, अफ़सोस करेंगे। शायद इसी फेर में एक झलक मिल जाय | और नहीं, तो आवाज़ ही सुन लेंगे ।

दोनों आदमी बेगम साहबा के मकान पर पहुँचे, तो क्या देखते हैं कि चालीस-पचास आदमी एक चोर को घेरे खड़े हैं और चारों तरफ़ से उस पर बेभाव की पड़ रही हैं । एक ने तड़ से चपत जमायी, दुसरे ने खोपड़ी पर धौल लगायी। चोर पर इतनी पड़ी कि बिलबिला गया । झल्ला-झला कर रद्द जाता था। दो-तीन भले आदमी लोगों को समझा रहे थे, बस करो, अब तो खोपड़ी पिलपिली कर दी । क्या जमाते ही जाओगे १

एक-मभाई, खूब हाथ गरमाये ।

दूसरा--दृम तो पोले हाथ से लगाते थे । जिसमें चोट कम आये, मगर आवाज़ ख़ब हो ।

है चोर--छूट्रेंगा तो एक-एक से समझेँगा । क्या करूँ, बेबस हूँ; वना सबको पीस

कर धर देता ।

बदारबेगम के मियाँ भी खड़े थे | बोले--एक ही शैतान दे |

शाहतादा--आखिर, यह आया किघधर से !

नवाब साहब--मैं घूम कर कोई दस बजे के लगभग आया | खाना खा कर लेटा ही था कि नींद आ गयी। यह गुर मचा, तो तलवार ले कर दौढ़ पड़ा । अब सुनिए, मैं तो ऊपर से आ रहद्दा हूँ, और चोर नीचे से ऊपर जाता है। रास्ते में मुठ-भेड़ हुईं । इसने छुरी निकाली, मगर मैंने भी तलवार का वह हाथ चलाया कि ज़रा हाथ ओछा न पड़े, तो भंडारा खुल जाय । फिर तो ऐसा सहमा की द्दोश उड़ गये । भागते राह न मिली । अब छत पर पहुँचा और चाहता था कि श्पट कर नीचे कूद पड़े; मगर मेरी छोटी साली ने इस फ़ुरती से रस्सी का फंदा बना कर फंका कि उलझ कर गिरा | उठ कर भागने को ही भा कि में गले पर पहुँच गया और जाते दी छाप बैठा । औरतों ने दोद्याई देना घुरू की; लेकिन मैंने न छोढ़ा। आपने इस बक़त कहाँ तकलीफ़ फ़रमायी !

शाहजादा--मैंने कहा, चल कर देखेँ क्या बात हुई। बारे शुक्र हे कि स्वेरियत हुई । मगर आपकी साली बड़ी दिलेर हैं | दूसरी औरत हो, तो डर जाय ।

यहाँ तो यह बातें हो रही थीं, उधर अंदर चारों बहनों में भी यही जिक्र था । चारों हँस-ईंस कर यही बातें कर रही थीं--

सिपहआरा--है-है- बाजी, मैंने जब उस काछे-काले संडे को देखा, तो सन से जान निकल गयी ।

रूहभफ़ज़ा--मरुआ तंबाकू का पिंडा |

हुस्नआरा--वह तो खेर गुजरी कि संदुक हाथ से गिर पड़ा, नहीं तो सब मूस ले जाता |

सिपदआरा--बहारबेगम की चिड्चिड़ी सास छाखों ही सुनाती कि मेरी बहू के गहने सब्र बेच खाये ।

बहारबेगम--चोर-चोर की भनक कान में पड़ी, तो मैं कुलबुछा कर चौंक पडी |

मागी, तो जुड़ा मी खुल गया। अल्लाह जानता है, बड़ी मिहनत से बाँचा था । चलो खेर !

रूहअफ़ज़ा-- बस, हमारी बाजी को चोटी कंघी की फ़िक्र रहती है |

हुस्नआरा-- जितना इनको इस बात का खयाल है, उतना इमारे खानदान-मर में किसी को नहीं है |

जमी तो दुल्हा भाई इतने दीवाने रहते हैं ।

बहारबेगम--चलो, बैठी रद्दो; छोटे मुँद बड़ी बात !

हुस्नआरा -दुल्हा भाई को इनके साथ इश्क़ है।

बदा रबेगम--क्या टर-टर लगायी है नाहक़ !

अब दिल्लगी सुनिए कि मिरज़्ा हुमायूँ फ़र बाहर बेठे चुपके-चुपके सारी बातें सुन रहे थे । नवाब बेचारे कट-कट गये, मगर चुप । अंदर जा कर समझाये, तो अदब के खिलाफ़; चुपके बेंठे रहें, तो भो रहा नहीं जाता | जान अज़ाब में थी । खेर, हुकका पी कर शाइज़ादा रखसत हुए । उनके चले जाने के बाद नवाब साहब अंदर आये और बोले--तुम छोगों की मी अजब आदत है। जब देखोगी कि कोई ग़ैर आदमी आकं बैठ। है, बस, तभी गुल मचाओगी | इस वक़्त एक भक्ेमानस बैंठे थे और यहाँ चुदल हो रद्दी थी ।

बहारबेगम--वह मलामानस निगोढ़ा कौन था, जो इतने वक़्त पंचायत करने आ बेठा !

रूहअफ़क्ा--तो अब कोई उनके मारे अपने घर में बात न करे १ घोट कर मार न डालिए ।

हुस्नआरा--हम भी तो सुने, वह भमलेमानस कौन थे !

नवाब--अजी, गही, जो सामने रदते हैं, शाहबादे |

हुस्नआरा--तो आपने आ कर हमसे कह क्यों न दिया १ फिर हम काहे को बोलते !

बहा रवेगम--अपनी खता न कहेंगे, दुसरों को ललकारेंगे |

नवाब--उस वक़्त वहाँ से आने का मौका न था। मुझसे पूछा कि चोर को किसने पकड़ा । मैंने कहा, मेरी छोटी सालो ने तो बहुत दी हंसे ।

नवाब साहब बाहर चले गये, तो फिर बातें होने लगीं--

सिपदआरा--जरा उसकी दिठाई तो देखो कि चोर का नाम सुनते दी आ डटा । भला क्या वजह थो इसको ! ऐसा कहाँ का बड़ा रुस्तम था !

दुस्नआरा--तीन बजे के वक़्त आप जो आ4, तो क्यों आये |

रूहअफ़ज़ा- मैं बताऊँ ! उसको यह खबर न द्वोगी कि दृल्दा भाई घर पर हैं | यह न होते, तो घर में घुस पड़ता ।

सिपदआरा-काम तो शोइदों के जैसे हैं ।

अब एक और दिल्लगी सुनिए । चोर आया, गुरू गपाड़ा हुआ, पकड़ा गया जमाने भर में हुछलड़ मचा, महृत्ला भर जाग उठा; चोर थाने पर पहुँचा; मगर बड़ी बेगम साहबा अभी तक खर्गटे ही ले रही हैं। जत्र जागीं, तो मामा से बोलीं--कुछ गुल सा मचा था अभी !

मामा--हाँ, कुछ आवाज तो आयी थी !

बेगम-- जरी, किसी से पुछो तो ।

मामा--ऐ, बीच्ी, पूछना इसमें क्या है ! भेड़िया-वेडिया आया होगा ।

बेगम- मैंने आज हाथी को ख्वाब में देखा है; अल्लाह बचाये ।

इतने में चोर के आने की ख़बर मिली । तब तो बेगम साहबा के होश उड़ गये । मामा को भेज्ञा कि जा पूछ, कुछ ले तो नहीं गया ।

, हुस्नआरा- अम्माँजान बहुत जरद जागीं ! क्या तू भी घोड़े बेच कर सोयी थी !

अब्लाह री नींद !

मामा--जरी आँख लग गयी थी । मगर कुछ गुल की आवाज़ जरूर आयी थी |

हुस्नआरा- महल्ला भर जाग उठा, तुम्हारे नज़दीक कुछ ही कुछ गुल था। ठीक | जाके अम्माँ से कह दे कि चोर आया था, मगर जाग हो गयी।

सिपहदआग--ऐ, काहे के वास्ते बहक द्वो। मामा, तू जाके सो रद्द; शोर-गुल कहीं कुछ न था, कोई सोते में बर्रा उठा द्वोगा ।

हुस्नआरा- नहीं मामा, यह दिल्लगी करती हैं । चोर आया था ।

मामा--ऐ,, गया चूढदे में निगोड़ा चोर ! इधर आने का रुख करे, तो आँख ही फूट जायें | क्या हँसी-ठटठा है ।

सिपहआरा- देखो तो सदह्दी भला!

मामा--अभी बेगम साहबा सुन लें, तो दुनिया सिर पर उठा लें।

मामा ने जा कर बेगम से कदा--हुजूर, कुछ है न वै, बेकार को जगाया | न भेडिया, न चोर, कोई सोते-सोते बर्रा उठा था ।

वेगम--जरा बाहर जा कर तो पृछ कि यह गुल केसा था!

महरी--त्रीबी, में अभी बाहर से आयी हूँ, कोटे पर कलमुँहा आया था | कोठरी का कुडफ तोड कर जब संदक उठाया, तो जाग हो गयी । इतने में नवाब्र साहब कोठे पर से नंगी तलवार लिये दोडढ़ आये ।

बेगम--नवात्र साहबत्र के दुश्मनों को तो कह्दी चोट-ओट नहीं आयी १ महरी--ना त्रीब्री, एक फाँस तक तों चुभी नहीं ।

बेगम--चोर कुछ ले तो नहीं गया |

महरी-- एक झंझी तक नहीं ।

बेगम--चोर अन्न कहाँ हे !

महरी--खादिमहुसैन थाने पर ले गया।

मामा--अब चक्की पीसनी पड़ेगी |

बेगम--तू तो कहती थी कि कोई सोते-सोते बर्रा उठा था। झूटी जमाने भर की | चल, जा, दृट !

अब थाने का हाल सुनिए। थानेदार नदारद; जमादार शराब पिये मस्त; कांस्टेबल अपनी-अपनी ड्यूटी पर। एक कांस्टेबिल पहरे पर पड़ा सो रहा था। खादिमहुसैन ने बहुत गुल मचाया । तत्र जाके हज़रत की नींद खुली । बिगड़े कि मुझे जगाया क्यों ! चोर को छोड़ दो |

खादिमहुसिन--वाह, छोड़ देने की एक ही कही। में भी थाने में मुहर्रिर रह चुका हूँ ।

कांस्टेबिल-- न छोड़ोंगे तुम !

खादिमहुसैन-- होश की दवा करो मियाँ] इसके साथ तुमको भी फँसाऊं तो सही |

कांस्टेबिल---(चोर से) तुझे इन्होंने अपने यहाँ के घंटे रखा था !

चोर--पकड़ के बस यहाँ ले आये !

कांस्टेब्िल---दुत मौखे ! अबे, तू कहना कि में राह-राह चला जाता था, इनसे बुझसे लागडांट थी। इन्होंने घात पा कर मुझे पकड़ लिया, खूब पीटा और चार घंटे तक अस्तब्ल की कोठरी में बंद रखा ।

चोर--लागडाट क्या बताऊँ !

कांस्टेबिल-- कद् देना कि मेरी जोरू पर यह बुरी निगाह डालते थे | बस, लाग-डाट हो गयी ।

चोर-- मगर मेरी जोरू तो चार बरस हुए, एक के साथ निकल गयी ।

कांस्टेबिल--बस, तो बात बन गयी ! कह देना, इन्हीं की साजिश से निकली थी । तो इन पर दो जुर्म क्रायम होंगे | एक यह कि तुमको झठ-मूठ फाँस जिया, दूसरे जबरदस्ती क्रेद रखा ।

खादिमहुसैन-- तुम्हारी बातों पर कुछ हँसी आती है, कुछ ग़स्सा ।

कांस्टाबिल-- जब बड़ा घर देखागे, तब हँसी का हाल खुल जायगा |

स्रादिमहुसैन-- दमारे घर में चोरी हो और हमीं फैसे ९

खेर कांस्टेबिल साइब रोज़नामचा लिखने बैठे | खादिमहुसैन ने सारी दास्तान बयान को । जब उसने यह कहा कि नवात्र साहब तलवार ले कर दोड़े, तो कांस्टेबिल ने कलम रोक दिया और कद्दा--ज़रा ठहरो, तलवार का लेसंस उनके पास हे !

खादिमहुसैन--उनके साथ तो बीस सिपादहदी तल्वार बाँधे निकलते हैं। तुम एक लेसंस लिये फिरत द्वो !

आखिर रिपोर्ट खतम हुईं और खादिम अपने घर आया |

HINDI TEXT

प्रसंग ५०

एक दिन मिरयाँ आज़ाद मिस्थ्र और मिसेज़ अपिल्टन के साथ खाना खा रहे थे कि एक दँसोड आ बैठे और छतीफ़े कहने छगे। बोले--अजी, एक दिन बड़ी दिल्लगी हुई | हम एक दोस्त के यहाँ ठहरे हुए थे । रात को उसके खिदमतगार की बीबी दस अंडे चट कर गयी। जब दोस्त ने पूछा, टो खिदमतगार ने बिगड़ी बात बना कर कहा कि ब्ि्ली खा गयी । मगर मैंने देख लिया था । जब बिल्ली आयी तो वह औरत उसे मारने दोड़ी । मैंने कह्दा--बिली को मार न डालना, नहीं तो फिर अंडे हजम न होंगे।

आज़ाद--बात तो यही है । खाय कोई, बिल्ली का नाम बद ।

अपिल्टन---आप शादी क्यों नहीं करते !

दँसोढ--शादी करना तो आसान है, मगर बीबी का सैंमालना मृश्किल | हाँ, ए.क शर्त पर हम शादी करेंगे | बीबी दस बच्चों की माँ हो ।

मेम--बच्चों की क्रेद क्यों की !

हँसोड--आप नहीं समझी । अगर जवान आयी, तो उसके नखरे उठाते-उठाते नाक में दम आ जायगा; अधेड़ त्रीत्री हुई तो नखरे न करेगी और बच्चे बड़े काम आयेंगे |

आज़ाद--वह क्या

दैंसोड--कहत के दिनों में बेच लेंगे ।

इतने में क्या देखते हैं कि मियाँ खोज्ी लुढ़कते हुए चले आते हैं। एक सूखा कतारा द्वाथ में है ।

आजाद--आइए | बस, आप ही की कसर थी ।

खोजी--मुझे बैठे-त्रेठे खयाल आया कि किसी से पूछ तो कि यह समुंदर है क्या चीज़ और किसकी दुआ से बना है !

ईंसोड- मैं बताऊँ | अगले जमाने में एक मुल्क था घामड-नगर |

खोजी--जरी ठहर जाइएगा । वहाँ अफ्रीम भी त्रिकती,थी !

हँसोड---उस मुल्क के बाशिंदे बड़े दिलेर होते थे, मगर क़द के छोटे । बिल-कुछ टेनी मुगे के बराबर |

खोजी-- (मूँछों पर ताव दे कर) हाँ-हाँ, छोटे कद के आदमी तो दिलेर होते ही ईदें।

हँसोड--और कोई बगेर क़रोली बाँघे घर से न निकलता था |

खोजी--(अकड़ कर) क्यों मियाँ आजाद, अब न कहोगे !

हँसोड़ - मगर उन छोगों में एक ऐन था, सब के सब अफ़ीम पीते थे ।

खोजी--(त्योरियाँ चदा कर) ओ गीदी |

आज़ाद--हैं- हैं । शरीफ़ आदमियों से यद्द बदज़बानी !

खोजी--हम तो सिर से पाँव तक फुँक गये, आप दारीफ़ लिये फिरते हैं ।

ईसोड--वहाँ की औरतें बढ़ी गरांडील होती थीं । जहाँ मियाँ ज़रा बिगड़े, और बीबी ने बगल में दबा कर बाज़ार में घसीटा | ह

खोजी---अद्दाह्वा, सुनते हो यार ! वह बहुरूपिया वहीं का था।. अब तो उस गीदी का मकान भी मिल गया । चचा बना कर छोड़े , तो सद्दी ।

हँसोड-- वे सब रिसालदारी करते ये । न

खोजी--और वहाँ क्या-क्या होता था १ उस मुल्क के आदमरियों की तसवीरें भी आपके पास हैं !

हँसोड---थीं तो, मगर अब नहीं रहीं। बस, बिलकुल तुम्दारे ही से हाथ-पाँव थे | करारे जवान | पींडे बहुत खाते थे ।

खोज़ी--ओभोहोहो ! वे सब हमारे ही बाप-दादा थे। देखो भाई आजाद, अब यह बात 5छी नहीं । वहाँ से तो ल्म्बे-चौड़े वादे कर के लाये थे कि क़रौली जरूर छे ढेंगे, और यहाँ साफ़ मुकर गये | अब हमें करौली मैंगा दो, तो खेरियत हे, नहीं तो हम बिगड़ जायँगे | वछलाह, कौन गीदी दम मर ठदरे यहाँ ।

आज़ाद--और यहाँ से आप जायेंगे कहाँ ! जह्नुम में !

बेनेशिया--कुछ रुपये भी हैं ! जहाज़ का किराया कहाँ से दोरे !

आज़ाद-- मैं इनका खज़ानची हूँ । यह घर जायें, किराया मैं दे दूँगा ।

ईंसोड--इस सखजानची के लफ़्ज़ पर हमें एक लतीफ़ा याद आया। शादी के पहले नौजवान लेडियाँ अपने आशिक को अपना खज़ाना कद्दती हैं। शादी होने के बाद उसे खज़ानची कद्दने लगती हैं | खज़ानची फे खज़ानची और मिरयाँ के मियां

वेने शिया---अच्छा हुआ, तुम्हारो बीबी चल बसीं; नहीं तो तुम्हारी किफ़ायत उनकी जान ही ले लेती ।

हँसोड-- अजीब औरत थी, शादी के बाद ऐसी रोनी सूरत बनाये रहती थी कि मालूम होता था, आज बाप के मरने की ख़बर आयी है | दो बरस के बाद हमसे छह महीने के लिए जुदाई हुई | अब जो देखता हूँ, तो और ही बात है| बात-बात पर मुसकिराना और हँसना। बात हुई और खिल गयी | मैंने पूछा, क्या तुम वद्दी हैं! जो नाक-भौं चढ़ाये रहती थीं ! मुसकिरा कर कदहा--हाँ, हूँ, तो वही । मैंने कहा-- खैर, काया-पलट तो हुई | इँसके बोली--वाह इसमें ताज्जुब काहे का। एक दिन मुझे खयाल आ गया, बस, तब से अब हर वक़्त हैंसती हूँ । तब तो मैंने अपना मुंह पीट लिया । रोनी सरत बना कर बोला-इम तो ख़श हुए थे कि अब इमसे तुमसे खुब बनेगी, मगर मादम द्दो गया कि तुम्हारी हँसी और रोने, दोनों का एवबार नहीं | अगर तुम्हें इसी तरह बेठे-बैठे किसी दिन ख्याल आ गया कि रोना अच्छा, तो फिर रोना डी शुरू कर दोगी |

आज़ाद--मुझे भी एक बात याद आ गयी | हमारे महल्ले में एक ख्वाजा साहब रहते थे। उनके एक लड़की थी, इतनी इसीन कि चाँद भी शरमा जाय | भोत करते बक़त बस यही मालूम होता था कि मुँह से फूल झड़ते हैं । उसकी शादी एक गँवार ज़ाहिल से हुई, जो इतना बदसुरत था कि उससे बात करने का भी जी न चाहता था | आख़िर लड़की हसी ग़म में कृद-कुद कर मर गयी |

HINDI TEXT

प्रसंग ५१

कई दिन तक तो जहाज खैरियत से चल् गया, लेकिन पेरिस के करीत पहुँच कर जहाज के कप्तान ने सबको इत्तिछा दी कि एक घंटे में बड़ी सख्त आँची आने-वाली है। यह खबर सुनते ही सबके दोश-हवास ग़ायत्र हो गये। अक़्ल ने हवा बतलायी, आँखों में भैघेरी छायी, मौत का नक्शा आँखों के सामने फिरने लगा , तुर्ग यह कि आसमान फ़क़ोरों के दिल की तरह साफ़ था, चाँदनी खूब निखरी हुई, किसी को सानगुमान भी नहीं हो सकता था कि वृफ़ान आयेगा; मगर बेरोमिटर से तूफ़ान की आमद साफ़ जाहिर थी। लोगों के बदन के रोंगटे खट हो गये, जान के छाले पड़ गये; या खुदा, जाये तो कहाँ जाये, और इस नूफ़ान से नजात क्योंकर पायें ? कप्तान के भी दहवाथ-पाँव फूल गये और उसके नायब्र भी सिद्दी-पद्टी भूल गये | सीदियों से तख्ते पर आते थे ओर घत्ररा कर फिर ऊपर चंद जाते थे । कप्तान छाख-लाख समझाता था, मगर किसी को उसकी बात का यक्नीन न आता थां-- किसी तरद्द से समझता नहीं इहिले नाशाद; वही है रोना, वही चीखना, वही फ़रियाद । इतने में हवा ने वह जोर बाँधा कि लोग त्रादि-त्राहि करने लगे। कप्तान ने एक पाल तो रहने दिया, और जहाज को खूदा की राह पर छोड़ दिया । छहरों की यह कैफ़ियत की आसमान से बातें करती थीं। जह्ाज़ झोंके खा कर गेंद की तरह इधर से उधर उछलता था। सब्र के-सत्र जिंठगी से हाथ धो बैठे, अपनी जानों को रो अैठे । बच्चे सहम कर अपनी माँआँ से चिपटे जाते थे । कोई औरत मुँह टैंक कर रैली थी कि उम्र भर की कमाई इस समुद्र में गैवायी। कोर अपने प्यारे बच्चे को छाती से लगा कर कहती--बेटा, अब हम रुखसत होते हैं। पर वह नाटान मसकिराता था र इस भोलेपन से माँ के दिल पर बिजलियाँ गिराता था। किसी को मारे खौफ वे; चुप लग गयी थी, किसी के हाथ-पाँवों में केंपर्कपी थी । कोई समुद्र में कूद पड़ने का इरादा करके रद्द जाता था, कोई बैठा देवतों को मनाता था। क्या बूदे, क्या जवान, सत्रकी अक़ल गुम थी | वेनेशिया के चेहरे का रंग काफ़र हो गया। हँसोड़ के दिल से हँसी का स्वयाल कोसों दूर हो गया । नियाँ आजाद का चेहरा जद, अपि सन के हाथ-पाँव से । मियाँ आजाद सोचने लगे, या खदा, यह किस मुसीत्रत से टो-चार किया, माशुक़ के एवज मौत को गछे का हार किया ! जी लगाने की ख़ब सज़ा पायी, इश्क़ की धुन में जान भी गेवायी । हमारी हड्डियाँ तक गल जायेगी; हुस्नआरा हमारी खबर भी न पायेंगी । सिपहआरा बार-बार फ़ाछ देखेगी कि आजाद ऊन मैदान से सुखेरू हो कर आयेंगे ओर दम कब मसज्िद में घी के चिराग

जलायेंगे; मगर आजाद की किश्ती ग़ोते खाती है और ज़रा देर में तह को खबर लातो है |

जहाज में तो यह कुहराम मचा था, मगर खोज्जी लंबी ताने सो ही रहे थे । इस नींद पर ख़दा की मार, इस पीनक पर शैतान की फटकार | आज़ाद ने जगाया कि ख्वाजा साहब, उठिए, वूफ़ान आया है। हज़रत ने लेटे ह्ी लेटे भुनभुना कर फ़रमाया कि चुप गीदी, हमने ख्वाब में बहुरूपिया पकड़ पाया है। तब तो आजाद झलाये और कस कर एक लात लगायी। खोजी कुलबुला कर उठ बैंठे और समुद्र की भयानक यूरत देखी,

तो काँप उठे ।

कप्तान खूब समझता था कि हालत हर घड़ी नाजक होती जाती है; लेकिन पुराना आदमी था, कलेजा मजबूत किये हुए था। इससे लोगों को तसल्ली होती थी कि शायद जान बच निकले | सामने पेरिम का जज़ीरी नज़र आता था; मगर वहाँ तक पहुँचना मुद्दा था। सब के सब दुआ कर रहे ये कि जहाज किसी तरह इस ठापू तक पहुँच जाय । मरने की तैयारियाँ हो रही थीं। इतने में आज़ाद ने क्या देखा कि अपिल्टन वेनेशिया का हाथ पकड़ कर तख्ते पर खड़े रो रहे हैं। आज़ाद को देखते द्दी बेनेशिया ने कटद्दा--मिस्टर आज़ाद, रुखसत | हमेशा के लिए रुखसत !

आजाद-- रुखसत !

ईसोड--है-है ! छो, अब मैंवर में जद्दाज़ आ गया ।

यह सुन कर औरतों ने वह फ़रियाद मचायी कि छोगों के कलेजे दहल गये ।

अपिल्टन--बस, इतनी द्वी दुनिया थी !

आजाद- हाँ, इतनी द्वी दुनिया थी !

खोजी--भई आज़ाद, खुदा गवाह है, में इस वक़्त अफ़ीम के नशे में नहीं । अफ़सोस, तुम्हारी जानं जाती है, हुस्नआरा समझेंगी कि आज़ाद ने धोखा दिया। हाय आज़ाद, तेरी जवानी मुफ्त गयी ।

एकाएक जहाज तीन बार धूमा और हवा के झोके से कई ग़ज के फ़ासले पर जा पहुँचा । अब लाइफ-बोट के सिवा और कोई तदबीर न थी। जहद्दाज़ डूबने ही को था, दस फुट से ज्यादा पानी उसमें समा गया था | लाइफ-बोट समुद्र में उतारे गये और आज़ाद ढड़कों और औरतों को उठा-उठा कर लाइफबोट में बैठाने लगे | उनकी अपनी जान खतरे में थी, मगर इसकी उन्हें परवा न थी! जब वह वेनेशिया के पास पहुँचे, तो उसने इनसे हाथ मिलाया और अपिल्टन और वह, दोनों छाइफ-बोट में कूद पड़े। आज़ाद की दिलेरी पर लोग हैरत से दाँतों तले ऊँगली दबाते ये । लोगों को यक़ीन दो गया था कि यद्द कोई फ़रिश्ता है, जो बेगुनाहों की जान बचाने के लिए आया है ।

ठापू के वाशिंदे किनारे पर खड़े रोशनी कर रहे थे कि शोले उठें और बहाज के लोग समझ जायें कि ज़मीन क़रीब है। सैकड़ों आदमी गुर मचाते थे, तालियाँ बजाते ये | कुछ लोग रो रहे थे। मगर कुछ ऐसे भी थे, जो दिल में खिले जाते थे कि अब पौ बारह हैं ।

एक---बस, अब जहाज डूबा | तड़के ही से लेस होकर आ इडढूँगा।

दूसरा--हमें एक बार जवाहिरात का एक संदुक मिल गया था।

तीसरा--अजी हमने इसी तरह बहुत-कुछ पैदा किया ।

चौथा--अज़ी, क्या बकते हो १ कुछ तो खुदा से डरो। वे सब तो मुसीबत में हैं, और तुम लोगों को दूट की धुन सवार है। शर्म हो, तो चुल्ल-मर पानी में डूब मरो।

मियाँ खोजी बार-बार हिम्मत बाँध कर लाइफ-बोट की तरफ़ जाते और डर कर लोट आते ये । आख़ि आजाद ने उन्हें भी घसीट कर लाइफ-बोट में पहुँचाया । वहाँ जाते द्वी उन्होंने गुल मचाया कि अफ़्रीम की

डिबरिया तो वह्दीं रह गयी ! मियाँ जरी कोई लपकके हमारी डिबिया ले आये । आजाद ने कह्दा--मियाँ तुम भी कितने पागल हो ! यहाँ नानों के लाले पड़े हैं, तुम्हें अपनी डिबत्रिया ही की फ़िक्र है |

लालफ-बोट कुल तीन ये उनमें मुश्किल से पचास-साठ आदमी बैठ सकते थे | लेकिन हर शख्स चाहता था कि में भी लाइफ-बोट में पहुँच जाऊँ। कप्तान ने यह हालत देखी, व, ऊंजीरं खोल दीं। किश्तियाँ बह निकलीं। अब बाक़ी आदमियों की जो हालत हुई, वह बयान में नहीं आ सकती । अगर कोई फ़ोटोग्राफ़र इन बद-नसीबों की तसवीर उतारता, तो बड़े से बड़े संगदिल भी उसे देख कर सिर धुनते। मौत चिमटी जाती है, और मौत के पंजों में फेंसी हुई जान फड़फड़ा रह्दी है। मगर जान बढ़ी प्यारी चीज है। छोग खूब जानते थे कि जहाज़ के डूबने में देर नहीं,

लाइफ-बोट भी दूर निकल गये । मगर फिर भी यह उम्मेद दे, शायद किसी तरह बच जाये । दो बदनसीब बहनें यों बातें कर रही थीं--

बढ़ी बहन--कूद पड़ो पानी में ! शायद बच जायें।

छोटी बहन- लहरें कद्टीं न कह्दीं पहुँचा ही देंगी ।

बड़ी-- अम्माँ सुनेंगी तो क्या करेंगी !

छोटी--मैं तो कूदती हूँ ।

बड़ी--क्यों जान देती है !

एक औरत ने अपने प्यारे बच्चे को समुद्र में फेक दिया और कटद्ठा-यहद्द लड़का तेरे सिपुद करती हूँ ।

यह कह कर खुद भी गिर पड़ी । अब सुनिए; जिस लाइफ-बोट पर वेनेशिया, ओर अपिल्टन ये, वह हवा के शोंके

से पेरिम से दूर हट गया । वेनेशिया ने कह्दा--अब कोई उम्मेद नहीं ।

अपिल्टन - खुदा पर भरोसा रखो ।

वेनेशिया--या खुदा, हमें बचा ले | हम बेगुनाह हैं ।

अपिल्टन---सब्र, सब्र |

वेनेशिया--लो, आजाद की किइती भी इधर ही आने छगी। अब कोई न बचेगा।

दोनों किश्तियाँ थोड़े ही फासले पर जा रही थीं, इतने में एक लहर ने अपिल्टन की किइती को ऐसा झोंका दिया कि वह नीचे ऊपर होने लगी और तीन आदमी समुद्र में गिर पड़े | अपिल्टन भी उनमें से एक ये । उनके गिरते ही वेनेशिया ने एक चीख मारी और बेहोश हो गयी । आज़ाद ने यह हाल देखा, तो फ़ौरन ब्ोट पर से कूद पड़े ओर जान हथेली पर लिये हुए, लहरों को चीरते, अपिल्टन की मदद को चले | इधर अपिब्टन का कुत्ता भी पानी में कूदा और उनके सिर के बाल दाँतों से पकड़े ऊपर लाया। मियाँ आज़ाद भी तैरते हुए जा पहुँचे और अपिल्टन को पकड़ लिया | उसी वक़्त किश्ती भी आ पहुँची और छोगों ने मदद दे कर अपिल्टन को खींच लिया । मगर किश्ती इतनी तेजी से निकल गयी कि आज़ाद उस परन आ सके । अब उनके लिए मौत का सामना था । "मगर वह:कलेजा मजबूत किये टापू की तरफ तैरते चले जाते थे ।

टापूवालों ने उन्हें आते देखा, तो और भी हौसला बढाया, और हिम्मत दिलायी। सब के सब्र दुआ कर रहे थे किया खुदा, इस जवान को बचा | ज्यों ही आज़ाद टापू के करीब पहुँचे, रस्सियाँ फेकी गयीं और आज़ाद ऊपर आये। सब ने उनकी पीठ ठोंकी | वेनेशिया ने मिर्यों आज़ाद से कहा-- तुम न होते तो, में कहीं की न रहती । तुम्हारा एहसान कभी न भूलूँगी ।

अपिल्टन--भाई, देखना, भूल न जाना | टर्की से ख़त लिखते रहना ।

आजाद--ज़रूर, जरूर !

वेनेशिया--आज़ाद, जैसे बहन को अपने भाई की मुहब्बत होती है, वेसे ही मुझको तुम्दारी मुहब्बत है ।

आजाद-- मैं जहाँ रहूँगा, आप लोगों से ज़रूर मिलूँगा।

खोजी--यार, हमारी अफ़ीम की डिब्रिया जद्दाज़ ही में रह गयी । देखे, किस खश नसीब के हाथ लगती है |

सब्र लोग यह जुमल मुन कर खिलखिला कर हंस पड़े |

HINDI TEXT

प्रसंग ५२

माल्टा में आर्मोनिया, अरब, यूनान, स्पेन, फ्रात सभी देशों के लोग हैं। मगर दो दिन से इस जजीरे में एक बड़े गरांडील जवान का गुजर हुआ है । कद कोई आध ग़ज का हाथ-पाँव दी दो माशे के; हवा ज़ग सेज़ चले, तो उड़ जायेँ। मार बात बात पर तीखे हुए जाते हैं । किसी न ज़रा तिछों नजर से देखा, और आपने करोली सीधी की । न दीन की फ़िक् थी, न दुनिया को, बस, अफ़ीम डी, और चाहे कुछ हो या न हो |

आज़ाद ने कद्दा--मई, तुम्दारा यह फ़िक़र जम्र भर ने क्लेशा कि देखें हमारी अफ़ीम की डिब्रिया किस खुशनसीब के हाथ लगती है ।

खे।जी--फिर, उसमें हँसी की क्या बात है ! हमारी तो ज्ञान पर बन आयी और आपको दिल्लगी यूझती है | जहाज के ढ्ूब ने का क्रिस मईक को रंज दो | मगर अफ़ीम के ड्बने का अलऊषत्त। रंज है | दो दिन से जम्हाइयों पर जन्हाइयाँ आती हैं। पैसे लाओ, तो देखूँ, शायद् कहीं मल जाय |

मियाँ आज़ाद ने दो पैसे दिये और आप एक दुकान पर पहुँच कर भले -अफ़ीम

लाना जी !

दूकानदार ने हाथ से कद्दा कि हमने समझा नहीं ।

सततोजी-- अजब जाँगलू है ! अबे, हम अफ़ीम माँगते हैं |

दृकानदार हँसने लगा |

खोजी--क्या फटी जूती की तरह दाँत निकरालता है! लाता है अफीम कि निकालूँ करौली !

इतने में मियाँ आज़ाद पहुँचे और पूछा--यहाँ क्या खरीदारी होती है !

खोजी--अजी, यहाँ तो सभी जाँगदू ही जाँगढू रद्दते हैं। घंटे भर से अफीम माँग रहा हूँ, सुनता ही नहीं ।

आज़ाद--फिर कद्दने से तो आप बुरा मानते हैं | मला यह बारूद बेचता है या अफ़ीम ! बिलकुल थौखे द्वी रहे !

खोजी--अगर अफीम का यही हाल रहा, तो तुर्की तक पहुँचना मुहाल है ।

आजाद--भई, इमारा कहा मानो | हमें टर्की जाने दो और तुम घर जाओ |

खोजी--वाहवा, अब में साथ छोड़नेवाला नहीं | और मैं चला जाऊँगा, तो तुम लड़ोगे किसके बिरते एर !

आजाद--बेशक, आप ही के बिरते पर तो मैं लड़ने जाता हूँ न !

खोजी--कौन ! कसम खाके कहता हूँ, जब छुनिएगा; यद्दी सुनिएगा कि ख्वाजा साइबर ने तोप में कील लगां दी ।

आजार--ज्ी, इसमें क्या शक है।

>> ल्श्।

खोजी--शक-बक के भरोसे न रहिएगा ! अकेली लकड़ी चूल्हे में भी नहीं जलती । जिस वक़्त ख्वाजा साब अरबी घोड़े पर सच्नार होंगे और अकड़ कर बैठेंगे, उस वक़्त अच्छे-अच्छे जंडल-कंडेल झुक-झुक कर सलाम करेंगे |

इतने में एक ह्बश्शी सामने से आ निकला । करारा जवान, मछलियाँ भरी हुई, सीना चौड़ा | खोजी ने जो देखा कि एक आदमी अकड़ता हुआ सामने से आ रहा है, तो आप भी ऐंटने छगे । हब्शो ने क़रीब आ कर कंघे से जरा धक्का दिया, तो मियाँ खोजी ने ब्रीस लुदकनियाँ खायीं। मगर बेहया तो थे ही, झाड़-पोंछ कर उठ खडे हुए, और हब्शी को ललकार कर कहा-अबे ओ गीदी, न हुई क़रोली इस वक़्त । ज़रा गेरा पेर फिसला गया, नहीं तो वह पटकनी देता कि अंजर-पंजर टीले हो जाते !

आज़ाद--नुम क्या, तुम्दारा गाँव भर तो इसका मुकाबला कर ले !

खोजी-- अच्छा, लट्टा कर देख लो न ! छाती पर न चद हैठूँ, तो ख्बाजा नाम नहीं | कहो, छलकारू जा कर '

टूसरे दिन जहाज वहाँ से रवाना हुआ | आज़ाद को बार-बार हुस्स्तभारा की याद आती थी। सोचते थे, कहीं लड़ाई में माल गया, तो उससे मुलात भी न होगी। खोजी से त्रोलि--क्यों जी, हम अगर मर गये, तो तुम हुस्नआरा को हमारे मरने की सब्र दोगे, या नहीं ?

श्ोजी--मरना क्या हँसी-ठट्रा # ! मरते हैं हम जैसे दुबले पतले बृद अफ़ीमची कि तुम ऐसे ह्टे-कट्ट जवान !

आज्ञाइ- शायद हमीं तुमस पहले मर जाये !

वोजी--हम तुमको अपने पहले मरने ही न देगे। उधर तुम भीमार हुए, और हमने इधर ज़हर खाया ।

आजाद--अच्छा, जा दम डूब गये !

खोजी-सुनों मियां, ड्बनेवाल दूसरे ही होते हैं। वह समुंडर मे शरचन नद्ढा आया करते, उनके लिए एक चुत काफो होता है ।

आताइ-+-जरा देर के लिए मान लो कि हम मर गये ता इनिला दोगे न !

खदजी--पह ले तो हम दुमसे पहले ही द्रव जायग, और अगर अदनसीत्री से बच गये, तो ज्ञा कर कहेंग--आज़ाद ने शादी कर ली, भर गुलछर उड़ा रश हैं ।

आजाद--गब्र तो आप दोस्ती का हक खूब अदा करेंसी !

खोजी--इसम हिक्रमत है ।

आज्ञाइ-क्या है, दम भी सुनें?

लू -धतगा भी नहीं समहते । अरे मिल, नम्दारे मरने की ख़बर पा कर हुस्नआरा दी शत पर बन आयेगी, बद्द सिर पटक-पटक ऋर दम तोड़ देगी; और जी यह सुन: कि आजाद न दूसरी शादी कर ली, तो उसे तुम्हारे नाम से नफ़रत हे! जायगी, अर रंज तो पास फटकने भी ने पायेगा । क्यों, है । अच्छी तरकीब ?

आजाद--हाँ, है तो अच्छी !

ख़ोजी--देखा, बूदे आदमी डिबिया में बंद कर रखने के काबिल होते हैं। तुम लाख पढ़ जाओ, फिर लौडे ही हो हमारे सामने | मगर दुम्हारी आ हालत है ! कोई किताब पढ़ कर दिल क्यों नहीं बहलाते !

आजाद--जी उचाट हो रहा है। किसी काम में जी नहीं लगता ।

खोजी--तो खूब सैर करो | यार, पहले तो हमें उम्मेट ही नहीं कि हिंदो-स्तान पहुँचे, लेकिन जिंदा बचे, और हिंदोस्तान की पूरत देखी, तो जमीन पर कदम न रखेंगे । लोगों से कहेंगे, तृम्त लोग क्या जाना, माठ्ण कहाँ है ! खूब ग्राप्प उड़ायेंगे । द

यों बातें करते हुए दोनों आदमी एक कोठे में गये | वहाँ फ़्टव को दृकान थी | आजाद ने एक आदमी के हाथ अफ़ीम मंगायी | खोजी ने अफ़ीम देखी तो खिल गये | बहीं घोली और चुस्की लगायी । वाह आजाद, क्यों न हो, यह एहसान उम्र-भर न भूलूँगा | इस वक़्त हम भी अपने वक़्त के बादशाह ईं-- भ (#र्क डुनिया की नहीं रहता है मेख्वारों में ;

ग़म गऱ्छत हो गया जब बैठ गये यारों में।

उस दूकान में बहुत से अखबार मेज पर पडे थे । आज़ाद एक किताब देखन लगे । मालिक-दुकान ने देखा, तो पूछा--कहाँ का सफ़र है !

आज़ाद--2कों जाने का इरादा है।

मालिक--हाँ हमारी भी एक कोठी है | आप वहीं 2हरिएगा |

आज़ाद--आप एक खत लिख दें, तो अच्छा हैं! |

मालिक--खशी से | मगर आजकल तो वहा जंग छिड्डी है |

आजाद---भच्छा, छिड़ गयी !

मालिक - -हाँ, छिड़ गयी | लड़ाई सख्त होगी। लाह से लाहा लड़ेगा |

जब आज़ाद यहाँ से चछने लगे, तो मालिक ने अपने लड़क के नाम ख़त लिख कर आजाद को दिया । दोनों आदमी वहाँ से आ कर जहाज पर त्ैठे ।

जकल यहू क्या

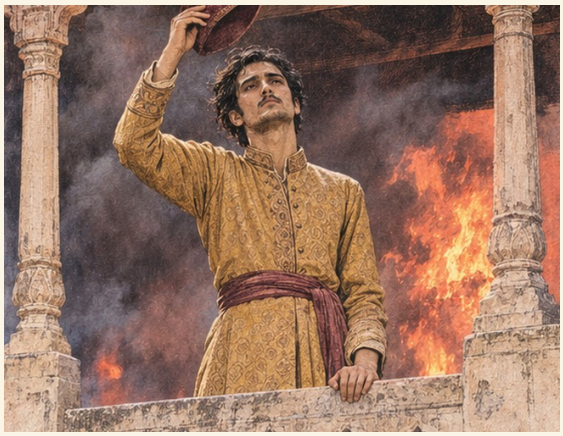
छत से आख़िरी सलाम



१ रात के ग्यारह बजे। चाँदनी देख रही चारों बहनों ने शोर सुना। सामने हुमायूँ फ़र की कोठी में आग लगी थी।



२ शाहज़ादा छत पर घिरा था। नीचे लोग दरिया से घड़े भरकर लाए। हवा तेज़ थी और शोले चढ़ते गए।



३ जब आग एक गज़ पर रह गई, हुमायूँ फ़र ने सिपहआरा को सलाम किया और कूद पड़े। सिपहआरा भी खिड़की से कूदीं।



४ गीली घास ने शाहज़ादे की जान बचाई। सिपहआरा उठ खड़ी हुईं। उन्हें शाहज़ादे को अपनी आँखों से देखना था।

HINDI TEXT

प्रसंग ५३

रात के ग्यारह बजे थे, चारों बहनें चाँदनी का छुत्फ़ उठा रही थीं। एकाएक मामा ने कहा--ऐ हुजुर, जरी चुप तो रहिए | यह गुल कैसा हो रहा है ? आग लगी है कहीं !

हुस्नआरा--अरे, वह शोले निकल रहे हैं | यह तो त्रिलकुल क़रीब है ।

नवाब साहब--क हाँ हो सत्र की सब् ! ज़रूरी सामान बाँध कर अलग करो । पड़ोस में शादलादे के यहाँ आग लग गयी । जेवर और जवाहिरात अलग कर लो | असबानत्र और कपड़े को जहन्नुम में डालो |

बहारबेगम--हाय, अब क्या होगा !

हुस्नआरा--हाय-हाय, शोले अतमान की खबर लाने लगे !

नीचे उतर कर सब्रों ने बड़ी फुरती से सब्न चीज़ें बाहर निकालीं और फिर कोटठे पर गयीं, तो क्या देखती हैं कि हुमायूँ फ़र की कोठी में आग लगी है और हर तरफ़ से शोले उठ रहे हैं | ये सत्र इतनी दूर पर खड़ी थीं, मगर ऐसा मालूम दोता था कि चारों तरफ़ भद्ठी ही भट्ठटी है। धन्नियों जो चटकीं, तो बस, यद्दी माद्म हुआ कि बादल गरज रहा है ।

बहारेगम--द्वाय, लाखों पर पानी पड़ गया !

सिपहआरा--बरहन, इधर तो आओ । देखो, हज़ारों आदमी जमा हैं। ज़रा देखो, वह कौन है! है-है ! वह कौन है !

बहारबेगप--कहाँ कौन है !

सिपहआरा--यद् मद्दतात्री पर कौन है !

हुस्तआग--भरे, यह्द तो हुमायूँ फ़र हैं। राज़व हो गया। अब यह क्योंकर बचेंगे !

सिपद्आरा फूट-फूट कर रोने लगी। फिर बोली--बा जी, अब होगा क्या ! चारों तरफ़ आग है | बचेंगा कक््योंकर बेचारा !

बहारबेगम--इसकी जवानी पर तरस आता हे ।

हुस्नआरा मुँह टॉप कर खूब रोयीं। सिपहआरा का यह हाल था कि आँसुओं का तार न इटता था | हुमायूँ फ़र मदृताबरी पर इस ताक में साथे थे कि शायद इन हसीनों में से किसी का जलवा नज़र आये। लेकिन <डी हवा चली, तो आँख लूग गयी । जब्र आग लगी और चारों तरफ़ गुल मचा, तो जागे; लेकिन कब १ जब मदहृतात्री के नीचे के हिस्से में चारों तरफ़ आग लग चुकी थी। खिदमतगारों के दाथ-पाँव फूल गये । यही सोचते थे, किसी वरह से इस बेचारे की जान बचायें | असबाब बटोरने की फ़िक्र किसे ! कोई शाहजादे की जवानी को याद करके रोता था, कोई सिर धुन कर कहता था--गरीब बूढ़ी माँ के दिल पर क्या गुज़रेगी ! शहर से गोल के गोल आदमी आ कर जमा द्वो गये । सिपाही और चोकीदार, शहर के रईस और

अफ़सर उमड़े चले आते थे। दरिया से -हज़ारों घड़े पानी छाया जाता था। मिइती और मज़दूर आग बुझाने में मसरूफ़ थे। मगर हवा इस तेज़ी पर थी कि पानी तेल का काम देता था । शाइज़ादे इस नाउम्मेदी की हालत में सोच रहे थे कि जिन लोगों के दीदार के लिए मैंने अपनी जान गँवायी, उन्हें मादूम हो जाय, तो मैं समझूँ कि जी उठा । इतने में इधर नज़र पड़ी, तो देखा कि सब की सब औरतें कोठे पर खड़ी हाय-हाय कर रही हैं । साचे, खेर शुक्र है। जिसके लिए जान दी, उसको अपना मातम करते तो देख लिया । एकाएक उन्हें अपना छोटा भाई याद आया । उसकी तरफ़ मुखातिब हो कर कहा--भाई, घर-बार तुम्हारे सुपुर्द हे । माँ को तसल्ली देना कि हुमायूँ फ़र न रहा, तो में तो हूँ । यद्द फ़िक्वरा सुन कर सब छोग रोने लगे । इतने में आग के शोले और क़रीब आये और दबा ने और ज़ोर बोंधा, तो शाइजादा ने सिपहआरा की तरफ़ नज़र करके तीन बार बल्मम किया | चारों बहनें दीकरों ऐ सिर टकराने छगीं कि हाय, यद्द क्या सितम हुआ ! शाहलादे ने यह केफ़ियत देखी, तो इशारे से मना किया । लेकिन दोनों बहनों की आँखों में इतने आँसू भरे हुए ये कि उन्हें कुछ दिखायी न दिया ।

सिपहआरा खिड़की के पास जा कर फिर सिर पीटने लगी। हुमायूँ फ़र उसे देख कर अपना सदमा भूछ गये और हाथ बाँघ कर दूर ही से कद्दा--अगर यह करोगी, तो हम अपनी जान दे देंगे! गोया जान बचने की उम्मेद द्दी तो थी ! चारों तगफ़ आग के शोले उठ रहे थे, धुआँ बादल की तरह छाया हुआ या, भागने की कोई तदबीर नहीं । हवा कहती दे कि मैं आज ही तेजी दिखल्ाऊँगी, और आप कहते हैं कि मैं अपनी जान दे दूँगा ।

इतने में जब आग बहुत ही क़रीब आ गयी, तो हुमायूं फ़रकी हिम्मत छूट गयी। बेचैनी की हालत में सारी छत पर घुमने छगे । आखिर यहाँ तक नौबत आयी कि जो लोग क्ररीब खड़े थे, वह्द लपटों के मारे और दूर मागने लगे । आग हुमायूँ फ़र से सिफ़ एक ग़ज के फ़ासले पर थी। आँच से फुँके जाते थे । जब ज़िंदगी की कोई उम्मेद न रद्दी, तो आखिरी बार सिपहआरा की तरफ टोपी उतार कर सलाम किया और बदन को तौल कर धम से कूद पड़े ।

उधर सिपदहआरा ने भी एक चीख मारी और खिड़य से नीचे कूदी |

शाहज़ादा साहब नीचे घास पर गिरे । यहाँ ज़मीन बिलकुल नरम और गीली थी । गिरते ही बेहोश हो गये। लोग चारों तरफ़ से दौड़ पड़े और ह्वार्थों-दहाथ जमीन से उठा लिया । छुत्फ़ की बात यह कि सिपहआरा को भी ज़रा चोट नहीं लगी थी। उसने उठते ही कद्दा कि लोगो, हुमायूँ शाइज़ादा बचा हो, तो हमें दिखा दो । नहीं तो उसी की क्रह में हमको भी ज़िंदा दफ़न कर देना ।

इतने में नवात्र साहब ने सिपहआरा को अलग ले जा कर कहा--ठम घब्रराओ नहीं | शाहजादा साहब खेरियत से हैं । सिपहआरा--हाय ! दृल्हा भाई, में क्योंकर मारनूँ ! नवाब साइब--नहीं बहन, आओ, हम उन्हें अभी दिखाये देते हैं । सिपहआरा--फिर दिखाओ मेरे दूल्हा भाई ! नवाब साइब--जरा भीड़ छेंट जाय, तो दिखाऊ | तब तक घर चली चलो ! सिपहआरा--फिर दिखाओगे ! हमारे सिर पर हाथ रख कर कहो | नवाब साहब--इस सिर को कसम जरूर दिखाय गे। सिपहआरा को अंदर पहुँचा कर नवाब साहब हुमायू कर क थहाँ पहुँचे, तो देख। टाँग में कुछ चोट आयी है । डॉक्टर पट्टी बाँध रहा है और बहुत ते आदमी उन्हें

धरे खड़े हैं। लोग इस बात पर बहस कर रहे हैं कि आग लगी क्योंकर ? रात भर शाहजादे की हालत बहुत खराब रही। दे के मारे तड़प-तड़प उठते । सुब्रह को चारपाई से उठ कर जैठे ही ये कि चिट्ठीग्सां ने आ कर एक खत दिया। शाहजाद साहब ने इस खत को नवाब साहब की तरफ़ बढ़ा दिया । उन्होंने यह मशमून पद सुनाया-- ु अब्ी हज़रत, तसलीम | तच कद्ना, कैसा बदला लिया ! लाख-लाख समझाया, मगर तुमन न माना । आलछिर, तुम खद ही मुसीबत में पड़े | तुमने हमारा दिल जलाया है, तो हम तुम्हारा घर भरी न अलायें ! जिस वक्त यह खत तुम्हारे पास पहुँचेगा, मकान बल-मुन के खाक हो गया होगा | शहसवार | शाहजादे साहब ने यह मज़मून सुना, तो त्योरियों पर बल पड़ गये और चेहरा मारे गुस्से के सु पढ़ गया |

HINDI TEXT

प्रसंग ५४

रात का वक़्त था, एक सवार हथियार साजे, रातों-रात घोड़े को कड़ कड़ाता हुआ बगठुट भागा जाता था । दिल में चोर था कि कहीं पक न जाऊँ ! जेललाना झेल सोच रहा था, शाहजादे के धर में आग लगायी है, खेरियत नहीं ! पुलीस की दौड़ आती ही होगी । रात मर मांगता ही गया। आखिर सुबह को एक छोटा सा गाँव नज़र आया | बदन थक कर चूर हो गया था । अभी घोड़े से उतरा डी था कि बस्ती की तरफ से गुल की आवाज़ आयो। वहाँ पहुँचा, तो कया देखता है कि गाँव भर के बिंदे जमा हैं, और दो गैंवार आपस में लड़ रहे हैं । अमी यह वहां पहुँचा ही था

हु कन्न्गबूज,

कि एक ने ५तरे के सिर पर ऐसा छट्ठ मारा कि वह जमीन पर आ रहा | ले! गों ने लद्ठ मारनेवाले को गिरफ़्तार कर लिया और थाने पर छाये | शहसवार ने दरिवाफ़त किया, ते माद्म हुआ कि दोनों की एक जोगिन से आशनाई थी |

सवार--यह जोगिन कौन है भई !

एक गैंवार--इतनी उमिर आयी, अस जोगिन कतहूँ न दीख ।

इतने में थानेदार आ गये | ज़खमी को नारपाई पर डाल कर अघताड निनम्न-वाया और खूनी को गवाहों के साथ थाने ले गये ! मियां सवार भी उन के साथ हो लिये, थाने में तहक़ीकात होने लगी ।

थानेदार---यह किस बात पर झगड़ा हुआ जी !

चौकीदार--हुजूर, वह सास ज्ौन जोगिन बनी है :

थानेदार--हम तुमसे इतना पूछता है किस बात पर जड़ाई बुआ [

नौकीटार--जैसे इद्दौ वहाँ जात रहै और वहीं यहाँ जात रहे । तौन आपस में लाग-डांट हे गयी । ए बस एक रिन मार-घार हें गयी बस, लाढी चले लाग। मर से रकत बहुत बहा ।

मौलवी--सूबेदार साहब, आज दोनों ने खूब कुज्ज्श चढ़ायी थीं |

यानेदार--आप कोन हें !

मौलवी - हुजूर, गाँव का काज़ी हूँ ।

थानदार-यहीं मकान हद आपका !

धोलवी--जी हाँ, पुराना रईस हूँ ।

शहसवार--बे शक !

थानेदार--देहातवाले भी अजीब जोगलू द्वोते हैं । एक भार एक देहातों मुशा-यरे में जान का इत्तफ़ाक़ हुआ। बड़े-बड़े गँवार के लद्ठ जमा थे। एक साहब ने शेर पदा, तो आमिर में फ़रमाते हैं--बरीमार हौं। छोग

हैरत में थे कि इस हो के क्या पाने ! फिर हज़रत ने फरमाया--सरशार हों । मारे हँसी के लोट गया। हाँ, मोलवी

साहब, फिर क्या हुआ !

मौलवी--बस, जनाब, फिर दोनों में कुइती हुई। कभी यह ऊपर, वह नीचे, कभी वह नीचे, यह ऊपर । तब ठो मैं भागा कि चौकीदार से कहूँ । धोइता गया ।

थाने दार---जनाब, इस महावरे को याद रखिएगा |

मौलवी--बस, मैं धौड़क पूरन चौकीदार के मकान पर गया। उसकी जोड़ , बोली--- के

सवार--कोन बोली !

थानेदार-- हँस कर) सुना नहीं आपने ! जोड़]

मौलबी--हुज्र, हुकाम हैं, आपको हँसना न चाहिए ।

यानेदार--जी हाँ, में हककाम हूँ; मगर आप भी तो उमरों हैं! हां, फ़रमाओ जी

मौलवी--देखिए, फ़रमाता हूँ ।

सवार--अब हँसी जब्त नहीं हो सकती ।

मौलवी--बस जनाब, वहाँ से मैं इस चौकीदार को लाया । वहाँ आ कर देखा, तो खून के दरिया बह रहे ये ।

इतने में ख़बर आयी कि हुखमी दुनिया से रवाना हो गया। थानेदार साहब मारे खशी के फूल गये | मामूली मार-पीट खून! ड्ो गयी | खूनी का चालान किया और जज ने उसे फाँसी की सका दे

जिस वक़्त खूनी को फॉसी दो रही थी, मियां सवार भी तमाशा देखने आ पहुँचे । मगर उस वक़्त की हालत देख कर उनके दिल पर ऐसा असर हुआ कि आँखें खुल गयीं | सोचने लगे--दनिया से नाता तोड़ लें। किसी से इसद और कीना न रखे । अगर कहीं पकड़ गया हृता, तो मुझे भी यों ही फॉसी मिलती । खुदा न बहुत बचाया | मगर ज़रा इस जोगिन को देखना चाहिए । यह दिल में टान कर जोगिन के मकान की तरफ़ चले ।

जब छोगों से पूछत हुए उसके मकान पर पहुँचे, तो देखा कि एक खूबसूरत बाग़ा है और एक छोटा सा खदनुमा बँगलछा, बहुत साफ़ सुथरा । मकान क्या, परीखाना था | ज़ोगिन के क़रीब्र जा कर उसको सलाम किया । जोगिन के पोर-पार पर जोत्रन था | जवानी फटी यहती थी | सिर से पैर तक संदली कपड़े पहने हुए थी | शहसवार हजार जान से ढोट पोट द्वो गये । जोगिन इनकी चितवनों से ताड़ गयगो कि हजरत का दिल आया है |

सवार--बढ़ी दर से आपका नाम सुन कर आया हूँ ।

जोगिन--अक्सर छोग आया करते हैं । कोई आये, तो खशी नहीं, न आये, तो रज नहीं |

सवार--मैं चाइता हूँ कि उम्र भर आपके कदमों के तले पड़ा रहूँ |

जोगिन---आपका मकान कहों है !

सवा२र-- धर बार से क्या फ़क़ीर को काम १ क्या लीजिए. छोड़े गाँव का नाम ।

जोगिन--यहाँ कैसे आये !

सवार--रमते जोगी तो हैं ही, इधर भी आ निकले |

जागिन--आखिर इतना तो बतलाओब्कि हो कौन ?

सवार--एक बदनसीत्र आदमी |

जोगिन--क्यों !

सवार--अपने कमों का फल |

जोगिन--सच है !

सवार--मुझे इश्क ही ने ता गारद कर दिया । एक बेगम की दो लडकियां हैं । उनसे आंखें लड़ गयीं | जीते जी मर मिटा |

जोगिन--शादी नहीं हुई !

सवार--एक दुश्मन पेदा हो गया। आज़ाद नाम था। बहुत ही खूबसूरत सजीला जवान |

निया आजाद का नाम सुनते ही जोगिन फे चेहर का रंग उड़ गया। आँखा: में आँसू गिरने छग । शहसवार दंग थे कि बेंठ-बिठाये इसे क्या हैं। गया ।

भवार-- ज़रा दिल को दारस दो, आखिर तुम्हे किस बात का रंज हूँ !

भीगिन--

खौफ़ से लेत नहीं नाम कि सुन ले न कोई; दिल हो दिल में तुम्हें हम याद किया करते हैं |

हमारी दास्तान ग़म से भरी हुई है ! सुन कर क्या करोग , हाँ, तुम्हे एक सलाह देती हू । अगर चाइतं हो कि दिल को मुराद पूरी है, तो दिल क्षाफ़ रखो ।

सवार--तुम्हारे सिवा अगर किसी और पर नज्जर पड़े, तो ऑर्ख फूट जायें !

जोगिन--यही दिल की सफ़ाई हे !

सवार--शीश्ी से गुलाब निकाल लो | मगर गुलाब की बू बाकी रटगी । दुनिया को छोड तो बेटे, पर इश्क दिल से ने जायगा। अब दम चाइतं हैं कि वुम्दारे ही साथ जिंदगी बसर करें | आजाद उसके साथ रहें, हम तुम्हार साथ ।

जांगिन--भला तुम आज़ाद को पाओ, तो क्या कर। !

सवार--कछ्ा ही चत्रा जाऊँ !

जोगिन--तो फिर हमसे न बनेगी! अगर तुम्हारा दिल साफ़ नहीं, तो अपनी

राह लगो | सवार--अच्छा, अब्र आज से आजाद का नाम ही न लेंगे ।

HINDI TEXT

प्रसंग ५५

आजाद का जहाज जब्र इस्कंररिया पहुँचा, तो बह खोज्नी के साथ एक होटल में ठहरे | अब खाना खान का वक़्त आया, तो खोजी बोले--लाहौल, यहाँ खानेवाले की ऐसी तैमी चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मगर हम जरा सी तकलीफ के लिए अपना मजहब न छोड़ेंगे । आप शौक़ से जायें और मज़े से खायें; हमें माफ़ हो रखिए ।

आज़ाइ--और अफ़ोम खाना मजहब के खिलाफ़ नहीं !

खोजी--कभी नहीं | और, अगर दो भी तो क्या यह ज़रूरी है कि एक काम मज़हब के ख़िलाफ़ किया, तो और सत्र काम मज़द्दब्र के ख़िलाफ़ ही करें !

आज़ाद--अजी, तो झिस गधे ने तुमसे कहा कि यहाँ खाना मजहब के 'चिलाफ़ है! मेज-कुर्सी देखी और चीख उठे कि मजहब के खिलाफ़ है! इस खब्त की भी कोई दवा है !

खोजी--अजी, वह खब्त दही सही । आप रहने दीजिए |

आजाद--खाओ, या जदृन्नम में जाओ |

खोजी--जहन्नुप में वे जायेंगे, जो यहाँ खायँगे। यहाँ तो सीधे जन्नत में पहूँचेंगे |

आजाइद--बहाँ अफीम कहाँ से आयेगी!

इतने में दो तुकों आये और अपनी कुसियों पर बैठ कर मड़े से खाने छगे | आज़ाद की चद्ी बनी | पूछा, इ्वाजा साहब, बोल गीदी, अब शरमाया या नहीं ! लोजी ने पहले तो कहा, ये मुसलप्रान नहीं हैं। फिर कहा, शायद हों ऐसे-बैसे | मगर जब मादूम हुआ कि दोनों ख़ास तुर्की के रहनेवाले हैं, तो बोले--आप लोग यह होटल में खाना खाते हैं ! क्या यह मजहब के खिलाफ़ नहीं !

तुकी--मज़हव के खिलाफ़ क्यों होने लगा !

आखिर, खोजी झेपे । फिर होटल में खाना खाया। थोड़ी देर के बाद आज़ाद तो एक साहब से मिलने चले और खोजी ने पीनक लेना शुरू किया | जब्र नींद खुली, तो सोचे कि हम बैठे त्रंठ कब तक यहीं मक्खियाँ मारेंगे । आओ देखें, अगर कोई हिंदुस्तानी भाई मिल जाय, तो ग़प्पं उठ | इधर-उधर टहडने छगे । आखिरकार एक हिंदुस्तानी से मुलाक़ात हुई। तलाम-बंदर्गी के बाद बात होने लगीं। ख्वाजा साहब ने पूछा--क्यों शाहब, यहाँ कोई अफ़रीम की दुकान है ? उस आदमी ने इसका कुछ जवाब ही नहीं रिया। खेजी तीखे आदमी। उनका मठ यह ताब कहीँ कि किसी से सवाल करें ओर वह जवात्न न दे! ब्रिगड खड़े हुए--न हुई क़रोली, खुदा की कसम | वरना तमाशा टिखा देता ।

हिंदुस्तानी ने समझा, यह पागल है। अगर बोलँगा, तो खदा जाने, काट खाय, या चोट करे। इपसे यही अच्छा कि चुप ही रहा। मियाँ खोजी समझे कि दब गया, और भी अकड़ गये । उसने समझा, अन्न चोट

किया द्वी चाइता है | ज़रा पीछे हट गया । उसका पीछे हटना था कि मियाँ खोजी और भी शेर हुए! मगर कुंदे तौल तौल कर जाते ये । फिर रोब से पूछा--क्यों बे, यहाँ ठंडा पानी मिल सकता है ? वह गरीब झट-पट टंडा पानी छाया। खोजी ने दो-चार घट पानी पिया और अकड़ कर बोले--माँग, क्या माँगता है ! उस आदमी ने समझा, यह ज़रूर दीवाना है ! आपकी हालत तो इतनी खराब है, पल्ले टका तो है नहीं और कद्दते हैं--मोग, क्या माँगता है १ खोजी ने फिर तन कर कहा--माँग कुछ । उस आदमी ने डरत-डरते कहा--यह जो हाथ में है, दे दीजिए !

ख्ोजी का रंग उड़ गया । जान तक माँगता, तो देने में दरेश न करते; मगर चीनिया बेगम तो नहीं दी जाती । उससे पूछा- तुम यहाँ कब से हो, क्या नाम है ! उसने जवाब दिया - मझे तहोवरखां कहते हैं '

खोजी--भला, इस होटल मं मुसलमान लोग खाते हैं !

तहौवरस्त्रॉ -- बराबर | क्यों न खायें !

वालों ने मिसकोट की कि खोजी को छेड़ना चाहिए.। इस हं।य्ल में कराहिरा का रहनेवाला बौना था । लोग सोचे, इस बीने और खोजी से पकड़ हो तो अच्छा । बौना बड़ा शरीर था । लोगों ने उससे कद्ठा--चलों, तुम्दारी कुश्ती बदी गयो है। वह देखो, एक आदमी हिंदोस्तान से आया है। कितना अच्छा जोड़ है। यह सुन कर बौना म्ियाँ खोजी के करीब गया और झुक कर सलाम किया। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी इमसे भी ऊंचा मिला, तो अकड़ कर आँखों से सलाम का जवाब दिया । बोने ने इधर-उघर देख कर एक टफ़ा मौक़ा जो पाया, तो मियाँ खोजी की टोपी उतार कर पड़ाक से एक धौर जमायी और टोपी फेंक कर भागा । मगर ज़रा जग से पाँव, भाग कर जाता कहाँ खोजी भी झषपटे । आगे-आगे बौना और पीछे-पीछे म्रियाँ खोजी । कद्द ते जाते ग्रे--भो गीदी, ५ हुई करौली, नहीं तो इसी दम भोंक देता। आखिर बौना हाँप कर खड़ा हो गया | तब तो खोज्ी ने लपक-कर हाथ पकड़ा और पूछा--क्यों बे ! इस पर बौने ने मुँह चिदाया ! खोजी ग़स्से में भरे तो थे ही, आपने भी एक घप जड़ी । है

खो जी--और लेगा !

बोना--(अपनी ज़बान में) छोड़, नहीं मार ही डाल्ूँगा ।

खोजी--दे मार उठा कर १

बौना--रात आने दो ।

खोजी ने झल्ला कर बने को उठा कर दे मारा, चारों खाने चित्त, और अकड़ कर बोले--ब्ो मारा | और लेगा ! खोजी से ये बातें ?

इतने में आज़ाद आ गये | खोजी तने बैठे थे, उम्र भर में उन्होंने आज पहली ह्वी मर्त्रा ए+ आदमी को नीचा दिखाया था ! आज़्ाद फो देखतेल्ही बोले--हस वक़्त एक कुश्ती और निकली !

आजाद--कुशती कैसी !

खोजी- केसी होती है कुश्ती ! कुश्ती और क्या !

आज़ाद--मादूम होता है, पिटे हो ।

खोजी--पिटनेवाले की ऐसी-तैसी ! और कहनेवाले को क्या कहँ ? आज़ाद--कुद्‌ती निकाली |

तददौवरस्पॉ-- हाँ हुजुर यह सच कहते हैं ।

खोजी-- लीजिए, अब ते आया यक्कीन !

आज़ाद--क्या हुआ, कया (

तहीव* खाँ--- जी, यहाँ एक बौना है । उसने इनके एक घोल लगायी । आज्ञाद--देखा न ! मैं तो समझा ही था कि पिटे होगे ।

खोजी-- पूरी बात तो सुन लो ।

तहौवरखों--बस, धौल खा कर छपके। उसके कई चपतें लगायों और उठा कर दे पटका |

खोजी--वह पटखनोी बतायी कि याद ही तो करता होगा । दो मदहदीने तक खटिया से न उठ सकेगा |

तद्दौवरखाँ--वह देखिए, सामने खड़ा कोन अकड़ रह्दा हे ! तुम तो कहते मे कि दो महीने तक उठ द्वी न सकगा।

रात को कोई नो बजे खोजी ने पानी माँगा । अभी पानी पी ही रहे थे कि कमरे का रूप गुल हो गया ओर कमरे मं चटाख-चटाख को आवाज़ गूँजने लगी।

ग्ोजी--अर, यह तो वह्ी-बीना माद्ूम होता है , पानी इसी ने पिलाया था और चपत भी इसी ने जड़ी | दिल में कहा--क्या तड़का न होगा १ जिंदा खोद कर गाड दूँ तो सही ।

सोजी पार्नी पी कर लेटे कि दस्त की दाजत हुई। बौने ने पानी में जमालगोटा मिला दिया था | तिढ-तिल पर दस्त आने लगे । मशहूर हो गया कि खोजी को दैजा हुआ । डॉक्टर बुलाया गया । उसने दवा दी और खोजी दस्तों के मारे निदाल हो कर चारपाई पर गिर पड़ें। आज्ञाद एक रईस से मिलने गये थे | हाटल के एक आदमी ने उनको जा कर इत्तला दी | घत्रराये हुए आये | खोजी ने आजाद को देख कर सलाम किया, और आदिस्ता से ब्ोले--रुख़सत ! ख़दा करे, तुम जल्द यहाँ से लौटो | यह कह कर तीन बार कलमा पढा ।

आज्ञाद--कैसी तबीयत है !

खोजी--मर रहा हूँ, एक हाफ़िज़ बुलवाओ और उससे कद्दो, क्रान शरीफ़ पढे।

आजाद--अजी, तुम दो दिन में अच्छे हों ज्ञाआंगे |

खोजी--जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है। मगर भार, खदा के वास्ते जरा अपनी जान का ख्याल रखना । हम तो अब चलते हैं। अब तक हँसी-खुशी तुम्हारा साथ दिया; मगर अबभ् मजबूरी है। आंब-दाने की बात है, हमको यहाँ की मिट्टी धसीट लायी |

आजाद--अजी नहीं आज के चोथे रोज दनदनाओगे । देख लेना । इंड पेढते होगे ।

खोजी--खदा के हाथ है |

आज्ञाद--देखिए, कब मुलाक़ात द्वोती है।

खोजी--इस बूढ़े को कभी-कभी याद करते रहना । एक बात याद रखना, पर-देस का वासस्ता है,

सबसे मिल-जुल कर रहना । जूती-पैज़ार, लड़ाई-झगड़ा किसी से न करना । समझदार दो तो क्या, आम: बच्चे ही हो। यार, जुदाई ऐसी अखर रही है कि बस, क्या बयान कहूँ |

आजाद--अच्छे हो जाओ, तो हिंदोस्तान चले जाना !

खोजी - अरे मियाँ, यहाँ दम भर का भगेसा नहीं है |

दूसरे दिन आजाद खोजी से रुखसत द। कर जहाज पर सवार हुए | इतने दिनों के बाद खोजी की जुदाई से उन्हें बहुत रंज हो रहा था। थोड़ी देर के बाद नींद आ गयी, तो ख्वाब देखा कि वंह हुस्नआरा बेगम के दरवाज़े पर पहुँच हैं और वह उन्हें फूलों का एक गुलदस्ता दे रही हैं। एकाएक तोप दगी और आजाद की आँख खुल गयी । जहाज कुस्तुनतुनिया पहुँच गया था ।

HINDI TEXT

प्रसंग ५६

आज़ाद तो उधर क़ाहिरे की हवा खा रहे थे, इधर हुश्नआरा बीमार पड़ीं। कुछ दिन तक तो हकीमों और डॉक्टरों की दवा हुई, फिर गेडे-ताबीज़ की बारी आयी । आखिर आचोहवा तब्दील करने की ठहदरी । बहारबेगम के पास गोमती के किनारे एक बहुत अच्छी कोठी थी । चारों बहनें बड़ी बेगम और घर के नौकर-चाकर सत्र इस नयी कोठो में आ पहुँचे ।

बेगप--मकान तो बड़ा कुशादा है ! देखे , चंद्रवेधी है या सूयबेधी ।

हुस्न आरा-हीं अम्माँजान, यह जरूर देखना चाहिए |

रूहअफ़जआ--ले लो, ज़रूर | हजार काम छोड कर ।

दोनों बहने हँसती-बोलती मकान के दालान और कमरे देखने लगीं। छत पर एक कमरे के दरवाज़े जो खोले, तो देखा, दरिया लददरं मार रह! है। हुस्नआरा ने कहा--बाजी, इस वक्त जो खूश हो गया। हमारो परलेँगड़ी यहीं बिछे | बरसों की बीमार यहाँ रह, तो दो दिन में अच्छा-मला चंगा हो जाय |

सिपहआरा - अहार बहन, भला कभी अँधेरे-उजाले दूल्हा भाई नहाने देते है दरिया में !

बहारबेगम--ऐ है, इसका नाम भी न लेना। इनका बहुत चिद है इस बात को |

तुत्रह का वक़य था, चारों बहने ऊंची छत पर हवा खाने छगीं कि इतने मं एक तरफ से घुआ उठा | हुस्तअरा से पूछा---यह घुआं केंसा है ?

रूह अफ़ज|--इस शाट पर ३ जलाय जात हैं |

हुस्नआग मर्द यहीं जलने हैं !

बरहारवेगम-- हा, मगर यहा से दूर है ।

सिपहआरा- -हाये, क्या जाने कोन बेचारा जल रहा होगा !

रूदअफ़ज्ञा-- जिः्गी व. भरोसा नहीं ।

बड़ी बेगम ने सना कि यहाँ मुर्द जलाय जात हैं, ता हाश उड़ गय । बोरीं-- ऐ बहार, तुम यह केसे :हृती ही। ? खुरशे: दृन्हा जाय, तो उनसे कह ।

हस्नआरा--फ़ायदा ? बरसों से तो बह यहाँ रहते हैं; भव्य दुःहार कहने से मकान छाड़ टेंगे !

सिपहआरा- यह हमेशा यह रहते ई, कुछ भी नहीं होता । हम जो दो दिन रहेंगे, तो मुर्द आ कर चियट जाथगे भला !

बड़ी बेगम का चस चलता, तो! खड़े-खड़े चली जाता; मगर अब मजबूर थीं। यह से चारों बह दूसरी छत पर गयीं तो बह्दास्बेगम ने कहा- यह जो उस तरफ दूर तक ऊँचे-$ं टीले नहर आते हैं, यहों आबादी थी। ऋहाँ तुम बैठी हो, यहाँ बजऔर का मकान था । मजाल क्या था कि कोई इस तरफ़ आ जाता | मगर

अब वहाँ खाक उड़ती है, कुत्ते लोट रहे हैं ।

इतने में एक किशती इसी घाट पर आ कर रुकी | उस पर से दो आदमी उतरे, एक बूंद थे, दूसरा नौजवान । दोनों एक क़ाछोन पर बैठे और बातें करने छरे ' बूट मिर्या न कहा--मियाँ आज़ाद सा टिलेर जवान भी कम देखने म आयेगा । यह उन्हीं का शेर है--

सीने को चमन बनायेगे हम,
गुल खायेंगे गुल खिलायेंगे हम।

जवान (गुलबाज)--मियाँ आजाद कोन थे जनाब !

इस पर बूदे मियाँ ने आज़ाद की सारी दास्तान बयान कर दी | दानों बहनें कॉन लगा कर टोनों आदभियों की बातें सुनती थीं और रोती थी । हैरत हो रही थी कि ये दोनों कौन हैं और आजाद को कैसे जानत हैं? महरी से कद्ठा--जाके पता लगा कि वह दोनों आदमी, जो दरख्त के साये में बेटे हुबका पी रहे हैं, कौन हैं ! महरी ने एक भिश्ती के लड़के को इस काम पर तेनात किया | छडके ने जरा देर में आ कर कहा--दोनों आदमी सराय में ठहरंगे और दो दिन यहां रहेंगे | मगर हैं कोण, पह्ठ पता न चला । महरी ने जा कर यही बात हुस्नआरा से कह दी | हस्नआरा ने कहा-- उस लड़के को यह चबन्नी दो और वही, जहाँ ये टिके, इनके साथ जाये ओऔ: देख आये | महरी ने जोर से पुकारा- अबे ओ टबराती | सुन, इन दोनों आएंमियों क़ साथ जा । देख, कहाँ टिकत हैं ।

शराजराता--अभजा, अभी पहुँचा ।

गुबराती चल । रास्ते में आपको शौक चराया कि छल्लार्भारी खेलें । एक घंटे प्र गती ने कोई डेढ़ पैसे की कोड़ियों जीतीं , मगर व्यल्च का बुरा हो, जमे, तो दस थे. दम में डेढ़ पसा वह हारे, और बारह कौड़ियां गिरह से गयीं, वहाँ से उदास ई कर चले | राह में दर का तमाशा हो रहा था ! अब मियों शबराती जा चुके । कमी सदग्थि की लड़ा, कभी बकरे पर छेला फा । मद्रारी ने देखा कि लौंडा नत है, ४; झा --इघर आओ जवान, आःमी हो कि जानवर ?

रत आाद मां !

मठारी-+-सुअर कि टथोर ?

रज्ञाता-- हम दरार, तुम सुअर |

भद्ाारी-+ गा कि ग"ी !

जचबराता गया ।

मदारा--उल्दू कि बेल !

३ +राती--तुम उब्सू , तुम्दारे आप बेल, और नुम्हारे दादा अछिया के ताऊ ।

थाड़ी देर के वाद ँर्णों भबराती यहां से रवाना हुए, तो एक रईस के यदद' ए+ सपेरा साँप का तमाशा दिखा रहा था। मिर्यों घबराती भी डट गये। सेपेरा तोंबी में भेरवी का रंग दिखाता था ।

रईस ने कद्दा--तब जानें, जब किसी के सिर से साँप निकालो |

सपेरे ने कद्दा--हजूर, मंतर में सब्च कुदरत है। मुझ कोई आधघ सेर आटा वो पेट भर खाने को दो | जिसके बदन से कहिए, साँप निकादूँ।

लौंडे यह सुन कर हुरं द्वो गये कि घरे न जायें। मियाँ शुबराती डटे खड़े रहे।

सपेरा--वाह जवान, तम्हीं एक बहादुर हो।

शुबराती--और हमारे बाप हमसे बढ कर |

सपेरा--यहाँ बैठ तो जाओ।

मियाँ शुब्रराती बेघड़क जा बैठे। सपेरे ने झठमूठ कोई मंत्र पढ़ा और ज़ोर से मियाँ शुबराती की खोपड़ी पर धपष जमा कर कहां यह लीजिए साँप। वाह-वाह का दौंगडा बज गया। रईस ने सैंपेरे को पाँच रुपये इनाम रिये और कदहदा--इस लोडि को भी चार आने पैसे दे दो। मियाँ शुबररती ने चबन्नी पायी, तो फूले न ममाये। जाते ही गोल गप्पेबाले से पैसे के कचालू , थेले के दही-बढे, घेले की सोंठ की टिकिया ली और चखते हुए चले। फिर तकिये पर जा कर कौड़ियाँ खेलने लगे | दो पैसे की कौड़ियों हारे ! वहाँ से उठे, तो हलवाई की दूकान पर एक आने की पूरियाँ खायीं ओर कुएँ पर पानी पिया। वहाँ से आ कर महरी को पुकारा)

महरी--कहो, वह हैं १

गुबराती--बह तो चले गये।

महरी--कुछ मालम है,- कहाँ गये !

शुबराती--रेल पर सवार हो कर कहीं चल दिये।

परहरी ने जा कर हुस्नआरा से यह ख़बर कही, तो उन्होंने कहा--लोडे से पृछो, गहर ही में हैं या बाहर चले. गये ? महरी ने जा कर फिर झुबराती से पूछा--शहर में हैं या बाहर चले गये ? अबराती को इसकी याद न रही कि मैंने पहले क्या कहा था, तोला--किसी और सगय में उठ गये।

महरी--क्यों रे झूठे, तू तो कहता था, रेल पर चले गये !?

शुब्राती--मैं ने !

मरहरी--चल झुठे, तू गया कि नहीं।

शुबराती-अब्जा की क्रमम, गया था।

महरी---चल दूर हो, मुआ झूठा |

इतने में बड़ी बेगम का पुराना नौकर दुसैनवस्श आ गया। हुस्नआरा ने उसे बुला कर कद्दा--ड़े मियाँ, एक साहब आज़ाद के जाननेवालों में यहाँ आये हैं और किसी सराय में ठदरे हैं | तुम जरा इस लींडे शुत्रराती के साथ उस सराय तक जाओ ओर पता लगाओ कि वह कौन साहब हैं। अब मिर्यों शुबराती चकराये कि खुदा ही खेर करे | दिल में चोर था, कहीं ऐसा न हो कि वह अभी सराम में टिके ही हों, पं

तो मुझ पर बेभाव की पड़ने लगे। दबे दाँतों कद्दा, चलिए. । आगे-आगे हुसेनब्रख्श और प्रीछे-पीछे मियाँ शुबररती चले। राह में शबराती न एक लीडे की खायडी पर धप जमायी, और आगे बढ़े, तो एक दीवाने पर

कई ढेले फेक, और दो क़दम गये, तो एक बूढ़ी मामा से कहा--नानी, सलाम । बह गालियाँ देन लगी, मगर आप बहुत खिलखिलाये । और आगे चले, तो एक आंधा मिला । आपने उससे कद्टा--आगे गड्ढा है, और उसकी लाठी छीन ली। हुसैनत्रजश कभी मुसकिराते थे, कभी सम-झाते। चलते-चलते एक तेली मिला, मियाँ शुत्रगती ने पूछा--क्यों भई तली, मरना, तो अपनी खोपड़ी मुझे दे देना | मंतर जगाऊँगा | तेली » ऋद्ा --चुप | लोडा बड़ा शरीर है । और आगे बढ़े, तो एक रैंगरेज़ से पूछा--क्योंबढ़े भाई, अपनी दादी नहीं रैगते ! उसने कहा--कद्दो, तुम्दारे बाप की दाढ़ी रंग दे नील से | अब सुनिए, दो हिंदु बोरिया-बक़रचा सेंभाले कहीं बाहर जाने के लिए घर से निकले । मियाँ शुबराती एक आँख दबा कर सामने जा खड़े हुए । वे समझे, सचमुच काना है । एक न कहा--अबे, हट सामने से ओ बे काने |! आपने वह आँख खोल दी । दूसरी दब्रा ली | दोनों आठमी इसे असगुन समझ कर अंदर चले गये। इतने में एक कानी औरत रामने से आयी । मियोँ शुप्राती ने देखते ही हाँक लगायी --'एक लकड़िया बॉसे की, कानी आँख तमाशे की ।?

ज्यों ही दोनों सगय में पहुँचे, हुसिनबरर्श ने बढ कर बूदे मियाँ को सलाम किया । बड़े मियाँ बोलि--जनाब, मियोँ आज़ाद से मेरी पुरानी मुलाक़ात है । मेरी लड़कियों के साथ वह मुददत तक खेला किये हैं। मेरी छोटी लडकी से उनके निकाह की भी तजबीज हुई थी; मगर अब तो वह एक बेगम से क़ोल हार चूके हैं। इसके बाट कुछ और बातें हुईं। शाम को हुसैनबख्श रुखसत हुए और घर आ कर हुस्नआरा से कहा--वह तो आज़ाद के पुराने मुलाक़ाती हैं। शायद आजाद ने उनकी एक लड़की से निकाह करने का वादा भी किया है | यद्द सुनते हूं। हुस्नआरा का रंग फ़क द्वो गया । रात को हुस्नआरा ने सिपह्आरा से कह्दा -- कुछ सुना १ उस बुड्ढे की एक लड़की के साथ आजाद का निकाह होनेवाला है |

सिपदआरा-- राल्त बात है ।

हुस्नआरा--क्यों !

सिपहआरा--क्यों क्या, आजाद ऐसे आदमी ही नहीं ।

हुस्नआरा--दिक्लगी 2), जो कहीं आजाद उससे भी इक़रार कर गये हों। चलों खैर, चार निकाइ तो जायज भी हैं | लेकिन अल्लाह जानता है, यक्कीन नहीं आता । आज़ाद अगर ऐसे दरब्ाई होते तो जान हथेली पर ले कर रूम न जाते |

हुस्नआरा ने जवान से तो यह इतमीनान जाहिर किया, पर दिल से यह खयाल दूर न कर सकी कि मुमकिन है, आजाद ने वहाँ भी क्रौव हारा हो! एक तो उनकी

तब्रीयत पहले ही से खराब थी, उस पर यह नयी फ़िक्र पैदा हुई तो फिर बुखार अमनें लगा । दिल को लाख लाख सम्झातों कि आज़ाद बात के घनी हैं, लेकिन यद खयाल दूर न होता | इधर एक नयी मुसीबत यह आ गयी कि उनके एक आशिक और पैदा हो गये | यह हज़रत बहारबेगम के रिइते में भाई होते ये। नाम था मिर्जा अस्करी | अरकरी ने हुस्नआरा को लद्कपन में देखा था। एक दिन बहारबेगम से मिलने आये, ओर सुना कि हुस्नआरा बेगम आजकल यहीं हैं, तो उन पर डोरे डालने लगे | बहारबेगम से बोले --अब्न तो हुस्तआरा सयानी हुई होंगी !

बहारबेगम--हाँ, खुदा के फ़जल से अब सयानी हैं |

अस्करी--दोनों बहनों में हुस्नआरा गोरी हैं न !

बह।रबेगम --ऐ, दोनों खासी गोरी-चिट्टी हैं; मगर हुस्नआरा जैसी हसीन हमने तो नहीं देखी | गुलाब के फूल जैसा मुखड़ा है |

अस्करी--तुम हारी बहन केसी हो !

बहारेगम--इसके क्या मारने?

अस्करी --अन्न साफ़-साफ़ क्या कहे, समझ जाओ | बहन हो, बढ़ी हो, इतने ही काप्त आओ । फिर और नहीं तो क्या आक्रधत में बख्शाओगी ?

बहारवेगम--अस्स्करी, ख़दा जानता है, हमें दिल से तुम्हारी मुहब्बत है ।

अस्करी- बरसों साथ-साथ खेले हैं ।

दाण्बेगप--अरे, यों क्यों नहीं कहते कि मैंने योटियों में खिलाया है |

अस्करी- पह हम न मानेंगे । ऐसी आप कितनी बड़ी हैं मुझसे | बरस नहीं हद दो बरस ।

बहारबेगम--ऐ, लो, इस शुद्ध को देखा, छते पुरानी हैं |

अस्करी--अच्छा, फिर कोई पंद्रह-बीस बरस की छुटाई बड़ाई है !

बहासबेगम--हई है!

अस्करी--अच्छा, अब फिर क्रिस दिन दाम आओभोगी !

बहारबेगम---भई, अगर हुस्नआरा मंजुर कर लें, तो है। में आज अम्मॉजान से जिक्र फरूँगी ।

इतने में हुम्नआरा बेग्म ने ऊपर से आावाज्ञ दी--ऐ. बाजी, जर हमकों हरे-हरे मुलायम सिंधाड़े नहीं मँगा देतीं ? मुहम्मद अस््करी ने रसूझियत जताने के लिए मामा से #ह>मेरं भारी से जा कर कहो कि चार सेर ताजे सिंधाट़े तुड़वा कर ले आये | + नमारा ने जो उनको आवाज सुनी, तो सिपहआरा से पछा- -यह कौन आया है लपहसा।। ने फहा --एऐ, वहीं तो हैं अस्करी ! थोड़ी देर में मिर्जा अस्करी तो चले गये, और चडत वक़्त बहरबेगम से कह गये कि हमने जो कहां है, उसका खथाल रहे । बहारवंगन ने कड्टा--देखो, अलाह चाहे तो आज के दूसरे ही महीने हस्नभारा वेगम % धाथ भंगनी हो | हुस्कआरः उसी वक़्त नीचे आ रही थीं। यह बात उनके दान में उड़ गयी । पाँव-तले से मिट्टी निकछ गयी। उल्टे-यॉव लौट गयी और सिपहआरा। से ग्रह क्रिस्सा कहा | उसके भी होश उड़ गये | कुछ देर तक दोनों बहने सल्नाटे में पड़ी रहों | फिर सिपद्आरा ने दीवाने-दहाफ़िज़ उठा लिया और फ़ाल देखी, ठो सिरे पर ही यह शेर निकछा--

बेरी ६ दाम मुर्गे दिगर नेह; कि उनका रा बुलेंर अस्त आशियाना । (यह जाछ दूसरी चिड़िया पर डाछ। उनका का घोंसला बहुत ऊँचा है ।) सिपहआरा यहद्द शेर पढ़ते द्वी उछल पड़ी । बोलो--लो फतद है। बेड़ा पार हो गया। इतने में बद्ारबेगम आ पहुँचीं और हुस्नआरा से बोलो--तठुम छोगों ने मिर्जा अस्करी को तो देखा होगा! कितना खब्रयूरत जवान है ! सिपहआरा--देखा क्यों नहीं; वही शौक़ीन से आदमी हैं न ! बहारबेगम--अबकी आयेगा तो ओट में से दिखा दूँगी । बड़ा हैंसमुख, मिलन सार आदमी है | जिस वक़्त आता है, मकान भर महकने लगता है। मेरी बीमारी में बेचारा टिन *्ए में तीन-तीन फेरे करता था।

हुस्नआरा ये बातें सुन कर दिल द्टी दिल में सोचने लगा कि यह कह क्या रही हैं । कैसे अस्करी ! यहाँ तो आजाद को दिल दे चुके | वह्द टकीं निधारे, हम कौल हारे | इनको अस्करी की पड़ी है। बहार बेगम नेत्रड़ी देर तक अध्करी की तारीफ़ की; मगर हुस्नआरा कब पसीजनेवाली थीं। आखिर, बद्रबेगम ख़फ़ा हो कर चली गयों । दूसरे दिन जब अस्करी फिर आये, तो बहारबेगम ने उनसे कहा--मैंने हुस्न-आशय से तुम्दारा जिक्र तो किया, मगर वह बोली तक नहीं | उस मु आज़ाद पर लट्ट हो रही हैं ।

अस्करी--मैं एक तरकीब बताऊँ, एक काम करो | जच्न हुस्नआरा बेगम और ठुम पास बैठी हो, तो आज़ाद का जिक्र जरूर छेड़ो । कहना, अस्करी अभी-अभी अखबार पढ़ता या, उसका एक दोस्त है आज़ाद, वह नानभाई का लड़का है। उसकी बड़ी तारीफ़ छपी है। कहता या, इस नानबाई के लोंडे की खशक्रिस््मती को तो देखो, कहाँ जा कर शिप्पा लढ़ाया रै ! जब वह कहें कि आजाद शरीफ़ आदमी हैं, तो कददना, अस्करी के पास आजाद के न जाने कितने खत पड़े हैं। वह करूम खाता है कि आज़ाद नानत्राई का लड़का है, बहुत रिनों तक मेरे यहाँ हुक््क्े भरतः रहा ।

यह कटद्ट कर मिर्जा अस्करी तो त्रिदा हुए, और बहारबेगम हुस्नआरा के पास पहुँचीं ।

हुस्नआरा--कहाँ थीं बहन ! आओ, दरिया की सेर कर ।

बहारबेगम--जरा अर्करी से बातें करने लगी थी | किसो अख़बार में उनके एक दोस्त की बड़ी तारीफ़ छपी है। क्या जाने, क्या नाम बताया था १ भला ढः सा नाम है | हाँ, खब याद आया, आज़ाद। मगर कहता था कि नानबाई का लड़का है।

हुस्नआरा--किसका !

बदहारबेगम-- नानबाई का छड़का बताता था। तुम्हारे आशिक साहब का भी तो यही नाम है । कहीं वद्दी अस्करी के दोस्त न हों ।

सिपहआरा--वाह, अच्छे आपके अस्करी हैं जो नानबाइयों के छोकरों से दोस्ती करते फिरते हैं ।

बहार तो यह-आग लगाकर चलती हुई, इधर हुस्नआरा के दिल में खलबली मची | सोचीं, आज़ाद के हाल से किसी को इत्तला तो है नहीं, शायद नानबाई दी हों | मगर यह शक़्ल-सूरत, यह इल्म और कमाल, यह लियाक़त और हिम्मत नान-बाई में क्योंकर आ सकती है! नानत्राई फिर नानबाई हैं। आज़ाद तो शाहज़ादे मालूम होते हैं। सिपहआरा ने कदहा--बराजी, बहार बहन तो उधार खाये बेटी हैं कि अस्करी के साथ तुम्दारा निकाह द्दो। सारी कारस्तानी उसी की है | अस्करी के हथकंडों से अब बचे रहना । वह बड़ा नटखट माह्म होता है ।

शाम को मामा ने एक ग्वृत ला कर हुस्नआरा को दिया। उन्होंने पूछा खत है !

मामा--पढ़ लीजिए ।

सिपहआरा--क्या डाक पर आया है !

मामा--जी नहीं, कोई बाहर से दे गया है ।

हुस्नआरा ने खत खोल कर पढ़ा | खत का मजमून यह था--

कदम रख देख कर उल्फ़त के दरिया में जरा ऐ इदिल; खतरा है डूब जाने का भी दरिया के नहाने में।

हुस्नआरा बेगम की खिदमत में आदाब। में जताये देता हूं कि आज़ाद के फेर में न पड़िए । वह नीच क्रौम आपके काबिल नहीं। नानबाई का लड़का, तंदूर जलाने में ताक़, आटा गूँधन में मझशाक्र | वह और आपके लायक हं। | अब्बल तो पाजी, दूसरे दिल का हरजाई, और फिर तुर्स यह कि अनपढ़ ! बहार बहन मुझे खुब जानती हैं । मैं अच्छा हूँ या बुरा, इसका फ्रेंसला वही कर सकती हैं। आजाद मेरे दुच्मन नहीं, मैं उन्हें खत जानता हूं । इसी सबब से आपको सल्इ देता हू कि आप उसका खयाल दिल से दुर कर दें । खुदा वद्द दिनन दिखाये कि आज़ाद से तुम्दारा निकाह दे ।

किसका

तुम्हारा अर्करी हुस्नआरा ने इस खत के जवाब में यह शेर लिखा-- न छेड ऐ. निकहत बादे-बहारी, राह छग अपनी; मुझे अटखेलियों यूझी हैं, हम अजार जेंठे हैं, सिपहआरा ने कहा--क्यों बाजी, हम क्या कहते ये ! देखा, वही बात हुई न! और झूठा तो इसी से साबित है कि मियाँ आजाद को अनपढ़ बताते हैं। खदा की शान, यद्द और आजाद को अनपद कहें | हम तो कहते ही थे कि यह बड़ा नटखट मादूम होता है ।

हुस्नआरा ने यह पुर्ज़ों मामा को दिया कि जा, बाहर दे आ। अस्करी ने यह खत पाया, तो जल उठे | दिल में कदह्ा--अगर आजाद को नीचा न दिखाया, तो कुछ न किया । जा कर बड़ी बेगम से मिले और उनसे खूब नमक-मिर्च मिला-मिला-कर बातें कीं | बद्दारबेगम ने भी हाँ-में-हाँ मिछायी और अस्करी की खूब तारीफ़ें कीं | आजाद को जद्ाँ तक बदनाम करते बना, किया | यहाँ तक कि आखिर बडी बेगम भी अस्करी पर लट्ट हो गयीं मगर हुस्नआरा और सिपहआरा अस्करी का नाम सुनते ही जल उठती थीं। दोनों आज़ाई को याद कर-करके रोया करतीं, और बहारबेगम बार-बार अस्करी का ज़िक्र करके उन्हें दिक़ किया करतीं। यहाँ तक कि एक दिन बड़ी बेगम के सामने तिपहआरा और बहारबेगम में एक झौड़ दो गयी। बद्दार कहरी थीं कि हुस्नआरा की शादी मिर्जा अस्करी से होगी, और ज़रूर होगी । सिपहआरा कद्दती थीं--यह मुमकिन नहीं ।

एक दिन बड़ी बेगम ने हुस्नआरा को बुला भज्ञा, लेकिन जब हुस्नआरा गयीं, तो मैंह फेर लिया। बद्दासबेगम भी वहीं बैठी थीं। बोलीं--अम्माँजान ठुमसे बहुत

नाराज हैं हुस्न आरा ! बेगम--मेरा नाम न लो ।

बद्दास्बेगम-- जी नहीं, आप खफ़ा न हों। मजाल है, आपका हुक्म न मानें ।

बेगम - सुना हुआ है सब्र ।

बहारबेगम-- हुस्नआ रा, अम्माँज्गन के पास आओ।

हुस्नआरा परेशान कि अब क्या करूँ। डरते-डरते बड़ी बेगम के पास जा बैठी । बडी बेगम ने उनको तरफ़ देखा तक नहीं ।

बहारबेगम--अम्माँजान, यह आपके पास आयी हुई हैं, इनका क़मूर माफ़ कीजिए।

बेगम--जब्र यह मेरे कहने में नहीं हैं, तो भुझसे क्या वास्ता ? अरकरी सा लड़का मशाल ले कर भी ढूँढें, तो न पाये । मगर इन्हें अपनी द्वी ज्िद है।

बहारबेगम हुस्नआ रा, ख़न्न सांच कर इसका जवात्र दो ।

बेगम--मैं जवाब-सवात्र कुछ नहीं माँगती ।

बहारबेगम-- आप देख लीजिएगा, हुस्नआरा आपका कद्दना मान लेंगी ।

बेगम-- बस, देख लिया !

बहारबेगम--अम्माॉजान, ऐसी बाते न कहिए ।

बेगम--दिल जलता है बहार, दिल जलता है | अपने दिल में क्या-क्या सोचते थे, मगर अब उठ ही जायें यहाँ से, तो अच्छा ।

यह कट्द कर बडी बेगम उठ कर चली गयीं। हुस्नआरा भी ऊपर चली गयी और लेट कर रोने लगीं। थोड्डी देर में बहार ने आ कर कद्दा--हुस्नआरा, जरी पर्द ही में रहना, अस्करी आते हैं । हुस्नआरा ने अस्करी का नाम सुना, तो काँप उठीं। इतने में अस्करी आ कर, बरामदे में खड़े द्वो गये ।

बह'रबेगम--बैठो अस्करी !

अस्करी--जी हाँ, बेटा हूँ | खूब हवादार मकान दै। इस कमरे में तुम रहती हो न!

बदारबेगम--नहीं, इसमें हमारी बहनें रहती हैं ।

अस्करी--अब हुस्नआरा की तत्रीयत कैसी है १

बहासबेगम-- पूछ लो, बैटी तो हैं ।

अस्करी-- नहीं, बताओ तो आखिर १

बहा रबेगप्---तुम भी तो इकीम हो १ भला पर्दे के पास से नब्ज़ तो देखो !

हुस्नआरा मुसकिरायीं | सिपहआरा ने कदा--ऐ,, हटो भी | बडे आये वहाँ से हकीम !

बहारबेगम-- तुम तो हवा से लडती दो |

सिपहआरा-लड़ती ही हैं !

अस्करी--हस वक़्त खाना खा चुकी होंगी । शाम को नब्ज़ देख दूँगा |

बहारबेगम-- ऐ,, अभी खाना कहाँ खाया !

सिपहआरा--हाँ-हाँ खा चुको हैं ।

मिज़ों अस्करी तो रुखसत हुए, मगर बहारबेगम को सत्र कहाँ ! पूछा--हुस्न-आरा, अब बोलो, क्या कहती द्वो ! सिप्आरा तिनक कर बोली--अब कोई और बात भी है, या रात-दिन यही जिक्र है? कह दिया एक ठफ़ा कि जिस बात से यह चिदती हैं, वह क्यों करो |

बहारबेगम--होना वहीं हे, जो हम चाहती हैं ।

हुस्नआरा--खैर, बहन, जो होना है, हो रहेगा | उसका जिक्र ही क्या !

सिपहआरा--बहार बहन, नाहक़ बैठे-जिठाये रंज बढ़ाती हो ।

बहारबेगम--याद रखना, अम्माँजान अभी-अभी क्रसम खा चुकी हैं कि वह तुम दोनों की सरत न देखेंगी । बस, तुम्हें अब अख्तियार है, चादे मानो, चाहे न मानो ।

कई दिन इसी तरह गुजर गये | हुस्नआरा जब बड़ी बेगम के सामने जातीं, तो वह मुँह फेर लेतीं | टोनों बहने रात-दिन रोया करतीं। सोचीं कि यह तो सब के सब हमारे खिलाफ़ हैं, आओ, रूहअ+ज़ा को बुलायें, शायद वह हमारा साथ दें । मामा ने कहा--में अभी-अभी जातो टूँ । जहाँ तक बन पड़ेगा, बहुत कहूँगी । और, कद्दना क्या है, ले ही आरँगी |

इतने में बह्ारबेगस ने आ कर कहा--ऐ. हुस्नआरा, जरी पर्दा करके अस्करी को नब्ज़ दिखा दो | जीने पर खड़े हैं। हुस्नआश मजबूर दो गयी | सिपहआरा को इथारे से बुलाया ओर कट्दा- बंद्वार बहन ता बाहर ही बैठंगी । मेरे बदले तुम नब्ज दिखा दो | सिपहआरा ने मुसकिरा कर फदह्दा--अच्छा, और पर्दे के पास बैठ कर नब्ज दिल्लायी ।

अस्करी--दुसरा हाथ लाइए |

बहा रबेगम--ब्रुखार तो नहीं है !

अस्करी--थोड़ा सा बुखार तो ज़रूर है । कमजोरी अद्ृत है ।

जजत्र अस्करी चले गये, तो हुस्नआरा ने बहारबेगम से कहा--आपके अस्करी तो बड़े होशियार हैं !

बद्ारबेगम--क्या शक भी है !

हुस्नआग--उफ़, मारे हँसी के बुरा हाल है। वाह्द रे हकीम !

तिपहआरा -'नोम हकीम, खतरे जान ।?

बहारबेगम- यह काहे से १

हुस्नआरा--नब्ज़ किसकी देखी थी !

नद्वारबेगम--तुम्द्दा री ।

हुस्नआरा--अरे वाह, कहीं देखी हो न ! बस, देख ली थ कमत |

बहारबेगम--फिर किसकी नब्ज़ देखी ! क्या सिपहआर बैठ गयी थीं !

सिप 7"--और नहीं तो क्या ! कमजोरी बताते थे । ऋमजोरी हमारे दुश्मनों को हो!

बहा रबेगम - भला इलाज में क्या हँसी करनी थी ?

ब्राहर जा कर बहार ने अस्करी को खब आड़ि-हाथों छिया--ऐ बस, जाओ भी, मुफ़्त में हमका बंद बनाया | हुस्नआरा ने हँसी-हंसी मं सिपहआरः को अपनी जगह बिठा दिया; और तुम ज्ञगा न पहचान सके । खुदा जानतः है, रुझे बहुत शरम आयी |

शाम को रूहअफ़ज़ा बेगम आ पहुँचीं और बड़ी बेगम के पास ज्ञा कर सलाम किया ।

बडी बेगप--तुम कत्र आयीं !

रूदअफ़जा--अभी-अभी चली आती हूँ। हुस्नआरा कहाँ हैं !

बदारबेगम--ह में उनका हाल मालूम नहीं । कोठे पर हैं |

रूहअफ़जा--जरी, बुलवाइए !

बद्दाबेगम--दोनों बहने हमसे खफ़ा हैं ।

रूहअफ़ज़ा कोठे पर गयी, तो दोनों बहनें उनसे गले मिल कर सूत्र रोयीं ।

रूहअफ़जा--यह तुमको क्या हो गया हुस्नआरा ! वह सरत हो नहीं । माजरा क्या है!

सिपदहआरा---अन्न तो आप आयी हैं; सब ऋछ माठ्म दो जायगा । गरा घर हमसे फिरंट हो रहा है । हमें तो खाना-पीना उठना-बैठना सत्र हराम है !

बहा गबेगम को यद सत्र केसे होता कि रूदअफ़ला आये और दोनों बहनें इनसे अपना दुशखड़ा रोये | आ कर धीरे से बैठ गयीं ।

रूदअफ़जा-- बहन, यह क्या बात है | आखिर किस बात पर यह रंजारंजी हो

रही है !

बहारबेगम - मैं तुमसे पूछती हू, अस्करी में क्या बुराई है ! शरीफ़ नहीं है वह, या पढा-लिखा नहीं है, या अच्छे खानदान का नहीं हे ! आखिर इनके इनकार का सत्रच क्या है !

सिपहआरा-- हमने एक दढफ़े कह दिया कि हम अस्करी का नाम नहीं सुनना चाहते ।

रूहअफ़ज़ा--तो यह कहा, बात बहुत बठ्गयी है। मुझे ज़रा भी कुछ हाल माद्म होता, तो फ़ोरन ही आ जाती ।

बहारबेगम - अब आयी हो, तो क्या बना लोगी १ यह एक न मानेंगी।

रूहअफ़ज्ा - वह तो शायद मान भी जायें, मगर आपका मान जाना अछक्ष्ता मुश्किल हे ।

बदारबेगम--यह कहिए, आप इनकी तरफ़ से छड़ने आयी हैं ?

रूदअफ़ज़ा- हाँ, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि खाहमख्याह झगड़ा हो |

ये बातें हो रही थीं कि बड़ी बेगम साइबर भी लटिया टेकती हुई आयों ।'

रूहअफ़ज़ा--आइए अम्मोंजान, बैठिए ।

बेगम--में बेठने नहीं आयो, यह कहने आयी हूँ कि अस्त री के साथ हुस्नआरा का निकाह ज़रूर होगा | इसमें सारी दुनिया एक तरफ़ हो, मे विसी की ने मुझूँगी। मैं जान दे दूँगी। यह न मानेंगी, तो ज़हर खा डँगी; मगर करूंगी यहाँ, जो कह रहीं हूं।

बड़ी बेगम यह कह कर चली गयी । हुस्नआरा इतना रोयी कि ऑस् लाल हो गयीं। रूहअफ़ज़ा ने समझाया, तो बोली बहन, अम्माँजान मानेगी नहीं, ओर हम सिवा आजाद के और किसी के साथ शादी न करेगे ? नतीजा यह होना है कि हमी न होंगे |

HINDI TEXT

प्रसंग ५७

हुस्नआरा बेगम की जान अज़ाब में थी। बड़ी बेगम से बोल-चाल बंट, बहार-बेगम से मिलना-जुलना तक | अस्करी रोज़ एक नया गुल खिलाता | वह एक ही काइयाँ था, रूहअफ़ज़ा को भी बातों में लगा कर अपना तरफ़्दार बना लिया । मामा को पाँच रुपये दिये। वह उसका दम भरने लगी । महरी को जोड़ा बनवा दिया, वह भी उसका कल्मा पढ़ने छगी । नवाब साहब उसके दोस्त ये ही । हुसैनबइश को भी गाँठ लिया । बस, अब सिपहआरा के सिवा हुस्नआरा का कोई हमदर्द न था। एक दिन रूदअफ़ज़ा चुपक-चुपके उधर आयीं, तो देखा, कमरे के सब दरवाज़े बंद हैं । शीश से झाँक कर देखा, हुस्नआरा रो रही हैं और सिपहआरा उदास बैठी हैं । रूइअफ़जा का दिल भर आया। धोीरे से दरवाज़ा खाला और दोनों बहनों को गले लगा कर कहा--आओ, हवा मे बैठे । जरीं, झुँह धो डालो । यह क्या बात है ! जब देखा, 2नों गहने रोती रहती हो १

सिपहआरा- बदन, जान-छूझ कर क्यों अनजान बनती हो ! भव्य आपसे भी +३ बात छिपी है ! मगर आप भी हमारे खिल्मफ़ हो गयीं ! खेर अछाह मालिक है |

रूहअफ़जा-ठम्दारी तो नयी बाते हैं ! जहाँ तुम्हारा पसीना गिरे, वहाँ हम छल गये, और तुम समझती हो कि हम ठुम्हें जलात हैं | हम ता मुहब्बत से पृछत हैं, व्वौर ठम हमीं पर बिगड़ती हो ।

हुस्नआरा - सुनो बाजी, तुम कोन सी बप्ते नहीं जानती हो, जो पूछती हूं। | हम साफ़ साफ़ कह चुफ कि या ता उम्र भर कुआरों ही रहेंगे वा आजाद के साथ निकाह हैगा ।

सिपहआरा-- ऐसे-ऐसे ३६० अस्करी हों, तो क्या ! हलवा खाने को झूह चाहिए ।

रूहअफ़ज़ा---भत्र इस वक़्त बात बढ़ जाबगी । और कोई बात कर |

हुस्नऊारा--हम इतना चाइत हैं कि आप ज़रा इन्साफ़ करें |

रूहअफजा--मगर यह गुत्यो क्यों कर सुलझेगी ?

इतने मं मामा ने अख़बार ला कर रख दिया] हुस्नआरा ने पढ़ना शुरू किया | एकाएक एक मज़मून देख कर चौंक उठी । मज़मून यह था कि मिर्यां आज़ाद ने टर्की में एक साईस की बीजी से शादी कर छी | साईत का जहर दुल्वा दिया और अब साई सन के साथ गुलछर उडा रहे हैं। हुस्मआरा ने अखबार फेक दिया और उठ कर कमरे में चली गयीं। सिपहआरा ने माँप लिया कि ज़रूर आज़ाद की कुछ ख़बर है | अख़बार उठा कर देखने लगीं, तो यह मज़मून नज़र पड़ा । सन्नाटे में आ गयीं । जिस आज़ाद के लिए वहाँ सारी दुनिया से लड़ाई हो रही थी, जिसका दोनों आसरा लगाये बैठी थीं, उसका यह हाल ! हुस्नआरा फो जा कर तसकीन देने लगी-- बाजी, यह सब ग़लत है ।

हुस्नआरा--क्रिस्मत की खूबी है ।

सिपह आरा--हम तो फ़ाल देखेंगे ।

हुस्नआर--हमारा तो दिल टूट गया | हाय, दम क्या जानते ये कि मुदृब्बत यह बुरा दिन दिखायेगी।

हाल अव्वल से यह न था जाहिर,
कि इसी ग़म में होंगे हम आखिर ।

अपना किया अपने आगे आया। मियोँ आजाद के हथकंडे क्या मालूम थे । इनको हमारा जरा खयाल न आया । एक नीच क्रौम की औरत को ब्याहा । हुस्न-आरा को भूल गये । यहाँ मह्दीनों इसी रंज में गुज़र गये कि टर्ती क्यों भेजा । भैंडे बिठाये उनकी जान के दर पे क्यों हुईं। रात-विन दुआ माँगी कि वह खेरियत से घर आये | मगर यह क्या माल्म था कि एकाएक यह ग़म की बिजली गिर पडेगी । क्रिस्मत फूट गयी अबच्च तो यही आरजू है कि एक दफ़ा चार आँखें हों, फिर झुक कर सलाम करूँ |

सिपहआरा--अगर यही करना था, तो इतनी दूर गये क्या करने थे !

रूहअफ़ज़ा कमरे में आयी, तो देखा, हुस्नआरा दुलाई ओदे पड़ी हैं। बदन पर हाथ रखा, तो तेज बुखार। हुस्नआरा उन्हें देख कर रोने लगीं। रूह अफ़जा बोलों -- बहन, तब्रीयत को काबू में खोे। ऐसा भी नौज कोई बीमारी में घत्रराये । बहद्वारबेगम ने घुना, तो वह भी घत्रराई हुई आयीं। बदन पर हाथ रखा, तो मादूम हुआ, जैसे किसो ने झुलसा दिया | हुस्नआरा ने रो कर कद्दा-बाजी, हर तरह की बीमारी मैंने उठायी है; मगर दिल कभी इतना कमज़ोर न हुआ था। माझुम होता है कि जान निकल रही है। बहारवेगम ने बड़ी बेगम को बुलवाया। वह भी बद-हवास आयीं और हुस्नआरा के माथे पर द्वाथ रख कर बोलीं--अह्लाह, यह हुआ क्या]

बहारबेगम--बुख्ार सा बुस्त्वार है !

नवाब साहत्र दोड़े हुए आये | देखा, तो कुहराम मचा हुआ है। इतने में अस्करी आये । बद्दारबेगम ने कहा--भेया जरी नब्ज तो देखो । यह दम के दम में क्या दो गया !

अस्करी-- (नब्ज़ देख कर) बहन, क्या बताऊँ, नब्ज़ ही नहीं मिलती !

इस फ़िक़रे पर बहारबेगम सिर पीटने लगीं । नवात्र साइब्र ने समझाया, यह वक़्त दवा और इलाज्ञ का है, रोना तो उम्र-भर है | अस्करी फौरन् बड़े हकीम साहब को बुलाने गये । शाहजादा हुमायूँ फ़र भी आये थे । बोले--मैं जा कर सिविलसजन को साथ छाता हूँ। सज्जन साइबर आये और नब्ज़ देख कर कटद्दा--f4ल पर कोई सदमा पहुँचा दै। किसी अज़ीज़ के मरने की ख़बर सुनी हो, या ऐसी दी कोई और बात हो । नुस्खा लिखा और फ़ीस छे कर चल दिये । इतने में बड़े हकीम साइबर आये और नब्ज देख कर अस्करी के कान में कह्दा--काम तमाम हो गया। नुस्वा लिख कर आप भी बाहर गये । बहारबेगम सब्रसे ज़्यादा बेकरार थीं।

शाम का वक़्त था, बड़ी बेगम ममाज़ पढ़ रही थीं, बहारबेगम उदास बैठी हुई थीं, नवाव साहब हुमायूँ फ़र के साथ इसी बीमारी का शिक्र कर रहे थे कि एकाएक अंदर से रोने की आवाज़ आयी ।

नवात्र साहब--क्या हुआ, क्या | हुआ क्या !!

ब्रहारबेगम --जो कुछ होना था, बह हो गया |

नवात्र साहब ने जा कर देखा, तो हुस्तआरा की आँख फिर गयी थीं और बदन ठंडा हो गया था। नवाब साहम्न को देखते हो बड़ी बेगम ने एक ईंट डठायी और सिर पर पटक छी। मिपह आरा ने तीन बार दीवार से सिर टकराया। नवात्र साहब डाक्टर को बुलाने दौटे |

HINDI TEXT

प्रसंग ५८

रूम पहुँचकर आज़ाद एक पारसी द्ोटल में ठहरे । उसी होटल में जाजिया की 'क लड़की भी ठहरी हुई थी। उसका नाम था मीडा | आजाद खाना खा कर अख-बार पढ़ रहे थे कि मीडा को बार में टहलते देखा ! दोनों, की आँखें चार हुई । आज़ाद के कलेजे में तीर सा लगा । मीडा भी कनश्ियों रो देख रही थी कि यह कौन आदमी है | आदमी तो निद्दायत इसीन है, ,मगर तुकीं नहीं मादम होता है |

आज्ञाद को भी बाग की सैर करने की धुन सवार हुई, तो एक फूल तोड़ कर मीडा के सामने पेश किया, मीडा ने फूल तो ले लिया, मगर जिना कुछ कहे-सुने घोड़े पर सवार हो कर चली गयी । आज़ाद सोच रहे ये कि यहाँ किसी से जान न पहचान, अन्न इस इसोना को क्योंकर देखेंगे ! इसी फ़िक्र में बेंठे थे कि होटल का मालिक आं पहुँचा । आजाद ने उससे बातों बातों में पता छगा लिया कि यह एक कुँआरी लेडी है| इसको खूबसूरती की दूर-दूर चर्चा है। जिसे देखिए, इसका आशिक़ है। पियानो बजाने का दिली शौक़ है। घोड़े पर ऐसा सवार होती है कि

अच्छ-अच्छे शहसवार दंग रह जाते हैं |

शाम के वक़्त आजाद एक किताब देख रहे थे कि एक औरत ने आ कर कहा--एक साहब बाहर आपकी तलाश में खड़े हैं। आज्ञाद को हैरत कि यह कौन है ! बाहर आये, तो देखा, एक औरत मुँह पर नक़ात्र डाले खड़ी है। इन्हें देखते द्वी उतने नक्ाब उलद दी । यह मोडा थी ।

मीडा- मैं वही हूं, जिसे आपने 'फूल दिया था ।

आजाद --और मैने आपकी सूरत को अपने दिल पर खींच लिया था ।

मीडा- यहाँ कब तक ठद्वरिएगा !

आज्ञाद- लड़ाई में शरीक होना चाहता हूँ ।

मीडा--इस लड़ाई का बुरा हो, जिसने हज़ारों घरों को बरबाद कर दिया! भला, अगर आप न जायें, तो कोई हज है !

आजादू--मजबूरी है !

मीहा ने आजाद का दह्ाथ पकड़ छिपा और बारा में टहलते-टहलते बोली--- जब तक आप यहाँ रहेंगे, में रोज़ आंऊँगी ।

आजाद-मेरे लिए यह बड़ी खूशनसीत्री की बात है। में अच्छी सायत देख कर घर से चला था |

मीडा--आपने व्जीर जंग से अपने लिए क्या तय किया ?

आडाद--अमी तो उनसे मिलने की नौबत ही नहीं आयी ।

मीडा--मुझे उम्मेंद है कि में आपको कोई अच्छा ओहदा दिला सकूँगी।

आज़ाद--आपका वतन कहाँ है !

मीडा--जाजिया ।

आजाद--तो यह कहिए,, आप कोहक़ाफ़ की परी हैं ।

इस तरह की बातें करके मीडा चली गयी । आज़ाद कुछ देर तक सन्नाटे में खड़ रहे । इतने में एक फ्रांसीसी अफ़सर आ कर बोछा---तुम अभी किससे बातें कर रहे थे १

आज़ाद--पिस मीडा से ।

अफ़सर--तुम्हें मालूम हैँ, उससे मेरी शादी दंनेवाली है !

आज़ाद--बिलकुल नहीं ।

यह सुनते ही उस अफ़सर ने, गिसका नाम जदाब था, तल्वार खींच कर आज़ाद पर हमला किया । आज़ाद ने खाली टी। एकाएक कसी ने पीछ से आज़ाद पर तलवार चलायी । तलवार छिछलती हुई बाये कंध पर छगी | पछट कर आज़ाइ ने जो एक तुला हुआ हाथ लगाया, तो वह जख्मी ही कर गर पड़ा । आजाद सेमलने ही को थे कि जदाब फिर उन पर झपटा। आज्ाद ने फिर ७ ली दी और कहा-- मैं चाहू तो तुम्हें मार सकता हूं । मगर मुझे त+हारी जवानी पर रहम आता है। यह कट +; आजाद ने पेतरा बदला और तलवार उसके द्वाथ से छीन लो । इतने में होटल से कई आदमी निकलरू आये और आजाद की तारोफ़ करन लगे। जदाब ने शगमिंदा हूं। कर कहा--छुझे इसका अफ़सास हैँ कि मरे एक दास्त न मुझसे बऱोर पूछे आप पर पीछे से हमछा किया । इसके लिए मे आपसे माफ़ी मांगता हूं। दोनों आदमी गले ता मिले, मगर फ्रांसीसी के दिल से कुदूरत न गयी ।

दूसरे दिन मियाँ आज़ाद हमीदपाशा के पास गये, जो जंग के वज़ीर थ | हमीद ने आजाद का डील-डौल देखा और उनकी बातचीत सुनी, ता फ्रौज़ी ओहदा देने का वादा कर लिया। आज्ञा5 खुश-खश लोट आते थे कि मीडा घाड़ें पर सवार आ पहुँची ।

मीडा--आप कहाँ गये थे १

आजाद --वजीर-जँग के पास । कल तो आपकी बदौलत मेरी जान ही गयी थी |

मीडा--घुन चुकी हूं ।

आजाद--अनत्र आपसे बोलते डर माद्म होता है !

मीडा--जीत तो तुम्दारी दी हुई । तुम झंझे दिल मं बुरा समझ रहे होगे; मगर मेरा दिल क्राबू से बाहर हँ। मेरा [दंल तुम पर आया है। मे चाहतों हूँ, मेरो ठम्दारे साथ शादी हा ।

आज़ाद--मुझे अफ़सोस है कि मेरी शादी तय हो चुका है। खदा को गवाह करके कहता हूँ, आपकी एक-एक अदा मेरे दिल में चूभ गयी है। मगर में मजबूर हूँ ।

मीडा ने उदास हो कर कहा-पछताओगे, और घोड़ा बढ़ा दिया । उसी रात को मीडा ने हमीदपाशा से जा कर कद्दा कि आज़ाद नाम का जे हिन्दुस्तानी आज आपके पास आया था, वह रूस का मुखबिर है। उससे होशियार रदिएगा ।

हमोद--तुम्हें इसका पूरा यक्रीन है !

मीड।---*झ आज्ञा के एक दोस्त ही से यह बात मादम हुई ।

हमीद---तुम्ददारा जिम्मा |

मीडा--बेशक !

यह आग लगा कर मोडा घर आयी; मगर बार-बार यह सोचती थी कि मैंने बहुत बुरा किया । एक बेगुनाह को मुफ्त में फँसाया । खयाल आया कि जा कर वजीर-जंग से कह दे कि आज़ाद बेगुनाह है; मगर बदनामी के खौफ़ से जाने की हिम्मत न पड़ती थी। मियाँ आजाद होटल में बैठे हुकक्रा पी रहे थे कि एक तुर्की अफसर ने आ कर कहा--आपको टर्की की सरकार ने क़ैद कर लिया |

आजाद--म्लुश्को !

अफसर--जी हाँ |

आज़ाद--आप ग़लती कर रहे हैं |

अफ़सर--नहीं, मुझे आप द्वी का पता दिया गया है |

आज्ाद--आखिर भेरा कसर !

अफ़सर - मुझे बताने का हुक्म नहीं |

तीन दिन तक आजाद क्रेदखाने में रहे, चोथे दिन इमीदपाशा के सामने लाये गये |

हमीद--मुझे माद्स हुआ कि तुम रूसी जासूस दो ।

आजाद-- बिलकुल ग़छत । मैं काच्मीर का रहनेवाला हूँ । भाप बतला 'सकते हें हैं किसने मुझ पर इलज़ाम लगाया !

हमीद-- एक शरीफ़ लेडी ने, जिसका नाम मीडा है |

आज्ञाद मीडा का नाम सुनते ही सन्नाटे में आ गये। दिल के टुकड़े-टुकड़ें हो गये | मुँह से एक बात भी न निकली। अब आज्ाद फ़िर क़ैदखाने में आये, तो मुँह से बेअख्तियार निकल गया--मीडा | मीडा !! वूने मुझ पर बड़ा जुल्म किया !

आज़ाद को इसका इतना रंज हुआ कि उसी दिन से बुखार आने ल्गा। दो-तीन दिन में उनको हालत इतनी खराब हो गयी कि जेल के दारोगा ने सुबह-शाम सैर करने का हुक्म दे दिया । एक दिन वह शाम को बाहर सैर कर रहे थे कि एक खूबसूरत नौजवान घोड़ा दौड़ाता हुआ उनके क़रीब आ कर खड़ा द्वो गया ।

जवान---माफ़ कीजिएगा, आपकी सूरत मेरे एक दोस्त से मिलती है। मैंने समझा शायद वही हों | आप कुछ बीमार मालूम पड़त हैं !

आजाद--जी हाँ, कुछ बीमार हूँ । मुझे खयाल आता है कि मैंने कहीं भापको देखा है ।

जवान-- शायद देखा ह। ।

यह कह ३६ वह मसुसकिराया | आजाद ने फ़ोरन पहचान लिया। यह मुससाकराहट मौडा की थी। आज्ञाद ने कद्दा--भीडा, तुमने मुझ पर बड़ा जुल्म किया । मुझे टसे ऐसी उम्मेद न थी ।

मीडा--में अपने किये पर ख़द शरमिंदा हूँ । मुझे माफ़ करो ।

HINDI TEXT

प्रसंग ५९

प्रियाँ लोजी पंद्रह रोज में खासे टाँठे हो गये, तो कांसल से जा कर कद्दा--मुझे आज़ाद के पास भेज्ज दिया जाय । कांसल ने उनकी दरख्वारत मंजूर कर ली । दूसरे दिन खोजी जद्दाज पर बैठ कर कुस्तुनतुनियाँ चले | उधर मिरयाँ आज़ाद अभी तक क्रेद-जाने में ही ये । हमीदपाशा ने उनके बारे में खूब तहक़ीकात की थी, और गो उन्हें इतपिनान हो गया था कि आजाद रूसी जासूस नहीं हैं, फिर भी अन्न तक आज़ाद ग्हि न हुए ये ।

एक दिन मिर्यों आज़ाद केदखाने में बैठे हुए थे कि एक फ्रांसीसी केंटी आया । उस पर भी जासूसी का इल्जाम था । आजाद ने पूछा--आपने अपनी सफ़ाई नहीं पेश की ?

क्रांसीसी--अधेर है, अंधेर ! में तो इन तुर्कों का जानी दुश्मन हूँ ।

“जा, मुझे यह सुन कर अफ़सोस हुआ | में तो व़र्कों का आशिक हूँ । ऐसी दि क्रोम दुनिया में नहीं है ।

फ्रासीसी---अभी आप इन लोगों का अच्छी तरह नहीं जानते । आप ही को बेव-जह कैट कर लिया ।

आहजाद-लड़ाई के ट्िनों में समी जगह ऐसी ग़लतियाँ हो जाती हैं ।

फ्रांसॉत्ी--आप रूसी जन्नान नहीं जानते !

आजाद --बत्रिलकुल नहीं ।

फ्रांसीसी --रूस की सरकार ने बहुत मजबूर द्वो कर लड़ाई की है |

आजाद--मैं तो समझता हूँ, रूसवालों की ज़्याबती है, साग यूरोप टर्की का दुश्मन है |

इस तरद्द की बातें करके फ्रांसीसी चछा गया और दूमर ही टिन मिर्यों आज़ाद आजाद कर टिये गये। यह कैदी फ्रांसीसी न था, हमीदपाशा ने एक तुकी अफसर को आज़ाट के दिल का भेद लेने के लिए भेजा था ।

शाम का वक़्त था, आजाद बैठे हुए मीडा से बातें कर रद्दे थे कि एक आदमी ने आ कर कट्दा--हुजुर, एक नाटा सा आदमी बाहर खड़ा है, और कहता है कि हमें कोठी के अंदर जाने दो | आज़ाद ने कहा--आने दो । एक मिनट में मिर्यों खोजी आ कर खड़े हो गये । आज़ाद ने दौड़ कर उन्हें गले लगा लिया और खेर-आफियत बूछने के बाद अपनी राम कहानी सुनायी | पिया खोजी ने जब आजाद के केद होने का द्वाल सुना, तो त्रिग्ट कर बोले--ख़रा ने चाहा, तो हम तुम्हारा बदला लेंगे | खड़े-खटे बदला न ले लें, तो नाम नहीं !

आज़ाइ---खर, अब इसका अफ़सोस न कीजिए. | मिस मीडा अभी आती होंगी, लरा उनके सामने बेहूदगी न कोजिएगा ।

खोजी--भई, अभी उन्हें मत आने दो । ज़रा हम बन-ठन लें। अफ़सोस यही है कि हमारे पास क़रोली नहीं । बेक़रौछों के हमसे कुछ न ह्वो सकेगा ।

आज़ाद--क्ुया उनसे लड़िएगा !

खोजी--नहीं साहब, लड़ना कैसा ! बेक़रौडी के जोबन नहीं आता। आप ये बातें क्या जाने |

इतने में मिस मीडा दूसरे कमरे से निकल आयी | खोजी ने अपना ठाट बनाने के लिए. मेज़् पर का कड़ा ओद लिया, तौलिया सिर में बाँधा और एक छुरी हाथ में ले कर मोडा की तरफ़ घूरने लगे | मीडा ने जो उनकी सूरत देखी, तो मुसकिरा दी। खोजी खिल गये। आज़ाद से बोले--क्यों आज़ाद, सच कहना, मुझे देखते ही कैसा खिल गयीं ! मीडा ने आज़ाद से पूछा--यदह् कौन आदमी है !

आज़ाद--एक पागल है। इसको यह ख़ब्त है कि जो औरत इसे देखती है, रीक्ष जाती है। तुम जरा इसको बनाओ |

मीडा ने खोजी को इशारे से क़रीन बुठाया । आप जा कर एक कुर्सो पर डट गये ।

मीडा--[हाथ में हाथ दे कर) आपका नाम क्या है !

खोजी--(आजाद से) मुझे समझाते जाओ जी !

आज़ाद ने दुभाषिये का काम करना झुरू किया। मीडा जो कहती थी, उनको समझाते थे, और वह्द जो कुछ कहते थे, इसे समझाते थे ।

मीडा---कल आपकी दावत है| आप शगत्र पीते हैं !

स्बोजी--हाँ--न हीं । मगर अच्छा; नहीं-नहीं | कह दो अफ़ीम पीता हूँ |

मीडा--यह आपका गुलाब सा चेहरा कुम्हला जायगा !

स्ोजी ने अकड़ कर आजाद की तरफ़ देखा।

मीढा--आप कुछ गाना भी जानते हैं |

सी जी--हाँ, और नाचना भी जानता हूँ।

मीडा--अहो-हो, तो फिर नाचो |

खूजी ने नाचना शुरू किया। अन्र मीडा हँसने लगी, तो आप और भी फूल गये । थोड़ी देर में मीडा होटल से चली गयी। तब आज़ाद ने कहा--भई खोजी, यह बात अच्छी नहीं | में तुमको ऐसा नहीं जानता था ।

खेजी--तो में क्या करूँ! जब वह खूद ही मेरे पीछे पड़ी हुई है, तो रुखाई करना भी तो अच्छा नहीं माद्म होता ।

थोडी देर में मीडा का खत -आयबा | आज्ञाद ने कहा--जनाव ख्त्राजा साहब, हमको तो जरा खत दिखाना ।

स्ोजी--वस, बस, चलिए,, अलग हटिए |

आज्ञाइ--लाओ, हम पद दें । तुमसे भला क्या पढ़ा जायगा !

खूंज॑:--अजब आदमी हैं आप ! आप कहीाँ के ऐसे बड़े आलि्म हैं |

खोजी ने खत को तीन बार चूना और आज़ाद को अलग बुला कर पढ़ने का दिया । लिखा था---

'मेरे प्यारे जवान, तुम्दारी एक-एक अदा ने मेरे ठिल में जगह कर ली है । तुम्हारी सारस की सी गदन

और बंदर की सी हरकतें जब्न बाद आती हैं, तो में उछल-उछल पड़ती हूँ। अभ् यह बताओ कि आज किस वक़्त आओगे ! यह खत अपने दोस्त आजाद को न दिखाना और वादे पर ज़रूर आना ।!

खोजी--यार, तुम्हें तो सब हाछ मालूम हो गया, मगर उम्रस्ते कह न देना |

आजाद--मैं तो जा कर शिकायत करूँगा कि हमसे छिपाया क्यों ? अभी-अभी खुत भेजता हूँ ।

खोजी--खेर, जाइए, कद दीजिए | वह हम पर आशिक हैं। तुम ऐसे हज़ार लगी-लिपटी बातें करें, होता क्या है| आपकी हकीकत ही क्या है!

आज़ाद--यार, अब तुम्हारे साथ न रहेँगं ।

खोजी--आखिर, सच्रत्र बताइए ।

आलाद-जत्र खुदा का ! मोडा सी माइरू ओर हमारे सामने तुम्हें यह ख़त लिखे ।

गोजी खिठखिला कर हँस पड़े। बालि--पह बात है ? हम जवान ही ऐसे हैं इसको काई क्या करे। लेकितव अगर तूम खिल्णफ़ हो गये, तो वल्लाह, में मीडा से बात तक न करूँगा मुझे जान से भी ज़्यादा प्यारे ह्वों। कसम खदा की, अब दुनिया में तुम्हारे सित्रा मेत और कोई नहीं | बस फ़क़त तुम! और हम तो बूटे हुए | यह भी मिस मीडा की मेहरत्रानी है । अज्ञी, मिसर में तो तुम न थे । वहाँ पर भो एक औरत मुझ पर आशिक हो गयी थी ! मगर खराबी यह थी कि न हम उसकी बात समझें, न वह हमारी ! हाँ इशारों में सतत बातें हुई। अच्छा, फिर एक इज।|म तो बुलाओ | आज जाना हैन !

आज़ाद ने एक दजाम बुलवाया । इजामत बनने छगी |

स्वी जी--धं.टो, घोटो । घोटे जा । अभी खूँटो बाक़ी हैं । खूब घोटो ।

हज'म ने फिर छुरा फेरा । खोजी ने फिर ट्रोल कर कटद्दा--अमो खूँटी बाक़ी है, घोटो ।

हज्जा+--तो हुजूर, कब्र तक घोटा करूँ !

स्ोज्ी-+दूने पैसे देंगे हम ।

हजाम - माना, मगर कोई हट भी है ९

खोजी--ठुमकी इससे क्या मतल्त्र |

हजाम - खन निकलने छगेगा।

आज़ाद--और अच्छा है; लोग कहेंगे, नोसा के चेहरे से ख़र बरसता है |

सोजी--हाँ, खूब सोची ।

हजाम--(किसबत सैंभाल कर) अनभ किसी और नाई से शुट्वाइए ।

रे

आज़ाइ--अच्छा, पट्टे तो कतरते जाओ | इजाम ने झल्ला कर आधे बाल कतर डाले | एक तरफ़ को आधी मूँछ उड़ा दी | खोजी एक तो यों ही बड़े हसीन थे, अब इज्जाम ने बाल कतर कर और भी टीक बना दिया । खोजी ने जो आईने में अपनी सूरत देखी, तो मूँछे नदारद । झल्छा कर कहा--ओ गीदी, यह क्या किया ! हज्जाम डरा कि कहीं यह साहब मार न बैटें। आज़ाद--क्यों, क्यों खफ़ा हो गये भई | खोजी--इसने

पट्टे ऊल-जदूल कतरे, और आप बोले तक नहीं ! आज़ाद--मैं सच कहता हूँ, आप इतने हसीन कभी न ये । खोजी--और चेहरे की तो फ़िक्र करो ! आजाद--हाँ, हाँ, धबराते क्यों हो ! खोजी--हमको याद आता है कि नौशा के सामने छोटे-छोटे लड़के गजल पढते हैं। दो-एक लौंडे बुलवा लीजिए, तो उनको ग़ज़लें रटा दें | आज़ाद ने दो लड़के बुलवाये, और मियाँ खोनज्नी उनको ग़ज़लें याद कराने लगे | एक ग़जल मियाँ आज़ाद ने यह बतलायी-- भला यह तो बताओ कि यह कोन बशर है; सत्र सरते लंगूर, फ़त दुम की कसर है। खोजी--चलिए, बस अब रिलगी रहने दीजिए | वाह, अच्छे मिले ! आजाद--अच्छा, और ग़ज़ल लिखबाये देता हूँ-- फुर्गों है, आह है, नाला है, बेकगरी है; ु (फ़िराक़े-यार में हाठ़त अजब हमारी है। खोजी--बाह, शादी को इस शेर स क्या वास्ता ! आजाइ--अच्छा साहब, ग़ज़रू याद करवा दीजिए--- कहा था बुलबुछल से हाल मेने तेरे सितम का बहुत छिपा कर; यह किसने उनकी खबर सुनायी कि हँस पड़े फूल खिलखिला कर | मेरे जनाजे को उनके कृच मे नाइक अहब्ाब लेके आये; निगादे-हसरत से देखते हैं वह रुग्त्न से परदा उठा-उठा कर। खोजी--वाह, जनाजञ का शादी से क्या मतलब है भला ! आज़ाइ--ऊपरवाला ३२ पछंद है ! खोजी--ढाँ; हँसना और खिलखिणाना, ऐसे छफ़्ज़ हों, तो क्या पूछना | आजाद--अच्छा, और मुनिए ।

लोजी--नहीं, इतना ही काफ़ी है | ज़रा बाजेबालों की तो फ़िक्र कीजिए | हाथी, घोड़े, पाठकी, सभी चाहिए। मगर हमारे लिए जो घोड़ा मँगवाहइएगा, वह जरा सीधा हो ।

आजाद--भला, घोड़ा न मिले, तो खचर हो तो कैसा !

खोजी-वाह, आपने मुझे कोई गधा समझा है !

इतने में होटल का मैनेजर आ गया और यह तैयारियोँ देख कर ईंसने लछगा।

खोजी--क्यों साहब, यह आप हँसे क्यों !

मैनेजर--जनाब, यहाँ शरीफ़ छोग शादियों में बराजे-गाजे नहीं ले जाते, और पैदल ही जाते हैं| हाँ एक बात हो सकती है, दस-पाँच आदमियों को थालियाँ दे दीजिए, बॉस की खपाचों से उन्हें बचाते जायँ। आवाज़ की आवाज़ और बाजे का बाजा |

खोजी--भई आज़ाद, सोच लो | आज़ाद--वह जब यहाँ दस्तूर ही नहीं, तो फिर क्या कियण् जायगा ! हाँ, नौशे

का पेदल जाना ज़रा बदनामी की बात है ।

मैनेजर--तो पैदल न जाइए । जिस तरह यहाँ के रईस लोग जाते हैं, उस तरह जाइए--आदमी की गोद में ।

सतोजी -मंजूर | मगर हमको उठा सकेगा कोई !

मेने अर--हम इसका बंदोबस्त कर देंगे । आप घबरायें नहीं ।

दो घड़ी दिन रहे स्वोजी की बरात चली । तीन मजदूर आगे-आगे थालियोँ बजाते जात हैं, दो लोड आगे पीछे साथ। खेजी एक मज़दुर की गोद में, गेरुए कपड़ पहने, अकड़े बैठे हैं। एकाएक आप बोले--अरे रे रे ! रोक लो बरात | रोक ला | पश्चाखवा ले कहाँ हैं ? कोई बोलता ही नहीं । परदेश में भी इंसान पर क्या

मुसीबत पड़ती है ? अब में दृल्हा बन कर रहूँ, या इंतजाम करूं ! ये दोनों गीदी तो निरे जाँगदू ही निकले । फिर याद आया कि निशान का हाथी तो है ही नहीं। अरे ! करौली भी नहीं । हुक्म दिया कि लौटा दो बरात | चलो होटल में ।

आज़ाद--यह क्यों मई १ क्या बदात है ? लौटे क्यों जाते हो !

खोजी--निशान का हाथी तो है ही नहीं ।

आज्ाद--अजब आदमी हो भई, आप लड़ने जाते हैं, या शादी करने ! और फिर यहाँ हाथी कहाँ ! कहिए तो खच्चर पर एक झंडी रखवा दें ।

इतने में मिस मीड! आती हुई दिखायी दीं | खोजी उन्हें देखते ही और भी अकड़ गये ! क्या कहूँ, मरे साथ के आदमी सत्र गेली मार देने लायक़ हैं। कोई इंतजाम ही न किया ।

मीडा--खेर, कल आ जाइएगा । मगर आप से एक बात कहनी है। यहाँ एक रूसी बहुत दिनों से मेशा आशिक़ है | पहले उससे लड़ी, फिर इमारे साथ शादी हो |

श्रोजी--मजाल है उसकी कि मेरे सामने खड़ा हो जाय ? हम पचास आदमियों से अकेले लड़ सकते हैं। जब बरात होटल पहुँची, तो मीडा ने कद्दा-- तो उनसे

कब लड़िएगा !

खोजी--जब कहिए | खून पी जाऊंगा ।

मीडा--अच्छा, कल तेयार रहिएगा ।

दूसरे दिन मीडा ने एक तुर्की पहलवान को ला कर द्वोटल में ब्रिठा दिया और खोजी से बोढी--लीजिए, आपका दुश्मन आ गया। खोजी ने जन्न उसे देखा, तो होश उड़ गये । दुनिया भर के आदमियों से दो मुद्ठी ऊँचा । दिल में सोचने लगे, यह. तो कच्चा ही खा जायगा । एक चपत दे, तो हम जमीन में धँस जाये । इससे छड्टेग! कोन भला ; मारे डर के ज़रा पीछे हट गये । मीडा ने कह्दा--आप तो अभी से डस्न लगे । खोजी एकाएक धड़ाम से गिर पड़ ओर निल्लाने लग--इस तरह का दे हं' रहा है कि कुछ न पूछो । अफसोस, दिल की दिल ही में «ह गयी ! वल्लाह, १६ पटकनी देता कि कमर टूट जाती । मगर खुदा को मंजूर न था। तुर्की पहलवान ने इनका हाथ पकड़ कर एक झटका दिया, तो दस कदम पर जा गिरे। बोले--अ गीदी, ज्षरा बीमार हो गया हूँ, नहीं तो कचा ही खा जाता, नमक भी न माँगता ।

आग्विर इस बात पर फ़ेसलछा हुआ कि बतर खोज़ी अच्छे हो जाये, तो फिर किसी दिन कुश्ती हो ।

HINDI TEXT

प्रसंग ६०

मियाँ शहसवार का दिल दुनिया से तो गिर गया था, मगर जोगिन की उठतों जवानी देख कर धुन समायी कि इसको निकाह में लावें। उधर जोगिन ने ठान ली थी कि उम्र भर शादी न करूँगी। जिसके लिए जोगिन हुई, उसी की मुदब्जत का दम भरूँगी। एक दिन शहसवार ने जो सुना कि सिपह्आरा कोठे पर से कूद पड़ी, तो रिल बेअख्तियार हो गया । चल खड़े हुए कि देखें, माजरा क्या है ! .रास्ते में एक मुंशी से मुलाकात द्दो गयी। दोनों आदमी साथ-साथ बैठे, और साथ ही साथ उतरे । इत्तफ़ाक़ से रेल से उतरते ही मुंशी जी को हेजा हो गया। देखते-देखते चल बसे । शहसवार ने जो देखा कि मुंशी के पास दौलत काफ़ी है, तो फ़ोरन उनके बेटे बन गये और सारा माल असब्ाच ले कर चम्पत हो गये। सात हजार की अशर्फियाँ, दस इज़ार के नोट और कई सौ रुपये हाथ आये। रईस बन बेठे | फोरन जोगिन के पारा छौट गये ।

जोगिन--क्या गये नहीं १

शहसवार -आधी ही राह से लौट आये। मगर हम अमीर हो कर आये हैं।

जोगिन -अमीर केसे ! त्ओलो ! हमको बनाते हो !

शहसवार --क्रमम खदा की, हज़ारों ले कर आया हूँ। आँखे खुल जायँगी ।

दुनिया के भी अजब कारखाने हैं। शहसवार को बाईस इज़ार तो नकद मिल्ले और जब कपड़ों की गठरी खोली, तो एक टोपी निकल आयी, जिसमें द्वीरे और मोती टेंके हुए थे । ज्ञोगिन के आशिक़ों मं एक जौहरी भी था। उसने यह टोपी बीस हज़ार में खेद ली। जब जौहरी चला गया, तो शहसबवार ने जोगिन से कहा -- लो, अब तो अल्लाह मियाँ ने छप्पर फाड़ के दौलत दी। कहो, अब निकाह को ठद्दरती है ! क्यों मुफ़्त में जवानी खोती द्वो !

जोगिन--अब्न रंग लायी गिल्दरी | ओछे के घर तीतर, बाहर रखेँ कि भीतर । रुपये क्या मिल गये, अपने आपको भूल गये ।

दाहसवार सचमुच ओछा था | अब तक तो आप जोगिन की ख़शामद करते थे, दई विये बैठे थे कि कभी न कभी तो दिल पसीजेगा; मगर अब ज़मीन पर पाँव ही नहीं रखते । बात-बात पर तिनकते है। जोगिन तो दुनिया से मुँह भोटे बैठी थी, इनके चोंचले क्यों बर्दाइत करती ! शहसवार से नफरत करने लगी।

एक दिन शहसवार हवा के घोड़े पर सवार डॉग मारने लगे--हस वक़्त हम भी लाख के पेटे में हैं। और लाख रुपये जिसके पास होते हैं, उनको लोग तीन-चार लाख का आदमी आँकते हैं। अब दो घोड़े और छेंगे। मगर हम यह मदह।जनी कारसाना न रखेंगे कि चारज़ामा और ज़ीनपोश | बस, अँगरेजी काठी ओर एक जोड़ी फिटन के लिए | जो देखे, कहे, रईस जाता है। और रईस के क्या दो सींग होते हैं सिर पर १ एक कोठी भी बनवायेंगे । कोई ताल्लुक़ेदार अपना इलाका बेचे, तो खड़े-खड़े खरीद लें ।

जोगिन--अच्छा, खाना तो खा लो ।

शहसवार--आज खाना क्या पका है !

जोगिन--बैसन की रोटी ।

शहसवार--यह तो रईसों का खाना नहीं ।

जोगिन--रईस कौन है?

शहसबार--हम-तुम, दोनों । क्या अब भी रईस द्वोने में शक हे ! हाँ, खूब याद आथा, एक द्वाथी भी खरीदेंगे।

जोगिन--हाँ, बस इसी की कसर थी | दो तीन गधे भी खरीदना ।

शहसवार--गधे तो रईसों के यहाँ नहीं देखे ।

जोगिन--नयी बात सूझी ।

शहसवार- हाँ, खूब सझी |

जोगिन--फिर, यह सब कब खरीदोगे १

दझाहसवार--जत्र चाहें! रुपये का तो सारा खेल है। तीस-चालीस हज़ार रुपये बहुत द्वोते हैं । इन्सान गिने, तो बरसों में गिनती खतम हो ।

जोगिन -- अजी, दो-तीन आदमी तो इतने अर्स में मर जाय, दस-पाँच की आँखें फूट जायें |

उस दिन से शहसवार की दालत द्वी कुछ और हो गयी | कभी रोते, कभी बहको-बहकी बातें करते । आखिर जोगिन ने वहाँ से कहीं भाग जाने का इशदा किया | पड़ोस में एक आदमी रद्दता था, जी मोम फे खिलोने खूब बनाता था। मोम के आदमी ऐसे बनाता कि क्र्यंठ का धोखा होता था | उसे छुला कर जोगिन ने उसके कान में कुछ कहा और कारीगर दस दिन की मुदलत ले कर रखुसत हुआ ।

नौ दिन तक ते। जोगिन ने किसी तरह काटे, दसवें दिन एकॉएक शहसवार ने उसे देखा, तो चुपचाप पड़ी है । बुलाया, जवात्र नदारत | क़रीब जाकर देखा तो पछाड़ खा कर गिर पड़े । छंगे दीवार से सिर टकराने । जी में आया कि जहर खा लें और इसी के साथ चले चलें। कया लुत्फ से दिन कटते थे, अब ये रुपये किस काम -आवेगे । जान जान का रंज नहीं, मगर यह रुपया कदाँ जायगा ! आखिर वसी-यत छिखी कि मेरे बाद मेरी सारी ज़ायदाद सिपहआरा को दी जाय । यह वसीयत लिख कर शदहसवार ने सिर पीटना शुरू किया। खिलोना बनानेवाला कारीगर उसे समझाने छगा--सत्र कोजिए | द्ाय, क्या मिजाज था | यह कद कर वह अपने भाई को बुला छाया । दोनों ने लाश को खूब छपेट कर कंधे पर उठाया। मियाँ शहसवार पीछे-पीछे चले ।

कारीगर--तुम क्यों आते हूं क्रत्रिस्तान बहुत दूर है |

शहसवार---क्त्र तक तो चलने दो ।

कारीगर--क्या ग़ज़ब करते हो | थानेवालों को ग्वत्र हो गयी तो मुफ्त में धरे जाओगे ।

शहसवार--मिट्टी तो दे दूँ ।

कारीगर--बस, अब साथ न आइए |

खोजी की बारात

मीडा के घर जाते हुए खोजी को अपने टट्टू से ही जूझना पड़ा।



०१ गेरुआ जोड़ा, सियाह पगड़ी। खोजी अकड़कर टट्टू पर बैठे। आगे निशान का खच्चर था, चारों ओर मशालें।



०२ दो क़दम आगे, चार पीछे। फिर टट्टू वहीं बैठ गया। लड़के हँसे तो खोजी गरजे, “जल्द कोई तदबीर बताओ!”



०३ साईस ने टट्टू को उठाया। खोजी ने एक पाँव रकाब में रखा ही था कि टट्टू चल पड़ा। खोजी गिरे। पगड़ी, करौली और डिबिया बिखर गईं।



०४ साईस ने कहा कि घोड़े से गिरना शहसवारों का काम है। खोजी बोले, “ख़ैर हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा। मेरा बोझ पड़ता तो उसका काम तमाम था!”

आज़ाद-कथा, पंक्तियाँ १७११८–१७१४१। प्रसंग और संवाद का संक्षिप्त रूपांतर।

HINDI TEXT

प्रसंग ६१

कैटखाने से छूटने के बाद मियाँ आज़ाद को रिसाले में एक ओहटदा मिल गया | मगर अब मुश्किल यह पड़ी कि आज़ाट के पास रुपये न थे। दस हजार रुपये के बग्रेर तैयारी मुश्किल | अजनबी आदमी, पराया शुल्क, इतने रुपये का इंतजाम करना आसान न था। इस फ़िक्र में मियाँ आजाद कई दिन तक ग़ोते खाते रहे ।

आखिर यही सोचा कि यहाँ कोई नौकरी कर लें और रुपये ज्मा हो जाने के बाद

फ़ौज में जायेँ | मन मारे बैठे हुए थे कि मीश आ कर कुर्सी पर बैठ गयी। जिस तपाक के साथ आज़ाद रोज़ पेश आया करते थे, उसका आज पता न यथा [| चकरा कर बोली--उदास बयों हो ! में तो तुम्हें मुबारकबाद देने आयी थी। यह उल्टी बात कैसी !

आज़ाद--कुछ नहीं । उदास तो नहीं हूँ ।

मीडा--ज़रा आईने में सूरत तो देखिए .

आजाइ--हाँ मीडा, शायद कुछ उदास हूँ। मैंने तुमसे अपने दिल की कोई बात कभी नहीं छिपायी | मुझे ओहदा तो मिल गया, मंगर यहाँ टकां पास नहीं । कुछ समझ में नहीं आता क्या करूँ !

मीडा - बस, इसी लिए आप इतने उदास हैं ! यह तो कोई बड़ी बात नहीं | तुम इसकी कोई फ़िक्र न करो |

यह कह कर मीडा चली गयी और थोड़ी देर बाद उसके आदमी ने आ कर एक लिफ़ाफ़ा आजाद के हाथ में रख विया | भज्ञाद ने लिफ़ाफ़ा खोला, तो उछल पड़े | इस्तंब्राल-बंक के नाम वीस हज़ार का चेक था। आज़ाद रुपये पा कर खंश तो हुए, मग़र यह अफ़सोस ज़रूर हुआ कि मीडा ने अपने दिल में न जाने क्या समझा द्वोगा । उसी वक़्त बेंक गये, रुपये लिये और सब सामान टीक करके दूसरे दिन फ़ोज में दाखिल हो गये ।

दोपहर के वक़्त घड़वड़ाहट की आवाज़ आयी। खोजी ने सुना, तो बोले--यह आवाज़ कैसी है मई १ इम समझ गये | भूचाल आने वाला है । इतने में किसी ने कट्दा-- फ़ोज जा रही है । खोजी कोठे पर चढ़ गये। देखा, फ़ौज सामने आ रहो है | यह घड़घड़ाहट तोपखाने की थी। जग देर में आज़ाद पर नज्जर पड़ी । घोड़े की बाग़ उठाये, रान जमाये चले जाते ये । खोजी ने पुकारा--मियाँ आजाद ! भरे मियों, इधर, इधर | वाह, सुनते ही नहीं। फ़ौज़ में क्या हो गये, मिजाज दी नहीं मिलते | हम भी पलटन में रह चुके हैं, रिसाल़दार थे, पर यह न था कि किसी की नात न बुनें ।

सारे शहर में एक मेंठा सा लगा हुआ था, कोठे फटे पड़ते थे । औरतें अपने शौहरों को लड़ाई पर जाते देखती थीं और उन पर फूलों की बौछार करती थीं । माँएँ अपने बेटों के लिए. खदा से दुआ कर रही थीं ।

फ़ोज् तो मैदान को गयी और मि्याँ खोजी मिस मीडा से मिलने चले | मीडा की एक सहेली का नाम

था मिस रोज । मीडा खोजी को देखते ही बोली--लीजिए, मैंने आपकी शादी मिस रोज़ से ठीक कर दी । अब कल बरात ले कर आइए |

खोजी-- खुदा आपको इस नेकी का बदला दे। मैं तो वजीर-जंग को भी नवेद देगा ।

मीडा---अजी, सुलतान को भी बुलाइए ।

खोजी - तो फिर बंदोब़स्त कीजिए। शादी के लिए नाच सबसे ज़्यादा ज़रूरी है | अगर तबले पर थाप न पड़ी, महफ़िल न जमी, तो शादी ही क्या !

मीडा--मगर यहाँ तो आदमी का नाच मना दै। कहीं कोई औरत नाचे, ता गजबत्र ही हो जाय |

स्ोजी--अच्छा, फिर किसी सब्ील से नाच का नाम तो हो जाय ।

मीडा- इसकी तदबीर यों कीजिए कि किसी बंदर नचानेवाले को बुला लीजिए । नर भी कम और लुत्फ़ भी ज़्यादा । तीन बंदरवाले काफ़ी द्वोंगे ।

खसोजी--तीन तो मनहूस हैं | पाँच द्वो जाये, तो अच्छा !

खेर, दूसरे दिन खोजी बरात सजा कर मीडा के मकान की ओर चले | आगे निशान का खचर था, पीछ रीक और बंदर । दस पाँच छड़के मशालें लिये खो जी के चारों तरफ़ चले जाते थे; और स्त्रोजी ट्टु पर सवार, गेरुए रंग की पोशाक पहने सियाह पगड़ी बाँचे, अकड़े बैठे थे | टट्ट इतना मरियल था कि खोजी बार-बार उछ-लते थे, एड़-पर-एड लगाते थे, मगर वह दा क़दम आगे जाता था तो चार क़दम पीछे । एकाएक टट्ट बैठ गया । इस पर लड़कों ने उसे डंडे मारना शुरू किया। स्ोजी बिगड कर बोल--ओ मसखरो, तुम सब हँसते क्या हो ! जल्द कोई तदबीर बताओ, वर्ना मारे करोलियों के बोला दूँगा।

साईस--हुजूर, में इस घोड़े की आदत खूब्र जानता हूँ । यदि बग्गेर चाबुक खाये उठनेवाला नहीं ।

खोजी--तू मसलहत करता है कि किसी तदबीर से टट्टू को मनाता है !

साइंस---आप उतर पड़िए |

खोज) उतर पड़े और साईस ने टट्ट को मार-मार कर उठाया । खोजी फिर सवार होने चकछके | एक पैर रकात्र पर रख कर दूसरा उठाया ही था कि रद्द चलने लगा । खोजी अरा-रा करके धम से जमीन पर आ रहे । पगड़ी यद्द गिरी, क़रौली वह गिरी | डिबिया एक तरफ़, टट्टू एक तरफ़ । साईस ने कद्दा--उठिए, उठिए । घोड़े से गिरना शहसवारों ही का काम है। जिसे घोड़ा नसीच नहीं, वह क्या गिरेगा १

खोजी--खैरियत यह हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा, वर्ना मेरे ब्रोझ से उसका काम ही तमाम हो जाता |

खोजी ने फिर सिर पर पगड़ी रखी, करौली कमर से लगायी और एक लड़के से पूछा--यहाँ आईना तो कहीं नहीं मिलेगा ! फिर से पोशाक सजी है, ज़रा मुँह तो

देख लेते । लड़का-- आईना तो नहीं है, कहिए पानी ले आरऊँ | उसी में मुँह देख लीजिए |

यह कह कर वह एक हौंड़ी में पानी छाया। खोजी पीनक में तो थे दी, दाँडी जो उठायी तो सारा पानी ऊपर आ रहद्दा। ब्रिगड़ कर हॉड़ी पटक दी । फिर आगे बदे । म्रगर दो-चार क़दम चल कर याद आया कि मिस शेज़ का मकान तो माद्दम ही नहीं;

बरात जायगी कहाँ ! बोले-यारो, ग़ज़ब हो गया ! जुदूस रोक छो। कोई मकान जानता है ! साईस--कौन मकान !

स्ोजी-- वही जी जहाँ चलना है । साईस--मुझे क्या मालूम ? जिधर कदह्दिए चलूँ।

खोजी--ठम लोग अजीब घामड़ दो | बरात चली ओर दुलद्विन के घर का पता तक न पूछा ।

साईंस--नाम तो बताइए १ किसी से पूछ लिया जाय ।

सोजी-- अरे भई, मुझे उनका नाम न लेना चाहिए.। अटकल से चलो उसी तरफ़

साईंस--अरे, कुछ नाम तो बताइए !

खोज़ी-- कोहक़ाफ़ की परी कह दो । पूरा नाम हम न छेंगे ।

एक तरफ़ कई आदमी बैठे हुए थे | साईंस ने पूछा--यहाँ कोई परी रहती है !

एक आदमी ने कहा--मुझे और तो नहीं मालूम, मगर शह र-बाहर पूरत्र की तरफ़ जो एक तालाब है, वहाँ पार साल जा एक फ़क़ीर टिके थे, उनके पास एक परी थी |

खोजी-- लो, चल न गया पता ! उसी ताछात्र को तरफ़ चले चलो ।

अब्र सुनिए । उस तालाब पर एक रईस की कोठी थी । उसकी ब्रीवी मर गयी थी । घर में मातम द्वो रदहदा था । दरवाजे पर जो यह शोर-गुल मचा, तो उसने अपने नौकरों से पूछा-- यद्द कैसा गुल है १ बाहर निकल कर खूब पोटो बदमाशों को ! दा-तीन आदमी डंडे ले-ले कर फाटक से निकले ।

खोजी--वाह रें आप के यहाँ का इंतजाम ! कब्र से चरात खड़ी, और दरवाजे पर रोशनी तक नदारद !

एक आदमी--वू कौन है बे १ क्या शत को बंदर नचाने आया हे !

खोजी--जवान संभाल । जा कर अपने मालिक से कहद, बरात आा गयी है |

आदमियों ने बारात को पीटना शुरू किया। खोजी पर एक चपत पड़ी, तो पगड़ी गिर पड़े । दूसरे ने टद्टू पर डंडे जमाये |

खोजी--भई, ऐसी दिल्लगी न करो। कुछ कप्बस्ती तो नहीं आयी तुम सबकी !

बंदर वालों पर जब मार पड़ी, तो वे सब भागे | लड़के भो चिराग फेंक फाँक कर भागे। टट्ट ने भी एक तरफ़ की राह ली । बेचारे खोजी अफ्रेछे पिद-पिटा कर होटल क तरफ़ चले |

HINDI TEXT

प्रसंग ६२

जोगिन शहसवार से जान बचा कर भागी, तो रास्ते में एक वकील साइब मिले। उसे अकेले देखा, तो छेड़ने की सूझी । बोले--हुजूर को आदाब । आप इस अंधेरी रात में अकेले कहाँ जाती हैं ?

जोगिन--ह में न छेडिए ।

वकील-- शाहज़ादी द्वो ! नवात्ज़ादी हो ! आलिर द्वो कौन !

जोगिन--ग़रीबज़ादी हूँ ।

वकील -लेकिन आवारा |

जोगिन-- जैसा आप समझिए ।

वकील- मुझे डर लगता है कि तुम्हें अकेला पा कर कोई दिक्न न करे। मेरा मकान क़रीब है, वहीं चल कर आराम से रहो |

दोगिग--मुझे आपके साथ जाने में कोई उज् नहीं; मगर शर्त यद्दी है कि मेरी इज्जत के ख़िलाफ़ कोई बात न हो ।

वकील--यह आप कया फर्माती हैं ! में शरीफ़ आदमी हूँ ।

वकील«साइब देखने में तो शरीफ़ मादूम होते थे, मगर दिल के बड़े खोटे थे ; जोगिन ने समझा कि इस यक़्त और कहीं जाना तो मुनासित्र नहीं। रात को यहाँ रह जाऊँ, तो क्या इरज ! वकील साहब के घर गयी तो देखा, एक कमरे में टांट पर दरी बिछी है, और एक टूटी मेज़ पर कलम-दावात रखी है। समझ गयी, यद्द कोई ठुटपूँजिए, वकील हैं ।

रात ज़्यादा आ गयी थी। जत्र जोगिन सोयी, तो वकील साइबर ने अपने नौकर सलारतख्श को यों पट्टी पदायी--तुम सुबह इनसे कहना कि वकील साहब बहुत बडे रईस हैं। इनके बाप चकलेदार थे | इनके यहाँ दो बग्धियाँ हैं और आदमियों को तनख्वाह महीने में तीन सौ रुपये देते हैं ।

सलारबख्श--भला वह यह न कहेंगी कि रईस हैं, तो फटेद्दालों क्यों रहते हैं ! एक तो खटिया आपके पास, और उस पर ये बातें कि हम ऐसे और हम वेसे । हाँ, मैं इतना कह दूँगा कि हमारे हुजूर दिल के बड़े वह हैं ।

वकील-- वह के क्या माने !

सलारध्यश--अजी, चालाक हैं ।

वबकील--आज खाना दिल लगा कर पकाना ।

सलारबख्श--तो किसी बावरची को बुल्य लीजिए न | दो रुपये खरचिए, तो अच्छे से अच्छे खाने पकवा हूँ। और, इनके लिए कोई मामा रखिए। बे इसके बात न बनेगी | हाँ, चादे मार डालिए हमें, हम झूठ न

बोलेंगे कभी ।

वकील--देखो, सब फ़िक्र हो जायगी ।

सलारबख्श--फ़िक्र क्या खाक दोगी १ मुक़दमवाले तो आते ही नहीं ।

वकोल--अजी, एक मुक़दमे में उम्र भर की कसर निकल जायगी।

सलारबख्श---तो क्या मिलेगा एक मुकदमे में !

वकील-- अजी, मिलने की न कद्दो | मिलें, तो दो लाख मिल जायैं।

सलारबख्दा--ऐं, इतना झूठ ! मियाँ, मैं नौकरी नहीं करने का । देखिए,, छत न गिर पड़े कहीं | लोग कहते हैं, काल पड़ता है, देजा आता है, मेंह् नहीं बरसता । बरसे क्या खाक, इस झूठ को तो देखिए, कुछ ठिकाना हे, दो छाख एक मुक्रदमे में आप पायेंगे ! कभी बाचा राज ने भी दो लाख की सूरत देखी थी ! हमने तो आपके बाबा को भी जूतियाँ चटकाते ही देखा | वह तो कहिए, फ़क़ीर की दुआ से रोटियाँ चली जाती हैं । यद्दी गनीमत समझो !

वकील---तुम बड़े गुस्ताख हो !

सलारबरूश--मैं तो खरी-खरी कहता हूँ ।

वकील--खेर, कछ एक काम तो करना ! ज़रा दो-एक आदमियों को-लछगा लाना ।

सलारबरूदी --कक्या करना !

वकील---दो आदम्रियों को मृबक्किक बना कर ले आना, जिसमें यह समझें कि इनके पास मुक्रदमे बहुत आते हैं। हम तो रंग जमाते हैं न अपना। यह बात ! समझे !

सलारबर्श--अगर दो-एक को फॉस-फूँस कर लाये भी, तो फ़ायदा क्या १ टका तो बसल न द्वोगा ।

वकील--वह समझंगी तो कि यह बहुत बड़े वकील हैं |

सलारबख्श-- अच्छा, इस वक़्त तो सोइए । सुत्रह् देखी जायगी ।

दोनों आदमी सोये। सबसे पहले जोगिन की आँख खुली। सलारबख्श से बोली--ब्यों जी, इनका नाम क्या हे !

सलारबख्श - इनका नाम है हींगन |

जोगिन--क्या ! हींगन ? तब तो शरीफ़ जरूर होंगे। और इनके बाप का नाम क्या है ! बैंगन !

सलारत्रर्श--ताप का नाम मदारी |

जोगिन---शह, बस, मादूम हो गया । और पेशा क्या हे !

सलारतरख्श--द छाली करते हैं ।

जोगिन--एं, यह दल्लाल हैं !

सलाग्त्रर्श जी, और क्या ! बाप-दादे के वक़्त से दलाली होती ज्ञाती है |

वकील साइबर लेटे-लेटे सुन रहे थे और दिल ही दिल में सलारबख्श को गालियाँ दे रहे ये कि पाजी न जमा-जमाया रंग फीका कर दिया। इतने में बारह की तोप दगी और वकील साहब उठ बैठे ।

बकील--पानी छाओ | आज वह दुसरा लिदमतगार कहाँ दे !

सलारबख्श - हुजूर, चिट्ठी ले गया है ।

पर ।छ--और मामा नहीं आयी, !

सलारत्र्श--रात उसके लड़का हुआ है |

वकील---और कालेखाँ कहो मर गया आज |!

सलारबख्श--लालखों के पास गया है हुजूर !

वकील --और दमार मुहरिर १

सलारबखस्श--5न्हें नवाब साहब ने बुलवा भेजा है |

वकील--सब मुवक्षिछ कहाँ हैं!

सला (बइश -- हुजुर सब वापस चले गये ।

बक्रीड---कुछ परवा नहीं । दमका मुक़दमों की क्या परवा !

सलारबख्श--हुजूर के घर की रियासत क्या कम है !

वकील--(जोगिन से) आज तो आप खूब सायीं ।

जोगन--मारे सर्दी के रात भर कॉपती रही। क़सम ले लो, जो आँख भी झफ्की दो | यह तो बताइए, आपका नाम क्या है !

वर्कीछक--हमारा नाम मौलवी मिर्जा मुहम्मद सादिक़अली बेग, वकोल अदाछत ।

जोगिन --'धर की पुटकी बासी साग |,

वकील--ऐ., और सुनिए ।

जोगिन--5म्द्वारा नाम द्वीगन हे ! और बेंगन के लड़के हो ! दलाली करते ह !

बकाल - द्वींगन किस पाजी का नाम हे !

सलारबरख्श--इनसे किसी ने हींगन कद्द दिया होगा |

वबकील--तरे ठिवा और कोन कहने बेठा होगा !

सलारब्रख्श--तो क्या में ही अकेला आपका नौकर हूँ कुछ ? पंद्रह-त्रीस आदमी हैं। किती ने कह दिया होगा | इसको हम क्या करें ल भला !

वृकील--ऊपर से ओर इंसता दे बेग़रत | (जागिन से) इमसे एक फ़क्कीर ने कहा दे कि तुम जल्द आदशाह दोनेवाले हो।

जोगिन-हाँ, फिर उल्छू तुम्हारे सिर पर बैठा ही चाहता है| दो ही तरह से ग़रीब आदमी बादशाह हो सकता दै--या तो टाँग टूट जाय, या उल्दू सिर पर बैठे । अच्छा, आप की आमदनी क्या द्वोगी !

वकील--यदह न पूछा | कुछ रुपया गाँव से आता है, कुछ वसांक़रा है, कुछ बकालत से पैदा करते हैं |

जोगिन--ओर सवारी क्या है आपके पास !

वकील --आजकल तो बस, एक पालकी है और दो घोड़े ।

जोगिन---बँधते कहाँ हैं 4

सलारबख्श--इधर एक अस्तत्रछ है, और उसके पास ही फ़ीलखाना ।

जोगिन - एं, बया आगउके पास हाथी भी है !

वकील--नहीं जी कहने दो इसे । यह यों ही कहा करता है ।

जोगिन---अच्छा, वकालत में क्या मिलता द्वोगा !

वकील -- अब तो आजकल मुक़रमे ही कम हैं ।

जोगिन--तो भी भन् !

सलारबख्श--इसकी न पृछिए, किसी महीने में दो-चार हाथी आ गये, किसी महीने दस-पाँच ऊँट मिल गये ।

वकील--तू उठ जा यहाँ से | हजार बार कह दिया कि मसखरेपन से हमको नफ़रत है; मगर मानता ही नहीं शैतान ! तुझसे कुछ कहा था हमने !

सलारबख्श--हाँ, हाँ, याद आ गया | लीजिए अभी जाता हूँ ।

वकील साहब सलारबख्श के साथ बरामदे में आये कि कुछ और समझा दें, तो सलारबख्श ने कहा--अभी सक्नों को फॉसे छाता हूँ | आप इतमिनान से बैठे । मगर यह भी बैटी रहें, जिसमें लोग समझें कि वकील की बड़ी आमदनी है। में कद दूँगा कि गाना सनने के लिए नोकर रखा है । सौ रुपये महीना देते हैं।

बकील--सौ नहीं दो सो कहना !

सलारबख्श--बही बात कहिएगा, जो बेतुकी हो। भक्त किसी को भी दुनिया में यक्रीन आवेगा कि यह वकील दो सौ रुपये खर्च कर सकता है !

धकील--क्यों, क्यों ?

सब्दया ग्यख्य--अत्र आप तो हिंदी की चिंदी निकालत हैं| घेले-घले पर तो माप मुकदमे नत है; दो सी को रक्रम भछा आप क्या खर्चे करेंगे १

बकील---अच्छा, बक न बहुत । जा, फांस ला दो-चार को |

सलारबख्श बाहर जा कर दो-चार अड्डोसियों-पड़ासियों को सिखा कर पढ़ा कर मृछो पर ताव देत हुए आया ओर हुक़का भर कर जोगिन के सामने पेश किया !

जागिन--क्या कक्कड़वाले की दूकान से लाये हो! हटा ले जाआ इसे ! तुम्हें मदरिया भी नहीं जुरता !

वकीए--अरे, तू यद्द हुक़का कहाँ से उठा छाया ? वह हुक़का कहाँ है, जो नसौरेद्दीन हैदर के पीने का था १ वह गंगा जमनी गुड़गुड़ी कहाँ है, जो हमारे साले ने भेजी थी |

सल्ा रत्रर्श--त्रह हुजुर के बहनोई ले गये |

वकील--तो आखिर, पेचबान और चोंदी का हुक़का क्यों नहीं निकालते १ यह भदेसल हुक़का उठा लाये वहीँ से ।

सलारबसूदा--खूदाबंद, बह सब तो बंद हैं ।

जोगिन--आख़िर यह सब्च समान बंद कहाँ है ! ज़ी सा तो मकान आपका, मुर्गी के टापे के बरल्वर | बह किन कोठों में बंद है सत्रका सत्र !

इतने में एक मुक़दमेवाला आया | एक हाथ में झाड़, दूसरे में पंजा | आते ही झाद कोने में खड़ी ब,र दी और पंजा टेक कर बैठा ग़या। यकील साहब मिर से पैर तक फुँक गये | पूछा--तुम कौन १ उसने कहा--हम मंगी हैं साइब ! जोगिन मुस-किरायी । वकील ने सलार्श की तरफ़ देखा । सल्ारबररूश सिर खुजलाने छगा।

वकील--क्या चाहता है !

भंगी--हुजूर, मेरी टट्टी का एक बाँस कोई निकाल ले गया | हुजुर को वकौल करने आया हूँ ' गुलामहूँ ख़दावंद ।

वबकील--कोई है, निकाल दो इस पाजी को |

सलारबख्श--खदाबंद, अमीरों का मुक़दमा तो आप छे, और गारीत्रों का कोन ले ! बकील तो दर्जी की सुई है, कभी रेशम में, कभी लटटे में |

4कील--रारीबों का मुक़रमा ग़रीब वकील ले | ह

सलारबख्श - अन्न तो हुजूर, इसकी फ़रियाद सुन ही ले । अच्छा मेहतर, बताओ क्या दोगे १

मेहतर--इमारे पास तो दो मद -साही हैं |

बकील--(झल्ला कर) निकाछो, निकालो इस कम्ब्ख्त को !

वकील साइव्र ने स़स््से में मेहतर की झाड़ उठा रे और उस पर खबर हाथ साफ़ क्रिया । वह झाद-पजा छाड़ कर भागा । ह ;

जोगिन --अच्छा, आप अब अलग ही गहिएगा | जा कर गुम्छठ कीजिए |

वबकील--आज ते बड़ी सर्टी है ।

जोगिन -अल्जह जानता है, गुम्ठ कर, नहीं तो छुएँगे नहीं ।

सब्शख्रख्श -हाँ, सच तो कहती हैं ।

वकील -तू चुय रह |

जोगिन ने सल्गरत्रश को हुक्म रिया कि तुम पानी भरो। सल्यरत्ररश पानी भर लाये | वकीछ साहब ने रा+ रात कपड़े उतारे, डुँगी बॉची आर बठे । जैसे बटन पर पानी पड़ा, आय सुझ मचा कर भागे। सलारबरूश चमडे का डोठ छिये हुए पीछे दौड़ । फिर पानी पड़ा, फिर राये । जोगिन मारे हँसी के ले१-छाट गयी । बारं किसी तरह आपका गुल्ल पूरा हुआ। थर-थर काँप रहे थे। मैंह से बात न निकलती थी | उस पर सडारबरूश ने पंखा झलठता शुरू क्रिया, तब तो और भो झल्ाये और कस कर उसे दो-तीन लाते लगायीं | सलारू भाग खड़े हुए ।

जोगिन--अन्न यह दरी तो उठवाओ ।

वकील -क्यों, दरी ने क्या क़मर किया १

सलारबर्श --हु तूर, भंगी तो इसी पर बैग था ।

वकील--भरे, व् फिर बोछा ! क्मम खड़ा की, मारते-मारते उबेड़ कर रल दूँगा।

जोगिन -सलारश्ख्या, यह चाँदनी उठा ले जाओ ।

टरी उठी, तो कछई खुछ गयी । नीचे एक फट़ा-प्राना टेट पड़ा था, बचा आदम के बकत का | वकील कट गये | जोगित ने कहा--ले, अब इस पर कोई फ़श ब्रिछवाओ |

वकील-- वह बड़ी दरी लाओ, जो छकड़े पर छद कर आयी थी |

सलारबख्श--बद्द ! उसको तो एक लोंडा चुरा ले गया ।

जोगिन-- खुदा की पनाह, छकड़े पर लद् कर तो मुई दरी आयी, और ज़रा सा लोंडा चुरा ले गया !

वकील---अच्छा, वह न सदह्दी, जाओ, और जो कुछ मिले उठा छाओ।

यह कह कर वकील सादइबत्र तो बरामदे में चले गये और सलारघरूश जा कर अपना कम्बल और एक दस्तःग्ख्वान उठा छाबा। वकील कमरे में आये, तो देखा कि दस्तरख्वान बिछा हुआ है और जोगिन खिलखिला कर हँस रही है। सलारबख्श एक कोठरी में छिप रहा था। वकील ने झल्ला कर डंडा निकाछा ओर कोठरी में घुस कर उसे दो-तीन डंडे छगाये। फिर डाँट कर कदह्दा--आखिर जो तू मेरा नमक खाता है, तो मेरा रंग क्यों फीका करता है ! मैं एक कहूँ तो दो कद्दा कर | खैर-ख्वाही के माने यह हैं। सिखल। दिया, सम झा दिया; मगर तू हिंदी की चिंदी निकालता है।

सलारबख्श---अच्छा, हुजूर जैसा कहते हैं, वही करूँगा। और भी जो कुछ सम-झाना हो, समझा दीजिए । फिर मैं नहीं जानता ।

ब्रमील -- अच्छा, दम जाते हैं, तू आ कर कद़ना कि कसर माफ़ कीजिए। और रोना खूब ।

वकील साहब यद्द हिदायत करके चड गये और जोगिन से त्रार्ते करने लगे | इतने में सलारचख्श रोता हुआ आया । जोगन घक से रह गयी । सल्ारू थोही देर तक खूब रोये, फिर वशीड के क़रमों पर गिर कर कद्दा--हुजूर, मेरा कसर माफ़ करें |

बकील--अबे, तो कोई इस तरह रोता है !

जोगिन--मैं तो समझी कि आपके अजीजों मं से कोई चल बसा |

इतने में वकील साइब के नाम एक खत आया। जोगिन ने पूछा--किसका ख़त है !

वकील--साहइब के पास से आया है |

जोगिन--कन साहब १ कोई अंगरेज हैं !

वकील-हाँ, जिले के हाक्रिम हैं। हमसे याराना है ।

सल'रबरख्श--आपसे न | और उनसे भी तो यारप्ना है, डिन्ोंने जुर्माना ठोंक दिया था !

वकील--सादब्र ने हमें बुलाया है ।

जोगिन--तो शायद आज तुम्हारी दात्त वहीं है ! तभी आज खाना-वाना नहीं पक रहा है | दोपददर होने को आयो, और अभी तक चूह्दा नहीं जला |

वकील-- अरे सलारू, खाना क्यों नहीं पकाता १

सलारबखूश-बाज़ार बंद है ।

जोंगिन--आग लगे तेरे मसखरेपन को ! यहाँ आँते वूं-काँ कर रही हैं, और तुझे दिल्लगी सझती है !

वकील ने बाहर जा कर सलारू से कद्दा--बनिये से आटा क्यों नहीं लाता सलारबख्श--हुजूर, कोई दे भी | कोई दस बरस से तो द्ि साब नहीं हुआ | बाज़ार में निकलता हूँ, तो चारों तरफ़ से तकाजे हं।ने लगते हैं ।

वकील--अबे, इस वक़्त तो किसी बढाने से माँग छा। आखिर कभी-न-कभी मुकदमे आवेंगे ही | हमेशा यों ही सन्नाटा थोड़े द्वी रदेगा !

खेर, सलारबख्श ने खाना पकाया, और कोई चार बजे आठ मोटी-मोटी रोटियाँ; एक प्याली में माष की दाल और दूसरी में आध पाव गोश्त रख कर लाया !

वकौल---अबे, आज पुलाव नहीं पका !१

सलारबख्श--हुजूर, तिली खा गयी ।

वकोल--और गोश्त भी एक ही तरह का पकाया !

सलारबख्श--हुजूर मैं पानी भरने चला गया, तो कुत्ता चख गया ।

जोगिन--यहाँ की बिछी और कुत्ते बड़े लागू हैं !

सल्वरभर७४- -कुछ न पूछिए ।

इतने में किसी ने दरवाजे पर हाथ मारा |

सलारबख्स --कोन साहब हैं ?

वकील--देखो, मामू साहब न हों । कह देना, घर में नहीं हैं।

सलारबखूश--हुज्र, वह है मम्मन तेली ।

वकील--ऋद्ट दो, हम तेल-बेल न लेंगे । रात को हमारे यहाँ मोमब्नत्तियाँ जलती हैं, और खाने में तेल आता नहीं ! फिर तेली का यहाँ क्या काम !

सल्ग रत्रर्श--मुक़दमा लाया है हुजूर !

तेली मैले-कुचेले कपड़े पहने द्वाथ में कुप्पी लिये आ कर बैठ गया |

वकील - क्या माँगता है !

तेली--एक आदमी ने हम पर नालिश कर दी है हुजुर | अत्र आप ही बचावें तो बच सकता हूँ ।

वकील-मेहनताना क्या दोगे १

सलारबख्श---हाय, हाय, पहले इसकी फ़रियाद तो सुनो कि वह कद्दता क्या है ! बस, मुर्दा दोजस्त्न में जाय चाहे बिहिश्त में, आपको अपने इलवे-माँडे से काम ! बताओ भई, क्या दोगे !

तेली--एक पली तेल ।

वकील--निकाल दो इसे, निकाल दो !

तेली--अच्छा साइब, तीन पली ले लो ।

सलारबख्श--भच्छा, आधी कुप्पी तेल दे दो। बस, इतना कहना मानों '

वकील--हैं-हैं, क्यों शरह तिगाड़ते हो ! तुम जाओ जी |!

सलारबस्य--पहले देखिए तो ! राज़ी भी द्वोता है !

तेल्ले आधी कुप्पी देल देने पर राजी न हुआ और चला गया ! थोड़ी देर के बाद सलारबख्श ने दबी जबान कहा--हुजूर शाम को क्या पकेगा ! वृकील---अबे, शाम तो हो गयी । अब क्या पकेगा ! सलारबख्श--ख़दावंद, इस तरह तो मैं टें हो जाऊँगा। आप न खाये, हमारे वास्ते तो बतला दीजिए । वकील---अपने वास्ते छिछड़े ले आ जा कर। सलार्रख्श--(आहिस्ता से) वे भी बचने जो पावें आपसे । जोगिन को हँसी आ गयी । वकील ने कहा--मेरी बात पर हँसती होगी! में ऐसी ही कहता हूँ । इस पर जोगिन को और भी ईंसी आयी । वकील--अछ्ाह री शोखी-- खूब रू जितने हैं दिल लेती है सबकी शोखी; है मगर आपकी शोखी तो राज़ब की शोखी ! रात को जोगिन ने अपने पात्ष से पैसे दे कर बाज़ार से खाना मैंगवाया, और खा कर सोयी | घुत्रह को वकील साहब की नींद खुली, तो देखा, जोगिन का कहीं पता नहीं | पर भर में छान मारा । हाथ-पाँव फूल गये | बोले--सछारू ग़ज़त्र हो गया ! हमारी क्रिस्मत फूट गयी । सलासबखरूश---फूट गयी ख़दावंद, आपकी .क्रिक्मत फूट गयी । बकील--फिर अब ! सलारबर्द--क्या अज करूँ हुजुर ! वकील--धर भर में तो देख चुके न तुम ! सलाखरझुश--हाँ और तो सब देख चुका, अब एक परनाला बाक़ी है, वहाँ आप झाँक ले |

HINDI TEXT

प्रसंग ६३

जमाना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गाँव में पड़ी थीं, आज सुरेया बेगम बनी हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बेठी हुई है । यह सब्र रुपये का खेल है |

सुरैया बेगम--क्यों महरी, रोशनी कादे की है ! न लंप, न झाड़, न कैंवल और सारा खेमा जगमगा रहा है ।

महरी--हुज़्र, अक़्ल काम नहीं करती, जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिये ओर दुनिया भर जग़मगाने लगी ।

सुरैयाबेगम--दारोरी कहाँ हैं ! किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है !

महरी--हुजूर, वह तो चले गये ।

सुरैया बेगणम--क्या वाजा है, वाह-वाह !

मदहर।--हुजूर, गोरे बचा रहे हैं |

सुस््या बेगम--जरा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ-चढ़ कर हैं | घोड़े क्या, देव हैं । कितना चोड़ा माथा है और जरा सी थुँधनी ! कितनी थोड़ी सी जमीन में चककर देते हैं ! वाह, अक़ल दंग है !

महरी--वेगमसाहब, कमाल है ।

मुरेया बेंगम--इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं ।

मदरी--सच है हुजुर, यह सब जादू के खेल हैं ।

मुरया बेगम--मंगर जादूगर भी पक्के हैं।

महरी -ऐसे जादूगरों से खूदा समझे ।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आयी थी, चिद कर बोली --ऐ. वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें ! आफिर उनका कयूर क्या है; यही न कि नमाशा दिखाते हैं !

मदहरी--यह तमाशेवाले तुम्दारे कोन हैं !

औरत--तुम्हारे कोई होंगे |

महरी-फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं ?

ओऔरत--बहन, किसी को पीठ-पीछे बुग न बदह्दना चाहिए .

महरी--ऐ, तो तुम बीच में बोलनेवाली कौन हो !

औरत--तुम सब तो जैसे लड़ने आयी हो । बात की, आर मैंह नोच लिया ।

सुरैया बेगम के साथ मद्दरी के सिवा और भी कई लौंडियाँ थी, उनमें एक का नाम अन्बासी था। वह निदहायत इसीना और बला की शोस्त्र थी। उन सबों ने कि कर इस औरत को बनाना शरू किया---

पहरी--गाँव की माद्म होती हैं !

अन्बासी--गैंवारिन तो हूँ ही, यद्द भी कहीं छिपा रद्दता है !

सुरैया बेगम--अच्छा, अब बस, अपनी ज़बान बंद करो | इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की ज़बान तक न दिली । और इम आपस में कटी मरती हैं ।

इतने में सामने एक जीबरा.लाया गया । सुरैया बेगम ने कद्वा--य्रद कौन जान-वर है ! किसी मुल्क का गधा तो नहीं है ! चूँ तक नहीं करता। कान दबा दोड़ा जाता है।

अब्बास--हुजुर, त्रिछकुल बस में कर लिया ।

महरी--हन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी, ज़त इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे ।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतत्र दिखाये कि चारों तरफ़ तालियाँ पड़ने लगीं । सुरैया बेगम ने मी खुष तालियाँ बजायी । जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग भंठे थ। बेगम साहब को तालियाँ बजाते सुना तो एक रैंगीले

शेख जा बोले--.._ कोई माश्ूक़ है इस परदए जंगारी में ।

मिरजा साहबर--रंगों में शोख्ली कूट-कूट कर भरी है ।

पंडित जी--शोक़ीन मा दम द्वाती हैं।

शेख जी--वलाइ, अत्र तमाशा देखने को जी नहीं चाहता ।

मिरज्ा साइब--एक सरत नजर आयी ।

पंडित जी--ठुम बड़े खुशनसीच दो ।

ये लाग तो यों चहक रहे ये । २;र२ सरकस मं एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बंद थे | शेरों के आते ही चारों तरफ़ सन्नाया छा गया । अन्बासी मोली--देखिए हुजुर, वह शेर जो बीचवाले कठघरों में बंद है, वही सबसे बड़ा हे ।

महरी--और गस्सेवर मी सबसे ज़्यादा । मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जायेगा।

सुरेया बेगम--कहदीं कठघरा तोड कर निकल भाग तो सबको खा जायें ।

महरी--नहीं हुजूर, सघे हुए हैं | देखिए, वह आदमी एक शेर का कान पकड़ कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है | देखिए-देखिए इजूर, उस आदमी ने एक शेर को लिया दिया और किस तरह पाँव से उसे रींद रहा है |

अब्बासी--रेर क्या है, बिलकुल ब्िछो है | देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती दी रही हे । कभी शेर आदमो को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है ।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रद्दा | इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज बिछायी गयी आर उस

पर बड़े-बड़े भोइत के टुकड़े रख गये। एक आदमी ने सींख &। एक टुकड़े में छद दिया और गोइत को कठघरे में डाछा। गोइत का पहुँचना था कि शेर उसके ऊपर ऐसा लपका जैसे किसी जिंदा जानवर पर शिकार करने के लिए. लपकता है। गोइत को मैंह में दबा कर बार-बार डकारता था और जमीन पर पटक देता था | जब डकारता, मकान गूँन जाता और सुननेवालों के रोंगटे खड़े ह। जाते | बेगम ने घत्ररा कर कद्ा--माद्म होता है, शेर कटठघरे से निकल भागा हे । कहाँ हैं दारोग़ा जी, ज़रा उनको बुलाना तो |

बेगम साहब तो यहाँ मारे डर के चीख रही थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकील साहब और मियाँ सलारबख्श में तकरार हो रही थी---

वकील---रुक क्यों गया बे ! बाहर क्यों नहीं चलता !

सलारबख्श---तो आप ही आगे बढ़ जाइए न !

वकील---तो अकेले हम कैसे जा सकते हैं !

सलारबख्श--यह वयों! क्या भेड़िया खा जायगा १ या पीठ परु छाद कर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले पतले मी तो आप नहीं हैं। बैठिए तो काँख दे ।

वकील--करौर नौकर के जाना हमारी श्ज्ञान के खिल्ज़फ़ है |

रुलछारभ०श +तो आपका नौकर कौन है ? इम तो इस वक़्त मालिक मात्म होते हैं !

बकील--अच्छा, बाहर निकल कर इसका जवाब दूँगा; देख तो सह्दी !

सलारबख्श--अजी, जाओ भी; जब यहाँ ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओंगे १ अब चुपके ही रहिए | नाहक़ भिन-नाहक़ को बात बढ़ेगी !

वकील---बस, हम इन्हीं बातों से तो खश होते हैं/।

सलारबख्श--ख़दा सलामत रखे हुल्ग को। आपकी बदीलत हम भी दो गाल हँस-बोल लेते हैं ।

वकील--यार, किसी तरह इस सुरैया बेगम का पता तो लगाओ कि यह कोन ३ | शिब्बोजान तो चकमा देकर चली गयीं; शायद यही निक्राह पर गज़ी हो जायें !

सलारबख्श--जरूर | और खूबसूरत भी आप ऐसे दी हैं ।

सुरेया बेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दल में हँसती जाती थी | इतने में एक खुत्रसरत जवान नज़र पड़ा । हाँय-पॉव साँचे के ढले हुए, म्से भीगती हुई, मियाँ आज़ाद से सरत बिलकुल मिलती थी। सुरैया बेगम की आँखों में ओंस् भर आये । अब्बासी से कहा--जरी, दारोगा साइब को बुलाओ | अब्बासी ने बाहर आ कर देखा तो दारोशा साइंब हुक्का पी रदे हैं। कद्दा--चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ ।

दारोगा - अच्छा-अच्छा । चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है ! ज़रा हुक्का तो पी लेने दो ।

अन्बासी--अच्छा, न चलिए, फिर हमको उलाइना न दीजिएगा | दम जताये जाते हैं ।

दारोग़ा--(हुकका पटक कर) चलो साहब, चछो । अच्छी नौकरी है, दिन-रात गुलामी करो तब भी चेन नहीं। यह महीना खत्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोग़ा साहब जब सुरेया बेगम के पास पहुँचे तो उन्होंने आहिस्ता से कह्दा--वह जो कुर्सी पर एक जवाब काले कपड़े पहन कर बैठा हुआ है, उसका नाम जा कर दर्याफ़्त करो | मगर आदमियत से पूछना ।

दारोग़ा--या ख़दा, हुजूर बडी कड़ी नौकरी बोलों। गुलाम को ये सब्र बातें याद क्योंकर रहेंगी। जैसा हुक्म हो ।

अब्बासी--ऐ,, तो बातें कौन ऐसी ल्म्बी-चौड़ी हैं जो याद न रहेंगी !

दारोग़ा--अरे भाई, हममें-तठुममें फ़क् भी तो है ! तुम अभी सत्रह-अठारह वष की हो और यहाँ बिलकुल सफ़ेद हो गये हैं | खेर, हुज्र, जाता हूँ।

दारोगा साहब ने जवान के पास जा कर पूछा तो मादूम हुआ कि उनका नाम मियाँ आजाद है। बेगम साहर ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खशी के आँखों में आँवू भर आये । दारोगा को हुक्म दिया, जा कर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप जानते हैं ! आज नमक का हक़ अदा करो। किसी तरकीत से इनको मकान तक लाओ |

दारोग़ा साइबर समझ गये कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया | अन्न खुदा ही खेर करे | अगर अलारक्खी का ज़िक्र छेड़ा और ये बिगड़ गये तो बड़ी किरकिरी होगी । और अगर,न जाऊँ तो यह निकाल बाहर करेंगी। चले, पर हर क़दम पर सोचते जाते थे कि नं जाने क्या आफ़त आये । जा कर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले--एक .अर्ज है हुजुर, मगर शत यह है कि आप खफ़ा न हों। सवाल के जवाब में तिफ हाँ? या नहीं? कद्द दें |

जवान- बहुत खूब ! 'हॉ? कहूँगा या नहीं? |

दारोगा--दहुजूर का गुल्मम हैं ।

जवान--अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना दो कहिए | मैं बुरा ने मारनूँगा ।

दारोग़ा--एक बेगम साहब पूछती हैं कि हुजुर अलारक्खी के नाम से वाक़िफ़ हैं !

जवान--बस, इतनी है" वात |! अलारक्खी को में खूब जानता हूँ | मगर यह किसने पूछा है !

दारोग़ा--ऋल सह की आप जहाँ कहें, वहाँ आ जाऊँ। सब बातें तय हो जायेंगी |

जवान--हज़स्त, कल तक की खबर न लाजिए, बरना आज रात को मुझे नींद न आयेगी ।

दारोग़ा ने जा कर बेगम साहब से कहां--हुजूर वह तो इसी वक़्त आने के, कहते हैं। क्या कह दूँ ! बेगम बोलीं--कह दो, ज़रूर साथ चलें ।

उसी जगह एक नवाब अपने शरुसाहबों के साथ बैठे तमाशा देख रहे थे नवात्र ने फ़रमाया--क्यों मियाँ नत्यू , यह क्या बात निकाली है कि जिस जानवर को देखो, बस में आ गया । अक़्ल काम नहीं करती ।

नत्यू--ख़दावंद, बस बात सारी यह है कि ये लोग अक़ल के पुतले हैं | दुनिया के परदे पर कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसका इल्म इनके यहाँ न हो। चिड़िया का इल्म इनके यहाँ, हल चलाने का इल्म इनके यहाँ,

गाने-बजाने का इल्म इनके यहाँ। कल जो बारहदरी की तरफ़ से हो कर गुजरा तो देखा, बहुत से आदमी जमा हैं । इतने में अँगरेजी बाजा बजने लगा तो हुजूर, जो गोरे बाजा बजाते थे, उनके सामने ए5: एक किताब खुली हुई थी | मगर बस, धोंतू , धोंतू , | इसके सिवा कोई बोल ही सुनने में नहीं आया !

मिरज़ा - हुजू: क सवाल का जवाब तो दो ! हुज्र पूछत ६ +% जानवरों क.' बस में क्योंकर लाये |

नत्थू -- कहा न कि इनके यहाँ हर बात का इल्म है । इत्म के ज़ोर से देखा ईं'गा कि कोन जानवर किस पर आशिक़ है । बस, वही चीज़ मुहैया कर ली |

नवाब--तसली नहीं हुई | कोई खास वजह ज़रूर दे ।

नत्यू- हुजुर , हिंदोस्तान का नट भी वह काम करता है जा किसी ओर से न हो सके | बोस गाड़ दिया, ऊपर चंद्र गया और अँगूठे के जार से खड़ा है| गया ।

मिरजा-हुजूर गुलाम ने पता लगा लिया। जो कभी झुठ निकले तो नाक कटवा डा | बस, हम समझ गये | हुजूर आज तक कोई बड़ से बड़ा पहलवान भी शेर से नहीं लड़ सका | मगर इस जवान की हिम्मत को देखिए कि अकेला तीन-तीन शेरों से लड़ता रहा। यह आदमी का काम नहीं है, और अगर है तो कोई भादमी कर दिखाये | हुजूर के सिर की कम, यह नादू का खेल है | वल्लाह, जो इसमें फ़रक् ही। तो नाक कटवा डादें ।

नवाब--सुभान-अल।ह, बस यही बात है ।

बत्यू--हाँ, यह माना । यहाँ पर हम भी क्रायड हो गये । इंसाफ़ शर्ते है।

भवाब--और नहीं तो क्या, ज्ञण सा आउमी और आधे दजन शेरों से कुश्ती लड़े | ऐसा हो सकता है भला | शेर छाम्र फ्रमजार हा जाय, फिर शेष है । ये सब जादू के जोर से शेर, रीछु और सब जान+५ दिखा देत हैं। असल भ देर वर कुट भी नहीं हैं। सत्र जा; ही जादू है । ।

नत्यू-हुजूर इर तरह से स्पया स्तांचत हैं। हुजर के सिर को कसम ! हिंद! स्तानी इससे अच्छ शेर छत कर इखा ८। बया यहाँ जादूगरी है ७ नहीं ? मर कदर तो कोई करता ही नहीं; ६०५ डइश गौर करते तो मादम हो जाता $ £* लड़ते तो थे, मगर पुतलियां नही फिरता थीं। बस, यहाँ म.दूस दो गया कि ३ का खेल है ।

जबरखाँ--बल्आा ह, में भी यही कहनेव छा था । मरियाँ नत्थू मेरे मुँह से बात छोर

छे गये ।

नत्थू--भछा शेरों को देख कर किसी को डर लगता था १ ईमान से कहिएगा।

जुबरखाँ-- मगर जनब्न जादू का खेल है तो शेर से लड़ने में कमाल ही क्या हे !

नवाब--और सुनिए, इनके नज़दीक कुछ कमाल ही नहीं ! आप तो बैसे शेर बना दीजिए | क्या विल्गीबाजी है ! कहने लगे, इसमें कमाल ही क्या है ।

मिरजा--हुजूर यह ऐसे ही बेपर की उड़ाया करते हैं।

नत्यू-जादू के शेरों से न छड़े तो क्या सचमुच के शेरों से लड़े ? वाह री आपकी अक़्ल !

नवाब--कहिए तो उससे, जो समझदार द्ो। बेसमझ से कहना फ़जूल हैं ।

नत्थू--हुजुर, कमाल यह है कि हजारों आदमी यहाँ बैठे हैं, मगर एक की समझ

में न आया कि क्या बात है ।

नवाब--समझे तो हमीं समझे !

मिरजा--हुज़र की क्या बात है । वल्लाह, स्वृत्र समझे !

इतने मं एक खिलाड़ी ने एक रीक को अपने ऊपर छादा और दूसरे की पीठ पर एक पाँव से सवार हो कर उसे दोड़ाने लगा । लोग दंग हो गये । सुरैया बेगम ने उस आदमी को पचास रुपये इनाम दिये ।

वकील साहब ने यह कैफ़ियत देखी तो सुरैया बेगम का पता लगाने के लिए बेक़-रार हो गये | सलारबख्श से कहा-- सैया सलारू; इस बेगम का पता ल्गाओं | कोई बड़ी अमीर-कबचीर माद्म द्वोती-है ।

सलारबख्श--ह में तो यह अफ़सोस है कि तुम भालू क्यों न हुए । बस, तुम इसी लायक़ द्वो कि रस्सों से जकड़ कर दौड़ाये ।

वकील--अच्छा बचा, क्या घर न चलोगे !

सलारब्रस्श--चलेंगे क्यों नद्दी, क्या ठुम्दारा कुछ डर पड़ा है !

वकील--मालिक से ऐसी बातें कर्ता है?! मगर यार, सुरैया बेगम का पता लगाओ ।

मियाँ आजाद नवाब और वकील दोनों की बातें सुन-सुन कर दिल ही दिल में हँस रहे थे | इतने में नवाब साहब ने आज़ाद से पूछा-- क्यों जनाब, यद्द सब नजर-बंदी है या कुछ और १

आजाद- हज़रत, यह सब्र तिलूस्मात का खेल है। अक़्ल काम नहीं करती |

नवाब--सुना है, पाँच कोस के उधर का आदमी अगर आये तो डस पर जादू का खाक असर न हो |

आजाद-- मगर इनका जादू बड़ा कड़ा जादू हे। दस मंजिल का आदमी भी आये तो चकमा खा जाये |

नवाब- आपके नजदीक वह कौन अँगरेज बैठा था १

आज्ाद- जनाब, अँगरेज और हिंदोस्तानी कहीं नहीं हैं। सब्र जादू का खेल है।

नवाब-- इनसे जादू सीखना चाहिए |

आजाद--जरूर सीखिए | दृज्जार काम छोड़ कर ।

जब तमाशा खत्म हो गया तो सुरैया बेगम ने आजाद को बहुत तलाश कराया, मगर कहीं उनका पता न चला | वह पहले ही एक अगरेज के साथ चल दिये थे । बेगम ने दारोग़ा जी को खब डाँटा और कहा--अगर तुम उन्हें न छाओगे तो तुम्हारी खाल खिंचवा कर उसमें भुस भरूँगी !

HINDI TEXT

प्रसंग ६४

छुरैया बेगम मियाँ आजाद की जुदाई में बहुत देर तक रोया कीं, कभा रेशा पर झल्लायी, कभी अन्बासी पर त्रिगड़ीं, फिर सोचतीं कि अल्ारक्खी के नाम से नाए$, धुल्वाया, बड़ी भूल हो गयी; कभी खयाल करतीं की वादे के सच्चे हैं, कठ शाम को जरूर आयेंगे, हजार काम छोड़ के आयेंगे । रात भींग गयी शी, महरियों सो रही थीं, महलदार ऊँघता था, शहर-भर में सन्नाटा था; मगर सुरैया बेगम की नींद मियो आज़ाद ने हराम कर दी थी-- भरे आते हें,आँसू आँख में ऐ यार क्या बाइस, निकलते हैं सदफ़ से गौहरे शहवार क्या बाइस ! सारी रात परेशानी में गुजरी, ट्रिल बेक़रार था, किसी पहद चैन नहीं भाता था, सोचती कि अगर मियाँ आज्ञाढ्ष वादे पर न आये तो कहाँ ढूंढूँगी, बूढ़े दारोगा पर दिल ह्वी दिल में झलाती थीं कि पता तक नहीं पूछा । मगर आज़ाद तो पक्का वादा कर गये थे, छोट कर ज़रूर मिलेंगे, फिर ऐशे बेदर्द कैसे हो गये कि हमारा नाम भी सुना और परवा न की । यद्द सोचते-सोचते उन्होंने यह ग़ज़ल गानी शुरू की-- नरिल को चेन मर कर भी हवाएयार में आये; तड़प कर ख्द से फिर कूचए दिलदार में आये। अजब राहत मिली, कुछ दोन-दुनिया की नहीं परवा; जुने के साथा में पहुँच बडी सरकार में आये। एवज्र जब एक दिल के छाख दिल हों मेरे पहल में; तडपन का मज़ा तब फ़रक़न दिलदार में आये। नहीं परवा, हमारा सिर जो कट जाये तो कट जाये, थक बाजू न कातिल का न बल तबवार में आये। दमे-आखिर वह पोछ अश्क 'सफ़रर: अपने दामन से: इलाहो रहम इतना तो मिज्ञाजे यार में आये। छुरैया बेगम को सारी रात जागत गुज़री । सबेरे दारोगा ने आ कर सलाम किया बेगम--आज का इक्रार है न ! ह दारोगा- हाँ हुजुर, ख़दा मुशे सुस्रू करे | अछारवर्खा का नाम सुन कर तो ब बेलद हो गये। क्या अज कहूँ हुजू: ! हु बेगम--अमी जाइए और चारों तगफ़ तलाश कीजिए | दारोगा - हुजूर, ज़रा सबेरा तो हो ले, दा-चार आउमियों से मिदें , पृद्दँवूछूँ , तत्र तो मतलब,निकले | यों उटक्क्रलेस क्रिल मुददस्ले में जाऊँ और किससे पूछे! अब्यासी-5हुज्र, मुझे हुक्म हो तो में मी तलाश करूँ। मगर भारी सा जोड़ा श्गी।

बेगम--जोड़ा ! अछाह जानता है, सिर से पाँव तक जेवर से छदी होगी।

बी अन्बासी बन-ठन कर चलीं और उधर दारोगा जी पियाने पर लद्र कर रवाना हुए । अब्बासी तो ख़श-ख़श जाती थी और यहद्द मुँह बनाये सोच रददे थे कि जाऊँ तो कहाँ जाऊँ ! अन्बासी लरदंगा फड़काती हुई चली जाती थी कि राद्द में एक नवाब साहब की एक महरी मिली | दोनों में घुछ-घुल कर बाते होने लगीं !

अब्बासी--कटद्दो बहन, खश तो हो !

बननू--हाँ बदन, अल्लाह का फ़जल है। कहाँ चलीं !

अन्बासी---कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती फिरती हूँ ।

बन्नू-- कौन हैं, में भी सुन ।

अब्बासी--यह तो नहीं जानती, पर नाम है व्ियाँ आज़ाद | खासे घबरू जवान हैं ।

बननू -अरे, उन्हें मैं खुच्न जानती हूँ । इसी शहर के रहनेवाले हैं | मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं । कहीं रीशी तो नहीं हो ! है तो जवान ऐसा ही ।

अब्बासमी--ऐ., इटो मी १ यह दिल्लगी हमें नहीं माती ।

बनन्नू--लो, यह मकान आ गया । बस, इसी में रहते हैं | जोड़ न जाता, अल्लाह मियाँ से नाता ।

बन्नू तो अपनी राह गयी, अब्बासी एक गली मे हो कर एक बुढ़िया के मकान पर पहुँची । बुढ़िया ने पूछा--अब किस सरकार में हो जी !

अब्धासी--सुरैया बेगम के यहाँ ।

बुढिया--और उनके मियों का क्या नाम हे !

अब्जासी--जो तजवीज करो ।

बुटिया--तो क्वोंरी हैं या बेशा ! कोई जान-पहचान मुलाक़ाती है या कोई नहीं है !

अब्बासो--एक बूढ़ी सी औरत कभी-कभी आया करती हैं। और तो हमने

किसी को आते-जाते नहीं देखा ।

बुदिया--कोई देवज़ाद भी आता-जाता है !

अब्बासी--क्या मज़ाल | चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती १ इतने रिनों से सिफ़ कल तमाशा देखने गयी थीं ।

बुद्िवा--ऐ लो, और सुना ! तमाशा देखने जाती है ओर किर कद्ठता हो कि ऐसी-वेसी नहीं हू ! अच्छा, हम टोह लगा लेंगी ।

भ्रासी--उन्होंने तो क्रम खायी है कि शादी ड्डी न. करूँगी, और अगर करूँगी

भी तो एक खबसूरत जवान के साथ जो आपक पड़ोसी है । मियाँ आजाद नाम है |

बुढिया--अरे, यह कितनी बड़ी बात है ! गो मैं वहाँ बुत कमर लातायातो | पर वह मुझे खूब जानते हैं। पिलकुल घर का सा वास्ता है। तुम बडी, में: ४ « || हूँ |

वह कह कर बुढ़िया ने एक औरत को बुला कर कहा--छोटे मिरजा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए |

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जा कर मिरजा आज़ाद को बुढ़िया का पैग़ाम सुनाया--हुजूर/ वह ख़बर सुनाऊँ कि आप भी फड़क जायें। मगर इनाम देने का वादा कीजिए |

आज़ाद--आज्ाद नहीं, अगर माछामाल न कर दें ।

मुभारक--उछल पड़िएगा।

आज़ाद--क्या कोई रक्रम मिलनेवाली है !

भुभारक--अजी, वह रकम मिले कि नवाब हो जाओ | एक बेगम साहलबा ने पैग़ाम भेजा है | बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए |

आज़ाद--उनको यहीं न बुला लाओ |

मुबारक--मैं बैठी हूँ, आप बुलवा लीजिए |

थोड़ी देर में बुढ़िया एक डोली पर सवार आ पहुँची और बोली--क्या इरादे हैं ? कब चलिएगा !

आज़ाद-- पहले कुछ बातें तो बताओ । हसीन है न !

बुढ़िया--अजी, हुस्न तो वह है कि चाँद भी मात हो जाय, और दौलत का तो कोई ठिकाना नहीं; तो कब चलने का इरादा है !

आज़ाद--पहले खूब पक्का-पोदा कर लो, तो मुझे ले चलो | ऐसा नद्दोकि वहाँ चल कर झपना पड़े ।

HINDI TEXT

प्रसंग ६५

हमारे मियाँ आजाद और इस मिरज़ा आजाद में नाम के सिवा और कोई बात नहीं मिलती थी। वह जितने ही रिलेर, ईमानदार, सच्चे आदमी थे; उतने हो यहद्द फ़रेब्री, जालिये और बदनियत थे। बहुत मालदार तो थे नहीं; मगर सवा सौ रुपये वसीक़े के मिलते थे। अकेला दम, न कोई अजीज, न रिश्तेदार; पल्ले सिरे के बदमाश, चोरों के पीर, उठाईगीरों के लुँगोटिये यार, डाकुओं के दोध्त, गिरहकटों के साथी । किसी की जान लेना इनके बायें हाथ का करतब था। जिससे दोस्ती की, उसी की गरदन काटी। अपीर से मिल-जुल कर रहना और उसकी घुड़की-झिड़ की सहना, इनका खास पेशा था। लेकिन जिसके यहाँ दखलछ पाया, उसको या तो लैंगोटी बैंधर' टी या कुछ ले-दे के अलग हुए। शहर के महाजन और साहुकार इनसे थरथर काँपते रहते ! जिस महाजन से जो माँगा, उसने द्दाज्ि किथा और जो इनकार किया तो दूसरे रोज़ चोरी हो गयी। इनके मिञ्ज्ञानज की अजब कैफ़ियत थी। बच्चों में बच्चे, बूटों में बूढ़े, जवानों में जवान। कोई बात ऐसी नहीं जिसका उन्हें तजबत्रों न हो। एक साल तक फोज में भी नौकरी की थी। वहाँ आपने एक दिन यह दिल्लगी की कि रिसाके के बस घोड़ों की अगाड़ो-प्ि्छाड़ी खोल डाली | घोड़े हिनदिना कर लड़ने लगे । सब्र लोग पड़े सो रहे थे । घोड़ जो खुले, तो सब के सब चोंक पड़े । एक बोला--डैना-लेना | चोर-चोर | पकड़ लेना, जाने न पाये । बड़ी भुश्किल से चंद घोड़े पकड़े गये । कुछ ज़खमी हुए, कुछ भाग गये | अब तहकीक़ात अुरू ६ई। मिरज़ा आज़ाद भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगदइ रदे थे जिसने घोड़े छोड़े थे । अफ़सर से बोले--यह शैतान का काम है, खुदा की क़सम |

अफ़ार--उसकी गोशमाली की जायगी ।

आज़ाद--बह इसी लायक़ दहै। मिछ जाय तो चचा ही बना कर छोड़ें!

खेर, एक बार एक दफ़्तर में आप हुक हो गये। एक दिन आपको दिल्लगी पूझी, सब्र अमछों के जूते उठा कर दरिया में फेंक रियि। सरिबतेदार उठे, इधर-उधर जूता दूँदते हैं, कही पता ही नहीं । नाजिर उठे, जूता नद्ारद | पेशकार को साइब् ने बुलाया, देखते हैं तो जूता ग़ायत्र ।

पेशकार--अरे भाई, कोई साहब्न जूता द्दी उड़ा ले गये ।

चपरासी --हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार--वाह, अच्छा' छाला विशुनद्याठल, ज़रा अपना बूट तो उतार दो ।

छाला विशुनद्याल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहन कर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गये ।

साहब--बेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर दो गया। बहुत-बड़ा क्रीमती बूट पहना हे |

पेशकार--हुजूर, कोई सादइचत्र जूता उड़ा ले गये। दफ़्तर में किसी का जूता नहीं बचा ।

बड़े साहब्र तो मुस्करा कर चुप हो गये; मगर छोटे साहब बड़े दिछगीबाज़ आदमी थे। इजलास से उठ

कर दफ्तर में गये तो देखते हैं कि कदूक़द्दे पर ककया पड़ रहा है। सत्र लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं। छोटे साहब ने कद्दा-हम उस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया | जिस दिन हमारा जूता ग़ायत्र कर दे, हम उसको इनाम दें। क

आज्ञाद---और अगर हमारा जूता ग़ायत्र कर दे तो हम पूरे मह्दीने की तनख्याह दे दें।'

एक बार मिरज़ा आज्ञाद एक हिंदू के यहाँ गये । वह इस वक़्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डॉट कर कहा-- ए, यद्द क्या शरारत !

आजाद--कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो ।

ठाकुर-- रसोई जूठी कर दी !

आजाद--भई, बड़ा अफ़सोस हुआ । हम यहद्द क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा !

ठाकुर-- नहीं जी, कोई मुसलमान खा लेगा ।

आजाद--तो हमसे बढ़ कर और कोन है ?

आज्ञाद ब्रिस्मिल्लाह कह कर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा--- हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दाँत है १

खेर, आज़ाद ने पत्तों में खाना खाया और दुआ दी कि खूदा करे, ऐसा एक उल्लू रोज फेस जाये ।

डोम-धारी, तबलिये, गवेये, कलावंत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिरजा आज़ाद से मुलाकात न हो । एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपये इनाम दिये । तब से उस गिरोह में इनकी धाक बेठ गयी थी। एक बार आप पुलीस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। आज्ञाद का घोड़ा टरो था और इनसे त्रिना भज्ञाक के रह्दा न जाये | चुपके से उतर पढ़े | घोड़ा हिनहिनाता हुआ इंस्पेक्टर साहब के घोड़े की तरफ चला १ उन्होंने लाख संभाव्य, ठेकिन गिर ही पड़े | पीठ में बड़ी चोट आयी ।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब्र बेगम साहब के यहाँ पहुँचीं तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन कमरे के अंदर चली गयीं। बुढ़िया ने आ कर पूछा-- हुजूर, कहा तशरीफ रखती हैं !

बेगाए--अब्वासी, कड्की है; खबरें है *

अन्बासी--हुजूर के अक़बाल से सब मामछ चौकस है । बेगम--आते हैं या नहीं १ बस, इतना बता दो |

अन्चासी--हुजुर, आज तो उनके यहाँ एक मेहमान आ गये। मगर कल जरूर आयेंगे ।

इतने में एक महरी ने आ कर कहा--दारोग़ा साइबर आये हैं।

बेगम--आ गये !) जीते आये, बड़ी बात !

दारोगा--हाँ हुजूर, आपकी दुआ से जीता आया । नहीं तो बचने की तो कोई यूरत द्दी न थी |

बेगम--तैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा !

दारोग़ा--हुजूर के नमक की कसम कि शहर का कोई मुकाम न छोड़ा ।

बेगम---और कहीं पता न चला १ है न !

दारोगा--कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहाँ तलाश न की हो |

बेगम--अच्छा, नतीजा क्या हुआ ? मिले या न मिले !?

दाभेशा--हुजुर, सुना कि रेल पर सवार हूं। कर कहीं बाहर जाते हैं। फोरन गाड़ी किराये का और स्टेशन पर जा पहुँचा, मियाँ आज़ाद से चार आँखें हुईं कि इतने में सीटी कूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली | में छपका कि दो-दो बाते कर लूँ, मगर अगरेज ने हाथ पकड़ लिया |

बेगम--यह सत्र सच कहते हो न !

दारोग़ा--झूठ कोई ओर बोला करते होंगे ।

बेगम--सुबह से तो कुछ खाया न होगा !

दारोग़ा---अगर एक घूँट पानी के सिव्रा कुछ और खाया हो तो क्रसम ले लीजिए |

अब्बासी--हुजूर, हम एक बात बतायें तो इनकी शेखी अमी-अभी निकल जाये। कहारों को यहां बुला कर पूछना शुरू कीजिए !

बेगम साइत्र को यह सलाह पसंद आयी ; एक कहार को बुला कर तहक़ीक़ात करने लगीं ।

अब्बासी--बत्रचा, झूठ बोले तो निकार दिये जाओगे ।

कटद्ार--हुज्र, हमे जो सिखाया है, वह कह देते हैं ।

अब्बासी--क्या कुछ सिखाया भौ है !

“कहार--सुत्रह से अब्र तक सिखाया ही किये या कुछ ओर किया ? यहाँ से अपनी ससुराल गये | वहाँ किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहाँ से एक मजलिस में गये । हिस्से लिये और चख कर बोले--कहीं ऐसी जगह चलो जदाँ किसी की निगाइ न पड़े । हम लोगों ने नाके से बाहर एक तकिये में मियाना उतारा। दारोगा जी ने वहाँ नानबाई की दूकान से सालन और रोटी मेगा फर खायी । दर ऊगों वो चने के लिए पैसे दिये | टिन भर साथ किये। शाम को हवंग टिया. - ह !

अन्बासी--दारोग़ा साहब, सलाम ! अजी, इधर देखिए दारोग़ा साहब !

बेगम--क्यों साहब, यह झूठ | रेल पर गये थे ! बोलिए !

दारोग़ा--हुजुर, यह नमकदहराम है, क्या अज्े करूँ !

दारोगा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते, मगर बेबस थे | बेगम ने कह्ाा--बस, जाओ । तुम किसी मसरफ़ के नहीं हो !

रात को अब्बासी ब्रेगण साहब से मीठी-मीटी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज़ आयी । बेगम ने पूछा--कौन गाता है !

अब्बासी--हुजुर, मुझे मालूम है । यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहाँ एक आदमी नौकर है, उसको खूब जानती हूँ ! सलारबइश नाम है । एक दिन वकील साहब इधर से जाते ये | मैं दरवाजे पर खड़ी थी | कहने लगे--महरी साहब, सलाम ! कहो, तुम्हारी बेगम साइब का नाम क्या है ! मैंने कहा, आप अपना मतलब कह्टिए, तो कहने छगे--कुछ नहीं, यों ही पूछता था ।

बेगम--ऐसे आदमियों को मुँह न लगाया करो ।

अब्बासी--मुखतार है हुजूर, महतात्री से मकान दिखायी देता है ।

बेगम---चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे ! जाने भी दो ।

अब्बासी--नहीं हुजूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चछ कर देख लीजिए | बेगम साहब मइताबी पर गयीं तो देखा कि वकील साहब परँग पर फैले हुए हैं और सल्ारू हुक्का भर रहा है। नीचे आयीं तो अब्बासी बोली --हुजूर, वह सलार-बख्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेगम--बह कोन थी ! ज़रा नाम तो पूछना ।

अब्बासी--नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है । देखिए, शायर जेहन में आ जाय | आप दस-पाँच नाम तो ले ।

बेगम--नज़ीरबेगम, ज़ाफ़रीबेगम, हुसेनीखानम, शिन्बोखानम !

अब्बासी--(उछल कर) जी हाँ, यही, यही; मगर शिश्बोखानम नहीं, शिब्त्रो-जान बताया था ।

छुरेथा बेगम ने सोचा इस पगले का पड़ोस अच्छा नहीं, जुल देके चली आयी हूँ, ऐसा न हो, ताक-झाँक करे । दरशजे तक आ ही चुका, अब्बाती और सलारू में बातचीत भी हुई; अब फ़त इतना मालूम होना बाक़ी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो ग़ाबब द्वी हो जाय | किसी तरह मकान बदल देना चाहिए,। रात को तो इसी खयाल में सो रहीं । सुत्रह्द को फिर वही घुन समायी कि आज्ञार आयें और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखायें। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनायें। मगर आज़ाद अब की मेरा यह ठाठ देखेंगे तो क्या खयाल करेंगे। कहीं यह न समझ कि दौछत पा कर मुझे भूल गयी । अब्चासी को बुला कर पूछा--तो आज कब जाओगी ९

अनब्बासी--हुजूर, बस कोई दो घड़ी दिन रदे ज़ाऊँगी और बात की बात में साथ ले कर आ जाऊँगी ।

उधर मिरज़ा आंज़ाद बन-ठन कर जाने द्वी की थे कि एक शाह साहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुँचे । आजाद ने झक कर सलाम किया और बोले---आप खुब आये | बतलाइए, हम जिस काम को जाना चाहते हैं वह पूरा होगा या नहीं!

शाह--लछगन चादिए। धुन दो तो ऐसा कोई काम नहीं जो पूरा न हो।

आज़ाद--मुस्ताखी माफ़ कीजिए तो एक बात पूछूं, मगर बुरा न मानिएगा |

शाह--सगुस्ताखी कैसो, जो कुछ कहना द्वो शोक से कहो ।

आजाद--उस पगली ओरत से आपको क्यों मुदूबत है !

दशाह---उसे पगली न कहो, में उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत पर मरता हूँ । मैंने बहुत से ओलिया देखे, पर ऐसी औरत मेरी नज़र से आज तक नहीं गुज़री । अलारक्खी सचभुच जन्नत की परी है। उसकी याद कभी न भूलेगी । उसका एक आशिक़ आप दही के नाम का था।

इन्हीं बातों में शाम हो गयी, आसमान पर काली घटाएँ छा गयीं और जोर से मेंह बरसने लगा । आज़ाद ने जाना मुल्तत्री कर दिया । सुत्रह की आप एक दोस्त की मुलाक़ात को गये | वहाँ देखा कि कई आदमी मिल कर एक आठउमी को बना रहे हैं ओर तालियाँ बजा रहे हैं। वद्द दुबला-पतला, मरा-पिटा आदमी था।

इनको करोने से मालूम हो गया कि वह चंड्रबाज़ है। ब्ोले--क्पों भाई चंदूब्राज़, कमी नौकरी भी की है !

चंड्ब्राज---अजी हज़रत, उम्र भर डंड पेले और जोडियाँ ह्विलायीं। शाही में अन्बाजान की ब:/उत द्वाथी-नशीन थे। अभी पारसाह तक हम भी धोडे पर सन्नार हो कर निकलते थे | मगर जुए की लत थी, टके-टके को मुहताज दो गये | आखिर, सराय में एक मठियारी अलारक्खी के यहाँ नौकरी कर ली ।

आज़ाद--किस के यहाँ !

चंड्बाज--अलारक्खी नाम था । ऐसी स्वृतसूरत कि मैं क्या अर्ज करूँ |

आजाः--हाँ. रात को भी एक आदर्मी ने तारीफ़ की थी '

चंड्बाज--तारीफ़ कैसी | तसवीर ही न रिखा दूँ १

यह कह कर चंड्रचाज ने अलारक्खी को तसब्रीर निकाली |

आजाद--ओ- हो-हो !

अजन है ख़्रींनी मुसज्यिर ने किस तरह तसबत्रीर; कि शोखियों से वह एक रंग पर रहें क्योंझर !

पड़ बाज---क्यों, है परी या नहीं !१

आजा2--परी, परी, असलो परी |

सेड़बाज-- उसी सराय में मियाँ आजाट नाम के एक दारीफ़ टिके थे। उन पर आशिक हो गयीं । बस, कुछ आप ही की सी सूरत थी ।

आजाद--अब्र यह बताओ कि वह आजकल कहाँ है !

चंहबाज---यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं । सराय से तो भाग गयी थीं ।

आज्ाद ने ताड़ लिया कि अलारब्खी और सुरैया बेगम में कुछ न कुछ भेद जरूर हे । चंडूबाज् को अपने घर छाये और खूब चंद्र पिछाया । जब दो-तीन छींटे पी चुके तो आड्ाद ने कह्ा-अब अलारक्खी का मुफ़्स्सल हाल बताओ |

चंड्रबाज--अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए । शोख, चुलबुली, चंचछ, आगभभूका, तीखी चितवन, मगर हँसमुख । मियाँ आज़ाद पर रीक्ष गयीं। अत्र आजाद ने वादा किया कि निकाह पढवायेंगे, मगर क्ौछ हार कर निकल गये । इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आये, मगर फिर भाग गये। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीक्षे । उन्होंने कहा-- रूम की लट्टाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राजी हों | बस, रूम की राह ली। चलते वक़्त उनकी अलारक्खी से मुलाक़ात हुई तो उनसे कहा-- हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूछ जाना। आज़ाद ने कहा -हर-गिज नहीं ।

आज़ाद--हुस्नआरा कहाँ रहती हैं !

चंडबाज़--यह हमें नहीं माद्म ।

आजाद--अलार क्खी को देखो तो पदचान लो या न पहचानो !

चंड्बाज - फोरन पहचान लें । न पहचानना केसा !

मियों चंड्बाज़ तो पीनक लेने छलगे। इधर अब्बासी मिरज़ भआाज़ाद के पास आयी और कट्दा--अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने ज़ाने का जिक्र न कीजिएगा । आपके टाल्मटोल से वह बहुत चिद गयो हैं । कहती हैं, आना हो तो आयें और न आना हो तो न आयें। यह टाल्मटोल क्यों करते हैं!

आज्ाद ने कहा--मैं तेयार बरेठा हूँ । चलिए ।

यह कह कर आज़ाद ने गाड़ी मँगवायी और अब्बासी के साथ अंदर बैठे | चेड़-बाज कोचब्क्स पर बैठे | गाड़ी खाना हुई | सुरेया बेगम के महू पर गाड़ी पहुँची तो अब्चासो ने अंदर जा कर कहा--मुबारक, हुजूर आ गये |

बेगम--मक्र है !

अनब्बाती--अब हुजुर चिक की आड़ बेठ जायें |

बेगम--अच्छा, बुलाओं ।

आजाद बरामदे में चिकर के पास बैठे । अब्बासी ने कमरे के बाहर आ कर कहा "-बेगम साइब फ़रमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ़ ले जाइए ।

आजाद--बेगम साहब से कह दीजिए कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायात्र नुसखा है|

अन्बासी--वह फ़रमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदरी हमने बहुत चंगे. किये हैं।

आज़ाद- और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं कर सकता !

बेगम--आपकी बातों से सिर का दर्ट और बढ़ता है। खुदा के लिए आप मुझे इस वक़्त आराम करने दीजिए ।

आज़ाद--हम ऐसे द्वो गये अक्वाह अकबर ऐ तेरी कुदरत ;

हमारा नाम छुन कर द्वाथ वह कानों प? घरते हूं ।

या तो वह मज़े-मज़े की बातें थीं; ओर अब यह बेतफ़ाई !

बेगम- तो यद्द कहिए. कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैँ । कद्टिए, मिज़ाज तो अच्छे हैं !

आजाद--दुर से मिज़ाजपुर्सी भली माल्म नहीं होती ।

बेगम--आप तो पहेलियाँ बुझवाते दे | ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने छा कर बिठा दिया १ वाह-वाह !

अब्बासी--(मुस्करा कर) हुजुर जबरदस्ती घेंस पड़े |

बेगम--मुह ज्लेवालों को इतिला दो |

आज़ाइ--थाने पर रपट लिखवा दो और मुझकें बेधवा दो ।

यह रू. +#? आज़ाद ने अलारक्खों की ततवीर अब्चासी का दी ओर कटह्दा--इसे हमारी 5फ् से पंश कर दो | अब्बासी ने जा कर बेगम साहब को वद्द तसवीर दी | बेसन ह४« ज्वबीर देखते ही दंग हो गयीं! 7. इन्हें यह तसबीर कहाँ मिडी ! शायद: ०ह उसवीर छिपा कर ले गये थे | पूछा--हश तसवीर का क्या कीमत है ! व्योजाइ--यह बिवाऊ नहीं है। पंगम --तो फिर दिखायी क्यों ! आजा2-इस-] क्रोमत देनेवाला

कोई नज़र ना आता । बेग+-- कुछ काटए तो, किस दाम कं! तसवबीर है : आजा+-हुःए मिला लें। एक शाइज़ादे इस तहबीर के टो लाख रुपये देते थे | बेग+--यह तसबीर आपको मिली कहां १ आज़ाइ--जिसकी यह तसवीर है उससे दिल !मेल गया है । बेगम--जरी मैंह धो आइए इस फ़िक़रे पर अब्बासी कुछ चोंकी, बेगम साहब से कद्दा-जरी हुजूर मुझे तो मगर बेगम ने संदुकचा खोल कर तसवीर रख दी । आज़ाए--इस शहर की अच्छी रस्म है| देखने को चीज़ ली और हदजम ! बी अन्चासी, हमारी तसवीर ला दो |

बेगम--व्खों कुदूरतें हैं, दजारों शिकायतें '

आजार--किससे ९

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक ; इधर आँखें मिर्ली उनसे उधर दिल मिल गया दिल से । बेगम---भजी, होश की दवा करो। आायर - हम ता इस जब्त के क़ायल हैं ।

. बेगम--(हँस कर) बजा । आज़ाद--अब तो खिलखिला कर हँस दीं। ख़दा के लिए, अब इस चिक के बाइर आओ या मुझी को अंदर बुलाओ। नक़ाब् ओर घूँघट का तिलस्म तोड़ो । दिल बेकाबू है । बेगम--अब्बासी, इनसे कह्दो कि अब हमें सोने दें। कल किसी को राह देखते-देखते रात आँखों में कट गयी । आज़ाइ--दिन का मौक़ा न था, रात को मेंह बरसने छगा। बेगम--बस, बैठे रहो । यह अबस कहते द्ो, मोक़ा न था और घात न थी; मेंद्दरी पाँवों में न थी आपके, बरसात न थी । कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी; दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी ! बस, यही कह्ठिए कि मंजुर मुलाक़ात न थी। आज्ाद-माशकैपन नहीं अगर इतनी कजी न हो । अब्बासी दंग थी कि या दा, यह क्या माजरा है| बेगम साइब तो जामे से बाहर ही हुई जातीं हैं। महरियाँ दाँतों अँगुलियाँ दबा रही थीं। इनका हुआ क्या है | दारोसा साइच कटे जाते ये, मगर चुप | बेगम--कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है ! सबको देख लिया | तड़पा तड़पा कर मार डाल! | खेर, हमारा भी खुदा है । आज़ाद--पिछली बातों को अब भूल जाइए । बेगम--बेमरौततों को किसी के दद का हाल क्या मादूम ! नहीं तो क्या वादा करके मकर जाते ! आज़ाद-नालिश भी तो दाग दी आपने ! बेगम--इन्तजार करत-कर्त नाक में दम आ गया । गह उनकी तकते-तकत यह मदत गुज़र गयी; आँखों को हौसला न रहा इन्तजार का। आज़ाद, बस टिल ही जानता है | ठान ढी थी कि जिस तरह मझ जलाया है, उसी तरह तग्साऊँगी | इस वक्त कलेजा बांसों उछल रहा है । मगर बेचनी और भी बदती जाती है | अब उघर का हाल ता कहो, गये ये ! आजाद- वहाँ का हाल न पृछा , f4ल पाश-पाश हुआ जाता है । सुंग्या बेगम ने समझा कि ऋऊत्र पाल्य हमारे हाथ रहा | कहा-- आखिर, कुछ ते कही। मात्र क्या है ? आजाद - अडी, औरत को बात का एतबार क्या ! ब्रेगम- वाह, सबका शामिल ने करी । पॉनों अंगुलियों बगतर नहीं हं'ती | अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किये थे, बे याद हैं या भूल गय !

+क्थर इक़रार जो किये थे कभी हमसे आपने ; काहिए, वे याद हैं कि फ़रामोश हो गये !

आज्ाद--याद हैं | न याद होना क्या माने !

बेगम--आपके वास्ते हुक्क़ा भर लाओ |

आजाद--हुक्म हो तो अपने खिदमतगार से हुक्का मँगवा ढूँ। अब्बासी, जरा उनसे कह्दो, हुकका भर

लाये ।

अब्चासी ने जा कर चंद्डबाज् से हुक्का भरने को कहा । चैड्बबाज हुक्क़ा ले कर ऊपर गये' तो अलारक्खी को देखते ही बोले---ऋद्ि्ए अलारक्खी साइबर, मिज़ाज तो अच्छे हैं !

सुरेया बेगम धक से रह गयीं | वह तो कदिए, खेर गुजरी कि अब्बासी वहाँ पर न थी। बरना बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चंडूबाज़ को बुला कर कहा--यहाँ हमारा नाम सुरैया बेगम है। खदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कददना । यद्द तो बताओ, तुम इनके साथ केसे द्वो लिये । तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी ! चलते वक़्त कोड़ा मारा था |

चंड्रबा:-- ४५ के बारे में फिर अजज करूँगा ।

आज़ाद-क्या खुदा की शान है कि खिदमतगार को अंदर बुलाया जाय और मालिक तरसे !

बेगम--क्यों घत्रतते दो | ज़रा बातें तो कर लेने दो! उस मुए मसखरे को कहाँ छोढा !

आजाद--वह लड़ाई पर मारा गया ।

बेगम-एऐ., है, मार डाल्य गया ! बड़ा हँसोढ था बेचारा |

सुरेया बेगम ने अपने हाथों से गिलौरियाँ बनायीं और अपने ही द्वाथ से मिरजा आज़ाद को खिलायीं। आज़ाद दिल में सोच रहे थे कि या खुदा, हमने कौन सा ऐसा सव्राब् का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मिदरबान हो गया है | हालौँ कि न कभी को जान, न पहचान । यक्कीन हो गया कि जरूर हमने कोई नेक काम किया होगा | चंह्बाब को भी हैरत हो रही थी कि अलारब्खी ने इतनी दौलत कहाँ पायी । इधर-उधर भौचक्के हो-हो कर देखते ये, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ़ समझते थे । इतने में आजाद बोले--ज़माना भी कितने रंग बदलता है ।

सुरैया बेगम - हाँ, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं ।

आज़ाद--यों नहीं कहतीं कि लोग चाइते कुछ हैं और द्ोता कु. और है।

सुरैया बेगम--दो-वार दिन और सत्र करो। जहाँ इतने दिनों खामोश रहे, अब चंद रोज तक और चुपके रहो।

चंहूबाज--खदावंद, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए, कल फिर आइएगा | मगर पहले बी अछा सुरेया बेगम--जरा समझ-बूझ्ष कर !

चैड्रबाज-- क़सूर हुआ ।

आज़ाद--हम समझे द्वी नहीं, क्या क़ुयूर हुआ !

सुरैया बेगसम--एक बात है | यह खुब जानते हैं ।

आजाद--फिर अच चलूँ ! मगर ऐसा न द्वो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड़ जाय । अगर ऐसा हुआ तो मैं जान दे दूँगा।

सुरैया बेगम--मैं तो यह ख़द ही कहने को थी । तुम मेरी ज़ब्रान से बात छीन ले गये |

आज़ाद--हमारी मुहब्बत का हाल खूदा ही जानता है ।

सुरैया बेगम--खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का ह्वाल हमसे ज़्यादा और कोई नहीं जानता। या (चंड्रबाज की तरफ़ इशारा करके) यद्द जानते हैं। याद हे न ! अगर अब की भी वैसा ही इक़रार है तो खुदा दी मालिक है :

आज्ाद--अब उन बातों का डिक्र ही न करो ।

मुरैया बेगम--हमें इस दवालत में देख कर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होथा कि इस दरजे पर यह्द केसे पहुँच गयी । वह बूढ़ा याद है जिसकी तरफ मे आपने खत लिखा था !

आजाद मिरजा कुछ जानते द्ोते तो समझते, हाँ-हाँ कहते जाते थे ।

आखिर इतना कदहा--तुम भी तो वकील के पास गयी थीं ! और हो पकड़वा बुलाया था | मगर सच कहना, हम भी किस चाछाकी से निकल भाग ये !?

सुरैया बेगम---और उसका आप को फ़ख् है। शरमाओ न शसमाने दो |

आबाद--अजो, वह मोका ही और था |

सुरैया बेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया । अपना जोगिन न्तना, शइसउएर का आना, थानेदार रू वर से भागना, फिर वकीछ साहब के यह फेंवना, धस्स सारी बातें कह सुनावा |

आश्षाइई--ओफ आह, बहुत मुसीबतें उठायीं !

झुरेया बेगम--अन्न ते यही जी चाइता है कि शुभ घड़ी निकाह ह; तो स!रा साय भूल जाय |

चैडबाज--हम बगम साहब की तरफ़ होंगे | आप द्वी ने तो चाए! जप्नामा था

आज़ाद--कोड़ा अभी तक नहीं भूले ! हम तो बहुत सी बरतें भूल गये |

सुरैया बेगम--अब्र ता रात बहुत ज़्यादा गयी, क्यों न नीचे जा कर दाग! साहब के कमरे में सो रह। |

आजाद उठने द्वी को थे कि अभज़ान की आवाज कान में आदी । बातों में तड़का हो गया। आजाद यहाँ से चड़े तो रास्ते में सुरैया बेगम का हल पूछने लगे--ब्थों जी, बंगम साइबर हमको वद्दी आजाद समझती हैं ! क्या हमारी-उनको परत बिलकुल निलती है १

चंड्रबाज--जनात, आप उनसे बीस हैं, उन्लीस नहीं ।

आज़ाद-तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदमी है !

चैड्बाज--वाह-वाह, में कह देता तो आप वहाँ घँसने भी पाते ! अब कहट्ठिए तो जा कर जड़ दूँ | बस, ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है !

ये बातें करते हुए आजाद घर पहुँचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कान्स्टेबलों ने उनको घेर लिया, आजाद ने पंतरा बदल कर कहा--ऐं, तुम छोग कोन हो (

जमादार ने आगे बढ़ कर वारंट दिग्वाया और कहा -आप मेरे हिरासत में हैं

चैंडूबाज दब के-दबके गाडी में बैठे थे । एक मिपाही ने उनको भी निकाला | आजाद ने ग़स्से में आ कर दो कान्स्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सब्रों ने मिल क उनकी मुड्के कस लीं और थाने की तरफ़ ठे चछे | थानेदार ने आज्ञाद को देखा तो त्रोलि--आइए मिरज़ा साहब, बहुत दिनों के बाद आप नज़र आये। आज

आप कहाँ भूल पड़े !

आज़ाद - क्या मरे हुए से दिछगी करते हो | हवालात से बाहर निकाल दो तो मज़ा दिखाऊँ | इस वक़्त जो चाही, कह लो, मगर इजलास पर सारी क़लई खोल दूँगा । जिस जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूंगा, भाग कर जाओगे कहाँ !

थानेदार--रस्सी अल गयी, मगर रस्सी का व ने गया ।

आज़ाद तो डॉगें मार रहे थे और चंड्रचाज्ञ को लंड को धुन सवार थी | बोले-- अरे यारो, जरी चंड्ू गिल्वा दो भई ! आखिर इतने आदमियों में कोई चंड्डबाज भी है, या सब के सच्च रूखे ही हैं !

थानेदार--अगर आज चंहडू न मिले तो क्या हो १

चेड्रबाज - मर जायें और क्या हैं। !

थानेदार--अच्छा देखें, कैसे मररे दो १ कोई शत बदता है ! हम कहते हैं कि अगर इसको चंड्ू न प्रिले तो यह मर जाय |

इन्स्पेक्टर--और दम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा ।

चेड्रबाज़--वादह री तकदीर, समझे ये, अलारक्खी के यहाँ अब चेन करेंगे, चैन तो रहा दूर, क्रिस्मत यहाँ ले आयी |

थानेदार-- अलारबखी कोन १ यह क्ता दो, तो चंड्ड मैंगा दूं ।

चंडूबाज - साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी ।

अब सुनिए, शाम के वक्त सुरैया बेगम उन-ठन कर बैठी आश्ाद का इंतजार कर रही थी। मगर आज़ाद तो इयाछात में थे । बढाँ आता कोव ! अब्दासी को आजाद के गिरफ़्तार होने की खबर तो मिल गयी, मंगर उसने सुरेवा उगम से ऊई्दी नहीं ।

HINDI TEXT

प्रसंग ६६

शाहज़ादा हुमायूं फ़िर कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेल कर लौटे, तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलवा भेजा । अब्बासी ने शाहज़ादा के आने को ख़बर सुनी तो चमकती हुई आयी ! शाइज़ादे ने देखा तो फड़क गये | बोले-- आइए, बी महरी साहबा हुस्नआरा बेगम का मिजाज तो अच्छा है !

अब्ग्रासी- है, हुजर !

शाहज़ादा-- और दूसरी बहन | उनका नाम तो हम भूल गये ।

अब्बसी बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल गये होंगे । कोठे पर से धूप में आईना दिखाये, धूरा--घूरी किये और लोगों से पूछे--बढड़ी बहन ज़्यादा इसीन हैं या छाटी ! है ताज्जुब की बात कि नहीं !

शाहजादा-हमें तो तुम हसीन मादूम होती हो ।

भब्बसी--ऐ हुजुर, हम ग़रीब आदमी, भव हमें कोन पूछता है !

शाहजादा--हमारे घर पड़ जाओ |

अब्बासी--हुज्र तो मुझे शर्मिंदा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिजाज पाया है । यही हँसना-बोलना रह जाता है हुजर !

शाहजादा--अब किसी तरकीब से ले चलो ।

अब्बासी-हुजूर, भला मैं. केसे ले चलूँ | रईसों का घर, शरीफ़ों की बहू-बेटियों में पराये मर्द का क्या काम ।

शाहजादा--कोई तरकीब सोचो, आखिर किस दिन काम आअगी !

अब्जासी--आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं | आज एक मिस आनेवाली हैं।

शाहजारा--फिर किसी तरकोन्र से मुझे वहों पहुँचा दो | आज तो आँखें सेकने

का खूब मोका है । अब्बासी--अच्छा, एक तदबीर है। आज बारा ही में बेठक होगी। आप चल कर

किसी दरखइ्त पर बैठ रहें ।

शाहजादा--नहीं भाई, यह हमें पसंद नहीं। कोई देख के तो नाइक उल्लू बनूँ | बस, तुम बाराबान को गाँठ लो । यही एक तदबीर है ।

अब्बासी ने आ कर माली को लालच दिया | कद्दा--भगर शाहजादा को अंदर पहुँचा दो तो दो अशर्फियाँ इनाम दिलवाऊँ। माली राजी हो गया । तब अब्बासी ने आ कर शाहजादे से कह - लीजिए हज़रत, फ़तह है |! मगर देखिए, धोती और मीरजाई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी सी टोपी दीजिए, तब वहाँ पहुँच पाइएगा । |

शाम को हुमायूँ फ़र ने माली का वेष बनाया और माली के साथ बाग में पहुँचे तो देखा कि बाग़ के

बीचोबीच एक पक्का और ऊँचा चबूतरा है और चारों बहनें कुर्नियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुल-दस्ता बना कर दिया और कदह्ा--जा कर मेज़ पर रख दो । हुमायूँ फ़र ने मिस साहब को झुक कर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गये ।

सिपहआरा--हीरा-हीरा, यह कोन है !

दीरा--हुज्र, गुलाम है आपका । मेरा भांजा है।

सिपहआरा--कक्या नाम है !

हीरा-- लोग हुमायूँ कहते हैं हुज्र !

सिपहआरा--आदमी तो सलीक़ेद्ार मादम होता है। अरे हुमायूँ, थोड़े फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दे |

शाहजादा ने फूल तोड़ कर महरी को दिये और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक़का बाँध दिया | खत का मज़मून यह था-- 'मेरी जान,

अब सब्र की ताक़त नहीं | अगर जिलाना हो तो जिला लो, वरना कोई हिकमत काम न आयेगी !

हुमायूँ फ़र'

जब शाहज़ादा हुमायूँ_ फ़र चले गये तो सिपहआरा ने माली से कदहा--अपने भांजे को नौकर रख लो |

माली-- हुजूर, सरकार ही का नमक तो खाता है! यों भी नौकर है, वों मी नौकर है।

सिपहआरा मगर हुमायूँ तो मुसलमानों का नाम द्योता है।

माली - हाँ हुजूर, वह मुसलमान हो गया है।

दूसरे रिन शाम को सिपहआरा और हुस्नआरा बाग में आयीं तो देखा, चबूतरे वर शतरंज के दो नक़शे बिंचे हुए हैं।

सिपहआरा--ऋल तक तो ये नक़शे नहीं थे। अहाद्दा, हम समझ गये | हुमायूँ थाली ने बनाये होंगे ।

माली--हाँ हुजूर, उसी ने बनाया है !

सिपहआरा--बहन, जब जानें कि नक़शा हल कर दो |

हुस्नआारा--बहुत टेढ़ा नक़शा है ! इसका हल करना मुश्किल है (माली से) क्यों जी, तुम्हारे भांजे को शतरंज खेलना किसने सिखाया !

माली--हुजूर, उसको शौक़ है, लड़कपन से खेलता है ।

हुस्नआरा--उससे पूछो, इस नक़शे को इल कर देगा !

माली--कल बुलवा दूँगा हुजर !

सिपहआरा- रसका भांजा बढ़ा मनचछ्ा मालूम होता है ।

हुस्नआरा--हाँ, होगा । इस जिक्र को जाने दो ।

सिपहआरा--क्यों-क्यों, बाजीजान ! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदर गया!

हुस्नआरा--कल इसका जवाब्र दूँगी |

सिपहआरा--नहीं, आस्िर बताओ तो १ तुम इस वक़्त खफ़ा क्यों दो !

हुस्नआरा--यह मिरजा हुमायूँ फ़र की शरारत है ।

सिपदआरा--ओफ़ ओइ ! यह हथकंडे !

हुस्न आरा--(माली से) सच-सच बता; यह हुमायूँ कौन है १ ख़बरदार जो झूठ बोला |

सिपहआरा --भांजा है तेरा !

माली--हुजर ! हुजूर !

हुस्नआरा--हुजूर- हुजुर लगायी है, बताता नहीं । तेरा भांजा और यहद्द नक़शे बनाये !

माली--हुज्र, मैं माली नहीं हूँ, जाति का कायस्थ हूँ, मगर घर-बार छोड़ कर बारावानी करने लगा । हमारा भांजा पदा-लिखा हो तो कोन ताज्जुब की बात है !

हुस्नआरा---चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े खड़े निकलवा दूँगी ।

सिपहआरा अपने दिल में सोचने छगी कि हुमायूँ. फ़र ने बेतोर पीछा किया । और फिर अब तो उनको ख़बर पहुँच ही गयी हे तो फिर मालछो बनने की क्या जरूरत है !

हुस्नआरा--खदा गवाह है | सजा देने के काब्रि आदमी है। भल्मनसी के यह मानी. नहीं हैं कि किसी के घर में माडी या चमार बन कर घुसे | यद्द द्वीरा निकाल देने लायक है | इसको कुछ चटाया द्वोगा, जभी फिसल पड़ा ।

माली के होश उड़ गये | बोल्य--द्ुजुर मालिक हैं | बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूँ; मगर कोई कसर गुलाम से नहीं हुआ । अन्न बुढ़ापे में हुजूर यह दाग़ न लगायें |

हुस्नआरा---कल अपने भांजे को जरूर लाना |

सिपहआरा--अगर क़यूर हुआ है तो सच-सच कह दे |

माली--हुजुर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं !

दूसरे दिन शाहजादा ने माली को फिर बुल्वाया और कदहा--आज एक बार और दिखा दो ।

माली--हुजूर, ले चलने में तो गुलाम को उज् नहीं, मगर डरता हूँ कि कहीं

बुढ़ापे में दायरा न लग जाय । शाहजादा--अज्ञी वह मौकूफ़ कर देंगी तो हम नौकर रख लगे । माली-सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज्ज़त को डरता हूँ । शाहजादा-- क्या महीना पाते हो १ माडी--६ रुपये मिलते हं दुजुर !

शाहजादा-आज से ६ रुपये यहाँ से तुम्हारी जिंदगी भर मिला करेंगे । क्यों, इमारे आने के बाद औरतें कुछ कद्दती नहीं थीं !

माली--आपस में कुछ बातें करती थीं; मगर मैं सुन नहीं सका | तो मैं शाम को आऊँगा | शाहज़ादा--तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पायेगा ।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूँ फ़र दुआ माँगने लगे कि किसी तरद शाम द्वो। बार-बार

कमरे के आहर जाते, बार-बार घड़ी की बैरफ देखते | सोचे, आओ ज़ग सो रहें। सोने में वक़्त भी कट जायगा और बेकरारी भी फम हो जायेगी । लेटे; मगर बड़ी देर तक नींद न आयी | खाना खाने के बाद लेदे वो ऐसी नींद आयी कि शाम हो गयी । उधर सिपदहआरा ने द्वीरा माली को अकेले में बुला कर डॉटना शुरू किया | द्दीरा ने रो कर कहा--नाहक अपने भांजे को लाया । नहीं तो यह लथाड क्यों सुननी पड़ती ।

मियल्भाग -कुछ दीवाना हुआ है बुड़ढे! तेरा भांजा और इतना सलीके-दाग ? इतना हसीन १

हीग--हुज़्र, अगर भांजा न हो तो नाक कदवा डाढूँ।

सिपदर आरा--(महरी से) ज़रा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूँ ।

महरी ने माली को अलग ले जा कर समझाना शुरू किया--अरे भले आदमी जता दे । जो तेरा रत्ती भर नुक़सान हो तो मेरा जिम्मा ।

हीरा--इस बुदौती में कलंक का टीका लगवाना चाइती हो !

पहरी--अत्र मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शाहज़ादा हुमायूँ फ़र के जिवा हर फ्रिसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती । बता, थे बही कि नहीं !

हीरा- हाँ आये तो वही थे |

पहरी--(सिपहआरा से लीजिए हुजूर, अब इसे इनाम दी-जए ।

रितहआरा --अच्छा द्वदीर, आज जब्न वह आयें तो यह कागज दे देना ।

इत्तिफ़ाक़ से हुस्सआरा बेगम भी टइलतों हुईं भा गयीं। वह भी दफ्ती पर ए

शेर लिख लायो थीं | सिपहआरा को दे कर बोरों-होरा से कह दो, जिस वक़त दुएशू

फ़र आय, यह दफ्ती दिखा दे ।

सिपदआरा ऐ: तो बाजी, जब हुमायूँ फ़र हों भी !

हुस्न आरा--कितनो सादी हो १ जब हों भी !

सिपहआरा --अच्छा, हम'यूँ फ़र ही सद्दी | यह शेर तो छुनाओ |

हुसश्तनआरा--इमने यह (लखा है--

असीरे द्विसे बशइवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद ; दरीं आतश कसे गर पुझता बाशद खाम मीबाशद ।

(जो आदमी हिसे और शहवत में क्रेद हो गया, वह्द नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुल कर सलाम किया और शाम को हुमायूँ फ़र के मकान पहुँचा ।

हुमायूँ--आ गये १ अच्छा, ठह्दरो | आज़ बहुत सोये |

हीग-खुदावंद, भरहुत खफ़ा हुई और कहा कि हम तुमको मौकूफ़ कर देंगे ।

हमायूँ--ठुम इसकी फ़िक्र न करो |

हीग-- हजूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है |

झुटपुटे वक़्त हुमायूँ हीरा के साथ बाग में पहुँचे । यहाँ हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूँ फ़: को दिखाये। अभी वह पढ़ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग़ में आ गयी और हीश को बुला कर कहा-तुम्हारा भांगा आया !

हीरा-हा जर हे हुजूर !

हुस्नआरा--बुआओ |

हुमायूँ ने आ कर सलाम किया और गरदन झुका ली ।

हुस्नआरा-तुम्हारा क्या नाम है जी !

हुमायूँ--हुमायूँ । हुस्नआरा--क्यों साहब, मकान कहाँ है ! हुमायूँ--

धर बार से क्या फ़क्कोर को काम ; क्या लीजिए छाड़े गाँव का नाम ! हुश्नआरा - अक्खाह, आप शायर भी हैं । हुमायूं - हुजूर, कुछ बक लेता हूँ । हुत्तआरा--कुछ सुनाओ | हुमायूँ--हुक्म हो तो ज़मीन पर बैठ जाऊँ। सिपह आरा--बड़े गुस्ताख हो तुम । कहीं नौकर हो ! हुमायूं--जी हाँ हुजूर, आजकल शाहज़ादा हुमायूँ फ़र की बहन के यहाँ नौकर हूँ |

इतने में बढ़ी बेगम आ गयीं । हुमायूँ फ़र मारे खौफ़ के भाग गये ।

HINDI TEXT

प्रसंग ६७

सुरैया बेगम ने आज़ाद मिरज़ा के क़ेद होने की ख़बर सुनी तो दिल पर बिजली सी गिर पड़ी | पहले तो यक़ीन न आया, मगर जब खबर सच्ची निकली तो हाय-दाय करने लगी ।

अब्बासी--हुजूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अजीज हैं । वह पैरवी करनेवाले हैं | रुपये भी खर्च करेंगे ।

सुरया बेगम--झुपया निगोड़ा क्या चीज है। तुम जा कर कहों कि जितने रुपयों की जरुरत हो, हमसे ले ।

अब्बासी आजाद मिरजा के चाचा के पास जा कर बोली--बेगम साहत ने मश्े आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपये की जरूरत हो तो हम हाजिर हैं | जितने सपये कद्दिए, भेज दें ।

५६ इट्टे मिर्जा आजाद से भी बढ़ कर बगठे बाज थे। सुरेया बेगम के पास आ कर गोकि - क्या कहू बेगम साहब, मेरी तो इज्जत खाक में मिल गयी ।

मुरया बेगम-नया मेर अल्लाह, क्या यह ग़ज़ब हो गया !

बे मिरजा-क्या करूँ, सारा जमाना तो उनका दृश्मन है। पुलिस से अदा-बते, अमलों से तकरार । मेरे पास इतने रुपये कहाँ कि पेग्दी करूँ। वकील बरसेर लिये-गिये मानत नहीं । जान अजाब मे है ।

सुरया बेगम--इसकी तो आप फ़िक्र ही न करें। सब्र बंदोबस्त हवा जायग। | से दे। लो, जं। कहिए., हाजिर है ।

पड़े मिर्जा - फ़ोजदारी के मुकदमे में ऊंच वाल जरा उत अहुत हैं। ने कल एक बारिस्टर के पास गया था । उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सी दूगा | अगर आप चार सी गपये दे दें तो उम्मेंद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास वा जाय '

बेगम साहब ने चार सी रुपये दिलवा दिये | बड़े पिरज़ा रुपये ले कर जबाइर गये और थोड़ी देर के बाद आ कर चरपाई पर धम से गिर पड़ और बंलि--आज तो इग्जत शो गयी थी, मगर ख़दा ने बचा लिया । मे जा यहाँ से गया तो एक साहब ने आ कर कहा--आज़ाद पमिरजा को थानेदार हथकड़ी पहना कर चौकस ले जायगा। बस, मेने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफ़ाक़ से एक | सालरार मिल गये , उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कदहा--दो सो रुण्ये दा तो पुलिसवालों का गाँठ & « मैने फोरत दा सी रुपये निकाछ कर उनके हाथ पर रखे । अनबन दा सी आर 4लक॥इए तो बकीली के पास जाऊे। बेगम ने दो सी रुपये आर दिलवा दिये । बड़े मिस्सा दिल में ख़श हुए, अच्छा शिकार फेसा | रुपये ले कर चलत हुए ।

इधर सुंर्या बेगम गे रो कर आँखे फाड डालती थीं महर्यों समझातों, न राउ रोने से क्या फ़ायदा, अलछाह पर भरोसा राखए; उसकी मर्जी हुई तो आज़ाद मिरज़ा दो-चार दिन में घर आयेंगे । मगर ये नसीहतें बेगम साहब पर कुछ असर न करती थीं । एक दिन एक महरी ने आ कर कद्दा -हुजूर, एक औरत ड्योढ़ी पर

खड़ी है । कहिए तो बुलाऊँ | बेगम ने कह्ा--बुला लो । वह औरत परदा उठा कर आँगन में दाखिल हुई और झुक कर बेगम को सलाम किया । उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुल्बदन का चुस्त पाजामा, बाँका अमामा, मख़मल का दगला, उस पर हलका कारचोबी का काम, हाथ में आबनूस का पिंजड़ा, उसमें ए.क चिड़िया बैठी हुईं। सारा घर उसी की ओर देखने छगा । सब्र की सब दंग थीं कि या ख़ुदा, यह उठती जवानी, गुलाब सा रंग, और यों गली-कूचों को सैर करती फिरे | अब्बासी बोली--क्यों बीबी, तुम्हारा मकान कहाँ है ? और यह पहनावा किस मुल्क का हैं ! तुम्हारा नाम क्या है बीबी !

भऔरत--हमारा घर मन-चले जवानों का दिल है और नाम माशक़ ।

यह कह कर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी--हुजू:, आपको यकीन न आयेगा | कल में परिध्तान में बैठी वहाँ की सैर देख रही थी वि. पहाड़ पर बड़े जोरों की आँधी आयी और इतनी गदं उड़ी कि आसमान के नौचे एक और असमान नजर आने छगा। इसके साथ ही घडघडाइट की आवाज आयी और एक उडनखटोला आसमान से उतर पड़ा ।

अब्बासी -- भरे, उडनखटोला ! इसका ज़िक्र तो कहानियों में सुना करत थे :

ओऔरत--बस हुजूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला ग़ायत्र हो गया। वह परी असल में परी न थो, वह एक इनसान था | में उसे देखते द्वी हजार जान से आशिक हो गयी। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं क्रेद हो गया है !

सुरैया बेगम--क्या, क्ेद है ! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें माद्म हैं !

औरत--जी हाँ हुजुर, मैंने पूछ लिया है । उसे आज़ाद कहते हैं ।

सुरया बेगम--अरे ! यह तो कुछ और ही गुल खिला | हिसी ने तुम्हें बहका तो नहीं रिया !

औरत--हुजूर, वह आपके यहाँ मी आये थे | आप भी उन पर रीझी हुई हैं ।

सुरैया बेगम--मुझे तो तुम्हारी सन्न बाते दीवानों की बकझक मादम होती हैं। कहाँ परी, कहाँ आज़ाद, कद्दों उड़नखटोला | समझ में कोई बात नहीं आती |

ओऔरत--इन बातों को समझने के लिए ज़रा अक़्ल चाहिए |

यह कद कर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गयी ।

थोड़ी देर में दारोगा साइब ने अंदर आ कर कहा--दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं | मरजा आज़ाद जेल से भांग निकले हैं। और वही भा. औप्त के ब्य में आये थे | वेगम साहब के होश-इवारू गायत्र हो गये ! अरे. यह आजाद थे !

HINDI TEXT

प्रसंग ६८

आज्जाद अपनी फ़ौज़ के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फ़ौज में आ कर कदहा--अमी बिगुल दो । दुश्मन सिर पर आ पहुँचा | बिगुल की आवाज सुनते ही अफ़सर, प्यादे, सवार सब्र चोंक पड़े । सवार ऐठते हुए चले, प्यादे अकढ़ते हुए बढ़े । एक वोला--मार लिया है। दूसरे ने कहा--भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहाँ है। मुखत्रिर दौड़ाये गये तो पता चला कि रूस की फ़ौज़ दरिया के उस पार पेर जमाये खड़ी है । दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फ़ौज़ के साथ एक लेडी, शहसबारों की तरह रान-पटरी जमाये, कमर से तलवार लटकाये, चेहरे को नकाब से छिपाये, अजब शोखी और बाँकपन के साथ लड़ाई में शरीक होने के लिए आयी है| उसके साथ दस जवान औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं | मुखबत्िर ने इन औरतों की कुछ ऐसी तारीफ़ की कि लोग सुन कर दंग रह गये। बोल[-इस रईसज़ादी ने कसम खायी है कि उम्र भर क्वाँरी रहूँगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फ़न ख़ब सिखाया था | रूस में बस यही एक औरत है जो तुकों से मुकाबला करने के लिए मैदान में आयी है | उसने क्रतम खायी है कि आज़ाद का सिर ले कर जार के क्रदमों पर रख दँगी ।

आज़ाद- भला, यह तो बतछाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार ! फिर मेरा नाम उसको क्योंकर मालूम हुआ

मुखत्रिर--अब यह तो हुजुर, वही जानें, उनका नाम मिस हकलारिसा है। वह आपसे तलवार का मुक्काबिला करना चाहती हैं। मेदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने जमाने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था ।

आजाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया | अफ़सरों ने उनको बनाना धुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर क़बूल किये लेता हूँ तो नतीजा क्या ! जीता, तो कोई बढ़ी बात नहीं | लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं । अगर चोट खायी तो जग की हँसाई होगी | मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आभाड़े ह्वों लेंगी कि हुक छोकरी से चरका खा गये | सारी डींग खाक में मिल गयो । और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियाँ बजेंगी कि एक नाजकबदन औरत के मुकाबिले से भागे। जब खद कुछ फ़ेसछा न कर सके तो पूछा -- दिल्लगी तो हो चुकी, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए!

जनरल--सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए,, बरना चुपके दी रहिए!

आजाद--जनाब, खदा ने चाहा, तो एक चोट न खाऊँ और बेदारा लौट आउजेँ। औरत लाख दिलेर हो, फिर भी औरत है !

जनरल--यहदाँ मूछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहाँ क़लई खुल जायगी |

अनवर पाशा--जिस वक़्त वह इसीना हथियार कस कर सामने आयेगी, होश उड़ जायेंगे । ग़श पर ग़श आयेंगे | ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हँसी है ! हाथ न उठेगा । मुँह की खाओगे। उसको एक निगाह तुम्हारा काम तमाम कर देगी।

आजाद--इसकी कुछ परवा नहीं | यहाँ तो दिली आरजू है कि किसी नाजनीन की निगाहों के शिकार हों ।

यही बातें हो रही थीं कि एक आदमी ने कहा-कोई साहब इज़रत आज़ाद को ढूँदते हुए आये हैं। अगर हुक्म हो, तो बुला लाऊं। बड़े तीखे आदमी हैं । मुझसे लड़ पडे थे । आज़ाद ने कहा, उसे अंदर आने दो। सिपाही के जाते ही मियाँ सखोजी अकडते हुए आ पहुँचे ।

आज़ाद--मुश्त के ज्ाद मुलाकात हुईं, कोई ताजा ख़बर कहिए ।

खोजी--कमर तो खालने दो, अफ़ीम घोदू, चुस्की लगाऊँ तो होश आये | इस वक़्त थका-माँदा, मरा-मिटा आ रहा हूँ | साँस तक नहीं समाती हे ।

आजाद--मिस मोडा का हाल तो कहो !

खोजी--रोज कुम्मेत धंड़े पर सवार दरिया किनारे जाती हैं। रोज अखबार पदती हैं | जहाँ तुम्दारा नाम आया, बस, रोने लगीं ।

आज़ाद--भरे, यह अँगुली में क्या हुआ है जी! जल गयी थी क्या !

खोजी--जल नहीं गयी थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई ।

आज़ाद--ऐ, यह माजरा क्या है?! एक कान कोन कतर ले गया है !

खोजी--न हम इतने हसीन होत, न परियाँ जान देतीं !

आज़ाद--नाक़ मी कुछ चिपटी माल्म होती है ।

खो जी--सूरत, सूरत | यही सूरत बला-ए-जान हो गयी | इती के द्वाथों यह दिन देखना पडा ।

आज़ाद--यसूग्त मुरत नहीं, आप कहीं से बट कर आये हैं| कमजोर, मार खाने की निशानी; किसी से भिड़ पटे होंगे। उसने टोंक डाला द्वोगा ! यही बात हुई है न!

स्वोजी--अजी, एक परी ने फूलों की छडियों से सज़ा दी थी। ह

आजाइ--अच्छा, कोई खत बत छाये हो? या चले आये यों दी हाथ झुलाते !

स्ोजी-- दो-दो खत हैं ! एक मिस मीडा का, दूमरा हुग्मुज जी का।

आज़ाद और खोजी नहर के किनारे बैठे बात कर रहे थे । अब जो आता है, खोजी को देख कर इँसता है | आखिर स्तोजी बिगड़ कर बोले--क्या भीड़ लगायी है! चलो, अपना काम करो |

आजाद--वुमको किसी से क्या वास्ता, रबड़े रहने दो |

सोजी---अजी नहीं, आप समझत नहीं हैं | ये लोग नज़र लगा देंगे

आजाद- हाँ, आपका कल्ला-ठल्ला देख कर नज़र लग जाय तो ताज्जुब भी नहीं ।

खोजी--अजी, वह एक घूरत ही क्यां कम है| और क़सम ले छो कि किसी मर्दक को अब तक माद्प

हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं ! और हमें इसका कुछ ग़रूर भी नहीं--- .मुतलक नहीं रार्र जमालोकमाल पर । आजाद--जी हाँ, बाकमाल छोग कभी ग़रूर नद्टीं करते, सीघे-सादे द्वोते ही हैं । अच्छा, आप अफ़ीम घोलिए, साथ है या नहीं ! खोजी--जी नहीं, और क्या | आपके मरोसे आते हैं ? अच्छा, छाओ, निकल बाओ । मशर जरा उम्दा हो । कमसरियट के साथ तो होती होगी ! आ.- द--अब ठुम मरे । भला यहाँ अफ़ीम कहाँ ! और कमसरियट में १ क्या खब ! सखोजी--तब तो बे-मौत मरे । भई, किसी से माँग ला । आजाद--यहाँ अफ़ीम का किसी को शौक ही नहीं । खोजी-- इतने शरीफ़क्षादे हैं और अफ़ीमची एक भी नहीं ! वाइ ! आज़ाद--जी हाँ, सब गैंवार हैं। मगर आज दिछगी होगी, जब अफीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिला ओोगे ! खोजी--यह तो अभी से जम्हा हाँ आने लछगीं। कुछ तो फ़िक्र करो यार | आजाद--अब यहाँ अफ़रीम न मिलेगी । हाँ, करीलियों जितनी चाहो, मँगा दूँ। खोजी--(अफ़ीम की डिबिया दिखा कर) यह मरी है अफीम ! क्या उल्लू समझे थे | आने के पहले ही मैंने हुरमुज़ जी से कद कि हुज़्र, अफीम मेंगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमृज़ जी का ख़त | आजाद ने लत खोला तो यह लिखा था-- थाई डियर आजाद, जरा खोजी से खेर व आफ़ियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दाँत टूट गये, कान कट गये और घूँसे और भुक्क्रे खाये । आप इनसे इतना पूछिए कि लालछादख कोन है ! तुम्हारा हुरमुज |! आजाद---क्यों साइब, यह रालारुख कौन है ! खोजी--ओफ़ ओह, इस पर चकमा चल गया । वाहरे हुर४ज जी, वललाह ! अगर नमक न खाये होता तो जा कर करौलो भोंक देता | आजाद---नहीं, तुम्हें बल्थह, बताओ तो, यह लालारुख कौन हे ! सतोजी---अच्छा हुरमज़ जी समझेगे ! सोदा करेंगे दिछ का किसी दिलझवबा के साथ इस बावफ़ा को बेचेंगे एक बेवफ़ा के हाथ | हाय वालारुख, बान थाती है, मगर मौत भी नहीं आती । भाड़ाद--पिटे हुए हो, कुछ द्वाऊतो बतलाओ। हसीन है!

खोजी--(शल्ला कर) जी नहीं, हसीन नहीं है। काली-कलूटी हैं । आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे | मला, किसी ऐसी-बैसी की जुर्रत कैसे होती कि हमारे साथ बात करती ! याद रखो, इसीन पर जबत्र नज़र पड़ेगी, हसीन ही की पड़ेगी | दूसरे की मजाल नहीं। गालितः इन सीमी तनों के वास्ते, चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए । आज्ञाद--अच्छा, अब लालामरण्ष का तो हाल बताओ। खोजी--अजी, अपना काम करो, इसे वक़्त दिल काबू में नहीं है । वह हुस्न है कि आपके बात्ाज्ञान ने भी न देखा होगा | मगर हाथों में चुल है । घंटे भर में पाँच सात बार जरूर चपतियाती थों। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, इसको इसी बात से नफ़रत थी । वरना, नखशिख से दुरुस्त ! और चेहग चमकता हुआ, जैसे आब-नूस | एक दिन दिल्गी-दिलगी मे उठ कर एक पचास जूते छगा दिये, तड़-तड-तड़ ! हैं, हैं, यह क्या हिमाक़त है, हमें यह दिलछगी पसद नहीं, मगर वह सुनती किसकी हैं! अब फ़रमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज़ हँसी-ईंसी में कान काट लिया . एक दिन दूकान पर खड़ा हुआ सौदा खरीद रहा था | पीछे से आ कर दस 596 लगा दिये । एक मरतबे एक छ.ौज़ में इसको दकेल दिया । नाक टूट गयी । मगर ह लाखों में लाजवाब | तज-निगाइ ने छीन लिये ज़ाहिदों के दिल, आखें जो उनकी उठ गयीं दस्ते दुआ के साथ | आज्ञाद--तो यह कह्विए, हँसी-हँसी में खूब जूतियाँ खायीं आपने ! खोजी--फिर यह तो है ही, और इश्क़ कद्दते किसे हैं ? एक दफ़ा में सो रहा था, आने के साथ ही इस ज़ार से चाबुक जमायी कि मैं तड़प कर चीख उठा । बस, आग हो गयीं कि हम पीट, तो तुम रोओ क्यों ! जाओ, बस,

अब हम न बोलेंगी । लाख मनाया, मगर बात तक ? को । आखिर यह सलाह ठहरी कि सरे आज़ार वह हमे चपतियाएँ और हम सिर भुकाये खटे रहें | लब ने जो जिलाया तो तेरी आँख ने मारा ; कातिल भी रहा साथ मसीहा के हमेशा | परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया; मुगताफ रहे हम झखे ज़ेत्रा के हमेशा। आज़ाद--किसी दिन दँसी-हसी में आपको जहर न खिला दे ! स्ोजी--क्य साइब खिला दें क्यों नहीं कहते ! कोई कंडेबाली मुक़रर की है । वह भी रदसजादी हैं * आपको मिस मीडा पर गिर पड़ें तो यह कुचल जायें। अच्छा हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी चीती कद्दो । आजाद--एक नाजनीन हमसे तलवार लड़ना चाइती है। क्या राय है ! पैग़ाम भेजा हे कि किसी दिन आज़ाद पाशा से और हभसे अकेले तलवार चले |

लोजी--मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है! शक़्ल-सूरत कैसी है! आजाद--सब पूछ चुके हैं | रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहाँ होतीं तो खूब दिल्लगी रहती | हाँ, तुमने तो उनका खत दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही | खोजी ने मीडा का खत निकाल कर दिया। यह मबमून था-- प्यारे आज़ाद, आजकल अखबारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी ख़त भी तो भेजा करो | यहाँ जान पर बन आयी है, और तुमने वह चुप्पी साधी है कि ख़दा की पनाह । तुमसे इस बेवफ़ाई की उम्मेद नथी। यों तो मुँह-देखे की होती है मुहब्बत सबको, जब में जानूँ कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे | तुम्हारी मीडा ।!

HINDI TEXT

प्रसंग ६९

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाज़नीन से मुक़ाजिला था। आजाद को रात-भर नींद नहीं आयी । सबेरे उठ कर बाहर आये तो देखा कि दोनों तरफ़ की फोर्मे आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ़ से तोप चल रही हैं|

खोजी दूर से एक ऊँचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे और चिछा रहे ये, दोशियार, होशियार ! यारो, कुछ खबर भी है ! हाय | इस वक़्त अगर तोड़ेदार बंदूक होती तो परे के परे साफ़ कर देता । इतने में आज़ाद पाशा ने देखा कि रूसी फ़ौज़ के सामने एक हसीना कमर में तलवार ल्टफाये, हाथ में नेज़ा लिये, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिए. ललकार रही है | आजाद की उस पर निगाइ पड़ी तो दिल में सोचे, खदा इसे बुरी नज़र से बचाये। यहदद तो इस क्रानिछ है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदान-जंग | हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय | राज़ब की चीज़ है यह हुस्न, इंसान छाख थाइता है, मगर दिल खिंच ही जाता है, तबीयत आ ही जाती है ।

उस हसीना ने जो आज़ाद को देखा तो यद्द शेर पढा--

सेंमल के रखियो कदम रादे-इश्क़ में मजनूं,
कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई हे ।

यह कहद् कर घोड़ा बढ़ाया । आज्ञाद के घोड़े की तरफ़ छझकी और झकते ह्वी उन पर तलवार का वार किया । आज्ाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया । तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गँजने छगा। मिस क्लारिसा ने झल्ला कर घोड़े को फेर और चाहा कि आजाद को दो टुकड़े कर दे, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आजाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोक कर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ डिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झ्ेंप गये। मिस क्लवारिसा भी लणायी और मारे ग़स्से के झल्ला कर वार करने लूगीं। बार-बार चोट आती थी, मगर आज़ाद की यह कैफ़ियत थी कि कुछ घोर तछ्वार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आज़ाद उससे लड़ तो रहे थे, मगर बार करते दिल काँपता था । एक दफ़ा उस शेरदिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी छाश जमीन पर फड़कती नज़र आती, मगर आजशाद ने इस तरह बचाया कि हाय बिलकुल खाली गया। जब उस खाबून ने देखा कि आबाद ने एक चोट भी नहीं खायी तो फिर झँझला कर इतने वार किये कि दम लेना भी मुश्किल हो गया। मगर आज़ाद ने हँस-हँस कर चोटें बचायीं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गरदन पर जमाया कि गरदन कट कर दूर जा गिरी । आज़ाद फ़ोरन कूद पड़े और चाहते थे कि उछल कर मिस क्लारिसा के हाय से तलवार छीन के कि उसने घोड़े को चाबुक जमायी और अपनी फ्रीज़ की तरफ चली । आज़ाद सैंमलने भी न पाये थे कि घोड़ा हवा दो गण | आज़ाद घोड़े पर लटके रह गये |

जब घोड़ा रूस की फ़ौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खशी के आवाढ़े लगाये ओर कोई चालीस-पत्रास आदमियों ने आज़ाद को घेर लिया । दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पाँच ने दूसरा द्वाथ | दो-चार ने टाँग ली। आजाद बोरे--मई, अगर मेरा ऐसा ही लौंफ़ हे तो मेरे हथियार खोल छो ओर क्रेद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे | हम माग कर जायँगे कद्दा १ अगर तुम्हारे यही हथकडे हैं तो दस पाँच दिन में तुक जवान आप ही आप. बँधे चके आयेंगे। मिस क्लारिसा की तरह पंद्रह-बीस परियों मोरचे पर जायें तो शायद तुर्की की तरफ़ से गोलंदाज़ी ही बंद हो जाय !

एक सिपाही--टेंगे हुए चले आये, सारी दिलेरी घरी रह गयी !

दूसरा सिपाही--वाह री क्लारिसा ! क्या,#ठों दे !

आजाद--इसमें तो शक नहीं कि इस वक़्त शिकार द्वो गये । मिस क्लारिसस्त की अदा ने मार डाला |

एक अफ़सर--आज हम तुम्हारी गिरफ़्तारी का जश्न मनायेंगे ।

आजआद--हम भी शरीक होंगे । मला, क्लारिसा भी*नाचेंगी १

अफ़सर--अजी, वह आपको अँगुलियों पर नचायेंगी । आप हैं किस भरोसे !

आजाद--अब तो खदा ही बचाये-तो ब्ें। बुरे फँसे ।

तेरी-गली में हम इस तरह से हैं आये हुए; शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाये हुए ।

अफ़तर--आज वो हम फूले नहीं समाते । बड़े मूढ़ को फाँसा |

आज़ाद--अभी खुश हो छो; मगर हम भाग जायँगे | मिस क्लारिसा को देख कर तब्रीयत लहरायी, साथ चले आये।

अफ़सर-- वाह, अच्छे जवॉमद हो | आये लड़ने और औरत को देख फिस पढ़े। यूरमा कहीं औरत पर फिसला करते हैं !

आज़ाद--बूदे दो गये हो न | ऐसा तो कहा ही चाहो ।

अफ़सर--हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे। मगर बात कुछ और ही निकली | अगर आप मेरे मेहमान न दोते तो दम आपके मुँह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो गरेरत चाहिए ।

इतने में एक रूसी सिपाही ने आ कर अफ़सर के हाथ में एक खत रख दिया। उसने पदा तो यह मख़मून था---

(१) हुक्म दिया जाता है कि मिर्यों आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाय, जो सबसे ज़्यादा सर्द हैं।

(२) जब तक यह आदमी जिंदा रहे, किसी से बोलने न पाये । अगर ऊँशी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बंत पड़े ।

(३) खाना सिर्फ एक वक़्त दिया जाय | एक दिन आध सेर उबाला हुआ साग ' और दूसरे दिन गुड़ और रोटी । पानी के तीन कटोरे रल्ल दिये जाये, चाहे एक ही बार पी जाय चादे दस बार पिये |

(४) दस सेर आठा रोज़ पीसे और दो घंटे रोज दलेल बोली जाय | चक्की का पाठ सिर पर रख कर चक्कर लगाये । ज्षरा दम न छेने पाये |

(५) हफ़्ते में एक बार बरफ़ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पह-नने को दिया जाय |

आजाद--बआत तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी |

अफ़सर--इस मरोसे भी न रहना । आधी रात को सिर पर पानी का तड़ेड़ा शेज दिया जायगा |

आज़ाद मुँह से तो हँस रहे थे, मगर दिल काँप रहा था कि खुदा ही खेर करे

ऊपर से हुक्म आ गया तो फ़रियाद किससे करें और फ़रियाद करें भी तो सुनता कौन है ! बोले, खत्म हो गया या और कुछ है।

अफ़सर -तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गयी है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई इलकी सज़ा टी जञाय ।

आजाद--तब् तो वह जरूर ही माफ़ कर देंगी ।

यह कह कर आज़ाद ने यह शेर पढा--

खोल दी है जुल्फ़ किसने फूल से रुखूसार पर ! छा गयी काली घटा है आन कर गुलज़ार पर । अफ़सर--अब तुम्दारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा । आज्ाद--दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ । दम तो मरमिटे |

सख्तियाँ ऐसी उठायीं इन बुतों के छिज़ में !
रंज सहते-सइते पत्थर सा कलेजा हो गया ।

HINDI TEXT

प्रसंग ७०

शाम के वक़्त हलकी-फुलकी और साफ़-सुथरी छोलदारों मं मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाज़क आराम-कुर्सा पर बैटी थी | चाँदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाये हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी ! उधर म्रियाँ आज़ाद क्रेद में पड़े हुए हुस्न आरा को याद करके मिर धुनतें थे कि एक आदमी ने आ कर कहा--चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं । आजाद छोलदारी के क़रीब पहुँचे तो सोचने लगे, देखें यह किस तरह पेश आती हैं। मगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ह्वी मर जायेंगे | अंदर जा कर सछाम किया और हाथ बाँध कर खड़े हो गये ।! क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कद्दा--%दहिए. भिज्ञाज टंडा हुआ या नहीं !

आज्ञाद-- इस वक़्त तो हुजूर के पंजे में हूँ, चाहे कत्ल कोजिए, चाहे सूली शजिए ।

कलारिसा--जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूँ , मगर वज़ीर के हुक्म से मजबूर. ईं ! वज़ीर ने मइले अख्तियार तो दे दिया है कि चाहें तो तुम्हें छोड़ लेकिन बदनामी से डरती हूँ | जाओ रखसत !

फ़ौज़ के अफ़सर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आजाद को ले कर सरहद पर पहुँचा आयें ! उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आज्ञाद ने पूछा--जर्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं !

एक सिपाही - बस, एक दृरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायें वह तुम्हे छोड़ दे ।

आज्ञाद--भला, वे लोग क्यों छोड़ने लगे !

सिपाही तुम्हारी जवानी पर तरत आता है। अगर हम साथ चले तो जरूर छोड़ ८गे।

तीसरे दिन आज़ाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही परे जमाये हुए, हथियारों से लेस, “उनके साथ चलने को तैयार थे | जब आज़ाद घोड़े पर सवार हुए तो इजारहा आदमी उनकी हालत पर अफ़सोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रूमाल से # सू पाछ रही थीं। एक औरत इतनी वेक़गर हुई कि जा कर 'अफ़सर से शोली - हुजूर, यह आप बड़ा ग़ज़ करत हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साहइबेरिय' >ज रहे हैं .

अफ़सतर--मैं मजबूर ह | सरकारी हकम की तामील करना मेरा फ़ल है ।

मरी स्त्री “इस बेनारे की जान का खदा हाफ़िज़ है! बेकदर जान जाती है |

तीनरी ज्ली--आओं, सब की सब्र मिल कर चलें और मिस साहप से धिफ़ारिश

करें | शायद दिल पसीन जाय ।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस कक्लारिसा के पास जा कर बोलीं-- हुजूर, यह क्या राज़ब करती हैं | अगर आज़ाद मर गये तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी (

क्लारिसा--उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है ।

वह स्त्री--कितनी जालिमि ! कितनी बेरहम हो! ज़रा आज़ाद की सूरत तो चछ कर देख लो ।

क्लारिसा--हम कुछ नहीं जानते |

अब तक ठो आज़ाद को उम्मेद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुनइन पर रहम करें लेकिन जब इधर से कोई उम्मेद न रही और मादूम हो गया कि बिना साइ-बेरिया गये जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने जोर से चीले कि मिस क्लारिसा के बदन के रोये खड़े दो गये और थोड़ी ही दुर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े ।

एक सिपाद्दी--अरे यारो, अन्न यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही--मरे या जिये, साइबेरिया तक पहुँचाना जरूरी हे ।

तीसरा सिपाही--भई, छोड़ दो । कह देना, रास्ते में मर गया ।

चौथा सिपाही--हमारी फ़ौज़ में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है । हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफ़सर की क़दर करनी चाहिए थी ।

पाँचवाँ सिपाही--अगर आप सत्र लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डाले | मगर तुम लोग साथ न दोगे |

छठा सिपाही--पहले इसे होश में लाभ शी फ़िक्र तो करो |

जब पानी के खब छींठे दिये गये तो आज़ाद ने करवट ब:डही। सवारों को जान में जान आयी । सब उनको ले कर आगे बदे।

दरख़्त पर खोजी

पानी माँगा, ढेले मिले



१ पानी, भाईजान!

खोजी के हाथ में डिबिया थी। नीचे बैठे आदमी को उन्होंने उर्दू में पुकारा। जवाब फ्रांसीसी में आया।



२ इशारे की हार

पहले पत्ते गिरे, फिर एक टहनी। नीचेवाले ने ऊपर ढेले फेंके। खोजी की शामत आ गई।



३ तीसरा आदमी

एक तुर्क ने समझा-बुझाकर खोजी को नीचे उतारा। पानी मिलने के बाद खोजी फिर अपनी डाल पर जा बैठे।

HINDI TEXT

प्रसंग ७१

आज़ाद तो साइबेरिया की तरफ़ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर ब्रैठे-बैठे अफ़ीम की डिबिया निकाली | वहाँ पानी कहाँ ! एक आदमी दरझ्त के नीचे बैठा था| आपने उससे कहा--भाईजान, जरा पानी पिला दो | उसने ऊपर देखा, तो एक जौना बैठा हुआ है | बोला--तुम कोन हो ! दिछगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था । खोजी उदृ में बात करते थे, वह फ्रांसीसी में जवात्र देता था ।

लोजी- अफ्रीम घोलेंगे प्रियाँ। ज़रा सा पानी दे डालो भाई !

क्रांसीसी--वाह, कया सुरत है | पहाड़ पर न जा कर चैठों

खोजी--भई वाह रे हिंदोस्तान | बछाह, इस फसल में सबीलों पर पानी मिलता है, केवड़े का बसा हुआ | हिंदू पौसरे बैठाते हैं और तुम ज़रा पानी भी नहीं देते ।

फ्रांसीसी--कहीं ऊपर से गिर न पढ़ना ।

खोजी--(इशारे से) अरे मियाँ पानी-पानी !

फ्रांसीसी - हम तुम्हारी बात नहीं समझते ।

खोदी--उतरना पड़ा हमें ! अबे, ओ गीदी, जरा सा पानी क्यों नहीं रे जाता [क्या पाँवों की मेंहदी गिर जायगी ह

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्ते तोड़-तोड़ फेंकने लगे । फ्रांसीसी झछा कर बोला--बचा, क्यों शामतें आयी हैं | ऊपर आ कर इतने भँसे रूगा ऊँगा कि सारी शरारत निकल जायगी। खोजी ने ऊपर से एक शाख् तोड़ कर फेंकी । फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी । इतने में एक तुके आ निकला । उसने समझा-बुझा कर खोजी को नीचे उतारा। खोजी ने अफ्रीम घोली, चुस्की लगायो और फिर दरख्त पर जा कर एक मोटी शाख से टिक कर पीमऊर लेने लगे | अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक़्त खूब गोले चल रहे थे । तुकों ने जान तोड़ कर मुकाबिला किया, मगर फ्रांसीसी तोपखाने ने उनके छक्के छुड़ा दिये और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खा कर गिर पड़ा । तु तो हार कर भाग निकले | रूसियों की एक पलटन ने इस मेदान में पड़ाव डाला । खोजी पीनक से चौंक कर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नजर उन पर पड़ी | बोला--कौन ! तुम कौन हो ! अभी उतर आओ |

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगे। नीचे उतर आये | अभी जमीन पर पाँव भी न रखा था कि एक रूसी ने इनको गोद में उठा कर फेंका तो बम से जमीन पर गिर गये ।

लोजी--ओ गीदी, ख़दा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे |

एक रुसी-- भई, यह पागल है फोई |

दूसरा- इसको फ़ौज़ के साथ रखो | खूब दिल्लगी रहेगी ।

रूसियों ने कई तुक सिपादियों को क्रेद कर लिया था | खोजजी भी उन्हीं के साथ रख दिये गये । तुर्कों को देख कर उन्हें ज़रा तसकीन हुई | एक तुक बोला--तुम तो आजाद के साथ आये ये न १ तुम उनके कौन हो !

खोजी--मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो |

तुक--एं, आप आज़ाद पाशा के बाप हैं !

खोजी--हाँ- हाँ, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मेंने ही तो आजाद को मार-मार कर लड़ना सिखाया |

तुर्कों-ने खजी को आजाद का बाप समझ कर फ़ोजी क़ायदे से सलाम किया । तब खोजी रोने छगे--अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो । क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था ! अन्न तुम्हारी माँ को क्या सूरत दिखाऊँगा !

ठुक- आप ज़्यादा बेचेन न हं।4 आजाद जरूर छूटेंगे ।

खोजी--भई, मेरी इतनी इजत. न करो | नहीं तो रूसियों को शक दो जायगा कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं | तब बहुत तंग करेंगे ।

तुक -खुदा ने चाहा तो अफ़सर छोग आपको जरूर छोड़ देंगे ।

खोजी--जैसी मौला की मरजी !

HINDI TEXT

प्रसंग ७२

बडी बेगम का बाग़ परीखाना बना हुआ है। चारों बदने रविशों में अठखेलियाँ करती हैं । नाज़ो-अदा से तौल-तौल कर क्दम धरती हैं| अब्बासी फूल तोड-तोड कर झोलियाँ भर रही है। इतने में सिपहआरा ने शोखी के साथ गुलाब का फूल तोड़ कर गेतीआरा की तरफ़ फेंका । गेतीआरा ने उछाला तो सिपद्आरा की बजुल्फ़ को छूता हुआ नीचे गिरा । हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानारा बेगम से गेंद खेलने लगीं | जिस वक़्त गेंद फेंकने के लिए हाथ उठाती थीं, सितम दा ती थीं | वह कपर का लचकाना और गेस् का बिखरना, प्यारे-प्यारे द्वाथों की लोच और मुसकिरा-मुसकिरा कर निशानेबाजी करना अजब छुन्फ़ टिखाता था |

अब्बासी--माशा-अलाह, हुजुर किस सफ़ाई के साथ फेंकती हैं !

सिपहआरा--बस अब्बासी, अब अहुत खशामद की न लो। क्या जहानारा प्रहम सफ़ाई से नहीं पेंक्ती ? बाजी जरी झपटती ज़्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पायेंगी । देख लेना ।

अब्बासी- जिस सफ़ाई से हुस््नआरा बेगम गेंद खेलती हैं, उस सफ़ाई से जहा-नारा बेगम का द्वाथ नहीं जाता ।

सिपहआरा- मेरे द्वाथ से भला फूल गिर सकता है ! वया मजाल !

इतने में जहानास बेगम ने फूल को नोच डाला और उफ कह कर बोलीं-- अल्लाह ज्ञानता है, हम तो थक गये ।

सिपदआरा--ऐ वाह, बस इतने में ही थक गयीं | इमसे कहिए, शाम तक खेला करें |

अब सुनिए कि एक दोस्त ने मिरज़ा हुमायूँ फ़र को जा कर इत्तिला दी कि इस वक़्त बारा में परियोँ इधर से उधर दौड़ रही हैं । इस वक़्त की केफ़ियत देखने काबिल है | शाहजादे ने यह खबर सुनी तो बोले--भई, खरशखबरी तो सुनायी, मगर कोई तटबीर तो बताओ । जरा आँखें ही सेंक लें।' हाँ, हीरा माली को बुलाओं । जरा देखें ।

हीरा ने आ कर सलाम किया ।

शाहजादा--भई, इस वक़्त किसी दिकमत से अपने बार को सैर कराओं |

हीरा-- खुदाबंद, इस वक़्त तो मा: करें, सत्र वहीं हैं ।

शाहजादा--उब्दू ही रहे, अरे मियाँ, वहाँ सन्नाटा होता तो जा कर क्या करते! सुना है, चारों परियाँ वहीं हैं) बार परिस्तान हो गया होगा | हीरा, ले चल, ठुझे अपने नारायन की कसम ! जो माँगे, फ़ोरन दूँ ।

हीरा--हुआर डी का नमक खाता हूँ या किसी और का १ मगर इस वक़्त मौक़ा नहीं है !

शाहजादा--अच्छा, एक शेर छिख दूँ, वहाँ पहुँचा दो । यह कद कर शाहज़ादा ने यह शेर लिखा--- छकाया

तूने आल्म को साक्री जामे-गुलरग से, हमें भी कोई एक साग़र, दम मी हैं उम्मेदवारों में ।

हीरा यह रुक्क़ा ले कर चला। शाहज़ादे ने समझा दिया कि सिपहआरा को चुपके से दे देना । हीरा गया तो देखा कि अब्बासी और बूटी महरी में तक़रार हो रही है । सुबह के वक़्त अन्बासी हुस्नआरा के लिए; कुम्हारिन के यहाँ से दो शैक्ष-रियाँ छायी थी। दाम एक आना बताया । बड़ी बेगम ने जो यह झैंक्षरियाँ देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी छाओ। महरी वैसी ही शैंक्षरियाँ दो आने को छायी। इस वक़्त अब्बासी डींग मारने छगी कि मैं जितनी सस्ती चीज़ छाती हूँ, कोई दूसरा भला ला तो दे। महरी और अन्बासी में पुरानी चइमक थी। बोलौ--हाँ भई, ठुम क्यों न सस्ती चीज़ छाओ | अभी कमोंसन दो न!

अन्बासी---तुम भी तो किसी जमाने में जवान थीं। बाजार भर को छूट लायी होगी । मेरे मुँह न लगना ।

महरी--होश की दवा कर छोकरी | बहुत बदढ़-बढ़ कर बातें न बना मई ! जम/ने मर की अवारा | और सुनो !

अच्बासी--देखिए हुजूर, यह लाम क्राफ़ जबान से निकालती हैं । ओर में हुजूर का लिहाज करती हूँ । जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं ।

महरी--मैंडह पकड़ कर झुछस देती मुरदार का !

अन्बासी--मुँह ह्ुलस अपने द्ोतों-सोतों का ।

महरी-- हुजूर, अब दम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे ये बातें न सुनी जायैंगी ।

अब्बासी--ऐं, तुम तो बेचारी नन्हीं हो । हमीं गरदन मारने के काबिल हैं ! सच है, और क्या !

सिपहआरा--सारा कुदूर महरी का है। यही रोज़ लड़ा करती है अब्बासी से ।

महरी--ऐ: हुजुर, पीच पी इजार नेमत पायी ! जो मैं ही इ्नगड़ाद हूँ तो बिस्मिछाइ, हुजूर छोंडी को आज़ाद कर दें । कोई बात न चीत, आप ही गाली-गुफ़ते पर आमादा हो गयी ।

जहानारा--- छड़ेंगे जोगी-ज्ोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे । अम्माँजान सुन लेंगी तो हम सबकी खबर लेंगी |

अब्बासी--हुजुर इनसाफ़ से कहें.। पहल किसकी तरफ़ से हुई ।

जद्दनारा--पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो इससे सस्ती चीज़ मिल जाती है। जिसको गाली दोगी, वह बुरा मानेगी ही !

हुस्नआरा- महरी, तुम्दें यह सुझी क्या ह जवानी का क्या ज़िक्र था भव्य |

अभ्बासी--हुजूर, मेरा क़सूर हो तो जो चोर की सज़ा वह मेरी सजा ।

महरी--मेरे अछाह, औरत क़्या, बिस की गाँठ है।

अब्बासी--ञो चादहो सो कह छो, मैं एक बात का भी जवाब न दूँगी ।

महरी--श्धर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। में तो इसकी नस-नस से वाक़िफ़ हूँ |

अब्वासी--और मैं तो तेरी कब्र तक से वाक़िफ़ हूँ !

मदहरी--एक को छोड़ा, दुसरे के बेठी, उसको खाया, अब किसी और को चट करेगी। और बाते करती

है !

सत्तर. ..के बाद कुछ कहे ही को थी कि अब्बासी ने सैकड़ों गालियाँ सुनायीं । ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ़ और खुद दूसरी तरफ़ । द्वीरा माली ने बद कर दुपट्टा दिया तो कह्ा--चल इट, और घुनों | इस मुए बूंदे की बातें | इस पर क्ुका पड़ा । शोर सुनते ही बड़ी बेगम साहब छाठी टेकती हुई आ पहुँची, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को ख़बर भी न हुई।

बड़ी बेगम--यह क्या शोहदापन-मचा था १ बढ़े शर्म की बात है । आख़िर कुछ कहो तो ! यह क्या धमाचोकड़ी मची थी ! क्यों महरी, यह क्या शोर मक्त था!

महरी--ऐ. हुज्र, बात मुँह से निकली और अब्बासी ने टेंडुआ लिया । और क्या बताऊँ।

बड़ी बेगम--कक्यों अन्जासी, सच-सच बताओ | ख़बरदार |!

अन्चासी - (रो कर) हुजूर !

बढ़ी बेगम - अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अन्बासी -- हुजूर, बद्दानारा बेगम से पृछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहद्दा, कोसा, गालियाँ दी, जो ज़बान पर आया, कद् डाछा । ओर हुजूर, इन आँखों की ही क्रसम खाती हूँ, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की |

बड़ी बेगम -जहानारा, क्या बात हुईं थी ! बताओ साफ़्साफ़।

जहानारा -- अम्माँजान, अब्बासी ने कहा कि हम दो शैंझरियाँ एक आने को लाये और महरी ने दो आने दिये, इसी बात पर तक़रार हो गयी ।

बड़ी बेगम--कक्यों महरी, श्सके क्या माने ! क्या जवानों को बाज़ारवाले भुफ़्त उठा देते हैं ! बाल सफ़ेद दो गये, मगर अमी तक अवारापन की बू नहीं गयी। हमने तुमको मौकूफ़ किया, महरी |! आज ही निकल जाओ ।

इतने में मोका पा कर हीरा ने सिपहआरा को शाहज़ादे का खत दिया । सिपह-आरा ने पढ़ कर यह जवाब ल्खा--भई, तुम. तो राजब के जल्दबाज़ हो | शादी-न्याह मी निगोड़ा मैंह का नेवाला है ! तुम्हारी तरफ़ से पेग़ाम तो आता ही नहीं |

हीरा ख़त ले कर चछ दिया।

HINDI TEXT

प्रसंग ७३

कोठे पर चोका ब्रिछा है और एक नाज़क पढैंग पर सुरेया बेगम सादी और हलकी शाक पहने आराम से लेटी हैं | अभी हम्माम से आयी हैं| कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के द्वार और ग्जरे रखे हैं, ठंडीठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिये खड़ी है | इतने में एक महरी ने आ कर कद्दा--दारोग़ा जी हुजूर से कुछ अजे करना चाहते हैं। बेगम साहब ने कहा --अब इस वक़्त कोन उठे | कहो, सुबह को आयें। मदहरी बोली--हुजूर कहते हैं, बड़ा जरूरी क्राम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादस्ताने रहें और दारोग़ा साहब चादर के उस पार बैठे । दारोग़ा साहब ने आ कर कदहा--हुज़ुर, अलाह ने बड़ी खैर की। खदा को कुछ अच्छा ही करना मंजूर था | ऐसे बुरे फँसे थे कि क्या कहें ! बेगम--२, तो कुछ कहोगे भी ! दारोग़ा--हुजूर, बदन के रोये खड़े होते हैं । इस पर अब्बासी ने कहा-दारोग़ा जी, घास तो नहीं खा गये हो ! दूसरी महरी बोली--हुजूर, सठिया गये हैं । तीसरी ने कहा-बौखलाये हुए आये हैं। दारोशा साहब बहुत झल्लाये | बोले--क्या क्रदर होती है, वाह ! इमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियाँ सिर चदी जाती हैं । हुजूर इतना भी नहीं कहती क्लि बूदा आदमी है। उससे न बोलो | बेगम--तुम तो सचमुच दीवाने दो गये हो । जो कहना है, वह कहते क्यों नहीं! दाराग़ा-हुजूर, दीवाना समझे या गधा बनायें, गुलाम आज काँप रहा है। वह जो आज़ाद है, जो यहाँ कई बार आये भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकेत, परले सिरे के बगड़ेबाज, काले जुआरी, धावत शरात्री, ज़माने भर के बदमाश छटे हुए गुगे, एक ही शरीर और बदज़ात आदमी हैं । वूती का पिंजडा ले कर बही औरत के भेष में आया था । आज सुना, किसी नवात्र के यहाँ भी गये थे। वह आजाद जिनके धोखे में आप हैं, वहद्द तो रूम गये हैं। इनका-उनका मुक़ाबिला क्या ! वह आलिप्र-फ़ाजिल, यह बेईमान-बदमाश | यह भी उसने ग़लत कहां कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया । बेगम--दारोग़ा, बात तो तुम पते की कहते हो, मगर ये बातें तुमपे बतायों किसने ! दारोग़ा--हुजूर, वह चंद्ूबाज जो आजाद प्रिरज्ञा के साथ आया था। उस्री ने मुझसे त्यान किया | बेगम -ऐ, है, अल्लाह ने बहुतं बचाया | महरी--और बाते कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था ! दारोग़ा साहब चले गये तो बेगम ने चंद्ृब्राज़ को बुलाया। महरियों ने परदा करना चाहा तो बेगम ने कहा--जाने भी दो | बूढ़े खूसट से परदा क्या !

चंड्बाज--हुजूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है |

बेगम--हाँ, आज्ञाद मिरजा का तो हाल कहो |

चंड्रबाज--उस के काटे का मंतर ही नहीं ।

बेगम--तुमसे कहाँ मुलाक़ात हुई १

चैड़बाज--एक दिन रास्ते में मिल गये |

बेगम--वह् तो क्रेद न थे ! भागे क्योंकर १

चंडूबाज--हुजूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने, किस जादू-मंतर से तीनों को ढेर कर दिया और भांग निकला ।

'बेगम--अल्लाह बचाये ऐसे मूजी से ।

चंड्बाज--हुजूर, मुझे भी खूब सब्जबाग दिखाया।

पहरी--अल्लाह जानता है, में उसकी आँखों से ताड़ गयी थी कि बड़ा नटखट है।

चड़बाज--हुजूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि क्ेद से भाग कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी क़त्ल कर दिया ।

बेगाप्-- एन आदमियों में से निकल भागा !

महरी--आदमी है कि जिन्नात !

अत्बासी--हुजूर, हमें आज डर माल्म होता है। ऐसा न हो, हमारे यहाँ भी चोरी करे |

नवंड्रबाज रुख्सत हो कर गये तो सुरैया बेगम सो गयीं। महसरियाँ भी लेटीं, मगर अब्बासी की आँखों में नींद न थी | मारे खौफ़ के इतनी हिम्मत भी न बाकी रही कि उठ कर पानी तो पीती । प्यास से तालू में काँटे पढ़े थे | मगर दब्की पड़ी थी | उसी बक़्त हवा के झोंकों से एक काग़ज़ उड़ कर उसकी चारपाई के क़रीब खड़खडाया ते दम निकल गया !

सिपाही ने आवाज़ दौ--सोनेवाले जागते रहो ।! और यह काँप उटी | डर था, कोई चिमट न जाये | लाशें आँखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठना-ठन बजा । तब अब्चासी ने अपने दिल में कहा, अरे, अभी बारह ही बजे | हम समझे थे, सबेरा हो गया । एकाएक कोई विहाग की घुन में गाने लगा---

सिपदहिया जागत रहियों, इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और | सिपद्दिया जागत रहिया। अब्बासी सुनते-सुनते सो गयी; मगर थोड़ी देर में ठनाके की आवाज आयी तो जाग उठी । आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पाँव कांपने लगे । इतने में बेगम साहब ने पुकारा--अन्चासी, पानी पिला । अब्बासी ने पानी पिछाया और बोली-- हुजुर, अब कभी लाशॉ-वाशों का जिक्र न कीजिएगा | मेरा तो अजब हालथा | सारी रात आँखों में ही कट गयी।

बेगम--ऐसा भी डर फिस काम का, दिन को शोर, रात को भेड़ |

बेगम साहब सोने को दी थीं कि एक आदमी ने फिर शाना शुरू किया |

बेगम--अच्छी आवाज है !

अब्बासी--पहले भी गा रहा था ।

महरी--ऐं, यह वकील हैं !

कुंछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गयीं ! सबेरे मुँह-अँधेरे महरी उटी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला हूटा पड़ा है। दो संदुक टूटे-फूटे एक तरफ़ रखे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर । गुठ मचा कर कहा--अरे | लुट गयी, हाय लोगों, छुट गयी ! घर में कुदराम मच ग़या । दारोगा साहब दोढ़ पड़े | अरे, यह क्या राजन हो गया | बेगम की भी नींद खुली | यद्द हालत देखी तो हाथ मर कर कह्टा--छुट गयी |

यद्द शोरगुल सुन कर पढ़ोधिनें गुल मचाती हुई कोठे पर आयी और बोलीं-- बदन, यह बमचख कैसा है ! क्या हुआ ! खेरियत तो है !

बेगम--बहन, में तो मर मिटी ।

पड़ोसिन--ज्या चोरी हो गयी ! दो बजे तक तो मैं आप लोगों की गर्तें सुनती रहो | यह चोरी किस वक़्त हुई [

अब्चासी--बहन, क्या कहेँ, हाय |

पड़ोसिन--देखिए तो अच्छी तरह । क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया !

बेगम--बहन, किसके होश ठिकाने हैं ।

अब्बासी--मुझ जल्म जली को पहले ही खटका हुआ था | कान खड़े हो गये; मगर फिर कुछ सुनायी न दिया । मैंने कुछ ख़याछ न किया ।

दारोगा--हुज़ूर, यह किसी शैतान का काम हैं। पार्ऊ तो खा ही डादूँ |

महरी--जिस हाथ से संदुक तोड़े, वह कट कर गिर पड़े। जिस पाँव से आया उसमें कीड़े पड़े । मरेगा बिलख-बिलेख कर ।

अब्बासी--अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले ।

महरी--मगर अब्बासी, तुम भी एक ही कलबिभी हो | वही हुआ | ,

सुरैया बेगम ने असब्ात्र की जाँच की तो आधे से ज़्यादा ग़ायत्र पाया । रो कर बोलीं--लोगों, मैं कहीं की न रददी । द्वाय मेरे अब्बा, दौड़ो। तुम्हारी लाड़िली बेटी आज छुट गयी । हाय मेरी अम्माँजान | सुरैया वेगम अब फुक्ीरिन हो गयी।

पड़ोसिन--भदहन, ज़रा दिल को दारस दो | रोने से और हलाकान ह्ोगी।

बेगम--क्रिस्मत ही पलछट गयी । द्वाय !

पड़ोसिन--ऐ, ! , कोई हाय पकड़ छो। सिर फोड़े डालती हैं। बहन, बहन | खुदा के वास्ते सुनो तो ! देखो, सब मार मिला जाता है । घबराओ नहीं।

इतने में एक महरी ने गुठ मचा कर कहा--हुआअर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है |

अन्बासी- भागते भूत की लेगोटी ही सही ।

लोगों ने सछाहइ दी कि थानेदार को बुझाया जाय, मंगर सूरेया बेगन तो बाने-दार से डरी हुई थी; नाम सुनते दी काँप उठीं और बोलीं--बहन, मार चाहे यह भी जाता रहे, मगर थानेवारढों को में अपनी ब्योदी न नॉघने दूँगी। दारोगा जी ने आँख ऊपर उठायी तो देखा, छत कटी हुई है । समझ गये कि चोर छत काट कर आया था । एकाएक कई कांस्टेबल बाहर आ पहुँचे । कन्न वारदात हुई १ नौ दे तो हम पुकार गये। मीतर-बाहर से बराबर आवाश आयी। फिर यह चोरी कब हुई ! दारोशा जी ने कह्दा--हमको इस टॉय-टोँय से कुछ वास्ता नहीं है जी ! आये बड़ों से रोब जमाने । टके का आदमी और इमसे ज़बान मिलाता है । पड़े-पडे सोते रहे और इस वक़्त तहक्कीक्रात करने चले हैं ! साठ इज़ार का माल गया। कुछ खतर भी है !

कांस्टेबरिलों ने जब सुना कि साठ इज़ार की चोरी हुई तो होश उड़ गये। आपस में यों बातें करने रूगे---

एक---साठ इक्षार | पचास और दुद साठ ! काहे !

दुसरा-- पचाफ दुद साठ नहीं; पचास और दस साठ !

तीसरा--अबी ख़दा-खुदा करो | साठ हज़ार । क्या निरे जवाहिरात ही ये ! ऐसे कहाँ के सेठ हैं !

दारोगा--समझा जायगा, देखो तो सही ! तुम सबकी साक्षिश है ।

एक-- दारोगा, तरकीब तो अच्छी की ! शाबाश !

दूसरा-- बेगम साहब के यहाँ चोरी हुई तो बला से। तुम्दारी तो ह।ड़ियाँ चढ़ गयी | कुछ हमारा भी द्विस्सा है !

इतने में थानेदार साहब आ पहुँचे और कटद्दा, दम मोक़ा देखेंगे । परदा कराया गया। थानेदार रुःडब अंदर गये तो बोले--अक्खाह, इतना बड़ा मकान है! तो क्यों न चोरी हो !

दारोग़ा--क्या ! मकान इतना बढ़ा देखा और आदमी रहते हैं सो नहीं देखते !

थानेदार--रात को यहाँ कोन सोया था !

दारोग़ा-- अन्बासी, सबके नाम लिखवा दो ।

थानेदार---बोलो अन्बासी महरी, रात को किस बज़्त सोयी थीं तुम !

अन्बासी--द्ुजूर, कोई ग्यारह बजे आँखें लगीं |

थानेदार--एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने इतना न चमकना |

अब्बासो- यह बातें में नहीं समझती । चमकना मटकना बाज़ारी औरतें जानें | हम हमेशा बेगमों में रहा किये हैं । यह इशारे किसी और से वीजिए | बहुत थाने-दारी के बल पर न रहिएगा | देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैँ तो पेट से पाँव निकाडे ।

थानेदार---तुम तो चामे से बाहर हुई जाती हो ।

बेगम साइब कमरे में खड़ी कॉप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले । थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा--अपना बयान छिखवाओ ।

२७ |

अम्तासी--हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आँख खुछी । हमने सुराही से पानी सँड़ेछा और बेगम साहब को पिलाया ।

थामैदार--जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोग़हलफ़ी का ज़ुमे महीं लग सकता |

अब्बासी--क्या ईमान छोड़ना है ! जो टीक-ठीक है वह क्यों छिंपाये !

अब्बासी ने अँगुलियों मटका-मटका कर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनायी कि थानेदार साहब की रेखी किरकिरी हो गयी। दारोग़ा साहब से बीले-- आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए | बे-भेदिये के चोरी नहीं हो सकती | दारोगा ने कहा--हमें किसी पर शक नहीं । थानेदार ने देखा कि यहाँ रंग न जमेगा तो चुपके से रखसत हुए |

HINDI TEXT

प्रसंग ७४

छोजी आज़ाद के बाप बन गये तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की क़ैदी इरदम उनकी खिदमत करने को मुरतेद रहते थे। एक दिन एक रूसी फ़ाजी अफ़सर ने उनकी अनोखी सूरत और मारे-मारो भर के हाँथ पाँव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करें । एक फ़ारसीदाँ तुके को मुतरजिम बना कर ख्वाजा साइब से बातें करने लगा ।

अफ़सर--आप आज़ाद पाशा के बाप हैं !

खोजी--बाप तो क्या हूँ, मगर खैर, बाप ही समझिए | अब तो तुम्हारे पंजे में पड़ कर छक्के छूट गये ।

अफ़सर--आप मी किसी छड़ाई में शरीक़ हुए थे !

खोजी-- वाह, और जिंदगी-भर करता क्या रहा १ तुम जैसा गौखा अफ़तर आज ही देखा | इणग केंडा ही गवाही देता है कि हम फ़ोज के जवान हैं। केंडे से नहीं पहचानते ! इसमें पूछने की क्या ज़रूरत है ! दगलेवाली पलटन के रिसारूदार थे । आप दमसे पूछते हैं, कोई लड़ाई देखी है । जनाब, यहाँ बह-वह लड़ाइयाँ देखी हैं कि आदमी की भूख प्यास बंद हो जाय ।

अफ़सर- आप गोली चला सकते हैं !

खोजी-- अजी इज़रत, अब फ़रद खुलवाइए । पूछते हैं गोली चलायी है | जरा सामने आं जाइए तो बताऊँ। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाट हो गयी । खुदा की क़सम, हमसे कुत्ता ग्यारह-बारह कदम पर पड़ा था। घरके दाग़ता हूँ तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ ।

अफ़सर--ओ हो ! आप खूब गोली चलाता है |

खोजी--अजी, तुम हमको जवानी में देखते !

अफ़सर ने इनकी बेतुकी बातें सुन कर हुक्म दिया कि दोनालछी बंदुक छाओ। तब तो मियाँ खोजी चकराये । सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बंदुक चलायी नहीं और न इमको याद आता है कि बंदुक कभी उम्र भर छुई भी हो; मगर, इस वक़्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले इस बंदुक में ग़ज़ तो नहीं होता !

अफ़सर--उडती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो १

खोजी---उड़ती चिड़िया कैसी |! आसमान तक के जानवरों को भून डा ।

अफ़सर--अच्छा तो बंदुक लो ।

खोजी--ताक कर निशाना लगाऊँ तो दरझत की पत्तियाँ गिरा दूँ !

यह कद् कर आप टहलने लगे ।

अफ़सर--आप निशाना क्यों नहीं छगाता ! उठाहए बंदूक |

खोजी ने अमीन में खूब जोर से डोकर मारी और एक राज़ गाने छरो । अफसर दिस में खूब समझ रहा भा कि यह आदमी महज डींगें मारना शानता है। बोला-- अब बंदूक छेते हो या इसी बंदुक से ठुमको निशाना बनाऊँ !

खैर, बड़ी देर तक दिल्ली रही | अफूसर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरे-बालों को हुक््स दे दिया कि इन पर बहुत सख्ती न रखना । रात को खोली ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई खत्म हो जाप्रगी और हम न इधर के रहेंगे, न उधर के। आधी रात को उठे और खदा से दुआ माँगने लगे कि ऐ खदा | आज्ष रात को तू मुझे इस क्रेद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नअर आये और मैं गुल मचा कर कहूँ कि हम आ पहुँचे; आ पहुँचे । आज्षाद से भी मुलाकात हो और खश-खुश वतन चर्ले।

यह दुआ माँग कर सोजी रोने लगे | हाय, अब वह दिन कहाँ नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ा रदे हों | वह दिल्लगी, वद्द चुहल अब नसीब हो चुकी | फिस मजे से कटी जाती थी और किस छुत्फ़ से गड़ेरियां चूसते थे ! कोई खुटियाँ खरीदता है, कोई कतारे चुकाता है। शोर गुल की यह कैफ़ियत दे कि कान पड़ी आावाज नहीं सुनायी देती, मक्खियों की मिन्न-भिन्न एक तरफ़, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ़, कोई औरत चंडूखाने में आ गयी तो और भी चुदल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नज़र एक छोटे से टट्टू पर पड़ी | पहरे-बाले सो रदे थे । खोबी टटटू के पास गये और उसकी गरदन पर हाथ फेर कर कदा--बेटा , कहीं दरा न देना । माना कि तुम छोटे-मोटे ट्टटू हो और ख्वाजा साहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा, मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदाँ मददे खदा। टटटू को खोला और उस पर सवार द्वो कर आहिस्ता-आहिस्ता कैम्प से बाहर की तरफ़ वले | बदन काँप रहा था, मगर जब कोई सौ क्दम के फासिले पर निकल गये तो हक सवार ने पुकारा--कौन जाता है ! खड़ा रह !

खोजी--हम हैं छी ग्रासकट, सरकारी घोड़ों की घास छौलते हैं ।

सवार--अच्छा तो चला जा |

स्ोजी जब जरा दूर निकल आये तो दो-चार बार खूब गुल मचाया-मार लिया, मार लिया | ख्वाजा साहब दो करोड़ रूसियों में से बेदाग़ा निकले आते हं। को भई तुर्कों, ख्वाजा साहब आ पहुँचे ।

अपनी फ्रतह का डंका बचा कर खोजी धोड़े से उतरे और चादर बिछा कर सोये तो ऐसी मीठी नींद आयी कि उम्र भर न आयी थी । घड़ी भर रात बाक़ी थी कि उनकी नींद खुली । फिर घोड़े पर सवार हुए और आगे चले | दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नजदीक एक फ़ौज़ मिली | आपने समझा कि तुर्को की फोज है। चिल्ला-कर बोके--आ पहुँचे; आ पहुँचे ! अरे यारो दौड़ो । रूवाजा साहब के क्रम धो-धो कर पीओ, आज ख्वाजा साहब ने वद्द काम किया कि रुस्तम के दादा से भी न हो सकता | दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे ये और मैं पेंतरे बदलता हुआ दन से ग्रायब, लकड़ी टेकी और उड़ा | टो करोड़ रुसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी महीं | कद्द दिया, लो हम कम्बे होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कह कर चके |

अभी वह यह हाँक लगा दी रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड़ लिये और घोड़े से उतार लिया।

खोजी--ऐँ, कौन दे भई ! में समझ गया मियों आबाद हैं।

मगर आज़ाद वहाँ कहाँ, यह रूसियों की फ़ोज़ थी । उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया | रूसियों ने उन्हें देख कर खब तालियाँ बजायीं | खोजी दिल्रू हो दिल में कटे बाते थे, मगर बचने की कोई तदबीर न सूझतती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं । उधर देखा, इधर पड़ी | स्ोजी त्रिगढ कर बोले-अच्छा गीदी, इस वक़्त तो बेबस हूँ, अबकी फेंसाओ तो कहूँ । क्रसम है अपने कदमों की, आज तक कभी किसी को नहीं सताया । और सब कुछ किया, पतंग उड़ाये, चंढ़ू पिया, अफ़ीम खायी, चरस के दम लगाये, मदक के छींटे उड़ाये, मगर किस मरदुद ने किसी ग़रीब को सताया हो !

यह सोच कर खोजी की आँखों से आँयू निकल आये ।

एक सिपाही ने कह्ा--बस, अब उसको दिक़ न करो | पहले पूछ छो कि यह है कौन आदमी | एक बोला--यह तुकों है, कपड़े कुछ बदछ डाले हैं। दूसरे ने कहा--यह गोइंदा हे, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुत्रह्य हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली। अब ग्वोजी और सब असबाब्र तो दिखाते हैं, मगर अफ़ीम की ढिब्िया नहीं खोलते । कक पक रूसी---इसमें कौन चीज़ है ! क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते १ हम जरूर

खेंगे |

खोजी--ओ गीदी, मारूँगा बंदुक, धुओँ उस पार हो जायगा। खबरदार जो डिबिया द्वाथ से छुई | अगर तुम्हारा दुश्मन हूँ तो मैं हूँ। मुझे चादे मारो, चाहे क्रेद करो, पर मेरी ढिबिया में हाथ न लगाना ।

रूसियों को यक्नीन हो गया कि डिविया में ज़रूर कोई क्रीमती चीज है। खोबी से डित्रिया छोन ली । मगर अब उनमें आपस में लड़ाई होने छगी। एक कहता था, डिबिया हमारी है, दूसरा कहता था, हमारी है। आख़िर यह सलाह हुई कि डिज्िया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बाँट दो जाय। रारज डिबिया खोली गयी तो अफ्रीम निकली | सब के सच शर्मिंदा हुए । एक सिपाही ने कहा--इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए हममें तलवार चलते-चलते बची '

दूसरा बोछा--हसे आग में जला दो |

खोजी--हम कहे देते हैं, डित्रिया इमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायँगे तो क्रयामत भा जायगी | अभी तुम हमें नहीं जानते !

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागरुखाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़ें पिंजरे भें बेद कर दिया। अब मिर्यों खोजी की सिद्टी-पिट्टी भूल गयी । चिल्ला कर बोले--हाय आजाद | अब तुम्हारी रुरत न देखेंगे । खर, खोजी ने नमक का हक़ अदा कर दिया। अब वह भी क्रेद की मुसीबतें झेल रहा है और सिफ़े तुम्दारे लिए । एक बार ज़ालिमों के पंजे से किसी तरह मार-कूट कर निकल भागे थे, मगर तक़दीर ने फिर क्रेद में छा फँसाया । जवॉमरदों पर हमेशा मुसीबत आती है, इसका तो शम नहीं; राम इसी का है कि शायद अब तुमसे मुला-क्रात न होगी । खुदा तुम्हें खश रखे, मेरी याद करते रहना-

शायद वह आये मेरे जनाजे ५? दोस्तो,

आँखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए |

HINDI TEXT

प्रसंग ७५

मियाँ आज़ाद कासकों के साथ साइबेरिया चले ज्ञा रद्दे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूत्र नदी के किनारे जा पहुँचे | घहाँ उनकी तबियत इतनी खूश हुई कि हरी-हरी दव पर लेट गये और बड़ी हसरत से यह ग़ज़ल पढ़ने लगे-- रख दिया सिर को तेरे कातिल पर, हम गिरे भी तो जाके मंजिल पर | आंख जब बिसमिलों में ऊँची हो, घिर गिरे कटके पाय कातिल पर । एक दम भी तड़य से चैन नहीं, देख लो होथ रखके तुम दिल पर | यह ग़ज़ल पदढते-पढते उन्हें हुस्नआरा की याद आ गयी और आँखों से आँसू गिरने लगे । कासक लोगों ने समझाया कि भई, अब वे बातें भूल जाओ, अब्र यह समझो कि तुम वह आज़ाट ही नहीं हो। आजाद खिल-खिला कर हँसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नहीं हैं । कासकों ने घब्रा कर उनको सँमाला और समझाने लगे कि यह वक़्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवाद टीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सको वरना स्वृदा ही हाफ़िज़ है। साइबेरिया से कितने ही क्ैटी भाग आते हैं, मार ठुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो | इतने में वह जद्दाज़ जिस पर सवार हो कर आज़ाद को डैन्यूत्र के पार जाना था, तैयार ईं। गया | तब तो आजाद की आँखों से आँसुओं का ऐसा तार बैँधा कि कासकों के भी रूमाल तर हो गये । जिस वक़्त जहाज पर सवार हुए दिल काबू में न रहा | रो-ग कर कहने लगे - हुस्नआरा, अब्च आजाद का पता न मिलेगा। आज़ाद अब दूसरी नुनिया में हैं, अभ् ख्वाब में इस आज़ाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा | यह कद्दते-कहद ते आज़ाद बेद्दोश हो गये। कासकों ने उनको इत्र सँधाया और स्वृब पानी के छीटे दिये तब जा कर कह्टीं उनकी आँख खुलीं | इतने में जहाज उस पार पहुँच गया तो आज्ञाद ने रूम की तरफ भुंह्द करके कद्दा--आज सत्र झगड़ा खत्म हो गया । अब आज़ाद की कब्र साइबेरिया में बनेगी और कोई उस पर रोनेवाला न होगा । कासकों ने शाम के एक बाग में पडाव डाला और रात मर वहीं आशम किया। लेकिन जब्न सुबह को कूच की तैयारियाँ होने लगीं तो आजाद का पता न था। चारों तरफ़ हु 8 मच गया, इधर-उघर सवार छूटे, पर आजाद का पता न पाया | वह बेचारे एक नयी सुसीक्त में फँस गये ये । सबेरे मियों आज्ञाद की आँख जो खुली तो अपने को अजब हालत में पाया।

शोर की प्यास छगी दुई भी, ताद सूखा जाता था, आँखें भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज़ पर नज्षर डालते ये, छुधली दिखायी देती थी। हाँ, इतना अलबत्ता माद्म हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओभोठ यूख गये थे, गो आँखें लोलते थे, मगर बात करने की ताक़त न थी। इशारे से पानी माँगा और अब पेट भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते हैं कि एक इसीन औरत सामने बेठी हुई है । औरत क्या, हूर थी। आजाद ने कहा, खदा के वास्ते बताओ कि तुम कोन हो ! हमें केसे यहाँ फाँस लायीं, मेरी तो कुछ समझ ही में नहीं आता कासक कहाँ हैं ! डेन्यूब कहाँ हे ! में यहाँ क्यों छोड़ दिया गया ! क्या साइबेरिया इसी मुक़ाम का नाम है ! हसीना ने आँखों के इशारे से कद्दा-- सत्र करो सब कुछ मालूम दो जायगा | आप तुर्की हैं या फ्रांसीती !

आजाइ--मैं द्विदी हूँ | कया यदह्द आप दह्वी का मकान है !

हसीना--नहीं, मेरा मकान पोलेंड में हे, मगर मुझे यह जगह बहुत पसंद है । आइए, आपको मकान की सैर कराऊँ |

बाद ने देखा कि पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर क्रीमती पत्थरों की एफ कोढी बनी है | पहाड़ दादू था और उस पर हरी-हरी घास लददरा रही थी। एक मील के फ़ासिक्ते पर एक पुराना गिरजा का सुनइला मीनार चमक रद्दा था। उत्तर की तरक डैन्यूब नदी अजब शान से लहरें मारती थी | किरशितियाँ दरिया में आती हैं| रूस की फ़ीलें दरिया के पार जाती हैं। मेढा हवा से उछल रहा है। कोटी के अंदर गये तो देखा कि पद्दाड को काट कर दीवार बनी हैं । उसकी सजावट देख कर उनकी आँखें खुल गयीं । छत पर गये तो ऐसा मादूम हुआ कि आउमान पर जा पहुँचे । चारों तरफ़ पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों इरी-हरी दूब से लद्दरा रही थीं। कुदरत का यह तमाशा देख कर आज़ाद मस्त दो गये और यह शेर उनकी जबान से निकला---

छगी है मह की क्षद्वी, बार में चलो झुल,
कि शलने का मजा भी इसी बहार में है।
यह कौन फूटके रोया कि दर्द की आवाण,
रची हुई जो पहाड़ों के आवद्यार में द।

हसीया--मुझे यह जगइ बहुत पसंद है । मेंने जिंदगी भर यहीं रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यहीं रहते तो बड़े मक्षे से लिंदगी कटती !

आजाद -- यह आपकी मिदरवानी है ! मैं तो लड़ाई खत्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चछा जाऊंगा !

हसीना--श्स खयाल में न रदिएगा, अ» इसी को अपना वतन समझ्ि्िए ।

आलाद--मेरा यहाँ रइना कई जानों का गारक हो जायगा। बिस खातून ने मुझे छडाई - शरीक़ होने के लिए यहाँ भेजा है, वह भेरे इंतजार में रो-रो कर जान दे देगी |

हसीना - आपकी रिहाई अब किसी तरइ मुमकिन नहीं । अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का खयारू छोड़ दीनिए, वरना सारी जिंदगी साह-बेरिया में काटनी पड़ेगी ।

आनब्लाद--इसका कोई दाम नहीं, मगर कोल जान के साभ है ।

हसीना---मैं फिर समझाये देती हूँ । आप पछतायेंगे ।

आजाद---आपको अख्तियार है ।

यह सुनते ही उस औरत ने आज़ाद को फिर क्रेदखाने में भेजवा दिया ।

अब मिर्यों ख़ोजी का हाल सुनिए । रूसियों ने उन्हें दीवाना समझ कर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फ़ोज में पहुँच कर दून की लेने लगे | इमने यों रूसियों से मुक़ाबिला किया और यों नीचा दिखाया । एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भी हो गयी, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया | टेंगोट कसा और ख़दा का नाम ले कर ताल ठोंकके अखाड़े में उतर पड़ा, वह भी दाँव-पेंच में बढ़ने था और हाथ-पाँव ऐसे कि क्या कहूँ । मेरे दाय-पाँव से मी बड़े ।

एक सिपाहौ--ए, अबी हम न मानेंगे । आपके द्वाथ-पाँव से ही हाथ-पाँव तो देव के भी न होंगे !

सतोजी--बस, ज्यों ही उसने हाथ बढ़ाया, मैंने हाथ बाँध लिया। फिर जो जोर करता हूँ तो द्ाथ खट से अल्ग !

सिपादी--अरे, हाथ ही तोड़ डाले । बेचारे को कहीं का न रखा !

स्वोजी--बस, फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अंटी दी, घम से गिरा । तीसरा आया, चपत जमायी और घर दबाया । चौथा आया, अडंगा मारा

सा धम से गिरा दिया | पाँचवाँ आया और मेंने मारे ऋरौलियों के कचूमर 'नेकालछू डेया |

सिपाही--आपने ब्रुरा किया । ताक़तवर छोर कमज़ोरों पर रहम किया करते हैं |

सं,जी---तब कई सवार तोपें लिये हुए आये; मगर मैंने सबको पटका। आदि कीई सत्तर आदमी मिल कर मुझ पर टूट पड़े तब जाके कहीं में गिरफ़्तार हुआ |

सिपाही--बस, सत्तर ही | ससर आदम्तियों को तो आप पीस कर धर देते | कम में कम कोई दो सौ तो ज़रूर होंगे !

जोजी--श्ूठ न बोूँगा, मुझे सबों ने रखा ग्डी इजत के साथ। रात भर तो में थहीं रहा, सबेरा होते ही करौली ले कर ललकारा कि आ जाओ जिसको आना द्वो, बंदा चलता है । बस कोई दो करोड़ रूसी निकल पड़े--लेना-लेना ! अरे मेंने कद्दा कि किसका लेना और किसका देना, आ जा जिसे आना हो) खुदा की कसम जो किसी ने चूँ भी की हो | सब के सब डर गये ।

तु समझ राये कि निरा जाँगदू है। खोजी ने यही समझा कि मेंने इन सबों को उल्लू बनाया । दिने भर तो पीनक छेते रहे, शाम के वक़्त हवा खाने निकले । इत्ति-फ्राक्क से राह में एक गधा मिस गया । आप फ़ौरन गधे पर सवार हुए और टिक-टिफ करते चले | थोड़ी द्वी दूर गये थे कि एक आदमी ने ललकारा--रोक ले गधा, कहाँ लिये जाता है ! खोजी--हट जा सामने से ।

जवान -- उतर गधे से । उतरता है या मैं दूँ खाने मर को !

खोजी--तू नहीं छोड़ेगा, निकाल करौली फिर !

आखिर, उस जवान ने खोज्नी को गधे से ढकेल दिया, तब आप चोर-चोर का गुल मचाने लगे । यह गुरू सुन कर दो-चार आदमी आ गये और खोजी को चपतें जमाने लगे।

खोजी--तुम लोगों की क्रजा आयी है, मैं घुनके रख दूँगा।

जवान--चुपके से घर कीं राह लो, ऐसा न हो, मुझे तुम्हारी खोपड़ी सुदठानी पड़े ।

इत्तिफ़ाक़ से एक तुर्की सवार का उस तरफ़ से गुजर हुआ । खोजी ने चिला कर कह --दोहाई है सरकार की ! यह डाकू मारे डालते हैं ।

सवार ने खोजी को देख.कर पूछा--तुम यहाँ कहाँ !

खोजौ--ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझ कर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डाटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। छोजी शेर ही गये । एक के

कान पकड़े और कदह्दा, आगे चल | दूसरे पर चपत ज़मायी ओर कहा, पीछे चल ।

इस तरह स्ोजी ने इन बेचारों की बुरी गत बनायी, मगर पड़ाव पर-पहुँच कर उन्हें छोड़वा दिया ।

जब सब लोग खा कर लेटे तो" खोज़ी ने फिर डींग मारनी शुरू की ५ एक आर में दरिया नहाने गया तो त्रीनोबीच में जा कर ऐसा ग़ोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ |

एक सिपाही--तब्र तो आप यों कद्दिए कि आप ग्ोताखोरों के उस्ताद हैं। कल जरा हमें भी ग़ोता ले कर दिखाइए ।

खोजी--हाँ-हाँ, जब कहो.।

सिपाही-- अच्छा तो कल की रही |

खोजी ने समझा, यह सब रोब में आ जायेंगे। मगर वे एक छठे गुगे । दूसरे दिन उन सबों ने खोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले | पड़ाव से दरिया साफ़ नज्षर आता था । खोन्नी क बदन के रोंगटे खड़े हो गये। भागने द्वी को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो हर्कों ने उनके कपड़े उतार लिये। ख्केजी की यह कैफ़ियत थी कि कलेजा थरथर कांप रहा था, मगर ज़बान से बात न निकल्ती थी | जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे-- भाइयो, मैरी आग के क्यों दुश्मन हुए हो ! अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, ठुम्दारे सबब से, इतनी जहमत उसी. केद हुआ और अब तुम छोग दँसी-हँसी में मुझे झुच्चा देना चाइते हो ।

ग़रल ख्ोजी बहुत गिड़गिडाये, मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गये तो कोशने लगे--ख़दा तुमसे सम्रश्े | यहाँ कोई अफ़तर भी नहीं है। न हुई करौली, नहीं इस धक़्त जीता चुनवा देता । खदा करे, तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे | सब के सब कपड़े उतार लिये, गोया उनके बाप का माल था| अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ्ष देंगा। मगर दिव्लगीबाज़ों ने इतने ग़ोते दिये कि वे बेदम हो गये और एक ग्ोता खा कर डूब गये !

HINDI TEXT

प्रसंग ७६

आज़ाद को साइबेरिया भेज कर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया | वहाँ की आब-हवा उसको ऐसी पसंद आयी कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस क्ल्ा-रिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा खढ़ा-हुआ है। हैरत हुई कि या खूदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमे कहाँ से आ गये | एक औरत को भेजा कि जा कर पता लगावे फि ये लोग कौन हैं । वह औरत जो खेमे में गयी तो कया देखती है कि एक जवाहिरनिगार तरूत पर एक हूरों को दरमानेवाली शाहबादी बैठी हुई है | देखते ही दंग हो गयी | जा कर मिस बल्लारिसा से बोली--हुज्र, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा, अगर ख्वात्र नहीं तो जादू ज़रूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलाये ले ।

क्लारिसा--तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कोन !

लौंडी--डुज्र, मुझ्न पर तो ऐसा रोब छाया कि मुँह से बात ही न निकडी | हाँ, इतना मालूम हुआ कि एक रईसज्ादी है और सैर करने के छिए आयी हैं।

इतने में बह ओरत खेमे से बाहर निकल आयी । क्लारिसा ने झुक कर उसको सलाम किया ओर चाहा कि बढ़कर दह्वाथ मिलाये, मगर उसने क्लारिसा की तरफ़ तेज़ निगहों से देख कर मुँड फेर लिया । वह कोइहक्राफ़ की परी मीडा थी | जब से उसे मादूम हुआ था कि क्कारिसा ने आज़ाद को साइवेरिया भेजवा दिया है, वह उसके खून की प्यासी हो रद्दी थी। इस वक़्त कलारिसा को देख कर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौक़ा फिर हाथ न आयेगा, मगर फिर सोचा कि पहले नरमी से पेश आाऊँ | बातों-बातों में सात माजरा कह सुनाऊँ, शायद कुछ पसीजे |

क्लारिसा-तुम यहाँ क्या करने आयी दो !

मीडा--मुसीबत खींच लायी है, और क्या कहूँ | लेकिन आप यहाँ केसे आयीं !

क्लारिसा--मेरा भी वही हाल है! वह देखिए, सामने जो क्रत्र हे उसी में वह दफ़न है जिसकी मौत ने मेरी जिंदगी को मौत से बदतर बना दिया है। द्वाय | उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने है, मगर मेरे सिवा किसी को नज्वर नहीं आती |

मीडा--मैं भी उसी मुसीज्नत में गिरफ़्तार हूँ । ज्लिस जबान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया, वह अब नज़र नहीं आता, उसको एक जाहिम बाग़वान ने बाग स छुदा कर दिया ' खुदा जाने, वह गरीब क़िन जंगलों में ठोकरें खाता द्वोगा ।

क्लारिसा--मगर तुम्हें यह तसकीन तो है कि तुम्हारा यार भिंदा है और कभी न कभी उससे मुलाक़ात होगी। मैं तो उसके नाम कोरो चुकी। मेरे और उसके माँ-बाप शादी करने पर राश्री थे, हम खश थे कि दिल की भुरादें पूरी होंगी मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान दूट पढ़ा, मेरे प्यारे को फ़ौब में शरीक होने

का हुक्म मिला | मैंने युना तो जान सी निकक गयी। लाख समझाया, मगर उसने एक न सुनी । जिस रोज महाँ से रवाना हुआ, मैंने खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहाँ रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अखबारों में लड़ाई के दाल पढ़ कर दिल को तसलल्ली देती थी। एकाएक अखबार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया, मगर वह बेचारा जान से मारा गया । उस पाशा का नाम आजाद है। बह खबर सुनते ही मेरी आँखों में खन उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के बन का बदला आज़ाद से दँगी। बह तय करके यहाँ से चली और जत्र आशाट मेरे हाथों से बच गया तो मेने उसे साइबेरिया भेजवा दिया | मीडा यह सुन कर बेहोश हो गयी |

HINDI TEXT

प्रसंग ७७

जिस वक़्त खोजी ने पहला ग़ोता खाया तो ऐसे उल्झे कि उभरना मुश्किल दो गया । मगर थोड़ी ही देर में तुकों ने शोते लगा कर इन्हें दूँठढ निकाला । आप किसी कदर पानी पी गये थे । बहुत देर तक तो ड्ोश ही ठिकाने न ये | जब ज़रा होश आया तो सबको एक सिरे से गालियाँ देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज़ में जरा टाँठा हो रूँ तो इनसे खूब समझेँ | डेरे पर आ कर आज़ाद के नाम खत लिखने लगे | उनसे एक आदमी ने कह दिया था कि अगर किसी आदमी के नाम ख़त भेजना हो और पता न मिलता द्टो तो ख़त को पत्तों में लपेट दरिया के किनारे खडा हो ओर तीन बार 'भेजो-मेजो” कह कर खत को दरिया में डाल दे, खत आप ही आप पहुँच जायगा । ख़ोजी के दिल में यह बात बैठ गयी। आज़ाद के नाम एक ख़त लिख कर दरिया में डाल आये । उस खत में आपने बद्दादुरी के कार्मों की ख़बर डींगें मारी थीं |

रात का वक़्त था, ऐसा अंधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी का दिल सोया हो। ठंडो हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रूह तक काँप जाती थी । एका-एक रूस की फ़ोज़ से नक्कारे की आवाज़ आयी। माद्म हुआ कि दोनों तरफ़ के लोग लड़ने को तैयार हैं | खोजी घत्ररा कर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहाँ से आ रही हैं ! इतने में तुकीं फ़ौज़ भी तैयार द्वो गयी और दोनों फ़ौजें दरिया के किनारे जमा हो गयीं। खोजी ने दरिया की सूरत देखी तो कोंप उठे । कहां-- अगर खुइकी की लड़ाई होती तो हम भी आज जोहर दिखाते | यों तो सब अफ़सर और सिपाही ललकार रहे थे, मगर खोजी की उमंग सबसे बढ़ी हुई थीं। चिल्ला चिल्ला कर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खश्क हो जाय तो में फिर मज़ा दिख-स्ज । एक हाथ में परे के परे काट कर रख दूँ ।

गोला चलने लगा | तुर्कों की तरफ़ से एक इंजीनियर ने कहा कि यहाँ से आघ मील के फ़ासिले पर किश्तियों का पुल बाँधना चाहिए । कई आदमी दोड़ाये गये कि जा कर देखें, रूसियों की फ़ोज किस-किस मुक्राम पर हैं । उन्होंने आ कर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों का नाम-निशान नहीं हे । फ़ौरन पुल बनाने का इंतजाम होने लगा । यहाँ से डेढ़ कोस पर पेंतीस किश्तियाँ मौजूद थीं। अफ़सर ने हुक्म दिया कि उन किश्तियों को यहाँ छाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए, आये । उनमें से एक खोजी थे ।

खोजी--पेंतीस किश्तियाँ यहाँ से आधा कोस पर मुस्तैद हैं। मेंने सोचा, जब तक सवार तुम्दारे पास पहुँचँगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियाँ आयें तब तक यहाँ खुदा जाने क्या हो जाय, इसलिए, एक सवार को ले कर फौरन किश्तियों को इधर

के आया |

फ़ौज़ के अफ़सर ने यद्द सुना तो खोजी की पीठ ठोंक दी और कद्दा- शाब्राश ! इस वक़्त तो तुमने हमारी जान बचा दी |

खोजी अकड़ गये | बोले---जनाब, दम कुछ ऐसे-बैसे नहीं हैं| आज हम दिखा देंगे कि हम कोन हैं। एक-एक को चुन-चुन कर मारूँ !

इतने में इंजीनियरों ने फुर्ती के साथ किश्ती का पुल बाँधने का इंतजाम किया | जब पुल तैयार हो गया तो अफ़सर ने कुछ सवारों को उस पार भेजा | खोजी भी उनके साथ द्वो लिये। जब पुल के बीच में पहुँचे तो एक दफ़ा गुल मचाया--ओो गीदी, हम आ पहुँचे ।

तुर्कों ने उनका मुँह दबाया और कद्दा--चुप !

इतने में तुर्कों का दस्ता उस पार पहुँच गया । रूसियों को क्या ख़बर थी कि तुर्क रू'गा क्या कर रहे हैं । इधर खोजी जोश में आ कर तीन-चार तुकों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले । जब्न उनको मादम दो गया कि रूसी फ़ौज़ थक गयी तो तुर्को ने एक दम से धावा बोल दिया । रूसी घबग उठे । आपस में सलाह की कि अब भाग चल | खोजी भी घोडे पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोडे को एक एड दी और भागते सिपाहियों में से सात आदम्ियों के टुकडे-टुकडे कर डाले । तुकों फ़ोज में वाह-वाह का शोर मच गया | ख्वाजा साइब अपनी तारीफ़ छुन कर ऐसे खश हुए कि परे में घुस गये और घोड़े को बढ़ा-बदा कर तलवार फेंकने लगे । दम के दम में रूसी सवारों से मैदान स्थवाली कर दिया ! तुर्की फ़ौड़ में खशी क शादियाने बजने लगे । ख्वाजा साहब के नाम फ़तह लिखी गयी | इस वक़्त उनके दिमारा सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात पर ब्िगढ़ते । हुक्म दिया--फ़ोज़ के जनरल से कही, आज हम उनके साथ खाना खायेंगे । खाना खाने बैठे तो मुँह बनाया, वाह ! इतने बड़े अफ़सर और यह खाना | नं मीठे चावल, न फिरनी, न पोलाव । खाना खाते वक़्त अपनी बहादुरी की कथा कहने छगे--वल्ाह, सबों के हौसले पस्त कर दिये। ख्वाजा साहब हैं किबातें! मेरा नाम घुनते ही दुश्ममनों के कलेजे काँप गये | हमारा वार कोई शोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जाके इस काबिल हुए कि रूसियों के लड्कर में अकेले घुस पड़े ! और हमें डर किसका है ! बहिइत के दरवाज़े खुले हुए हैं ।

अफ़सर--- हमने वज़ीर-जंग से दरख्वास्त को है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले ।

खोजी--इतना ज़रूर लिखना कि यह आदमी दगलेवाली पलटन का रिसाल-दार था।

अफ़सर--दगलेवाली पलटन कैसी ? मैं नहीं समझा ।

खोजी---तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिंदी की चिंदी निकाछते हो | अवध का हाल मादूम है या नहीं ! अवध से बढ़ कर दुनिया में और कौन बादशा हत होगी !

अफ़तर--हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई खिताब मिले तो आप पसंद करेंगे |

खोजी--बाह, नेकी और पूछ-पूछ !

उस दिन से सारी फ़ोज में खोजी की भूम मच गयी । एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुकों पर गोले उतारने थुरू किये | तुक कोग आराम से लेटे हुए थे | शकाएक तोप की आवाज़ सुनी तो घबरा गये। जब तक मुक़ाबला करने के डिए तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आये । उस वक़्त खोज्नी ने अपने सिपा-हियों को छलकारा, तलवार खींच पहाड़ी पर चढ़ गये और कई आदमियों को जइमी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गयी | बिसे देखो, उन्हीं की तारीफ़ कर रहा था

एक सिपाही - आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता | अब आपके वास्ते कोई खिताब तजवीजा जायगा ।

खोजी--मेरा आबाद आ जाय तो मेरी मिहनत ठिकाने छगे, वरना सत्र हेच है।

अफ़सर--जिस वक्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गये |

खोजी--गिरते द्वी सैंभल भी गये ये ।

अफुसर--चित मिरे ये !

खोजी--जी नहीं | पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा

अफ़सतर--जरा सा तो आप का कद है और इतनी हिम्मत !

खोजी--क्या कह, जरा सा कद, किसी पहलवान से पूछिए | कितनी ही कुश्तियाँ जीत चुका हूँ । |

अफ़सर--हमसे लड़िएगा !

खंनी-आप ऐसे दस हों तो कया परवा !

फ़ौज के अफसर ने उसी दिन बजीर-जंग के पास खोजी की सिफ़ारिश लिख भेजी |

HINDI TEXT

प्रसंग ७८

खोजी ये तो मखसरे, मगर वफ़ादार ये। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सत्र रहती थी। बराबर याद किया करते थे | जब उन्हें माठ्म हुआ कि आज़ाद को पोर्लड की शाहजादी ने क्रेद कर दिया है तो वह आजाद को खोजने निकले । पूछते-बूछते किसी तरह आजाद के कैदखाने तक पहुँच द्वी तो गये । आज़ाद ने उन्हें देखत ही गोद में उठा लिया ।

खोजी--आज्ाद, आजाद, अरे मियाँ, तुम कोन हो !

आज़ाद--ओ-हो-हो |

खोजी--भाईबान, तुम भूत हो या प्रेत, हमें छोड़ दो। में अपने आजाद को ढूँदने बाता हूँ ।

आजाद--पहले यह बताओ कि यहाँ केसे पहुँचे !

खोजी-- सब उतलायेंगे मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्दारी यह गति केधी हो गयी !

आजाद ने सारी बाते खोज़ी को समझायीं, तो आपने क़द्दा--वल्लाह, निरे गाउदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के छाले पड़े हैं, तुमको चाहिए कि बिस तरह मुमकिन हो, शाहज़ादी को खुश करो, तुमको तो यद्द दिखाना चाहिए कि शाह-जादी को छोड़ कर कहीं जाओगे ही नहीं । खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हार। ऐतजार होगा।

आज़ाद-हो ।ेड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की करते हो, मगर यह तक़रीर कौन करे !

सोजी--और हम आये क्या करने हैं ! यह कद् कर आप शाहइज्ादी के सामने आ कर खड़े हो गये | उसने इनकी सूरत

देखी तो हँस पड़ी । मिर्यों क्लोजी समश्ले कि हम पर रीक्ष गयी। बोले--क्या लड़-बाओगी क्या | आलाद सुनेगा तो ब्रिगड़ उठेगा। मगर वाह रे मैं ! जिसने देखा, बही रीक्षा और यहाँ यह हाल है कि किसी से बोलते तक नहीं। एक हो तो बोद, दो हो तो बोलूँ, चार निकाइ तक तो जायज्ञ हैं, मगर जब इंद्र का अखाड़ा पीछे पढ़ जाय तो क्या करूँ !

शाहइनादी--जञरा बैठ यो जाइए । यद्द तो अच्छा नहीं माठ्म होता कि मैं बेटी रहूँ ओर आप खड़े रहें ।

खोजी--पहले यह बताओ कि दहेज क्या दोगी !

अरबिन -- और अकड़ते किस बिरते पर हो। सख्बी हड्डियों पर यह ग़रूर !

खोबी--तुम पहलछवानों कौ बातें कया जानो। यह चोर-बदन कहलाता है;

+ अखाड़े में उतर पढ़ें तो फिर केफ़ियत देखो ।

अरबिन--टेनी मुरे के बराबर तो आपका क़द है ओर दावा इतना हूम्बा-चौडा !

खोजी--तुम गँवारिन हो, ये बातें क्या जानो । तुम क्रद को देखा चाहो और यहाँ रूम्बे आदमी को लोग

बेवकूफ़ कहते हैं। शेर को देखो और ऊँट को देखो । मिल में एक बड़े आंडील जवान को पटकनी बतायी | मारा, चारों खाने चित। उठ कर पानी भी न माँगा ।

खेर; बहुत कहने-पुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टाँगें कुरसी पर रख लीं और बोले--अब दहेज कु हाल बताओ । लेकिन मैं एक शत से शादी करूँगा, इन सब लोडियों को महू बनाऊँगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रखूँगा। ताऊस-महल, गुलाम-महल. . .।

शाहजादी--तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए ।

खोजी--हँसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो किसी पहलवान को बुलाओ । अगर दम कुदरती निकालें तो शादी मंजूर १

शाहजादी ने एक मोटी-ताज़ी दबशिन को बुलाया। झोजी ने आँख ऊपर उठायी तो देखते हैं कि एक काली-कढूटी देवनी दवाथ में एक मोटा सोटा लिये चली आती है | देखते ही उनके होश उड् गये। हचशिन ने आते ही इनके कंधे पर हाथ रखा तो इनकी जान निकल गयी | बोले-- हाथ इटाओ ।

हबशिन--दम हो तो हाथ इटा दो ।

खोजी- मेरे मुँह न लगना, खबरदार !

हबशिन ने उनका हाथ पक्ड लिया और मरोडने लगी | खोजी झल्ण झल्ला कर कहते थे, हाथ छोड़ दे | हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊँगा, मुझसे बुरा कोई नहों।

हबशिन ने हाथ छोड़ कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो जमीन से छः आल ऊँचे !

हबशिन--कहो, शादी पर राजी दो या नहीं !

खोजी---औरत समझ कर छोड़ दिया । इसके मुँड कौन लगे !

इस पर हबहिन ने ख्वाजा साइब को गोद में उठाया और के चली | उन्होंने सेकड़ों गालियाँ दीं- ख़दा तेरा घर खराब करे, तुम पर आसमान दूट पड़े, देखो, मैं कहे देता हूँ कि पीस डालूँगा । में सिफे इस सबब से नहीं बोलता कि मर्द हो कर औरत ज़ात से क्या बोलूं। कोई पहलवान होता तो मैं अमी समझ लेता, और सम-झता क्या १ मारता चारों खान चित |

अरबिन--खेर, दिल्लगी तो हं। चुकी, अब यह बताभ्ो कि आज़ाद से तुमने क्या कहा | वद्द तो आपके दोस्त हैं।

खोजी--फैंड, तुमको किसी ने बहका दिया, बह दोस्त नहीं, लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक ख़त लिखा है, ले जाओ और उसका जवाब छाओ !

अरबिन आपका खत ले कर आज्जाद के पास पहुँची और बोली--हुजूर, आपके वालिद ने इस ख़त का जवाब माँगा है!

आजाद--किसने माँगा है ! तुमने यह कौन छफ्ज़ कहा !

अरबिन - हुजूर के वालिद ने. ..। वह जो ठेंगने से आदमी हैं ।

आजाद--वह सुअर मेरे घर का गुलाम है। वह मसखझख़रा है। हम उसके खत का जवाब नहीं देते |

अरबिन ने आ कर'खोजी से कहा--आपका खत पढ़ कर आपके लड़के बहुत ही खफ़ा हुए ।

खोजी--नालायक है कपूत, जी चाहता है, अपना छिर पीट हूँ |

शाहज़ादी ने कह्ा--जा कर आजाद पाशा को बुला छाओ, इस झगड़े का फ़ेसला हो जाय ।

जरा देर में आजाद आ पहुँचे | खोजो उन्हें देख कर सि2पिटा गये ।

इधर तो शाहइज़ादी छोजी के साथ यों मशाक्र कर रदह्दी थी। उघर एक लौंडी ने आ कर कहा--हुजूर, दो सवार आये हैं और कहते हैँ कि शाहज़ादी को बुलाओ | हमने बहुत कहा कि शाहजादी साइब को आज फ़ुरसत नहीं है, मगर वह नहीं

नते |

शाहजादी ने खोजी से कहा कि बाहर जा कर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं ! खोजी ने जा कर उन दोनों को खूब ग़ौर से देखा और आ कर बोले-- हुजर, मुझे तो रईसज़ादे मादूम होते हैं। शाहज़ादी ने जा कर शाहजादों को देखा तो आज़ाद भूल गये। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ़ न होने पाये। आजाद तो इस खयाल में बैठे थे कि शाहजादी आती होगी और शाहज़ादी नये मेहमानों की खातिरदारी का इंतजाम कर रही थी। लोडियाँ भी चल दीं, खोजी और आजाद अकेछे रह गये |

आजाद--मादूम होता है, उन दोनों लौंडों को देख कर लटटु हो गयी |

खोजी--तुमसे तो पहले ही कहते थे, मगर तुमने न माना । अगर शादी हे गयी होती तो मजाल थी कि गोरों- को अपने घर में ठहदराती ।

आजाद-»ो चाहता हे, इसी वक़्त चल कर दोनों के सिर उड़ा दूँ।

खोजी--यही तो तुममें बुरी आदत है। ज़रा सत्र से काम छो, देखो क्या होता है |

HINDI TEXT

प्रसंग ७९

इन दोनों शाहज़ादों में एक का नाम मिस्टर क्लवाकं था और दुसरे का हेनरी | दोनों की उठती जवानी थी । निदहायत खुबदधूरत। शाहजादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बाते सुनने से उसका ज्री न भरता था | मिर्यों आज़ाद तो मारे जल्न के अपने महल से निकलते दी न थे । मगर खोजी टोह लेने के लिए दिन में कई बार यहाँ आ बैठते थे । उन दोनों को भी ख़ोजी की बातों में बड़ा मजा आता ।

एक दिन खोजो दोनों शाहज़ादों के पास गये, तो इत्तिफ़ाक् से शाहजादी यहाँ न थी। दोनों शाहज़ादों ने खोजी की बड़ी खातिर की। देनरी ने कहा--ख्वाजा साहब, हमको पहचाना !

यह कह कर उसने टोप उतार दिया! खोजी चौंक पड़े। यह मीडा थी। बोले -- मित्र मीडा, खूब मिलीं |

मीडा--चुप-चुप | शाहज़ादी न जानने पाये। हम दोनों इसी छिए आये हैं कि आज़ाद को यहाँ से छुड़ा ले जायें ।

सोजी--अच्छा, क्या यह भी ओरत हैं !

मीडा--यह वदह्दी औरत हैं जो आजाद को पकड़ ले गयी थीं |

खोजी--अक्ाह, मिस क्लारिसा | आप तो इस क़राजिल हैं कि आपका बायाँ कदम के |

मीडा--अब यह बताओ कि यहाँ से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है!

खोजी--हाँ, वद्द तदबीर बताऊँ कि कभी पट द्दी न पड़े ! यह शाहजादी बड़ी बीनेवाली है, इसे खब पिछाओ और जत्र बेद्दोश हो जाय तो ले उड़ो ।

खोजी ने जा कर आल्ादसे यह क्रिस्सा कहा | आश्ज्ञाद बहुत खुश हुए | बोले-- मैं दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था ।

खोजी--मिस क्लारिसा कहीं तुम्हें दर न दे ।

आजाद---अजी नहीं, यह मुहब्बत की धात्तें हैं ।

स्ोज़ी-- अभी ब्रा देर में महफ़िल जमेगी। न कद्दोगे, कैसी तदबीर बतायी !

खोजी ने ठीक कद्दा था । थोड़ी दी देर में शाहक्लादी ने 'इन दोनों आदमियों को बुला भेजा । ये लोग वहाँ पहुँचे तो शराब के दौर चल रददे थे ।

शाहजादी--आज्न हम शर्तं लगा कर पियेंगे ।

देनरी--मंजूर । जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। नो पहले छोड़ दे वह हारा ।

कृराक--(आशन्नाद से) तुम कोन हो मिर्यों, साफ़ बोलो |

आजाद--मैं आदमी नहीं हूँ, देवज़ाद हूँ। परियाँ मुझे खब जानती हैं ।

क्खारिसा -- डडता है मुससे ओ सितमईज्ाद किस लिए, बनता है आदमी से परीज़ाद किस रिए ! क्खरिसा ने झाहबादी को इतनी शराब पिलायी कि वह मस्त हो कर झमने लगी | तब आजाद भे कहा--ख्वाजा साहब, आप सच कहना, हमारा इश्क सचआ हे या नहीं। मीढा, खुदा जानता है, आज का दिन मेरी जिंदगी का सबसे मुबा-रक दिन है | किसे उम्मेद थी कि इस क्रेद में तुम्हारा दीदार होगा १ सखोजी-बहुत बदको न भाई, कहीं शाहजादी मुन रही हो तो आफ़त आ जाग। आजाद--बह इस वक़्त दूसरी दुनिया में हे । खोजी-- शाहजादी साहब, यह सब भागे ना रहे हैं, जरा होदा में तो आइए | |, आजाद--अबे चुप रह नालछायक्र | मीडा, बताओ, किस तदबीर से भागोगी ! मगर तुमने तो यह रूप बदस्म कि खुदा की पनाह | मैं यही दिस में लोचता था कि ऐसे हसीन शाहजादे कहाँ से आ गये, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। बल्लाह, जो ज़रा भी पहचाना हो । - मिथ कक्लारिसा, तुमने तो राजब ही कर दिया | कौन जानता था कि साइबेरिया भेज कर ठुम मुझे छुड़ाने आओगी ! मीडा--अब तो मौका अच्छा है; रात ज़्यादा आ गयी है। पहरेवाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें |

आज़ाद अस्तबल में गये और चार तेज़ घोड़े छाँट कर बाहर लाये। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गयीं, मगर खोजी की हिम्मत छूट गयी, डरे कि कहीं गिर पड़े तो हड्डी-पयसली चूर हो जाय। बोले--भई, तुम लोग जाओ; मुझे यहीं रहने दो | शाइज़ादी को तसलक्ली देनेवाला भी तो कोई चाहिए । में उसे बातों में लगाये रखूँगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाद्दया तो एक इफ़्ते के अंदर कुस्तु नतुनिया में तुमसे मिलेंगे ।

यह कह कर खोजी तो इधर चले और वे तीनों आदमी आगे बढ़े। क्दम-कदम पर पीछे फिर-फिर कर देखते थे कि कोई पकड़ने आ न रहा हो । सुबह दोते-होते ये लोग डैन्यूब के किनारे आ पहुँचे और घोड़ों से उतर दरी-दरी घास पर टह-लने गे | एकाएक पीछे से कई सवार घोड़े दौड़ाते आते दिखायी पड़े । इन लोगों ने अपने घोड़े चरने को छोड़ दिये ये । अब भागे कैसे | दम के दम में सब के सब सवार सिर पर आ पहुँचे और इन तीनों आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया | अकेले आजाद मला तीस आदमियों का क्या मुझाबला करते !

दोपहर द्वोते-होते ये छोग शाहज़ादी के यहाँ जा पहुँचे । शाइल्रादी तो ग़स्से से भरी बैठी थी। अंदर ही से कहलछा भेजा कि आज़ाद को क्रैद कर दो | यह

दे कर शाहज़ादों को देखने के छिए बाइर निकली तो शाहजादों की जगह दी इ शाहजादियों खड़ी नजर आयीं! धक से रह गयी। या खुदा, यह मैं क्या देख रही हूँ !

क्लारिसा--बहन, मर्द के भेस में तो तुम्हें प्यार कर चुके । अब आओ, बहनें-बहने मिछ कर प्यार करें | हम वही हैं जिनके साथ तुम शादी करनेवाली हो ।

शाहज्ादी --अरे क्लारिसा, तुम यहाँ कहाँ !

क्छारिसा--आओ गे मिलें | मुझे खौफ़ है कि कहीं तुम्हारे ऊपर कोई आफ़त न आ जाय । ऐसे नामी सरकारी कैदी को उड़ा लाना तुम्हें मुनासित्र न था। वषीर-जंग को यह खबर मिल गयी है| अब तुम्हारी खेरियत इसी में है कि उस तुर्की जवान को हमारे हवाले कर दो |

शाहजादी समझ गयी कि अब आजाद को रुखसत करना पढ़ेगा। आज़ाद से जा कर बोली--प्यारे आज़ाद, मैंने तुम्हारे साथ जो बुराहयाँ की हैं, उन्हें माफ़ करना | मैंने जो कुछ किया, दिल की जलन से मजबूर हो कर किया । तुम्दारी शुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी | जाओ, रुखसत |

यह कह कर उसने क्लारिसा से कहा--शाहज़ादी, झुदा के लिए. उन्हें साइबेरिया न भेजना | वजीरजंग से तुम्हारी जान-पहचान है ! वह तुम्शारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ़ कर दोगी, तो वह जरूर माफ़ कर देंगे |

HINDI TEXT

प्रसंग ८०

उधर आज्जाद जब्र फ़ोज से गायत्र हुए तो चारों तरफ़ उनकी तलाश द्वोने लगी । दो सिपाही धूभते-घामते शाहज़ादी के महू की तरफ़ आ निकले। इत्तिफ़ाक़ से खोजी भी अफ़ीम की तलाश में घूम्त रहे थे। उन दोनों पिपादियों ने खोजी को आजाद के साथ पहले देखा था। खोजी को देखते द्वी पकड़ लिया और आज़ाद का पता पूछने लगे |

खोजी--मैं क्या जानूँ कि आज़ाद पाशा कौन है । हाँ, नाम अलबत्ता सुना है |

एक सिपाही -तुम आज़ाद के साथ हिंदुस्तान से आये हो ओर तुमको खूब मादूम हे कि आजाद पाशा कहाँ हैं |

खोजी--कौन आज़ाद के साथ आया है; मैं पठान हूँ, पेशावर से आया हूँ, मुझसे आज़ाद से वास्ता !

मगर रह दोनों सिपाही भो छँटे हुए थे, खोजी के झाँसे में न आये । खोजी ने जब देखा कि इन ज़ालिमों से बचना मुश्किल है तो सोचे कि सिड़ी बन ज्ञाओं | कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूमरे को ले कर मरो। मरना न द्वोता तो अपना वतन छोड़ कर इतनी दूर आते द्वी क्यों | खास मजे में नवाब के यहाँ दनदनाते ये । उत्लू बना-बना क: मज़े उड़ाते थे | चीनी की प्यालियों में मालते की अफ़ीम घुलती थी, चंड्र के छींटे उड़ते थे, चरत्त के दम छगते थे | वह सब मजे छोड़-छाड़ कर उल्लू बने, मगर फँसे सो फेंसे !

सिपाहददी--तुम्दारा नाम क्या है ! सच-सच बता दो ।

खोजी--कल तक दरिया चढा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी ।

तिपाही--तुम्द्ारे बाप का क्या नाम था !

खोजी--दृमको अपना नाम तो याद ही नहीं | बाप के नाम को कौन कहे !

सित्राही--तुम यहाँ किसके साथ आये !

खोजी--शेतान के साथ !

सिपाहियों ने जन्न देखा कि यह ऊल-जलूलछ बक रहा है तो उन्हें एक मोट से दरख्त में बाँधा और बोले--ठीक-टठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हें फाँसी दे देंगे ।

खोजी की आँखों से आँसू निकल पड़े | खदा से दुआ माँगने छगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रद्दा हूँ, मगर मरते बक़त दुआ माँगता हूँ कि आज़ाद का बाल भी बाँका न हो |

आखिर सिपाहियों को खोजी के सिड़ी होने का यक्रीन आ ही गया | छोड दिया । खोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे--तुम लोग “जिंदगी के मज़े क्या जानो, हमने वह-वह मज़े उठाये हैं कि सुनो तो फड़क जाओ । नवाब साहब के बदौलत बादशाह बने फिरते ये, सुबह से दस बजे तक चंडू के छींटे उड़े, फिर खाना खाया, सोये तो चार बजे की ख़बर छाये, चार बजे से अफीम घूमने लगी, पौंडे छोले और

गेंड्ेरियाँ चूसीं, इतने में नवाब साइब निकल आये | बैसे रददेस यहाँ कहाँ ! वहाँ के एक अदना कद्दार ने बीस छाख की शराब अपनी बिरादरीवालों को एक रात में पिला दी | एक कहद्दार ने सोने-चाँदी की कुजियों में शराब पिलछायी। इस पर एक बूदे खुर्रट ने कद्दा--न भाई पंचों, आपन मरजाद न छोड़ब । हमरे बाप यही कुजों माँ पिहिन | हमरे दादा पिदिन, अब इम कहाँ के बड़े रईस होह गयन ! महरा ने सोने-चाँटी की प्यालियाँ मँगवायीं और फ़क्कीरों को बाँट दीं। दस इम्ार प्यालियाँ चौंदी की थीं और दस इजार सोने की । जब बादशाह को यह खबर मिनी तो हुक्म दिया कि जितने कहार आये हों, सबको एक-एक लहंगा दिलवा दिया जाय । अब इस गयी-गुज्री हालत पर भी जो बात वहाँ है वह कहीं नहीं है ।

सिपाही--आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे !

खोजी--इहमारे मुल्क में एक से एक सिपादहदी मौजूद हैं। जो है अपने बक़्त का रुस्तम |

सिपाही--आप भी तो वहाँ के पहछ्यान ही मादम होते हैं ।

खोजी--इस वक़्त तो सर्दी ने मार डाछा है, अब बुदापा आया | जवानी में अलक्षत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ छेता था तो डुमस नहीं सकता था। अब न बह शौक़, न वह दिल, अब तो फ़क्कीरी अख्तियार की ।

सिपादी--आपकी दादी मी हुई है !

खोजी--आपने भी वही बात पूछी | फ़क्कीर आदमी, शादी हुई न हुई, बर।बर के लडके हैं ।

सिपाही--आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं !

खोजी--ऊह, पूछते हैं, पढ़े-लिखे हैं । यहाँ बिछा पढ़े ही आलिमफ़ाजिल हैं, पदने का मरज़ नहीं पालते, यह आरजा तो यहीं देखा, अपने यहाँ तो चंद्र, चरस, मरक के चरचे रहते हैं। हों, मगके जमाने में पढ़गे-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही--तो आपका मुल्क जाहिलों ह्ी से भरा हुआ है

खोजी--तुम ख़द गैंवार हो। इमारे यहाँ एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन-तीन हजार द्वाथ जोड़ी के हिलाते हैं। दंडों पर झुक गये तो चार पाँच हजार टंड पेल डाले | गुलचले ऐसे कि अँधेरी रात में तिफ आवाज़ पर तीर छगाया और निशाना खालो न गया |

ये बातें करके, खोजी ने अफ्रीम घोी और रूसियों से पीने के लिए कहा । और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफ़िर की शामत जो आयी तो उसने एक चुस्की लगायी । ढ़रा देर में नशे मे रंग जमाया तो झूमने रुगा | साथियों ने क्ह-क्रहा व्गाया ।

खोजी--एक दिन का जिक्र है कि नवाब साइब के यहाँ हम बैठे ग़प्पे डड़ा रहे थे | एक मौलवी साइबर आये। यहाँ उस वक़्त सरूर डा हुआ था, हमने अर की, मौढूवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाप्षिर करूँ। मोलवी ने आँखें नीली-पीली कीं और कदहा--कोई मसखरा है बे तू | मैंने कहा--यार, ईमान से कह दो कि मुमने कभी अफ्रीम पी है या नहीं ! मौलवी साहब इतने बामे से बाहर हुए. कि मुझे हजारों गालियाँ सुनायीं। आज बड़ी सर्दी है, हम ठिठ्रे जाते हैं ।

सिपाही--यह वक़्त हवा खाने का है |

खोजी--खदा की मार इस अक़्ल पर | यह वज़त हवा खाने का है ! यह वक़्त आग तापने का है। हमारे मुब्क के रईस इस वक़्त खिड़कियाँ बंद करके बैठे होंगे | हवा खाने की अच्छी कही, यहाँ तो रूह तक काँप रही हे और आपको हवा खाने की सूझती है ।

छहिपाहदी--एक मुसाफिर ने हमसे कहा था कि हिंदोस्तान में छोग पुरानी रस्मों के बहुत पार्बद हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं ।

खोज्जी - तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकृफ़ थे ! उनकी रस्मों को जो न माने बह कपूत, जो रस्म श्विस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाहो--अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की ज़रूरत नहीं १

खोजी--लछाख जरूरत हो तो क्या, पुरानी रस्मों में कमी तरमीम न करनी चाहिए | कया.वे छोग अहमझ ये ! एक आप ही बड़े अक्लमंद पैदा हुए !

रूसियों को खोजी की बातों में बढ़ा मन्ना आया। उन्हें यक्रीन हो गया कि यह

कोई दूसरा आदमी है। आजाद का दोस्त नहीं। खोजी को छोड़ दिया और कई दिन फे बाद यह कुस्तुन्तुनिया पहुँच गये |

HINDI TEXT

प्रसंग ८१

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियाँ बनाव-चुनाव करके दँस-खेल रही थीं । सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोंकों से उड़ा जाता था। जहानाग मोतिये के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याइ रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा--बदन, यद्द गर्मी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा | अब कहने से तो बुग मानिएगा, जद्दानारा बहन निखरें तो आज दूल्हा माई आनेवाले हैं; यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया !

अब्बासी - आज चबूतरे पर अच्छी तरदइ छिड़काव नहीं हुआ |

हीरा--जरा बैठ कर देखिए तो, कोई दस मशकें तो चबूतरे ही पर डाली होंगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आयी और बोली--हुज्र, हमने यह आज बिल्ली पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आने मद्दीना बाँध दिया । सुबह को हम हलआ खिलायेंगे । शाम को पेडा । उधर सिपदआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अब रोज गेंद ही खेला करोंगी ! ऐसा न हो, आज भी अम्माँजान आ जायें ।

अब्बासी--हुजूर, गेंद खेलने में कौन सा ऐब है ! दो घटी दिल बहलता है। बढ़ी सरकार की न कह्दिए; वह बूढ़ी हुई, त्रिगड़ी ही चाहें ।

यही बातें हो रही थीं कि शाहज़ादा हुमायूँ फ़र द्वाथी पर सवार बगीचे की दीवार से झाँकते हुए निकले । सिपहआस बेगम को गेंद खेलते देखा तो मुसकिरा दिये । हाथी तो आगे बढ गया, मगर हुस्नआरा को शाहलज़ादे का यों झाँकना बुरा लगा । दारोगा को बुला कर कहा, कल इस दीवार पर दो रहे और चढ़ा दो, कोई हाथी पर इधर से निकल जाता है तो बेपरदगी होती है। सौ काम छोड़ कर यह काम करों |

जब दारोग़ा चले गये तो जद्दानारा ने कहां-सिंपहआरा बहन ने इनको इतना दीठ कर दिया, नहीं शाहजादे हों चाहे खुद बादशाह हों, ऐसी अंधेर-नगरी नहीं है कि बिसका जी चाहे, चला आये | फिर वही चहल-पहल होने लगी। सिपहआरा और अब्बासी पचीसी खेलने लगीं।

अन्यासी--हुज्र, अन्की हाथ में यह गोट न पीट तो अब्बासी नाम नं रखे ।

सिपहआरा--वाह ! कहीं पीटी न हो |

अन्बासी--या अल्लाह, पचीस पड़ें। अरे | दिये भी तो तीन काने १ बाज़ी खाक में मिल गयी |

हुस्नआरा--लेके हरवा न दी हमारी बाज़ी | बस अब दूर ह्दो।

अन्बासी---ऐ, बीबी, में क्या करूँ के भल्य | पाँसा वही है लेकिन वक़्त ही तोहे।

हुस्नआरा--अच्छा बाशी हो ले, तो हम फिर क्राये ।

सिपहआरा---अई में दाँग बोलती हूँ।

हुस्नआरा --इमसे कया मतलब, वह जानें, तुम जानो । बोलो अब्चासा |

अब्बासी--हुजुर, जब बाजी सत्यानास हो गयी तब तो हमको मिली और अब हुजूर निकली जाती हैं ।

हुस्नआरा--हम नहीं जानते । फिर खेलने क्यों बैठी थीं !

अब्बासी--अच्छा मंजर हैं, फेकिए पाँसा |

सिपआरा --दो मह्दीने की तनख्यवाह है, इतना सोच लो ।

अब्बासी--ऐ हुजुर, आपकी जूतियों का सदक़ा, कौन बड़ी बात है। फेकिए तीन काने ।

सिपहआरा ने जो पाँसा फेका तो पचीस ! दूसरा पच्चीस, तीस, फिर पचोस, ररज सात पेचें हुईं । बोलीं-- ले अभ रुपये बायें द्वाथ से टीले कीजिए । महरी, बाजी की संदुक़ची तो ले आओ, आल्मारी के पास रखी है ।

हुस्नआरा ने महरी को आँख के इशारे से मना किया । मद्दरी कमरे से बाहर आ कर बोली--ऐ हुजूर, कहाँ हे ! वहाँ तो महीं मिलती ।

सिपहआरा--बस ज्ञाओ भी, हाथ झलाती आयीं, चलो हम बतादें कहाँ है ।

महरी - जो हुजूर बता दें तो और तो लॉडी की हैसियत नहीं है, मगर सेर मर मिठाई हुजुर की नज़र करूँ ।

सिपहआरा मद्दरी को साथ ले कर कमरे की तरफ़ चली । देखा तो संदुक़ची नदा-रद ! हैं, यह संदूक़ची कौन ले गया ! महरी ने लाल हँसी ज़ब्त की, मगर जब्त न हो सकी। तब तो सिपदआरा झल़ायीं, यह बात है ! में भी कहूँ, संदृकची कहाँ गायब दो गयी । तुम्हें कसम है, दे दो ।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आयी तो सबने मिल कर क्रहक़द्ा लगाया । एक ने पूछा-क्यों, संदूकची मिली | दुसरी बाली--हमारा हिस्सा न भूल जाना । हुस्नआरा ने कद्दा--बहन, दस ही रुपया निकालना | अब्बासी ने कहा-- हुज्र, देखिए, हमी ने जितवा दिया, अब्न कुछ रिश्वत दीजिए ।

महरी--और बीज, मैं भला काहे को छिपा देती, कुछ मेरी गिरह से जाता था |

सिपदआरा-- बस-बस बैठो, चलीं वहाँ से बढ़ी वह बनैके ।

महरी--अपनी हँसी को क्या करूँ, मुझी पर घखा होता है ।

इतने में दरबान ने आवाज़ दी, सवारियाँ आयी हैं, ओर ज़रा देर में दो औरतें डोलियों से उतर कर अंदर आयीं। एक का नाम था नजीर बेगम, दूसरी का जानी बेगम ।

हुस्नआरा--बहुत दिन बाद देखा। मिजाज अच्छा रहा बहन ! दुबली क्यों हो इतनी ! नज्जीर--माँदी थी, बारे खुदा-खदा करके, अब सेमी हूँ ।

हुस्नआरा--हमने तो सुना भी नहीं । जानी बेगम हमसे कुछ खफ़ा सी भादूम होती हैं, खुदा खेर करे !

जानी--बस, बस, जरी मेरी ज़बान न खुलवाना, उकटे चोर कोतवाल को डॉटे | यहाँ तक आते मेंहदी घिस जाती ।

जानी बेगम की बोटी बोटी फड़कती थी। नजीर बेगम भोली-भाडी थीं। जानी बेगम ने आते ही आते

कहा, हुरनआरा आओ, आआँख-मूँदी धप खेलें ।

जबहानारा--क्या यह कोई खेल है !

जानी--ऐ. है, क्या मन्हीं बनी जाती हैं |

नजीर--बस हम तुम्हारी इन्हीं बातों से घत्राते हैं। अच्छी बातें न करोगी |

जानी--ऐ, वह निगोड़ी अच्छी बातें कौन सी होती हैं, सुनें तो सही ।

नजोर--अब तुम्हें कौन समझाये |

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डाछ कर बाग़ीसै की तरफ ले गयीं तो हुस्नआरा ने कह्दा--इनके तो मिज़ाज ही नहीं मिलते ।

बड़ी बेगम--बड़ी कला दराज छोकरी है। इसके मियां की जान अजाब में है, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें ।

हुस्नआरा--नहीं अम्माँजन, यह न फ़रमाइए, ऐसी नहीं हे, मगर हाँ, जवान नहीं रुकती ।

एकाएक जानी बेगम ने आ कर कद्ा--अच्छा बहन, अबभ रुखसत करो | धर से निकले बड़ी देर हुई |

हुस्नआरा--आज तुम दोनों न जाने पाओगी । अभी आये कितनी देर हुई !

जानी--नजीर बेमम को चादे न घाने दो, में तो जाऊँगी ही । मियों के आने का यही वक़्त है | मुझे मियाँ का जितना डर है, उतना और किसी का नहीं । नजीर की आँखों का तो पानी मर गया है |

नजीर--इसमें क्या शक, तुम बेचारी बर्ड। ग़रीव हो |

इसी तरह आपस में बहुत देर तक हँसी-दिल्लगी होती रही । मगर जानी बेगम ने क्रिसी का कहना न माना । थोड़ी ही देर में वह उठ कर चली गयीं ।

HINDI TEXT

प्रसंग ८२

सुरेया बेगम चोरी के बाद बहुत ग़मगीन रहने छगीं। एक दिन अन्बरासी से बोलीं--अब्बासी, दिल को जरा तकसीन नहीं होती। अब हम समझ गये कि जो बात हमारे दिल में है वह दासिल न होगी ।

शीशा हाथ आया न हमने कोई सागर पाया; साक़िया ले तेरी महफ़िल से चले भर पाया।

सारी खुदाई में हमारा कोई नहीं ।

अब्बासी ने कदहा--तीती, आज तक मेरी समझ में न आया कि वह, जिसके छिए आप रोया करती हैं, कोन हैं? और यह जो आज़ाद आये थे, यह कौन हैं। एक दिन बाँकी औरत के भेष में आये, एक दिन गोसाई बनके आये।

सुरैया बेगम ने कुछ जवाब न दिया । दिल द्टी दिल में सोची कि जैसा किया बैसा पाया | आखिर हुस्नआरा में कौन सी बात है जो हममें नहीं । फ़के यही है कि वह नेकचलन हैं और मैं बदनाम ।

यह सोच कर उनकी आँखें भर आयी, जी भारी हो गया । गाड़ी तैयार करायी ओर हवा खाने चलों। रास्ते में सलारू और उसके वकील साहब नजर पड़े | सलारू कद रहा था--बनाब, हम वह नौकर हैं जो बाप बनके मालिक के यहाँ रहते हैं। आपको हमारी इज्जत करनी चाहिए | इत्तिफ़राक़ से वकील साहब की नजर इस गाड़ी पर पड़ी | बोले--खेर, बाप पीछे बन लेना, जरी जा कर देखो तो, इस गाड़ी में कौन सवार है ! सलारू ने कहा, हुजर, में फटेहालों हूँ, क्या जाऊँ | आप भारी-भरकम आदमी हैं, कपड़े भी अच्छे-अच्छे पहने हैं । आप ही जायें। वकील साहब ने नज़दीक आ कर कोचवान से पूछा--किसकी गाड़ी है ! कोचवान पंजाब का रहने-वाला पठान था। भ्रक्छता कर बोला-तुमसे क्या वास्ता, किसी की गाड़ी है !

सलारू बोले--हाँ जी, तुमको इससे क्या वास्ता कि किसकी गाड़ी है! हट जाओ गसते से | देखते हैं कि सवारियाँ हैं, मगर डटे खड़े हैं। अमी जो कोई उनका अजीज साथ द्वोता तो उतर के इतना ठोकता कि सिद्दी-पिट्टी भूल जाती | तुम वहाँ खड़े होनेवाले कौन हो !

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया । लाल-लाल आँखों से धूर कर रद्द गये, पाते तो खा हो जाते ।

सलारू--यह तो न हुआ कि कोचवान को एक इंडा रसीद करते। उलरे मुझ पर बिगड़ रदे हो ।

कोचवान चाहता था कि उतर कर वकील साहब की गरदन नापे, मगर सुरेया बेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा--घर छोट चलो | बेगम साहब जब घर पहुँचींतो दारोगा जी ने आ कर कहा कि हुज्र, घरसे आदमी आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है| मुझे हुजुर दखसत दं । यह लाला ख़शवक़्त गय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज़ काम करेंगे !

सुरैया बेगम ने कहा--जाइए, मगर जर्द आइएगा |

दुसरे दिन सुरैया बेगम ने छाला खशवक़्तराय से हिसाब माँगा । लाला साइबर पुराने फ़ैशन की दस्तार बाँधे, चपकन पहने, द्वाथ में क़ल्मदान लिये आ पहुँचे ।

दुरैया बेगम-- लाला, क्या सरदी मालूम दोतो है, या जूड़ी आती है, लेदाफ़ दूँ!

छाला साहब--हुजूर, बारदों मद्दीने इसी पोशाक में रहता हूँ | नवाब साहब के बक़त में उनके दरबारियों की यद्दी पोशाक थी । अब बह जमाना कहाँ, वह बात कदाँ, वह छोग कहाँ | मेरे वालिद ६ रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते ये । दरवाज़े पर दो दस्ते मुक्त-रे थे । बीस जवान । अस्तबल में दो घोड़े । फ़ोल्खाने में एक मादा हाथी | एक जमाना वह था कि दरवाज़े पर हाथी झमता था। अब वह कोने में जान बचाये

बेंठे हैं ।

यह कहते-कहते छाला साइब नवाब साहब की याद करके रोने लगे ।

एकाएक महरी ने आ कर कहा--हुजूर, आज फिर लुट गये । लाला साहब भी पगड़ी सैभालते हुए चले | सुरैया बेगम झपटी कि चल कर देखें तो, मगर मारे रंज के चलना मुश्किल हो गया । जिस कोठरी में छाला साहब सोये थे उसमें संघ लगी है। संघ देखते ही रोएँ खड़े हो गये। रो कर बोलीं-- बस अब कमर टूट गयी । मुहल्ले में हलचल मच गयी । फिर यानेदार साइन्न आ पहुँचे, तहइक़ीकात होने लगी ।

थानेदार रात को इस कोठरी मं कोन सोया था !

लाला साइब- में ! ग्यारदद बजे से सुत्रहद तक ।

थानेदार-- तुम्हें किस वक़्त मालूम हुआ कि संघ लगी !

लाला साइब--टिन चढ़े ।

यानेदार--बढ़े ताज्जुब की बात है कि रात को कोठरी में आदमी सोये, उसके कठले पर सेंघ दी जाय और उसको जग भी खबर न ही। आप कितने दिनों से यहाँ नौकर हैं ? आपको पहले कभी न देखा ।

लाला साहब--मैं अभी दो ही दिन का नौकर हूँ। पहले कैसे देखते ।

तुरैया बेगम की रूह काँप रही थी कि खदा ही खेर करे। माल का मारू गया और यह कम्बर्त इज्जत का अलग गाहक है। खेर, थानेदार साहब तो तहक्कीक़ात करके लम्बे हुए । इधर सुरेया बेगम मारे ग़म के बीमार पड़ गयीं। कई दिम तक इलाज दं।ता रहा, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ। आखिर एक दिन घत्ररा कर हुस्न-आश को एक खत लिखवाया जिसमें अपनी बेक़रारी का रोना रोने के बाद आज़ाद का पता पूछा! था और हुस्न आरा को अपने यहाँ मुलाक़ात करने के लिए बुल्यया था । हुस्नआरा बेगम के पास यह खत पहुँचा तो दंग हो गयीं। बहुत सोच-समझ कर खत का जवाब लिखा ।

“बेगम साहब की खिदमत में आदाब !

आपका खत आया, अफ़्सोस ! तुम भी उसी मरज में गिरफ़तार हो। आपसे मिलने का शौक़ तो है, मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी ग़म-ग़छत द्वो | आमाद का हाल इतना मादूम है कि रूम की फ़ोज़ में अफसर हैं। सुरैया बेगम, सच कहती हूँ कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा

पहुँ-श्ती | मगर खौफ़ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें ।

तुम्हारी हुस्नआरा!

यह खत लिख कर अब्बासी को दिया । अन्चबासी खत ले कर सुरैया बेगम के मकान पर पहुँची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं ।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैया बेगम की टोह लगा ली। दंग हो गये कि या ख़ुदा, यह यहाँ कहाँ । घर जा कर सल्ारू से कद्दा | सलारू ने सोचा, मियाँ पागल तो हैं ही, किसी औरत पर नजर पड़ी होगी, कद्द दिया शिब्बोजान हैं । त्रोला --हुजूर, फिर कुछ फ़िक्र कीजिए. | वकील साहब ने फ़ोरन खत लिखा--

'शिब्बोजान, तुम्दारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुज़री, दिल ही जानता है | अफ़सास, तुम बड़ी बेमुर्वत निकलीं | अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ कर गयी द्वोतीं | यह क्या कि तब्रिला कहे सुने चल दीं, अब खेर इसी में हे कि चुप+ से चली आओ । जिस तरह किसी को कानोकान खबर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह अम्न भी किसी से कहदो न सुनो, चुपचाप चछी आओ । तुम खूब जानती दो कि में नामीगिरामी वकील हूँ ।

तुम्दारा वकील' सलारू ने कद्दा--मियाँ, खूब गौर करके लिखना और नहीं हम एक बात बतावें । हमको भेज दीजिए, मैं कहूँगा, बीची, वह तो मालिक हैं, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो | गो पदा-लिखा नहीं हूँ; मगर उम्र भर लखनऊ में रद्दया हूँ ! वकील साइबर ने सलारू की डॉग और खत में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूँ तो तुमको फँसा दूँ | लेकिन मुझसे यह न होगा | हाँ, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक़ करेंगे । यह खत लिख कर एक औरत के द्वाथ सुरैया वेगम के पास भेज दिया। बेगभ ने लाजा साहत्र से कद्दा--जरा यद्द खत पदिए तो । झाला साहब ने खत पद कर कहा, यह तो किसी पाभल का लिखा मादूम द्वोता है। वह तो ख़त पढ़ कर बाहर चले गये और सुरैया बेगम सोचने लगीं कि अब क्या.किया जाय ! यद्द मूजी बेतरइ पीछे पड़ा । खबेरे लाला ख़शवक़्त राय सुरेया बेगम की व्योदी पर आये तो देखा कि यहाँ कु राम मचा हुआ है | सुरैया बेगम और अब्बासी का कद्दीं पता नहीं | सारा महल छान डाला गया, मगर बेगम साहब का एता न चछा | छाला साहब ने घबरा कर कहा-- जरा अच्छी तरह देखो, शायर दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। शरज़ सारे घर में तलाशी की, मगर बेफ़ायदा ।

लाला साहब--यह तो अज्ञीन बात है, आखिर दोनों चली कहाँ गयीं ! घरा असबात्-वसवाब तो देख लो, है या सब ले-देके चल दीं |

लोगों ने देखा कि जेवर का नाम भी नथा। जवाहिरात और क्लीमती कपड़े सब नदारद ।

HINDI TEXT

प्रसंग ८३

शाहज़ादा हुमायूँ फ़र मी शादी की तैयारियाँ करने लगे । सौदागरों की कोठियों में जा-जा कर सामान खरोदना शुरू किया। एक दिन एक नवात्र साहब से मुलाक़ात हो गयी | बोले--क्यों हजरत, यह तैयारियाँ !

शाहजादा -आपके मारे कोई सौदा न खरीदे !

नवाब---जनान,

चितवनों से ताड जाना कोई इमसे सीख जाय ।

शाहजादा --आपको यक़ीन ही न आये तो क्या इलाज !

नवाब--खेर, अब यह फ़रमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं १ मला दो हफ़्ते तक धमा-चौकड़ी रहे। मगर उस्ताद, तायफ़े नोक के हों। रददी कलाबंत द्वोंगे तो हम न आयेंगे । बस यह इंतजाम किया जाय कि दो महफ़िलें हों । एक रईसों के लिए और एक क़दररदानों के लिए |

इधर तो यह तैयारियाँ हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहाँ यह खत पहुँचा कि शाहज़ादा हुमायूँ फ़र को गुर्दे के दर्द को बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सज़ा पा चुका है। उतध्तको किसी नशे से परहेज नहीं ।

बड़ी बेगम ने यह खत पढ़वा कर सुना तो बहुत घत्ररायीं। मगर हुस्नआरा ने कटद्दा, यह किसी दुश्मन का काम है । आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूँ फ़र जुए को इल्लत में पकड़े गये। बड़ी बेगम ने कहा--अच्छा, अभी जल्दी न करो। आज डोमिनियाँ न आये | कछ-परसों देखा जायगा |

दूसरे दिन अब्बासी यह खत ले कर शाहज़ादा हुमायूँ फ़र के पास गयी। शाह-जादा ने खत पढ़ा तो चेहरा सुझ हो गया । कुछ देर तक सोचते रहे | तब अपने संदुक से एक खत निकाल कर दोनों की लिखाबट मिलायी ।

अब्बासी--हुजूर ने दस्तखत पहचान लिया न !

शाहजादा--हाँ, खूब पहचाना, पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज नहीं आता । अगर द्वाथ लगा तो ऐसा टीक- बनाऊँगा कि उम्र भर याद करेगा। छो, तुम यह खत भी बेगम साइब को दिखा देना और दोनों खत वापस ले आना |

यह वही खत था जो शाहज़ादे की कोठी में आग लगने के बाद आया था।

रात भर झाहज़ादा को नींद नहीं आयो, तरह-तरह के खयाल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाये थे कि भाँडों का गोल आ पहुँचा । छाला काली-चरन ने जो ड्योदी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गरदन निकाल कर कहा-- अरे भाई, आज क्या...

इतना कहना था कि मभाँडों ने उन्हें आडे हाथों लिया । एक बोला-- हमें तो यूप्त मादूम होता है। दूसरे ने कहदा--लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल

२९ |

हैं। सचमुच का बनमानुस बना कर खड़ा कर दिया | तीश्षरे ने कह्ा--3स्ताद, दुम की कसर रद्द गयी । चौथा बोला--फिर खदा और इन्सान के काम में इतना फ़क्े भी न रहे | लाला साहब झल्छाये तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया चोट करता है, ज़रा सँमले हुए। अब उठा ही चाहता हे। एक बोछा--भला बताओ तो, यह बनमानुस यहाँ क्योंकर आया १ किसी ने कहा--चिड़ीमार लाया है । किसी ने कह्दा--रास्ता भूछ कर बस्ती की तरफ़ निकल आया है | आखिर एक अशर्फ़ी दे कर भाड़ों से नजात मिली |

दुसरे दिन शाइजादा सुबह के वक़्त उठे तो देखा कि एक खत सिरद्ाने रखा है । खत पढ़ा तो दंग दो गये।

: (घुनो जी, तुम बादशाह के छड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा | एक दिन आग लगा चुका हूँ, अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले ढूँगा। जिस रोज से मैंने यह खबर सुनी है, यही जी चाह रहा दे कि छुरी ले कर पहुँचूँ और दम के दम में काम तमाम कर दूँ। याद रखो कि में बेचोट किये न रहूँगा ।”

शाहजादा हुमायूँ फ़र उसी वक़्त साइतब्र-जिला की कोठी पर गये और सारा क्रिस्सा कहा | साहब ने खुफ़िया पुलीस के एक अफ़सर को इस मामले की तहक़ीक़रात करने का हुक्म दिया |

साइब से रुखसत हो कर वह घर आये तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं | यह इजरत एक ही घाष ये, आलिमों से भी मुलाक़ात थी, बोँकों से भी मिलते-जुलते रहते थे। शाहज़ादा ने उनसे भी इस खत का ज़िक्र किया । हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का ज़रूर पता छगायेंगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूँ फ़र को क्रत्छ करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा । आदमी ने जा कर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यहद्द परवाना दिया--

“आपको क्रल्मी होता है कि मुबलिग पॉच इजार रुपया अपनी तहसील के खजाने से ले कर, आज रात को कालीडीह के मुकाम पर द्वाज़िर हों । अगर आपको फुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए ।?

तहसीलदार ने खज़ानची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया व्दव्ाया और चार चपरासियों को साथ ले कर कालीडीह चले। वह गाँव यहाँ से दो कोस पर था । रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। बस्ती का कह्दीं नाम नहीं | जब उस मुकाम पर पहुँचे तो एक छोलदारी मिली | वहाँ जा कर पूछा--क्या साहब सोते हैं !

सिपाहीं-साहब ने अभी चाय पी है । आज रात भर लिखेंगे । किसी से मिल नहीं सकते !

तहसीलदार--तुम इतना कद दो कि तहसीलदार रुपया ले कर ह्वाब्निर है |

चपरासी ने छोलदारी में जा कर इसछा की। साहब ने कहा, बुछाओ | तहसील-दार साहब अंदर गये तो

एक आदमी ने उनका मुँह जोर से दबा दिया और कई आदमो उन पर टूट पड़े। सामने एक आदमी अँगरेजी कपड़े पहने बेठा था | तद्दसील-दार खूत्र जकड़ दिये गये तो वह मुसकिरा कर बोला--वेल तहसीलदार | तुम रुपया लाया, अब मत बोलना । तुम बोला और मैंने गोली मारी । तुम इमको अपना साहब समझो |

तहसोलदार--हुजुर को अपने साहब से बढ़ कर समझता हूँ, वह अगर नाराज़ होंगे तो दरजा घटा देंगे | आप तो छुरी से बात करेंगे ।

शहसवार ने तहसीलदार को चकमा दे कर रुखूसत क्रिया ओर अपने साथियाँ में डींग मारने लगा--देखा, इस तरद्द यार लोग चकमा देते हैं। साथी लोग हाँ में हाँ भिला रहे ये कि इतने में एक गंधी तेल की कृष्पियाँ और बोतर्ले लटकाये छोलदारी के पास आया और बोला-हुजूर, सलाम करता हू । आज सौदा जेचने ज़रा दूर निकल गया था, लौटने में देर हो गयी। आगे घना जंगल है, अगर हुक्म हो तो यहीं रद जाओ !

शहसवार---खिस-किस चीज़ का इत्र है १ ज़रा मोतिये का तो दिखाओ।

गंधी--हुज्र, अब्बल नम्बर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं ।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिए द्वाय बढ़ाया, गंधी ने सीटी बजायो ओर सीटी की आवाज सुनते द्दी पचास-साठ कांस्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ़्तार कर लिया | यद्द गंधी न या, इंस्पेक्टर था, जिसे हाकिम-जिला ने शहसवार का पता लगाने के लिए वैनात किया था |

मियाँ शहसवार जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो गाते में उन्हें ललकारने लगे । अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहाँ हो |

इंस्पेक्टर--द्विस्स | चोर के पाँव कितने, चोदह बरस की ज!ओरे !

शहसवा२--सुनो मियाँ, हमारे काटे का मंत्र नहीं, ज़रा ज़बान को लगाम दो, वरना आज् के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा |

इंस्पेक्टर--पह के अपनी फ़िक्र तो करो |

शहसवार--हम कह देंगे कि हस इंस्पेक्टर की हमते अदावत है ।

इंस्पेक्टर--अजी, कुद-कुद कर जेलखाने में मरोगे |

HINDI TEXT

प्रसंग ८४

इधर बड़ी बेगम के यहाँ शादी की तैयारियाँ हो रही थीं। डोमिनियों का गाना हो रहा था। उधर शाइज़ादा हुमायूँ फ़ःर एक दिन दरिया की सैर * करने गये । घटा छायी हुई थी। हवा ओरों के साथ चछ रही थी। शाम होते-होते आँधी आ गयी और किश्ती दरिया में चक्कर खा कर ढ़ूब गयी | मछाइ ने किइती के बचाने की बहुत कोशिश की, मंगर मौत से किसी का क्या बस चलता है। घर पर यह ख़बर आयी तो कृदराम मच गया। अभी कर की बात है कि दरवाज़े पर भाँड मुबारकबार गा रहे थे, आज बैन दो रहा है, कल हुमायूँ फ़र जामे में फूले नहीं समाते थे कि इल्हा बनेंगे, आज दरिया में ग़ोते खाते हैं। किसी तरफ़ से आवाज़ आती है-- हाय मेरे बच्चे | कोई कहता है--हैं, मेरे छाल को क्या हुआ ! रोनेवाला घर भर और समझानेवाला कोई नहीं | हुमायूँ फ़र की माँ रो-रो कर कद्दती थीं, द्वाय ! मैं दुलिया इसी दिन के लिए. अब तक जीबी रही कि अपने बच्चे की मय्यत देखँ । अभी तो मससे भी नहीं भीगमे पायी थीं कि तमाम बदन दरिया में भीग गया | बहन रोती थी, मेरे भेया, जरी आँख तो खोलो। द्वाय, जिन द्वाथों से मेंने मेंहदी रची थी उनसे अब सिर और छाती पीटती हूँ । कल समझते थे कि परसों बरात सजेगी, खुशियाँ मनायेगे और आज मातम कर रहे हैं। उठो, अम्माँजान तुम्हारे सिरहाने खड़ी रो रही हैं । यहाँ तो रोना-पीटना मचा हुआ था, वहाँ बड़ी बेगम ने ज्यों ही ख़बर पायी आँखों से आँसू जारी हो गये । अब्बासी से कहा--जा कर छड़कियों से कह दे कि नीचे बार में टहलें | कीठे पर न जाये । अन्बासी ने जा कर यह बात कुछ इस तरह कही कि चारों बहनों में कोई न समझ सकी । मगर जहानारा ताड़ गयी। उठ कर अंदर गयी तो बड़ी बेगम को रोते देखा | बोली--अम्मॉजान, साफ़-साफ़ बताओ । बड़ी बेग़म--क्या बताऊं बेटी, हुमायूँ फ़र चल बसे । जहानारा--अरे |! बढ़ी बेगम--चुप-चुप, सिपहरा न सुनने पाये | मैंने गाड़ी तेयार होने का हुक्म दिया है, चलो बाग़ को चलें, तुम जरा भी जिक्र न करना । जदहानारा--हाय अम्मीजान, यह क्या हुआ ! बड़ी बेगम--ख्दा के वास्ते बेटी, चुप रहो, बड़ा बुरा बक़त जाता है | जहानारा--उफ़, जी धत्रराता है, हमको न ले चलिए, नहीं सिपदआरा समझ जायेगी । हमसे रोना जब्त ने हो सकेगा, कद्दा मानिए, हमको न ले चलिए । बड़ी बेगम--यहाँ इतने बड़े मकान में अकेली केसे रहोगी ! जहानारा--यद् मंजूर है, मगर जब्त मुमकिन नहीं । सब की सब दिल में ख़श थीं कि बाग़ की सैर करेंगे; मगर यह ख़बर ही न थी कि बड़ी बेगम किस सब्र से बाग़ा लिये जाती हैं। चारों बहनें पाछकी गाड़ी पर सवार हुईं और आपस में मज़े-मल्े की बातें करती हुई चलछीं। मगर अन्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियाँ गिरती थीं । बाग में पहुँच कर जद्दानारा ने सिर-ददे का बहाना किया ओर लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं | सिपह्ठआरा ने मौका पा कर कह -अब्बासी, एक दिन हम और शाइज़ादे इस बाग में टहल रदे होंगे । निकाह हुआ और दम उनको बाग में ले आये | दम पाँच रोज़ यहाँ ही रहेंगे | अब्बासी की आँखों से बेअख्तियार आँसू निकल पड़े । दिल में कद्दने लगी, किघर खयाल है, केसा निकाह और केसी शादी १ वहाँ जनाजे और कफ़न की

तैया-रियाँ हो रही होंगी ।

एकाएक सिपहआरा ने कद्दा--बहन, हिचकियों आने लगीं।

हुस्नआरा--कोई याद कर रहा होगा ।

अनच् सुनिए कि उसी बाग़ के पास एक शाद्द साहब का तकिया था जिसमें कई शाहजादों और रईसों की क़तरं थीं। हुमायूँ फ़र का जनाज़ा भी उसी तकिये में गर-, हजारों आदमी रुण्ण ये | बागा के एक बुज से बहनों ने इस जनाज़े को देखा 7 सिपदआरा बोली--बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाज़ा हे ! खुदा उसको बख़्शे।

हुस्नआरा---ओफ ओह | सास शहर साथ है। अलाह, यह कौन मर गया, किससे पूछे !

अन्बासी--हुजुर, जाने भी दें, रात के वक़्त लाश न देखें ।

हुस्नआरा--नहीं, गुलाब माली से कहो, अभी-अभी पूछे ।

अब्चासी थरथर काँपने लगी । गुलाब माली के कान में कुछ कद्दा | वह बाग का फाटक खोल कर बाहर गया, छोगों से पूछा । फिर दोनों में कानाफूसी हुई। इसके बाद अब्बासी ने ऊपर जा कर कहा | हुजूर, कोई रईस थे | बहुत दिनों से बीमार थे । यहाँ क़ज़ा आ पहुँची ।

गेतीआरा--कुछ ठिकाना है ! आदमियों का कहाँ से कहद्दों तक ताँता छगा

हे सिप हआरा--खदा जाने, जवान था या बूदा !

अन्बासी ने बड़ी बेगम से जा कर जनाज़े का हाल कहा तो उन्होंने सिर पीठ कर कहा---तुम्हें हमारी कसम है जो उलटे पाँव न चली जआाओ।

हुस्नआरा--अम्माँजान, आप नाइक घबराती हैं, आखिर यहां खड़े रहने में क्या डर है !

बढ़ी बेगम--अच्छा, तुमको इससे क्या मतत्य |

सतिपदआरा--किसी का जनाज़ा जाता है | छाखों आदमी साथ हैं ।

हुस्नआरा--खदा जाने, कोन था बेचारा ।

बढ़ी बेगम--अलाह के वास्ते चक्की जाओ |

जहानारा--इतनी क़समें देती जाती हैं और कोई सुनता ही नहीं । सिपह आरा--बाजी, सुनिए, कैसी दर्दनाक राज़ल है ! ख़ुदा जाने कौन गा रहा है शबे फ़िराक़ है और आँधियाँ हैं आहों की; चिराशा को मेरे जुलमत कदे में बार नहीं | जमीन प्यार से मुझको गले लगाती है; अज़ाब है यह दिला ग्रोर में फ़िशार नहीं । पस अज़ फ़िना भी किसी तौर से क़रार नहीं ; मिला बद्चिइत तो कहता हूँ कूय यार नहीं | अब्बाती--कोई बूदा आदमी था । सिपहआर --ते फिर क्या ग़म ! बड़ी बेगम--तो फिर जितने बूढ़े मद और बूढी औरतें हों, सबको मर जाना चाहिए ! सिपहआरा--ऐसी बातें न कहिए, अम्माँजान ! हु नआरा--बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन | बड़ी बेगम ओर सिपहआरा नीचे चली गयीं। दुश्नआरा भी जा रही थीं कि कब्रिस्तान से आवाज़ आयी--हाय हुमायूँ फ़र, तुमसे इस दशा की उम्मेद नन्थी। हुस्नआरा--ऐं अब्बासी, यद्द किसका नाम लिया ! अब्बासी--हुजुर, अद्दादुर मिरज़ा कद्दा, कोई बहादुर मिरज़ा होंगे । हुस्नआरा -हाँ,

हमीं को घोखा हुआ । पॉव-तले से मीन निकल गयी । जब तीनों बहनें नीचे पहुँच गयीं, तो बड़ी बेगम ने कह्य--आख़िर तुम्हारे मिजाज में इतनी जिद क्यों है ! हुस्नआरा--अम्माँजान, वहों बड़ी ठंडी हवा थी । बड़ी बेगम--मुरदा वहाँ आया हुआ है और इस वक़्त, भला सोचो तो । सिपक्रआरा--फिर इससे क्या द्ोता है ! बड़ी बेगम--चलो बेठो, द्वोता क्या है ! तीनों बहनें लेटीं तो सिपदआरा को नींद आ गयी, मगर हुस्नआरा और गेती आरा की आँख न लगी । बातें करने लगीं ! हुस्न >7रा--क्या जाने, कोन बेचारा था ! गेती&।र--कोई उसके घरवालों के दिल से पूछे । हुस्नआरा--कोई बडा शाहज़ादा था ! गेतीआरा--दर्भ तो इस वक़्त चारों तरफ़ मौत की द्ाव्रड नजर आती है । हुस्नआरा--कया बाने, अकेले थे या लड़के-वाले भी थे । गेतीआरा--ख . जाने, मगर था अमी जवान । हुस्नआरा--देशतो बहन, सेकड़ों आदमी जमा हैं, मगर केसा सन्नाटा है | जो है, ठंडी साँस भरता है |

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं | बोलीं--कुछ मालूम हुआ बाजीबान, इस बेवारे की शादी हुई थी कि नहीं ! जो शादी हुई होगी तो सितम है ।

हुस्नआरा--खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आये।

सिपहआरा--बे चारी बेवा अपने दिल में न जाने क्या सोचती द्ोगी !

हुस्नआरा --इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे !

रात को सिपहआरा ने ख़्वाब में देखा कि हुमायूँ फ़र बैठे उनसे बातें कर रहे रहे हैं।

हुमायूँ--खुदा का हजार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद हे, हम तुमसे गले मिले थे !

सिपहआरा--बहुरूपिये के भी कान काटे !

हुमायूँ--याद हे, जब हमने मद्ताबी पर कनकोआ दाया था-!

सिपदआरा--एक ही जात शरीफ़ हैं आप ।

हुमायूँ---अच्छा, तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज़्यादा खशनसीब कोन है !

सिपहआरा--हम !

हुमायूँ--और जो में मर जाऊँ तो तुम क्या करो १

इतना कहते-कदते हुमायूँ फ़र के चेहरे पर जर्दी छा गयी और आँखे उलट गयीं। सिप्दआर एक चीख मार कर रोने लछगीं। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घत्ररायी हुईं सिपहआरा के पास आयीं। बड़ी बेगम ने पूछा--क्या है बेटी, तुम चिछायीं क्यों !

अब्नासी--ऐ! दहुजुर, जरी आँख खोलिए ।

बड़ी बेगम--बेटा, आँख खोल दो |

बड़ी मुश्किल से सिपहआरा की आँखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने मी न पायी थीं कि किसी ने बाग़ीचे की दीवार के पास रो कर कहा--द्वाय शाहज़ादा हुमायूं फ़र !

सिपहआरा ने रो कर कदा--अम्मीजान, यह क्या हो गया! मेरा तो कछेजा उल्टा जाता है ।

दीवार क् पास से फिर आवाज़ आयी--द्वाय हुमायूँ फ़र | कया मोत को तुम पर ज़रा मी रहम न आया !

सिपहआरा --अरे, क्या यह मेरे दुमायूँ फ़र हैं !। या ख़ुदा, यह क्या हुआ अम्मीजान |

बड़ी बेगम--बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सत्र करो |

सिपहआरा -हाय, कोई हमें प्यारे शाइज्दे की लाश दिखा दो ।

बड़ी बेगम -बेटा मैं तुम्हे समझाऊँ कि इस सेन में तुम पर यह भुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यद्द दिन देखना पड़ा ।

सिपहआरा--हाय, हमें शाहजादे की छाश दिखा टो। अम्मीजान, अब सब्र की ताक़त नहीं रही, मुझे जाने दो, ख़दा के लिए मत रोको, अब शर्म केसी ओर हिजाब किसके लिए !

बड़ी बेगम --बेटी, ज़रा दिल को मज़बूत रखो, ख़दा की मर्जी में इनसान को क्या टखल |

सिपहआरा--क्या कहती हैं आप अम्मीजान, दिल कहाँ है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं | यहाँ तो रूह तक पिघल गयी ।

बड़ी बेगम - बेटी, खब खुल कर रो लो। में नसीबों-जछी यही रिन देखने के लिए बैठी थी !

सिपदेआरा--ऑआँस नहीं है अम्मीजान, रोऊँ केसे १ बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दो | इस वक़्त वह भी मुझे छोड़ कर चल दीं १

हुस्नआरा अलग जा कर रो रही थीं। आयी, मगर खाम|श | न रोयीं, न सिर पीटा, आ कर बहन के पलंग के पास बैठ गयीं ।

सिपहआरा--बआजी, चुप 5यों हो | हमें तकसीन तक नहीं देतीं; वाह !

हुस्नआरा खामोश ब्रैठी रहीं, हाँ, सिर उठा कर तिपहआरा पर नजर डाली |

सिपहआरा -बाजी, बोलिए, आछ्ि र चुप कब्र तक रदिएयगा |

इतने में रूहअफ़ज़ा भी आ गयीं, उन्होंने मारे ग़म के दीवार पर सिर पटक रिया था । सिपहआरा ने पूछा--बहन, यह पट्टी कैसी बँधी है !

रूहअफ़जा--कुछ नहीं, यों ही |

सिपहआरा--कहद्दीं सिर-विर तो नहीं फोड़ा ! अम्मोंजान, अब दिल नहीं मानता खुदा के लिए इमें छाश दिखा दो। क्यों अम्माँजान; शाइज्ादे की माँ को क्या द्वालत द्वोगी !

नढ़ी बेगम--क्या बताऊँ बेटी---

ओलाद किसी की न जुदा होवे किसी से-बेटी, कोई इस दाग़ को पूछे मेर जी से !

इतने में एक आदमी ने आ कर कहा कि हुमायूँ फ़र की माँ रो रद्दी हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के करीब लाओ। हुमायूँ फ़र की रूद खश ह्वागी। बड़ी बेगम ने कद्ा--सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है; ऐसा न द्वो कि मेरी बेटी डर जाय, उसका तो ओर दिल बहलाना चाहिए, न कि छाश दिखाना । ओर लागों से पूछो, उनकी क्या राय है । मेरे तो द्वाथ पाँव फूल गये हैं ।

आखिर यद्द राय तय पायी कि दुलद्विन लाश पर ख़रूर जायैं।

तिपहआरा चलने को तैयार द्वो गयीं ।

बड़ी बेगम--बेटा, अब मैं क्या कहूँ, तुम्धारी जो मर्जी हो बह करो ।

सिपहआरा--बस, इमें छठाश दिखा दो, फिर हम कोई तकलीफ़ न देंगे ।

बड़ी बेगम--अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह जिश नहीं हो सकता |

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जा कर संदूक लाओ | संदूक आया तो सिपहआरा ने अपना क़ीमती जोड़ा निकाछा, सुहाग का इत्र मछा, क़ीमती दुपट्टा ओदा जिसमें मोतियों की बेल लगी हुई थी। सिर पर जढ़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूछ, नाक में नथ, जिसके मोतियों की क़ीमत : अच्छे-अच्छे जौहरी न लगा सकें, कानों में पत्ते, ब्रालियाँ, विबलियों, करनफूछ, गले में मोतियों की माला, तौक़, चंदनहार, चम्पाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियाँ, पोर-पोर छल्के, पाँव में पायं-लेब, छागछ | इस तरह सोलढों सिंगार करके वह बड़ी बेगम और अन्बासी के साथ पालकी गाड़ी में सवार हुईं | शहर से धूम मच गयी कि दुलद्विन दृल्हा की लाश पर जाती हैं | शाहजादे की माँ को इत्तछा दी गयी कि दुलद्विन आती हैं। जरा देर में गाड़ी पहुँच गयी । हज़ारों आदर्मियों ने छाती पीटना शुरू किया | सिपहआरा ने गाड़ी से उतरते ही लाश को छाती से लगाया और उसके सिरद्धाने ब्रैठ कर ऊँची आवाज़ से कहा--प्यारे शाहज़ादे, जरी आँख खोल कर मुस्करा दो। बस, दो दिन ईसा कर उम्र भर रुकाओगे १ जरी अपनी दुलहिन का तो भंख-भरके देख लो । क्यों जी, यही मुहब्बत थी, इसी दिन के लिए दिल प्रिलाया था ?

शाहज़ादे की माँ ने सिपहआरा को छाती से लगा कर कदहा--बेटी, हुमायूँ फ़र तुम्हारे बड़े दुह्मन निकले । हाय, यह अघेर भी कहीं होता है कि दुलद्िन छाश पर आये | निकाइ के वक़्त वकील और गवाह तो दूर रहे, दूसरा मुक़दमा छिड़ गया।

सिपहआरा ने अपनी माँ की तरफ़ देख कर कहा--अम्माँजान, आपने हमारे साथ बड़ी दुश्मनी की | पहले ही शादी कर देतीं तो यों नामुराद तो न जाती ॥

इधर तो यह कुहराम मचा हुआ था, उघर शहर के बेफ़िक्रे अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते थे ।

एक औरत--आज जब घर से निकली थी तो काने आदमी का मुँह देखा था|

इघर डली में पाँव गया और उधर पट से छोंक पड़ी ।

दूसरा आदमी--अजी बीबी, न कुछ छींक से होता है, न किसी से, 'करम-लेख नहिं मिटे करै कोई लाखन चवुराई ।? किस्मत के छिले को कोई भी आज तक मिटा सका है १ देखिए, करोड़ों रुपये घर में भरे हैं, मगर किस काम के !

मौलवी--मियों, दुनिया के यही कारखाने हैं, इनसान को चाद्विए, कि किसी से न झगड़े, न किसी से फ़साद करे, बस, ख़ुदा की याद करता रहे |

एक बुदिया--सुनते हैं कि दो-तीन दिन से रात को बुरे-बुरे ख्वाब देखते थे ।

मौलबी--हम इसके क्रायल नहीं, ख्वाष क्या चीज़ है !

सिपहआरा को इस वक़्त वद्द दिन याद आया, जब शाहज़ादा हुमायूँ फ़र अपनी बहन बन कर उनसे गले मिलने गये । एक वह दिन था और एक आज का दिन है| हमने उस हुमायूँ फ़र को बुरा-भला क्यों कहा था !

बढ़ी बेगम ने कहा--बेटी, अब जरी बैठ जाओ, दम ले लो |

अब्बासी--हुजूर, इस मजे का तो इलाज दी नहीं है ।

सिपहआरा--दवा हर मर्ज की है | इस मर्ज की दवा भी सब्र ही है | सत्र ही ने हमें इस काबिल किया कि हुमायूँ फ़: की लाश अपनी आँखों देख रहे हैं !

जब लोगों ने देखा कि सिपहआरा की हालत खराब होती जाती है तो उन्हें लाश के पास से हटा ले गये | गाड़ी पर सवार किया और घर ले गये ।

गाड़ी में बेठ कर सिपहआरा रोने लगीं और बड़ी बेगम से बोलीं--अम्माँजान. अब हमें कहाँ लिये चलती हो !

बड़ी बेगम--बेटी, में क्या करूँ, हाय !

सिपहआरा--अम्माँजान, करोगी क्या, मेने क्या कर लिया !

अन्बासी--हमारी क्रिस्मत फूट गयी, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था । आज्ञ के दिन और हम मातम करें !

सिपहआरा--अम्माॉजान, इस वक़्त बेचारा कहाँ होगा !

बड़ी बेगम--बेटी, खदा के कारखाने में किसी को दखल है !

HINDI TEXT

प्रसंग ८५

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों से दो औरतों ने रहना शुरू क्रिया है। एक का नाम फ़ीरोज़ा है, दूसरी का फ़ारखुंद । इस गाँव में कोई डेद हज़ार घर आबाद होंगे, मगर उन सब में दो ठाकुरों के मकान आछीशान थे। फ़ीरोज़ा का. मकान छोटा था, मगर बहुत खशनुमा । वह जवान औरत थी, कपड़े-छत्ते मी साफ़-रुथर पहनती थी, लेकिन उसकी बातचीत से उदासी पायी जाती थी | फ़रखुंदा इतनी हसीन तो न थी, मगर ख़शमिज्ाज थी। गाँववालों को हैरत थी कि यह दोनों औरतें इस गाँव में केसे आ गयीं और कोई मर्द भी साथ नहीं ! उनके बारे में छोग तरह-तरह की बातें किया करते थे । गाँव की सिफ़ दो औरतें उनके पास जाती थीं, एक तम्बोलिन, दुसरी बेलदारिन । यार लोग टोह में थे कि यहाँ का कुछ भेद खुले, मगर कुछ पता न चछता था । तम्बोलिन और बेलदारिन से पूछते ये तो वह भी आँय-बँय-साँय उड़ा देती थीं ।

एक दिन उस गाँव में एक कांस्टेब्रिल आ निकला | आते ही एक बनिये से शक्कर माँगी । उसने कद्दा--शक्कर नहीं, गुड़ है। कांस्टेबिल ने आव देखा न ताव, गाली दे बैठा | बनिये ने कद्दा--ज़बान पर लगाम दो । गाली न जब्मान से निकालो | इतना सुनना था कि कांस्टेब्रिल ने बढ़ कर दो घूसे लगाये और दुकान की चीजें फेक फाँक दीं | सामनेवाछा दुकानदार मारे डर के शक्कर ले आया, तब हजरत ने कहा-- काली मिचे लाओ । वह बेचारा काली मिच भी लाया । तब आपने दो छोटे शरबत के पीये और कुएँ की जगत पर छेट कर एक छालछा जी को पुकारा--ओ लाला, सराफी पीछे करना; पहले एक चादर तो दे जाओ। छाला बोले--हमारे पास और कोई बिछौना नहीं है, बस एक ब्रिस्तरा है। कांस्टेबिल उठ कर दुकान पर गया | चादर उठा ली और कुएँ की जगत पर बिछा कर लेटा | छाब्ा बेचारे मुँह ताकने लगे | अभी हज़रत सो रदे थे कि एक औरत पानी भरने आयी | आपने पाँव की आहट जो पायी तो चोक उठे और गुल मचा कर बोले--अलग हट, चली व्दों से घड़ा सिर पर लिये पानी भरने | सूझता नहीं, कोन लेटा है, कौन बेठा है ! इस पर एक आदमी ने कहा, वाह | तुम तो कुएँ के मालिक बन बैठे | अब तुम्दारे मारे कोई पानी न भरे १ दूसरा बोला--सराफ की दुकान से चादर छाये, मुफ़्त में शक्कर ली ओर डपट रहे हैं ।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर खवार चले जाते थे। इन छोगों की बातें घुन कर बोले---साहव को एक अर्जी दे दो, बस सारी शेस्ट्री किरकिरी द्वो जाय ।

कांस्टेबिल ने ललकारा--रोक ले टट्टू । हम चालान करेंगे । ठाकर- क्यों रोक लें. हम अपनी राह जा रहे हैं. तससे सतबब्र !

ठाकुर--तो जब्मी कहाँ है ! हम ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं हैं, हमसे बहुत रोब न जमाना ।

इतने में दो-एक आदमियों ने आ कर दोनों को समझाया, भांई, जवान, छोड़ दो, इजतदार आदमी हैं। इस गाँव के ठाकुर हैं, उनको बेइजूत न करो ।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेलो ले-दे कर अलग करो, कहाँ की झंझट लगायी है। मुफ़्त में चालान कर देगा तो गाँव मर में हँसी होगी । कुछ यह-समश्े, कुछ वह समझे। अठन्नी निकाल कर कांस्टेबल की नज़र की, तत्र जा कर पीछा छूटा।

अब तो गाँव में और भी धाक बैंध गयी । पनमरनियों मारे डर के पानी भरने न आयी, यह इधर-उधर ललकारने लगे। ग़ल्ले की चंद गाड़ियाँ सामने से गुजरीं । आपने छलकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों बे पटरी से नहीं जाता, सडक तो साइब लोगों के लिए है । एक गाड़ीवान ने कह्द--अच्छा साहब, पटरी पर किये देते हैं । आपने उठ कर एक तमाचा लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करें, दूसरे टर्रायँ । सब के सब दंग हो गये कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी | इलवाई से कद्ा--हमको सेर भर पूरी तौल दो। वह भी काँप रहा था कि देखें, कब शामत आतो है, कहा, अभी लाया । तब आप बोले कि आलू की तरकारी है ! वह बोला--आल तो हमारे पास नहीं है, मगर उस खेत से खुदवा व्यओ तो सब मामला टीक हो जाय | कहने भर की देर थी। आप जा कर किसान से बोले--अरे, एक आध सेर आलू खोद दे । उसकी शामत जो आयी तो बोला-- साहब, चार आने सेर होई, चाहे लेब चादे न लेव | समझ लो। आपने कद्दा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों ।

झिसान आलू छाया | तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे माँगे । इसके जवाब में आपने उस ग़ारीत्र को पीटना शुरू किया ।

किसान- सेर भर आलू लिद्ठिस पैसा न दिहिस, और ऊपर से मारत है ।

मराइन--और अरूई के पलवा बकत है, राम करे, देवी-भवानी खा जायें ।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुँह क्यों लगते हो | जो कुछ ;आ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आदू छा दो। किसान आदू खोद छाया । आपने उसे रूमाल में बाँधा और ८ पेसे निकाल कर इलवाई को देने लगे।

हल्माई-- यह भी रहने दो, पान खा लेना ।

कांस्टेबिल -- खशी तम्दारी | आद तो हमारे ही थे |

हलवाई--बस, अब सब आप ही का है ।

कांस्टेब्रिल ने खा-पी कर ल्म्ब्री तानी तो दो घंटे तक सोया किये। जब्र उठे तो पसीने में तर थे । एक गवार को बुला कर कद्दा--पंखा झल । वह बेचारा पंखा झलने लगा । जब आप ग़ाफ़िल हुए तो उसने इनकी छटिया और लकड़ी उठ्रबी और चलता धंघा किया | यद्द उनके भी उस्ताद निकले।

जमादर की आँख खुली तो पंखा झलनेवाले का कहीं पता हद्धी नहीं । इधर-उधर देखा तो छटिया गायब | छाठी नदारद | छोगों से पूछा, घमकाया, डराया, मगर किसी ने न सुना । और बताये कौन १ सब के सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकी-दारों को बुछाया और घमकाने छगे । फिर सब्रों को ले कर गाँव के ठाकुर क पास गये और कहा--इसी दम दौड़ आयेगी। गाँव भर फूँक दिया जायगा, नहीं तो आबने आदमियों से पता छूमवाओ |

ठाकुर--ले अब दम कस-कस उपाव करी। चोर का कहाँ ढूँदी !

जमादार--हम नहीं जानता । ठाकुर हो कर के एक चोर का पता नहीं छूगा सकता |

ठाकुर--तुमहू तो पुलीस के नौकर हो । ढूँढ निकालो ।

ठाकुर साइबर से लोगों ने कट्टा--यह सिपाही बड़ा शौतान है । आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है | बस, यह मौकूफ़ हो जाय | ठाकुर बाले--हम सरकारी आदमियों से बतब्रढाव नहीं करते। कांस्टेब्रिल को तीन रुपये द् कर दरवाज़ से टालछा।

जमादार साहब यहाँ से ख़श-खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करन छग | उसने जा कर अपने बाप से कद्द दिया | वह पहलवान था, छँगोट बाँध कर आया और बम्ादार साहब को पटक कर खूब पीटा |

बहुत से आदमी खड़े तमाशा देख रहे ये । जमादार ने चूँ तक न की, चुपके से झाड-पोंछ कर उठ खड़े हुए और गाँव की दूसरी तरफ़ चले। इत्तिफ़ाक से फ़ीरोज़ा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नज्षर पड़ी तो हैरत हुई । बोले--अरे, यह किसका मकान है ! कोई है इसमें !

पड़ोसी-- इस मकान में एक बेगम रहती हैं | इस वक़्त कोई मर्द नहीं है।

जमादार--तू कौन है १ बता इसमें कौन रहता है ! और मकान किसका है १

पड़ोसी--मकान तो एक अद्दीर का है, मुल इसमें एक बेगम टिकी हैं ।

जमादार--कहो, दरवाजे पर आवे | बुला छाओ |

पड़ोसी--वाह, वह परदेवाली हैं | दरवाजे पर न आयेंगी ।

जमादार--क्या | परदा केसा ! बुलाता है कि घुस जाऊं घर में ! परदा लिये फिरता है !

फ़ीरोबा के होदा उड़ गये.। फ़रखंदा से बोली--अब राजब हो गया | भाग के यहाँ आयी थी, मगर यहाँ भी वही बला सिर पर आयी ।

फ़रखंदा--इसको कहाँ से खबर हुई !

फ़ीरोज़ा--क्या बताऊँ १ इस वक़्त कौन इससे सवाउ-जवाच्न करेगा !

फ़रखंदा देखिए, पड़ोतिन को बुलाती हूँ । शायद वह काम आयें ।

दरवाज़ा खुलने में देर हुई तो कांस्टेबिल ने दरवाजे पर छात मारी और कहा “खोल दो दरवाज़ा, हम दौड़ लाये हैं। मुहल्लेवालों ने कह्दा--भई, तुम्हारे पास न सम्मन, न सफ़ीना | फिर किसके हुक्म से दरवाज़ा खुलबाते हो ! ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुमे तो बताओ !

जमादार--जुर्म चछके साहब से पूछो जिनके भेजे हम आये हैं। सम्मन-सफ़ीना दीवानी-के मज़कूरी लाते हैं । हम पुलीस के आदमी हैं ।

दूसरे आदमी ने आगे बढ कर कहा--सुनों भई जंवान, तुम इस वक़्त बड़ा भारी ज़ल्म कर रहे हो | भला इस तरह कोई काहे को रहने पायेगा |

जमादार ने अकड़ कर कद्दा--तुम कौन हो १ अपना नाम बताओ । तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो । हम रपट बोलेंगे |

यह सुन कर वह हज़रत चकराये और चुपके लम्बे हुए । तब जमादार ने गुल मचा कर कहा, मुखत्िरों ने हमें खबर दी है कि तुम्हारे लड़का होनेवाल्य है। हमको हुक्म है कि दरवाज़े पर पहरा दें ।

पड़ोसिन ने जो यद्द बात सुनी तो दाँतों-तले अंगुली दब्रायी--ऐः है, यह ग़ज़ब खुदा का, हमें आज तक मालूम ह्वी न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जद्दान औरत शहर से भाग कर गाँव में क्यों आयी ! यद्द मादूम हीन था कि यर्दा कुछ और गुल खिलनेवाला है ।

इतने में फ़रखूंदा ने कोठे पर जा कर पड़ोसिन से कद्दा--जरी अपने मियोँ से कद्दो कि इस सिपाही से कुल हाल पूछे--माजरा क्या है !

पड़ोसिन बुछ सोच कर बोली--भई, हम इस मामले में दखल न देंगे | ओह, तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फेलाया था, हमारे मियाँ को मादूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें ।

इतने में पड़ोतिन के मियाँ भी आये। फ़रखदा उनसे बोली, खाँ साहब, जरी इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीरत का वक़्त है |

खाँ साइब--हछुछ न कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा |

फ़रखदा--अच्छा, आप फेसला करा दें । जो माँगे वह इमसे इसी दम ले ।

खों साइब--हन पाज्ियों ने नाक में दम कर दिया है और इस तरफ़ की रिआया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो । सरकार ने इन पियादों को इंतजाम के लिए रखा है और यह लोग जमीन पर पाँव नहीं रखते | सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिये जायें ।

पड़ोसिन--पहले बेगम से यद्द तो पूछो कि शहर से यहाँ आ कर क्यों रही हें कोई न कोई वजह तो होगी |

फ़रखंदा ने दो रुपये दिये और कद्दा, जा कर यद्द दे दीजिए। शायद मान ज्ञाय | खाँ साइब ने रुपये दिये तो सिपाही त्रिगड़ कर बोछा--यह रुपया केसा | हम रिश्वत नहीं लेते !

खाँ साहब- सुनो मियाँ, जो हमसे यर्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिज़ाज दी नहीं मिलता ।

सिपाही-मियाँ, क्यों शामतें आयी हैं, हम पुरीस के लोग हैं, जिस वक़्त चाहें, तुम जैसों को ज़लील कर दें। बताव्ूओ तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती हे ! बचा, किसी भले घर की औरत भगा छाये दो और ऊपर से टर्रते हो !

खाँ साइब--यह धमकियाँ दूसरों को देना | यहाँ तुम जैसे को अँगुलियों पर नचाते हैं |

सिपाही ने देखा कि यह आदमो कड़ा है तो आगे बढा। एक नानब्ाई की दूकान पर बैठ कर मज़े का पुलाव उड़ाया और सड़क पर जा कर एक गाड़ी पकड़ी | गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिडगिड़ाने लगा, मगर सिपाहदी ने एक न मानी । इस पर एक बाबू जी बोल उठे--अड़े बेरहम आदमी दो जी ! छोड़ क्यों नहीं देते !

सिपाही--कप्तान साइब ने मँगवाया है, छोड़ केसे दूँ ! यह इसी तरह के बद्दाने किया करते हैं, ज़माने

भर के शूठे !

आखिर गाड़ीवान ने सात पैसे और एक कद्दू दे कर गला छुडाया | तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीद्वार से हुवक़ा भरवा कर पीने लगे | जब जरा अँपेरा हुआ, तो चौकीदार ने आ कर कद्दा--इवलदार साहब, बड़ा अच्छा शिकार चला जात है। एक मद्दाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है | गहनन से लदी है ।

सिपाही--यहाँ से कितनी दूर !

चौकीदार--कुछ दूर नाहिन, घड़ी भर में पहुँच जैद्ों । बस एक गाड़ीवान है और एक छोकरा । तीसर कोऊ नहीं |

सिपाही---तत्र तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुँद् देखा है । हमारे साथ कौन-कौन चढेगा !

चौकीदार -- आदमी सब ठीक हैं, कहे भर को देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब्च ठीक करी ।

सिपाही--हाँ-हाँ और क्या !

अब सुनिए कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग़ फी तरफ़ से गुज़री जा रही थी कि एकाएक छः सात आदमी उस पर टूट पड़े | गाड़ीवान को एक डंडा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के जेवर उतार लिये और चोर-चोर का शोर मचाने छगे। गाँव में शोर मच गया कि डाका पष्ट गया। कांस्टे-बिल ने जा कर थाने में इत्तला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है| चौकीदार ने कई आदमियों का नाम लिखाया और फ़िरोज़ा के पड़ोसी खाँ साइब भी उन्हीं में थे । दूसरे दिन उसी सिपाही ने खाँ साइब के दरवाज़े पर पहुँच कर पुकारा | खाँ साहब ने बाहर आ कर सिपाही को देखा तो मूँछों पर ताव दे कर बोले, क्या है साहब, क्या हुक्म है !

सिपाही - चलिए, वहाँ बरगद के तछे तहक़ीक़ात हो रही है ! दारोगा जी बुख्ते हैं।

खाँ--केसी तहक़ीक्कात ! कुछ सुनें तो !

सिपाहदी-- मादम हो जायगी | चलिए, तो सही ।

साँ--सुनो जी, हम पंटान हैं। जब तक युप हैं तब तक चुप हैं। जिस द्रम रास्ा आया, फिर या तुम न होगे या हम न होंगे। कहाँ चलें, कहाँ !

सिपाही--मुझे आपसे कोई दुश्मनी तो है नहीं, मगर दारोग़ा जी के हुक्म से उजबूर हूँ ।

चौकीदार--लोघे को बुलाया है, घोसी को और तुमको ।

खाँ---एं, वह तो सब डाकू हैं ।

सिपाही-- और आप बड़े साह हैं ! बड़ी शेखी !

खाँ-- क्यों अपनी जान के दुश्मन हुए हो १

सिपाही--अब चलिएगा या वारंट आये |

खाँ साहब घर में कपड़े पहनने गये तो बीती ने कहा, कैसे पठान दो! मुए प्यादे की बया हकीकत है

कि दरवाज़े पर खोटी-खरी कह्दे | भल्ज देखूँ तो निगोड़ा तुम्हें वह क्योंकर ले जाता है। यह कद् कर वह दरवाजे पर आ कर बोली, क्यों रे, तू इन्हें कहाँ लिये जाता है ! बता, किस बात की तहक़ीक़ात होगी ! क्या तेरा बाप क़तल किया गया है !

सिपाही--आप खों साहब को भेज दें। अजी खाँ साहब, आइएगा या वारंट आये !

बीबौ- वारंट ले जा अपने होतों-सोतों के यहाँ।

सिपाही -- यह औरत तो बड़ी कल्ला-दराज़ है ।

बीबी--मेरे मूँह छूगेगा तो मुँह पकड़के झलस दूँगी। वारंट अपने बाप-दादा के नाम लेजा ! |

इतने में खाँ साइब टाटा बाँध कर बाहर निक्रले और बोले--ले तुझे दार्ये द्वाथ खाना हराम है जो न ले चले |

सिपाही-- बस, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न कीजिए, चुपके से मेरे साथ चलिए ।

खाँ साइब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फ़ीरोजा के दरवाज्षे पर खड़े हो कर कहा, इन्हें तो लिये जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आयेगी |

खाँ साहब बरगद के नीचे पहुँचे तो देखा, गाँव मर के बदमाश जमा हैं और दारोरा। जी चारपाई पर बेठे हुक्क़ा पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब, हमें क्यों बुलाया !

दारोग़ा-- आज गाँव भर के बदमाशों की दावत है ।

खाँ साइब ने डंडे को तोल कर कह्दा, तो फिर दो एक बदमाशों की हम मी ख़बर लेंगे |

दारोग़ा--बहुत गरमाइए नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा बह हमने किया |

खाँ---और जो चौकीदार आपको कुएँ में कूद पड़ने की सलाइ दे |

दारोग़ा--तो हम कूद पड़ें ।

खव्रॉ--तो हमारी निस्त्रत आखिर क्या जुर्म छगाया गया हे !

दारोगा - कल रात को तुम कहाँ थे १

सॉ--अपने धर पर, और कहाँ ।

चोकीदार--हुज्र, बखरी में नाहीं रहे और एक मनई हनका वही बाश के भीतर देखिस रहा ।

लॉ साहब ने चौकीदार को एक चाँटा दिया, सुअर, अबे हम चोर हैं ! रात फो हम घरपर न थे !

दारोगा ने कहा, क्यों जी, हमारे सामने यह मार-पीट | तुम भी पठान हा और हम मी पठान हैं। अगर अबकी हाथ उठाया तो तुम्हारी खेरियत नहीं ।

इतने में एक अँगरेज घोड़े पर सवार उघर से आ निकला | यह जमघट देख कर दारोगा से बोला, क्या बात है! दारोसा ने कहा, रारीजपरएर, एक मुकदमे की तहक़ीक़ात करने आये हैं| इस पठान की निस्वत एक चोरी का शक है, मंगर यह तहक़ोक़ात नहीं करने देता । चौकीदार को कई मरतवा पीट चुका है। चौकीदार ने कहा, दोहाई है साइब की | दोहाई है, मारे डारत है ।

साहब ने कदह्दा--बेल, चालान करो | हमारी गवाही लिखवा दो, हमारा नाम मेजर क्रास है |

लीजिए, चोरी और डाका तो दूर रहा, एक नया जुमं साबित हो गया ।

अब दारोशा जी ने गवाहों के बयान लिखने शुरू किये। पहले एक तम्बोलिन आयी । भड़कीला लहँगा पहने हुए, मॉग-चोटी से लेस, मुँह में गिलोरी दब्री हुई, द्वाय में पान के बीडे, आ कर दरोगा जी को बीडे दे कर खड़ी द्वो गयी ।

दारोगा--तुमने खाँ साइच्र को रात के वक़्त कहाँ देखा था !

तम्बोलिन--उस पूरे के पास। इनके साथ तीन-चार आदमी और थे । सब लट्ठ-बंद । एक आदमी ने कहा, छीन लो सास से, में ब्र'लोी कि बोटियाँ नोच लूँगी, मैं कोई गैंवा।रन नहीं हूँ | छॉ साइब ने मुझसे कहा, तम्बोलिन, कह्दो फ़तह है ।

खॉ--अरी तम्बोलिन !

तम्बोलिन--ज़रा अरी तरी न करना मुझसे, में कोई चमारिन नहीं हूँ ।

खाँ--तुमने दइमको चोरों के साथ देखा था !

तम्बोलिन--देखा द्वी था । क्या कुछ अंधे हैं, चोर तो तुम द्रो द्दी।

खाँ---खदा इस झूठ की सज़ा देगा ।

तम्बोलिन--इसका द्वाल तो जत्र मालूम होगा, जब बड़े घर में चक्की पीसोगे ।

सॉ--और वहाँ गीत गाने के लिए तुमको बुल् लेंगे ।

दूसरे गवाह ने बयान किया, मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ़ जाता था तो खाँ साइबर मुड्ते मिले थे ।

खाँ--कसम ख़दा की, कोई आदमी मेरी द्वी शक़्ल का रहा होगा।

दारोगा--आपने ठीक कहा |

काले खा---जत्र पठान होके ऐसी हरकत करने लगे तो इस गाँव का खदा ही मालिक है | कोन कद्द सकता है कि यह सफ़ेद-पोश आदमी डाका डालेगा।

२०

४६९६

खाँ--खुदा की क्रमम, बी चाहता है छिर पीट दोँ, मगर खेर, हम भी इसका मज़ा चखा देंगे।

दरोग़ा--पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइए, मज़ा पीछे चसवाइएगा ।

यह कह कर दारोगा जी खाँ साहब के घर पहुँचे और कहा, जल्दी परदा करो, हम तालाशी लेंगे | खाँ साहब की बीबी ने सैकड़ों गालियोँ दीं, मगर मज़बूर हो कर परदा किया । तलाशी द्वोने छगी | दो बालियाँ निकलीं, एक जुगुनू और एक छपका ! खाँ साहब की बीबी हवका-बकक। हो कर रह गयी, यह क्षेवर यहाँ कहाँ से आये १ या खुदा, अब हमारी आबरू तेरे ही द्वाथ है !

HINDI TEXT

प्रसंग ८६

फ़ीरोबा बेगम और फरखुंदा रात के वक़्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज हुई | फरखुंदा की आँख खुल गयी। यह घमाका कैसा ! मुँह पर से चादर उठायी, मगर अँपघेरा देख कर उठने की हिम्मत न पड़ी । इतने में पाँव की आइट मिली, रोये खड़े हो गये | सोची, अगर बोली तो यह सब हलाछ कर डालेंगे। दबकी पड़ी रह्दी । चोर ने उसे गोद में उठाया और बाहर ले जा कर बोछा--सुनो अन्यासी, हमको ठुम खूब पद्चानती हो ! अगर न पहचान सकी हो, तो अब पहचान छो ।

अन्बासी--पहचानती क्यों नहीं, मगर यह बताओ कि यहाँ किस गुरज से आये हो ! अगर हमारी आबरू लेनी चाहते द्वो तो क्मम खा कर कद्दती हूँ, ज़हर खा ढूँगी।

चोर--हम तुम्हारी . आबरू नहीं चाहते, सिफ़ ठुम्हारा जेवर चाहते हैं। तुम अपनी बेगम को जगाओ, ज़रा उनसे मिूँगा । नाहक इधर-उधर मारी-मारी फिरती हैं, हमारे साथ निकाह क्यों नहीं कर लेतीं !

यकायक फ़ीरोज़ा को आँख भी खुल गयी । देखा तो मिर्जा आज़ाद खड़े हैं। बोली, आजाद मिर्जो, अगर हमें दिक़ करने से तुम्हें कुछ मिलता द्वो तो तुमको अख्तियार है। नाहक क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो ! इस मुसीबत के बक़्त तुमसे मदद की उम्मीद थी और व ुम उल्टे गला रेतने को मौजूद !

अब्बासी--बेगम आपको हमेशा याद किया करती हैं |

आज़ाद--मेरे लायक़ जो काम दो, उसके लिए ह्वालिर हूँ, तुम्हारे लिए जान तक द्वाज़िर हे ।

सुरैया--आपकी जान आपको मुबारक रहे, दम सिफ़ एक काम को कहते हैं । यहाँ एक कानिस्टिबिल ने हमें बहुत दिक्क किया है, तुम किसी तदबीर से हमें उसके दंजे से छुड़ाओ, (आज़ाद के कान में कुछ कह कर) मुझे इस बात का बड़ा रंज है। मेरी आँखों से आँयू निकल पढ़े ।

आजाद--वही कानिस्टिबिल तो नहीं है जो खाँ साइब को पकड़ ले गया है !

फ़ीरोजा -- दाँ-हाँ, वही ।

आज़ाद--अच्छा, समझा जायगा । खड़े-खड़े उससे सम्नश्न दें तो सही । उ8 अच्छे घर बयाना दिया !

सुरैया--कमबख्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुँह दिखाने लायक न रखा। यहाँ भी बरा की तरह घिर पर सवार हो गया | तुमने भी इतने दिनों के बाद आज खबर ली | दुसरों का दर्द तुम क्या समझीगे १ जो बेइज्ज़ती कभी न हुई थी वदद आज हो गयी | एक दिन वह था कि अच्छे-अच्छे आदमी सलाम करने आते ये और आज एक कानिस्टिबिल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ हद ओर तुम्हारे दोते ।

आज़ाद--घुरैया बेगम, खुदा की क़सम, मुझे बिल्कुछ ख़बर न थी, में इसी वक़्त जा कर दारोग़ा और कानिस्टिबिल दोनो को देखता हूँ | देख लेना, सुनइ तक उनकी लाश फ़ड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाठ उतार चुका हूँ। इस बक़्त रुखसत करो, कल फिर मिलेगा ।

यह कह कर आजाद मिर्जा बाहर निकले | यहाँ उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले, भाई जवानों | आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गये, तैयार हो जाओ। उसी वक़्त आजाद मिर्जा और लक्ष्मी डाकू, गुल्बाज़, रामू यह सब्च के सब दारोगा के मकान पर जा पहुँचे । रामू को ती बैठक में रखा और महल्ले भर के मकानों की कुंडियाँ बंद करके द्वरोगा जी के घर में संघ लगाने की फ़िक्र करने लगे ।

दरबान--कोन ! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नही !

आज़ाद--क्या बतायें, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकछी १९

दरबान--हाँ, निकली तो है, बहुत से आदमी तलाथ थे |

आजाद--हमारे बड़े दोस्त थे, अफ़सोस !

लक्ष्मी--हुजुर, सत्र कीजिए,, अब क्या हो सकता है !

दरबान-- हाँ भाई, परमेश्वर की माया कोन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं !

लक्ष्मी-- कनवजिया ब्राक्षण हैं। बेचारे के दो छाटे-छोटे बच्चे हैं, कौन उनकी परवरिश करेगा !

दरबान को बातों में लगा कर इन लोगों ने उसकी मुइके कस छीं और कह्दा, बोले और इमने क़त्छ किया | बस, मुँह बंद किये पड़े रह्दी।

दीवार में सेंघ पढ़ने लगी । रामू गह्ठीं से सिरका छाया । तिरका छिड़क-छिड़क-

कर दीवार में संघ दी । इतने में एक कानिस्टिब्रिल ने हाँक लगायी >+जागते रहियो, अँपेरी रात है |

आज़ाद--हमारे लिए अँघेरी रात नहीं, तुम्हारे लिए. होगी ।

चौकीदार--तुम लोग कीन हो ?

आजाद-तेरे बाप । पहचानता है या नहीं !

यह कह कर आज़ाद ने क़रोली से चौकोदार का काम तमाम कर दिया ।

लक्ष्मी--भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली |

आज्ञाद--बस, माद्म हो गया कि दम नाम के चोर हो, त्रिलकुल कच्चे !

अब यह तजदीज पायी कि मिर्जा आज़ाद सेंघ के अंदर जायें। आजाद ने पहले सेंध में पाँव डाले, डालते द्वी किसी आदमी ने अंदर से तलवार जमायी दोनों पाँव खट से अलग ।

आजाद-ह्ाय मरा ! भरे दीड़ा |

लक्ष्मी-- बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे !

चोरों मे मिल कर आज़ाद मिर्जा का धड़ उठाया और रोते-पीटते के चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिये गये ।

मुददृब्ले भर में जाग हो गयी । अब जो दरवाज़ा खोलता है, बंद पाता है। यह कौन बंद कर गया ? दरवाज़ा खोलो | कोई सुनता ही नहीं। चारों तरफ़ यही आवाजें आ रहीथीं। सिऱ एक दरवाजे में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढ़ा सिपाही एक हाथ में मशाल, दूसरे में सिरोही लिये बाइर निकला | देखा तो दारोग़ा जी के धर में सेंघ पढ़ी हुई है ! चोर- चोर !

एक कानि०--खून भी हुआ है | जल्द आओ।

सिपाही--मार लिया है, जाने न पावे ।

यह कह कर उसने दरवाज़े खोलने शुरू किये। लोग फ़ौरन लटठ ले-ले कर बाहर निकले । देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदसमियों को देखते ही चोर तो भाग निकले | आज़ाद मिर्जा और लक्ष्मी रह गये। आजाद की टाँगें कटी हुईं | लक्ष्मी जस्मी | थाने पर खत्रर हुईं | दारोग़ा जी भागे हुए अपने घर आये । भादूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंघ देते देख लिया था । फ़ौरन जा कर कोठरी में बैठ रही | ज्यों ही आज़ाद मिर्जा ने सेध में पाँव डाल्य, तलवार से उनके दो टुकड़े कर दिये ।

आजाद पर मुकदमा चलाया गया । जुम सत्रित हो गया । कालेपानी भेज्ज दिये गये |

जब्र जहाज पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाक़ात हुईं। आजाद ने पूछा, कद्दो भाई, क्या किया था ! उसने आँखों में आँसू भरके कहा, भाई, क्या बताऊँ! बे-क़सूर हूँ। फ़ोज़ में नौकर था, इश्क के फेर में नौकरी छोड़ी, मगर माझूक़ तो न मिला, हम खराब हो गये ।

यह शहसवार था |

HINDI TEXT

प्रसंग ८७

खाँ साहब पर मुक़दमा तो दायर हो ही गया था; उस पर दारोग़ा जी दुश्मन ये । दो साल की सज़ा हो गयी । तब दारोग़ा जी ने एक औरत को सुरैया बेगम के मकान पर भेजा । औरत ने आ कर सलाम किया और बैठ गयी ।

सुरेया-कोन हो ! कुछ काम है यहाँ !

औरत--ऐ: हुजूर, मछा बगैर काम के कोई भी किसी के यहाँ जाता है ! हुजूर से कुछ कहना है, आपके हुस्न का दूर-दूर तक शोहरा है। इसका क्या सब्र है कि हुजूर इस उम्र में, इस दवालत में जिंदगी बसर करती हैं !

सुरेया--बहन, मैं एक मुसीबत की मारी औरत हूँ ।

औरत--ऐ, हुजूर, मुझे बहिन न कहें, में लौंडी, हुजूर शाहज़ादी हैं | हुजूर पर ऐसी क्या मुसीबत है ! हुजूर तो इस क्राबिल हैं कि बादशाहों के महल में हों ।

मुरैया--खदा दुष्मन पर भी ऐसी मुसीबत न डाले। मैं तो जिंदगी से तंग आ गयी |

औरत--अछाह मालिक है । कोशिश यह करनी चाहिए कि दुनिया में इजत के साथ रहे और किसी का होके रदे ।

सुरैया--मगर जब खुदा को भी मंजूर हो | हमने तो बहुत चाहा कि शादी कर लें, मगर ख़ुदा को मंजूर दी न था। क्रिश्मत का लिखा कौन मिटा सकता है !

औरत--हुजूर का हुक्म हो तो कहीं फ़िक्र करूँ !

सुरैया--हमको माफ़ कीजिए । हम अब शादी न करेंगे।

औरत--दुल्र से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिए । दो-तीन दिन में जवाब दीजिएगा । यहाँ एक रईशज़ादे रहते हैं, बहुत दी खूबयूरत, खुश-मिज़ाब और शौकीन | दिल बहलाने के छिए. नौकरी कर लो है। हुकूमत की नौकरी है | हे

मुरैया--हुकुमत की नोकरी केसी होती है !

ओरत--ऐशथी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करें | कोतवाल हैं |

अन्बासी--अच्छा, उन्हीं थानेदार का पेग़ाम छायी होगी !

औरत--ऐ,, थानेदार कादे को हैं, बराय नाम नौकरी कर छोी, वरना उनको नौकरी की क्या जरूरत है, वह ऐसे-ऐसे दस थानेदारों को नोकर रख सकते हैं ।

अन्बासी--हुज्ूर को तो शादी करना मंजूर ही नहीं दे |

औरत--वाह ! केसी बातें करती हो ।

मुरैया--तम उनकी सिखायी-पढ़ायी आयी हो, हम समझ गये । उनसे कह देना कि हम बेकस औरत हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पंजे शाड़ के हमारे पीछे पड़े हो !

औरत--हुजूर के कदमों की क्रसम, उन्होंने नहीं भेजा है |

सुरैया--अच्छा तो इसमें शबरदस्ती काहे की है ।

औरत---आपके और उनके दोनों के हक़ में यही इच्छा हे कि हुजुर इन्कार न कर | वह अफ़सर पुलिस हैं, जरा सी देर में बे-आबरू कर सकते हैं !

सुरैया--हमारा भी ख़दा है।

औरत-- खेर न मानो ।

औरत दो-चार बातें सुना कर चली गयी तो अन्बासी और छुरैया बेगम सलाह करने लगीं---

तुरैया--अब यहाँ से मी भागना पड़ा, और आज ही कल में ।

अब्बासी --इस मुए को ऐसी जिद पड़ गयी कि क्या कहें ! मगर अब भाग के जायेंगे कहाँ !

सुरैया--जिधर खुदा छे जाय । कहीं से लाछा खशवक़्तराय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बूड्ठा है | कोई ऐसी तदबीर करो कि वद्द कल सुबह तक यहाँ भा जाय |

अब्बासी--कांहेए तो कल्ल को भेजे , बुला लाये |

कछलू क्रीम का लोहार था । ऊपर से तो मिला हुआ था , मगर दिल में इनका दुश्मन था । अब्बासी ने उसको बुला के कद्दा, तुम जाके लाला खुशतक़्त राय को लिवा लओ। कल्ल ने कद्दा, तुम साथ चलो तो क्या भुजायक़ा है, मगर अकेला तो मैं न जाऊँगा | आखिर यही ते हुआ कि अब्बासी भी साथ जाय । शाम के वक़्त दोनों यहाँ पे वे | अन्बासी मदोना भेष में थी। कुछ दूर चल कर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूँ | तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिंदगी ख़राब करती हो ! उनकी जमा-जथा ले कर चडी आओ और मेरे घर पड़ रहो |

अब्बासी--तुम मर्दों का ऐतचार क्या !

कल्लू--हम उन लोगों में नहीं हैं ।

अन्बासी--भला अब लाछा साहब का मकान कितनी दूर होगा !

कल्लू--यही कोई दो कोम, कह्दो तो सवारी केराया कर ढूँ या गोद में ले चढँ !

अन्यासी--ऐँ, या तो घर ब्रिठाते थे, या गोद बिठाने छगे।

कल्दू--भई, बहुत कद्दी, ऐसी कही कि हमारी ज़ब्ान बंद हो गयी ।

अब्वासी--ऐ,, तुम ऐसे गँवारों को बंद करना कोन बात है |

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुँचे। यह कब्लू के दोस्त शिवदीन का मकान था | शिवदीन ने कहा, आओ यार, मिज़ाज अच्छे !

कल्दू--सब चैन ही चेन है। इनको ले आया हूँ, जो कुछ सलाह करनी हो, कर लो । सुनो अन्बासी,

शितदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अन यहाँ से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो |

अब्बासी--बड़ी दशा दी कल्लू, बड़ी दग़ा दी तुमने |

कल्लू--अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग ज़रा सुरैया बेगम से मुलाकात करने जायेंगे |

अब्बासी--- बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे |

अब्चासी तो यहाँ रोती रद्दी, उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुँचे और दरवाज़ा तोड़ कर अंदर दाखिल हुए। सुरैया बेगम की आँख खुल गयी, ब्रिचारी अकेली मकान में मारे डर के दबकी पडी थी | बोली--कोन है १ अब्बासी १

कल्लू---अब्बासी नहीं है, हम है, अब्बासी के मियां ।

सुरेया--हाय मेरे अलाह, ग़ज़ब दो गया !

शिव --चुप्पे-चुप्प बोल, बताओ, रुपया कहाँ हैं ! सच बता दो, नहीं मारी जाओगी |

कब्लू--बतायें तो अच्छा न न बतायें तो अच्छा, हम घर भर द्ेंद द्दी मरेंगे। सुना है कि तुम्दारे पास जवाहिर के ढेर हैं ।

सुरैयां -- अमीर जत्र थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूँ ।

कल्छू--तुम यों न बताओगी, हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं ।

सुरेया बेगम ने मारे खौफ के एक-एक चीज का पता बतल्ा दिया । जब सारी जमा-जथा ले कर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरेया बेगम से बोलो, चल हमारे साथ, उठ ।

सुरैया--खदा के लिए मुझे छोड़ दो | रहम करो ।

शिव०--चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैया बेगम ने हाथ जोड़े, पाँव पड़ी, रो-रो कर कद्दा, ख़दा के वास्ते मेरी इउजत न लो | मगर कब्लू ने एक न सुनी | कहने लगा, तुझे किसी रईस अमीर के द्वाथ बैचेंगे; तुम भी चेन करोगी, हम मी चेन करेंगे।

सुरैया--मेरा माल लिया, अब तो छोड़ो ।

कल्छू--चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियायी जाओगी । देखो मुंह से आवाज़ न निकले वरना हम छुयी मोंक देंगे ।

सुदेया (रो कर)--या ख़ुदा, मैंने कौन सा गुनाह किया था, बिसके एवज्ज यह ग्रुसीबत पड़ी |

कल्दू--चछती है कि बैठी रोती हे !

आख़िर सुरैया बेगम को अँघेरी रात में घर छोड़ कर उनके साथ जाना पड़ा |

HINDI TEXT

प्रसंग ८८

आध कोस चलने के बाद इन चोरों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया । इनमें एक का नाम बुद्धसिंद था, दूसरे का हुलास । यद्द दोनों डाकू दुर-दुर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकेत उनके नाम सुन कर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम काँप रद्दी थी कि देखें आबरू बचती है या नहीं | हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह, अब क्या करना चाहिए !

बुद्धसिंइद---अपनी तो यह मरज़ी है कि कोई मनचला मिल जाये तो उसी दम पटील डालो ।

हुलास--मैं तो समझता हूँ, यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फंसे । सुनो बेगम, हम डकेत हैं, बदमाश नहीं । हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के द्वाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अभीरजादी बना कर रखे | चुपचाप हमारे साथ चली आओ |

चलते चलते तीनों आमों के एक बाश में पहुँचे। दोनों डाकू तो चरस पोने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगी--खूदा जाने, किसके द्वाथ बेचें, इससे तो यही अच्छा है कि क़त्छ कर दे | इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले--

एक--मिज़ों जो, दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया । आज़ाद और शह-सवार | दोनों ही कालेपानी गये । अब दो मुड्भा और बाक़ी हैं ।

मिर्जा--वह दो कोन हें !

पहला--वहो हुलास और बुद्धविंह । भरे, वद्द दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं ! क्यों यारो, चरस के दम उडद्ध रहे हैं ! तुम लोगों के नाम वारंट जारी है ।

हुझास--मीर साहब, आप भी बस वही रहे | पड़ोस मं रहते हो, फिर भी वारंट से डराते हो ! ऐसे-ऐसे कितने वारंट रोज ह्वी जारी हुआ करते हैं। हममे और पुलिस से तो जानी दुश्मनी है, मगर क़सम खाके कहता हूँ कि अगर पचास आदमी भी गिरफ़्तार करने आयें तो हमारी गद तक न पायें। हम दोनों एक पलटन के लिए काफ़ी हैं। कहिए, आप लोग कहाँ जा रहे हैं !

मिजो--अजी, हम भी किसी शिकार दी के तलाश में निकले हैं ।

जब मीर और मिर्जा चले गये तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को ले कर चले | इत्तिफ़ाक़ से उसी वढ़त एक सवार आ निकला ' बुद्धसिंह ने साईस का तो मार गिराया और मुसाफ़िर से कहा, अगर आबरू के साथ घोड़ा नज़र करो तो बेहतर है, नहीं तो तुम भी जमीन पर लोट रहे होगे। सवार बेचारा उतर पड़ा । हुलास ने तब सुरेया बेगम फो घोड़े पर सबार किया और लगाम ले कर चलने लगा ।

सुरैया बेगम दिल में सोचती थी कि इतनी ही उम्र में हमने क्या-क्या देखा | यह नौचत पहुँची हे कि जान मी बचती दिखायी नहीं देती ।

हुलास--बीबी, क्या सोचती जाती हो ! कुछ गाना जानती हो तो गाओ | इस जंगल में मंगल हो |

बुद्धसिंह---इससे कट्दो कि कोई भज्जञन गाये ।

हुलास--शनको राजलें याद होंगी या उुमरी-टप्पा । यह भजन क्या जानें !

सुरैया--तहीं मियाँ, हमें कुछ नहीं आता, हम बहू-बेटियाँ गाना क्या जानें ।

इतने में किसी की आवाज़ आयी। हुल्ास ने बुद्धसिह से पूछा, यह किसकी आवान आयी !

बुद्धसिह--अरे, कोन सा आदमी बोला था !

आवाज़ --ज़ा इधर तक आ जाओ | में मिर्जा हूँ, जता सुन लो ।

हुलास और बुद्धसिंह दोनों आवाज़ की तरफ चले, इधर-उधर देखा, कोई न मिला । सुरैया बेगम का कलेजा घड़कने लगा। मारे डर के आँखें बंद कर लीं और आहिस्ता-आहिस्ता दोनों को पुकारने लगीं। द्वाय | खरा किसी को मुसीबत में न डाले । यह दोनों डाकू उसको बेचने की फ़िक्र में थे, और इसने मुसीबत के वक़्त उन्हों दोनों को पुकारा। वद्द आवाज़ की तरफ कान लगाये हुए. चले तो देखा कि एक बूढा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है | इनको देख कर बोला, बात्रा, मुझ फ़कीर को ज़रा सा पानी पिलाओ। बस, मैं पानी पी कर इस दुनिया से कूच कर जाऊँगा । फिर किसी को अपना मैंद न दिखाऊँगा।

हुलास ने उसे पानी पिछाया, पानी पी कर वह बोला, बाता, खदा तुम्दं इसका बदला दे | इसके एज तुम्हें क्या दूँ । खेर, अगर दो घंटे मी जिंदा रहा तो अपना कुछ द्वाल तुमसे बयान करूँगा और तुम्हें कुछ दूँगा भी ।

हुलास--आपके पास जो कुछ जमा-जया हो वह हमको बता दीजिए ।

बूदा--कहा न कि दो घंटे भी जिंदा रहा तो सब बातें बता दूँगा | मैं सिपादी हूँ, लड़कपन से यही मेरा पेशा है ।

दुलस--आपने तो एक क्रित्सा छेड़ दिया, मुझे खौफ़ है कि ऐसा न द्वो कि आपकी जान निकल जाय तो फिर वह रुपया वहीं का वहीं पढ़ा रदे |

बूढदा (गा कर)- पहुँची न राहत दमसे किसी को... .

हुलास --जनाब, आपको गाने को सूझती है और इन ढर रहे है कि कहीं आप-का दम न निकल जाय । रुपये बता दो, हम बढ़ी धूमधाम से तुख्दारा तीजा करेंगे ।

बुद्धसिंद--पानी और पिछत्रा दो तो फिर ख़ब ठंडा हो कर बतायेगा |

बूढा--मेरा एक लड़का है, दुनिया में और कोई नहीं । बत यही एक छड़का, जवान, खूत्रचुरत, घोड़े पर खूब सवार होता था ।

सुरैया--फिर अब कहाँ है वह !

बूदा---फ़ौज़ में नौकर था | किसी बेगम पर आशिक हुआ, तत्र से पता नहीं । अगर इतना माद्म हो जाय कि उसकी जान निकछ गयी तो क़त्र बनवा दूँ |

मुरैया--ल्म्बे हैं या ठिंगने !

बूट[---लम्बा है। चौड़ा सीना, ऊँची पेशानी, गोरा रंग ।

सुरेया--द्वाय-हाय | क्या बताऊँ बड़े मियाँ, मेरा उनका बरसों साथ रहा है | मेरे साथ निकाह होने को था | नि 5, जरी हमारे पास आ जाओ। कुछ उसका ह्वाल बताओ। ऋिंदा

।

सुरेया - हाँ, इतना तो मैं कद्ट सकती हूँ कि जिंदा हैं।

बूढा--अब वह है कहाँ ! ज़रा देख लेता तो आरजू पूरी हो जाती ।

हुलास--आपका सर दबा दूँ, तलवे मूँ, जे। लिदमत कहद्दिए करूँ |

बूदा - नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैंने अपने लड़के को लड़ाई के फ़न खूब सिखाये थे | दरएक के साथ भुरौवत से पेश आता या | बस, इतना बता दो कि डहिंदा है या मर गया !

तुरेया--जिंदा हैं और खुश हैं ।

बूदा--अब में अपनी सारी तकलीफ़ें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि कभी तकलीफ़ हुई थी ।

ये बातें हो रद्दी थीं कि पचास आदमियों ने आ कर इन लोगों को चारों तरफ़ से घेर लिया | दोनों डाकुओं की मुइकें कस ली गयीं। बुद्धसिंद मजबूत आदमी था । रस्सी तोड़ कर, तीन सिपादियों को ज़ूमी किया और भाग कर झील में कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूद कर उसे पकड़े । हुलास बैंधा रह गया ।

यह पुलिस का इंसपेक्टर था ।

सुरैया बेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है । इन लोगों को डाकुओं की खबर कैसे मिल गयी । चुपचाप खड़ी थी कि सिपाहियों ने उससे हँसी-दिललगी करनी शुरू की | एक बोला, वाह-वाह, यह तो कोई परी है भाई | दूसरा बोला, अगर ऐसी खूरत कोई दिखा दे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊँ |

हुलास-- सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हमसे मतलब है या उससे ।

इंस्पेक्टर-- इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाये और भूल जाय तो फिर से गिने । आँख नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूँगा ।

सुत्रह के वक़्त शहर में दाखिल हुए तो सुरेया बेगम ने चाटर से मुँह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूदे खाके (४ल्छी हज को चली | ओदनी मुह पर दाँपती है, हटाओ ओदनी ।

सुरैया बेगम की आँखों से आँसू जारी हो गये । उसके दिल पर जो कुछ गुजरती थी, उसे कौन जान सकता है । रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने छगीं |

रेंगरेज-- मई, यह दुपट्टा कितना अच्छा रैंगा हुआ है !

नानबाई--कहाँ से आते हो जवानो ! क्या कहीं डाका पड़ा था !

शेख जी--भरे यारो, यह नाज़नीन कौन है ! क्या मुखड़ा है, कसम खुदा की, ऐसी सूरत कभी न देखी थी | बस, यही जी चाहता है कि इससे निकाह पढ़वा लें। यह तो शब्बोजान से भी बढ़ कर है ।

यह रोख जी वही वकील साहब ये जिनके यहाँ अलारक्खी शब्बोजान बन कर रद्दी थी। सलारू भी

साथ था। बोला, मियाँ, आँखोंवाले तो बहुत देखे, मगर आपकी आँख निराली है |

वकील--क्यों बे बदमाश, फिर वूनेगुस्ताखी फी ।

सलारू--जब कहेंगे, खरी कहेँगे । आप थाली के बैंगन हैं ।

वकील साहब इस पर झल्ला कर दौड़े । सलारू भागा, आप मुँद्द के बल गिरे।

इस पर लोगों ने क्हक़द्दा मारा । सुरैया बेगम सोच रही थीं कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा हे, पर याद न आता था।

यह लोग और आगे चले तो तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ने लगीं। एक महलले में यह ख़बर उड़ी कि दरिया से एक घोड़मुद्दा आदमी निकाला गया है। उसी के साथ एक परी भी निकली है। दो-तोन महल्लों में यह अफ़वाह उड़ी कि एक औरत अपने घर से जेवर ले कर भाग गयी थी, अभत्र पकड़ी गयी है। नौ बजते-बजते यह लोग थाने में जा पहुँचे । हुलास और सुरैया बेगम दवासात में बंद कर दिये गये। रात को तरह-तरह के ख्वाब दिखायी दिये। पहले देखा कि उसका बूदा झौहर क़ब्र से गटन निकाल कर कहता है, सुरैया, बह कैसी बुरी घड़ी थी, जब तेरे साथ निकाह किया और अपने खानदान की इज्जत खाक में मिलायी। फिर घुसरा ख्वाब देखा कि आज़ाद एक दरख्त के साये में लेटे और सो गये। एक साँप उनके सिरहाने आ बैठा और काटना ही चाहता था कि सुरैया बेगम की आँख खुल गयी |

सबेरे उठ कर बैठी कि एक सिपादहदी मे आ कर कह्दा, तुम्दारे भाई तुमसे मिलने आये हैं । सुरैया बेगम ने सोचा, मेरा भाई तो कोई पैदा ही नहीं हुआ था, यह कोन भाई बन बैठा ! सोची; शायद कोई दूर के रिश्तेदार होंगे, बुला लिया । जब वह आया तो उसे देख कर सुरेया बेगम के होश उड़ गये । यह वही वकील साहब थे | आपने आते द्वदी आते कहा, बदन, खेर तो है, यद्द क्या, हुआ क्या ! इमसे बयान तो करो ! कुछ दौड़-धूप करें ! हुक्काम से मिल कर कोई सब्बील निकाझें ।

सुरैया--मियाँ, मेरी तकदीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा ! द

वकील--खैर, अब उन बातों का ज़िक्र ही क्या । सच कहता हूँ शब्मोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफ़सोस कि तुमने मेरी मुह्बत की कदर न की। जिस दिन तुम मेरे घर से निकल भागीं, मुझे ऐसा माद्प्त हुआ कि बदन से जान निकल गयी । अब तुम घबराओ नहीं | हम तुम्हारी तरफ़ से पैरवी करेंगे । तुम जानती द्वी हो कि दम कैसे मशहूर वकील हैं और केसे-कैसे मुकदमे बात की बात में जीत लेते हैं ।

सुरैया--इस वक़्त आप आ गये, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई । तुम्हारे घर से निकली तो पहिले एक मुसीबत में फैस गयी, बारे खदा-ख़दा करके उससे नज़ात पायी और कुछ दौलत भी हाथ आयी तो तुम्दारे ही महल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी ।

वकीढ--अरे, वह सुरेया बेगम आप ही थीं !

सुरैया--हाँ, मैं दी थी ।

वकील---अफ़सोस, इतने क़रीब रह कर भी कमी मुझे न ब्लुठाया | मगर वह आपको दौल्त क्या हुई और यहाँ हवालात में क्योंकर आयों !

सुरैया--हुआ क्या, दो बार चोरी द्वो गयी, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आखिर हम अपनी महररी को ले कर चल दिये। एक गाँव में रहने लगी, मगर वहाँ भी चोरी हुई और डाकुओं के फंदे में फँसी ।

इतने ही में एक थानेदार ने आ कर वकील साहब से कहा, अब आप तशरीफ़ ले जाइए । बक़्त खतम हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गयी | यह वही आदमी था जिसके पास एक बार वह आजाद पर रपट करने गयी थी। बोली--क्यों साहब, पहचाना १ अब क्यों पहचानिएगा !

थानेदार-- अलारक्खी, खूदा को गवाह रख कर कहता हूँ कि इस वक़्त मारे खूशी के रोना आता है। में तो ब्रिलकुल मायूस हो गया था | मुझे अब भी तुम्हारी वैसी दी मुहब्बत है जो पहिले थी !

रात के वक़्त थानेदार ने हवालात में आ कर उसे जगाया और आहिस्ता से कान में कहा, बहुत अच्छा मौक़ा है, चलो, भाग चलें । मैंने चौकीदारों को मिला लिया है।

सुरेया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं पकड़ न लिये जायें। मगर जब वह न माना, तो वह उसके साथ चलने पर तेयार हो गया । बाहर आ कर थानेदार ने सुरैया बेगम को मर्दाना कपड़े पद्दिनाये और गाड़ी पर सवार कराके चला । जब दो कोस निकल गये तो सबेरा हुआ । थानेदार ने गाड़ी से दरी निकाली और आराम से लेट कर हुक्क़ा पीने लगे कि एक मुसाफ़िर सवार ने आ कर पूछा-क्यों भाई मुसाफ़िर हिंदू हो या मुसलमान १ मुसलमान हो तो हुक्क़ा पिछाओ |

थानेदार ने खातिर से भैठाया । लेकिन जब मुसाफ़िर के चेहरे पर गौर से नज़र डाली तो कुछ शक हुआ । कद्दा--जनाब, मेरे दिल में आपकी तरफ़ से एक शक पैदा हुआ है। कह्दिए अज करूँ, कहिए खामोश रहूं ! आप ही तो जबलपुर में एक सौदागर के यहाँ मुंशी थे । वहाँ आपने दी ह:/र रुपये का ग़त्नन किया और साल भर की सज़ा पायी | कहिए, ग़लत कहता हूँ !

मुसाफ़िर - जनाब, आपको धोखा हुआ है, यहाँ खानदानी रईस हैं। ग़बन पर लानत भेजते हैं ।

थानेदार--यह चकगे किसी और को दीजिएगा। दाई से पेट नहीं छिपता ।

मुसाफ़िर--अच्छा मान लीजिए, आप ही का कद्दना दुरुस्त है। भला हम पाँस जाये तो आपको क्या मिले !

थानेदार- पाँच सौ रुपये नक्रद, तरक्क्री और .ने कनामी अलग |

मुसाफ़ि--बस | इमसे एक हजार ले लीजिए, अभी-अभी गिना लीजिए । लेकिन गिरफ़्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार--हज़रत, यह रक्कम बहुत थोड़ी है, हमें जैंचती नहीं ।

मुसाफ़ि--आखिर दो ही हज़ार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नज़र करता हूँ ! मगर गुस्ताखी माफ़ हो, -तो मैं भी कुछ कहूँ ! मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहदिए, केसा माँपा !

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा | डरे, कहीं जा कर अफ़सरों से जड़ दे, तो रास्ते दी में धर लिये बायेँ । बोले, दृज़रत, अब आपको अखितयार है, हमारी छाज अब आपके हाथ है !

मुसाफ़िर- मेरी तरफ़ से आप इतमीनान रखिए ।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गयी। थोड़ी देर के बाद तीनों यहाँ से रवाना हुए, शाम होते-होते एक नदी के किनारे एक गाँव में पहुँचे । वहाँ एक साफ़-सुथरा मकान अपने लिए ठीक किया और जमींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछे तो कहना, हमें नहीं मादूम । तीनों दिन मर के थके थे, खाने-पीने की भी सुध न रही | सोये तो सबेरा हो गया । सुबह के वक़्त थानेदार साइत्र बाहर आये तो देखा कि ज्मींदार उनके इंतज़ार में खड़ा हे। इनको देखते द्वी बोला, जनात्र, आपने तो उठते-उठते नौ बजा दिये।। एक अनजब्नी आदमी यहाँ आपकी तत्शश में आया है । वरदी तो नहीं पहिने है, हाँ, सिर पर पगड़ी बाँधे है। पंजाबी मालूम होता है | मुझे तो बहुत डर लग रहा है कि न जाने क्या आफ़त आये ।

थानेदार--किसी बहाने से हमको अपने मकान पर ले चलो और ऐसी जगह बैठाओं, जहाँ से हम सुन सकें कि क्या बातें करता है।

जरमींदार--च लिए, मगर आपका चलना अच्छा नहीं। अंदर ही बेठिए, अगर कोई खटके की बात होगी तो आपको इत्तला दूँगा । |

थानेदार--जनाब, मैंने पुलिस में नौकरी की है; चलने का डर आपको होगा | बम दाढ़ी दजाम की नज़र करता हूँ और मूछे कतरवा डालता हूँ । चलिए,

|

सुरेया बेगम को समझाया कि कहीं फैंस गये तो कहीं के न रहोगे । आप भी जाओगे ओर मुझे भी छे ड्ूबोगे | मगर थानेदार साहब ने एक न सुनी । फ़ौरन नाई को बुलाया, दादी मुड़वायी, स्याह किनारे की धोती पहनी, ऊँगरला डाटा, काछी मंदील सर पर रखी और आधे हिंदू और आधे मुसलमान बने हुए जर्मीदार के पास जा पहुँचे। सलाभ-बंदगी के बाद बातें होने छग्ीं। थानेदार ने अपना नाम रोख बुद्धु बतलाया और घर बंगाल में। जर्मीदार के पास एक पंजाबी भी बेठा हुआ था।

समझ गये कि यही हज़रत हमें गिरफ्तार करने आये हैं ! नाम पूछा तो उसने बत-लाया शेरसिंद ।

थानेदार--आप तो पंजाब के रहनेवाले होंगे !

शेरसिंह---जी हाँ, हम खास अम्बरसर में रहते हैं ।

थानेदार--आप कहाँ नौकर हैं !

शेरसिह--हम जुमींदार हैं । अम्बरसर के पास हमारा इलाक़ा है, उसको हमारा भाई देखता है, हम घूमते रहते हें। आप यहाँ किस रगारज़ से आये हैं? और टिके आप कहाँ हैं !

यानेदार--हसी गाँव में मैं भी ठहरा हूँ । अगर तकछीफ़ न द्वो तो हमारे साथ बर तक चलिए. ।

थानेदार उनको ले कर डेरे पर आये | सुरेया बेगम दौड़ कर छिपने को थीं, मगर थानेदार ने मना किया और कहद्दा कि यह मेरे भाई हैं । इनसे पर्दा करना कुजूल है !

शेरसिंह--यह आपकी कौन हैं !

थानेदार- -जी, मेरे घर पड़ गयी हैं !

सुरैया बेगम--ऐ, हटो भी, क्या वाहियात बार्ते करते हो | इज़रत, यह मेरे भाई हैं । इस पर शेरसिंद ने कदक़रहा लगाया और थानेदार झेंपे ।

शेरसिंह--अपने सुना नहीं, एक मुसलमान थानेदार किसी बेडिन को हवालात से ले कर भागे | बड़ी तहक़ीक़ात हो रही है, मगर पता नहीं चलता ।

थानेदार--कह तो नहीं सकता कि वह थानेदार द्वी थाया कोई और, मगर परसों रात को जब हम और यह आ रहे थे तो देखा कि एक गाड़ी पर कोई फ़ौजी आदमी सवार है और किसी औरत से बातें करता जाता है । औरत का नाम ररैया बेगम था । जो मुझे मालूम हो कि वद्दी दज्भरत हैं तो कुछ ले मरूँ।

शेरसिंह--ज़रूर वही था, उस औरत का नाम सुंरैया बेगम द्वी था। क्या कहूँ, हैं उस वक़्त न हुआ |

तीनों में बड़ी देर तक हँसी-दिछगी द्ोती रद्दी । रेरसिंद जब चलने लगे तो कहा, कल से इम भी यहीं ठहरेंगे | दूसरे दिन तड़के शेरसिंद्द अपना बोरिया-बधना ले कर आ पहुँचे। थानेदार ने कद्दा, हज़रत, आप हिंदू और दम मुसलमान । आपकी गंगा और हमारा कुरान । आप गंगा की कसम और हम कुरान की क्रसम खार्य कि मरते दम तक कमी साथ न छोड़ेंगे, हमेशा दोस्ती का दम भरते रहेंगे। ऐसा न हो कि पीछे से निकल जाओ |

शेरसिंहद--हम अपने ईमान की कसम खाते हैं कि मरते दम तक तुम्हारी दोस्ती का दम भरेंगे ।

थानेदार--मेरी कुछ शर्ते हैं, उनको क़बूल कीजिए---

(१) एक दूसरे की बात किसी से न कहँ। अगर इम किसी को मार भी डालें तो आप न कहिए | चाहे नौकरी जाय, चादे आबरू जाय |

(२) हमारे आपस में कोई पर्दा न रहे ।

(३) हम अपना हाल आपसे कहें ओर आप अपना द्वाल हमसे बयान करें|

शेरसिंहद--आपको सब बाते मंजूर हैं। हाथ पर हाथ मारिए और टोपी बदलिए। बस, हम और आप भाई-भाई हुए । भाभी साहब, हम ग़रीबों पर भी मिहरबानी की नज़र रहे ।

सुरैया बेगम--ऐ, थोड़ी देर में हम आपको झुक के सलाम करेंगे |

शेरसिंहद-- क्यों, थोड़ी देर में क्या होगा साहब, बताइए !

सुरैया बेगम - (हँस कर) घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी ।

थानेदार--अच्छा तो अब्र सुनिए भाई साहन, दम खनी हैं । अब आप चाहे इन्सपेक्टर को देसियत में क्ोद कीजिए चाहे दोस्त की द्ोसियत में माफ़ कीजिए ।

शेरसिंह--(दंग हो कर) क्या खूनी !

थानेदार--जी हाँ, में बंगाली नहीं है । लखनवी हूँ । चंद ही रोज हुए, शादह-जादा हुम!यूँ फ़र को क़ष्छ किया और भाग आया । अब फ़मोइए !

शरसिंह- खुदा तुझे ग़ारद करे, कमख्त १ तू तो इस क्रात्रिल है कि तुझको. खोदके दफ़न कर दे ।

थाने दार--अच्छा, अन्न दमारी क्या सज़ा तजत्रीज हुई ! साफ़ बता दो ।

शेरसिंह--मुए पर सौ दुर्र और गधे की सवारी | बस, अब्र में यहाँ से भाग जाऊँगा ओर उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूँगा । खदा तुझसे समझे |

थानेदार--छुनो भाईजान, यह फ़कृत चकमा था। हम आजमाते थे कि देख, तुम कोल के कहाँ तक सच्चे द्वो। अब दम साफ़ कह्दते हैं कि हम कातिल नहीं हैँ, लेकिन मुजरिम हैं । अबत्र कहिए |

शेरसिह--अजी, जब इतने बड़े जुर्म की सज़ा न दी तो अब क्या खौफ़ दे ! क्या कहीं से माल मार लाये हो !

थानेदार--भाई, माफ़ करे तो बता दें। सुनिए, हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो । और यह वही बेड़िन हैं । अब चाहे बाँध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक़ अदा करो |

शेरसिंद--ओफ ! बड़ा झाँसा दिया । मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्योंकर गया । मैं पंजाब से खास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहाँ दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूँ और बेड़िन से नोंक-झोंक भी हो रही है । पम्रगर टाँय-टॉय-फिस ।

मुरैया-- हुजुर, ले बरा मुँह सम्दाल कर बात कीजिए | बेड़िन कोई और होगी | बेड़िन की सूरत नहीं देखी !

थानेदार-- यह बेगम हैं । खूदा की कसम | हुरैया बेगम नाम है ।

शेरसिंद-- वह तो बातचीत से ज़ाहिर है । अच्छा बेगम साइब, बुरा न मानों तो एक बात कहूँ । अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती दो, तो इनको इस्तीफ़ा दो और हमसे वादा करो ।

2 राजी कीजिए | हमसे क्या वास्ता । हमको तो अपनी जान प्यारी है ।

सुरेया--ऐ. वाह | अच्छे मिले । तुम थानेदारी क्या करते थे | अच्छा, दिलगी तो हो चुकी । अब मतलब की बात कहो | हम दोनों भागे, तो भागके जायें कहाँ! ओर भागे तो रहें कहाँ !

हेरसिंह--एक काम करो । हमको वापस जानेदों। हम वहाँ जा कर आयें-बाये-सायें उड़ा देंगे । इसके बाद आ कर तुमको पंजाब ले बायैंगे ।

थानेदार--अच्छा तो है। हम सब मिल कर पंजाब चलेंगे |

सुरैया--तुम जाओ, हम तो न जायेंगे । और सुनिए, वाह !

थानेदार--हमारी बात मातिए। आप घा-घर तहक़ीक़ात कीजिए और दो दिन तक यहाँ टिके रहिए ओर वहाँ जा कर कहिए कि मुलज़िम तराई की तरफ़ निकल गया ।

शेरसिंद्द हाँ, सलाह तो अच्छी है । तो आप यहाँ रहें, मैं लश्ता हूँ ।

शेरसिंद्द ने दिन मर सारे कस्बे में तहक़ीकात की | जमींदारों को बुछा कर स्वृब डॉट-फटकार सुनायी । शाम को आ कर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए । जब शेरसिंह चले गये तो थानेदार साहब बोले---ुनिया में रद्द कर अगर चालाकी न करें तो दम मर गुज़ारा न हो। "दुनिया में आठों गाँठ कुम्मैत दो तब काम चले ।

मुरैया--वाद ! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चाछाक।

थानेदार--नेकी से कुछ नहीं होता, चाल्यकी बड़ी चीज़ है। अगर हम शझेर-सिंदद से चालाकी न करते तो उनसे गला केसे छूटता । -

न

दूसरे दिन थानेदार साइब भी रवाना हुए। दिन भर चलने के बाद गाड़ीवान से कददा--भाई, यहाँ से मीर्डीह कितनी दूर है !

गाडीवान ने कहा--हुजूर यही मीरडीह हे ।

थानेदार--यहाँ हम किसके मकान में टिकेंगे |

गाड़ीवान--हुजुर, आदमी भेज दिया गया है |

यह कद कर उसने नंदा-नंदा पुकारा । बड़ी देर के बाद नंदा आया और गाडी को एक टीले की तरफ़ ले चला | वहीं एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहखाने में ले गया |

थानेदार--च्या कुछ नीयत खोटी है भई !

सुरैया--हम तो इसमें न जाने के । अछाहइ रे अँपेरा |

नंदा--आप चलें तो सही ।

थानेदार ने तलवार म्यान से खोंच ली और छुरेया बेगम के साथ चले |

शकानेदार--अरे नंदा, रोशनदान तो ज़रा खोल दे जाके |

नंदा--अजी, क्या जाने, किस वक्त के बंद पड़े हैं ।

सुरैया--है-है | खटा जाने, कितने बरसों से यहाँ चिराग नहीं जला | यद्द जीने तो खत्म ही होने नहीं आते ।

नंदा--कोई एक सौ दस डौने हैं ।

सुरैया--उफ् ! बस अब मैं मर गयी ।

नंदा--अब नगिचाय आये | कोई पनीस ठो और हैं ।

बड़ी मुश्किलों से ज़ीने तय हुए। मगर तहखोाने में पहुँचे तो ऐसी टंडक मिली कि गुलाबी जाड़े का मज़ा आया । दो पलग जिछे हुए थे। दोनों आराम से बैठे । खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रखा था | दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे । यह मकान चारों तरफ़ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पद्दाड़ों की फाली-काली चोटियाँ नज़र आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कद्टा--बहुत मुक़ामों की सैर्की है, मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आयी थी | बस, इसी जगह हमारा और वुम्दारा निकाह होना चाहिए !

सुरैया--भई, सुनो, बुरा मानने की बात नहीं । मैने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूँगी | दिल का सौदा सिफ़ एक बार होता है। अनज् तो उसी के नाम पर बैठी हूँ। किसी और के साथ निकाइ करने की तरफ़ तबियत मायल नहीं होती |

थानेदार--आख्िर वह कौन साइबर हैं जिन पर आपका टिल आया हे! मे भी तो सुनूँ ।

सुरैया--ठुम नाइक़ बिगइते हें।। तुमने मेरे साथ जो सद्क किये हैं, उनका एद्सान मेरे सिर पर है; लेकिन यह दिल दूसरे का हो चुका ।

थानेदार---अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली ? मझे क्यों मुसीबत में गिरफ़्तार किया १ पहले ही साची होती | अभत्र से बेहतर है, तुम अपनी राद्द लो, में अपनी राइ ले ।

सुरैया--यह तुमने छाख रुपये की बात कही । चलिए, सस्ते छूटे ।

थानेदार-- तुम न द्वगी तो क्या जिंदगी न हगी !

मुरैया-- और तुम न होगे तो क्या सबेरा न होगा !

थानेदार--नौ करी की नौकरी गयी और मतलब का मतलब न निकला---

गेर आँखें सेंके उस बुत से दिले मुज़तर जले,
बाये बेददी कोई तापे किसी का घर जले |

सुरैया--आँखें सकवानेवालियों और द्वोती हैं ।

थानेदार-इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरटी द्वो और कहती हो, हम

नेक | वाह्द री नेकी !

सुरैया--तुमसे नेकी की सनद तो नहीं नाँगती १

थानेदार--अग्न इस वक़्त तुम्दारी यूरत देखने को जी नहीं चाहता | तुरैया--अच्छा, आप अलग रहें | हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई । थानेदार-- हमको मलाल यह है कि नौकरी मुफ़्त गयी । सुरेया--मजबूरी [!

४८३

HINDI TEXT

प्रसंग ८९

सुरैया बेगम ने अब थानेदार के साथ रददना मुनासिब न समझा | रात को जब थानेदार खा पी कर लेटा तो सुरैया बेगम वहाँ से मागी । अमी सोच हीं रही थी कि एक चौकीदार मिला । झुरैया बेगम को देख कर बोला--आप कहाँ! मैंने आपको पहचान लिया है। आप द्वी तो थानेदार साहब के साथ उस मकान में उद्दरी थीं । मालूम होता है, रूठ कर चली आयी हो । में खब जानता हूँ ।

सुरैया--हाँ, है तो यद्दी बात, मगर किसी से ब्ि क्र न करना ।

चौकीदार--क्या मजाछ, मैं नवाबों और रईसों ए) सरकार में रहा हूँ ।

बेगम-अच्छा, में इस वक़्त कहाँ जाऊं!

चौकीदार--मेरे घर ।

:गम--मगर किसी पर जाहिर न होने पाये, वरना हमारी इज्जत जायगी |

बेगम साहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुँचीं । चौकीदार की बीबी ने बेगम की बड़ी खातिर की ओर कहा--कछ यहाँ मेला हे, आज टिक जाओ । दो-एक दिन में चली जाना |

ठुरैया बेगम ने रात वहीं काटी । दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ । चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साइज खड़े वाज कह रहे ये। सैकड़ों आदमी जप्ता ये । सुरैया बेगम भी खड़ी हो कर वाज़ सुनने छगीं। पादरी साहब उसको देख कर भाँप गये कि यह कोई परदेशी औरत है। कहीं से भूल-मटक कर यहाँ आ गयी है। जब वाल खत्म करके चलने लगे तो सुरेया बेगम से बोले--बेटी, तुम्हारा घर यहाँ तो नहीं हे !

सुगैया- जी नही, बदनसीब औरत हूँ। आपका वाज सुन कर खड़ी हो गयी।

पादरी--तुम यहाँ कहाँ ठहरी हो!

सुरैया--सोच रही हूँ कि कहाँ ठहर ।

पारगी--मेरा मकान हाजिर है, उसे अपना धर समझो। मेरी उम्र अस्सी वर्ष पे ज्यादा है | अकेले पड़ा रहता हूँ। तुम मेरी लड़की बन कर रहना ।

दूसरे टिन जब पादरी साहब गिरजाघर में आये, तो उनके साथ एक नाअक बदन मिस कीमती अँगरेप्ी कपड़े पहने आयी और श्ञान से बैठ गयी। छोगों के हैरत थी कि या खुदा, इस घुड़ढे के साथ यह परी कौन है | पादरी साहत्र ने उसे भी पास की कुर्सी पर ग्रैठाया]ह्वस भरत वी चालू-दाल से पाया ज्ञाता था कि कभी सोहबत में नहीं बैटी है । हर चीज़ को अजनत्रियों की तरह देखती थी ।

खीले जहानें. में चुपके-चुपके बातें होने लगीं--

टाम- कड़े अँगरेजी हैं, रंग गोग, मगर जरफ़ सिगाह है और आँखें भी काटी | मादम होता है, किसी हिंदोस्ानी औरत को अँगरेमी कपड़े पहना दिये हैं ।

डेविस---इस क्ाबिल है कि जोरू बनायें।

टाम--फिर आओ, हम-तुम डोरे डार्ले, देखे, कौन खुशनसीजत्र है|

डेविस--न मई, हम यों डोरे डालनेवाले आदमी नहीं। पहले मादूम तो हो कि है कौन ! चाल-चलछन का भी तो कुछ हाल मादम द्ो। पादरी साइब की लड़की तो नहीं है| शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया दै |

तीन हिंदोस्तानी आदमी भी गिरजा गये ये । डनमें यों बातें होने छगीं--

मिरजा--उस्ताद, क्या माल है, सच कहना !

लाला-- इस पादरी के तो कोई लड़का-बाला नहीं था ।

मुशी--वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है !

नमाज के बाद जत्र पादरी साहब घर पहुँचे तो सुरैया से होडे---बेटी, हमने तुम्हारा नाप मिख पाछेन रखा है । अब तुम अंगरेजी पदना शुरू करो |

सुरैया--हमें किसी चीज के सीखने की आरजू नहीं है। बस, यह्दी जी चाइता है कि जान निकल जाय । किसका पदना और कैसा लिखना । आज से इम गिरजा-घर न जायँगे।

पादरी--यह् न कह्दो बेटी | खूदा के घर में जाना अपनी आक्रब्त बनाना है | यह खुदा का हुक्म है |

सुरैया-- अगर आप मुझे अपनी बेटी समझते हैं तो में भी आपको अपना बाप समझती हूँ, मगर मैं साफ़-साफ़ कह्दे देती हूँ कि मैं ईसाई मज़हब न कबूल करूँगी ।

रात को जब सुरेया बेगम सोयो, तो आज़ाद की याद आयी और यहा तक रोयी कि द्विवकियाँ बैंध गयीं ।

पादरी साहब चाइते ये कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मजहब अख्तियार कर ले, मगर सुरैया बेगम ने एक न सुनी । एक दिन वद्द बेठी कोई किताब पद रद्दी यी कि जानसन नाम का एक अँगरेज आया और पूछने छगा--पादरी साइब कह हैं!

सुरैया--में अँगरेजी नहीं समझतो ।

जानसन-- (उदूं में) पादरी साहब कहाँ हैं !

सुरैया--कहीं गये हैं |.

जानसन- मैंने कभी तुमको यहाँ नहीं देखा था ।

सुरैया--जी हाँ, में यहाँ नहीं थी ।

जानसन--यद्द कौन-सी किताब है !

सुरैया--सेनेका की नसोहतें हैं | पादरी साहब मुझे यद्द किताब पढ़ाते हैं।

जानसन--मादूम होता है, पादरी साइन तुम्हें भी 'नन' बनाना चाहे हैं|

सुरैया- नन किसे कहते हैं !

जानसन--नन उन औरतों को कद्दते हैं जो जिंदगी भर क्वाँरी रह कर मसीह फी खिदमत करती हैं । उनका सिर मुँढ़ा दिया जाता है और आदम्रियों से अलग

इक मकान में रख दी जाती हैं ।

पुरैया-यह तो बड़ी अच्छी बात है| में भी चाहती हूँ कि उन्हीं में शामिल हं' जाऊँ और तमाम उम्र शादी न कहूँ।

जानसन ने यह बातें हुनीं तो और ज़्यादा बैठना फुजूल समझा । हाथ मिला कर चला गया ।

सुरैया बेगम यहाँ आा तो फैंसी थीं, मगर भाग निकलने का मौक़ा हँढ़ती थीं | इस तरह तीन महीमे गुजर गये !

HINDI TEXT

प्रसंग ९०

नेपाल की तराई में रियासत खैरीगढ़ के पास एक लक्ष व दक़ जंगल है ! बद्ाँ कई शिकारी शेर का शिकार करने के लिए आये हुए हैं। एक द्वाथी पर दो नौजवान बैठे हुए हैं | एक का सिन बीस-म्राईस बरस का है, दूसरे का मुश्किल से अद्वारह्द का | एक का नाम है वजाहत अछी, दूसरे का माझक़ हुसैन। वजाइत अली दोहरे बदन का मज़बूत आदमी है। माशक् हुसेन दुबला-पतछा छरदरा आदमी है । उसकी शक़्ल-सूरत और चारू-ढाल से ऐसा मालूम द्वोता हे कि अगर इसे जनाने कपड़े पहना दिये जायें, तो बिछकुछ औरत माद्म हो। पीछे-पीछे छटद हाथी ओर आते थे | जंगल में पहुँच कर लोगों ने हाथी रोक लिये ताकि शेर का हाल दरियाफ़त कर लियां जाय कि कहाँ है। माशक़ हुसैन ने कॉप कर कद्ा--क्या शेर का शिकार होगा ! हमारे तो होश उड़ गये | अल्लाह के लिए हमें बचाओ ।। मेरी तो शेर के नाम ही से जान निकल जाती है | तुमने तो कद्दा था हिरनी और पाढे का शिकार खजने चलते हैं ।

वजाहइत अली--वाह इसी पर कहती थीं कि हम बन-बन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते । अब्र क्या दो गया कि जरा सा शेर का नाम सुना और काँप उठीं !

माथूक़ हुसैन--शेर ज़रा सा होता है ! ऐ, वह इस द्वाथी का कान पकड छे तो सिंघाइ कर ब्रैठ जाय । निगोड़ा द्वाथी बस देखने ह्वी भर को होता है । इसके बदन में खून कहाँ | बस, पानी ही पानी है ।

वजाहत अली--अब्बल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुक़ाबिछा कर सर्केगे। अद्ठारह-अद्वारह निशानेबाज़ साथ हैं। इनमें दो तीन आदमी तो ऐसे बढ़े हुए हैं कि रात के बक़त आवाज़ पर तीर लगाते हैं। कया मजाल कि निशाना खाली जाय | तुम घबराओ नहीं, ऐसा छुत्क आयेगा कि सारी उम्र याद करोगी |

माशूक़ हुतैन -म्हें क्रम है, हमें यहाँ से कहों भेज दो । अल्लाह ! कब यहाँ से छुटकारा होगा | ऐसी बुरी फँसी कि कुछ कहा नहीं जाता ।

नवात्र साहब ने मुतकिरा कर पूछा--किससे १

माशूक हुसैन--ऐ,, हटो भी ! तुम्हें दिूणी सूझी है और हम क्या सोच रहे हैं। शर ऐसा जानवर, एक थप्पड़ में देव को सुला दे | आदमी जरी सा भुनगा, चछे हैं शोर के शिकार को | हाथी रोक लो, नहीं अल्लाह जानता है, हम द्वाथी पर से कूद पढेंगे। बला से जान जाय या रहे ।

नवाब--हैं-हैं। जान ठम्हारे दुश्मनों की जाय | आखिर इतने आदमियों को अपनी जान प्यारी है या नहीं १ कोई और भी चूँ करता है !

माशक--हतने आदमी जायें चूल्दे में | इन मुओं को जान भारी हुई है। यह घर से लड़ कर आये हैं। जोरू ने जूतियों मार-मार कर निकाल दिया दै। इनकी और मेरी कौन सी बराबरी | हमें उतार दो, हम अन्न जायेंगे ।

नवाब-ज़रा ठद्दरो तो, मैं बंदोबस्त किये देता हूँ। किसी बड़े दरख्त पर एफ मचान बाँध देंगे | बत, वहीं से बैठके देखना १

माशुक- वाह, जरी सा मचान ओर जंगल का वास्ता। अकेली डर न जाऊँगी ! हाँ, तुम भी बेठो तो अलबत्ता !

नवाब--यह तो बड़े शर्म की बात है कि हम मर्द हो कर मचान पर बैठें और और लोग शिकार खेले ।

माझूक--इन लोगों से कह दो कि हमारे दोस्त की यही राय है | डर किस बात का है ! साफ़-साफ़ कह दो कि यह औरत हैं और हमारा इनके साथ निकाह होनेवाला है |

नवाब--यह नहीं हो सकता । यह मशहूर करना कि एक कमसिन औरत को मर्दाना कपड़े पहना कर यहाँ लाये हैं, मुनासिब नहीं ।

इतने में आदमियों ने आ कर कद्दा--हुजूर, सामने एक कछार है । उसमें एक शेरनी बच्चों के पास घेटी है । इसी दम हाथी को पेल दीजिए |

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने खिदमतगार को हुक्म दिया--इनकी एक शालो रूमाल और पचास अशफ़ियाँ आज ही देना | हाथी के लिए पेल का लफ़्न खूब लाये ! सुभान-अल्लाह ।

इस पर मुसाहब्रों ने नवाव साहब की तारीफ़ों के पुल बाँध दिये ।

एक--खुमान-अल्लाह, .वाह मेरे शाहज़ादे । क्यों न दो |

दुसरा--खुदा आपको एक हजार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कद्दते हैं ।

नवाब--अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ़ हाथी ले चले ।

माधूक्र-अरे लोगों, यह क्या अंघेर है। आखिर इतनों में किसी के जोरू-जाता भी है या सब निहंग-लाडले, बेफ़िकरे, उठाऊ-चूल्दे ही जमा हैं। ख़ुदा के लिए. इनको समझ्ञाओ। इतनी सी जान, गोली छगी और आदमी टें से रह गया । आदमी में है क्या | अल्लाह करे, शेर न मिले | मुई बिल्ली से तो डर छगता है| शेर की सूरत क्योंकर देखूँगी। मला इतना बताओ कि बैंधा होगा या खुला ! तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठपरों में बंद थे ।

एकाएक दो पासियों ने आ कर कहा कि शेरनी कछार से चली गयी | नवाब साहब ने वहीं ढेरा डाल दिया और माशक्न हुसैन के साथ अंदर आ बेठे ।

नवाब--यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगम साहब बहादुरी फे साथ शेर का शिकार खेलने को गयीं !

माथक--ऐ, वाह ! जो शरीफ़ज़ादी सुनेगी, अपने दिल में यही कदेगी कि शरीफ़ की छड़की और इतनी ढदीठ | मलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुचे का नाम सुनते दी बदन के रोयें खड़े हो जायँ। अकेले कमरे में बिल्ली भाये तो थरथर कॉपने छगे । ख्वाब में भी रस्सी देखे तो चौंक पड़े । अच्छी पट्टी पढाते हो ! दूसरे दिन नवाब साहब ने शिकारी लिब्रास पहना | खेमे से निकले । माश्नक्र हुसैन भी पीछे से निकले, मगर इस वक़्त बेगमों की पोशाक में ये और बेगम भी कौन ! वही सुरैया, जो मिस पालेन बनी हुई पादरी साइब के साथ रही थी। ऐसा मादम हुआ, कोई परी पर खोले चढी आती है। नवाब साहब ने कदा--

आग़ाज़े इश्क दी में हमें मौत आ गयी, आगाइ भी न हाल से वह बेखबर हुआ | सुरेया बेगम ने तिनक के कद्दा--बस, यह मनहूस बातें हमें एक आँख नहीं भारती । मरने-जीने का कौन ज़िक्र है ! नवाब-सुनिए हुजूर | जो आप आँखें दिखलायेंगी तो हम भी बबगड जायेंगे । इतना याद रखिए । सुरैया--खुदा के लिए ज़रा हया से काम छो। इन सबके सामने हमें ससवा न करो | वह शरीफ़ज़ादी क्या, जो शर्म से मुँह मोड़े । इतने आदमी खड़े हैं और तुमको कुछ झयाल ही नहीं | खुदा का क्रह,, बुतों का एताब रहता है, इस एक जान प? क्या-क्या,अज्ाब रहता है। सुरैया--बस, हम न जायैंगे । चाहे इधर की दुनियाँ उघर हो जाय । नवाब साहब ने क्रदमों पर टोपी रख दी, और कटद्दा--मार डालो, मगर साथ चलो; वरना घुट-घुट के जान जायगी | बारे खुदा-खदा करके बेगम साहब उठीं। इतने में चौकीदार ने आ कर कहा-- खुदावंद, .दो शेर जंगल में दिखाई दिये हैं। अब भी मौक़ा हे, बरना शेरनी की तरद्द बह भी भाग जायेंगे ओर फिर शिकार न मिलेगा । बेगम-- आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं ! नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलवान ने “बरी-बरी? कद्द कर द्वाथी को बैठाया | तब जीना लगाया गया । बेगम साहब ने जीने पर कदम रखा, मगर झिझक कर उतर गयीं । नवाब--पहली बार तो बेझ्िश्क बेठ गयी थीं, अबकी डरती हो | बेगम--ऐ, लो, उस बार कद्दा था कि मुर्गाची का शिकार होगा | नवाब--शैर का शिकार आसान है, मुर्गात्री का शिकार मुश्किल है | बेगम--चलिए, रहने दीजिए । हमने फची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यहाँ रूह काँप रही है कि या खुदा, क्या होगा !

नवाब--होगा क्या ! कुछ भी नहीं | आखिर बेगम साहब भी बेठीं। नवाब साहब भी बैठे । हृवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैंठे और हाथी झूमते हुए चले । थोड़ी देर के बाद छोग एक झील के पास पहुँचे । शिकारी ने कद्दा--इलील में पानी कम्र है, हाथी निकल जायेंगे |

वेभगम-- क्या कहां ! क्या एस समुँदर में से जाना होगा !

नवाब - अभी दम के दम में निकले जाते हैं ।

बेगम-- रही निकले न ? हमें यहाँ इब्चोने लाये हो ! जरी हाथी का पाँव फिसला और चलिए, पानी के अंदर ग़ोते खाने लगे |

नदात्र साहत्र ने बहुत समझाया, तत्र बेगम साइबर अपने हाथी को झील के अंदर डालने पर राजी हुईं, मगर आँखें बंद कर लीं और गुर मचाया कि जल्दी निकल चलो । पाँच हाथी तो साथ-साथ चले, दो पीछे थे । नवात्र साइबर ने कहा--अन्न आँखें खोल दो, आधी दूर चले आये हैं, आधी दूर और बाक़ी है । भेगम ने आँखें खोलीं तो झील की केफ़ियत देख कर खिल उठीं। किनारों पर ऊँचे-ऊँचे दरझत झुम रहे थे। कोई झील के पानी को चूमता था, किसी की शास्रें झील की तरफ झुकी थीं। बगम गे कहा--अब्र हमें डर नहीं मालूम द्योता । मगर अल्लाह करे, कोई शेर आज न पिले |

नवाब--खूदा न करे ।

बेगम--वाह ! आ जाय क्या मजाल है | हम मंतर पढ़ देंगे |

नवाब--भलछा आप इतनी हुईं तो !

बेगम--अजी, में तुम सबको बनाती हूँ, डर कैसा ! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आये, तो ग़ाज़च ही

हो जाय । सुनते ही रोयें खड़े होते हैं |

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिये बैठो थी। खेदे के आदम्ियों ने कह्ा--हुजर, अब द्वाथी रोक छिये ज्ाँय । सुरैया घेंगम काँप उढीं | हाय ! क्यों हुआ। यह शेरनी कहाँ से निकल आायी। या तो उसको क़जा छायी है या इमको |

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय | तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते ले कर कछार की तरफ दौड़े | सुरेया बगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक क्रिस्म का छुत्फ़ मी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा-- बह रोशनी केसी है ? नवात्र बोले--शेरनी निकली होंगी और शायद इमला किया हो | इसी लिए रोशनी की गयी कि डर से भाग जाय ।

दोरनी ने जब आदमियों की आवाज़ छुनी, तो घत्ररायी । बच्चों को एक ऐसी जगह ले गयी जहाँ आदमी का गुजर मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी माग गयी । सुरैया बेगम यह खबर सुन कर खिलखिला कर हँस पहीं । लो, अब खेलों शिकार, बढ़े वद चन कर चले थे | हमारी दुआ और क़बूल न हो !

नवाब--आज बे-शिकार किये न जायेंगे। छो, कसम खायी ।

नत्रात्र साइच रईस तो थे ही, कसम खा बैठे । एक मुसाइत्र ने कहा-हुजुर, मुमकिन है कि शेर आज न प्रिले | क्सम खाना ठीक नहीं ।

नवाब--हम इरगिज़ खाना न खायेंगे जब तक शेर का शिकार न करेंगे | इसमें चाद्दे रात हो जाय, शेर का जंगल में न मिलना केसा !

बेगम--खदा तुम्हारी ब्रात रख ले ।

मुसाहब--जैसी हुजुर की मर्जो |

वेगग-- सदा के लिए अब भी चले चलो | क्या तुम पर कोई जिन सवार है था किसी ने जादू कर दिया है। अब ट्रिन कितना बाकी है

नवाब--दिन कितना ही हो, हम शिकार ज़रूर करेंगे |

बेगम -तुम्हें बाय हाथ का खाना हराम है जा शोर का शिकार खेले बग्रेर जाओ |

नवाब--मंजूर ! जब्न तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना ने खासगे ।

बंगम-ब्ात तो यही है, खदा तुम्हारी बात रख ले , आा गो, माई इनका समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, काई सलाह रगवाजा भी ने या नहां!

० क मुसा हत्च--हुजूर ने तो कसम सा ली, लेकिन साथ के सब आर्मी भू प्यासे ई, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरया सच इलकाव हे जायग |

नसवाब---ह मकी किसी का गा नहीं ट्रै, कादप्र दग्या नहीं || ! झगर व्याय लीए दसारे साथी हैं तो हमारा हुक्म १200 0760

बेगम - शाम दोने आया, झा शिदार का पता नहीं, फिर झाब यहाँ टहरना बेबकूफ़ी है या और कुछ !

बरकत--हुजर ही के सत्र काँटे थोये हैं ।

इतने में खेदेवालों ने कहा-खुदाबंद, अब होशियार रहिए। शेरनी आती है। अब देर नहीं है | कछार छोड कर पूरत्र की तरफ भागी थी | हम लोगों को देख कर इस ज़ोर से गरजी कि द्वोश उड़ गय, अद्ठाईस आदमी साथ ये, अठ्ठाईसों भाग गये । उस बक़्त कदम जमाना मुद्दाठ था। शेर का कायदा है कि जब गोली लगती है तो आग द्वो जाता है। फिर गोली के बाप की नहीं मानता | अगर बम का गोला भी दो तो वह इस तरद्द आयेगा जैसे तोप का गोला आदउा है । ओर शेरनी का क़ायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो ओर सारी दुनिया के गोले कोई ले कर आये तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आँच आ सके ।

न बेगम--बैंधी है या खुली हुई द्वे ! तमाशेवाले शेरों की तरह कठघरे में बंद न

मुसाहब--हाँ हाँ साहब, अंधी हुई हे ।

बेगम भला उसको बाँधा किसने होगा !

अब एक टिल्गी सु नए | एक हाथी पर ठो बंगाली थे । उन्होंने इतना ही घुना था कि नवात्र साहब शिकार के लिए जाते हैं। अगर यद्द माल्म होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ चरस न आते। समझे ये कि झीलों में चिडियों का शिकार दोगा । जन यहाँ आाये और सुना छि शेर का शिकार है तो जान निकल गयी। एक का नाम कारीयरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगीं ।

बोस---नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह छोग हमारा दुश्मन है।

घोष--हम इनसे समझेगा। ओ शारढरा फील का बान, हमारे को कीधर छे जायगा !

फ़ीलबान ने हाथी को और भी तेज्ज किया तो यद्द दोनों साइब चिलाये |

बोस---ओ शाला |

घोष--ओ शाला फील का बान, आच्छा इम साहब के यहाँ तुम्हारा नालिश करेगा । अरे बाबा, हम लोग जाने नहीं माँगता । शेर शाढा का मुक्काबिला कौन करने सकता ?

फ़ील्नान--बाबू जी, डरो नहीं । अभी तो शेर दूर है। जब होदा पकड़ छेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस--अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे का बाप का बाप, इम हाथी को फेरने माँगता । ओ शाल्य, तुम आरामजादा ।

फ़ील्नान- अच्छा बाबू, देते जाओ गालियाँ। खुदा की कसम, शेर के मुँदद में हाथी न ले जाऊँ तो पाजी |

बोस--बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिशवत देगा। हमारा बाप है, माँ है, सब तुम हे |

जितने आदमी साथ थे, सब हँस रहे ये । इन दोनों की घबराइट देखने क्राबिल थी । कभी फ़ील्बान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतार कर खुदा से दुआ माँगते भे, कभी जंगल की तरफ देख कर कहते थे--बाबा, हमारा जान लेने को दम यहाँ आया। हमारा मौत इमको यहाँ लाया | अरे बाबा, हम लोग लिखने-पढने में अच्छा होता है | हम लोग बिलायत जा कर अँगरेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपना जान से बेर नहीं है । ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिप छापेगा ।

फ़ीलबान--आप अपनी तारीफ़ रहने दे ।

घोष- नहीं, तुम्हारा नाम हो बायगा । बढ़ा-बड़ा लोग तुम्हारा नाम पढ़ेगा तो बोलेगा, यह फोल का बान बढ़ा दोशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायगा । हम तुमको नौकर रखा देगा |

फ़ील्यचान--पचास-साठ | इतने रुपये में रखूँगा कहाँ ! अच्छा दूसरी शादी कर लूँगा, मगर तारीफ़ किस बात की लिखिएगा । ज़रा हाथी दौड़ाऊँ !

नोस--तुम बढ़ा नटखट है। ओ शाला, तुम फिर दौढ़ाया !

जब झील के करीब पहुँचे, तो दोनों बंगाली और मी डरे। घोष ने पूछा -ओ फील का बान, इस झील में किता गहरा (

फ़ीलबान ने कहा--हाथी-छुबाव है ।

घोष--और इस झीछ के अंदर से हम छोग को जाने होगा भी ।

फ़ीकबान--जी हाँ, इसी में से जाने होगा भी |

घोष--और जो हाथी का पॉव फिसल गयी तो हम लोग का क्या. . .।

फ़ीलबान--अगर हाथी का पाँव फिसल गयी तो तुम लोग का टांग और नाक टूट जायगा, बस और कुछ न होगा, और मुँह त्रिगढ़ जायगी तुम लोग की ।

घोष--और तुम शाला कहाँ से बचने सकेगा !

फ़ील्बान-- हम उम्र भर हाथी पर चढ़ा किये हैं| हाथी फिसले तो डर नहीं और बह जाय तो खौफ़ नहीं ।

घोष--बाबा, तुम्हारी हाथी पानी से डरती है या नहीं ! हमसे शाच-शाच कह दो।

फ़ीलबान---तुम इतना डरता था तो आया क्यों !

घोष---अरे बाबा, गोली लगने से तो सब्न कोई डरता है ! जान फेरके आने सकेगा नहीं ।

फ़ीलबान ने हाथी को झील में डाला, तो इन दोनों ने वइ चिल्ल-पों मचायी कि कुछ न पूछो । एक बोला--हम डूब गया, तो हमारा जआगीर किसके पास ज्ञायगा !

फ़ीलशान मुसकिरा कर बोला--वहीं से सब लिख के भेज दीजिएगा।

घोष--ओ शाला, तू इमारा जान लेगा ! तुम जान छेगा शाला !

फ़ीलबान--बाबू , गोल-माल न करो, खदा को याद करो ।

घोष--गोल-माल तुम करता है कि हम करता है !

बोस--हा थी दिलेगी तो हम तुमको टकेल देगा, तुम मर जायगा !

घोष--अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुत से रुपये देने सकता ।

फ़ील्बान--अच्छा, एक हजार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें । भले आदमी, इतना नहीं सोचते कि पाँच द्वाथी तो उस पार निकल गये और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बाँका नहीं हुआ तो क्या आप ही दूब जायेंगे ! क्या जान आप ही को थ्यारी है !

घोष--अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जों पाँव फिसलेगी तो बडी राज हो जायगा |

फ़ील्बान--अजी, न पाँव फिसलेगी, न बड़ी गजब दोगा । बस चुपचाप बैंठे रहिए । बोलिए-चालिए नहीं |

घोष--किस माफिक नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला ! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय ।

फ़ीलबान--इमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्दारी नानी मरने की बारी है |

फ्ीलतान ने मारे शरारत के हाथी क। दो-तीन बार ऑआँकुश ल्गाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस, अब जान गयी । आपस में बातें करने छगे--

धोप---आमी दुई जानी हनी जाबो।

बोस--६, दाथीबाला बड़ो बोरू।

घोष --जोनी आये बची आज, तेखे दली कोरा आम आर शिकार खेलने जाबेना।

बोस--तुमी अमाए जाबरदस्ती नीए एछो।

धोष - आमारा प्रान भवाए आचे ।

धोष --हाथी रोक के आ शाला |

फ़ीलबान--बआबू जी, अब द्ाथी हम्परे मान का नहीं। अब इसका पाँव फिसला चाहता है, जरा सँमले रहिएगा ।

नवात्र साहब ने दोनों आदमियों का रोना-चीख़ना सुना तो महावत से बोले-ख़बरदार जो इनको डरायेगा तो तू जानेगा |

घोष -- नवाब शाब, हमारा मदद करो, अन्न हम जाता है बैकुंठ !

मद्दावत ने आहिस्ता से कहा--बैकुंठ जा चुके, नरक में ज्ञाओगे ।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियों देने छगे | तुम शाला को पानी के बाहर जाके दम मार डाछेगा |

महावत ने कहा--जब पानी के बाहर जा सको न |

धोष--नवाब जात्र, यह शाला हमारे को गाली देता ।

नवाष-- गाली केसी बाबू , आप इतना घब्राते क्यों हैं !

प्ोप--हमारे को यह शाला गाछी देते हैं |

नवाब--क्यों बे, खबरदार जो गाली-गछौज की |

फ़ीलबान - हुजूर, में ऐसी सवारी से दरगुज़्रा, इनको चारों तरफ़ मौत ही. मौत नछर आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाये ९

बीस--अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा ! अरे बात्रा, अब्र हम ऐसो सवारों पर न आयेगा ।

बारे द्वाथी उस पार पहुँचा, तो इन दोनों की जान में ज्ञान आयी। ब्रोस बाबू बालि--नवात्र शात्र, हम इसी का साथ बड़ा तकलीफ पाया | यह महावत हमारा उस जन्म का बेरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलना चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा ।

नवाब साहब ने फ़ीलबान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओं और बाबू छोगों से कद्दा--अगर आप लोगों को तकलीफ हाती है तो उतर जाइए । इस पर घोष और बास दोनों सिर पीटने छगे--अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोडके भागना माँगता | हम जायगा कहाँ?! इधर जंगल, उधर जंगठ। हमारे का घर पहुँचा दो ।

नवाब साहब ने कद्दा--अगर एक द्वाथी को अकेला भेज दूँ. तो शायद शेर या सुभर या कोई अन्य जानवर हमला कर बेठे, हाथी ज़्मी हो जाय और मदहावत की जान पर आ बने । आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो !

घधोष--आपको अपना हाथी प्यारा, फ़ील का बान प्यारा, हमारा जान य्यारा नहीं | फील का बान सात-आठ रुपये का नौकर, इम लोग हेडक्लकीं करता और क्या बात करेगा | हम जान नहीं रखता, वड़ जान रखता है !

नवाषप--अच्छा, फिर बैठे रहो, मगर डरों नहीं |

धेप--अच्छ। अब हम न बेलेगा ।

भस--केस न बोलेगा, तुम न बोलेगा १ तम न बोलेगा ता हम बोलेगा ।

धोप--तम शात्य सभर है| तुम क्या बोलेगा ! बोलेगा तो हम वमको कतल कर डालेगा | शाला हमारे को फॉसक लाया और अग् जान लेना माँगता है ।

बीस--(घोती सभा कर) वम दृष्ट चुप रहे । तुम नीच कोम है ।

प्रोष--बोलेगा तो हम हल्यल करेगा !

गरस--(दाँत टिखा कर) हम तुमको दाँत काट लेगा ।

घोष--अरे तुम बोके जाय शाला, बोटजञात, दृश ।

ब्रोस - तुम नीच कोम, छोटा कोम, भीख माँगनेवाला सुअर |

दोनों में खूब तकरार हुई । कभी बोष ने पूँसा ताना, कभी बोस ने पैतर

गर दोनों में कोई वार न ऋरता था। दोनों झुंदे तोट-तोल कर रह जाते

9 । नदात्र साहब ने यह ह्वाल देखा ते। चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिटाए, 47 एप ने मंजर न किया, जोले - यह हमारा देश का, हम उसका देश व, और कोई हमार देश वा नहीं !

इतने में आदागयों ने कूब्कार कर कहा-खबरदार, शेरनी निकछी जाती है | हुक्म हुआ है कि हाथी इस तरफ़ बढ़ाओ | सब्च हाथी बदाये शये । एक दरणएए 7 आह में शेग्नी दो बच्चे लिये हुए इबकी खड़ी थी । नवाब साहब्र ने फ़ोरन गोली सर को, वह खाली गयी । नवान्र साहव ने हिर बंदूक सर की, अब की गोली शेरनी के बल्ले पर जा पड़ी | गोली खाना था कि. बह झल्ला पार पलठ पड़ी और तोप के गेलि की तरह

शपरी । आते ही उसने एक हाथी को थप्पद्र रगावा तो वह चिंघाड़ कर भागा । नवाब साइब ने फिर बंदूक चलायी, मगर निशाना र:ठी गया। शेरनी ने उगी हाथी का जिसे थप्पड़ गारा था, कान पकड़ कर बैठा दिया। आरे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शरनी तड़प कर गिर पड़ी |

इधर तो यह केफ़ियत हो रही थी, उधर बंगाती बाबू दोनों होंरे के अंदर आधे पड़े थे | अंखि दोनों हाथों से बंद कर ली थी ' बेगम साहब ने उन्हें हौदे में ब्रेटे न देखा तो पृछा--क्या वह दोनों बाबू भाग गये !

फ़ीलबान--नहीं खुदावंद, में हाथी बढ़ाये लाता हूँ ।

हाथी क़रीब आया तो नवात्र साहब दोनों बंगालियों को देख कर इतना हैंसे कि पेट में बल पड़-पड़ गये |

नवाब-अब उठोगे भी या सोते द्वी रहोगे ! बाबू जी तो इलते हो नहीं ।

बेगम--क्या अच्छे आदमी थे बेचारे !

नवातब्र--मगर चल बसे । अभी बातें कर रहे थे |

बेगम--अन्न कुछ कफन-देफ़त की फ़िक्र करोगे या नहीं)

प्रीलतान ने कंधा पकड़ कर हिंलाया तो बोस बाबू उठे । उठते ही शेरनी की लाश देखी, तो कौंप कर बोले--नवात्र शाब्र, शाच-शाच बोलो कि यद्द मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है ! हम समझ गया कि मिट्टी का है |

नवाब--आप तो हैं पागल ।

घोष--आप लोग जान को कुछ नहीं समझता !

बोस--ये लोग गँवार हैं | हम लोग एम० ए०, बी ए० पास करता है। हम लोग बहुत ता बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता |

नवाब--अच्छा, अन्न हाथी से तो उतरो |

फ़ीलबान--जाबू साहब, शेरनी तो मर गयी; अब क्या डर है |

दोनों बाबुओं ने हाथी से ढतर कर शेरनी की तरफ़ देखना शुरू किया, मगर

आगे कोई नहीं बढ़ता ।

बोस--आगे बढो महाशाई ।

घोष--तुम्दीं बढ़ो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े ।

नवाब--बदना नहीं । खबरदार, बढ़े और शेर खा गया |

घोष--जाबा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास जरूर करके जायगा ।

ही यह कद्द कर आप आगे बंदे, मगर फिर उलटे पाँव भागे और पीछे फिर कर मी

ने देखा ।

HINDI TEXT

प्रसंग ९१

जब्र रात को सत्र लोग खा-पी कर लेटे, तो नवात्र साइबर ने दोनों बंगालियों को बुछाया और बोडे--खुदा ने आप दोनों साहब्ों को बहुत बचाया, बरना शेरनी खा जाती |

बोस-- हम डरता नहीं या, दम शाला ईश फील का बान को मारना चाइता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदजाती से हिलाने माँगे | जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब्र लोग का हाथी दविलने नहीं माँगता, तुम क्यों द्िलने माँगता है और हमसे बाला कि धाथू शाब, अब तो मरेगा । द्ाथी का पाँव फिसलेगी और तुम मर जायैंगे। हम बोला-- भरे, जो हाथी की पाँव फिसल जायगी तो तुम शाले का शाला कहाँ बच आायगा ! तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा ।

नवाब--अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ ! अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जा६००| या नहीं !

बोस--जायगा जो जरूर करके, मगर फील का ब्रान बोदजाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा | हमारे दाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जायगा |

सुरैया-- बेगम साहब तो दुह्ल ऐसो को अपना साथा तक न छूने दें । पहले मु तो बनवा [

बोस -- अब हमारे को डर पास नहों आते, दम खूब समझ गया कि जान जाने-बाला नहीं हे ।

नवात्र--अच्छा जाइए, कल आइएगा !

जब नवाब और सुरैया बेगम अकेले रह गये तो नवाब ने कद्ा-देखों सरैया बेगम, इस जिंदगी का कोई भरोसा नहीं । अभी कल को बात है कि शाहज़ादा हुमायूँ फ़र के निकाह की तैयारियाँ हो रही थीं और आज उनकी कब बन रही दे | इसलिए इनसान की चाहिए कि जिंदगी के ट्िन इँसी-खशी से काट दे। यहाँ तो तिर्फ़ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो | मुझे किसी से मतलूप न सरोकार) अगर तुम साथ रहद्दो ते खूरा गवाह है, बादशाह की हक़ीकृत ने समझ | अदा यकीन न आये तो आजमा लो |

बेगभ--आप साफ़्साफ़ अपना मंशा बतलाइए। में आपर। जाते कुछ नह समझी ।

नवाब--साफ़-साफ़ कहते हुए डर मादम होता है ।

बेगम --नहीं, यह क्या बात है, आप फहें तो ।

नवाब-- दब्नी जवान से) निकाह !

बेगम - सुनिए, मुझे निकाइ में कोई उज्र नहीं । आप अश्वल तो कमसिन, दुसरे रईसजादे, तीसरे ख़बयूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज् हो सकता है। छेकिन रफ़्ता-रप्रता अज़े करूँगी कि किस सब से मुझे मंजूर नहीं |

नवाब--हाय-हाय | तुमने यह क्या सितम दाया !

बेगम--मैं मजबूर हैँ, इसकी वजह फिर बयान करूँगी |

नवाब--अगर मंजूर नहीं तो हमें कत्ल कर डालो। बस छुट्टी हुई। अब जिंदगी और मौत तुम्हारे हाथ है |

दुसरे दिन नधाब साहब सो ही रहे ये कि खिदमतगार ने आ कर कहा--हुज़्र, और सन्न छोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है |

नवाब साहब ने शिकारी लिब्रास पहना और घुरेया बेगम के साथ हाथी पर सवार हो कर चले |

बेगम--वह बाबू आज कहाँ हैं ! मारे डर के न आते होंगे !

बोस--हम तो आज श्रुबू से ही साथ-साथ हैगा | अन् हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं ।

बेगम--बाबू , तुम्दारे को हाथी तो नहीं द्विलती !

घोष--ना, आज द्वाथी नहीं दिलती | कल का बात कल कै साथ गया |

हाथी चले | थोड़ी दूर जाने पर लोगों ने इत्तछा दी कि शेर यहाँ से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवात्र साहब ने ख़श हो कर कद्दा -द्वाथियों को दौड़ा दो । बाबुओं के फ़ीलबान ने जो हाथी तेज किया, तो बोस बाबू मुँह के बल जमीन पर आ रहे !

घोष--अरे शाला, ज़मीन पर गिरा दिया !

फ़ीलबान--चुप-चुप, गुल न मचाइए, मैं द्वाथी रोके लेता हूँ ।

घोष--गुल न मचार्ये तो फिर क्या मचार्ये १

फ़ीलबान--वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आयी |

घोष--मद्दाशाई, लागे ने तो !

बोस--बड़ी बोद लोग ।

घोष -अपना समाचार बोलो |

बोस--अपना समाचार की बोलबो बाघ्रा !

मिस्टर बोस झाड़-पोंढ कर उठे और मदहावत को हजारों गालियाँ दीं |

बोस--महाशाई, तुम ईश को मारो, मारो ईश दूष्ट को ।

घोष--ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़ कर तुमको मार डालने माँगता ।

फ़ीलबान हँस दिया । इस पर बोस आग दो गये, और कई ढेले चलाये, मगर कोई ढेला फ़ीलबान तक न ु पहुँच सका | फ़ीलबान ने कदा--हुजुर, अब द्वाथी पर बैठ लें-तो हम नवाब साइच के द्वाथियों से मिला दें | बोस बोले--हम डरपोक आदमी नहीं है| हम महाराजा बड़ौदा के यदाँ किसिम-क्सिम का जानवर देख चुका है|

ृ

धोष--अब बातें कब तक करेगा ! आके बैठ जा | फ़ोलबान--हुजूर, क़रान की कसम खा कर कहता हूँ, भेरा क़सूर नहीं। आप

च्क्

कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं । हौदे पर छटक कर बैंटे हुए ये। द्वाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े ।

बोस--हमारा दिल में आयी कि तुम्हारा कान नोच डाले । हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा ! तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा ।

जब शेर थोड़ी दूर पर रद्द गया और नवाब साहब ने देखा कि वाबूबाछा हाथी नहीं है तो डरे कि न जाने उन बेचारों की क्या हालत होगी । हुक्म दिया कि सब द्वाथी रोक लिये जायँें और घरतीघमक को दौड़ा कर ले जाओ। देख ', उन बचारों पर क्या तबाही आयी |

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू साइबों का हाथी दूर से नज़र आया । जब हाथी क़रीब आया तो नवाब ने पूछा--जाबू साहब, खैरि-यत तो है ! हाथी कहाँ रह गया था ! बाबू साइबों ने कुछ जवाब न दिया; मगर फ़ीलबान बोछा--हुजूर, यह दोनों बाबू छोग आपस में लड़ते थे, इसी से देर हो गयी |

अब बोस बाबू से न रद्दा गया । बिगड़ कर बोके---ओ शाला, तुम इमारे मुँह पर झूट तोलता है। तुम शालढा ब्रिछा कद्दे हाथी को दौड़ा दिये, हम तो ग़ाफ़िल पड़ा था ।

इतने मं 5 'मयों ने इत्तठा दी कि शेर सामने की झं'ल के किनारे लेटा हुआ हैं| लोग बंदूके ९. ।ल-स्ेभाल कर आगे बढ़े तो देखा, एक बनैला छुभर ऊँची-ऊँचाी धास में छिपा थेठा है । सब्चकी सलाह हुई कि चारों तरफ़ से छाली भिशाने लगाये नाथ ताकि घबरा कर निकले, मगर नवाब साहब के दिल में ठन गयी कि हम इस पतावर में हाथी जरूर ले जायैंगे। झुरैया बेग़म अभ्न तक तो सैर देखती थीं मगर पतावर में जाना बहुत अखरा । बोलीं--नवाब, तुम्हारे सिर की कसम, अब हम न जायेंगे | पतावर तलवार की धार से भी ज़्यादा तेज होती है । हमें किसी और हाथी पर बिठा दो |

नवाब ने दो शिफारियों को अपने हाथी पर ब्रिठा लिया और गुरैया बेगम को दूसरे हाथी पर बिठा दिया । एक और हाथी उनके साथ-साथ उनकी हिफ़ाजत के लिए छोड़ दिया गया | तत्र वाद साहब पतावर में प“चे | जब ध्अर ने देखा कि दुश्मन चला आ रहा है तो उठा और भाग खड़ा हुआ | नवाब साहब ने गोली चलायी | फिर और शिफारियों ने भी बंदुकें सर कीं ! खुभर तड़प कर झोल की तरफ़ झफ्टा | इतने में तीसरी गोली आयी | लोगों ने समझा कि अब काम त प्राम हो गया । नवाब साहब को शौक चर्राया कि उसे अपने हाथ से क़ल्छ करें। हाथी से उतर कर तलवार म्यान से निकाछी और साथियों को झील के किनारे हभर-उपर हटा दिया कि घुअर समझे, सब चल दिये हैं। जब सुअर ने देखा कि मैदान खाली है तो आदिस्ता-आदिस्ता झील से निकछा । नवाब साहब घात में ये ही, ताक कर ऐसा हाथ दिया कि बनैला बोल गया | लोगों ने चारों तरफ़ से वाह-वाह का झोर मचाना शुरू किया ।

एक- हुजूर, यह करामात है ।

दूसरा-- सुमान अल्लाह, क्या तुला हुआ द्वाथ लगाया कि बोला तक नहीं |

तीतरा--तलवार के धनी ऐसे ही होते हैं। एक ही हाथ में चौरंग कर ई: क्या हाथ पड़ा है, वाह |

चौथा--धूम पड़ गयो, धूम पड़'गयी। ब्या कमाल है, एक ही वार में टंडा ही गया !

नवाब--अरे भाई देखते दहो।| बरसों शिकार की नौवत नहीं आती, मगर लडक पन से शिकार खेला है। वह बात कहाँ जा सकती है । ज़रा किसी सरत से बेगम साहब को यहाँ लाते और उनको दिखाते कि हमने कैसा शिकार किया है !

बेगम साहब का दाथी आपदा तो बनैले को देख कर हर गयीं। अल्लाह जानता है, ठम लोगों को जान की ज़र, भी परवा नहीं । और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती !

नवाब--तारीफ़ न की, कितनी जवाँमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया ! लाश तो देखो, कईदी से कर्धा तर्क है !

एक मुसाहग्र--हुजुर ने ८ट्ट काम किया जो सारी दुनियाँ में किसी से नहीं हो सकता | दस-पाँच आदमी मिल कर तो जिसे चाह मार छे; मगर एक आदमी का तलबार ले कर बनेछे से भिड़ना जरा मुश्किल है ।

बगम--ऐ: है, तुम अकेले शिकार करते गये थे | क्रमम खुदा की, बड़े दीठ हो। मेरे ता शर्य खड़े हुए जाते हूँ ।

नवातब--अभ तो इमारी बहादुरी का यक्रीन आया कि अब भी नहीं !

यहाँ से फिर शिकार के लिए रवाना हुए। बनेले का शिकार तो बाते में था । झील के क़रीब पहुँचे, तो द्वाथी ओर-ज़ोर से जमीन पर पाँव पटकने लगा ।

फ़ड्प्रान--शेर यहाँ से बीस कदम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला, अब नि शा । काशीसिंद् , हाथी पर आ जाओभो । दिलाराम से भी कद्ठो, बहुत आगे नबदे!

काथ्ोसिंद--हैंह, सहर के मनई, नेवदा देखे डर जाये, इमका गह देखावत हैं। वह सर तो हम रुवा सेर !

नवा+--यह उजडुपन अच्छा नहीं | फाशीसिहद, भा जाओ । दिल्वराम, तुम भी किसी और द्वाथो पर चले जाओ । भानों कहना ।

दिलाशम-- £ ए, चार बरस की उमिर से बाघ मारत चला आवत हों, खा जाई, ससुर 3 जाव |

बेगम--ऐ: है, बड़े दीठ हैं। नवाब, तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रखो | हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो ।

अब सुनिए कि इत्तफ़ाक् से एक शिकारी ने शेर देख लिया | एक दरणख्त के नीने चित से। रहा था १ उन्होंने किसी से न कुछ कही, न सुना, बंदुक दाग ही तो दी | गोली पीठ पर पड़ी । शेर आग दो गया और गरजता हुआ लपका, तो खल-बछी मच गयी । आते ही काशीसिंद को एक थप्पड़ टिया, दूसरा थप्पड़ देने ही को था कि काशीसिंह सँभला और तलवार लगायी। तलवार हाथ पर पड़ी । तलवार खाँते ही हाथी की तरफ़ झपटा, और नवात्र साहब छे;द्वाथी के दोनों कान पकब़ लिये | हाथी ने ठोकर दी तो शेर ५-६ क़दम पर गिरा | इधर हाथी, उधर शेर, दोनों गरजे । बाबू साइबों ने दोहाई देनी शुरू की |

बोस--अरे, हमारा नानी मर गया | अरे, बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जायगा |

घोष--ओ भाई, तुम शेर को रोक लेगा जल्दी से |

बीस--हय रीचे होता तो जरूर करके रोक लेता ।

दो हाथी तो शेर की गरज सुन कर मागे; मगर बाबू का इाथी पा खड़ा था। इस पर बोस ने रो कर कहा--ओ शाला हमारा हाथी, अरे तुम किस माफिक भागता नहीं ! तुम्हाश भाई भागे जाता है, तुम क्यों खड़ा है

शेर मे झपट कर नवाब साहब के हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोदइत खिंच आया । नवांत्र साहब के हाथ-पाँव फूछ गये। रक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था, नीचे गिर पड़ा। शेर ने किर थप्पड़ दिया । इतर में एक चोकोदार ने गोली चलायी | गोली सिर तोड़ कर बाहर निकल गयी आर शेर गिर पडा, सगर नवात्र

कर

साहब ऐसे बददघास थे कि अत्र तक गोली न चलाथी। लोन समझें, शेर मर गया । दो आदमी नजदीक गये और देख कर बोले, दुजूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया । नवाब साइज ह्वाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरज कर >ठा और एक चौकी-दार को छाप बैठा । चारों तरफ़ हुछड़ मच गया। ऊँई बंदूक छियाता दे, कोई ललकारता है। कोई कहता है--तलवार ले कर दस बारद आदमी पहुँच जाओ, अन्न शेर नहीं उठ सकता ।

नवाब--क्या कोई गोली नहीं छगा सकता !

एक -हुजूर, शेर के साथ आदमी की भी ज्ञान जायगी ;

नवाब--तुम तो अपनी बड़ी तारीफ़ करते थे | अब वह निशानेशजो कहाँ गयी लगाओ गोली ।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गयी। शिकारी ने एक और गोली लगायी तो शेर का काम-तमाम हो गया । मगर यह गेली इस उस्तादी से चलायी थी कि चौकी-दार पर आँच न आने पायी। सब लोगों ने तारीफ़ की। शेर ऊपर था और चौकी-दार नौचे | सात आदमी तलवार ले कर झपटे और शेर पर वार करने लगे । जब खूब यक्नीन हो गया कि शेर मर गया तो छाश को इटाया। देखा कि चौकीदार मर रहा है |

नवाब--नाज़ब हो गया यारो, दा | अफ़सोस ।

बेगम--हवाथी यहाँ से हटा ले चलो । कद्दते थे कि शिकार को न चलो । तुमने मेरा कद्दा न माना ।

, नवाब--फ़ीलबान, हाथी ब्रिठा दे, हम उतरेंगे |

बेगम-- उतरने का नाम भी न लेना | हम न जाने देंगे। _

नवाब--बेगम, तुम तो इमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमार: आदमी मर रहा है, मुझे दूर से तमाशा देखना मुनासिब नहीं ।

बेगम ने नवाष के गले में द्ाथा डाल कर कहा--अच्छी बात है, जाइए, अब या तो दम-तुम दोनों गिरंगे या यहीं रहेंगे ।

नवाब दिल में बहुत खश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आद मियों से कहा--जरा देखो, उसमें कुछ जान बाक़ी है ! आदमियों ने कद्दा--हुजर इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक छापे बैठा रहा। वेचारा

घुट-घुटके कभी मर गया होगा |

बेगम--अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे १ एक आदमी की जान मृपत में ली !

नवाब-- हमने क्यों जान ली, जो इमीं को शेर मार डालता !

बेगम--क्या मनहूस बातें जबान से निकालते हो, जब देखा, अपने को कोसा करते हो ।

खेमे में पहुँच कर नवाब साहब ने वापसी की तैयारियाँ कीं और रातों-रात घर पहुँच गये |

HINDI TEXT

प्रसंग ९२

आज तो क्रल्म की बाछें खिली जाती हैं | नौजवानों के मिजाज की तरह अठखे लियों पर है। सुरेया बेगम खूब निखर के बेठी हैं | छौड़ियाँ-मद्रियाँ बनाव-चुनाव किये थेरे खड़ी हैं। घर में जश्न हो रद्दा है। न जाने सुरैया बेग़म इतनी दौलत कहाँ से लायीं। यद्द ठाट तो पहले भी नहीं था ।

. महरी--ऐ बी सैदानी, आज तो मिज्ञान ही नहीं मिलते | इस गुलाबी जोड़े

पर इतना ,इतरा गयीं !

सैदानी--हाँ, कभी बाब्ाराज कादे को पहना था ! आज पहले-पहल मिला है। तुम अपने जोड़े का द्वाल तो कहो ।

महरी--ठम तो ब्रिगड़ने लगी। चलो, तुम्हे सरकार याद करती हैं |

सैदानी--जाओ, कह दो, हम नहीं आते, आयी वहाँ से चौधराइन बनके। अब घुरती बाण हद, जाओ, कद दो न |

महरी ने आ कर सुरैया बेगम से कह्द--हुजूर, वह तो नाक पर मब्खी नहीं बैठने देतीं। मेंने इतना फह्दा कि सरकार ने याद किया है तो मुझे सैकड़ों बातें सुनायी ।

सुरैया बेगम ने आँख उठा कर देखा तो महरी के पीछे सैदानी खड़ी मुसकिरा रही थी । महरी पर घूड़ों पानी पड़ गया |

सैदानी--हाँ हाँ, कहो, और क्या कद्दती हो ! मैंने दुम्हें गालियाँ दीं, कोसा और भी कुछ !

सुरैया बेगम की माँ बैठी हुई शादी का इंतजाम कर रही थीं। उनके सामने सुरैया बेगम की बहन ज़ाफ़री बेगम भी बैठी थीं। मगर यह माँ ओर बहन आयीं कहाँ से ! इन दोनों का तो कहीं पता ह्दी न था | माँतो कब की मर चुकी । बहनों का बिक्र ही न सुना । मज़ा यह कि सुरेया बेगम के अन्बा जान भी बाहर बैठे शादी का इंत-ज़ाम कर रहे हैं। समझ में नहीं आता, यह माँ, बहन कहाँ से निकल पड़े । इसका क्रिस्सा यों है कि नवाब वजाहत अली ने सुरैया बेगम से कह्दा--अगर यों ही निकाह पढ़वा लिया गया तो हमारे रिइतेदार लोग तुमको हक़ोर समझ्षेंगे कि किसी बेसवा को घर डाल लिया होगा । बेहतर है कि किसी मले आदमी को तुम्हें अपनी लड़ की बनाने पर राजी कर लिया जाये ।

सुरैया बेगम को यह बात पसंद आयी। दुसरे दिन सुरैया बेगम एक सैयद के मकान पर गयीं । सैयद साइब्र को मुफ़्त के रुपये मिले, उन्हें नवाब साहब के ससुर बनने में क्या इनकार होता । क्रिस्मत खुल गयी । पड़ोसी हैरत में थे कि यद्द सैयद साहब अभी कल तक तो जूतियाँ चटकाते फिरते थे। आज इतना रुपया कहाँ से आया कि डोमिनियाँ मी हैं, नाच-रंग भी, नौकर-चाकर भी और सबके सब नये जोड़े पहने हुए । एक पड़ोसी ने सैयद साइन से यों बात-चीत की--

पड़ोसी-- आज तो आपके मिज़ाज ही नहीं मिलते | मगर आप चादे आधघी बात

न करें, में तो छेइ के बोूँगा ।

गो नहीं पूछते दरगिज़ वह मिज़ात्,

हम तो कहते हैं दुआ करते हैं ।

सैयद--दज़रत, बड़े फ़िक्र में हूँ। आप जानते हैं, लड़की की शादी झंझट से खाली नहीं । ख़दा करे, खेरियत से काम पूरा हो जाय ।

पड़ोसी--जनाव, खुदा बड़ा कारसाज़ है। शादी कहाँ हो रही है !

सैयद-- नवाब वजाहत अली के यहीं, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंजूर किया। मेगा तो मंशा यही था कि किसी शरीफ़ और रारीब के यहाँ ब्याह ।

हक १ रारीब के यहाँ क्यों ब्याइते ! आपका खानदान मशहूर है।

बाक़ी रहा रुपया ! यह द्वाथ का मेल है। मगर अब यह फ़र्माइए कि सच बंदोबस्त कर लिया है न, में आपका पड़ोसी हूँ, मेरे छायक जो खिदमत हो उसके लिए हाजिर हूँ।

सैयद---ऐ हज़रत आपकी मिदरत्रानी काफ़ी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुआफ़िक़ बँदोबस्त कर लिया दे ।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवात्र के दोस्त बैठे आपस में चुद्दल कर रददे ये |

एक दोसर्त--हज़रत, इस बारे में तो आप डिस्मत के धनी हैं ।

नवाब--भई, खुदा की कसम, आपने बहुत ठीक कद्दा, और सैयद साहब को तो बिल्कुल फ़क्गीर ही समझिए । उनको दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो दुआ माँगी, फ़ौरन कबूल हो गयी ।

दोस्त -जमी तो आप जेसे आली खानदान शरीफ़जादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है| इस वक़्त शहर में आपका सा रईस और कौन है !

मीर साइब--अजी, शाहज़ादों के यहाँ से जो न निकछे वह आपके यहाँ है ।

लाला- इसमें क्या शक, लेकिन यहाँ एक-एक शाहइज़ादा ऐसा पडा है जिसके घर में दौलत लॉडी बनी फिरती है ।

मीर साहब--कुछ बेधा होके तो नहीं आँया है | बढ़ कर दूसरा कौन रईस है शहर में, जिसके यहाँ है यह साज-सामान १

छाल--तुम खुशामद करते हो और बंदा साफू-साफ् कहता है ।

मीर साइब--जा पहले मुँह बनवा, चला वहाँ से बढ़ा सापूगो बनके ।

दोस्त--ऐसे आदमी को तो खड़े-खड़े निकल्वा दे, तमीज तो छू द्वी नहीं गयी। गौखेपन के सिवा और कोई बात नहीं ।

नवाब--बदतमीज आदमी है, शरीफों की सोहबत में नहीं बेठा ।

मीर साहब--बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा |

नवाब-- अज्ी, सख्त बदतमीज है ।

घर में सुरैया बेगम की हमजोडियाँ छेड-छाड़ कर रही थों। फ़ीरोशा बेगम ने छेड़ना शुरू किया--आज्ञ तो हुजुर का दिल उमंगों पर है । ठुरैया बेगम-- बहन, चुप भी रहो, कोई ब्रढ़ी-बूट्टी आ जाये तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ़ करो, फिर दिल खोल के हँस लेना। मगर तुप मानोगी काहे को | फ़ीरोज़ा--अछाह जानता है, ऐसा दुल्द्दा पाया है कि जिसे देख कर भूख-प्यास बंद हो जाय । इतने में डोमिनियों ने यह ग़ज़ल गानी शुरू की-- दिल किसी तरह चैन पा जाये, गेर की आयी इमको आ जाये; दीदा व दिल हैं काम के दोनों, वक़्त पर जो मज़ा दिखा जथाये। शेख साहब बुराइयाँ म्रय की, और जो कोई चपत जमा जाये; जान तो कुछ गुजर गयी उस पर, मुँह छिप्राक जो कोंसता जाये। लाइ्ष उटेगी जभी कि नाज्ञ के साथ, फेर कर मुँह वह मुसकिरा जाये; फिर निशाने लेदद रहे न रहे, आके दुश्मन भी खाक उड़ा जाये | वह मिलेंगे गले से खिलवत में, मुझको डर है हया न आ जाये | फ़ीरोज़ा बेगम ने यद्द राज़ल सुन कर कद्दा--कितना प्यारा गला है; छेकिन छै अच्छा नहीं । छुरैया बेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढदू कर बातें कर रही हैं, जता इनकी खबर लेना । इस पर एक डोमिनी बोला--अब हूजूर हम छोगों को ले सिखा दें । दूसरी--यह तो मुजरे को जाया करें तो कुछ पैदा कर लाये । तीसरी- बहन, ऐसी कड़ी न कहो |

इतने में एक औरत ने आ कर कहा--हुजूर, कल बरात न आयेगी । कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बरात निकलेगी |

HINDI TEXT

प्रसंग ९३

सुरैया बेगम के यहाँ वही धमाचौकड़ी मची थी। परियों का झरमुट, हसीनों का जऊमघट, आपस की चुदल और हँसी से मकान गुलज़ार बना हुआ था। मबे-मज्े की बातें हो रही थीं कि महरी ने आ कर कहा--हुजूर, रामनगर, से असरार मियाँ की बीबी आयी हैं | अभी-अभी बहली से उतरी हैं । जानी बेगम ने पूछा--असतार मियाँ कौन हैं! कोई देहाती भाई हैं ! इस पर हशमत बह ने कद्दा, बहन वह कोई हों । अब तो हमारे मेहमान हैं। फ़ीरीजा बेगम बोलीं --हाँ-हाँ तमीज से बात करो, मगर वह जो आयी है, उनका नाम क्या है! महरी ने आहिस्ता से कहा--फ़ेज़न | इस पर दो-तीन दे.मों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा ।

ह्शम+ बहू- वाह,क्या प्यारा नाम है । फ़ेजन, कोई मीरासीनि हैं क्या !

सुरंश। बेगम--तठुम आज लड़वाओगी । जानी बेगम कौन सा अच्छा नाम है।

फ़ीरोज़ा-देहात के तो यही नाम हैं, कोई जैनब है, कोई जीनत, कोई फ़ेज़न ।

सुरैया बेगम--फैजन बड़ी अच्छी औरत है । न किसी के लेने में, न देने में।

इनने में थो फ़ेज़न तशरीफ छायी और मुसकिरा कर बोलीं--मुब्रार्क हो !

यहाँ जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुँह फेर-फेर कर मुसकिरायीं । बीं फ़ैजन के पह-नावे से है देहातीपन बरसता था ।

फ़ेज़न--बहन, आज दी बारात आयेगी न, कौन-कौन रस्म हुई १ हम तो पहले ही आते, मगर हमारे देवर की तंत्रियत अच्छी न थी ।

फ़ीरोजा--तरहन, तुम्हारा नाम क्या है !

फ़जन--फ़ैजन ।

फ़ीरोज़ा--और तुम्दारे मियाँ का नाम !

फ़ेशन--हमारे यहाँ मियां का नाम नहीं लेते | तुम अपने मियाँ का नाम बताओ |

फ़ीरोज़ा बेगम ने तड़ से कह्ा--असरार मियाँ । इस पर वह फ़र्मायशी कद कहा पड़ा कि दुर तक आवाज़ गयी फ़ेजन दंग हो गयीं और दिल ही दिल में सोचने रूगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी दीठ है। में इनसे पेश न पाऊँगी ।

हशमत बहू-- तो असग़र मियाँ तरी फ़ेजन के मियाँ हैं | या तुम्हारे मियाँ, पहले इसका फ़ेसला द्वो जाय ।

फ़ीरोज़ा- ऐ। है, इतना भी न समझी, पहले इनसे निकाह हुआ था, फिर हमसे हुआ और अब असगर मियाँ के दो महल हैं, एक तो ये बेगम, दुसरे हम ।

इस पर फिर क्रहक्रदा पढ़ा, फ़ेज़न के रदे-सहे हवास भी ग़ायत्र हो गये। अब इतनी द्विम्मत भी न थी

कि बबान खोल सकें। जानी बेगम ने कद्दा--क्यों फ़ेश्रन बहन, तुम्दारे यहाँ कौन-कौन रस्में होती हैं ! इमारे यहाँ तो दूर्ा लड़की के घर जा कर देख आता है, बस फिर बात ते हो जाती दे ।

फ़ेजन--क्या यहाँ मिर्यों पहले ही देख लेते हैं! हमारे यहाँ तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फ़ीरोजा--यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है ! नव बरस की क्रेद मुई कैसी !

फ़ेज़न--बहन, हम मुई-टुई क्या जानें ।

यह सुन कर हमजोलियाँ और भी हँसीं |

फ़ीरोजा--यह मदहरी मुई-टुई कहाँ चली गयी १ एक भी मुई-टुई दिखायी नहीं देती ।

हशमत बहू--हमका मालूम है, मगर हम न बताउब |

फ़ीरोज़ञा---अरे मुई-ठुई पंखिया कहाँ गायत्र हो गयी !

हशमत बहू--जिस मुई-टुई को गर्मी मालूम हो वह दूँढ ले ।

हतने में जुलूस सज्ञा और दुलद्विन के हाथ दृल्हा के लिए सेहरा गया । चाँदी की खशनुमा किशितियों में फूलों के द्वार, बद्धियाँ और जड़ाऊ सेहरा | इसके बाद डॉमिनियों रा गाना होने छगा। फ़ेजन ने कदा--द्मने तो यहाँ की बड़ी तारीफ़ सुनी है | इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुँह से कददा--ऐ हुजूर, अब तो नाम हो नाम है, नहीं तो हमारे लडकपन में डोमिनियों का महल्ला बड़ी रौनक पर था | यह महबूबन जो सामने बैठी हैं, इनकी दादी का वह दौरदौरा था कि अच्छे-अच्ले शाह-जादे सिर टेक कर आते थे | एक बार बादशाह तक उनके यहाँ आये थे । हाथी वह तक नहीं जा सकता था । हुक्म दिया कि मकान गिरा दिये जाये और चोगुना रुपया मालिकों को दिया जाय । एक बूढो औरत जिसकी मभर्वें तक सफ़ेर थीं, द्वाथी को सूँड पकड़ कर खड़ी दो गयी और कद्दा--मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूँगी। मेरे बुज़गों की इड्डियाँ खोदके फेंक दी गयीं | यह मकान मेरे बुजुर्गों की इड्ढी हे! वादशाह ने उसके बुजुर्गों के नाम से खेरातखाता जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़! महबूबन की दादी के मकान पर पहुँचा, तो दस-बारद्द इजार आदमी गछी में खडे थे | मगर वाह री जहूरन ! इतना सत्र कुछ द्ोते भी ग़रूर छू न गया था । बरसात के दिन थे, बादशाह ने कह्य--जहूरन, जनत्र जानें कि मेंह बरसा दो । मुसकिरा कर कहा--हुजूर, लौंडी एक अदना सी डोमिनी है, मगर खदा के नजदीक कुछ मुश्किल नहीं है। यह कह कर तान ली--

आयो बदरा कारे-कारे रही बत्रिजली चमक मोरे आँगन में?

बस, पब्छिम तरफ़ के झुमती हुई घटा उठी । स्याही छलकने लगं।। जहूरन को खुदा बख्शो, फिर तान लगायी और मूसछाघधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बद गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नज़र भाता था १ जब तो यहाँ की डोमिनियोँ मशहूर हैं । और अब तो खुदा का नाम है । इतनी डोमि-निर्यों भेठी हैं कोई गाये तो !

खदारा जल्द के आ कर खबर तू ऐ. मेरे ईसा; तेरे बीमार का अब फ्रोई दम में दम निकलता है ।

नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ,
कहीं आया हुआ दिल भी सँभाले से सँभलता है।

महबूबन--बड़ी गलेबाज़ हैं आप, और क्यों न द्वे, किनकी-किनकी आँखें देखी हैं। हम क्या जाने ।

हैदरी--हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुँचेंगे तो ख़दा जाने क्या द्वाछ होगा ।

बुढिया कब्र में एक पाँव लटकाये बेठी थी। सिर दिलता धा, लठिया टेक के चलती थी, मगर तत्रीयत ऐसी रंगीन कि जवानों को मात करती थी । सबेरे उबदना नमले तो चैन न आये। पाधट्टयोँ ज़हर जमाती थी, यों तो बहुत द्वी खशमिज़ाज और हँस-मुख थी, मगर जहाँ किसी ने इसको बूढ़ी कह्दा, बस, फिर अपने आपे में ' नहीं रहती थी | फ़ीरोजा ने छेड़ने के लिए कद्दा--तुमने जो ज्षमाना देखा है वह हम लोगों को कहाँ नसीब होगा | कोई सो बरस का सिन होगा, क्यों !

बुढ़िया ने पोपले मुँह से कह्दा- अब इसका मैं क्या जवाब हूँ, बूढ़ी में कादे से हो गयी, बालों पर नजला गिरा, सफ़ेद हो गये, इससे कोई बूंदा हो जाता है !

शाम से आधी रात तक यही केफ़ियत, यही मज़ाक़, यही चहल-पहल रही | नयी दुलहिन गोरी-गोरी गरदन झुकाये, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाये, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, दमनोलियाँ - चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी गत के वक़्त दुलहिन को बेसन मल-मल कर नइलाया गया। द्विना का इत्र, सुद्दाग, केवड़ा और गुलाब बदन में मछा गया। इसके बाद जोड़ा पढ्ेनाया गया | हरे बाफ़ते का पैजामा, सूद्दे की कुरती, सहे की ओदनी, बसंती रंग का काइमीरी दुशाला ओदाया गया। भावजों ने मेढ़ियाँ गूँथी थीं, अब जेवर पहनाने जेटीं | सोने के पाजेब, छागल और कड़े दसों पोरों में छहले, हाथों में चूहेदंत्तियाँ, जडाऊ कंगन, सोने के कड़, गले में मोतियों का हार, कानों में करमफूछ और बाले, सिर पर छपक्रा और सीसफूछ माँग में मोतियों की छड़ी देख कर नज़र का पाँव फिसला जाता था । जवाहिरात को बमक-दमक से गुमान होता था कि जमीन पर चाँद निकल आया ।

जानी बेगम--चौथी के दिन और टाट द्वोंगे, आज क्या है।

फ़ेजन--आज कुछ हई नहीं । ऐसा मदद कोवा इत्र कभी नहीं दूँघा |

इस पर सब्र खिलखिला कर दँस पढ़ी ।

ह्दशमत बहू-बी फ़ैजन की बातों से दिल की कली लिल जाती है |

फ़ीरोजा--कैसी कुछ, और चंचल केपी हैं, रग-रग में शोख्ही दे ।

जानी बेगेम--बहन फ़ेजन, हम तुम्दारे प्रियाँ के साथ निकाइ पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी !

फ़ीरोज़ा--दो दिल राज्जी तो क्या करेगा क्राजी |

दह्दशमत घहू--बहन, टुम्दारी आँखों का पानी बिलकुल दल गया। हया भून खायी ।

महरी--हुज़्र, यही तो दिन हँसी-मज़ाक़ के हैं। जब हम इन सिरनों थे तो हमारी भी यही कैफ़ियत थी ।

इतने में एक इमजोली ने आ कर कहा - फ़ीरोज़ा बेगम, वह आयी हैं मुबारक महर | उनके सामने जरी ऐसी बातें न करना, वह बड़ी नाजुक मिज़ाज हैं | इतनी बेलिदाज़ी अच्छी नहीं होती ।

फ़ीरोज़ा-- तो ठम जाके अदब से ब्रेठो | तुम्दारा वजीफ़ा आज से बैंध जायगा ।

मुबारक महल आयी और सबसे गले मिल कर सुरेया बेगम के पास जा बेटी !

मुबारक महरू--हमने सुरेया बेगम को आज ही देखा, खदा मुत्रारक करे।

फ़ीरोजा--ऐ, सुग्या बेगम, जरी गरदन ऊँची करे, वाह यह तो और झुकों जाती हैं| हम तो सीना तानके बैठ थे, क्या किसी का डर पड़ा है ।

ह्शमत--तुम तो अंधर करती हूं, नई दुलद्विन कहीं अकड़ कर बेठती है !

महरी--ऐ हुज्र, दुलद्विन कहीं तन कर बैठती है | क्या कुछ नयी रीति है ।

फोरोजा--अन्छा साहब, यों ही सही, जरी और झुक जाओ |

(+,एक बाजे को आवाज़ आयी | दुर्द्दा के यहाँ से दुलहिन का सेहरा बड़े ठाट से आ रहा था | जब्न सेहरा अंदर आया तो सुरेया बेगम की माँ ने कद्दा, अन्न इस बक्त कोई छींके-मी के नहीं | सेहरा अंदर आता है।

शेण्या अंदर आया | दुल्दा के बहनोई ने साली के सिर पर सेहरा बाँधा और सास से नेग माँगा ।

दाउ--हाँ-हाँ, बाँध लो, इस वक़्त तुप्दारा हक़ है |

अहनोई--इन चकुमों में न आऊँगा | लाइए, नेग लाइए |

इशमत- हाँ, बेशगड़े न मानना दृह्दा भाई |

बहनोई--मान चुका, तोड़ों के मुँह खोलिए । अब देर य कीजिए |

सुरेया बेगम की माँ ने पाँच अशर्फ़ियाँ दीं! वह तो ले कर बाहर गये। इधर दुल्दा के यहाँ की ओदटनी दुलहिन को ओदायी भयी | पाय्जामे में नाडे को शबक्रीर मिरहें दी गयी । परदा डाला गया। दुलहिन एक पढेंग पर बैठी । पूरलों के तोड़ कौर बद्धियोँ पहनायी गयीं। फूलों का तुरो बाँधा गया । अब बगत के आने का इंतजार था

फतज्ञा--क्यों बहन फ़ैज़न, सच कहना, इस वक़्त दुलद्वनपर कैसा जोचन है!

पूजन - वह तो यों द्वी, खुबयूरत हैं !

फ़ीवजञा--बरात बड़े घूम से आयगी, हमने चाहा था कि सन्ंनं मिर्यों के यहाँ से बर/त का ठाट देखें ।

इशपमत बहू--ऐ. तो बरात यहीं से क्यों न देखो। महरी, जाके देखो, चिकें सब एुद्स्त हैं ना।

महरी--हुजुर, सब्र सामान लैत है।

फ़ीरोजा बेगम उस कमरे की तरफ़ चढों जहाँ से बरात देखने का बंदोबस्त था।

छेकिन जब कमरे में गयीं और नीचे झाँकके देखा तो सहम कर बोलीं, ओफ़फ़ोह, इतना ऊँचा कमरा, में तो मारे डर के गिर पड़ी द्ोती। जानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गयीं तो आड़े हाथों लिया--हमने सुना, आप इस वक़्त सहम गयों, वाह !

फ़ीरोजा--खदा गवाह है, दिलूगी न करो, मेरे होश ठिकाने नहीं ।

जानी बेगम--चलो, बस ज्यादा मुँह न खुलवाओ |

फीरोज़ा--अच्छा, जाके झाँको तो मालूम हो ।

हशमत बहू--हम भी चलते हैं | हम भी शाँकेंगे |

महरी--न बीबी, में झाँकने कोन कहूँगी। एक बार का जिक्र सुनो कि मैं ताजबीबी का रोजा देखने गयी | अल्लाह री तैयारी, रोज़ा क्या सचमुच ब्रिहिइत है । फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के योपी उतार लेते हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रोज़े के फाटक पर पहुँचे तो मुआविर बाहर चले गये। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेर कर काम करें, गैंवारों से परदा क्या ।

फ़ीरोजा--उहैँ, परदा दिल का ।

हशमत--फिर मुज़ाविरों को क्यों हटाया !

महरी--बह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मज़दरों से कौन परदा करता है | अच्छा, यह तो बताओ कि दुलहिन को कहाँ से बरात दिखाओगी [

हशमत--हमारे यहाँ की दुलहिनें बरात नहीं देखा करतीं |

फ़ीरोजा--वाह, क्या अनोखी दुलहिन हैं !

जानी बेगम-- जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बरात देखी होगी।

फ़ीरोजा- हाँ-हाँ, न देखना क्या. माने | हमने अम्माँजान से कह: कि इमका वूहा दिखा दो, नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कद्दा, अच्छा झरोसे से बरात देखो, हमने देखी । हमारे मियां घोड़े पर अकड़े बैठे थे । एक फूल उनके सिर पर भारा |

हशमत--क्यों नहीं, शात्राश, क्या कहना !

जानी बेगम--फूल नाहक़ मारा, एक जूता खींच मारा होता |

फ़ोरोज़ा-- खूब याद लाया, अब सही |

जानी बेगम--अच्छा महरी, तमने उन बंगम साहब का जिक्र छेड़ा था जिन ऊे साथ ताजबीबी का रोज़ा देखने गयी थी | फिर क्या हुआ !

री--हों, खूब याद आया | हम लोग एक बुजे पर चढ़ गये, में क्या कहें

हुजर, कम से कम द्वोंगे तो कोई सात-आठ सौ जीने होंगे ।

फ़ीरोक्जा--ओफ़फ़ोह, इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ |

महरी-खेर, दम ले-ले के फिर चदे, जत्र धुर पर पहुँचे तो दम नहीं बाकी रह्दा कि जरा हिल भी सकें । बेगम साहब ने ऊपर से नीचे को झांका तो राश आ गया, धम से गिरी ।

हशमत बहु--हाय-हाय ! मरी कि बच्ची !

महरी--बच जाने की एक ही कह्दी | हड्डी-पसली चूर हो गयी |

फ़ीरोश्--मैंने कहा तो किसी को यक्नीन नहीं आया | अल्लाह जानता है, इतने ऊँचे पर से जो सड़क देखी होश उड़ गये |

जानी बेगम--जाने दो भई, अब उसका जिक्र न करो, चलछो दुलहिन के वास बैठो |

ख़बरें आने लगीं की आग तक हस शहर में ऐसी बरात किसी ने नहीं देखी थी | एक नयी बात यह है

कि गोरों का बाज; है। हज़ारों आदमी गोरों का बाजा घुनमे आये हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो आशर्फियाँ किराये पर नहीं मिलता | सुना कि बरात फे साथ नयी रोशनी है जिसकी गैस छाइट बालते हैं ।

फ़ीरोजा--उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फ़र्क है !

पदरी--एं हुजूर, ज़मीन और आसमान का फ़के है। यह मादूम होता है कि दिनहे |

HINDI TEXT

प्रसंग ९४

आजाद पौर्टेड की शाहजादी से रखसत हो कर रातोरात भागे । रास्ते में रूसियो की कई फौज मिलीं | आजाद को गिरफ़्तार करने की जोरों से कोशिश द्वो रह्दी थी, मगर आजाद के साथ शाहजादी का जो आदमी था वह उन्हें तिपाहियों की नजरें बचा कर रैसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को खबर तक न हुईं । दोनों आदमी रात को चलते ये और दिन को कहाँ छिप कर पढ़ रद्दते थे। एक हफ़्ते तक भागा-भाग चलने के बाद आजाद पिलौना पहुँचे गये | इस मुक़ाम को रूसी फ़ोज़ों ने चारों तरफ़ से घेर लिया था। आज़द के आने की खबर सुनते ही पिछीनेवालों ने कई हजार सवार रवाना किये कि आज़ाद को रूसी फ़ौज्ों से बचा कर निकाल लायें। शाम इहोते-दोते आज़ाद पिडोनावालों से ज़ा मिले ।

पिलौना की हालत यह थी कि किले के चारों तरफ़ रूस की फ़ौज़ थी और इस फ़ोज के पीछे तुर्कों की फ़ोज थी | रात को किले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फ़ौज भी दोनों तरफ़ गोले उतार रही थी। क्रिलेवाले चाहते थे कि रूसी फ़ोज दो तरफ़ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई | रूतियों की फ़ौज़ बहुत ज़्यादा थी। गोलों से काम न चलते देख कर आज़ाद ने तुर्की जनग्ल से कदहा--अब तो तलवार से लड़ने का बक़त आ पहुँचा, अगर आप इजाजत दें तो में रूसियों पर हमला करूँ |

अफ़सर--ज़रा देर ठहरिए, अब मार लिया है। दुदइमन के छक्के छूट गये है |

आजाद--9से खौफ़ है कि रूसी तोपों से किले की दीवारें न टूट जायें।

अफ़तर--हाँ, यदद ख्रोफ तो है | बेहतर है, अब दम लोग तलवार ले कर बे ।

हुक्म की देर थी। आजाद ने फ़ोरन तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हज़ारों तलबारें म्यान से निकल पढ़ीं। वतुर्को जवानों ने दादियाँ मुँह में दबायीं और अलाइ-अकबर कहके रूसी फ़ोन पर टूट पड़े । रूसी भी नैगी तलबारें ले कर भुकाबत्रिले क लिए निकल आये | पहले दो तुर्की कम्पनियाँ बढ़ीं, फिर कुछ फ़ासले पर छह कम्पनियाँ और थीं । सबसे पीछे छास फ़ोज़ की चौदह कम्पनियाँ थीं। तुर्की ने यह चालाकों को थी कि सिफ़ फ़ोज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाकी कालमों को इंस तरह आड़ में रखा कि रूसियों को खषर न हुईं | क्रीघ्र था कि रूसी भाग जायें, मगर उनके तोपखाने ने उनकी आबरू रखं ली | इसके छिवा तुर्कों फौज मंत्िलें मारे चली जाती थी ओर रूमी फ़ोज ताजा थी। इत्तिफ़ाक से रूसी फ़ोज़ का सरदार एक गोली खा कर गिरा, उसके गिरते ही रूसी फ़ोज में खलबली भच गयी, आखिर रूसियों को भागने के सिवा कुछ न बन पड़ी | तुर्कों ने छह इज, रूसी गिर-प्रता<' कर लिये |

जिस वक़्त तुर्की फ़ोज पिछोना में दाखिल हुई, उस वक़्त की खशी बयान नहीं की जा सकती । बूंदे और जवान सभी फूले न समाते थे | लेकिन यह खुशी देर तक कायम न रही। तुर्कों के पास न रसद का सामान काफ़ी था, न गोला-बारूद । रूसी कौन ने फिर क्रिले को घेर लिया | ठुक इमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहाँ तक लड़ते । रूसी ग़ालिब आते जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुढों

को पिलीना छोढना पड़ेगा। पचीस हजार रूसी तीन घंटे क्रिछे की दीवारों पर गोले बरसाते रहे । आखिर दीवार फट गयी और तुर्कों के दह्वाथ-पाँव फूल गये । आपस में सल्यह होने लगी ।

फ़ौज़ का अफ़सर--अब हमारा क्रदम नहीं टहर सकता, अब भाग चलना ही मुनासिब हे ।

आज़ाद---अभी नहीं, जरा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है |

अफ़सर--कोई नतीजा नहीं ।

क्रिके की दीबार फटते ही रूसियों ने तुर्की फ़ौज़ के पास पेग़ाम भेजा, अब हथि-यार रख दो बररा मूफ़्त में मारे जाओगे |

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया । सारी फ़ोज किले से निकल कर रूसी फ़ोज़ पर टूट पड़ी । रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुक तो जान पर खेले गये थे । मगर मजबूर हो कर तुर्का को पीछे हटना पड़ा । इसी तरद्द तुर्कों ने तीन धावे किये और तीनों मरतत्रा पीछे हटने पर मजबर हुए । तुर्की जेनरल फिर घावा करने की तैयारियाँ कर रहद्दा था कि बाद-शादी हुक्म मिला--फ़ोजें हटा लो, सुलह की बात चीत हो रद्दी है । दूसरे दिन तुर्की फ़ोज़ इट गयीं :गेर लड़ाई खतम द्वो गयी।

शेर

HINDI TEXT

प्रसंग ९५

जिस दिम आज़ाद कुखुनतुनिया पहुँचे, उनकी बढ़ी इज़्जत हुई। बादशाह ने उनकी दावबत की और उन्हें पाशा का खिताब दिया। शाम को आज़ाद होटछ में पहुँचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज्ज कान में आयी, भला गीदी, जाता कहाँ है। आजाद ने कद्दा--अरे भई, जाने दो । आज्ञाद की आवाज सुन कर खोजी बेकरार हो गये। कमरे से आहर आये और उनके क़दमों १२ टोपी रख कर कहा-- आजाद, खदा गवाह है, इस वक़्त तुम्हें देख कर कलेजा ठंडा हो गया, मुँह-माँगी मुराद पायी |

आजाद--खेर, यह तो बताओ, मिस मीडा कहाँ हैं !

र, जी--आ गयीं, अपने धर 'र हैं।

आजाद--ओभोर भी कोई उनके साथ है !

खोजी--हाँ, मगर उस पर नर न डालिएगा |

आज्ाद--अच्छा, यह कहिए |

खोनी--हम तो पहले ही समझ गे थे कि आज़ाद मावज मी ठीक कर लाये. प्रगर अभ् यहाँ से चलना चाहिए |

आजाद--उस परी के साथ श्जार तो कर लो |

खोजी--अजी, शादी जहाज ५२ होगी |

पम्रिस मीडा और क्लारिसा की आज्ञाद के आने की ज्यों दो धबर मिली, दोनों उनके पास आ पहुँची ।

मीडा--खुदा का हकज्लार शुक्र है) यह किसको उम्मेद थी कि तुम जीते-आगते लौटोगे । अब इस खुशी में हम ठम्दारे साथ नाचेंगे |

आज्ञाद--में नाचना क्या जानू ।

कट सा--ह मे तुमको सिखा! देंगे ।

खोज--तम एक ही उत्ताद हो।

आशद--#ने भी वह गुर याद हैं कि चाहूँ तो परी को उतार ढूँ।

खाऊ। --भई. *ुहाँ शरद ने करना ।

तीन न तक ऋाशद दुस्तुनतुनिया में रहे । चौथे दिन दोनों छेडियों के साथ जहाज पर पवार द्वो कर हिदोस्त” चले |

HINDI TEXT

प्रसंग ९६

आजाद, मोडा, क्ारिसा और खोज़ी जहाज पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिए. छतीफ़े और चुटकुले कद रहे हैं। खोबी भी बीच-बीच में अपना ज़िक्र छेड़ देते हैं ।

खोजी--एक दिन का जिक्र हे, में होली के दिन बाज़ार निकला | छोगों ने मना किया कि आज बाहर न निकलिए,, वरना रंग पढ़ जायगा | में उन दिनों बिल-कुल गेंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो हुमत न सका । चें से बोल कर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल | जिसने देखा, दातों उँगली दबायी कि वाह पढे ।

आजाद--ऐँ, तब तक आप पढ़े ही थे !

खोजी--मैं आपसे नहीं बोलता । घुनो मिस मीडा, हम बाज़ार में आये तो देखा, दरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के क़रीर जमा ये और रंग उछल रहा था । मेरे पास पेशकब्ज़ और तमंचा, बस क्या कहूँ ।

आजाद--मगर क़रौली न थी !

ग्रीजी--भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काठो । छछकार कर बोला, यारो, देख

भाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है । एक पटान ने आगे पढ़के कहा-- खाँ साइब, आप सिपाही आदमी हैं, इतना ग़स्सा न कोजिए, द्ोली के दिन रंग खेलना माफ़ है। मैंने कद्दा, सुनो भाई, तुम मुसलमान होके ऐसी बात कद्दते हो ! पठान बोला, इज़्ज़त, हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है |

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने पीछे से तान के एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गयी । फिरके जो देखता हूँ, तो डबल जूता, समझावन-बुझावन । मुसकिरा कर आगे बढ़ा |

आजाद--ऐं, जूता खाके आगे बढ़े !

परीडा --और उस ज़माने में सिपाही भी थे, तिस पर जूता खाके चुप रहे ?

आज़ाद--चुप रहते तो खेरियत थी, मुसकिराये भी। और बात नी दिल्गी की थी, मुक्किराते न तो क्या रोते !

खोजी--मैं तो सिपाही हूँ, तलवार से बात करता हैँ, जूते से काम नहीं लेता ' कहाँ तलवार, कहाँ जूती पैज़ार !

क्ारिसा--एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुददई की माँ तुम्हारे सामने रोवी थी या नहीं ! गवाह ने कद्दा, जी हाँ, वायीं आँख से रोती थी |

खोजी--यह तो कोई लतीफ़ा नहीं, मुझे रह-रह के ख्याल भाता है जिस आदमी ने द्वोली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊँ तो खुब मरम्मत करू ।

आज़ाद-- अच्छा, अब घर पहुँच कर सबसे पहले उसका मरुमत कीजिएगा | यहद लीजिए, स्वेज की नहर |!

प्ि्स मीडा ने कहा--हम ज़रा यहाँ की सैर करेंगे । आज़ाद को भी यह बात पसंद आयी । इस्कंदरिया के उसी द्वोटल में ठदरे जहाँ पहले टिके थे । स्ोजी अक-डते हुए उनके पास आये और कहा, अब यहाँ जरा हमारे ठाट देखिएगा | पहले तो लोगों से दरियाफ़्त कर लो कि इमने कुइती निकाली थी या नहीं ! मारा चारों शाने चित, और किसको ! उस पहलवान को जो सारे मिस्त में एक था | जिसका नाम ले कर मिस्त के पहल्वानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आँखें खुल जायें। किसी का बदन चोर द्वोता है। उसका क़द चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाइर ले गया और मैं मी चुपचाप चला गया, बस भाई, फिर तो मैंने क्रम जमाके जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंचें होने छगीं, मगर बह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद | उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया । उसने दस्ती खींची, मैं बगलो हुआ । उसने डंडा लगाया, मैंने उचकके काट खाया ।

आजाद---सुमान-अल्लाइ, यह पेंच सत्रसे बढ़ कर है। आपने इतनी तकलीफ़ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया !

दोनों लेडियाँ हँसने लगीं तो खोजी भी मुसकिराये, समझे कि भेरी बहादुरी पर दोनों ख़श हो रही हैं । ब्ोले--बस जनाब, दो घंटे तक बराभ्र की लड़ाई रही, वह कड़ियल जवान, मोटा-ताज़ा, पैंचहत्या । उसका क़द क्या बताऊँ, बस जैसे हुसैनाबाद का सतखंडा । उसमें कृषत और यहाँ उस्तादी करतब, मैंने उसे हँफा-हँफाके मारा, जब उसका दम टूट गया तो चुर-मुरे कर डाला । बस जनाब, किला जंग के पेंच पर मारा तो चारों शाने चित । कोई पन्रास हज़्ार आदमी देख रहे थे | तमाम शहर में मशहूर था कि द्विद का पहलवान आया |

आजाद-भाई जान, सुनो, आने भुंद मियाँ मिद्ठ बनने की सनद नहीं । जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहल्वान को भी देख लें कि कैसा है, तु८दारी-उसकी जोड़ हे या नहीं ।

खोजी--कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूँ कि ग्रांडील पैंचइत्या जवान है, आपको यक्कीन नहीं आता, दम इसको क्या करें |

इतने में होटल के दो-एक आदमी खोजी को देख कर जमा हो गये, खोजी ने पूछा--क्यों माई, इमने यहाँ एक कुइती निकाली थी या नहीं !

'एक आदमी--वाह, इमारे होटल के बौने ने तो उठा के दे पटका था, चले वहाँ से कुश्ती निकालने !

खोजी--ओ गीदी, झूठ बोलना और सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी--दहाथ-पाँव तोड़के घर देगा । आप और कुद्ती |

स्ोजी--नी हाँ, हम और कुश्ती ! कोई आये तब् न ! (ताछ ठोक कर) बुल-बाओ उस पहलवान को ।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते दी खोजी को चिदाने लगा । ख्वाजा साहत्र ने कद्दा--यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत से, बस | टाँय-टाँय फिस। बौने से कुइती निकाली

तो क्या । किसी बरावरवाले से कुश्ती निकालते तो जानते । इसी पर घमंड था ।

खोजी--साहब, कहने और करने में बड़ा फ़के हे, अगर उससे हाथ प्रिलायें तो जआहिर हो जाय |

बौना ताल ठोंक के सामने आ खड़ा हुआ और ख्ोजी मी पंतरे बदछ कर पहुँचे । आजाद, मीडा और होटछ के बहुत से आदमी उन दोनों के गिर्दे टट लगाके खड़े हो ॥गये।

खोनी--आओ, आओ बच्चा । आज भी गुद्दा दूँगा।

बोना--आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता ।

स्ोजी--ऐसा गुद्दा दूँ कि उम्र भर याद रहे ।

_ बौना--हनाम तो मिलेगा ही, फिर हमारा क्या हज है !

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गये। खोजी ने घूँसा ताना, बौने ने मुँह चिदाया । खोजी ने चपत जमायी, बौने ने घौल लगायी । दोनों की चाँद घुटी-घुटायी, चिकनी थी । इरू छोर की आवाश्च आती थी कि सुननेवालों और देखनेवालों का जी खश हो जाता था।

मीडा--खूब आवाज आयी, तड़ाक | एक ओर ।

क्लारिसा--ओफ़, मारे हँसी के पेट में बल पड़ गये ।

खोजी--हँसी क्यों न आयेगी | जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है ।

आजाद---अरे यार, ज़रा जोर से चपतबाबी हो।

खोजी--देलिए तो, दम के दम में बेदम किये देता हूँ कि नहीं ।

आजाद--मगर यार, यह तो बिलकुल बौना हे |

खोजी--हाय अफ़सोस, तुम अभी ब्रिलक्रुल लौंडे हो। अरे कमबख्त, इसका क़द चोर है, यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, ममर अखाड़े में चिट और हलुँगोट बाँध कर खड़ा हुआ, बस फिर देखिए, बदन की कया कैफ़ियत होती है। बिलकुल गेंडा मादूम होता है । कोई कहता है, दुम-कटा भैंसा है, कोई कहता है, द्वाथी का पाठा है, कोई नागोरी बैल बताता है, कोई कहता है, जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका गम नहीं । जानता हूँ कि कोई बोला और मैंने उठाके दे मारा ।

खोजी ने कई बार झल्ला-झल्ला कर चपते छलगायों । एक बार इत्तिफ्राक् से उसके हाथ में इनकी गरदन आ गयी, ख्वाजा साहब ने बड़त हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ जोर लगाये, मगर उसने दोनों हाथों से गरदन पकड़ लीं और लटक गया | खोजी कुछ झुके, उनका झ्ुकना था कि उसने जोर से मुकका दिया और दो-तीन रुप्पढ़ छगाके भागा । खोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जा कर अंदर से दरवाज्ञा बंद कर लिया । खोजी ने चपते खायीं तो छोग हँसे और मिस क्लारिसा ने तालियाँ बजायीं । तब तो आप बहुत ही झल्लाये, आसमान सिर पर उठा लिया, ओ गीदी, अगर शरीफ़ फा बच्चा है तो बाहर आ जा | गिरा तो भाग खड़ा हुआ !

आज़ाद---अरे मिर्यों, यह हुआ कया १ कौन गिरा, कौन जीता १ हम तो उठ ९फ़ देख रहे थे | माद्म नहीं हुआ, किसने दे मारा ।

खोजी--ऐसी बात कादे को देखने छगे थे ! अंजर-पंजर ढीले कर दिये गीदी के | वक्लाह, कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक़्त ऐसी आवाज़ आयी कि यह माद्म होता या, जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना दी होगा !

आजाद--वह है कहाँ ! क्या खोदके जमीन में गांड दिया आपने !

खोजी--नहीं भाई, द्वारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और क़सम है, पूरा जोर नहीं किया, वरना मेरे मुक़ाबिले में कया ठदरता । हाथ पाँव तोड़के चुरं-मुरे कर डालता । नानी दी तो मर गयी कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा |

आजाद---मगर ख्वाजा साहब, गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गद क्यों छगी है !

खोजी--भई, यहाँ पर दम भी क्रायल हो गये ।

क्लारिसा--इसी तरह उस दफा भी तुमने कुइती निकाली थी !

मीडा--बड़े शरम की बात है कि ज़रा सा बौना तुमसे न गिराया गया |

खोजी--जी चाहता है, दोनों हाथों से अपना सिर पीट । कद्दता जाता हूँ कि उस गीदी का कद चोर है। आखिर मेरा बदन चोर है या नहीं, इस वक़्त मेरे बदन पर अँगरखा नहीं है। खासा देव बना हुआ हूँ, अमी कपड़े पहन दूँ तो पिद्दी मादूम होने लगूं। बस यद्दी फ़के समझो । अव्वछ तो मैं गिरा नहीं, अपनी ही जोर में आप आ गया । दूसरे उसका कद चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि ज़रा सा बौना था !

दूसरे दिन आजाद दोनों लेडियों को ले कर बाज़ार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि खोजी अफ्रीम की पीनक में ऊँघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुम्बे जाते ये । दुम्बेवाले ने पुकारा--इ्टो-हटो, बचो-बचो, वह आपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुम्बे से घक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते द्दी चोंक के गुल मचाया--कोई द्वे! लाना क़रोली । आज अपनो जान और इसकी जान एक करूँगा। खुदा जाने, इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गयी। अरे वाद बे बहुरूपिये, आज हमारे मुक़ाबिले के लिए सॉड़िनियाँ छाया है | अबे, यहाँ हर वक़्त चौकन्ने रद्दते हैं | उस दफ़ा बजाज की दुकान पर आये तो मिठाई खाने में आयी, आज यह हाथ-पाँव तोड़ डालने से क्या मिला । घुटने लहू-लुद्दान दो गये । अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूँ, अबकी समझेंगा ।

HINDI TEXT

प्रसंग ९७

सुरैया बेगम का मकान परीखाना बना हुआ था ! एक कमरे में बज़ीर डोमिनी नाच रही थी | दुसरे में शहजादी का मुजग होता था ।

फ़ीरोजा--क्यों फ़ेज़न बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा !

जानी बेंगम--इनके लिए देहात की मीरासिरनें बुलवा दो |

फ़ैजन--हाँ, फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या [

इस फिक़रे पर वह कक पड़ा कि घर भर गूँज उठा और फ़ेजन बहुत शरमायीं । जानी बेगम ने कहा--बस यही बात तो हमें अच्छी नहों लगती । एक तो बेचारी इतनी देर के बाद बोलीं, उस पर भी सबने मिल कर उनको बना डाला |

फ़्दीमन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो ओररतें सारंगी लिये थीं, एक तबला बजा रही थी और एक. मजीरे की ज्ोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी ।

बंदनवार बाँधो सब मिलके माडिजियाँ।

इसको उसने इस तरह अदा किया कि जिसने सुना, लट्ट हो गया |

जानी बेगम---जोयी के दिन तीस-चालीस तवायफ़ों का नाव होगा |

नज्ीर बेगम -- कश्मीरी नहीं आते, हमें उनकी दातों में बड़ा मज़ा आता है।

हशमत बहू-- नवाब साहब को जनाने में नाच कराने की चिद है ।

फ़ीरोजा--सुनो बहन | जो औरत बदी पर रझाये तो उसकी बात ही और है, नहीं तो घरीफ़ज़ादी के लिए सबसे बड़ा परदा दिल का है।

फ़ेज़न--फ़द्दीमन, यद्द गीत गाओ---

'डाल गयो कोऊ टोना रे !!

फ़ीरोजा--क्या गाओ गीत | गीत कंडेवालियाँ गाती हैं |

जानी--और इनको ठुमरी, टप्पे, ग़ज़ल से कया मतलब । नकटा गाओ |

फ़ीरोजा और जानी बेगम की बातें सुन कर मुबारक मइल बिगड़ गयीं |

फ़ीरोज्ा--बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना !

मुबारक--बुरा मान कर ही क्या दँगी |

जानी-- ऐसी बातों से आपस में फ़ताद हो जाता है |

फ़ीरोशा--यह लछडवाती हैं बदन, सच कद्दती हूँ !

मुबारक--तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह, न तुम कम, न वह कम, शरीफ़ों में बैठने छायकर नहीं हो । पढ-छिख कर भी यह बाते सीखीं !

जानी--देलिए तो सही, अब दिल में कट गयी होंगी ।

मुबारक--मैं ऐसों से बात तक नहीं करती |

फ़ीरोज़्ा--(तिनक कर) जितना दब्ो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करतीं, यहाँ कौन तुमसे बात करने के लिए बेकरार है ।

मुबारक--महरी, हमारी पालकी मँगबाओ, हम जायेंगे ।

बेगम साहब को खबर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुशा कर राज़ी कर दिया ।

शाम हुई, रोशनी का इंतजाम होने लगा। बेगम ने कहा--फ़र्राशों को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड्-केंवल से सजायें, कमरे और दालानों में साफ़ चाँदनियाँ बिछे, उन पर ऊनी और चीनी गलीचे हों | मदरी ने बाहर जा कर आगशा साइब से ये बातें कहीं- बोले, हाँ-हाँ साइन, सुना | बेग्म साइब से कहो कि या तो हमको इंतजाम करने दें, या ख़द द्वी बाइर चली आयें । आखिर हमको कोई गैँवार समझी हैं ! क से इंतजाम करते-करते इम शल हो गये और जब बरात आने का वक़्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यट्ट करो, वह करो। जा कर कद्द दो कि बाहर का श्तक्षाम हमारे ताल्छक है। आप क्यों दखल देती हैं। हम अपने बंदोबस्त कर लेंगे ।

मदहरी ने अंदर जा कर बेगम साहब से कहा--हुजूर, बाहर का सब इंतजाम ठीक है । बारहदरी के फाटक पर नौबतखाना है, उस पर कारचोबी झुल पड़ी है, कहीं कैंवल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हॉड़ियाँ। रंग बिरंग के कुमकुमे बढ़ी बदार दिखाते हैं |

दह्शमत बहू-- दरवाजे पर यद्द शोर कैसा दो रहा है !

मदरी-- हुजुर, शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी मीड़ लगी हुईं हे कि कंधे से कंधा छिलता है | दुकानें भी बहुत सी आयी हैं। तम्बोली छाल कपड़े पहने दुकानों पर बैठे हैं। हाथों में चाँदी के कड़े, थाल्यों में सुफ़ंद पान, एक थाली में छोटी इलायचियाँ, एक में डलियाँ, कत्था इच्न में बसा हुआ, सफ़ाई के साथ गिलौरियाँ बना रहा है । एक तरफ़ साक़िनों की दुकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं, बे-फ़िकरे टूटे पड़ते हैं ।

फ़ीरोज़ा-- सुनती हो फ़ेज़न बहन, चलो जरा बाहर देख आयें, यह नाक-भौँ क्यों चढ़ाये बैठी हो | कया घर से लड़ कर आयी हो |

फेजन--हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, इम न किसी से बोलें, न चालें |

ह्शमत--हाँ फ़ीरोज़ा, यह तुममें बड़ी बुरी आदत है ।

फ़ीरोजा-- लड़वाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भर्से में आ जायँ।

जानी--फ़ीरोजा बेगम जिस महफ़िल में न हों वह बिलकुछ सुनी मालूम हो |

फ़ीरोजा--ह में अफसोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन खफ़ा हो गयीं | अब कोई मेल करवा दे

|

मुबारक--बहन, तुम बड़ी मुँहफट हो ।

फ़ीरोजा---अब साफ़्साफ़ कहूँ तो बुरा मानो, जरी-जरी सी बात में खिटकती हो। आपस में दँसी-दिछगी हुआ करती है। इसमें बिगड़ना बया! भेजन बुरा मानें तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहाँ के राहद-रस्म क्या बानें, मगर तुम शहर की हो कर बात-बात में रोये देती हो । रही मैं, में तो दाजिर-जवाब हूँ ही | हाँ, जानी बेगण की तरह जबाँदराज़ नहीं !

जानी--अब्र मेरी तरफ़ झ्ुकीं ।

ह्शमत--चौमुखा लड़ती हैं, उफ़ री शोखी !

अब दुल्द्या के यहाँ का जिक्र सुनिए. | वहाँ इससे भी ज्यादा धूम-धाम थी | नौज-यान शाहज़ादे और नवाबज़ादे जमा थे | दिछगी दो रही थी ।

एक--यार, आज तो बे सरूर जमाये जाना मुनासित् नहीं ।

दूसरा--माद्य द्वोता है, आज पीके आये हो |

पदला---अरे मियाँ, खुदा से डरो, पीनेवाले की ऐसी-तैसी ।

दूहा--ज़रूर पीके आये हो । आप हमारी बारात के साथ न चलिए ।

दोवानखाने में बुजुर्ग छोग बैठे पुराने ज़माने की बातें कर रहे थे । एक मौलवी साइब बोले--न अब वह छोग हैं, न श्माना। अब किसके पास जायें, कोई मिलने के काबिल ही नहीं । इल्म की तो अब क़दर ही नहीं । अब तो वह क्षमाना है कि गाली खाये, मगर जवाब न दे ।

ख्वाजा साहब--अब आप देखें कि उस ज़माने में दस, बीस, तीस की नौकरियाँ थीं, मगर वाह रे बरकत । एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं ।

गत के दस बजे नवाब साइब महल में नहाने गये। चारो तरफ़ बंदनवार बैंधी हुई थीं। आम, अमरूद और नारंगियाँ लटक रददी थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रखा था और बचने में जौ छगे हुए ये । दुल्दा की माँ ने कहा--कोई छींके-बींके नहीं, ख़बरदार कोई छींकने न पाये। घर-भर में बच्चों को मना कर दो कि जिसको छींक आये, जब्त करे ; अब दिल््लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को डैंगडी से दबाया, कोई लपक के बाहर चला गया। दुढ्हा ने छुंगी बॉधी, बदन में उबटन मरा गया । बहने सिर पर पानी डालने लगीं !

दुल्हा--कितना सर्द पानी है । ठिठरा जाता हूँ ।

महंरी--फिर हुजूर, शादी करना कुछ दिल्लगी है |

बहन--दिल में तो खश दोंगे। आज तुम्हँ भला सर्दी लगेगी ।

नहा कर दुल्द्वा ने खड़ाऊँ पहनी, कमरे में आये, कपड़े पहने | मशरू का पाय-जामा, जामदानी का अँगरखा, सिर पर पगड़ी के इर्द-गिद मोती टेके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगढ़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशमी रूमाल और कंधे पर हरा दुशाला, पेरों में फुँदनेदार

बूट ।

जब दुल्ह्या बाइर गया तो बेगम साहब ने लड़कियों से कद्दा--अब चलने की तैयारी करो । इमको बारात से पहले पहुँच जाना चाहिए । दुल्द्या की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने छगीं। महरियों-डियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो |

जरा देर में सुखपाल और शक्षप्पान दरवाज़े पर छा कर लगा दिये गये। दोनों बहने चलीं | दायें-बायें महरियाँ, मशारूचियों के द्वाथ में मशार्लें, सिपाही और खिदमत-गार छाल फुँदनेदार पगढ़ियाँ बाँचे साथ चले। जिस तरफ़ से सवारी निकल गयी, गलियाँ इत्र की महक से बस गयीं। यह्दी मादूम होता था कि परियों का उड़न-खट ला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुँच गयीं, तो नवाब साहब की माँ भी चली । वहाँ दुलहिन की माँ ने इनकी पेशवाई की । इत्न-पान से खातिर हुई और डोमिनियों का नान हने लगा ।

योड़ी देर के बाद दूल्द्या के यहाँ से बरात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था | हाथी के सामने अनार और हजारे छूट रदे थे । हाथियों के पीछे अँगरेजी बाजे-वाढों की धूम थी। फिर उजे हुए घोड़े सिर से पाँव तक जेवर से छदे चले आते थे | साईंस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर क्दम बढ़ाते चले जाते ये। दृल्हा के सामने शहनाई बज रही थी। तमाशा देखनेवाले यह ठाट-बाट देख कर दंग दो रहे थे ।

एक--भई, अच्छी बरात सजायी; और खूब आतशबाज़ी बनायी है। आतश-बाइली क्या बनवायी है, यों कद्दिए कि चाँदी गल्वायी है ।

दूसरा--अनार तो आसमान की खबर छाता है, मगर धुआँ आसमान के भी पार हो जाता है|

तख्त ऐसे थे कि जो देखता, दाँतों अँगुली दबाता । एक हाथी ऐसा नादिर बना था कि नकल को असल कर दिखाया था। बाब-बाज़ तर्त आदमियों को मुग़ालता देते थे, खास कर चंह्ूबाब्ों का तख्त तो ऐसा बनाया था कि चंह्ृवालों को शर्माया | एक चंह्बाज़् ने शक्ा कर कद्ा-इन कुम्दारों को हमसे अदावत है। ख़दा इनसे समझे । एक महफ़िल की तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी। फ़र्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद तिछी है, दूल्हा तकिया छगाये बेठा है और सामने नाच हो रहा है। सबके पीछे एक आदमी हाथी पर बेठा रुपये डुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे । एक-एक रुपये पर दस-दस गिरे पढ़ते थे । जान पर खेल-कर पिले पढ़ते थे ।

यह वहीं सुरेया बेगम हैं जो अभी कर तक मारी-मारी फिरती थीं | जिनकी सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वह्दी सुरैया बेगस आज शान से दुलह्दिन बनी बेटी हैं और इस धूमधाम से उनकी बारात आती है| माँ, बाप, माई, बहन, सभी मुफ़्त में मिल गये | इस बढ़त उनके दिर में तरह-तरह के खयाल आते थे--यहाँ किसी को माद्म न दो जाय कि यही सराय में रहती थी, इसी का नाम अलारक्लखी मठियारी था, फिर तो कहीं की न रहूँ | इस ख़याछ से उन्हें इतनी धनराहट हुई कि इधर दर-बाज़े पर बारात आयी और उघर वह वेहोश हो गयीं | सबने दुरूद्दिन को घेर छिया।

अरे, खेर तो है | यह दुआ क्या, किठी ने मिट्टी पर पानी डाल कर सुँधाया । दुल-हिन की माँ इधर-उधर

दौड़ने लगी ।

हशमत--ऐ,, यह हुआ क्या अम्माँजान !

फ़ीरोजा--अभी अच्छी खासी बैठी हुई थीं। बैठे-बेंठे गाश आ गया ।

बाहर दूल्हा ने यह ख़बर सुनी तो अपनी महरी को बुल्वाया और समझाया कि जाके पूछो, अगर जरूरत हो तो डॉक्टर को बुलवा दूँ। महरी ने आ कर कहा-- हुजूर, भब तबियत बहाल है, मगर पसीना आ रहा है और पानी-पानी करती हैं । नवाब साहब की जान में जान आयी | बार-बार -तत्रियत का हाल पूछते थे। जब दुलह्दिन की हालत दुरुस्त हो गयी तो इमजोलियों ने दिक्क करना शुरू किया ।

जानी-- आखिर इस गदर का सबत्र क्या था ! हाँ, अब सम्रश्नी । अभी सूरत देखी नहीं और ग़श आने छगे |

फ़ीरोबा--ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद भा गयी |

जानी--दरत से तो ख़शी बरसती है, वह हँसी आयी । ऐ,, लो वह फिर गरदन झुका ली |

हशमत--यहाँ तो पाँव-तले से मिट्टी निकल गयी ।

फीरोजा--मज़ा तो जब आता कि निकाह के वक़्त गश आता, मियाँ को बनाते तो, कि अच्छे सब्जक़दम हो।

अब सुनिए कि महल रो बराबर ख़बरें आ रही हैं कि तबियत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चेन नहीं आता | आखिर डॉक्टर साइत्र को बुला ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाले कसने शुरू किये ।

एक--मुआ सँस दे कि आदमी, अच्छे मदभद को बुलाया ।

दुसरी --तोंद क्या, चार आनेवाल। फ़रुखाबादी तरबूज है ।

तीसरा--तम्पाकू का पिंडा है या आदमी है !

चौथी--कह्द दो, कोई अच्छा हकीम बुलावे, इस जंगली हृश की समझ में क्या खाक आयेगा |

पाँचवीं--खुदा की मार ऐसे मुए पर !

डॉक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नये आदमी थे, उदूँ वाजित्री ही वाजित्री समझते थे । बोले--दारोद होते कौन जागो

मदहरी--नहीं डॉक्टर साहब, दारोद तो नहीं बतातों, मगर देखते-देखते ग़श आ गया |

डॉक्टर-- गास कीस को बोलते !

महरी--हुजूर में समझती नहीं | घास क्या |

डॉक्टर - गास क्रिसको बोलते ! तुम लोग क्या गोछ-माल करने माँगता। हम क्ुतान देखे ।

फ़ीरोज़ा--नौज़ ऐसा हकीम हो । डॉक्टर की दुम बना है|

जानी--कह्दो, नब्ज़ देखें ।

डॉक्टर--नाबुज केसा बात। हम छोग नाबुज देखना नहीं माँगता, जुबान दि "ये, जुबान, इस माफ़िक़ ।

डॉक्टर साहब ने मुँह खोल कर ज़बान बाहर निकाली ।

फीरोजा--मुँह काहे को घंटावेग की गड़हिया है ।

जानी --अरे महरी, देखती क्या है, मैंह में धूल झोंक दे ।

हशमत- एक दफ़ा फिर मुँह खोले तो में पंखे की डंडी हलक में डाल पूँ।

डॉक्टर--जिस माफिक हम जुबान दिखाया, उस माफिक हम देखना माँगता। सब माई लोग हँसी करता । जुबान दिखाने में क्या बात है ।

फ़ीरोजा-- नवाब साहब से कद्दो, पहले इसके दिमारा का इलाज करें |

सुरेया बेगम जब्र किसी तरह ज्बान दिखाने पर राज़ी न हुईं तो डॉक्टर साहब ने नब्ज देख कर नुस्खा लिखा और चलते हुए | सुरैया का जी कुछ इलका हुआ | मगर इसी वक़्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे खूल वाक्िफ थी, वह मेके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। होश उड़ गये कि कह्दीं यह पूरा हाल सबसे कह दे तो कहीं की न रहूँ । इस औरत का नाम ममोलठा था | वह एक शरीर, आवाज़े कसने लछलगी। एक लड़के को गोद में ले कर उसके साथ खेलने छगी और बातों बातों में सुरैया बेगस को सताने छगी | हम खूब पहचानते हैं । सराय में भी देखा था, मइल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था । इन फ़िक्नरों ने छुरैया बेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर बर्दी छा गयी । कमरे में जा कर लेट रहों, उधर ममोला ने भी समझा कि अगर ज़्यादा छेड़ती हूँ तो दुलहिन दुइप्न हो जायगी । चुप दो रही ।

बाहर महफ़िछ जमी हुई थी। दृल्दया ज्योंदी मसनद पर बैठा, एक हसीना नजाकत के साथ क़रम उठाती मदफ़िल में आयी । यारों ने मुँह-माँगी मुराद पायी । एक बूढ़े मियाँ ने पोपले मुँह से कद्ा--खुदा खेर करें | इस पर मइफ़िल भर ने कदद-क्रह्दा छगाया और वह परी भी मुसकिरा कर बोली--बूढ़े मैंद मुँहासे, इस बुदौती में भी छेड़छाड़ की सूश्ी | आपने हँस कर जवाब दिया--बीबी, हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है ।

यह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम दाया कि सारी महफिल छोट-योट हो गयी । नौजवानों में आहिस्ता भहिस्ता बाते होने लगीं ।

एक--बे अख्तियार जी चाइता है कि इसके क्रद्मों पर सिर रख हूँ ।

दुसरा-- कल ही परसों हमारे घर न पड़ जायं तो अपना नाम बदरू डालेँ, देख लेना ।

तीसरा--क्रसम ख़दा की, मैं तो इसको गुछामी करने को हाजिर हूँ, पूछो तो कहाँ से आयी दे ।

चौथा--श्षीन-क्राफ़ से दुरुस्त है ।

पाँचवाँ--हमसे पूछो, मुरादाबाद से आयी है ।

हसीना ने सुरीली आवाज़ में एक ग़ज़छ गायी | इस ग़ज़ल ने महफ़िल को मस्त कर दिया । एक साहब की आँखों से आँसू बह चले, यह वहीं साहब थे जिन्होंने कद्दा था कि हम इसे घर डाल लेंगे | लोगों ने समझाया--मई, इस रोने-घोने से क्या मतलब निकलेगा । यह कोई झरोफ़ की बहू-बेटी तो है नहीं, इम

कल ही शिप्पा छड़ा देंगे | मगर इस वक़्त तो खुदा के वास्ते आँसू न बढहाओ, वरना लोग हँसगे । उन्होंने कहा--भाई, दिल को क्या करूँ, में तो खद चाहता हूँ कि दिल का द्वाल ब्ाहिर न हो, मगर वद्द मानता ही नहीं तो मेरा क्या कुसुर हे ।

यह हजरत तो रो रहे थे । और लोग उसकी तारीफ़ें कर रदे थे | एक ने कद्दा-यह हमारे शहर की नाक हैं | दूसरा बोला--इसमें क्या शक । आप बहुत द्वी मिलन-सार, नेक, खश-पिजाज हैं । तीसरे साहब बोलि--ऐ इज्ज़त, दूर-दूर तक शोहइरत है इनकी ! अभ् इस शहर में जो कुछ हैं, यही हैं |

इस जरूसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे ! उनको यह बातें नागवार लगीं । मुन्ने मियां बोले--वाइ, अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने ब्ठिा लिया |

छुट्टन--हमारे देश में अमर पतुरिया को कोई बीच में डिठाये तो हुक़का पानी बेद है| जाय |

गजराज--पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय !

नवाब -जी हाँ, शहरवाले बढ़े ही बेश-म हाते हैं ।

आग्ा-देद्दातियों की लियाकृत हम बेचारे कहाँ से लायें !

गजराज--हई है, हम लोग इज्ज़तदार हैं| कोई नंगे-लुब्चे नहीं हैं ।

आग्रा---तो जनाब, आप शहर की मजलिस में क्यों आये |

गजराज--काहे को बुलाया, क्या इमलोग त्रिन बुलछाये आये [

आग़ा--अच्छा, अब गुस्से को थूक दीजिए ।

जब ये लोग ज़रा ठंडे हुए, तो उस हसीना ने एक फ़ारसी ग़ज़ल गायी, इस पर एक कमसिन नवाबजादे ने जो पंद्रइ-सोलह साल से ज़्यादा न था, ऊँची आवाज़ में कद्दा--वाह जानमन, क्यों न हो | इस लड़के के बाप भी महफ़िल में बेंठे थे, मगर इस लड़के को जरा भी शरम न आयी ।

इसके बाद तायफ़ा बदली गयी | यद्द आ कर महफ़िल में बैठ गयी और इसके पीछे साजिंदे भी बैठ गये ।

नवाब--ऐं, खेरियत तो है ! ऐ. साहब, नाचिए-गाइए ।

इसीना-- कल से तबियत खराब है। दो-एक चीज आपकी खातिर से कद्दिए तोगा दूँ।

नवाब--मज़ा किरकिरा कर दिया, ठम्दारे नाच की बड़ी तारीफ़ सुनी है |

हसीना--क्या अब करूँ । आज़ तो नाचने के काबिल नहीं हूँ ।

यह कह कर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी | इधर बड़े नवाव साहब महल में “गंये और जहाँ दुरूहिन का पलंग था, वहाँ बैंठे। ख़वास ने चिकनी डली, इलायची गिलोरियाँ पेश कीं । इत्र की शीशियाँ सामने रखीं । बड़े नवात्र साहब हुक़का पीने लगे।

सुरैया बेगम की माँ परदे की आड़ से बोलीं--आदाब अजं है ।

बड़े नवाब--बंदगी, खुदा करे, इसकी औलाद देखो।

बेगम--ख़दा आपकी दुआ क़बूल करे। शुक्र है कि इस शादी फी बदौलत आपकी डियारत हुई ।

बड़े नवात्र--दुलहिन से पूछूँ । क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाह होगा ! तुम इसे मंजूर करती हो !

सुरेया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया । बड़े नवाब साइब ने कई मरतबा वही सवाल पूछा, मगर दुलद्विन ने सिर उपर न उठाया। आख़िर जब ह्रशमत बहू ने आ कर कहा--क्या सबको दिक़ करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नखरों से बाज़ नहीं आती हो। तब घुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा--हूँ।

बेड़ी बेगम---आपने सुना !

बड़े नवाब--जी नहीं, जरा भी नहीं सुना |

बड़ी बेगम ने कहा--आपलोग जरा खामोश दो जायँ तो नवाब साहब लड़की की आवाज सुन ले। जब सब खामोश द्वो गयीं तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कटदहा--हहैं |

उघर नौशा के दोस्त उससे मजाक़ कर रहे थे |

एक--आपसे जो पूछा जाय कि निकाइ मंजूर है या नहीं, तो आप घंटे भर तक जवाब न दीजिएगा ।

दूसरा-और नहीं तो क्या, हाँ कद्द देंगे !

तीसरा--जब लोग द्वाय-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कद्दना, मंजूर है ।

चौथा--ऐसा न हो, तुम फ़ोरन मंजूर कर लो और उधरवाले हमारी हँसी उड़ायें |

दुल्दा--दृल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं । अगर आप लोगों की यही मरजी है तो में दो घंटे में मंजूर करूँगा ।

अच मेहर पर तकरार होने लगी | दुलह्िन के भाई ने कटद्दा--मेहर चार लाख से कम न दहोगा। बड़े नवाब साहब बोले--माई, और भी बढ़ा दो, चार छझाख मेरी तरफ़ से, पूरे आठ लाख का मेद्र बैंघे ।

निकाह के बाद किश्षितियाँ आयीं, किसी में दुशाला, किसी में मारी मारी हार, तश्त-रियों में चिकनी डी, इल्ययची, पान, शी्शियों में इत्र ! किसी किइती में मिठाइयाँ और मिश्री के कृजे । जब काज़ी साइब दखसत हो गये तो दृढ्या ने पॉच अशर्फियाँ नजर दिखायी । नवात्र साहब बाहर आये । थोड़ी देर के बाद महल से शरबत आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशफियों दीं। दुलइिन के खिदमतगार ने पाँच अशर्फियाँ पायी | पढ़ले तो दुशाला माँगि्ता रहा, पगर लेगों के समझाने से इनाम ले लिया।

दुलहिन के लिए जूठा शरबत भेजा गया | महफ़िलवालों ने शरबत पिया, द्वार गले में डाला, इत्र लगाया और पान खा कर गाना सुनने लगे | इतने में अंदर से आदमी दुल्हा को बुलाने आया | दुरुद्दा यहाँ से खश-खुश चला | जब ब्योदी में पहुँचा तो उसकी बहनों ने आँचल डाला और के जा कर दुलहिन के मसनद पर बिठा दिया । डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू की | पहले आरसी की रस्म अदा की |

फ़ीरोजा--कहि ए., “बीबी, ग्रेंह खोलो | में तुम्हारा गुलाम हूँ।'

नवाब--बीबी मूँदह खोलो, में तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूँ।

हशमत--जब तक द्वाथ न जोडोगे, मुँह न खोलंगी |

मुबारक महल-- ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आँखें स्वोल दे ।

नवाब--या खुदा, अब और बक््योंकर कहूँ, बीची तुम्हारा गुलाम हूँ । खुदा के लिए जरा सूरत दिखा दो |

दूल्हा ने एक दफ़ा शृठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आँखें खोलीं, सखियों ने कद्दा--- शूट कहते हो, फोन कहता है, आँख खोली |

डोमिनी--बेगम साहब, अब आँखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गये | आप फ़क्नत आँख खोल दें । वह आपको देखें, आप चाहे उन्हें न देखें ।

फ़ीरोजा--वाह, दूल्हा तो चाद पीछे देखे, यह पहले ही धूर लेंगी ।

आखिर सुरेया बेगम ने जरा घिर उठाया और नवात्र साइच्न से चार आँखें होते ही शरमा कर गन नीचे कर ली |

नवाब--कद्दिए, अब अखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं !

फ़ोरोजा--अभी नाइक्र आँखें खोलीं, जब क़दमों पर टोपी रखते तबत्र आँखें खोलती ।

दुर्हा ने इक्कीस पान का बीड़ा खाया, पायजामे में एक हाथ से इजारबंद डाला और तथ सास को सलाम किया | सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया । अगन्न मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई | दुलद्दिन के कंधे, घुटने, हाय वगेरद् पर मिश्री के छोटे-छोटे डुकड़े रखे गये और दुर्द्दा ने शुक-झुकके खाये। सुरैया बेगम को गुदगुदी माद्म द्ो रही थी | सालियाँ दूल्हा की छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर द्वाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देख कर रद्द जाते थे ।

भानी--फ़ीरोज़ा बेगम जैसी चरबाँक साली भी न देखीं होगी ।

नवान- "एक चरबॉक हो तो कहूँ, यहाँ तो जो है, आफ़त का परकाला है और फ़ीराश जेगम का तो कहना दी क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें ।

फ्ीर!।श --क्या तारीफ़ फी है, वाह-वाह | जानी---क्या कुछ झूठ हे ! तुम्दारी जबान क्या, कतरनी हे !

फ़ीरोज़ा--और तुम अपनी कहो, दूल्हा को उसी वक़्त से घूर रही हो। उनकी नज़र भी पड़ती है तुम्हीं पर ।

जानी-- फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो |

फ़ीरोज़ा--सुरैया बेगम गाती खूब हैं और बताने में तो उस्ताद हैं, कोई कथक इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुंघरू बोले, कह्दो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस, कुछ न पूछो |

जानी--सुना, किसी कथक ने दिल छगाके नाचना सिखाया है। नवाब्र साहब की चाँदी है, रोज मुफ़्त का नाच देखेंगे ।

हशमत- भई, इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, दँसी-दिललगी का भी एक मौक़ा होता है |

फ़ीरोजा--हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कोन सा मौका होता है,बरात के दिन न दँसें-बोलें तो फिर किस दिन हूँ पें-बोलें (

इस तरह हँसी दिलगी में रात कट गयी। सबेरे चलने की तैयारियाँ होने लगीं । दुलहिन की माँ-बहने सब्न की सब रोने छगीं। माँ ने समधिन से कह्ा--बहन, लोंडी देती हूँ, इस पर मिहरबानी की निगाह रदे | वह बोलीं--क्या कहती हो १ औलाद से ज्यादा है । जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूँ उसी तरह इसको भी समझंगी। इसके बाद दृल्हा ने दुलद्दिन को गोंद में उठा कर सुखपाल पर सवार किया । सम-घिनें गले मिल कर रुखसत हुईं ।

जब बरात दुल्हा के घर पर आयी, तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहा-रियाँ पालकी को उठा कर जनानी व्योदी पर ले गयीं । तत्र दूल्हा की बदन ने आ कर दुलदिन के पॉब दुध से धोये और तलवे में चाँदी के वरक् लगाये। इसके याद दुल्दा ने दुलहिन के दामन पर नमाज पढ़ी | फिर खीर आयी, पहले दुलद्विन के द्वाथ पर रख कर दुल्ह्या को खिलायी गयी, फिर दूल्द्दा के द्वाथ पर खीर रखी गयी और दुलद्विन से कद्दा गया कि खाओ, तो वह शरमाने लगी आखिर दूल्हा की बहनों ने दुल्हा का हाथ दुलहिन के मुँह की तरफ़ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुँह दिखावे की रध्म पूरी हुई और दुल्हा बाहर आया ।

HINDI TEXT

प्रसंग ९८

शाहजादा हुमायूँ फ़र की मौत जिसने सुनी, कलेजा हाथों से थाम लिया। छोगों का खयाल था कि सिपदआरा यह सदमा बरदाइत न कर सकेगी ओर सिसक-सिसक कर शाहजादे की याद में जान दे देगी | घर में किसी की हिम्मत नहीं पढ़ती थी कि तिपदआरा को समझाये या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कद्दती--क्या अब तुम्हारी यह मर्जी है कि मैं रोज भी न, टिल ही में घुट-घुट कर मरूँ। दो-तीन दिन तक वह कंत्र पर जा कर फूल चुनती रद्दी, कभी कब्र क्रो चूमती, कभी ख़ुदा से दुआ माँगती कि ऐ खुद, शाहजादे नहादुर की सूरत दिखा दे, कमी आप ही आप मुसक्रिरती, कभी क़त्र की चट-चट बलाएँ लेती। एक आँख से दँसती, एक आँख से रोती । चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहाँ गयी | चमन में टद्बछते टहछते उसे आज़ाद की याद आ गयी। डुस्न-आरा से बोली--बहन, अगर दुल्हा भाई आ जायें तो हमारे दिल को ततकीन हो | बुदा ने याद तो वह दो-चार दिन में आया दी चाहते हैं ।

हुस्नआरा--अखबारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई ख़तम हो गयी |

सिपहआरा - कल मैं अम्माँजान को भी लाऊँगी ।

एक उस्तानी जी भी उनके साथ थीं। उस्तानी जी से किसी फ़क़ीर ने कहां था कि जुमेरात के दिन शाहज़ादा जी उठेगा । और किसी को तो इस बात का यकीन न आता था, मगर उस्तानी जी को इसका पूरा यक्कीन था। बोलीं--कल नहीं, परसों बेगम साहब को लछ/ना |

सिपहआरा--उस्तानी जी, अगर में यहीं दर-पाँच दिन रहूँ तो कैसा हो !

उस्तानी--बेटा, तुम द्वो किस फ़िक्र में | जुमेरात के दिन देख। तो, अल्लाह क्या करता है, परसों दी तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं ।

सिपहआरा--ख़ुशी का तो एक मद्दीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज को एक रात पहाड़ हो जाती है। खेर, दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले |

हुस्नआरा--उस्तानी जी जो कहेंगी, समझ-बूझ कर कहेंगी। शायर अल्लाह को इस राम के बाद खशी दिखानी मंजूर हो ।

लिपहआरा ने क्रत्न पर चढ़ाने के लिए. फूल तोड़ते हुए कहा--फूल तो दो-एक दिन हँस मी लेते हैं, मगर कलियाँ बिन जिले मरझ्षा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है ।

उस्तानी--जो खिले वे भी मुरझा गये, जो नहीं खिले वे भी मुरक्षा गये। इनशान का भी यही हाल है, आदमी समझता दे कि मौत कभी आयेगी ही नहीं। मकान बनवाप्रगा तो सोचेगा कि हजार बरस तक इसकी जतियाद ऐसी ही रहे! लेकिस यह खबर हो नहीं कि सब ठाट पढ़ा रह जावेगा जब रछाद चलेगा बनजारा ।? सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खशी से ख़शी होती है, न ग़म से ग़म ।

हुस्यनआरा--क्यों उस्तानी जी, आप को इस फ़क्कीर की बात का यक्कीन है !

उस्तानी--अब साफ़-साफ़ कह दूँ, आज के दूसरे दिन हुमायूँ फ़र यहाँ न बेड़े हों तो सही |

हुस्नआरा--ठम्हारे मुँह में घी-शक्कर, वर भी कुछ दुर नहीं है, फल के बाद ही तो परसों आयेगा।

सिपहआरा--बाजीजान, मुझे तो ज्षण भी यक्कीन नहीं आता | भला आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा कब्र से निकल आया !

यह बात द्वोती ही थी कि कब्र के पास से हँसी की आवाज आयी, सबको द्वैरत थी कि यह कददक़हा किसने लगाया | किसी की समझ में यह बात न आयी ।

दस बजते-बजते सब्र की सब घर लोट आयीं | यहाँ पहिले ही से एक शाह साहब बेठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आ कर कद्दा-- हुजूर, यह घड़े पहुँचे हुए फ़कीर हैं, यह ऐसी बातें कहते हैं, जिनसे माल्म होता है कि शाह-जादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था | वह मरे नहीं हैं, बल्कि जिंदा हैं । उस्तानी जी ने शाह साहब को अंदर बुलाया ओर बोलीं-- आपको इस वक़्त बढ़ी तकलीफ़ हुई, मगर हम ऐसी मुसीत्रत में गिरफ़्तार हैं कि ख़दा सातवें दुच्मन को

भी न दिखाये । है शाह साहब--खुदा की कारसाज़ी में दखल देना छोटा मुँह बड़ी बात दे । मगर

मेरा दिल गवाही देता है कि शाहज़ादा हुमायूँ फ़र निंदा हैं | यों तो यह नात मुद्दाल माद्म होती है; लेकिन इनसान क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मादूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खदा की बातों को क्या समझेगा !

उस्तानी--आप अभी तो यहीं रहेंगे ?१

शाह साहब--मैं उस वक़्त यहाँ से जाऊँगा, जब दुल्हा के हाथ में दुलद्दिन का हाथ होगा ।

उस्तानी--मगर दुलद्टिन को तो इस बात का यक्रीन ही नहीं आता | आप कुछ कमार दिखाये तो यक्रीन आये ।

शाह साहब-- अच्छा तो देखिए--

शाह साहब ने थोड़ी सी उरद मँगवायी और उस पर कुछ पढ़ कर ज़मीन पर फेंक दी। आध घंटा भी न गुज़रा था कि वहाँ की ज़मीन फट गयी।

बड़ी बेगम--अब् हससे जद कर क्या कमाल हो सकता है ।

सिपहआरा--अध्माँजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शायद शाह साहब ४ कहते दो ! (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फ़क़ीरों के कमाल की कायल हुईं।

उस्तानी-- हाँ बेटा, इसमें शक क्या है। फ़क्कीरों का कोई आज तक मुक्ाबिला कर सका है! वह छोग बादशाही की क्या दक़रीक़त समझते हैं !

शाह साहइब--फ़क्कीरों पर शक उन्हीं लोगों को द्वोता है जो कामिल फ़क़ीरों की हालत से वाक़िफ़ नहीं, वरना फ़क़ोरों ने मुर्दों को जिंदा कर दिया है, मंबिलों से आपस में बातें की हैं और आगे का हाल बता दिया है |

बेगम साहब ने अपने रिहतेदारों को बुलाया ओर यह ख़बर सुनायी | इस पर छोग तरह-तरह के शुबददे करने लगे | उन्हें यक्रीन ही न था कि मुर्दा कभी जिंदा दो सकता है ।

दुसरे दिन बेगम साहब ने खूब तैयारियाँ कीं । घर भर में सिर्फ़ हुस्नआरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाकी सब ख्श थे कि मुँह-माँगी मुराद पायी। हुस्नआरा को खोफ़ था, कहीं सिपहआरा की जान के छाले न पढ़ जायें ।

तमाम शहर में यह खबर मशहूर द्वो गयी और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा | वह भीड़ हो गयी कि कंघे से कंधा छिलता था | लोगों में ये बातें दो रही थीं--

एक- पुझे तो यक्रीन है कि शाहजादे आज जिंदा हो जायेंगे ।

दूसरा-- भला फ़क्कीरों की बात कहीं गलत होती है !

तीसग--ओर ऐसे कामिल फ़क्ोर की !

चोया--विंध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरतों नीम की पत्तियाँ उबाल कर नमक के साथ खायी हैं| क्रसम खुदा की, इसमें ज़रा झूठ नहीं ।

पाँचवॉ--बरुल्तान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आये, हकीम भी आये, पर किसी से कुछ न हुआ, तब में जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया | जा कर एक नजर उसको देखा ओर बोले, क्या ऐसा द्वो सकता है कि सब लोग वहाँ से दट जायें, सिफ़ मैं और यह ल्डकी रदे | लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था । सब आदमियों को हटाने लगा | यह देख कर शाह साहब हँसे और कहा, इस लड़की को खन नहीं आता | यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कद कर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रखा, तब से आज तक उसे खन नहीं आया । फ़क़ीरों ही से दुनिया कायम है ।

इतने में खबर हुई कि दुलह्निन घर से रवाना हो गयी हैं । तमाशा देखनेवाल्यें की भीड़ और भी ज़्यादा द्ों गयी, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पाँव निकाला तो बड़ी बेगम ने कदह्दा--खुदा ने चाहा तो आब फ़तह है, अब हमें जरा भी शक नहीं रहा |

सिपहआरा--अम्माँजान, भबस अब इधर या उघर, या तो शाइज़ादे को लेके आऊँगी, या वहीं मेरी मो कब्र बनेगी |

बेगम--बेटी, इस वक़्त बदसगुनी की बातें न करो |

सिपहआरा--अम्माँबान, दूध तो बख्श दो; यह आखिरी. दीदार है। बहन कह्ा-सुना माफ़ करना. लदा के लिए सेग मातम न करना | मेरी तसवीर आ भनूस के संदुक में है, जब तुम हँसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना । ऐ अम्माँजान, तुम रोती क्यों हो !

बहार बेगम--कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह !

रूदअफ़ज्ा--बदन, जो ऐसा ही है तो न जाओ |

बड़ी बेगम--हुस्नआरा, बहन को समझ।ाओ ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बँध गयी । मुश्किल से बोलीं--क्या समझाऊँ।

घिपहआरा--अम्मॉजान, आपसे एक अज़े है, मेरी कन्र भी शाहज़ादे की कब्र के पास द्वी बनवाना । जब तक तुम अपने मुँह से न कहोगी, में क्रम बाहर न रखूँगी |

बड़ी बेगम--भला बेटी, मेरे मुँद से यह बात निकलेगी ! छोगो, इसको समझा ओ, इसे क्या दो गया है |

उस्तानी --आए अच्छा कह दें, बस |

सिपहआरा--मैं अच्छा-उच्छा नहीं जानती, जो मैं कहूँ वह कहिए ।

उरतानी--फिर दिल को मज़बूत क़रके कह दो साहब ।

बड़ी बेगम -ना, हमसे न कहा जायगा |

हुस्न आर/--बहन, जो तुम कद्दती हो वही होगा | अल्लाह वद घड़ी न दिखाये, बस अन्न हठ न करो ।

सिपहआरा--मेरी कब्र पर कभी-कभी आँसू बहा लिया करना बाजीजान। मैं सोचती हूँ कि तुम्हारा दिल केसे बहलेगा ।

यह कद कर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब की सब रवाना हुई । जब सवारियाँ किले के फाटक पर पहुँचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया, कि दुलहिन घोड़े पर सवार हो कर अंदर दाछिल हो । बेगम साहब ने हुक्म दिया, घोड़ा छाया जाय | सिपदआरा घोड़े पर सवार हुई ओर घोड़े को उड़ाती हुई क़ब्र के पास पहुँच कर बोली--अब्र क्या हुक्म द्वोता है ! खर आओगे या हमको भी यहीं सुछाओगे । हम हर तरद्द राजी हैं ।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नज़र आयी | ऐसी तेज़ रोशनी थी फि सबकी नज़र झपक गषी और एक छहमे में शादइजादा हुमायूँ फ़र घोडे पर सवार <ते हुए दिखायी दिये । उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुरू मचाया कि सारा किला 7ज उठा । सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी कब्र बन गयी हो और जिसको मरे हुए हफ़्तों गुजर गये हों, वह क्यों कर जी उठा !

हुस्नआरा और शाहजादे की बहन खुरशेट में बरतें होने छगीं--

हुस्नआर'--क्पा कहूँ, कुछ समझ्ञ में नहीं आता |

खररेद--इमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती ।

हुश्नआर, -तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूँ फ़र यही है !

खुरशेद--दाँ साहब, यदी हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अक्सर आदमियों को यकीन ही नहीं आता था कि यह शाहब्ादा हैं! एक आदमी--भाई, खदा की णात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी

क्रमात शाह साहब की है | तीसरा--जमी तो दुआ में इतनी ताक़त है |

HINDI TEXT

प्रसंग ९९

नयात्र वजाहत हुसैन सुबह को जब दरबार में आये तो नींद से आँखें झुकी पड़ती थीं । दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देख कर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकरौा और मुक्नारक हुसैन बहुत बेतक़ल्लफ़ थे | उन्होंने नवाब साहब से कहा-भाई, आज चौथी के दिन नाव न दिखाओगे १ कुछ जरूरी है कि जब कोई तायफ़ा बुलवाया जाय तो बदी ही दिल में हो ! अरे साहब, गाना सुनिए, नाच देखिए, दँसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुजूर मुल्छा बन बैठे । मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पायेगा । और दोस्तों ने भी उनकी हाँ में हाँ मिलायी | यहाँ तक कि मुत्रा-रक हुसैन जा कर कई तायफ़े बुछा छाये, गाना दोने लगा । रौनक़रीला ने कहा-- कोई फ़ारसी ग़ज़ल कहिए तो खूब रंग बमे ।

इसीना--रंग जमाने की जिसको ज़रूरत हो वह यह फ़िक्र करे, यहाँ तो आके महफ़िल में बैठने भर की देर है । रंग आप ही आप जम जायगा | गा कर रंग जमाया तो क्या जमाया !

रौन--हुस्न का भी बढ़ा रारूर होता है, क्या कहना !

हसीना--होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़ कर कौन दौलत है !

बिगड़े दिल--अब आपस ही में दाना बदरछौबलछ होगा या किसी की सुनोगी मी, भत्र कुछ गाओ |

रौनक --यह ग़ज़ल शुरू करो--

बहार आयी दे भर दे बादये गुलगूँ से पैमाना,
रहे साक्की तेरा छाखों बरस आबाद मैथ्वाना ।

इतने में महलतरा से दुल्द्या की तलबी हुई। नवाब साइब महल में गये तो दुलहिन और दुल्दा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तरख्वान बिछा, चाँदी की रूगन रखी गयी, डोमिनियाँ आयीं और उन्होंने दुलहिन के दोनों ह्ाथों में दृल्हा के दवा य से तरकारी दी, फिर दुलह्िन के हाथों से दुल्द्दा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया |

अब तरकारियोँ उछलने लगीं। दुल्हा को साली ने नारंगी खींच मारी, इशमत बहू और जानी बेगम ने दूढ्द्दा को बहुत दिक्र किया । आदर दुढ्द्या ने भी झल्ता कर एक छोटी सी नारंगी फ़ीरोजा बेगम को ताक कर लगायी ।

जानी बेगम -तो झेंप कादे की है | शरमाती कया हो !

मुबारक महरू--हाँ, शरमाने की क्या बात है, और है ,भी तो तुमको दाम काहे की | शरमाये तो वह ज़िसकों कुछ हया हो |

ह्शमत बहू--तठम भी फेंको फ़ीरोड़ा बदन | तुम तो ऐसी शरमायीं कि अब हाभ ही नहीं उठता ।

फीरोजा--शरमाता कौन है, क्योंजी फिर में भी हाथ चछाऊँ !

दुल्हा--शौक़ से हुजूर हाथ चलायें, अमी तक तो जबान ही चलती थी।

फ़ीरोज़ा--अब क्या जवाब हूँ, जाओ छोड़ दिया तुमको ।

अब चारों तरफ़ से मेवे उछलने छगे। सब की सब दुल्दे पर ताक-ताक कर निशाना मारती थीं। मगर दृल्हा ने बल एक फ़ीरोजा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया, उन्हीं पर फेंका | नारंगी पर नारंगी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहइल-पहल रही ।

फ़ीरोज़ा - ऐसे दीठ दृश्हा भी नहीं देखे ।

दृल्हा--और ऐसी चंचल बेगम भी नहीं देखी । अच्छा यहाँ इतनी हैं, कोई कदद दे कि तुम जेसी शोख और चंचछ औरत फिसी ने आज तक देखी है !

फ़रीरोज़ा--अरे, यह तुम हमारा नाम कहाँ से जान गये साहब !

दृल्हा--आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैत्ी । कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो !

फ़ीरोजा--तुम्हें क्रम है, बताओ, हमारा नाम कहाँ से जान गये !

मुनारक महर--बड़ी दीठ हैं | इस तरह बातें करती हैं, जेपे बरसों की बेतऊ-लफ़ी हो | .. फ़ीरोजा-ऐ, तो तुमको इससे क्या, इसकी फ़िकर होगी तो हमारे मियाँ को होगी, तुम कादे को काँपती जाती हो ।

दृल्हा--आपके मिर्यों से और इमसे बड़ा याराना है।

फ़ीरोज़ा-याराना नहीं वह है। वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है !

दुल्हा-भला बताओ तो, उनका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतक़ल्लफ़ हो ।

फ़ीरोज़ा --उन का नाम, उनका नाम है नवाब वजाहत हुसेन ।

दृल्हा--बस, अब हम द्वार गये, खुदा की क़सम, द्वार गये ।

मुबारक महल--शनसे कोई जीत ही नहीं सकता । जन्न मर्दों से ऐसी बेतकल्लफ़ हैं तो हम लोगों की बात ही कब) है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए ।

फ़ीरोज़ा--अपनी-अपनी तब्रीयत, इसमें भी किसी का इजारा है |

दृल्हा--६_म तो आपसे बहुत ख़श हुए, बड़ी हँस-मुख हो । खुद करे, रोज़ दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रखपत हुईं । सिफ़े दूल्हा और दुलदिन रह गये ।

नवाब--फ़ीरोशा बेगम तो बड़ी शोख मादूम होती हैं। बाज़-बाज मौक़े पर मैं शरमा जाता था, पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीबी ऐती होती तो मुप्तसे दम भर न बनती । राज़त्र ख़ुदा का | गैरमरई से इस बेतक्छुफ़ी से बातें करना बुरा है।

तुमने तो पहले इन्हें कादे को देखा होगा |

मुरैया-- जैसे मुफ़्त की माँ मिल गयी और मुफ्त की बहनें बन बैटीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गयीं ।

नवाब--मुझे तो तुम्हारी माँ पर हँसी आती थी कि बिलकुछ इस तरह णेश आती थीं जैसे कोई खास अपने दामाद के साथ पेश आता है |

बुरेया-- आप भी तो फ़ीरोज़ा बेगम को खूब घूर रहे थे ।

नवाब--क्यों म़फ़्त में इलज़ाम लगाती दो, भला तुमने कैसे देख लिया !

सुरेया--क्यों ! क्या मुझे कम सूझता है !

नवाब--गरदन झ्ुकाये दुलद्विन बनी तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था | और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं हैं ।

सुरैया--मुझसे खुद उसने कसमें खा कर यह बात कही । अब सुनिए, अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिल्त्रया, या इधर-उधर सैरसपाटे करने लगे तो मुझसे दम भर भी न बनेगी ।

नवावब--क्या मजाल, ऐसी बात है भला |

मुरेया--हाँ, खूब याद आया, भूल ही गयी थी । क्यों साहब, यह नारंगियाँ खोँच मारना क्या हरकत थी | उनकी शोखी का ज़िक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते |

नवाब--जब उसने दिक्क किया तो मैं भी मजबुर हो गया ।

सुरैया--किसने दिक्क किया ! वह भला बेचारी ब्या दिक् करती तुमको ! तुम मर्द और वह औरतजात |

नवाब--अजी, वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

मुरेया - तुम भी छटे हुए हो !

उसी कमरे में कुछ अखबार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोलीं--इन अखबारों को पदढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों दी रख छोड़े हैं ।

नवाब--कमी-कमी देख लेता हूँ । यद्द देखो, ताज़ा अखबार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की खूब तारीफ़ छपी है ।

मुरैया--शरा मुझे तो देना, अभी दे दूँगी।

नवाब--पढ़ रहा हूँ, श्रश ठहर जाओ | क

दुरैया--और इम छीन लें तो ! अच्छा जोर-ज़ोर से पदों, हम मी सुने ।

नवाब--उन्होंने तो छड़ाई में एक बड़ी फ़तद् पायी है ।

पुरेया- सुनाओ-सुनाओ । खुदा करें, वह सुखरू हो कर आययें।

नवाब--तुम इनको कहाँ से जानती हो, क्या कमी देखा है ।

मुरैया-- वाह, देखने की अच्छी कही। हाँ, इतना सुना है कि तुककों की मदद करने के छिए रूम गये ये ।

शाहज़ादे की पहचान

लिखावट तो वही है!



१ दो अख़बार, दो राय

एक ने घरवालों की पहचान को काफ़ी समझा। दूसरे ने जाँच की माँग की। आख़िर यह शाहज़ादा है कौन?



२ ख़त की गवाही

कलक्टर ने नया रुक़्क़ा और अपना पुराना ख़त मिलाया। वही लिखावट! उन्हें लगा कि पहचान हो गई।



३ एक पुराना सवाल

कलक्टर ने अपनी दी हुई एक चीज़ याद दिलाई। शाहज़ादा कुछ बता न सके। कई सवालों के बाद कलक्टर की राय पलट गई।

HINDI TEXT

प्रसंग १००

शाहजादा हुमायूँ फ़र केजी उठने की ख़बर घर-घर मशहूर हो गयी। अखबारों में इसका जिक्र होने लगा | एक अख़बार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि खदा के लिए किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुश्किल बात नहीं | जन्न उनकी माँ और बहनों को पूराय क्रीन है तो फिर शक की गुंजाइश नही रहती ।

दूसरे अखबार ने लिखा... .. . . हम देखते हैं कि सारा जमाना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कद्दना माने तो हम उसको सलाइ देंगे कि सबको एक सिरे से पागलखाने भेज दे। ग़ज़ब खुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यक्रीन है कि हुमायूँ फ़र जिंदा हो गये | हम इनसे पूछते हैं, यारो, कुछ अक़्छ मी रखते हो । कहीं मुर्दे भी जिंदा होते हैं! भला कोई अक़ रखनेवाला आदमी यह बात म!नेग, कि एक फ़क्कीर की दुआ से मुर्द जी उठा । क़त्र बनी की बनी ही रही और हुमायूँ फ़र बाहर मौजूद हो गये। जो छोग इस पर यक्कीन करते हैं उनसे ज़्यादा अहमक़ कोई नहीं | हम चाहते हैं कि सरकार इस मामले में पूरी तहक्कीकात करे । बहुत मुमकिन है कि कोई आदमी शाहज़ादी बेगम को बहका कर हुमायूँ फ़र बन बैठा हो। जिसके मानी यह हैं कि वह शाहजादी बेगम की जायदाद का मालिक हो गया |

जिले के हुक्काम को भी इस मामले में शक पैदा हुआ। कलक्टर ने पुलिस के कप्तान की बुला कर सलाह की कि दुमायूँ फ़र से मुलाक्नात की जाय। यह फ़ेसला करके दोनों घोड़े पर सवार हुए ओर दन से शाहज़ादी बेगम के मकान पर जा पहुँचे | हुमायूँ फ़र के भाई ने सबसे हाथ मिलाया और इज्जत के साथ त्रैठाया । बनाने में खबर हुई तो शाहज़ादी बेगम ने कह्ा--हम शाह साहब के हुक्म के कौर हुमायूँ फ़: को बाहर न जाने देंगे ।

लेकिन जब शाह साहब से पूछा गया तो उन्होंने साफ़ कट्ट दिया कि हुमायूँ फ़र मद्दल्सरा से बाहर नहीं निकल सकते | वह बाहर आये और मैंने अपना रास्ता डिया । हाँ, साहब को जो कुछ पूछना हो, लिख कर पूछ सकते हैं। आखिर हुमायूँ फ़र ने साहब के नाम पर एक रुक़का लिख कर' भेजा | साहब ने अपनी जेब से हुमायूँ फ़र का एक पुराना खत निकाला और दोनों खतों को एक सा पा कर बोढे--अब तो मुझे भी यक्लीन आ गया कि यह शाहज़ादा हुमायूँ फ़र ही हैं, मगर समझ में नहीं आता, वह फ़कीर क्यों उन्हें हमसे मिलने नहीं देता । आखिर उन्होंने हुमायूँ कर के भाई से पूछा, आपको खूब मादम है कि हुमायूँ फ़र यही हैं | लड़का हँस कर बोला--आप को यक्कीन ही नहीं आता तो क्या किया जाय, आप खद चल कर देख सीजिए ।

शाहजादी बेगम ने जब देखा कि हुब्काम टाले न टछेंगे तो उन्होंने शाइजादा ने एक कमरे में बैठा दिया | हुक्क्राम बरामदे में बेठाये गये | साहब ने पूछा--बेढ श। (ज़ादा हुमायूँ फ़र, यह सत्र क्या बात है !

शाहज़ादा-खदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं ।

साहब-आप शाहज़्ादा हुमायूँ फ़र ही हैं या कोई और !

शाहज़ादा-क्या ख़त, अब तक शक है !

साइब--दमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं !

शाहजादा-मुझे याद नहीं । आख़िर वह कोन चीज़ थी !

साइब--याद कीजिए |

साहब ने हुमायूं फ़र से और कई बातें पृछीं, मगर वह एक का भी जवाब न दे सके | तब तो साहब को यक्कोन द्वो गया कि यह हुमायूँ फ़र नहीं है |

HINDI TEXT

प्रसंग १०१

आजाद पाशा को इस्कंदरिया में कई दिन रहना पड़ा । हैज़े की वज्जह से बहाज़ों का आना-जाना बंद था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा-भाई, अब ते यहाँ से रिहाई पाना मुश्किल है । खोजी--ख़दा का शुक्र करो कि बचके चले आये, इतनी जल्दी क्या है ! आज़ाद--मगर यार, तुमने वहाँ नाम न किया, अफ़सोस की बात है । खोजी--क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया ! आडिर आपने क्या किया, कुछ मादूम तो हो, कौन गढ़ फ़तद्द किया, कोन लड़ाई लड़े ! यहाँ तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़ के मारा । आप बस मिसों पर आशिक हुए, और तो कुछ नहीं किया । आज़ाद--आप भी तो बुआ ज़ाफ़रान पर आशिक़ हुए थे ! मीश- अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहाँ कैसे रईस हैं ! खोजी--बिल्कुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक़ दुनिया से निराले हैं । पतंगत्नाजी पर मिटे हुए, तरह तरद् के पतंग बनते हैं, गोल, माह्दीजाल, माँगदार, भेड़िया, तौक़िया, खरबूजिया, टेँगोटिया, तुककल, ललपत्ता, कलपत्ता । दस-दस अशर्फियों के पेंच होते हैं | तमाशाइयों की वह भीड़ होती है कि खदा की पनाइ ! पतंगबाज़ अपने फ़न के उस्ताद। कोई दील छड़ाने का उस्ताद है, कोई घसीट लड़ाने का यकता । इधर पेंच पड़ा, उधर ग्ोता देते ही कहा, वह काटा ! ढूटने-बालों की चाँदी है | एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर टूटते हैं । आज़ाद--क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है! खोजी--तुम कया जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो । सच कहना, पतंग लड़ाया है कभी ! आजाइ--हमने पतंग की इतनी किसमें भी नहीं सुनी थीं । खोजी--हसी से तो कहता हूँ, जोँगदू हो। भला पेट जानते हो, किसे कहते हैं ! आजाद--हाँ हाँ, जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कद्दते हैं न कि क्रिसी की ढोर तोड़ ली जाय । खोजी--भई, निरे गाउदी हो | मीडा--अच्छा बोलो, करते क्या हैं, क्या सारा दिन पतंग ही उड़ाया करते हैं! खोजी--नहीं साहब, अफ़रीम और चेह्ू कसरत से पीते हैं | आजाद--और कबूतरत्राज़ी का तो हाल बयान करो । क्लारिसा--हमने सुना है कि हिदोस्तान की औरतें बिलकुछ जाहिल होती हैं। आज़ाद--मगर दुस्नआरा को देखो तो खश हो जाओ |

क्लारिसा--हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुदा जाने, बह हमको देख कर खुश होती हैं या नहीं ।

मीडा--नहीं, उम्मेद नहीं कि दम दोनों को देख कर ख़श हों | जब्र हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा। हर

बलारिसा--मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आजाद से मतलब १ मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसछ पड़नेवाली नहीं ।

मीश--ज़ा होश की बातें करो | जब्र उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंजूर किया | वरना इनमें हे क्या ! न हसीन, न जवान, न रैंगीडे ।

खोजी-- और हम ! हमको क्या समझती दो आदिर !

मीड--8म बड़े तरहइदार जवान द्वो। और तो और, डील डौल में तो कोई तुम्द्वारा सानी नहीं ।

आज़ाद--हम भी किसी ज़माने में ख्वाजा साहब की तरह शहज़ोर थे, मगर अब वह बात कहाँ, अब तो मरे-बूढ़े आदमी हैं ।

खोजी--अजी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा |

आजाद--आपकी जवानी शायद कब्र में आयेगी।

खोजी--अजी, क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई ।

मीडा--तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा--आप ही को मुबारक रहें ।

आजाद--भई, यहाँ तुम्दारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो लोगों को शक द्वोगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा ।

घोजी-- वाह, यह तो तुमने एक ही घुनायी । अब हमें शादी की ज़रूरत आ पड़ी ।

आज़ाद--मगर तुम्हारे लिए तो कोई खुबरूरत चाहिए जिस पर सबकी निगाह पड़े |

खोजी-- जी हाँ, जिसमें आपको भी धघुरा-घारी करने का मौका मिले | यहाँ ऐसे अद्मक्र नहीं हैं। जोरू के मामले में बंदा किसी से याराना नहीं रखता |

आज्जाद तो सैर करने चले गये | खोजी ने मिस क्लारिसा से कह्ा--हमारे लिए कोई ऐसी बीबी ढूँढ़ी जिस पर सारी दुनिया के शाहज़ादे जान देते दों। आज़ाद का खटका जरूर है, यह आदमी भाँजी मारने से बाड़ न आयेगा। यह तो इसकी आदत में दाखिल है कि जो औरत हमारे ऊपर रीक्षेगी उसको बहकायेगा |. लेकिन यह भी जानता हूँ कि जो औरत एक बार हमें देख लेगी, उसे आज़ाद क्या, आज़ाद के बाप भी न बदका सकेंगे | मुझे देख-देख कर यह इल्नरत बल्ण करते हैं।

क्लारिसा--आजाद तुम्हारी सी जवानी कहाँ से छायें।

सखोजी-- बस-बस, खुदा तुमको सलाम्त रखे । खुदा करे, तुमको मेरा सा शौहर मिले | इससे ज़्यादा और क्या दुआ दूँ।

बरछारिसा--कहीं तुम्हारी शामत तो नहीं भागी है !

खोजी--क्यों, क्या हुआ | आखिर हममें कौन बात नहीं है, कुछ माल्म हो, अंधा हूँ, काना हूँ, दला हूँ, ढैंगड़ा हूँ । आखिर मुझमें कौन सी बात नहीं है !

क्झारिसा--पहले जा कर मुँह बनवाओ। चले हैं हमारे साथ शादी करने, कुछ पागल तो नहीं हो गये हो !

खोजी--पागल | ठीक, मेरे पागलपने का हाल मिल, अदन, रूम, हिंदोस्तान की औरतों से जा कर पूछ लो, आख़िर कुछ देख कर ही तो वह सब्र मुझ पर आशिक हुई थीं ।

इतने में मियाँ आजाद ने आ कर पूछा--क्या बातें हो रही हैं ! क्लारिसा, तुम इनके फेर में न आना । यह बड़े चालाक आदसमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं ।

खोजी-- खैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती | खेर, आज नहीं, कल

सही। बिना शादी किये तो अब्न मानता नहीं |

क्लारिसा--तो आप अपने को इस क्राब्रिल समझने लगे !

खोजी--कराबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी जान में जादू है।

आकार -वुम्हारे लिए तो बुआ ज्ाफ़रान की सी औरत चाहिए |

स्रोजी---अगर मिस क्लारिसा ने मंजूर न किया तो और कहीं शिप्पा लगायेंगे | मगर मुझे तो उम्मेद है कि मिस बलारिसा आजकल में जरूर मंजूर कर लेंगी।

आज़ाद--अजी, मैंने तुम्हारे लिए. वह औरत तलाश कर रखी है कि देख कर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जायगी |

खोजी बहुत खुश हुए | दूसरे दिन आज़ाद ने एक गाड़ी मँगवायी। आप दोनों मि्सों के साथ गाड़ी में बैठे, खोजी को कोच-बवस पर बैठाया और जादी करने चले। खोजी ऊपर से इटो-बचो की हाँक लगाते जाते थे। एक जगह एक बदरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुर मचाते ही रद्दे और गाड़ो उसके कब्ले पर पहुँच गयी । आप बहुत द्वी बिगड़े, भला बे गीदी, अब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया |

आज़ाद--क्या है भाई, खेरियत तो है !

स्तोजी---अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेष बदल कर आया, हम गला फाइ-फाड़ कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं । तब मैं समझा.कि हो न हो बहु-रूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था कि हमें पकड़ा दे । वद्द तो दो-चार दिन में छोट-पोट के चंगा हो जाता, मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती | अन्न पूछो कि तुमको क्या फ़िक्र है, दम छोग भी तो सवार हैं। इसका जवान दमसे सुनिए | मिस्से तो औरत बन कर छूट जातीं, रहे हम और तुम । तो जिसकी नज़र पड़ती, हमो पर पढ़ती | तुमकी लोग खिरमतगार समझते, इम रईस कं धोखे में घर लिये जाते | बस, हमारे माथे जातो ।

इतने में दस-ग्यारद दुम्बे सामने से आये । खोजी ने चरवादे को उस तीखी चितवन से देखा कि खा ही जायेंगे । उसे इनका केंड़ा देख कर हँसी आ गयी। बस आप आग ही तो हो गये। कोचवान को डॉट बतायी--रोक छे, रोक ले |

आजाद---अब क्या मुसीबत पड़ी ! ह

खोजी--हस बदमाश से कहो बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सज्ञा दे आऊँ तो बात कखरूँ। बदमाश मुझे देख कर हँस दिया, कोई मसखरा समझा है ।

आज़ाद--कौन था, कोन, ज़रा नाम तो सुनें।

खोजी--अब्र राह चलते का नाम मैं क्या जानूँ । कहिए, उटक्कररैस कोई नाम बता दूँ। मुझे देखा तो हँसे आप, मेरी आँखों में खून उतर आया |

आज़ाद--अरे यार, तुम्हें देख कर, मारे खुशी के हँस पड़ा होगा ।

खोजी--भई, तुमने सच कहा, यही बात है ।

आजाद--अब बताओ, हो गधे कि नहीं, जो मैं न समझाता तो फिर !

खोजी--फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गरदन पर होता ।

एकाएक कोचवान ने गाड़ी रोक ली। खोजी घबरा कर कोच-बक्स से उतरे तो पायदान से दामन अटका और मैंह के बल गिरे, मगर जल्दी से झाड़-पोंछ कर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हँसने लगीं ।

आज़ाद-- अजी, गद-वर्द पोंछो, जरा आदमी बनो । जो दुलहिनवाले देख हें तो कैसी हो !

स्वोजी-अरे यार, गरदे-वर्द तो झाड़ चुका, मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, में तो समझता हूँ, वह्दी बहुरूपिया मेरी आँखों में धूल झ्ोंक कर मुझे घसीट ले गया। खर, शादी हो ले। फिर बोनी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊँगा ।

आज़ाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और खोजी की ससुराल के दरवाजे पर आये | खोजी गाड़ी के अंदर बेठे रहे। जनत्र अंदर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कह्दा--उनसे कद दो, मेरी अगवानी करने के लिए किसी को भेज दें ।

आज़ाद ने अंदर जा कर एक पँचहत्थी मोटी-ताजी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठा कर अंदर ले चली | खोजबी अमी सेभलने न पाये ये कि उसने उन्हें ले जा कर आँगन 'में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। खोजी चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे--अम्माँनान माफ़ करो, ऐसी शादी पर खूदा की मार, मैं क्वाँरा ही रहूँगा ।

आज़्ाद- क्या है भई, यदद रो क्यों रहे हो ९

खोजी--कुछ नहीं भाईजान, जरा दिल्लगी हो रही थी |

आडाद--अम्माँजान का लफ़्ज़ किसी ने कहां था !?

खोजी--तो यहाँ तुम्दारे सिवा हिंदोस्तानी और कौन है !

आज़ाद--और आप कहाँ के रहनेवाके हैं !

खोजी-- मैं तुक हूँ ।

आब्ाद--अच्छा, जा कर दुलरूद्दिन के पास बैठो । वह कब से गरदन ध्काये बैटी है बेचारी, और आप उुनते ही नहीं ।

खोजी ऊपर गये तो देखा, एक कोने में दुशाछा भोदे दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जा कर बैठ गये। क्लारिसा और मीडा भी जरा फ़ासले पर बैठी थीं । ख्वाजा साहब दून की लेने छगे। हमारे अब्बाजान सैयद थे और अम्माँजान काबुल के एक अमीर की छड़की थीं। उनके हाथ-पाँव अगर आप देखतीं तो डर जातीं । अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुन कर कान पकड़ते थे । सीना शेर का सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजमम, आँखों में खून बरसता था। एक दफ़े रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खींचे पड़ रद्दा, मगर वाह री अम्मौजान, चोर की आहट पाते द्वी उस बदमाश को जा पकड़ा । मैंने पुकार कर कहा , अम्मॉजान, जाने न पाये, में भी आ पहुँचा । इतने में अब्बाजान की आँख खुल गयी । पूछा--क्या है १ मैंने कह्दा--अम्माँजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है । अब्बाजान बोले--तो फिर दबके पड़े रहो, उसने चोर को क्रत्ल कर डाला होगा। मैं जो जाके देखता हूँ तो लाश फड़क रही है। जनाब, हमर ऐशों के ल्ड़के हैं । ह आन तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही द्वोते हैं ।

खोजी--(हँस कर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हँस रही हैं। अभी हम इनकी नजरों में नहीं जँचते ।

आज़ाद--दुलदहिन आज बहुत हँसती हैं। बड़ी हँसमुख बीबी पायी ।

ख़ोजी--उदूँ तो यह क्या समझती होंगी ।

आजाद--आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे बेवकूफ, इन्हें हिंदी-उदूं से क्या ताल्लक़ ।

खोजी-- बड़ी खराबी यह है कि यहाँ जिस गली-कूचे में निकल जायें, सबकी नजर पढ़ा चाहे और लोग मुझसे जला दी चाहैं, इसको में क्या करूँ | अगर इनको सैर कराने साथ न ले चर्द तो नहीं बनती, ले चलूँ तो नहीं बनती | कहीं मुझ पर किसी परीक्षम की निगाह पड़े और वह घूर-घूर कर देखे, तो यद्द समझें कि कोई ख़ास वजह है | अत्र कहिए, क्या किया जाय !

आज्लाद - दुलहिन भरंद बंद किये क्यों बैटी हैं, नाक की तो खेर है !

खोजी--क्या बकते हो मियाँ, मगर अब मुझे भी- शक हो गया, तुम लोग बरा समझा दो भाई की नाक दिखा दें ।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपा कर जरा सी नाक दिखा दी । खोजी ने जा कर नाक को छूना चाहा तो उसने इस जोर के चपत दी कि खोजी बिलबित्श उठे |

आजाद-- खदा की क़सम, बड़े बेअदब दो ।

खोजी--अरे मियोँ, जाओ भी । यहाँ होश बिगड गये, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार, यह बुरा सगुन हुआ |

आजाद--अरे गाउदी, यह नखरे हैं, समझा !

खोजी-- (हँस कर) वाह रे नखरे !

आजाद---अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गये हो !

खोज्ी -- उँह, कभी की एक हद्वी कही, क्या ननहें बने जाते हैं ! भरे मियाँ, शाही में गुलचले मशहूर थे, अब भी जो चाँदमारी हुई, उसमें हमी बीस रहे |

आज़ाद--मिस मीडा हँस रही हैं, गोया तुम झूठे हो |

खोजी-- यह अभी छोकरी हैं, यह बातं क्या जानें। अब्बाजान को ख़दा बख्शे | दो ऐसे गुर बता गये हैं जो हर जगह क'म आते हैं। एक तो यहद्द कि जन्र किसी से लड़ाई द्वो तो पहला वार खद करना, बात करते द्टी चाँटा देना ।

आजाद--आप तो कई ज्गदह इस नसीहत को काम में ला चुके हैं। एक तो बुआ जाफ़रान पर हाथ उठाया था । दुसरे जैनब की नाक में दम कर दिया था |

खोज्ी--अब मैं अपना सिर पीट लूँ, क्या करूँ | जिस-जिस जगह अपनी भल-म्रनसी से शरमिंदा हुआ था, उन्हीं का जिक्र करते हो | वह तो कदहिए, खेरियत है कि दुलद्टि न उद नहीं समझतीं, वरना नजरों से गिर जाता |

यह फ़िक़रा सुन कर दुलद्दिन मुसकिरायीं तो ख्वाजा साहब अकड़ कर बो छे---बल्ा द वह हँसमृख

बीबी पायी है कि जी खूश हो गया । बात नहीं समझती, मगर दँसने व्यती है। मई, जरा आँखें भी देख लेना ।

आज़ाद-- जनाब, दोनों अंखें हैं और त्रिलकुल हाथी की सी |

खोजी--घस यही मैं चाहता हूँ, वह क्या जिसकी बढ़ी-बड़ी आँखें हों | तारीफ़ यह है कि ब्रा-जरा सो आँखें हें। और हँसने के वक़्त बिलकुल बंद हो जायें, मगर यार, गला कैसा है !

आजाद--ऐं, वया हिंदोस्तान में गाने की तालीम दोगे (

खोजी--ऐ. है, समझते तो हो ही नहीं, मतलब यह कि गरदन हूम्बी है या छोटी ! पहले समझ लो, फिर एतराज़ जड़ो |

आज्ाद--गरदन, सिर और घड़ सब सपाट है ।

खोरी-- यह क्या, तो क्या, छोटी गरदन की तारीफ़ है !

आजाद--और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गरदन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यही निशानी /? क्या महावरे भी भूल गये !

खोजी-- महा4रे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर खदा के लिए जरा मुझसे अंदब से बार्ते कीजिए, वरन। यहाँ मेरी किरकिरी होगी। और यह आप उनके क़रीब क्यों बैठे हें, हटके बैठिएं जरा

आज़ाद--क्यों खाहब, आप अपनी सपुराल में हमारी बेइज्जर्त, करते हैं ! अच्छा ! खेर, देखा जायगा ।

सखोजी--आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत कमबख्त ऐसी खराब है कि बेचुदछ किये रहा नहीं जाता ।

आजाद--खैर चलो, होगा कुछ | मगर यार, यहाँ एक अजीत्र रस्म है, दुलद्विन अपने दुल्द्दा के दोस्तों से हँस-हँस कर बात करती है।

सोजी--यद तो बुरी बात है, क्रमम खदा की, अगर ठुमने इनसे एक बात भी की होगी तो करौली ले कर अभी-अभी काम तमाम कर दूँगा |

आजाद--घुन तो लो, ज़रा सुनो तो सद्दी ।

खोजी--अजी बस, सुन चुके । इस वक़्त आँखों में खून उतर आया, ऐसी दुल-हिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकायी बैठी हैं, गोया कुछ जानती द्वी नहीं ।

आजाद--हर मुल्क की रस्म अलग-अलग है। इसमें आप ख्वाहमख्वाह बिगड़ रहे हें।

खोजी--तो आप आँखें क्या दिखाते हैं! कुछ आपका मुहताज या ग़लाम हैँ! दूट का रुपया मेरे पास भी है, यहाँ से हिंदुस्तान तक अपनी बीची के साथ जा सकता हूँ । अब आप तो जायें, में ज़रा इनसे दो-दो बातें कर लूँ, फिर शादी की राय पीछ दी जायगी ।

आजाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पाँव से दामन दब्बा दिया |

आजाद--भत्र बताओ, उठने नहीं देतीं, में क्या करूँ।

खोजी--(डपट कर) छाड़ दो ।

आज़ाद--छोड दो साहब, देखो तुम्हारे मियाँ ख़फ़ा ह्वोते हैं।

खोजी--अभी मझे मियाँ न कहिए, शादी ब्याह नाजक मामला है |

आजाद--पहले थभापकी इनसे शादी हो जाय, फिर अगर बंदा आँख उठाके देखे तो गुनहगार ।

खोजी--अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कडे खाँ हैं, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते | मगर आप क्यों समझायेंगे। में खद ही क्यों न कह दूँ । सुनो ब| साहब, हमारे सौथ चलती ह्वो तो दो शर्ते माननी होंगी। एक यह कि झिसी गेर आटमी को सूरत न दिखाओ | दूसरी यहद्द कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी यैंध जाती है। ऐसा न दो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे | भई आज़ाद, ज़रा इनकी इनकी जुबान में समझा दो ।

आज्ाइ---आप जरा एक भिनट के लिए बाहर चले जाइए, तो मैं सत्र बाते समभ्ा दें |

खंजी--जी, दुस्स्त, यह भरें लाष्टों को दीजिएगा, आप ऐसे छोकडे मेरी जेत्र में पड़े हैं। ओर सुनिए, क्या उल्दू समझा है! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आज़ाद बादर चले गये तो खोजी पलैंग पर दुलद्विन के पाप बेठे और बोले-- भई, अब तो घूँघट उठा छो, जब दम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तर-साती दो !

जब दुलहिन ने अब भी घपूँघट न खोला तो खोजी जरा और आगे खिसक गये--- जानमन, इस वक़्त शर्म को भून खाओ, क्यो तरसाती हो, अरे, अब कब छग तर-साये रखियो जी ! कब लग तरसाये रखियो जी | ह

दो-तीन मिनट तक खोजी ने गा-गा कर रिश्नाया मगर जब थों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूँघट की तरफ द्वाथ बदाया । एकाएक दुलरूद्दिन ने उनका हाथ पकड़ लिया । अब आप छाख ज़ोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता । तब आप. खदशामद को बातें करने लगे | छोड़ दो भाई, भला किसी ग़रीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें कण मिलेगा। और यह तो ठुम जानती हो कि मैं तुमसे ज़ोर न करूँगा | फिर क्यों दिक्क करती हो, मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, मगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे |

यह कह कर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और थोपी उतार कर उसके कदमों पर रख दी | उनकी हरकत पर दुलहिन को हँसी आ गयी ।

खोजी--वह हँसी आयी, नाक पर आयी, बस अब मार लिया है, अब इसी बात पर गले छग जाओ |

दुरूद्दिन ने हाथ फैला दिये | खोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने ज्ोर से दबाया कि आप चील पड़े । छोड़ दो, छोड़ दो, चोट आ जायगी | मगर अब की दुलह्विन ने उन्हें उठा कर दे मारा और छाती पर खबार हो गयी । मिर्यों खोजझी अपनी बदन-सीबी पर रोने छगे । इनको रोते देख कर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिला अपनी जवॉमरदी दिखाये, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा, मार डाढेगी, और क्या । आपने कपड़े उतारे और पैंतरा बदल कर बोले--सुनो जी, हम शाहज़ादे हैं। तलवार के धनी, बात के घूर, नाक पर मकखीं बैठ जाय तो तलवार से नाक उड़ा दें, समझी १ अब तक मैं दिक्लनी करता या | तम औरत, मैं मर्द, अगर अब की तुमने श्रा भी गुस्ताखी की तो आग हो बाऊँगा। ले अब घूँघट उठा दो, बरना खेरियत नहीं है। यह कहीं ऊँचा तो नहीं घुनती ! (तालियाँ बजा कर) अजी घुनती हो, बुर्का उठाओ।

ख्वाजा साइब बका किये, मर्गर वहाँ कुछ असर न हुआ | तब आप बिगड़ गये और फिर पैंतरे बदलने छगे । अब की दुलद्दिन ने उन्हें बगल में दबा लिया; अन्न आप तड़प रहे हैं; दाँत पीसते हैं, मगर गरदन नहीं छूटती। तब आपने झछला कर दाँत काट खाया। काटना था कि उसने जोर से एक थप्पड़ दिया । खोजा साहब का मुँह फिर गया। तब आप कोसने लछगे--खुदा करे तेरे हाथ टूटें। हाय, अगर इस वक़्त खदा एक मिनट के लिए जोर दे-दे तो सुर्मा बना डादँ। .पिस बछारिसा और मीडा एक झरोले से यह कैफ़ियत देख रही थीं, जब ुखोजी पिट-पिय कर बाहर निकले तो क्लारिसा मे कहा--मुबारक हो |

आजाइ--कहिए, दुलद्विन केसी हे ! यार, हो खुशनसीद !

खोजी--खुदा करे, आप भी ऐसे खुशनसीब हों ।

आजाद--इमने तो बड़ी तारीफ सुनी थी, मगर तुम कुछ रंजीदा मालूम होते हो, इसका क्या सबब ;

खोजी--भाईजान, वहाँ तो फ़ोज्दारी हो गयी । औरत क्या, देवनी है, वल्लाह, कचूमर निकल गया |

आज़ाद- आप तो हैं पागल, यद्द इस मुल्क का रिवाज है कि पहले दिन दो घंटे तक दुलहिन मियाँ को मारती है, काट खाती है, फिर प्रियाँ बाहर आता है, फिरजाता है |

खोजी-- अजी, वहाँ तो मार-पीट तक हो गयी, जी में तो आया था कि उठा कर दे मार; मगर औरत के मुँह कोन ठगे | देखें, अब की केसी गुजरती है, या तो वद्दी नहीं या हमी नहीं ।

आज़ाद-- क्या सच-मुच फ़ोज़दारी दी पर आमादा हो ! भाई, करौली अपने साथ न ले जाना, और जो हो सो हो ।

खोजौ--अजी, यहाँ हाथ कया कम हैं | करौली मर्द के लिए है, औरत के लिए करौली की क्या ज़रूरत !

आज़ाद--बस, अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो | ह्वाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खश होती हैं। अब देर होती है, जाशए ।

ख्वाजा साहब कमरे में गये और दुलद्विन के पाँव दबाने लगे |

दुलहिन--हमको छोड़ कर चले तो न जाओगे ।

खोजी -- अरे, यह तो उदूं बोल छेती हैं, यद्द क्या माजरा है |

दुलदिन--मिर्यों, कुछ न पूछो । हमको एक हब्शी बहका कर बेचने के लिए लिये जाता था । बारे खुदा-खुदा करके यह दिन नसीब हुआ |

खोजी--अब तक तुम इमसे साफ़साफ़ न बोलीं! ख्वाहमख्वाह किसी भले आदमी को दिक्क करने से फ़ायदा :

दुलहिन--पतुम्दारे साथी आज़ाद ने हमें जैसा सिखाया वेसा हमने किया ।

खोजी--अच्छा आज़ाद | ठददर जाओ बचा, जाते कहाँ हो। देखो तो कैसा बदला लेता हूँ ।

यह कह कर खोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के क्दमों पर रख दी और बोले--- नीबी, बस अब यह समझो कि मिर्यों नहीं, खिदमतगार है | मगर कब तक ! जब तक हमारी हो कर रहो | उधर आपने तेवर बदके,

इधर हम बिगड़ खड़े हुए । मुझसे बढ़ कर मुरब्बतदार कोई नहाँ, मगर मुझसे बढ़ कर शरीर भी कोई नहीं; अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुराम हो गया, और अगर किसी ने हेकड़ी उतायी तो मुशसे ज़्यादा पाजी कोई नहीं | डंडे से बात करता हूँ। देखने में दुबला हूँ, मगर आज तक किसी ने मुझे केर नहीं किया। सैकड़ों पहरझावानों से रूशा, और हमेशा कुश्तियाँ निकालीं ।

दुलहिन---म्हारे पहऊवाम होने में शक नहीं, यह तो डील-डौरकू ही से जाहिर है।

खोजी-- इसी बात पर अब घूँषठ हटा दो ।

दुलहिन--यह घुँघट नहीं है जी, कल से हमारी मूँछ में दर्द है ।

खोजी--कादे में दर्द है, स्या कड़ा !

दुलहिन--ऐ, सूँछ तो कहा, कानों की ठेठियाँ निकाल ।

खोजी--मूँछ क्या | बकती क्या हो ! औरत हो या मर्द ! सदा जाने, तुम मूँछ फिसको कहती हो ।

दुलदिन--(खोजी की मूँछ पकड़ कर) इसे कहते हैं, यह मूँछ नहीं है !

खोजी--अच्छाह जानता है, बड़ी दिव्लगीबाज़ हो, में मी सोचता था कि क्या कहती हैं ।

दुलहिन--अल्लाह जानता है, मेरी मूँछों में दर्द है।

इ्वाजा साइब ने ग़ोर करके देखा तो ज़राज़रा सी मूँछें। पूछा--आखिर बताओ तो जानमन, यह मूँछ क्या है *

दुलहिन-देखता नहीं, आँखें फूट गयी हैं क्या !

खोजी--ऐ. तो बीबी, आखिर यह मूँछ कैसी ! कद्दता तो कहता, सुनता सिद्डी हो जाता है । औरत द्वो या मर्द ! ख़दा जाने, तुम मूँछ किसे कहती हो !

दुलदिन--वो तुम इतनां धबराते क्यों हो ! मैं मरदानी औरत हूँ ।

खोजी--भला औरत और मूँछ से कया वास्ता !

दुलद्विन--ऐ, है; तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखी कहाँ!

खोजी--ऐसी औरतों से बाज्ष आये ।

एकाएक दुलहिन ने घूँघट उठा दिया तो खोजी की ज्ञान निकल गयी | देखा तो वही बहुरूपिया | बोले--जी चाहता है कि करौली मोंक दूँ, क्रसम ख़दा की, इस वक़त यही जी चाहता है |

बहुरूपिया--पहले उस पारसल के रुपये छाइए जिसका लिफ़ाफ़ा आपने अपने नाम लिस्वा लिया था। बस, अब दायें हाथ से रुपये लाहए |

खंजी--ओ गीदी, बस अछग द्वी रहना, तुम अभी भेरे गुस्से से वाक़िफ़ नहीं हो |

बहुरुपिया---धब्र वाक्रिफ़ हूँ । कमजोर, मार खाने की निशानी ।

खोजौ- इम कमज़ोर ईं ! अभी चाहूँ तो गरदन तोड़ हे रख द्यूँ। आ कर द्ोटल-वाढों से तो पूछो कि किस ज्वॉमरदी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठाके दे मारा।

बहुरूविया-- अच्छा, अब 3ल्हारी क़ज़्ा आयी है। ख्वाहमज्वाह दाय-पाँव के दुश्मन हुए की ।

खोजी--सच कहता हूँ, अभी तुमने मेरा ग़त्सा नहीं देखा, मगर इम-तुम पर देशी हैं, हमको-तुमको मिल-जुछ कर रहना चाहिए। तुम न जाने केसे हिंदोस्तानी हो कि ह्िंदोस्तानी का साथ नहीं देते ।

बहुरूपिया--पारसल का रुपया दाइने हाथ से दिल्वाइए तो खेर |

खोजी--अजी, तुम भी केसी बातें करते हो; 'हिसाबे दोस्ताँ दर दिल अगर हम बेवफ़ा समझे |? पारसल का ब्िक्र केसा, बज्ाज़ की दृकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ़ से कुछ पूज आये ये | कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे |

हतने में आज़ाद दोनों लेडियों के साथ अंदर आये |

आजाद--भाई, शादी मुबारक हो। यार, आज हमारी दावत करो |

खोजी--जहर खिलाओ और दाबत माँगो। यह बो हमने आपको लाखों खतरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला। अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापस बायँगे। वहाँ के लोग क्रद्दों हैं, दो-चार शेर भी कह लेंगे तो खाने भर को बहुत है। खैर, आदमो कुछ लो कर सीखता है। इम भी खो कर सीखे, अब दुनिया भें किसी का भरोसा नहीं रहा ।

क्लारिसा--यह मिठाइयाँ न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी ओर को देना, हम बे-दावत लिये न रहेँगे ।

खोजी--हाँ साहब, आपको क्या। खुदा करे, जैसी बीदी हमने पायी, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा ओर क्या दुआ दूँ।

मीडा--दमने तो बहुत सोच-समझ कर तुम्दारी शादी तजवीज की थी |

खोजी---अजी, रहने भी दो। दमें आप छोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आज़ाद ने बड़ी दग़ा दी। हिंदोस्तान से इतनी दूर आये। जब मौक़ा पड़ा, इनके लिए जान लड़ा दी | पोर्लेंड की शाहब्ादी के यहाँ हमीं काम आये, वरना पड़े-पढ़े सटष्ट जात | इन सत्र बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर क्षकमे चलने लगे । अब्र चाहे जो हो, हम आजाद की घूरत न देखेंगे ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०२

चौथी के दिन रात को नवाब साहब ने सुरैया बेगम को छेड़ने के लिए कई बार फ़ीरोज़ा बेगस की तारीफ़ की । सुरैया बेगम बिगड़ने लगीं और बोलीं -- अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न जाने किन छोगों में रदे हो कि ऐसी बातें जबान से निकलती हैं।

नवाब--तुम नाहक़ बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ़ उनके हुस्न की तारीफ़ करता हूँ ।

सुरैया--ऐ, तो कोई द्ूंदढ़के वैसी ही की होती ।

नवाब--तुम्दारे यहाँ कभी-कमी आया-जाया करती हैं !

सुरैया--मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही डच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज .ही से ये बाते शुरू हो गयों । हाँ, सच है, धर की मुर्सी साग बरानर | खेर, अब तो मैं आ कर फेस ही गयी, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी | हाँ, अब तुम्हारी मुहब्बत अलबत्ता जाती रही |

गवाब--तुम इतनी समझटार हो कर छुरा-सी बात पर हतना रूठ गयीं। भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ़ करता, मुझे कोई पागल समझा है ! मतलब यह था कि दो घड़ी की दिछगी हो, मगर तुम कुछ और ही समझी । खूब याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्दारी जिंदगी है, किसी और औरत को बुरी नज़र से न देखँगा । आगे देखँ तो शरीफ़ नहीं |

सुरैया--वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नजरों ते देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीबी के सिवा परायी बहू-बेटी पर नज़र डाले ।

नवाब--बस, यही हमारी भी राय है और जो छोग दस-दस शादियाँ करते हैं उनको मैं अहमकक समझता हूँ ।

मुरैया--देखना इन बातों को भूल न जाना |

मुबइ को दुलहिल के मेके से महरी आगी और अर्ज की कि आज साली ने दुल्हा और दुलद्दिन को बुलाया है, पहला चाछा है।

बेगम--(नवाब साहब की माँ) तुम्दारे यहाँ बह लड़की तो बड़े ही ग़ज़ब की है, फ्रीरोड़ा, किसी से दबती ही नहीं |

महरी--हुलूर, अपना-अपना मिज़ाज है।

बैगम--अरे, कुछ तो शर्म-हया का ख़याछ हो। बेचारी फ़ेषन को बात बात पर बनाती थी | वह छाख गँवारों की सी बातें करे, फिर इससे क्या, थो अपने यहाँ आये उसकी खातिर करनी चादिए, न कि ऐसा बनाये कि बह कभी फिर आने का नाम ही न छे |

खुरशेद--(नवाब कौ बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मादूम होता था कि (दबे दाँतों) नेक नहीं,

आगे ख़ुदा बाने ।

बेगग--यह न कहो बेटा, अमी तुमने देखा क्या है ।

नवाब--(इशारा करके) उनकी मदरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो ।

बेगम साहब ने सुरेया बेगम को उसी वक़्त रखसत किया । शाम को दूल्द्वा भी बला । मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ़ करनी शुरू की--

बधरअली--हुजुर, इस वक़्त ईरान के शाइज़ादे मादम द्वोते हैं ।

न्रखाँ--इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शाहज़ादा मसनद छगाये बैठा है ।

बबरअली--हुजूर, आज ज़रा चौक की तरफ़ से चलिएगा। ल्लज्जरा इधर-उधर कमरों से तारीफ़ की अवाज़ तो निकले |

नवाब--क्या फ़ायदा, जिसके बीबी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए ।

नूरखाँ---ऐ. हुजूर, यद तो रियासत का तमग़ा ही है।

ईंदू--ऐ हुजूर, यह तो ग़रीब आदमियों के लिए हे कि एक से ज़्यादा न हो, दूसरी बीज्री को क्या खिलायेगा, खाक | मगर अपीरों का तो यह जौहर है। बाद-शाहों के आठउ-आठ नौ-नौ सो से ज़्यादा महरू होते थे, एक-दो की कौन कहे ; जिसे खदा देता है वही इस क्राबिल समझा जाता है |

इन छागों ने नवाब साहब को ऐसा चंग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गये मगर नवाब साहब ने गरदन जो नीची की तो चोक भर में किसी कमरे की तरफ़ देखा द्वी नहों । इस पर मुसाहबरों ने हाशिये चढदाये--ऐः हुजूर, एक नजर तो देख ढीजिए, केसा कटाव हो रहा है। सारी खदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान दुजूर के चेहरे-मोहरे को नहीं पाता | बस, यही मादूम होता है कि शेर कछार से चला आता है |

नवाब साहब दिल में सोचते जाते थे कि इन खशामदियों से बचना मुश्किल है। इनके फंदे में फँसे ओर दाखिल जहन्नुम हुए। इमने ठान लो है कि अब किसी ओरत को बुरी निगाह से न देखेंगे । यों हँसी-दिछगी की और बात है ।

नवात्र साहब ससुराल में पहुँचे, तो बाहर दीवानखाने में बैठे । नाच शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफ़ों की तारीफ़ के पुल बाँध दिये--जनाब, ऐसी गानेवाली अब दुसरी शहर में नहीं है, अगर शाही जमाना होता तो लाखों रुपये पैदा कर लेती और अब भी हमारे दुजूर के से बोहर-शिनास बहुत हैं, मगर फिर भी कम हैं । क्यों हुजूर, होली गाने को कहूँ !

नवाब--जो जी चाहे, ग़ाये ।

मुसाइब--हुजूर फ़रमाते हैं, यह थो गायँगी, अपना रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा ।

नवाब--हमने यह नहीं कहा, तुम छोग हमें जछील करा दोगे ।

मुसाहब--क्या मजा हुज्र, हुजूर का नमक खाते हैं, हम ग़लामों से यह उम्मीद बाहे सिर जाता रदे, मगर नमक का पास ज़रूर रदेगा, और यद्द तो हुजूर, दो घड़ी ईंसने-बोलने का वक़्त ही है ।

ग़नीमत जान इस मिल बैठने को, छुदाई की घड़ी सिर पर खड़ी है। इसके बाद नथात्र साहब अंदर गये ओर खाना खाया। साली ने एक भारी खिलअत बहनोई को और एक क्लीमती जोड़ा बहन को दिया। पूसरे दिन दुर्ग्रा-दुलहिन रुखसत हो कर घर गये ।

जहाज़ पर ख़ोजी की तान

मल्लाह की चेतावनी सुनकर ख़ोजी को सबसे पहले शिताबजान की याद आई।



०१ मल्लाह ने तूफ़ान की ख़बर दी। ख़ोजी की दुहाई छूट गई। उन्होंने शिताबजान को पुकारा कि उनके लिए दुआ माँगे।



०२ आँधी आई तो ख़ोजी ने अफ़ीम की डिबिया कसकर कमर से बाँध ली। अब तूफ़ान आ जाए, उन्हें क्या ग़म!



०३ जहाज़वालों को फ़िक्र थी कि तूफ़ान क्या गुल खिलाएगा। उधर ख़ोजी शिताबजान की याद में तान लगा रहे थे।



०४ ठाकुर साहब ने समझा, ये तो कोई बड़े वली हैं। अपनी टोपी उनके क़दमों पर रखकर अपने लिए दुआ माँगी।

आज़ाद-कथा, पंक्तियाँ २६७०–२६७०६। प्रसंग का संक्षिप्त रूपांतर।

HINDI TEXT

प्रसंग १०३

कुछ दिन तक तो म्रियाँ आज़ाद मिस में इस तरह रहे जैसे और मुसाफ़िर रहते हैं, मगर जब कांसल फो इनके आने का हाल मादूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहाँ बुला कर ठहराया और बातें होने लगी |

कांसल--मुस्े आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहाँ आये और हमसे न मिले । ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाक़िफ़ न हो, जो अखबार आता है उसमें आपका जिक्र जरूर होता है। वह आपके साथ मसखरा कौन है ! वह बोना खोजी !

आजाद ने मुसकिरा कर खोजी की तरफ इशारा किया !

खोजी--जनाब, वह मसखरे कोई और द्वोंगे और खोबी ख़ुदा जाने, किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजा साहब हैं और बौने की एक ही कद्दी | हाय, मं किससे कहूँ कि मेरा बदन चोर है !

आजाद---क्या अखबारों में ख्वाज़ा साहब का जिक्र हता है !

कांसल---जी हाँ, शनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुक्राम पर तो सचमुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था । आपका दौलतखाना किस शहर में है जनाब! मुझे ० यह है कि इतने नन्हे-नन्हे तो आपके हाथ-पाँव, छड़ाई में आप किस बिरते वर गये थे ।

खोन्नी-- (मुसकिरा कर) यही तो कहता हूँ हज़रत कि मेरा बदन चोर है, देखिए जरा हाथ मिलाइए | हैं फ़ौलाद की अँगुलियाँ या नहीं ! अगर अभी जोर करूँ तो आपकी एक-आध अँगुली तोड़ कर रख दूँ ।

थोड़ी देर तक वहाँ बातचीत करके आज़ाद चले तो खोजी ने कदा--यह आपकी अजीब आदत है कि रोरों के सामने मुझे छलील करने लगते हैं। अगर मुझे गास्सा आ जाता और मैं मिर्यों कांसल के हाथ-पाँव तोड़ देता तो बताओ केसी ठह रती | मैं मारे मुरब्बत के तरह देता जाता हूँ, वरना मिर्यों की सिद्दी-पिट्टो भूछ जाती |

आबाद--अजी, ऐसी मुरब्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियाँ खानी पड़ें। कई जगद आप पिटे, मगर मुरब्बत न छोड़ी | एक दिन इस मुरब्वत की बदौलत आप कहीं काँजी-होस न भेजे जाइए । अच्छा, अब यह पूछता हूँ कि जब सारे जमाने ने मेरा हाल सुना तो क्या दुस्नआरा ने न सुना द्वोगा !

खोजी-- जरूर सुना होगा भाई, अद आज के आठवें दिन शादी छो। मगर उस्ताद, दो-एक दिन बम्बई में ज़रूर रहना । ज़रा बेगम साहब से बातें होंगी ।

आजाद--भाई, अब तो बीच में ठहरने का जी नहीं चाहता ।

खोजी--यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफ़ाई करना मुनासिब नहीं, वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद--अच्छा तो यह सोच छो कि अगर उन्होंने पूछा कि खोजी के साथ कोई औरत क्यों नहीं आयी

तो क्या जवात्र दोगे ! हमारी तो सलाह है कि किसी को यहीं से फॉस ले चलो ! .... खोजो--नहीं जनाब, मुझे यहाँ की औरतें पसंद नहीं। हाँ, अपने वतन में हो

तो मुज़ायका नहीं।

आबाद--अच्छा कैसी औरत चाहते हो !

सत्रोजी--बस यही कि उम्र ज्यादा न हो । और शक़ल-सूरत अच्छी दो ।

आज्ञाद--ऐसी एक औरत तो हुस्नआरा के मकान के पास है। उसी दर्ज की बीबी है जो उनके मकान के सामने रहता है। रंगत तो साँवली है, मगर ऐसी नमकीन कि आपसे क्या कहूँ ओर अभी कमसिन । बहुत-बहुत तो कोई ४०-४२ की

होगी ।

खोजी--भला मीडा में और उसमें क्या फ़्के है !

आजाद--यह उससे दो-चार बरस कमसिन हैं, बस, और तो कोई फ़क् नहीं । हाँ, यह गोरी हैं और उसका रंग साँवला है |

छोजी--भर् नाम क्या है !

आजाद--नाम है शिताबजान ।

खोजी--तब तो भाई, दम द्वाजिर हैं | मगर पक्की-पोदी बात तो द्वो के पहले।

आज्ञाद---आपको इससे क्या वास्ता १ कुछ तो समझ के इमने कहा दे | हमारे पास उसका खत आया था कि अगर ख्वाजा साइब मंजूर करें तो में द्वाह्विर हूँ।

खोजी--तब तो माई, बनी-बनायी बात है, खुदा ने चाहा तो आज के आठवें दिन शिताबजान हमारी बराल में होंगी ।

आज्षाद--श्आम को कांसल से मिल कर चले चलो आज ही |

खोजी--कांसलछ | हमको शिताबजान की पढ़ी है, हमारे सामने खत छिखके भेज दो । मज़मून हम बतायेगे |

आजाद क्ल्म-दावात ले कर बेठे | खोजी ने खत लिखवाया और था कर उसे डाकखाने में छोड़ आये | तब मिस मीडा से जा कर बोले--अब इमारी खशामद कीजिए । आज के आठवें दिन हमारे यहाँ आपकी दावत इड्ोगी। अच्छे से अच्छे किस्म की ब्रांडी तय कर रखिएं । शितातबजान के द्वाय पिलवा ऊँगा ।

मीडा--शिताबजान कौन | क्या तुम्हारी बहन का नाम है!

खोली--अरे तोबा' | शिताबजान से मेरी शादी होनेवाली है। उसने मुझे भेजा भा कि रूम जा कर नाम करो तो फिर निकाह होगा । अब मैं वहाँ से नाम करके लौटा हूँ, पहुँचते-पहुँचते शादी होगी ।

मीडा--क्या सिन होगा ! बेवा तो नहीं है !

खोजी--खुदा न करे, दर्शी अभी जिन्दा है !

मीडा--क्या मिर्योंवाली है, और अप उसके साथ निकाह करेंगे ! सिन क्या है !

खोजी--अभी क्या तिन है, करू की छड़की है, कोई पतालीस बरस की हो शायद । मीडा--बस, पैतालीस ही बरस की ! तब तो उसे पालना पड़ेगा ! खोजी--हम तो क्रिस्मत के धनी हैं | मीडा--भला शक़्छ-सूरत कैसी है ! खोजी--यह आज़ाद से पूछो | चाँद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आजाद को दुआ एदेता हूँ जिनकी बदौढत शिताबज्ञान मिलीं । यहाँ से खोजी होटलवालों के पास . पहुँचे और उनसे भी वद्दी चर्चा की | अजी, बिलकुल साँचे की दली है, कोई देले तो बेहोश हो जाय । अब आज्जाद के सामने उसे थोड़ा ही आने एूँगा, हरगिज़ नहीं | खानसामा--तुमसे बातचीत भी हुई या दूर ही से देखा ! खोजी--जी हाँ, कई बार देख चुका हूँ। बातें क्या करती है, मिश्री की डली घोलती है ! होत्सवालीं ने खोजी को खूब बनाया। इतनी देर में आज़ाद ने जहाज का बंदोबस्त किया और एक रोब दोनों परियों और ख्वाजा साहब के साथ जहाज पर सवार हुए । सवार द्वोते ही सोनी ने गाना झुरू किया-- अरे मल्लाह छगा किप्ती मेरा महबूब जाता है, शिताबो की तमन्ना में मुझे दिल लेके आता है । म्रगर छोड़ा विदेशी होके ख्वाजा ने गये लड़ने, शिताबो के लिए जी मेरा कल से तिलमिलाता है | आज़ाद ने शह दे-दे ऋर और चंग पर चदाया । ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ़ करते थे, वह और अकढ़ते ये । जहान्न थोड़ी ही दूर चछा या कि एक मह्लाह ने कहा-- छोगो, होशियार | तृफ़ान आ रहा है। यह ख़बर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गये और मिर्यों खोजी तो दोह्दाई देने छगे--जद्दाज् की दोह्ाई | बेड़े की दोद्ाई ! समुद्र की दोहाई | हाय शिताबजान, अरे मेरी प्यारी शिताब, दुआ माँग । यह कद कर आपने अकड़ कर आजाद की तरफ़ देखा | आज़ाद ताड़ गये कि इस फ़िकरे की दाद चाहते हैं। कहा--सुभान-अल्छाह, शिताब जान के छिए शिताब, कया खूब । सख्ोजी--इस फ़न में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा मला | उस्ताद हूँ, उस्ताद । आज़ाद--और छतफ़ यह है कि ऐसे नाजुक वक़्त में भी नहीं चूकते । खोजी--या खुदा, मेरी सुन ले | यारो, रो-रो कर उसकी दरगाह से दुआ माँगो कि खवाजा बच जायें और शिताबजान से ब्याह हो | खूब रोओ | आज़ाद--जनाव, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ़ अपने लिए दुआ माँगते हैं, और बेचारों का भी तो खयारढू रलिए | इतने में आँधी आ गयी | आजाद तो जहाब के कप्तान के साथ बातें कर रदे ये | खोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताब्जान क्या करेगी! फ़ोरन अफ़ीम की डित्रिया ली और खूब कस कर कमर में बाँध कर बोले--छो यारो, हम तो तैयार हैं । अब चादे आँधी आये या बगूलछा । तूफ़ान नहीं, वूफ़ान का बाप आये तो क्या ग़म है ! जहाज़वाले तो घबराये हुए थे कि नहीं मालूम, तूफान क्या गुल खिलाये, मगर ख्वाजा साहब तान लगा रहे ये--- शिताबो की तमन्ना में मेश दिल तिलमिलाता है ।

आजाद- ख्वाजा साहब, आप तो बेवक़्त की शहनाई बाते हैं| पहले तो रोगे-बिलाये और अब तान लगाने लगे ।

एक ठाकुर साहब भी जहाज पर सवार थे। खोजी को गाते देख कर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं| क़दमों पर टोपी रख दी और बोले- साईं जी, हमारे हक में दुआ कीजिए ।

सोजी-- खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है ।

आज़ाद ने ख़ोजी के कान में कहा--यार, यह तो अच्छा उल्लू फंसा ! रास्ते में खूब दिल्लगी रहेगी |

ठाकुर साहब बार-बार ख़ोजी से सवाल करते ये और मिर्यों खोजी अनापशनाप बवाब देते ये |

ठाकुर--साई जी, छुमे के दिन सफ़र करना कैसा है !

सोजी-- बहुत अच्छा दिन है |

ठाकु--और जुमेरात ! .

खोजी-- उससे भी अच्छा |

आजाद--ठाकुर साहब, आप कब से सफ़र कर रहे हैं !

ठाकुर--जनाब, कोई चालीस बरस हुए ।

आज़ाद--चालीस बरस सफ़र करते हो गये ओर अभी तक आप अच्छे और बुरे दिन पूछते जाते हैं !

ठाकुर--सनीचर के दिन आप सफ़र करके देख लें।

स्रोजी--हमने इस बारे में बहुत ग़ौर किया है । बुरी साइत का सफ़र कभी पूरा नहीं होता ।

ठाकुर--साईं जी, कुछ और नसीहत कीजिए, जिससे मेरा भला हो ।

खोजी--अच्छा घुनो, पहली बात तो यह है कि जिस दिन चाहो, सफ़र करो, मगर पहर रात रहे से, तुम्हारी मंजिल दूनी हो जायगी। दूसरी नसीहत_ यह है कि एक बीबी से ज़्यादा के साथ शादी न करना, अगर वह मर जाय तो दुसरी शादी का खयाल भी दिलछ में न छानः। तीसरी बात यद्द है कि रात को दो घंटे तक ठंडे पानी में रह कर ख़ुदा की याद करना | गरमी, जाड़ा, बरसात तीनों मौसिमों में इसका खयाल रखना । चौथी नसीहत यह है कि अच्छे खाने और अच्छे कपड़े से परदेश रखना । खाने को जौ की रोटी और पीने को औटाया हुआ पानी काफ़ी है ।

स्ोजी ने यदद नसीहतें कुछ इस तरह कीं, गाया वह पहुँचे हुए फ़क्ीर हैं। ठाकुर ने अपनी नोटबुक पर ये सब बातें लिख लीं और बोला--साई थी, आपसे मुलाकात करना चाहूँ तो केसे करूँ !

खोजी--बस, छखनऊ में शिताबज्ान का मकान पूछते हुए चले आना ।

ठाकुर--शिताबजान कौन हैं !

खोजी--कोई हों, तुम्हें इससे मतलब !

यों ही ठाकुर साइब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बम्बई सामने से नजर भाने छगा । खोजी की बाँछें खिल गयीं, चिल्ला कर कहा--यारो, जरा देखना, शिताब-जान की सवारी तो नहीं आयी है। करीमतब्रर्श नामी मदरी साथ होगी। अतलूस का लहँगा है, कह्ारों की पगड़ियाँ रंगी हुई हैं, मछलियाँ जरूर लटक रही द्वोंगी। अरे मदहरी, महरी । क्या बहरी है !

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बंदरगाह तो आने दो। शिताबजान यहाँ से क्योंकर मुन लेंगी ! बोले---अजी, हटो भी, तुम क्या जानो । कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो ! अरे नादान, इश्क़ के कान दो कोस तक की खबर लाते हैं, क्या शिताबजान ने आवाज़ न सुनी होगी ! वाह, भला कोई बात है | मगर जवाब क्यों न रिया ! इसमें एक लिम है, वह यह कि अगर आवाज़ के साथ ही आवाज़ का जवाब दें तो हमारी नज़रों से गिर जायें। मज़ा जब हे कि हम बौखलाये हुए इधर-उधर हूँद़ते और आवाज़ देते हों और वद्द हमें पीछे से एक धौल जमायें और तिनक कर कहें--मुडीकाटा, आँखों का अंधा नाम नैनवुख, गुल

मचाता फिरता है, और हम धौल खा कर कहें कि देखिए सरकार, अब की धौल लगायी तो खेर, जो अब लगायी तो त्रिगड जायगी । इस पर वह झल्ला कर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातढ़ दो-चार और जमा दें, तब में ईस कर कहूँ, तो फिर दो-एक जूते भी छगा दो, इसके बगेर तबीयत बेचैन है |

आज़ाद--बिलफ़ेल कहिए तो मैं दी लगा दूँ।

खोजी--अज्ञी नहीं, आपको तकलीफ़ होगी |

आजाद--बवल्डाह, किस भकुए को जरा भी तकलीफ़ हो !

खोजी--मिरयाँ, पहले मुँह धो आओ, इन खोपडियों के सुहलाने के लिए परियों के हाथ चाहिए, तुम जैसे देवों के नहीं ।

इतने में समुद्र का किनारा नज़र आया, तो खोज्ञी ने गुल मचा कर कहां -- शिताबजान साइब, आपका यह गुलाम, फ़र्ज्दाना आदाब-अज़* * "।

इतना कह चुके थे कि छोगों ने क़द्क्द्दा लगाया और खोजी की समझ में दुःछ ने आया कि लोग क्यों हँस रहे हैं ।

आज़ाद से पूछा कि इस बेमौक़ा ईंसी का क्या सबब है ! आज़ाद ने कदहा-- इसका सबब है आपकी द्विमाक्रत। क्या आप दिताब के बेटे हैं थो उनको फ़र्जिंदाना आदाब बजा छाते हैं, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है [

खोजी--(गाछों पर थप्पड़ छगा कर) अरर, ग़ज़ब हो गया, बुरा हुआ। वल्छाह, इतना जुलील हुआ कि क्या कहूँ। भाई, इश्क में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुँह से निकल ही जाती हैं, मगर खेर | अब तो पालकी साफ़ साफ़ नजर आती है। वह देखिए, मदहरी सामने डटी खड़ी है। अख्खाह, अब तो मद्दरी मी बाद पर है !

जहाज ने लंगर डाला और उतरने छगे । ख्वाजा साहब दुर ही से शिताबजान को ढूँदने लगे । आजाद दोनों लेडियों को ले कर खुश्क्नी पर आये तो बम्बई के मिरज़ा साहब ने दौड़ कर उन्हें गले लगाया। फिर दोनों परियों को देख कर ताज्जुच से बोले-- इन दोनों को कहाँ से लाये, क्या परिश्तान की पररियाँ हैं ।

आज़ाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि खोजी कफ़न फाड़ कर बोल उठे-- इधर शिताबजान, इधर, ओ करमबख्श करमफोड़ कमबख्ती के निशान, यहाँ क्यों नहीं आती [| दुर दी से बुत्ते बताती है |

मिरज़ा--किसको पुकारते हो ख्वाजा साहब, मैं बुला लूँ। क्या ब्याह लाये हो कोई परी ! मगर उस्ताद, नाम तो हिंदुस्तान का है, ज़रा दिखा तो दो ।

आजाद ने खेर-आक़ियत पूछी और दोनों आदमियों में शाइज़ादा हुमायूँ फ़र की चरचा दोने लगी | फिर छड़ाई का जिक्र छिड़ गया ।

उधर ख्वाजा साहब ने अफ़ीम घोली और चुस्की लगा कर गुल मचाया-- शिताबजान प्यारी, मैं तेरे वारी, जल्द से आ री, सूरत दिखा री, आँसू है जारी । जानमन, जिस तिस्तर पर तुम सोयी थीं उसको हर रोज सूँघ लिया करता हैं और उसी की खशबू पर ज़िंदगी का दार मदार है ।

तेरी-सी न बू किसी में पायी; सारे फूलों को सूँषता हूँ।

मिर्जा साहब ने कदह्दा--आखिर यह माज़रा क्या है। जनाब ख्वाजा साहब, क्या सफ़र में अक़्ल मी खो आये, यह आपको क्या हो गया है ! अगर सच्चे आशिक हो तो फ़रियाद ढेसी !

खोजी-- जनाब, कहने और करने में अमीन-आसमान का फ़क है।

मिरजा---

कब अपने मैंद से आशिक शिकवए बेदाद करते हैं; दहाने रेर से वह मिस्ल ने फ़रियाद करते हैं।

खोली--मुशसे कद्दिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ़ दूँ , आशिक़ी दूसरी चीज है, शायरी दूसरी चीब |

मिरजञा--दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पे जायेंगे । आप दो ही चार शेर फ़रमाये।

खोजी--अच्छा तो युनिए और मिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे--- यही कह-कहके हिजरे यार में फ़रियाद करते हैं; वह भूले हमको बैठे हैं. जिन्हें हम याद करते हैं। असीराने कुहन पर ताज़ा वह बेदाद करते हैं, रही ताक़त न जब्र उड़ने की तब आजाद करते हैं। रक्रम करता हूँ. जिस दम काट तेरी तेग़ अन्न की; ग़रीबाँ चाक अपना ज्वामए फ़ौलाद करते हैं। सिफ़त होती है जानौं जिस ग़ज़ल में तेरे अब्र की; तो दम हर बैत पर आँखों से अपनी साद करते हैं। अब भी न कोई शरमाये तो अंधेर है, दो करोड शेर न पढ़ कर सुनाऊँ तो नाम बदल डाले । हाँ, और सुनिए--- नहीं हम याद से रहते हैं राफ़िल एकदम इमदम; जो बुत को भूल जाते हैं ख़ुदा को याद करते हैं। आजाद--इस वक़्त तो मिरज़ा साइच को आपने खूब आड़े द्वाथों लिया । खोजी--अजी, यहाँ कोई एक शेर पढ़े तो इम दस करोड़ शेर पढ़ते हें। जानते दो कहाँ के रहनेवाले हैं दम | बम्बईवालों को हम समझते क्या हैं । इतने में एक औरत मे खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बाँछे खिल गयीं । बोले--क्या हुक्म है हुजूर ! औरत--ऐ, दुर हुजूर के बच्चे | कुछ लाया भी वह्दौं से, या खाली हाथ झुलता चला आाता है (खोजी-- पहले तुम अपना नाम तो बताओ ; औरत--ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है; नाम बता दो । (धप जमा कर) और नाम पूछेगा ! खोजी--ऐ., तुमने तो धप लगानी शुरू की, जो कहीं अब की ह्वाथ उठाया तो बहुत ही बेदव होगी । आजाद--अरे यार, यद्द क्या माजरा है १ बेभाव की पड़ने लगी । खोजी-- अजी, मुहब्बत के यद्दी मज़े हैं भाईजान । तुम यह बातें क्या जानो । मिरजा--यह आपकी ब्याइता हैं या सिफ़ मुलाकात है ! शिताब--हमारे बुजुर्गों से यह रिश्ता चला आता है। मिरजा--तो यह कहाँ कि तुम इनकी बद्दन हो। खोजी -- जनाब, ज़रा सेभछ कर फ़रमाइएगा। में आपका बड़ा लिहाज करता हूँ। शिताब--ऐ., तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन !- मुफ्त में मियाँ बनने का शौक चर्राया है ! खोजी--अरे तो निकाह तो हो ले। कसम खदा की, छड़ाई के मैदान में भी दिल तुम्हारी दी तरफ़ रहता था।

आज्ाद--हमेशझा याद करते थे बेचारे !

जब आज़ाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गये तब मिरज़ा ने खोजी से कहां-- चलिए,, वह लोग जा रहे हैं ।

खोज्ी--जा रहे हैं तो जाने दीजिए | अब मुद्दत के बाद माश्क से मुलाकात हुई हे, जरा बातें कर दें । आप चलिए, में अभी द्वाजिर द्वोता हूँ।

वह लोग इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने खोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजा साहब खुश ये कि दिल््लगी में माशक्र हाथ आया | घर पहुँच कर शिताबजान ने खोजी से कहा---अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है ।

खोजी -भई वाह, में सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा दाल-तल्वार, बरडी-कटार के ओर क्या है ! या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता |

शिताब--कमाई करने गये थे वहाँ, या रास्ता नापने ! तमगे ले कर चाटूँ , तल-वार से अरनी गरदन मार ढूँ , छूरी मोंक के मर जाऊँ ! छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है !

खोजी--अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लछड्ढाई में मैंने जो बड़े-बड़े काम किये वह्द तो तुम सुन द्वी चुकी होगी | दस इजार सिपाहियों की नाक काट डाली । उधर दुश्पन की फोज ने शिकस्त पायी, इधर मैंने करौली उठायी और मैदान में खट से दाखिल । जिसको देखा कि बिलकुल ठंदा हो गया हे, उसकी नाक उड़ा दी | जत्र तक लड़ाई द्वोती रहती थी, बंदा छिपा बैठा रद्दता था; कभी पेड़ पर चद गया, कभी किसी झोपड़े में लक गया | मुफ़्त में जान देना कौन सी अक्लदी है। मगर लड़ाई खतम होते द्ी मैशान में जा पहुँचता था । जिस शहर में जाता था, शहर भर की औरतें मेरे पीछे पड जाती थीं, मगर में किसी की तरफ़ आँख उठा कर भी न देखता था | ग़रज कि लह्ाई में मैंने बड़ा नाम क्रिया, यह मेरी ही जूतियों का सटक़ा है कि आज़ाद पाशा बन बैठे । वह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम दे।

शिताव - मगर यह तो बताओ क्रि बंदूक से नाक क्योंकर काटी जाती है !

खोजी--तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं ।

इधर आज़ाद मिरज़ा साहब के घर पहुँचे तो बेगम साहब फूली न समायों । ख्िद-मतगार ने आज़ाद की झुक कर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जा कर बेठे । मिरज्ा साइब ने घर में जा कर देखा तो बेगम साहब पर्कग पर पड़ी थीं। महरी से पूछा तो माद्म हुआ, आज तब्रियत कुछ खराब है। बाइर आ कर आज़ाद से कहा--घर में सोती हैं और तत्रियत भी अच्छी नहीं । मेंने जगाना मुनासित्र न समझा । आज़ाट समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमे कुछ नाराज़ हैं |

इतने में एक चपरासी ने आ कर मिर्जा साइब को एक लिफ़ाफ़ा दिया। युनिवर्तिटी के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के छिए. उन्हें बुलाया था | मिरज़ा साहब बो हे--भाई , इस वक़्त तो जाने को जी नहीं चाइता । मुद्रत के बाद एक दोस्त आये हैं, उनकी खातिर-तताज़ा में लगा हुआ हूँ। मगर जबत्र आज़ाद ने कह्दा कि आप जाइए, शायद कोई जरूरी काम हो, तो मिरजा साहब ने गाड़ी तैयार करायो और रजिस्ट्रार से मिलने गये ।

इधर आज़ाद के पास जैनब ने आ कर सलाम किया |

आजाइ--कहो जैनत्र, अच्छी रहीं !

जैनब--हुजूर के जान-माल को दुआ देती हूँ। हुनर तो अच्छे रहे !

आजाद--बेगम साहब क्या अमी आराम ही में हैं! अगर इजाजत हो तो सलाम कर आऊं |

जैनब--हुजूर के लिए पूछने की जरूरत नहीं, चलिए ।

आजाद जैनब के साथ अंदर गये तो कपरे में क्रम रखते ही मदहरी ने कहां-- बहीं वेठिए, कुर्सो आती है |

आज़ाद--सरकार कहाँ हैं ! बेगम साहन की छिरमत में आदाब अज है।

बेगम--बंदगी । आपको जो कुछ कहना हो कहिए, मुझे ज़्याद। बातें करने की फ़रसत हीं ।

आजाद--खदा खेर करे, आखिर किस जुर्म में यद खफ़गी है ! कौन सा गुनाद हुआ

बेगम -बस ज्ञान न खुलवाइए, ग़ज़ब खदा का, एक खत तक भेजना कसम था, कोई इस तरद्द अपने अजीज़ों को तड़पाता है !

आजाद--कऋयर माफ़ कीजिए, बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंते सोचा कि खत भेज कर मुफ़्त में मुहब्बत बढ़ाने से क्या फ़ायदा, न जाने जिंदा आऊँयान आऊँ, इसलिए ऐसी फ़िक्र करू कि उनके दिल से भूल ही जाऊँ। अगर जिंदगी बाकी है तो चुटकियों में गुनाह माफ़ करा ढूँगा ।

इस फ़िक़रे ने बेगन साहब के दिल पर बड़ा अपर किया । सारा ग़स्सा हवा हो गया । जैनब को नीचे भेज्ञा कि हुक्क्ा भर लाओ, ख़ास को हुक्म रिया कि पान बनाओ । तब मैदान खाली पा कर चिक्र उठा दी और बोलीं--वह कहाँ गये हैं !

आज्ाद--किसी साइब ने बुलाया है, उनसे मिलने गये हैं । ख़दा ने मुझे यह खब मौका दिया ।

बेगम -क्या कद्दा, क्या कहा | ज़रा फिर तो कहिएगा, जरा सुदूँ तो किस चीज़ का मोक़ा मिला !

आजाद - यही हुजूर को सलाम करने का |

बेगम--हाँ, यों बातें कीजिए, अदब के साथ । हुस्नआरा के नाम तुमने कोई खत भेजा था ! मुझे लिखा है कि जिस रिन आयें, फ़ौरन तार से इत्तला देना ।

आम़ाद--अब तो यही धुन हे कि किसी तरह वहाँ पहुँचूँ और किंदगी के अरमान पूरे करूँ ।

बेगम--जी नहीं, पहले आपका इम्तहान होगा। आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या ! आजाद--ओपफोह | यह बदगुमानी | खेर साहब, अखितयार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं ! बेगम - नहीं साहब, यद हमारे यहाँ का दस्तूर नहीं । घबहनोई के साथ जवान सालियाँ सफ़र नहीं करतीं | वक़्त पर उनके साथ आ जाऊँगी। आज्ञाद--खेर, इतनी इनायत क्या कम है । अब्र आप जा फर परदे में बैठिए, मैं दीवाना हो जाऊँगा | बेगम- क्यों साहब, यही आपका इदक़ है! इसी बूते पर इम्तह्ान दीजिएगा ! बेगम साहब ने वहाँ ज़्यादा देर तक बैठना मुनासिब्र न समझा । आज़ाद .भी बाहर चले गये । खिदमतगार ने हुकक़ा भर दिया | पलेग पर लेठे-लेटे हुकक़ा पीने लगे तो खयाऊ आया कि आज मुझसे बड़ी ग़लती हुई, अगर मिरजा साहत मुझे घुरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कद्ठते | अत्र यहाँ ज़्यादा छद्दरना ग़लती दे | खुदा करे, आज के चौथे दिन वहाँ पहुँच जाऊँ। बेगम साहब ने मुझे हिक़ारत की निगाइ से «खा होगा । बह अभी यही सोच रहे थे कि जेनत्र ने बेगम साइबर का एक खत ला कर उन्हें दिया | लिखा था-- अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियाँ आयी हैं । दोनों कमसिन हैं और आप भी जबान। आग और फूस का साथ क्या ? अगर वाक़ई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है तो बड़ा

राजब किया, फिर उम्मेद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुँह छगायेंगी। तुमने खारी की-करायी मिहनत तक खाक में मिछा दी। और अगर शादी नहीं की तो यहाँ ऊाये क्यों ! तुम्हें शाम नहीं आती १ इदुस्नआरा गरीब तो ठुम्दारी मुहब्बत की आंग में जे और तुम सौतों को साथ लाओ--क्या क़ह है क्योंकर न उठे दर्द जिगर में, मेरी तो बग़छू खाली है और आपके बर में । एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पद्दर में, घर छोडके अपना रहो यों और के घर में । तुम और रौरों को साथ ढाओ, तुम्हारी तरद हुत्नआश भी अब तक शादी कर ढेतीं तो तुम क्या बना लेते ! तुमको इतना भी ख्याल न रद्दा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा | तुम्हारे हजारों चाहनेवाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे-अच्छे शादइड्षादे हैं। मेने ठान ली है कि दुस्नआरा को आपके द्वाल से इत्तला दूँ, और कद हैं कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दी बग़रू में रहती हैं, उस पर ऋ-बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेश इतमिनान नं कर दिया तो पछताओजने । यह खत प., कर आजाद ने जैनब से कदा--नंयों, तुंम' 'इकर की उधर छगा-लगा कर आपस £ लडबाती हूं) १ ठुमने उनसे जाके बचा कद दिया, भुशसे भी पूछ लिया दोता । ह

जैनब--ऐ: दुजूर, तो मेरा इसमें क्या कयूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान कर दिया | इसमें बंदी ने क्या गुनाह किया !

आजाद--खेर, जो हुआ सो हुआ, लाओ कलम-दावात।

आज़ाद ने उसी वक़्त इस खत का जवाब लिखा--बेगम साहब की खिदमत में आदाब-अज करता हूँ | आप मुझ पर बेवफ़ाई का इलज़ाम छाती हैं। आपको शायद यक्न न न आयेगा, मगर अक़सर मुक्कामों पर ऐसी-ऐसी परियाँ मुझ पर रीहझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क न होता तो में हिंदोस्तान में आने को नाम न लेता, मगर अफ़सतोस है कि मेरी कुछ मिहनत बेकार गयी। मेरा खदा जानता है, जिन जिन जंगलों, पहाड़ों पर में गया, कोई कम गया होगा। हफ़्तों एक अधेरी कोटरी में क्रेद रहा, जहाँ किसी जानदार की यूरत नज़र न आती थी। और यह सत्र इसलिए कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इन्कार करता था कि हुस्तनआश का क्या मुँह टिखाऊँगा। यह दोनों लेडियाँ जो मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझ पर बड़े-बड़े एड्सान किये हैं । गाढ़े वक़्त में काम आयी हैं, बरना आज आज़ाद यहाँ न द्वोता। मगर इतने पर मी आप नारज़ हो रही हैं, इसे अपनो 4९४तीमी के सिवा और क्या कहूँ । खूदा के लिए कहीं हुस्नआरा को ने लिख मेजना । और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूँ तो साफ़-साफ़ कह दो । हुस्नआरा को लिखने से क्या फ़ायदा । और क्या लिखूँ। तबीयत बेचेन है।

बेगम साइबर ने यह खत पढ़ा तो गुस्सा टंडा दो गया, छमठम करती हुई परदे के पास आ कर खड़ी हुई तो देखा--आज़ाद सिर पर द्वाथ रख कर रे रहे हैं | आहिस्ता से पुकारा - आज़ाद !

जैनब--हुज़्र, 7खिए कौन सामने खड़ा है ! ज़री उधर निगाह तो कीजिए |

बेगम - आजाद, जो रोये तो हमीं को है-है करे । जेनब, ज़रा सुराह्दी तो उठा ला, मुँदद पर छींटे दे ।

जैनव- हुजूर, क्या राजप कर रहे हैं, वह सामने कोन खड़ा है !

आजाद --(बेगम साइबर की तरफ़ रुख कर के) क्या हुक्म है !

बेगम--मेरा तो कलेजा धक-धक कर रहद्दा है !

आजादइ--कोई बात नहीं | खुदा जाने, इस वक़्त क्या याद आया। आपको तकलोफ़ द्वोती है, आप जायें, में बिलकुल अच्छा हूँ !

बेगम--अब चोंचले रहने दो, मुँह धो डालो | 'बाह, मद द्वो करआँधू बहाठ हो १ तुमसे तो छोकरियाँ अच्छी । यद्द तुम लड़ाई में क्या करते थे ?

आज्ञाइ--श्छाओ और उस पर ताने दो |

बेगल - क्या खब, जलाने को एक द्वी कही | जलाते तुम हू। या में १ एक छोड दो-दो वहाँ से लाये, ऊपर से बातें बनाते हो, मैंह दिखाने क़ामिल नहीं रखा अपने को | दुरतआरा ने उड़ती ख़बर पायी थी कि आक्षाद ने झिसी ओरद को ब्याह लिया तो पछाडें खाने लगीं। एक तुम द्वोकि शोढ़ी साथ लाये और ऊपर से कहते हो, जलाओ | तुम्हें शर्म मी नहीं आती १

आजाद--कक्या टेढी खीर है, न खाते बने, न छोड़ते बने ।

बेगम--तो फिर साफ़-साफ़ क्यों नहीं बता देते !

आजाद--ब्याइता बीबी हैं दोनों, और क्या कहें |

बेगम--अच्छा साहब, व्याहता बीबी नहीं, दोनों आपकी बहनें. सही, अब खुश हुए ! बरसों बाद आये तो एक काँटा साथ लेके । भला सोचो, मैं चुपकी हो रहूँ तो हुस्त आरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं | लेकिन दो में क्या फ़ायदा द्वोगा तुम्हें !

आजाद--आप दिल्लगी करती हैं और मैं चुप हूँ । फिर मेरी भी ज़नब्ान खुलेगी।

बेगम--तुम हमको छिफ़ इतना बतल्य दो कि यह दोनों यहाँ किस लिए आयी हैं, तो में चुप दी रहूँ ।

आजाद--तो उन दोनों को यहाँ बुला लाऊँ !

बेगम--उन को आने दो, उनसे सलाह लेके जवाब दूँगी।

आजाद--तो क्या आप हममें और उनमें कोई फ़क समझती हैं। में तो तमको और हुस्नआरा को एक नजर से देखता हूँ । ु

बेगम--बस, अब में कह बैढूँगी। बड़े बेशम हो, छटे हुए बेहया ।

इतने में जैतनब ने आ कर कहा--मिरजा साहब्न आ गये। बेगम साहब झपट कर कोठे पर हो रहीं और आज़ाद बारादरी में आ कर लेट रहे ।

मिरजा--आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं ! बड़ी देर ट्लो गयी है | जिस तरफ़ जाता हूँ, छोग गाड़ी रोक कर आपका हवाले पूछने छगते हैं। कल शाम को सब छोग आपसे टाउनद्वाल में मिलना चाहते हैं। हाँ, यह तो फ़रमाइए, यह दोनों परियाँ कौन हैं ? एक तो उनमें से क्रिसी और मुल्क की मादूम होती है ।

आज़ाद--एक तो रूस की हैं और दुधरी कोहक़ाफ़ की ।

मिरजा--या र, बुरा किया । द्ृस्नआरा सुनेंगी तो क्या कहेंगी !

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उघर शिताबजान ने खोजी से कहा -जरा अकेले में चलिए, आपसे कुछ

कहना है। खोज़ी ने कहा--खुदा की कुदरत है कि मादक तक हमसे अकेले में चलने को कहते हैं । जो हुक्म हो, बजा राऊँ। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अमी चछा जाऊँ। यह तो कहो, तुम्हारे सबब से चुप हूँ, नहीं अब तक दस-पाँच को क्छ कर चुका होता।

यह कह कर ख्वाजा साहब झपट कर बाहर निकले। इत्तिफ़ाक़ से एक गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हाँकता चला जाता था। खोजी ठसे गालियाँ देने छंगे--- भला बे गीदी, मला, खबरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं, हम कौन हैं ! हमारे मकान की तरफ़ से गाता हुआ निकलता है| हमें भी रिआया समझ लिया है | भला वी शिताबजान गाड़ी की घढ़घहाइट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा | गाहीवारला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है|

गाड़ी रोक कर खोजी की तरफ़ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजा साहत्र झषपट कर गांड़ी के पास पहुँचे, और चाहा कि खछकड़ी जमायें कि उसने इनके दोनों हाथ पकड़ लिये । अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता दी नहीं ।

खोजी--कद् दिया, खेर इसी में है क्रि इमारा हाथ छोड़ दो, वरना बहुत बछताओगे । में जो ब्रिगड्ूँगा तो एक पलछटन के मनाये भी न माँगा ।

गाड़ीवान--दहाथ तो अब तुम्दारे छुडाये नहीं छूट सकता ।

सतोजी- लाना तो मेरी करौली |

गाड़ीवान--लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा !

खोजी--शरीफ़ों में ऐसी बातें नहीं होतीं ।

गाड़ीवान--शरीफ़ कभी तुम्हारे नाप भी ये कि तुम्हीं शरीफ़ हुए !

खोजी--अच्छा, हाथ छोड़ दो। वरना इतनी क़रौलियाँ भोंकूंगा कि उम्र भर याद करोगे |

गाड़ीवान ने इस पर झल्ला कर खोजी का हाथ भरोडना शुरू किया। खो की जान पर चने आयी, मगर क्या करें । सबसे ज़्यादा ख्याल इस बात का था कि कहीं शिताब्रजान न देख लें, नहीं तो ब्रिलकुल नजरों से गिर जाऊँ।

खोजी--कहता हूँ, हाथ छोष्ठ दे, में कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हैँ ।

गाड़ीवान--मैं तो अपना गाता हुआ चला जाता था। आपने गारियाँ क्यों दीं !

खोजी-- हमारे घर की तरफ़ से क्यों गादे जाते ये १

गाठीवान--आप मना करनेवाले कोन ! क्या किसी की जब्ान बंद कर दीबिएगा १

बारे कई आदमियों ने गाड़ीवान को समझा कर खोजी का हाथ छुडाया । खोजी झाड़-पोंठ कर अंदर गये और शितात्रजान से बोले--मैं ब्रात पीछे करता हूँ, करौली पहले भोंकता हूँ | पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़ कर इतनी चपते लगायीं कि भुरता द्वी बना दिया | मेरे मुँह में आग बरसती है | अच्छा, अब यह फ़रमाइए कि किस नेकबरूत बदनसीनर से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहाँ हे और केसा आदमी यथा !

शिताबजान--यह तो मैं पीछे बतलाऊँगी। पहले यह फ़रमाइए कि उसको नेकबख्त कद्दा तो बदनसीत्र क्यों कहा ! जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है!

खोजी--क़क्वम खदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौडने के क्ाब्िल हैं। ने क-बखत इसलिए कहा कि तुम जैसी ब्रीबी पायी । 4दइनसीब इसलिए कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया |

शिताबत्रज्ान--अच्छा युनिए, पहले मेरी शादी एक खब्रधूरत जवाम के साथ हुई थी। जिसकी नज़र उस पर पड़ी, रीशष गया ।

खोजी- यहाँ मी तो वही हार है | घर से निकलना मुश्किल है ।

शिताबजान--हाजिर-जवाब ऐसा था किबात की बात में राज़ले कह डालता था।

खोजी--यह बात मुझमें भी है | दस हजार शेर एक मिनट में कद्द दूँ , एक कम न एक उथादा !

शिताबजान--मैं यह कब कद्दती हूँ कि तुम उससे किसी बात में कम दो | अब्बल तो जवान गभरू, अभी मर्से भींगती हैं। आदमी क्या, शेर मादूम दोते हो । फिर सिपाही आदमी द्वो, उस पर शायर भी हो | बस जरा झलले हो, इतनी खराती है |

खोजी--अगर मेरा हुब्म मानतों हो तो मोम हो जाऊँगा। हाँ, लछड़ोगी तो हमारा मिजाज बेशक झल्ला है |

शिताबज्ञान--मिर्यों, में लोंड़ी बनके रहूँगी। मुझसे लड़ाई-झगड़े से वाघ्ता ! मगर यह बताओ कि रहोगे कहाँ ! मैं बम्बई में रहूँगी। तुम्दारे साथ मारी-मारी न फिरूँगी ।

खोजी--तुम जहाँ रहोगी, वही में रहूँगा; मगर. . .

शिताबजान--अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती | एक तो तुमको अफ्रीम न खाने दूँगी | तुमने अफ़ीम खायो और मैंने किसी बद्दाने से ज़दर खिला दिया ।

खोजी--अच्छा न खायेंगे । कुछ ज़रूरी है कि अफीम खाये ही । न खायी, पी ली, चलो छुट्टी हुई ।

शिताब्जान--पीने भी न दूँगी। दूसरी शर्त यद्द है कि नौकरी छुरूर करो, बरेर नोकरी के गुज़ारा नहीं । तीसरी शत यह है कि मेरे दोस्त ओर रिबतेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे ।

खोजी--वाह, कहीं आने न दूँ। इन बदमाशों को फःटकने न दूँगा ।

शिताबजान--अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह द्ोगा ।

दुसरे दिन खोजी शितात्रजान के साथ उसके घर चक्े । बम्बई से कई स्टेशन के बाद शिताबज्ञान गाडी से उतर पड़ीं और खोजी से कद्दा -अब आपके पास जितने रुपयेै-से हों, चुपके से निकाल कर रख दो | मेरे घरवाले त्रिना नज़राना लिये शादी न करेगे |

खोजी ने देखा कि यहाँ बुरे फँसे । अन्न अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपये नहीं हैं तो देटी होती है। उन्होंने समझ! था कि शादी का दो घड़ी मज्जाक़ रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमृच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए | बोले -मैं तो दिल्लगी करता या जी | शादी केसो और ब्याह केसा ! कुछ ऊपर साठ बरस

का तो मेरा सिन है, अत्र भला में शादी क्या करूंगा | तुम अभो जवान द्वो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जायेंगे । ह

शिताबबान--तुमको इससे मतलब क्या | इसकी मुझे फ़िक्र होनी चाहिए, | जन मेरा तुम पर दिल आया ओर तुम भी निकाद करने पर राजी हुए तो अब इनकार झरना क्या माने । अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे ।

मिर्यों खोजी घत्राये, सिद्टी-पिट्टी भूल गयी। अपनी अक़्छ पर बहुत पछताये और उसी वक़्त आब्राद के नाम यह खत लिखा--मेरे बड़े भाई साइब, सलाम | मेरी भाँख से अब ग़फ़ल्त का परदा उठ गया | में कुछ ऊपर साठ बरस का हूँगा । इस सिन में निकाह का ख्याल सरासर गेरमुनासित्र है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरद आशिक हो गयी हैं। उसका सबत्र यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है असी तरह मेरी सूरत मी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि इड्डियोँ तक गरू गयी हैं, मगर आप खूब जानते हैं कि इन्हीं दृड्डियों के बल पर मैंने मिख के नामी पहल-बान को, लड़ा दिया और बुआ जाफ़रान जैसी देवनी की छातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता | उठी तरह मेरी झूरत में भी यह बात है कि जो देखता है, आशिक हो जाता है। में खद सोचता हूँ कि यह क्या बात है, मगर कुछ समझ में नहीं आता | खैर, अब आपसे यद्द अज्ञे है कि खत देखते मेरी मदद के लिए दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होंगी तो लोग हँसेंगे कि आजाद तो दो-दो साथ लाये और ख़्राजा साइब मोची के मोदी रहे । लेकिन यह क्या माला था कि यह शादी मेरे लिये कदर होगा! ब्रा शर्ते तो मुनिए--अफ़ीम छोड़ दो और नौकरी कर छो। अब बताइए कि अफ़ीम छोड़ दूँ. तो जिंदा केपे रहूँ ! अन्न रद्दी नौकरी । यहाँ छड़कपन से फ़िकरंबानों की सोहबत में रहे ! गप्पे उड़ाना, बातें बनाना, अफ़ीस की चुस्क्री लगाना हमारा काम है । भल्ठा हमप्ते नौकरी क्या हंगी, और करना भी चाहें तो क्लिसक्री नौकरी करे | सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहाँ तो आदमों पतन साल का हुआ और निकाला गया, और यहाँ पच पन और दस पंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं लऊि किसी नवाबजाद के सोहबत में रहें और उसको ऐा पक्का रईस बना दें कि वह भी याद करे । चंह्ढ का क्रवाम इमसे बनवा के, अफ्रीम ऐसी पिलारये कि उप्र मर थाः करे, रहा यह कि हम जगा ख्व लिखें, यह इमसे न होगा, जिसका अयना काम सारत कराना हो वह हमें नौकर रखे | इसलिए अगर मेरा गण यहाँ से छुड़ा दो तो बड़ा एड्सान हो। खुदा जाने, तुम छोग मुझे क्यों खाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, 2 तरफ़ से लड़ा-भिड़ा, वक़्त-बेत्रक्त काम आया और अब उुम मुझे ज़पह किये

द्टी।

यह खत लिख कर शिताबजान को दिया हि आजाद के पास जल्द पहुँचा दो । शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है ।

शिताबजान--सलाह की क्या ज़रूरत है भला !

खोजी--शझादी ब्याह कोई ख़ाला जी ५८। घर नहीं है, जरा आदमी को इस बारे में ऊँच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिफ़ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्ते मंजूर

करूँ या नहीं । शिताबजान---अच्छां ज्ञाओ, मैं कोई शत नहीं करती । खोजी--अब मंजूर, दिल से मंजूर,

मगर यद्द खत तो भेज दो । अब सुनिए कि शिताबजान के साथ एक खाँ साहब भी ये । मालबे के रहनेवा के।

उन्होंने खोजी को दो दिन में इतनी अफ़ीम पिछा दी जितनी वह चार दिन में भा न पीते । सफ़र में सेहत भी बुछ बिगड़ गयी थी। दो ही दिन में चुर-मुरं दो गये । लेटे-लेटे खाँ साइब से बोले--जनाब, दुसरा इतनी अफ़ीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई भेरा मुक़ाबिछा कर सके, और इस शहर पर क्या मोकूफ़ है, जहाँ कहिए, मक्राबिछे के लिए तैयार हूँ, कोई तोले भर पिये तो मैं सेर भर पी जाऊँ।

खाँ साइब- मगर उस्ताद, आज कुछ अंजर-पंजर दीले नज़र आते हैं, शायद अफ़ीम ज़्यादा द्वो गयी ।

खोजी--वाह, ऐसा कहीं कद्दिएगा मी नहीं | जब जी चाहे, साथ बैठ कर पी लोजिए ।

शाम तक खोजी की द्वाल्त और भी खरात्र हो गयी। शिताबजान ने उन्हें दिक करना शुरू किया । ऐ. आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा !

खोजी--सोने दो, सोने दो ।

शिताब--भला खेर, दम तो समझे थे, खबर आ गयी ।

खाँ--कहदती किससे हो, वह पहुँचे ख़दागंज ।

शिताब--ऐ, फिर पीनक आ गयी, अभी तो जिंदा हो गया था ।

खाँ - (कान के पास जा कर) ख्वाजा साहब !

लोजी--जरा सोने दो भाई ।

शिताब--मेरे यहाँ पीनकवालों का काम नहीं है ।

खाँ--ज्वाजा साहब, अरे ख्वाजा साहब, ऐ बोलते ही नहीं | चल बसे |

ख्वाजा साइत्र की हालत जन्न बहुत ख़राब दो गयी, तो एक हक़ीम साइब बुलाये गये । उन्होंने कद्दा--जदर का असर है । नुस्खा लिखा | बारे कुछ रात बाते-जाते नशा हूरा | खोजी की आँखें खुलीं।

शितातबर-- मैं तो समझी थी, तुम चल बसे ।

खोजी--ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है ।

शिताब--मर मुड़ीकाटे, अभी जवान बना है |

खोजी--बस जब्ान सँमाली, हम समझ गये कि तुम कोई भठियारी द्ो। में अगर अपने हालात बयान करूँ तो आँखें खुल जायें। हम अमीर-कब्बीर के लड़के हैं। छलड़कपन में शमारे दस्वाजे आए द्वाथी बँधता था, तुम जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूँ। कक

यह कटद् कर आप मारे ग़स्से के घर से निकल खड़े हुए, समझते थे कि शिताब-जान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसे रहा जायगा, जरूर मुझे तराश करने आयेगी, लेकिन जब बहुत देर गुजर गयी और, शिताबजान ने खबर न ली तो भाप लोटे! देखा तो शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोछा, मगर शिताबजान वहाँ कहाँ ! उसी महल्ले में एक हबशिन रहती थी। खोजी ने जा कर उससे अपना सारा क्रिस्सा कहा, तो वह हँस कर बोली--तुम भी कितने अध्मक हो । शिताबजान भला कोन है

! तुमको मिरज़ा साहब और आजओब़ाद ने

चकमा दिया है । खोजी को आज़ाद की वेवफ़ाई का बहुत मछाल हुआ। जिसके साथ इतने

दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिदुस्तान में लाके उन्हें छोड़ दिया। खुब रोये, तब दृनशिन से बातें करने लगे---

खोजी--क्रिस्मत कहाँ से हमें कहाँ लायी !

हबशिन--आपका घोंसला किस झाड़ी में है !

खोजो--दम खोजिस्तान के रहनेवाले हैं ।

हबशिन--यह किस जगह का नाम लिया ! खोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता ।

स|जी--तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई है ! खोजिस्तान एक सूत्रा है. शकरब्द ओर जिलेबत्िस्तान के करीब | बताशा नदी उसे सैराब करता है |

हजशिन--भल्ण शकरक़ंद भी कोई देस है ?

खोजी--है क्यों नहीं, समरकंद का छोटा भाई है ।

दबशिन--वहाँ आप किस मुहलले में रहते थे १

खोजी--ह लवा पुर में ।

हबशिन--तब तो आप बड़े मीठे आदमी हैं |

म्रोजी-- मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीटी नजर के आशिक़ टैं--ख्वाहिश न कंढ की है, न तालिब शकर के हैं;

चल्के पड़े हुए तेरी मीठी नज़्र केहें।

हबशिन-- तो आप भी मेरे आशिक़ों में हैं !

सोजी--आशिक़ कोई और होंगे, हम माशूक़ों के माश़ाक हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहाँ गया, माशूक़ों के मारे नाक में दम है| गया। बुआ जाफ़रान नामों एक औरत हम पर इतनी रीक्षी कि पट्ट पकड़ के दे जूता दे जूता मारकर उड़ा दिया | मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ़ तक न की ।

हतशिन--हमको यक्रीन क्योंकर आये १ हम तो जब्र जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार ल्गायें, फिर देखें, केसे नहीं उफ़ करते ।

खोजी--हाँ, हम हाजिर हैं, मगर आज अभी अफ़ीमयों द्वी सी पी है। जब नझा जमे तब अलबत्ता आजमा लो ।

हबशिन--ऐ. है, फिर निगोड़ी अफ़ीम का नाम लिया, मरते-मरते बचे ओर अब तक अफ्रीम द्वी अफ्रीम कहते जाते हो !

खोजी--तुम इसके मज़े क्या जानो । अफ़ीम खाना फ़क़ीरी है। ग़रूर को दो यह खाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगद्द पिटा, कभी जूतियाँ खायीं, कभी कोई काजीहोस के गया, मगर इमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गयी तो खोजी साहब ने एक डोली मँगवायी और उसमें बेठ कर चंड्रखाने पहुँचे । लोगों ने इन्हें देखा तो चकराये कि यह नया पंछी कौन फँसा |

खोजी--सलाम आहछेकुम भाश्यो |!

इमामी--आलेकुम भाई, आलेकुम । कहाँ से आना हुआ !

खोजी-- ज़रा टिकने दो, फिर कहूँ | दो बरस छड़ाई पर रहा, जब देखो मोरचा-बंदी, मर मिद्य, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मछाहूर दो गया ।

इमामी--लड़ई केसी ! आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है ।

खोजी--तुम घर में बैठे बेंठे दुनिया का क्या हाल जानो |

क्रादिर--क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते द्वो क्या !

खोजी--खैर, इतना तो सुना ।

इमामी--अजी, यह न कह्दिए, इनको सारी दुनिया का दाल मादूम रहता है |

कोई बात इनसे छिपी थोड़ी है । क्रादिर-रूमवाले ने रूस के बाइशादह से कहा कि जिम तरह तुम्हारा यचा

हकीमी कोड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तक़रार हुईं, तो रूमवाले ने कहा, अच्छा, अपने चचा की क्रब्र में चली और पूछ देखो, क्या आवाज़ आती है। बस जनाब, चुनने की बात है कि रूमवाले ने न माना । रूम के बादशाह के पास इज्जरत सुलेमान की अँगूडी थी। उन्होंने जो उसे दवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन्न हाजिर हो गये । बाइशाह ने कद्दा कि रूस में चारों तरफ़ आग छगा दो । चारों तरफ़ आग छग गयी। तत्र रूस के बादशाह ने वजीरों को जमा करके कह्दा; आग बुझाओ, बस सवा करोड़ मिश्ती मशके भर भरके दौड़े | एक-एक मशक में दोदो लाख मन पानी आता था ।

खोजी--क्पों साइब, यह आपसे किसने कह्दा है !

इमामी--अजी, यह न पूछो, इनसे फ़रिइते सब कह जाते हैं ।

क्रादिर--ज्स साहब, सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशके मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आगबदती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया

कि दो करोड़ लाख भिक्ती काम करें और मशक्कों में छब्बीस-छत्बीस करोड मन पानी हू ।

खोजी--ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है |

शुबराती--मर्याँ, सुनने दो भाई, अजब आदमी हो |

खोजी--अजी, में तो छुनत-सुनते पागल द्वो गया |

क्रादिर--आप लबच्ननऊ के मही न आदमी, उन मुढ्कों का हाल क्या जानें | रूम, रूस, तूरान, अनूपशहर का हाल इमसे सुनिए ।

इमामी --वहाँ के छोग मी देव होते हैं देव |

क्रादिर--रूस के बादशाह की खुतक का दाढ़ सुनो तो चकरा जाओ । , सबेरे मुँद अँपेरे ६ बकरों की

यखती, चार बकरों के कवाब, दस मुर्रा को पोछार और दस मुरैले तरकीब से खाते हैं, और ९ बजे के वक़्त सौ मुर्गों का शोरबा और दस सेर ठंडा पानी, बारह बजे जवाहिरात का शरत्रत, कभी पचास मन, कभी साठ मन, चार बजे दो कच्चे बकरे, दो कचे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गये गोइत का एक छकड़ा ।

इमामी--जब तो ताक़तें होती हैं कि सौ-सो आदपियों को एक आदमी मार डालता है। हिंदोस्तान का आदमी क्या खा कर लड़ेगा |

शुबराती--हिंदोस्तान में अगर हाज़मे की ताकत कुछ है तो चंड्ू के सबब से, नहीं तो सभ्य के सब मर जाते |

इमामी--सुना, रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं ।

क्रादिर-- हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डाछेगा।

खोज़्ाी--आप रूस कभी गये भी हैं !

कादिर--अजी हम घर बैठे सारी दुनिया की सै? कर रहे हैं ।

खोज़्ाी--हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, वहाँ एक द्वायी भी न देखा ।

का दिर--रूमवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस, ग्यारह महीने, ग्यारह दिन, ग्यारह घंटे जला की। अब जाके जरी-जरी आग बुझी है, नहीं तो अजब नक्शा था कि सारा मुल्क जल रहा है और पानी का छिड़काव दो रहा है | रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है ।

खोजी--अरे यारो, इस इठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

क्रादिर--आपकी तो सूरत ही कद्दे देती है कि आप रूम ज़रूर गये होंगे | ख़ुदा झूठ न बुलवाये तो घर के बाहर क़दम नहीं रखा ।

खोजी सप्श्े थे कि चंड्ूछाने में चल कर अपने सफ़र का हाल बयान करेंगे और सबको बंद कर देंगे, चंडूखाने में इनकी वूती बोलने छगरेगी, मगर यहाँ जो आये तो देखा कि उनके भी चचा मोजूद हैं। झल्ला कर पूछा, बतलाओ तो रूम के पायतरझूत का क्या नाम है !

क्रादिर--वाह, इसमें क्या रख। है, मला-सा नाम तो है, हाँ म्जबान ।

खोजी--ड्स नाम का तो वहाँ कोई शहर ही नहीं ।

क्रादिर--अजी, तुम क्या जानो । मजैबान बह शहर है जहाँ पहाड़ों पर परियाँ रहती हैं। वहाँ पहाड़ों पर ब[इल पानी पी-पी कर जाते हैं और सत्रको पानी पिलाते हैं।

खोजी--तो वह कोई दूसरा रूम होगा । जिस रूम से मैं आता हूँ वह और है।

क्!दिर--अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है !

खोजी--सुलतान अब्दुलहमीद खाँ ।

कादिर--बस बस, रहने दीजिए आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आब्रे हैं । भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए !

खोजी--पिलौना की लड़ाई में तु हार गये और रूतियों ने फतह पायी ।

कादिर- क्या बकता है बेहूदा। खबरदार जो ऐसा कहा द्ोगा तो इतने जुते ढगाऊँगा कि भुरकस ही निकरू जायगा ।

इमामी--हमारे बादशाह के हक़ में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का। ' ज्चा, यहाँ ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

खोजी--सुनो जी, हम फ़ोजी आदमी हैं ।

क़ादिर--अब् ज़्यादा बोलोगे तो उठ कर कचूमर द्वी निकाल दूँगा।

शुबराती--यह हैं कहाँ के, ज़रा सूरत तो देखो, मालूम होता है, कब्र से निकल भागा है।

खोजी को सबने मिल कर ऐसा डपटा कि बेचारे क़रौडी और तमंचा भूछ गये | गये तो बड़े जोम में थे कि चंद्डखाने में खब डॉग हाँकिंगे, मगर वहाँ लेने के देने पड़ गये | चुपके से चंड्ू के छीटे उड़ाये और हूम्बे हुए | रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुत से आदमी एक जगह खड़े है। आपने घुस कर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफ़ों के पुल बाँध रहे हैं। खोजी ने समझा कि हमने भी तो मिल के पहलवान को पटका था, हम कया किसी से कम हैं ! इस जोम में आपने पहलवान को ललकारा--भाई पहलवान, इम इस वक़्त इतने खश हैं कि फूले नहीं समाते। मुदृत के बाद आज अपना जोड़ुदार पाया ।

पहलवान-- तुम कहाँ के पहलवान दो भाई साहन !

खोजी--यार, क्या बतायें। अपने साथियों में कोई रद्दा द्वी नहों | अब तो कोई पहलवान जैंचता द्वी नहीं ।

पहलवान--उस्ताद, कुछ इमकोी भी बताओ |

खोजी--अजी, दम खुद उस्ताद हो ।

पहलवान--आप किसके शागिद हैं !

खोजी--शागिर्ट तो भाई, किसी के नहीं हुए। मगर हाँ, अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया । हिंदोस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया । ठ्म आजकल कहाँ रहते हो !

पहलवान--आजकल एक नवाब साहब के यहाँ हैं। तीन रुपया रोज़ देते हैं। एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बँधा है। नवाब अमत्रदअछी नाम है |

खोजी--भला वहाँ चंड्ू की भी चर्चा रहती है !

पदल्वान-- कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन-रात ।

खोजी--भला वहाँ मस्तियाबेग भी हैं !

पच्लवान--जी हाँ हैं, आप केसे जान गये १

सती ज्वी--अजी, वह कौन सा नवात्र है जिसकी हमने मुसाहत्री न की हो । नवातर अमनंदअली के यहाँ बरसों रद्दा हूँ | बटेरों का अब भी शौक़ हे या नहीं !

पहलवान--अजी, अभी तक सफ़शिकन का मातम ह।ता हे ।

खोजी- तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है!

पहलवान--मैं तो आज दी जा रहा हूँ ।

खोजी--तो भाई, हमको मी खरूर लेते चलो । हम अपना किराया दे देंगे |

पहलवान--तो चलिए, मेरा इसमें दरज ही क्या है। हमको नवाब साहब ने सिफफ़े दो दिन की छुट्टी दी थी । कल यहाँ दाण्िल हुए, आज दंगल में कुइती निकाली और शाम को रेल पर चल देंगे। हमारे साथ मस्तियाबेग भी हैं ।

शाम को पहलवान के साथ खोजी स्टेशन पर आये। पहलवान ने कहा--वह देखिए मिरजा साहब खड़े हैं, जा कर मिल लीजिए । ख्वाज़ा आहिस्ता-आहिस्ता गये और पीछे से मिरज़ा साहब की आखें बंद कर लीं ।

मिर्जा --कोन है भाई, कोई मुसम्मात हैँ क्या ! हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान--भला बूझ जाइए तो जानें ।

पिरजा--कुछ समझ में नहीं आता, मगर हैं कोई मुसम्मात |

खोजी -- भला गीदी, भला, अभी से भूल गया, क्यों !

मिरज्ा--अख्खाह, ख्याजा साहब है | कहो भाई खोजी, अच्छे तो रहे !

खोजी--खोजी कहीं और रहते होंगे । अब दमें ख्याना साहब कहा करो |

मिरक्षा-- भरे कमबत्रस्तत, गले तो मिलले |

खोजी--सरकार केपे हैं, घर में तो खेर-आफ़ियत है !

मिरज़ा--हाँ, सब खुदा का फ़जल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था, मगर अब अच्छी हैं । कह्दो, तुमने तो खूब नाम पैदा किया ।

खोजी -नाम, अरे हम मेजर थे ।

मिरजा--सरकार को इस लड़ाई के जमाने में अखबार से बड़ा झोक़ था। आज़ाद को तो सब्च जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब्र से पदा तबसे सरकार को अखबारों का एतबार जाता रहा । कहते थे कि समुद्र की यूरत देख कर इसका जिगर क्यों न फट गया । भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता ।

खोजी--अज्च इसका हाल तो उन छोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे | तुम मजे से बैंठे-बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किये, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर माई, नशों में नशा शरात्र का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कमर कस कर तैयार द्वो गये ।

पमिरजा--अब सरकार के सामने न कद्दना, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिये जाओगे ।

खोजी--अजी, अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते |

मिरजञा--एक बार तो अखबार में लिखा था कि खोजी ने शादी कर ली है।

खोजी--अरे यार, इसका द्वाल न पूछे, अपनों शक़्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जा कर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गये. करोड़ा औरतें हम पर आशिक हो गयीं। खास कर एक कमसिन नाजनीन ने तो

मुझे कहीं वा न रखा |

मिस्जञा--तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं ! क्या कहना है, तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किये ।

खोजी--भाईजान, मोरचे पर मेरी बद्दाहुओ देखते तो दंग हो जाते। खेर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तु अफ़सर भी आशिक थे | यह राय तय पायी कि जिससे वह परी राजी हो उससे निकाह करे। एक रोज सब्न बन-ठन कर आये, मगर उस शोख की नज़र आपके खादिम ही पर पड़ती थी ।

मिरजा--ऐ: क्यों नहीं, हजार जान से आशिक़ हो गयी होगी |

खोजी--आव देखा न ताव, अठलाती हुई आयी और मेरा दह्वाय अपने सीने पर रख लिया । अब्र छुनिए, उन सन्नों के दिल'में इसद की आग भष्ठकी, कहने लगे, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े । हमने कहा, खेर | तलवार खींच कर जो चला, तो वह-वह चोटें लगायों कि सब के सत्र बिलबिलाने लगे | बस परी हमको मिल गयी । अत्र दरबार के रंग ढंग बयान करो।

मिरज्ञा--सब्र तुम्हारी याद किया करते हैं | झम्मन ने वह चुग्रुल्खोरी पर कमर बाँधी है कि सैकड़ों !खदमतगार और कितने ही मुसाहत्रों को मौकूफ़ करा दिया |

स्वोजी--एक ही पाजी आदमी है | दम रूम गये, फ्रांस गये, सारी दुनिया के २ईस देख डाले, मगर नवाब सा भोला -भाला रईस कहीं न देखा। ग़ज़ब खुदा का कि एक बदमाश ने जो कद दिया, उसका यक़ीन हो गया, अब कोई छाख सम-झाये, वह किसी की छुनत ही नहीं ।

मिरज--मेरा तो अब वहाँ रहने को जी नहीं चाहता ।

सोजी--अजी, इस झगड़ें को चुल्हे में डालो। अब हम-तुम चछ कर रंग जमायेंगे | तुम मेरी ड्दा बॉधना और हम दोनों एक जान दो काबिल हो कर रहेंगे।

मिरजा--मैं कहूँगा, स्ुदावंद, अन्न यह सच्च मुसाइब्रों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुजूर का नाम किया | मगर ठुम जरा अपने को लिये रहना ।

खोज्ञी-- अनी, में तो ऐसा बनूँ कि लोग दंग हो जायें।

जब घंटी बजी और मुसाफ़िर चले तो खोजी भी पहलवान की तरह अकड़ कर चलने छगे | रेल के दा-चार मुलाजिमों ने उन पर आवाजे कसना शुरू किया |

एक-आदसमी क्या गैडा है, माशा-अल्लादह, क्या द्राथ-पाँव हैं !

दूश्वरा -- क्यों साइब, आप कितने दंढ पेल सकते हैं !

खोजी--अजी, बीमारी ने ताड़ दिया, नहीं एक पूरी रेल पर लद्के जाता था।

तीसस-- इसमें बया शक है, एक-एक रान दो-दो मन की है ।

खाजी- कसम खाके अजे करता हूँ कि अब आधा नहीं रहा | यद्द पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफ़ा है, और बाकी सत्र शागिदं हैं। सत्र मिहछाके हमारे चार्ढलस-बयाछीस हजार शागिद होंगे ।

एक मुसाफ़िर--दूर-दूर से छोग शागिद्ी करने आते होंगे !

खोजी--चुर-दूर से । अब आप मुलाद्विज्ञा फ़रमायें कि द्विंदुस्तान से ले कर रूस वक मेरे छासत्रों शागिद हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आयी, एक मेले में इमका टोक त्रैठा । टोकना था कि बंदा भी चट लैंगोट +सके सामने आ खड़ा हुआ | छाखों-दी आदमी जमा थे । उसका सामने आना ही था कि में उसी दम जुट गया, दाँव-पेंच होने छगे। उसके मिस्ती दाँव थे। हमारे हिंदुस्तानी दाँव थे। बस दम की दम में मैंने उठाके दे पटका ।

इतने में दूसरी घंटी हुई। खोजी ऐसे बीखछाये कि ज़नाने दर्ज में घैंस पड़े | वहाँ लेना-लेना का गुल मचा । भागे तो पहले दर्ज में घुस गये, वहाँ एक अँगरेज ने डॉट बतायी। बारे निकल कर तीसरे दर्ज में आये। थके-माँदे बहुत ये, सोये तो सारी रात कट गयी | आँख खुली तो छखनऊ आ गया । शाम के वक़्त नवाब सा ह्त्र के यहाँ दाखिल हुए ।

खोजी--आदाब अज़ है हुजूर ।

नवाब--अख्लाह, खोजी हैं | आओ भाई, आओ।

खोजी--हा जिर हूँ जुदावंद, खुदा का शुक्र है कि आपकी ज़ियारत हुई ।

ग़फ़्र--खोजी मियां, सलाम ।

खोजी--सलाम भाई, सलाम, मगर इमको खोजी मियाँ न कहना, अभ्र हम फ़ोज के अफ़सर हें ।

झम्पग- -ञआप बादशाह हों या वजीर, इमारे तो खोजी ही हो |

धोजी--हाँ भाई, यद्द तो है ही । हुजूर के नमक की कसम, मुढ्कों-मुरकों इस इरचार का नाम किया ।

नवाब---शाक्षश ! हमने अखबारों में तुम्दारी बड़ी-बढ़ी तारीफ़ें पदीं ।

'प्रोजी--हुज्र, गुलाम किस लायक़ है |

झम्मन--भला यार, तुम समुद्र में जहाज पर कैसे सवार हुए !

त्री->वाह, तुम जद्दाज की लिये फिरते हो। यहाँ मोरचों पर बड़े-बड़े भेजरों ओर जनरलों से भिड़-भिड्ठ पड़े हैं | हुज्र, परिलौना की लड़ाई में कोई दस छाख आदमी एक तरफ़ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ़ था, फिर यह मुलाहिशा! कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुक्ाबिक किया और सबके छक्के छुड़ा दिये |

झम्मत--श्तना झूठ, उधर दस लाख, इधर सत्तर | भला कोई बात है ।

खोजी--तुम क्या जानो, वहाँ होते तो होश उड़ जाते ।

नवाब--भाई, इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया । खबरदार, आज्ञ से इनक कोई खोज्ी न कहे | पाशा के लक़ब से पुकारे जायैं।

सोजी--आदाब हुजुर | झम्मन गीदी ने मुँह की खायी न आखिर । रईसों की सोहबत में एसे पाजियों का रहना मुनासिद्द नहीं *

मवात्र--क्यों साहब, हिंदोस्तान के बाइर भी हमको कोई जामता है ? सच-सच बतान। भाई !

' लोजी--हुजुर, जहाँ-जहाँ गछाम गया, हुजूर का नाम बादशाहों से ज़्यादा मश-

हर हो गया ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०४

आजाद बप्वई से चले तो सबपे पहले जीनत और अख्तर से मुलाक़ात करने की याद आयी । उस कस्बे में पहुँचे तोी एक जगह मियाँ खोजी की याद आ गयी | आप ही आप हँसने लगे | इत्तिफाक़ से एक गाड़ी पर कुछ सवारियाँ चली जाती थीं। उनमें से एक ने हँस कर कदहा--वाह रे मलेरानस, क्या दिमारा पर गरमी चढ़ गयी है क्या ? आजाद रंगीन मिज़ानज आदमी तो ये ही । आहिस्ता से बोले--जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नजर आयें तो आदमी के होश-हवास क्यों कर ठिकाने रहें । इस पर वह नाजनीन तिनक कर बोली --अरे, यह तो देखने हवी को दीवाना मादूम होते थे, अपने मतलब के बड़े पक्के निकले । क्यों मियाँ, यह क्या सूरत बनायी है आधा तीतर और अ!धा बटेर ! खदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख दो लाख में एक हो। अगर इस शक़्ल-सूरत पर जो ल्म्बे-लम्बे बाल हों, बालों में सोलह रुपये वाला तेल पड़ा हो, बारीक शरत्रती का अँगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डंड नज़र आयें, चुस्त घुटक्ना हो, पेरों में एक अशफ्रों का टाटबाफ़ी यूट हे, अँगरखे पर कामदानों की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसा-हबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में काबुकें और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अैंगुलियाँ उठ कि वह रईस जा रहा है | तब लोग कहें कि इस सज-धज, नख-छिख, कलले-ठल्ले का गरभरू जवान देखने में नहों आया | यह सब्र छोड़ पड़े कतरबाके लूंटूरे हो गये, ऐ. वाह री आपकी अक़ल |

आजाद--जर मैं तो जानूँ कि किसकी जान से यह बातें सुन रहा हूँ | इनसान हम भी हैं, फिर हनसान से क्या परदा !

नाबन न-- अच्छा, तो आप भी इनसान होने का दम भरते हैं। मेद की भी चली मदारों को ।

आजाद - खैर साहब, इनसान न सही ।

नाज़नीन--(परदा हटा कर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आँखें हुईं, अब फलेजे में ठंडक पहुँची !

आडाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सुरत तो कहीं देखो है और अब खयाल आता है कि आवाड़ भी कहीं तुनी है। मगर इस वक़्त याद नहीं आता कि कहाँ देखा था |

नाजनीन- पहचाना ! भक्ता आग क्यों पहचानने लगे | झुतबा पा कर कौन किसे पहचानता है ! ु

आजाद - इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है, पर यह खयाल नहीं कि

कहाँ देखा दे |

नाजनीन---अच्छा, एक पता देते हैं, अब मी न समझो तो सदा तुमसे समझे | याद है, किसने यह राजछ गायी थी (--- कोई मुश सा दीवाना पैदा न होगा, हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा | न देखा हो जिसने कहे उसके आगे, हमें लन्तरानी सुनाना न दोगा। आजाद--अब् समक्ष गया | जहूरन, वहाँ की

खेर-आफ़ियत बयान करो । उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिए बम्बई से चला आ रहा हैं । जहूरन--सबव खदा का फ़जल है | दोनों बहनें आराम से हैं, अख्तर के प्रियाँ तो उनका जेवर खा-पी कर भाग गये, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। ब्रोनत बेगम खरा हैं। आजाद--तो अब दम उनके मेरे जायें या सधुराल ! जहरन--ससुराल न जाइए, मेक्रे में चलिए और वहाँ से किसी महरी के जबानी बैग़ाम भेजिए । हमने तो दुजूर को देखते दी पहचान लिया । आक्षाद--हमको इन दोनों बदनों का द्वाल बहुत दिनों से नहीं माद्म डुआ । अभट्रन--यदह तो दहुजूर, आप द्वी का कपूर है; कभी आपने एक पुरक्षा तक न भेजा । जिस दिन बल्लीनत बेगम के मियाँने उनसे कहां कि छो, आज़ाद वापस भाते हैं तो मारे खुशी के खिल उठों। तो अब आना हो तो आइए, शाम होती है | थोड़ी देर में आजाद जीनत बेगम के मकान पर ज्ञा पहुँचे। जहूरन ने जा कर उनकी चाची से आजाद के आने की इतला की। उसने आजाद को फ़ोरन बुला लिया । आज़ाइ--बंदगी अजे करता हूँ । आप तो इतने ही दिनों में बूदी दो गयों | चाची--बेटा, अब इमारे जवानी के दिन थोड़े दी हैं। तुम तो खैर-आफ़ियत के साथ आये १ ओंखें तुम्दें देखने को तरस गयों । आज़ाइ--जी दा, मैं स्वेरियत से आ गया दोनों साहबज़ादियों को बुल्वाइए | सुना, जीनत की भी शादी द्वो गयी दे । चाची--हाँ, अब तो दोनों बहने आराम से हैं। अखतरी का पहला मिर्यों तो बिलकुछ नालायक़ निकछा । जेवर, गदना-पाता, सब बेव कर खा गया और ख़दा जाने, किघर निकल गया। अब्र दूसरी शादी हुई है । डाक्टर हैं। साठ तनस्वाह और ऊपर से कोई चार रुपया रोज़ मिलता है। जीनत के मिर्यों स्कूल में पढ़ाते हैं | दो सौ की तब्ब है । तुम्दारे चाचाजान तो मुझे छोड़ कर चल दिये । इधर मदरी ने जा कर दोनों बदनों को आजाद के अ'ने की ख़बर दी। जीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मेरे की त-फ़ चली। घर के अंदर कदम रखते ही आज़ाद से हाथ मिला कर बोली--वादह रे बेयुरव्वतों के बादशाह ! क्यों ताहत्र, जब से गये, एक पुरजञा तक भेजने को कसम खत ली ! रे

आखाद--यबह तो न फहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे दरवाज़े पर आया । यह तो फ़रमाइए कि यह पोशाक कन्न से अख्तियार की १

जीनवत--जब से शादी हुई। उन्हें भंगरेजी पोशाक बहुत पसंद है ।

आज़ाद--ज़ीनत, खूदा ग़वाइ है कि इस वक़्त जामे में फूला नहीं समाता । एक तो तुमको देखा और दूसरे यह ख़शखबरी सुनी कि तुम्दारे मियां पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियाँ-बीबी में मुहब्बत न हो तो शिंदगी का लुत्फ ही क्या |

इतने में अख्तरी भी आ गयी और आते द्वी कहा--मुबारक !

आखाद--आपको बड़ी तकलीफ़ हुई, मुआफ़ करना ।

अख्तर--मैंने तो सुना था कि तुमने वद्ाँ किसी साईसिन से शादी कर ली ।

आजाद---और तुम्हें इसका यक्कीन भी आ गया !

अख्तर--यक्रीन क्यों न आता। मर्दों के लिए यह कोई नयी बात थोडी ही है। जब छोग एक छोड, चार-चार शादियाँ करते हैं तो यक्कीन क्यों न आता |

आज़ाद--वह पाजी है जो एक के सिवा दूसरी का खयाल मी दिल में लाथे।

जीनत--ऐसे मियाँ-बीबी का क्या कहना, मगर यहाँ तो .वही पाजी नज़र आते हैं जो बीनची के होते भी उसकी परवा नहीं करते ।

आजाद- अगर बीबी समझदार दो तो मि्याँ कमी उसके क़ाबू से बाहर न हो |

अख्तर--यह तो हम मान चुके । खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाशठ्म शोहदे मियोँ से पड़े ।

जीनत--जिसके मिजाज में पाजीपन हो उससे बीब्री की कभी न पटेगी | मियोँ सुबह से जायें तो रात के एक बजे 4र 9ें आयें और वह भी किसी रोज़ आगे, फिसी रोज़्न न आये । बीबी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज़ तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीबी को मार बेठे ।

आजाद--यह तो धुनिया जुलाहों की बातें हैं ।

जीनत--नहीं जनाब, जो लोग शरीफ़ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की रूमी नहीं है ।

अख्तर--ऐ, चूल्दे में जायें ऐसे «दे, जभी तो बेचारियोँ कुएँ में कूद पढ़ती हैं, जहर खाके सो रहती हैं ।

शीनत--मुझे खब याद है कि एक औसत अपने ंपियों को ज़रा सी बात पर हाथ फेला-फैला कोस रही थी कि कोर दुश्मन को भी न कोसेगा

आजाद--नहाँ ऐसे मर्द हैं वहाँ एसी ओरतें भी हैं।

अख्तर--पेसी बीबी का सेंद लेके झुलस <।

जीनत--मेरे तो बदन के रोये खड़े हो गये ।

आजाद--मेरी तो समझ्ष ही में नहीं आता कि ऐसे प्रियाँ और बोनी में मेल-जोल कैसे दो जाता है ।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी | ब्ीनत और अख्तर ने हिंदोस्ानी औरतों की तरफ़्दारी की और आश्ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज्ाद-जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहाँ की औरतों को कहाँ नसीब | धूप में अगर मियाँ-बीबी साथ चलते हों तो मरियाँ छतरी छगायेगा |

अखरूतर- यहाँ भी महाज्ननों को देखो | औरतें दस-दस हज़ार का जेवर पहन ऋर निकलती हैं और मियाँ लैगोटा लगाये पुकान पर मक्खियाँ मारा करते हैं।

आनजाद-यहाँ की औरतों को तालीम से चिद है।

ज्ीनत--हसका इलज़ाम भी मर्दों ही की गरदन पर है। वह ख़द औरतों को पदाते डरते हैं कि कहीं ये उनकी बराबरी न करने लगे। ह

आज़ाद-- हमारे मकान के पास एक महाजन रहते थे । में छड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था । जैसे ही मियां बाहर से आता, बीबी चारपाई से उतर कर जमीन पर बैठ जाती । अगर वमसे कोई कहे कि मियाँ के सामने घूँधद करके जाओ तो मंजूर करो या नहीं !

अख्तर याह, यहाँ तो घर में क्ेद न रहा जाय, पूँधट कैसा ! |

आजाद--यूरोपियन लेडियों को घर के इंतज़ाम का जो सलीक़ा होता है, वह हमारी ओरतों को कहाँ !

जीनत- हिंदोध्तानी औरतों में जितनी बफ़ा द्वोती है वह यूरोपियन छेडियों में तलाश करने से भी न

मिलेगी | यहाँ एक के पीछे सती हो जाती हैं, वहाँ मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०५

वहाँ दो दिन और रद्द कर आजाद दोनों छेड़ियों के साथ छखनऊ पहुँचे और उन्हें होटल में छोड कर नवाब साइबर के महान पर आये | इधर वह गाड़ी से उतरे उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि ख मुहस्मर आज़ाद पाशा आ गये। नवात्र साहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े हुए तो देखा कि आज़ाद रप-रप करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं | नवाब साहब झपट कर उनके गले लिपट गये और बोले--भाईजान, आँखें तुम्हें दँदती थीं ।

आज़ाद--शुक्र है कि आपकी ज़ियारत नसीब हुई ।

नवाब--अजी, अब यहद्द बातें न करो, बड़े-बड़े अँगरेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं ।

मुसाहब--बड़ा नाम किया | वल्लाह, करोड़ों आदमी एक तरफ़ और हुजूर एक तरफ़ ।

खोजी--रालाम भी आदाच अजे करता है ।

आज़ाद--तुम यहाँ कब आ गये ख्वाजा साहब !

नवाब--छुना, आपने तीन-तीन करोड आदमियों से अकेले मुक़ाबिला किया |

ग़फ़र--अल्लछाहइ की देन है हुजूर !

नवाब--अरे भाई, गंगा-जमुनी हुक्का मर छाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैता न समझना 4 इनकी तार 0, कमिश्नर तक की जान से सुनी | सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुझ/क़ा ! हुई | भाई, तमने वह दरजा हासिल किया है कि हम अगर हुजूर कहें तो बजा है । कहाँ रूस के बादशाह और कहाँ हम !

खोजी-खुशवंद, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रद्द जाते। जैसे शेर कछार में टैकारता है ।

नवाब--क्यों भाई आजाद, इन्होंने वहाँ कोई कुश्ती निकाली थी १

आज़ाइ- मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाये गये और एक बीने तक ने इनक उठाके दे मारा ।

' भुसाइब-भाई, इस वक़्त तो मम्माड़ा फूट गया ।

आजाद--क्या .यह ग़प उद्राते थे कि मैंने कुश्तियाँ निकालीं !

मश्तियाबेग--ऐ. हुजूर, जब से आये हैं, नाक में दम कर दिया | बात हुई और करोली निकाली |

ग़फ़र- परसों तो कद्दत ये कि मिस में हमने आज़ाद के बराबर के पहलवान को दम मर में आसमान दिखा दिया ।

अ!.).4-- क्या खूब | एक बौने तक ने तो उठाके दे मारा, चले वहाँ से दून को छेने ।

इतर में नवाब साहब के यहाँ एक मुंशी साहब आये और आजाद को देख कर

बोले--वल्लाह, आजाद पाशा साहब हैं, आपने तो बढ़ा नाम पैदा किया, सुभान अछाह |

नवाब-- अजी, कमिश्नर साहब इनकौ तारीफ़ करते हैं। इससे ज्यादा इजत और क्या होगी।

खोजी--साहब, लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठद्दरता ही न था|

मुंशी--आपने भी बड़ा उाथ दिया ख्वाजा साहच, मगर आपकी बद्धादुरी का ज़िक्र कहीं सुनने में नहीं आया ।

खोजी-- आप ऐसे गीदियों को में क्या समझता हूँ, मेंने वह-बह काम किये हैं फि कोई क्या करेगा । क़रौली द्वाथ में ली और सफ़ों की सफ़ें साफ़ कर दीं |

मुंशी--आप तो नवाब साइन के यहाँ बने हैं न !

खोजी--बने होंगे आप, बनना केसा ! क्या में कोई चरकटा हूँ । कसम है देजूर के क्दमों की, सारी दुनिया छान डाडी, मगर आज तक ऐसा बदतमीज़ देखने में नहीं आया |

आजाद--जनातब ख्वाजा साहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को कहाँ नसीब हुईं | आप जिस जगह जाते थे वहाँ की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले ;शभा ज्ञाफ़रान आशिक्र हुईं |

चोजी-- तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है १ आप क्यों जलते हैं ?

नवातबर--भई आजाद, यह किस्सा ज़रूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रखा तो वल्लाह, मुझे ब५। रंज होगा । अब फ़रमाइए, आपको मेरा ज़्यादा ख्याल है या इस गीदी का !

सोजी-- हुजुर, मुझसे सुनिए | जिस रोज आज़ाद पाशा और हम पिलोना के क्रिले में थे, उस रोज़ की कारेवाई देखने के लायक्र'थी | किला पाँचों तरफ़ से घिरा हुआ था ।

मुसाहब--यहद्द पाँचवाँ कौन तरफ़ हे साहब ! यद नयी तरफ़ कहाँ से लाये ! जो बात कहोगे वद्दी अनोखी ।

खोजी--तुम दो गधे, किसी ने बात की और तुमने कार दी, यों नहीं वो, वों नहीं यों । एक तरफ़ दरिया था और खदकी भी थी ! अब हुई पाँच तरफ़े या नहीं मगर तुम ऐसे गौखों को हाल क्या मादूम | कभी लड़ाई पर गये हो १ कभी तोप की सूरत देखी है ! कभी धुआओँ तक तो देखा न होगा और चले हैं वहाँ से बड़े सिपाही बन कर ! तो बस जनाब, अब करें तो क्या करें । हाय-पाँव फूले हुए कि अब जायें तो किधर जायें और भागेंतो किघर भागे।

नवात्र--सचमुच वक़्त बढ़ा नाक था।

खोजी---और रूसियों की यह केफ़ियत कि गोके बरसा रहे थे। बस आजाद वाशा ने मुशसे कद्दा कि भाईजान, अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे | मेरे बदन में आग लग गयी । बोला, निकलना किसे कहते हैं जी | इतने में क्रिडे की दीवारें चलछनी हो गयी । जत्र मैंने देखा कि अब फ़ौज़ के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही, तो तल्यवार हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठ कर निकल पढ़ा और उसी वक़्त दो छाख रूसियों को काट कर रख दिया ।

मुसाहब---हइस झट पर ख़दा की मार ।

खोजी--अच्छा, आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने ।

नयाब--हज़रत, सच-सच कद्विएगा | बस फ़क्रत इतना बता दीजिए, यह बात कहाँ तक सच है !

आज़ाद--जनाब, पिलौना का जो कुछ हार बयान किया वह तो सब ठौक है, मगर दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज्ञ ग़प है। छुत्फ यह दे कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी । उन दिनों तो यद्द खास कुस्तुनतुनियाँ में थे ।

इस पर बड़े जोर का क़हक़द्दा पड़ा | बेगम साहच ने कहक़दे की आवाज़ सुनी तो महरी से कद्टा--जा देख, यद्द कैसी हँधी दो रही है ।

महरी-- हुजुर, वद्द आये हैं मियाँ आजाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही एसी हो रही है ।

बेगम--अख्खाह, आजाद आ गये, जाके खेर-आफ़ियत तो पूछ ! इमारी तरफ़ से न पूछना ! वहाँ कहीं ऐसी बात न करना ।

महरी--वाह हुजूर, कोई दीवानी हूँ कया १ सुनती हूँ उत्त मुल्क में बड़ा नाम किया । तुमने कभी तोप देखी है राफ़न !

ग़फ़ूरन--ऐ खुदा न करे हुजूर !

महरी--हमने तो तोप देखी है, बल्कि रोज़ ही देखती हूँ । बेग्म-- तोप देखी है | तुम्दारे मियाँ सवारों के साईस द्वोंगे। तोप नहीं वह देखी है । "

महरी--हुज्र, यह सामने तोप द्वी लगी है या कुछ और १

महल में रद्दीमन नाम की एक महरी और सत्नों से मोटी-ताज़ी थी। महरी ने जो उसकी तरफ़ इशारा किया तो बेगम साहब खिल-खिला कर इस पंड़ीं ।

रहदीमन--कक्या पड़ा पाया हे बहन ग़फ़न !

रफ़न--आज्ञ एक नयी बात देखने में आयी है बहन ।

रहीमन -- हमको भी दिखाओ | देखें कोई मिठाई है या खिलौना है !

ग्रफ़ूरन-- तोप की तोप और औरत की औरत ।

रहद्दीमन--(बात समझ कर) तुम्हीं लोगों ने तो मिल कर हमें नज़र छगा दी ।

बेगम--ऐ, आग छरो, अब ओर क्या मोटी होती, फूलके कुप्पा तो हो गयी हे ।

उधर खोड़ी ने देखा कि यार छोग रंग नहीं जमने देते तो मौक़ा पा कर आश्ाद के क्रदमों प्र टोपी रख दी ओर कद्दा--भाई आजाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे छिए जान तक देने को तैयार रहा हूँ । मेरी दो-दो बातें छुन छो ।

आजाद--मैं आपका मतलब समझ गया, मगर कहाँ तक जब्त करूँ १

खोजी-- इस दरबार में मेरे ज़लील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अखितियार है ।

आजाद--जनाब, आप मेरे बुजुग हैं, भला में आपको जलील करूँगा!

खोजी--हदाय अफ़सोस, तुम्हारे लिए. जान छड़ा दी और अब इस दरबार में, जहाँ रोटियों का सद्दारा है, आप दमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से मी जायें ।

आजक्जाद--मभई, माफ़ करना, अब तुम्हारी ही सी कहेंगे ।

खोजी--मुझे रंग तो बाँधने दो जरा ।

आजाद---आप रंग जमायें, मैं आपकी ताईद करूँगा ।

ख्वाजा साहब का चेहरा खिल गया कि अब राप के पुल बाँध दूँगा और जब आज़ाद मेरा कल्मा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना ।

नवातब--ख्वाजा साहन, यह क्या बाते हो रही हैं हमसे छिप-छिप कर !

खोजी--खुदावंद, एक मामले पर बहस हो रही थी ।

नवाब-- कैसी बहस, किस मामले पर !

खोली--हुजूर, मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिएँ और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी, मगर मुल्क्र की आब-

हवा ख़राब हो जायगी |

मस्तियाबेग--अख्खाद, तो यह कहिए कि आप शहर के अंदेशे में दुबे हैं |

खोजी--तुम गौखे हो, यद बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाद्री में कितनी तोपें होती हैं ! चले वहाँ से घुकरात की दुम बनके |

नवाब--खोजी है तो सीड़ी, मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है ।

आजाद--इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरत्ा हे |

ग़फूर--हुजूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मादूम हुई हैं ।

आज्ाइ--साहब, सफ़र भी तो इतना दुर-दराज का किया था! कहाँ हिदोस्तान, कहाँ रूम | खयाल तो कीजिए |

मीर साहब--बयों खवाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे !

खोज़ी--एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बाते करनेवाले ।

नवाब - भला आसमान वहाँ से कितनी दूर रह जाता है !

खोजी--हुजूर, बल एक दिन की राह। मगर ज़ीना कहाँ !

नवाब--और क्यों साहब, वहाँ से तो खूब मादूम होता होगा कि मेंह किस जगह से आता है !

खोजी--जनाब, पद्दाड़ की चोटी पर में था और मेंद नीचे बरस रहा था |

नवाब-- क्यों साहब, यह सच है ! अज़ीब बात है भाई |

आजाद--जी हाँ, यह तो द्वोता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ़ दिखाई देता है ।

मस्तियाबेग---और थो यह मशहूर है कि बादल ताल्वबों में पानी पीते हैं !

सखतोजी--यह तुम जैसे गधों में मशहूर होगा ।

नवाब--भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है |

खोबी--हुजूर ने दरिया डेन्यूत्र का नाम तो सुना ही होगा । इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज नहीं। इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है ।

मीर साहब- ऐं, इमें तो यक्लीन नहीं आता ।

खोजी--आपं लोग कुएँ के मेढक हैं |

नवाब-- मकान के हाते से ! बैसे हमारे मकान का यद्द द्वाता !

खोजी-- बल्कि इससे भी छोटा | दुजूर, खूदा को खुदाई है, इसमें बंदे को क्या दस्कल | और खुदाबंद, हमने इस्तम्बोछ में एक अजायब'ढाना देखा |

मीर साइब---तुमको तो किसी ने घोखे में बंद नहीं कर दिया ।

खोजी--बस, इन जाँगलओं को और कुछ नहीं आता |

नवाब-- अजी, तुम अपना मतलब कद्दो, उस अजायबखाने में कोई नयी बात थी [

स्वोजी--हुजूर, एक तो हमने मैंसा देखा । मैंसा कया, द्वाथी का पाठा था और नाक के ऊपर एक सींग | इत्तिफ़ाक् से जिस मकान में वह बंद था उसकी तीन छड़ें टूट गयी थीं | उसे रास्ता मिला तो सिमट-सिमट कर निकला। जनाब, कुछ न पूछिए, दो इज़ार आदमी गढ़-त्रढ़ एक के ऊपर एक इस तरद्द गिरे कि बेदोश। कोई चार-पाँच सौ आदमी जख्मी हुए । मैंने यह केफ़ियत देखी तो सोचा, अगर तुम भी भागते हो तो हँसी होगी | लोग कहेंगे कि यद्द फ़ौज़ में क्या करते थे | ब्रा से भैंसे को देख कर डर गये। बस एक बार इषपटके जो जाता हूँ तो गरदन हाथ आयी, बस वायें हाथ से गरदन दबायी और दबोचके नेठ गया, फिर रछाख-लाख जोर ढसने मारे, मगर मैंने हुमसने न दिया । ज़रा गरदन हिलायी और मैंने दबोचा । जितने आदमी खड़े ये सब दंग हो गये कि वाह रे पहलवान) आखिर जब मैंने देखा कि उसका दम टूट गया तो गरदन छोड़ दी । फिर उसने बहुत चाहा कि उठे, मगर हुमस न सका | म्रक्ससे छोग मिक्षतें करने छगे कि उसे कठपघरे में डाछ दो, ऐसा न हो कि बफरे तो सितम द्वी कर ढाले । इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधिया कर तड़ से गिरा ।

मस्तियाबेग--इसके क्या मतछब ! आपके खोफ़ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-केटे क्यों गिर पड़ा १

स्वोजी--बाही हो । बस दुजूर, मेने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी । उसी कठघरे में फिर बंद कर दिया ।

नवाब-- क्यों साहब, यह किस्सा सच है !

आजब्ाद--मैं उस वक़्त मौजूद न था, शायद सच हो ।

समीर साहब---क्स-बस, कलई खुछ गयी, ग़ज़ब खुदा का, झूठ मी तो कितना ! इस वज़त जी चाहता है, उठके ऐसा गुदा दूँ कि दस गज छीन में घैंस जाय।

सोजी--क़सम है खदा की, जो अब की कोई बात मुँह से निकली तो इतनी करौलियाँ भोंकूँगा कि उम्र भर याद करेगा । त् अपने दिल में समझा क्या है ! यह सूली हड्डियों लोदे की हैं ।

नवाब--इतने बड़े जानवर से इनसान क्या मुक़ाजछा कर सकता है !

आजाद-- हुजूर बात यह है कि बाज आदमियों को यह कुदरत द्वोती है कि हधर जानवर को देखा, उधर उसकी गरदन पकड़ी । ख्वाजा साइत्र को भी यहद्द तर-कीब मालूम है ।

नवाब-- बस, हमको यक्रीन आ गया ।

मस्तियाबेग--हाँ खुदाबंद, शायद ऐसा दी हो ।

मुसाहब-- जब हुजूर की समझ में एक बात आ गयी तो आप किस खेत की बूली हैं ।

मीर साइब---और जब एक बात की लिम भी दरियाफ्रत हो गयी तो फिर उसमें इनक़ार करने की क्या जरूरत !

नवाब-- क्यों साहब, लड़ाई में तो आपने खूब नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदम्ियों का खून हुआ होगा [

खोजजी - ग़लाम से पूछिये, इन्होंने कुछ मिला कर दो करोड़ आदमियों को पारा होगा।

नवाब--दो करोड़ !

खोजी--जभी तो रूम और शाम, तृगन और मुल्तान, आस्ट्रिया और ईंगलि-स्तान, जमंनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ हे ।

नवाब--ओफ़फ़ोह, स्वोजी को इतने मुल्कों के नाम याद हैं !

अ/ज़ाद-- हुजूर, अब इन्हें वह खोजी न तमझिए |

खोजी--ख़दावंद, मैंने एक दरिया पर अकेले एक इजर आदमियों का मकाबिला किया |

नवाब--भाई, मुझे तो यक्रीन नहीं आता ।

मस्तियाबेग-- हुजूर, तीन हिस्से घूठ और एक हिस्सा सच |

मीर साइब--हम तो कद्दते हैं, सच्च डींग है ।

आज्ञाद-- नवाब साहब, इस बात की तो, हम भी गवादी देते हैं। इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने अखबार में इनकी तारीफ़ देखी थी ओर वह अखबार मेरे पास मोजूद है ।

नवाब--तो अब हमको यक्कीन आ थया, जनत्र जनरल आज़ाद ने गवाही दी तो फिर सद्दी है ।

खोजी-- वह मौका ही ऐसा था।

आजाद--नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े घनरलों ने दाँतों अँगुली दबायी | वहीं तो सफ़शिकन भी तुम्हें नज़र आये ये १

खोजी--हुजूर, यह कहना तो में भूछ ही गया | जिस यक़्त मैं दुश्मनों का सुथ-राव कर रहा था, उसी वक़्त सफ़शिकन को एक दरख्त पर बैठे देखा ।

नवाब--लो साहबो, सुनो, मेरे सफ़शिकन रूम की फ़ौज़ में भी जा पहुँचे ।

मुसाहब--सुभान-अद्लाइ ! वाह्द रे सफ़शिकन, बहादुर हो तो ऐसा हो ।

खोजी--खुदावंद, इस डॉट-डप्ट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब -देखा ही नहीं, कम कैसा ! अरे मियाँ ग़फ़र, ज़रा बर में इत्तता करो कि सफ़शिकन खेरियत से हैं ।

ग़फ़ूर ब्योदी पर आया । वहाँ खिदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवात्र की सादगी पर खिलखिला कर हँस रहे थे |

खिदमतगार--ऐसा उल्ल का पट्ठा भी कहीं न देखा द्ोगा |

ग़फ़र--निरा पागल है, वल्लाह निरा पागल ।

चपरासी--अभी देखिए, तो क्या-क्या किस्से गढ़े जाते हैं ।

महरी ने यह ख़बर बेगम साहब को दीतो उन्होंने कऋदक़द्दा लगाया और कहा--इन पाजियों ने नवाब को अगुलियों पर नचाना शुरू किया | जाके कद्द दो कि जरी खडे-खड़े बुलाती हैं ।

नवात्र साहब उठे, मगर उठते ही फिर बैठ गये और कद्दा--भाई, जाने को तो मैं जाता हूँ, मगर कह्दीं उन्होंने मुफ़स्ल द्वाल पूछा तो !

आज्ाद--ख्वाजा साहब से उनका हाल पूछिए, इन्हें ख़ब मालूम है।

सोजी--साथ तो सच पूछिए तो मेरा ही उनका बहुत रद्दा। इनके भैंगरेजी लिबास से चकराते ये |

नवाब--भछा किसी मोरचें पर गये थे या नहीं, या दूर ही से दुआ दिया किये !

खोजी--खुदावंद शरालाम जो अजे करेगा, किसी को यक्नीन न आयेगा, इस पर में झल्ला ऊँगा और मुफ़्त ठाँय-ठाँय होगी ।

नवाब--क्या मजाल, खुदा की कसम, अत्र तुम मेरे खास मुसाहब दो, तुमने श्रो तजरबा हासिल किया है वह औरों को कहाँ नसीब | तुम्हारा कौन मुक़ाबिला कर सकता है !

खोजी--यह हुजूर के इकबाल का असर है, वरना में तो किसी श्वमार में न था | बात यह हुई कि रालाम एक नदी के किनारे अर्फ़म घोल ग्हा था कि जिस दरख्त की तरफ़ नज़र डालता हूँ, रोशनी छायी हुई है । घब्रराया कि या खदा, यह क्या माजरा है, इसी फ़िक्र में पड़ा था कि हुजूर सफ़शिकन न जाने किघर से आ कर मेरे हाथ पर बैठ गये ।

नवाब--खुदा का श्रुक्र हे, तुंम तो बड़े खश हुए होगे !

खोजी--दुज़र, जैसे करोड़ों पये मिल गये | पहले हुजूर का हाल बयान किया । फिर शहर का जिक्र करने छगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं । बस हुजर, तो यह कैफ़ियत हुई कि दुष्मन किसी लड़ाई में थम ही न सके | इधर - रूसियीं ने तोपों पर बत्ती लगायी, उधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी ।

नवाब--वाह-वा हे, सुमान-अला ह, कुछ सुनते दो यारो !

मस्तियाबेग--खुदावंद, जानवर क्या, जादू है !

खोजी--भला उनको कोई बटेर कद्द सकता है | और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनको शान में इतना सख्त और बेहूदा लक़्ज़ मुँह से निकालते हैं |

नवाब--मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना दे तो अच्छी तरह रहो, वरना अपने घर का रास्ता छो । आज

तो रुफ़शिकन को जानवर बनाया, कल को मुझ जानवर

बनाओगे ।

मुसाइब--ख़दावंद, यह्द निरे फूदड हैं। बात करने की तमीज़ नहीं ।

ग़फ़्र--अच्छा तो अब खामोश ही रहिए साहब, छुबूर हुआ ।

खोजी--नहीं, सारा हाल तो घुन चुके, मगर तत्र भी अपनी ही सी कहे जायेंगे, धुसरा अगर इस वक़्त जानवर कह्ता तो गछफड़े चीर कर धर देता, न हुई क़रौली !

नवाब--जाने भी दो, बेशऊर है।

स्तो त्नी--खुदावंद, खुश्की में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुश्किल है। सो हुजूर, तरी की लड़ाई में सफ़शिकन सबसे बढ़ कर रहे। एक दफ़ा का जिक्र है कि एक छोटा-दरिया था। इस तरफ़ हम, उस तरफ़ दुश्मन। मोर्चे बंदी हो गयी, गोलियाँ चलने लगीं, बस क्या देखता हूँ कि सफ़शिकन ने एक कंकरी ली और उस पर कुछ कर पढ़ इस ज़ोर से फेंकी कि एक तोप के हज़ार टुकडे हो गये ।

नवात--वाह-वाह, सुमान-अलाह ।

मुसाइब--क्या पूछना हे, एक ज़रा सी कंकरी की यह करामात |

खूजी--अब सुनिए, कि दुसरी कंकरी जो पद कर फेंकी तो एक और तोप फरी और बहत्तर ठुकड़े हो गये | कोई तीन-चार हज़ार आदमी काम आये |

नवाब--इस कंकरी को देखिएगा । वल्लाइ-वल्लाह ! एक दज़ार टुकड़े तोप के और तीन-हज़ार आदमी ग़ायत्र | वाह रे मेरे सफ़शिकन ।

खोजी--इस तरह कोई चौदह ृतोपें उड़ा दीं और जितने आदमी ये सब भुन गये । कुछ न पूछिए हुजूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ । अगर एक गोला भी पढ़ा होता तो छोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम मी नहीं हुई ।

नवाब--बला की कंकरी थी कि तोप के हज़ारों डुकड़े कर डाले और हज़ारों आदमियों की जान ली | मई, ज़रा कोई बा कर सफ़शिकन की काबुक तो लाओ |

इतने में महरी ने फिर आ कर कह्ा--हुजूर; बढ़ा जरूरी काम है, ज़रा चल कर सुन लें। नवात्र साहब खोजी को ले कर ज़नानखाने में चले। स्ोजी की आंखों में दोहरी पट्टी बाँधीं गयी और वह ब्योदी में खड़े किये गये ।

बेगम--कक््या सफ़शिकन का कोई ज़िक्र था, कहाँ हैं आजकल !

नवाब--यह कुछ न पूछो, रूप जा पहुँचे। वहाँ कई लड़ाइयों में शरीक हुए और दुश्मनों का क्राफ़िया तंग कर दिया। खुदा जाने, यह सब किससे सीखा है !

बेगम---खुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं !

नवात्र-- वछाह, सच कहती हो बेगम साइब ! इस वक़्त तुमसे जी खश हो गया। कहाँ तोप, कहाँ सफ़शिक्न, जरा खयाल तो करो ।

बे गम-- अगर पहले से मालूम होता तो सफ़िशकन को हज़ार परदों में छिपाके रखती | हाँ, खूब याद आया, वद्द तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी कब्र बनपा दी ।

नवाब--वल्लाह, खुच याद दिलाया | सुभान-अलाह |

बेगम-- यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को ।

नवाब--अगर कहीं यहाँ आ जायें, और पढ़े लिखे तो हैं ही, कट्टीं कब्र पर नजर पड़ गयी, उस वक़्त यही कहँगे कि यह लोग मेरी मौत मना रहे हैं, क्या झपाके से कब बनवा दी | इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालें ।

बेगम--जदहन्नुम में जाय | इस अफ्रीमची को घर के अंदर लाने को क्या जरूरत थी !

नवातर--अजी, यह वद्दी हैं जिनको हम लोग सोजी-सोजी कहते थे। लड़ाई के मैदान में सफ़शिकन इन्हीं से मिले थे । अगर कद्दो तो यहाँ बुला दूँ।

बेगम--ऐ. जहस्नुम में जाय मुआ, और सुनो, उस अफ़ोमची को घर के अंदर लायेंगे ।

नवाब--घुन तो लो | पहले बूढ़ा, पेट में आँत न मुँद में दाँत, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बँधी है ।

बेगम--हाँ, इसका मुजायक्ा नहीं, मंगर में उन मुए छुंगाड़ों के नाम से जलती हूँ, उन्हीं की सोहबत में ठुम्दाारा यद्द हाल हुआ |

नवाब--ऐं, क्या खूब !

खोजी--खूदावंद, ग़लाम द्वाजिर है ।

नहरी- मैं तो समझी कि कुएँ में से कोई बोला ।

बेगम--क्या यह हरदम पीनक में रहता हे !

नवाब--ख्वाजा साहब, क्या सो गये १

दरब्रान--ख्वाजा साहब, देखो सरकार क्या फ़रमाते हैं !

स्तोजी--क्या हुक्म है खदावंद |

बेगम--देखो, खुदा छानता है, ऊँध रद्दा था | मैं तो कहती दी थी ।

नवाब--भाई, जरा सफ़शिकन का द्वाल तो कह चछो | द

सोजी--खुदावंद, तो अब आँखें तो खुल्वा दीजिए ।

बेगम--क्या कुतिया के पिल्ले की आँखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं |

नवाब--पहले हाल तो बयान करो । डरा तोपवारा लिक्र फिर करना; यहाँ किसी को यक्रीन दी नहीं आता |

खोजी--हुजूर, क्योंकर यक्रीन आये, जब तक अपनी आँखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब--तो भाई, इमने क्यों्कर मान लिया, इतना तो सोचो ।

खोजी--ख़दा ने सरकार को देखनेवाली आँखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे । हुजूर, यदद कैफ़ियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ़ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफ़शिकन ने एक कंकरी उठा

कर, खूदा जाने क्या जादू फूँऊ दिया कि इधर कंकरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और इर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान लो ।

बेगम--इस झूट को आग लगे, अफ़ीम पी-पीके निगोड़ों को क्या-क्या सुझती है । बैठे-बेठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गये | खुदा का डर ही नहीं |

नवाब--सुम्हें यक्रीन द्दी न आये तो कोई क्या करे ।

बेगम--चलो, बस खामं'श रहो, ज़रा सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले | ख़दा जानता है, तुम अपनी फ़रद खुलबाओ ।

न१*--अच खुदा जाने, इमें जनून है या तुम्हें ।

खोजी--खुदावं र, बह्दस से कया फायरा | औरतों की समझ में यह बातें नहीं आ सकतीं ।

बेगम--मदरी, जरा दरवान से कह, इस निगोड़े अफ़ीमची को जूते मारके निकाल दे | ख़बरदार जो इसको कभी बड्योंदी में आने दिया ।

खोनी--सरकार तो नाहक़ खफ़ा दह्वोती हैं ।

बेगम--मादूम द्वोता है, आज मेरे हाथों तुम पियोगे, अरे महरी, खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसैनी दरबान ने आ कर खोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला ।

खोंजी--मस-बस, देखो, कान-वान की दिहलगी अच्छी नहीं ।

महबूत्न--अब चलता है या मचलता है !

खोजी--(टोपी जमीन से उठा कर) अच्छा, अगर आज जीते बच जाओ तो कहना । अमी एक यथप्यढ़ दूँ तो दम निकछ जाय |

इतना कहना था कि दूसरी मददरी आ पहुँची और कात पकड़ कर चपतियाने लगी । स्ोजी बहुत बिगड़े, मगर सोचे कि अगर सब्र लोगों को मालूम हो बायगा कि मद्रियों की जूतियोँ खायीं तो बेदब द्ोगी। झाड़-पोंठ कर बाहर आये और एक पटैंग पर लेट रहे ।

खेजी के जाने के बार बेगम साहब ने नवाब को ख़ब ही आड़े हाथों लिया । जरा सोचो तो कि तुम्हे हो क्या गया है | कहाँ बटेर और कहाँ तोप, खुदा झूठ न बोलाये तो बिल्ली खा गयी हो, या इन्हीं मुसाहनबों में से किसी ने निकारू कर बेच लिया होगा और तुम्हें पट्री पढ़ा दी कि वह सफ़शिकन थे । आखिर तुम किसी अपने दोस्त से पूछो । देखो, लोगों की क्या राय है !

नवाब--खदा के लिए मेरे मुसाहबों को न कोसो, चाहे गरुझे बुस-भला कह लो |

बेगम--इन मुफ़्तखोरों से खुदा समझे ।

नवाब- ज़रा आहिस्ता-आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन ले, तो खब के सब चलते हों और में अकेला मक्खियाँ मारा कहूँ |

बेगम--ऐ. है, ऐसे बड़े खरे हैं | तुम जूतियाँ मार के निकालो तो भी ये चूँ न करें | जो सब निकल जायें

तो होगा क्या ! वह कल जाते हों तो आज हद्वी जायें।

प्रदरी--हुजूर तो चूक गंयीं, जरी इस मुए खोजी की कहानी तो सुनी होती । हँसते-हँसते लोट जातीं ।

बेगम--सच, अच्छा तो उसको बुल्अओ जरी, मगर कद देना कि शृठ बोला

और मैंने खबर ली । नवाब--या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही बोलेगा। इतने

दिनों से दरबार में रहता है, कभी ध्ृठ नहीं बोला तो अब क्यों झूठ बोलने छागा [और आखिर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से उसको मिल क्या जायगा !

बेगम--अच्छा, बुठाओ | में भी ज़रा सफ़शिकन का दह्वाल सुनूँ।

महरी ने जा कर ख़ोजी को बुलाया | ख्वाजा साहब झल्लाये हुए पलँग पर पड़े थे | बोले--जा कर कद्द दो, अब हम वह खोजी नहीं हैं जो पहले थे, आनेवाले और जानेवाऊे, बुलानेवाले और बुलवानेवाले, सबको कुछ कद्दता हूँ ।

आखिर लोगों ने समझाया तो ख्वाजा साहब ब्योदी में आये और बोले--आदाब अर्ज करता हूँ सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नज़र ग़रीक के हाल पर होगी १ अभी कुछ इनाम बाक़ी हो तो अब मिल जाय ।

बेगम--स फ़शिकन का कुछ द्वाल्ल मादूम हो तो ठीक-ठीक कद्द दो | अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे ।

खोज्जी--वाद् री क्रिस्मत, हिंदोस्तान से बम्बई गये, वहाँ सब के सब 'हुजूर-हुजूर' कहते थे । तुर्की और रूस में कोहक़ाफ़ की परियाँ हाथ बाँघे ह।जिर रहती थीं। मिस रोज एक-एक बात पर जान देती थों, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूँ--

झ्वाब में एक नूर आता है नज़र ; याद में तेरी जो सो जाते हैं हम |

बेगम--अब बताओं, है पकः अफ़ीमची या नहीं, मतलब की बात एक न कद्दी वाही-तबाही बकने लगा |

खोन्नी--एक दफ़े का ज़िक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फ़ौज़। हमको माद्म नहीं कि रूसी मौजूद हैं। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फ्रौन तो खाने पीने का इंतज़ाम करने लगी और में अफ्रीम घोलने छगा कि एका-एक पहाड़ पर से तालियों की आवाज आयी | में प्याली ओठों तक ले गया था कि ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी । हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गये | मगर वाह रे मैं, ख़दा गवाह है, प्याली हाथ से न छूटी । एकाएक देखता हूँ. कि सफ़शिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बेठ कर चोंच अफ़ोम से तर की, और उसके दो कतरे पहाड़ पर गिरा दिये | बस धमाके की आवाज़ हुई और पहाड़ फट गया | रूस की सारी फ़ौज़ उसमें समा गयी । मगर हमारी तरफ़ का एक आदमी भीन मरा । मैंने सफ़शिकन का मैंह चूम लिया |

बेगम--मला सफ़शिकन बातें किस जब्ान में करते हैं |

खोजी--हुजूर, एक जब्ान द्वो तो कहूँ | उदं , फारसी, अरबी, तुर्की, भँगरेजी ।

बेगम--क्या और जन्नानों के नाम नहीं याद हैं !

खोजी-- अत्र हूजूर से कोन कहें ।

नवाब--अब यक्रीन आया कि अन्न भी नहीं ! और जो कुछ पूछना दो, पूछ ली।

बेगम--चलो, ब8 चुपके बेठ रहो । मुझे रंज होता है कि इन हरामखोरों के पास बैठ बैठ तुम कहीं के न रहे ।

नवाब--द्वाय अफ़सोस, तुम्हें यक्लरीन ही नहीं आता, भरा सोचो तो, यह सब के सब्र मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे । ख़ोजी को में कुछ इनाम दे देता हूँ या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम !

खोजी--खुदावंद, अगर इसमें जग भी शक हो तो आसमान फट पड़े । झुठ बात तो जबान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले !

बेगम--अच्छा, ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गये या झठ-मूठ के फ़िकरे ही बनाया करते हो !

खोजी--डुजूर मालिक हैं, जो चाहें, कह दें, मगर ग़लाम ने जो बात अपनी आँखों देखी, वह बयान की | अगर फ़क़ दो तो फाँसी का हुक्म दे दीजिए |

एक बूदी मदरी ने खोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा--हुजूर, इसमें ताज्छुब की कौन बात है, हमारे महल्ले में एक बढ़ा काछा कुत्ता रहा करता था। मदल्ले के लड़के उसे मारते, कान पकड़ कर खोंचते, मगर वह चूँ भी नहीं करता था। एक दिन महतले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका । ढेला उसके कान में छगा और कान से खून बहने छगा। चौकीदारी दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकह लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा | यह कुत्ता नहों है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया | और अपना घाव दिखा कर कट्दा--या तो हमीं नहीं, या तुम्दीं नहीं । सबेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोसवालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अन्न देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ह्टी नहीं ! दोपहर को चौकीदार कुएँ पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूँकने छमा ।

बेगम--सच १

महरी--हुजुर, अल्लाह बचाये इस बला से, कुत्ते के भेस में कया जाने कौन था।

नवाब--अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफ़्शिकन के कमरा को न मानोगी !

बेगम--हाँ, ऐ,ती बातें तो हमने भी सुनी हैं, मगर. «

सोजी--अगर-मगर को गुंजायश नहीं, ग़लाम आँखों देखी कद्दता है । एक क्रिस्सा ओर सुनिए, आपको शायद इसका भी यक्रीन न आये । सफ़्शिकन मेरे घिर पर आ कर बैठ गये और कह्दा, रूसियों को फ़ौज़ में घैंस पड़ो । मेरे होश उड़ गये । बोला, साहब आप हैं कहाँ ! मेरी जान जायगी, आपके नजदीक रिल्लपी है, मगर वह सुनते किसकी हैं | कद्दा, चलो तो तुम ! आधी रात थी, घटा छायी हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा । बस, रूसी फ़ौज़ में जा पहुँचा । देखा, कोई गाता है, कोई सोता है | इम सबको देखते है, मगर हमें कोई नहीं देखता। सफ़शिकन अस्तबर की तरफ़ चले और फुदक के एक घोड़े की गरदन पर जा बेठे। घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गरदन पर बैठते हैं, ज़मीन पर लोटने लगता है। इस तरद्द कोई सात दज़ार घोड़े उसी दम घम-धम करके लोट गये । फ़ोज़ से निकले तो आपने पूछा, कह्दो आज

की दिल्लगी देखी, कितने सवार बेकार हुए !

मैं--हुजर, पूरे सात इज़्ार !

सफ़शिकन-- आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जायगी, चलो, अपने पड़ाव पर चलें। चलते चलते जत्र थक जाओ तो हमसे कह दो ।

मैं -- क्यों, आपसे क्यों कद्द दूँ!

सफ़्शिकन--इसलिए क्ि.हम उतर जायें |

मैं--वाह, मुठ्ठी म: के आप, भछ आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊँगा ! आप क्या और आपका बोझ क्या !

इतना सुनना था कि ख़दा जाने ऐसा कौन सा बादू कर दिया कि मेरा क्रम उठाना मुद्दाल दो गया । मादूम द्ोता था, सिर पर पहाड़ का बोझा लगा हुआ है। बोला, हुजूर, अब तो बहुत द्वी थक गया, पै(ही नहीं उठते। बस, कुरे से उड़ गये । ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस-बीस करोड़ मन बोझा उतर गया ।

नवाब--यह तो भाई, नयी-नयी बातें मादूम होती जाती हैं । वाह रे सफ़शि कन |

खोजी--हुजुर, खुदा जाने, किस औलिया ने यद्द भेत बदला है।

बेगम साइब ने इस वक़्त तो कुछ न कहा, मगर ठान ली कि आब रात को नवाब साहब को खूब आड़े हाथों दूंगी। नवात्र साहच ने समझा कि बेगेम साहब को सफ़शिकन के कमाल का यक्रीन आ गया | बाहर आ कर बोले--बल्छा है, तुमने वो ऐसा समा बाँध दिया कि अब बेगम साहन्म को उम्र भर शक न होगा ।

खोजी--हुजूर, सत्र आँखों देखी बात बयान की है ।

नवाब - यही तो मुश्किल है कि वह सच्ची बातों को भी बनात्र<८ समझती हैं।

खोजौ--समइ्न में नहीं आता, मुझसे क्यों इतनी नाराज़ हैं ।

नवाब--नाराज़ नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पदे-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है। और भई, मैं सोचता हूँ कि आखिर कोई झूठ क्यों बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फ़ायदा ही क्या है |

खोजी--ऐ. घुभान-अल्लाह, क्या ब्रात हुजूर ने पैदा की है | सच-मुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा | एक तो झूठा कहलाये, दुसरे बेआबरू हो |

नवाब--भाई, हम इनसान की ख़ब पहनानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे | मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको, दूसरे सफ़शिकन को |

खोजी-- खदावंद, में यद्द न मारनूँगा, हुजूर की नज़र बड़ो बारीक है।

नवात्र साहब खोजी की बातों से इतने खश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिये बाहर आये। मुसाहत्रों ने जो इतनी बेतकल्लफ़ी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे--

मस्तियाबेग--एँ, मियाँ खोजो ने तो जादू कर दिया यारो !

ग़फ़र--जरूर किसी मुल्क से जादू सोख आये हैं।

मत्तियाबेग---तजरबाकार दो गया न, अन्न इसका रंग कुछ जम गया ।

ग़फ़्र--कैसा कुछ, अब तो सोलदों आने के मालिक हैं '

मिरजा--अरे मिर्यों, दोनों हाय में हाथ दे कर निकले, वाह री क्रिस्मत । मगर यह खश किस बात पर हुए !

ग़फ़र-- इनको अभी तक यही नहीं माल्म, बताइए साहब !

मस्तियाबेग --मिर्यों, अजब कूद्मस्ज हो, कहने टगे, खश किस ब्रात पर हुए। सफ़शिकन की ता४फ्रों के पुल बाँध दिये | सूझ्ष द्दी तो है, अब लाख चाहें कि उत्तक रंग फोका कर दें, मुमकिन नहीं ।

मिरजा-- इस वक़्त तो खोज्ी का दिमाग़ चौथे आसमान पर द्वोगा |

मस्तियाबेग--अजी, बिक और उसके भी पार, सातवें आसमान पर |

ग़फ़र--मैं बारा में गया था, देखा, नवात्र साहब मोद़े पर ज़ेठे हैं और खाजी तिपाई पर बैठा हुआ, ख़ास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है !

मिरज़ा--सच, तुम्हें खदा की कसम !

ग़फ़ूर---चल कर देख लीजिए न, बस जादू कर टिया | यद्द वही खोजी हैं जो चिलमें मरा करते ये, मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए है।

मिरज़ा--खोजी को सब के सब मिल कर मसुबारकबाद दो और उनसे बदिया दावत लो । अब इससे बढ कर कोन दरजा है !

इतने में नवात्र साइब खोजी को लिये हुए दरबार में आये, मुसाइत्र उठ खड़े हुए । ख्वाजा साइब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाट से बोले-- हज़रत, आपकी सोहनबत में ज्वाजा साहब पारस हो गये।

आजाद--जनाब, यह सब आपकी खिदमत का असर है। मेरी सोहबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिदी करते बरसों गुजर गये |

नवाब--वाह, अब तो ख्वाजा साहब मेरे उस्ताद हैं जनाब !

मस्तियाबेग-- खुदाबंद, यह क्या फ़रमाते हैं। हुजुर के सामने खोजी को क्या दृस्ती है !

नवाब--क्या बकता है ! खोजी की तारीफ़ से तुम सब क्यों जल मरते हो !

मिरज़ा--खुदावंद, यद्द मस्तियाबेग तो दूसरों को देख कर हमेशा जलते रहते हं।

ग़फ़्र--यह परले सिरे के गुस्ताख हैं, बात तो समझे नहीं, जो कुछ मुद में आया, बक दिये । आखिर ख्वाजा साहब बेचारे ने इनका क्या बिगाड़ा !

नवाब--मुझसे सुनो साहब, दिल में पुरानी कुदृरत है ।

मुसाहब-- सुभान-अब्छाह ! हुज्र, बस यही बात है।

खोजी-- हुजूर इसका ख्याल न करें। यदद लोग जो चाह, कहे | भाई राफ़्र, जरा सां पानी पीयेंगे ।

नवाब--ठंडा पानी छाओ ख्वाजा साहब के वास्ते ।

खिदमतगार सुराही का झला ठंडा पानी लाया, चाँदी के कटोरे में पानौ दिया । जब ख्वाजा साहब पानी पी चुके तो नवाब साहब ने पानदान से दो गिलीरियाँ निकाल कर खास अपने हाथ से उनक़ो दीं ।

प्रिरज्ञा--मैंने मस्तियाबेग से हजार बार कद्दा कि भाई, तुम किसी को देख के जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख्वाहमख्वाह के लिए अपने को क्यों इलकान करते हो ।

नवाब--मुझे इस वक़्त उसकी बातें बहुत नागवार माठम हुईं ।

मुसाहब--जानते हैं. कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपनी हरकत से बाज़ नहीं आते ।

मुसाहत्र लोग तो बाहर बैठे सलाइ कर रहे थे, इधर दरबार में नवाब साहब, आजाद और खोजी में यूरोप के रईसों का ज़िक्त होने लगा। आजाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ़ की ।

नवाब--कक्यों साहब, हम लोग भी उन रईसों की तरद्द रह सकते हें!

आजाद--बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए | आपकी सोदबत में चंडू-बाज, मदकिये, चरसिये इस कसरत से हैं कि शायद ही कोई इनसे खाली दो । यूरोप के रईसों के यहाँ ऐसे आदमी फटकने भी न पाये !

नवाब--कद्दिए तो ख्वाजा साइच के सिवा और सबको निकाल दूँ |

खोजी--निकालिए, चाहे रहने दीजिए, मगर इतना हुक्म जरूर दे दीजिए कि आपके सामने ट्रचार में न कोई चैड़ू के छींटे उड़ाये, न मदक के दम लगाये और न अफ़ीम धोले ।

आडाद--दूसरी बात यह है कि खशामदी छोग आपकी झूठी तारीफ़ें कर-करके खश करते हैं | इनको शिड़क दीजिए और इनकी ख़शामद पर खश न होइए ।

नवाब--आप ठीक कहते हैं। व्लाह, आपकी बात मेरे दिल में बैठ गयी | यह सब भरें दे-दे कर मुझे बिलटाये देते हैं ।

आज़ाद--आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं कि आप खुशामदियों पर छुटायें | इसको इस तरह काम में छाय्यें कि सारी दुनिया में नई तो हिंदोस्तान भर में आपका नाम हो जाय । खैरा तखाना क्रायम कीजिए, अस्पताल बन-वाहइए, आलिमों की क़रर कीजिर | मैंने आपके दरबार में किसी आहिम फ़ाजिल को नहीं देखा ।

नवाब--त्रस, आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूँ।

आजाद--अपनी आदतें भी बदछ डालिए, आप दिन को ग्यारद्द बजे सो कर उठते और ह्वाथ-मुँह धो कर चंड्र के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद इन फ़िक़रेब्राजों से चुददल द्वोती है | सुबरद्द का खाना आपको तीन बजे नसीज होता है। आप फिर आराम करते हैं तो शाम से प्ले नहीं उठते । फिर वही चंड्र और मदक का बाज़ार गम होत: है। कोई दो बजे रात को आप खाना खाते हैं। अब आप ही इनसाफ़ कीजिए कि दुनिया में आप कौन सा काम करते हैं ।

नवाब--इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया ।

आज़ाद--सबेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अखबार पदिए, भले आदमियों की सोहत्रत में बैठिए, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़िए, ज़रूरी कांग्रज़ों को समझ्निए; फिर देखिए कि आपकी जिंदगी कितनी सुघर जाती दै ।

नवाब - खदा 4. कसम, आज से ऐसा ही करूँगा, एक-एक दृफ़ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा » बेंढा झूठा आदमी दै।

खोजी--हुजूर, मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गये, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फिर चाहे ज़मीन और आसमान एक तरफ़ द्वो जाय, आप उसके खिलाफ़ कभी न करेंगे | बरसों से यही देखता आता हूँ।

आज़ाद--एक इश्ततहार दे दीजिए कि लोग अच्छी अच्छी किताब लिखें, उन्हें : नाम दिया जायगा । फिर देखिए, आपका केसा नाम होता है !

नवाब--मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहइद्रों में ओर ही बातें हो रह्दी थीं---

मस्तियावेग--वह्थ ह, आज तो अपना खून पी कर रह गया यारो।

मिरजञा-देखते हो, किस तरह झिड़क दिया |

मस्तियाबेग--झिड़क कया दिया, बस कु० न पूछो, में जान-बूस कर चुप दो रहा, नहीं बेटब हो जाती । किसी ने अपनी इउज़त नहों बेची दे । और अब आपस में सलाहें हो रही हैं | खोजी ने सबत्रको बिलटाया ।

मस्तियाबेगर---कोई छाख कहे, हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल है ।

ग़फ़्र-मियोँ, इसमें क्या शक है, यह जादू नहीं तो है क्या !

पिरश्आा--अधी, उस्दू का गोश्त नवाब साहब को न खिला दिया हो तो नाद: कटवा डाबूँ | इन छोगें ने मिल कर उल्लू का गोश्त खिलवा दिया है, जभी तो उब्ल बन गये, अब उनसे कहे कौन !

मस्तियाबेग--कदके बहुत खृश हुए कि अब किसी दूसरे को हिम्मत होगी ।

ग़फ़्र--अब तो कुछ दिन खोजी की ख़शामद करनी पड़ेगी ।

मस्तियाबेग--हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है |

मिरज़ा--फिर निकाले जाओगे, यहाँ रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से बैर !

मस्तियाबेग--दो-चार दिन रहके यहाँ का रंग-ढंग देखते हैं। अगर यही हाल

रहा तो दपतारा इस्तीफ़ा है, ऐसी नौकरी से बाज़ आये | बरातरवालों की खशामद

हमसे न हो सकेगी |

मीर साहब--बराबरवाले कौन ! तुम्हारे बराजरवाले होंगे । हम तो खोजी को जुलील समझते हैं ।

ग़ऊझूर--अरे साहब, अब तो वह सबके अफ़सर हैं और दम तो उन्हें गुड़गुड़ी पिला चुके । आप लोग उन्हें

मार्नें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं|

मिरजा- सो बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं । भाईजान, किसी को इसका गुमान भी था कि खोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठायेंगे, मगर अब आँखों देख रहे हैं ।

नवाब साहब बाहर आये तो इस दंग से कि उनके हाथ में एक छोटी सी गुड़-गुड़ी ओर इ्वाजा साहब पी रहे हैं | मुसाइबों के रहे-सद्दे होश भी उड गये। ओ-प्रफ़ोह, सरकार के हाथ में गुड़गुड़ी और यह ठुकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को भी अपने बरात्र बिठाया | मुसा-हब सन्नाटे में आ गये | कोई चूँ तक नहीं करता, सबकी निगाह स्लोजी पर है । बारे मीर सादन्र ने द्विम्मत करके बात-चीत शुरू की--

मीर साहब--खुदावेद, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी ख़शबू आ रही है |

नवाब--हाँ, आज का दिन इसी छायक़ है कि कोई इल्मी बरदस हो ।

मौर साहब- खदावंद, आज का दिन तो गाना सुनने के लिए बहुत अच्छा है ।

नवाब--नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए । स्वाजा साहब, आप कोई बहस दुरू कीजिए |

मस्तियाबेग--(दिल में) इनके बाप ने भी कभी हृस्मी बहस की थी !

मिरजञा-- डुजर, ख्वाजा साहब की लियाक़त में क्या शक है, मगर, . .।

नवाब--अगर-मगर के क्या मानी | क्या ख्यता साहब के आलिम होने में आप छोगों को ठछ शक है |

मिरज़ा---किस हल्म की बहस कीमिएगा ख्वाजा साहब ! इत्म का नाम तो मादूम हो ।

खोजी--हम इल्म जाछोजी में बहस करते हैं, बतलाइए, एस हल्म का क्या मतलब है!

मिरजा--किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी | यदद जालछोजी क्या बला है !

नवात्र--जब आपको इस इत्म का नाम तक नहीं माद्म तो बहस क्या खाक कीजिएगा | क्यों ख्वाजा साहब, सुना है कि दरिया में जहाज़ों के डुबो देने के औड़ार भी अँगरेजों ने निकाले हैं। यह तो खुदाई करने लगे |

खोज़ी--उस औज़ार का नाम तारपेडो हे । दो जहाज हमारे सामने डुपो दिये ग्ये | पानी के अंदर द्वी अंदर तारपेडो छोडा जाता है, बस जैसे दी णद्दाश्न के नीचे पहुँचा बैते ही फटा । फिर तो जनाब, जहाज के करोड़ों टुकड़े दो जाते हैं ।

मस्तियाबेग---और क्यों साइब, यह बम का गोला कितनी दूर का तोड़ करता है!

खोजी -बम के गोले कई क्रिस्म के होते हैं, आप किस क्रिए" का ह्वाल दरियाफ्त करते हैं !

मस्तियाबेग--अजी, यही बम के गोले |

खोजी--आप तो यदी-यही करते हैँ, उसका नाम तो बतलाइए !

नवाब - क्यों जनाब, लड़ाई के वक़्त आदमी के दिल का क्या हाल द्ोता होगा! चारों तरफ़ मौत द्वी मौत नज़र आती द्वोगी !

मिरज़ा--मैं अज्ञ करूँ दुज्र, लड़ाई के मैदान में आ कर जग...

नवाब--चुप रहो साहब, तुमसे कौन पूछता है, कभी बंदूक की रुरत भी देखी है या लड़ाई का हाल ही बयान करने चले !

खोजी--जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का ज़ा भी खौफ़ नहीं माद्म दोता। आपको यक़ीन न आयेगा, भगर में सद्दी कहता हूँ कि इधर फौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमड़ने लगा । केसा ही बुजदिल दो, मुमकिन नहीं कि तलवार खींच कर फ़ौज़ के बीच में धैंस न जाय । नंगी तलवार द्वाथ में ली और दिल बढ़ा । फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आये तो क्या मजारू कि आदमी हट जाय।

सतोजी यही बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आ कर कद्दा--हुजूर, बाहर एक साहब आये हैं, और कहते हैं, नवाब साहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाब साहब ने कहा--ख्वाजा साहब, आप करा जा कर दरियाफ़त कीजिए कि कौन साहब हैं। खोजी बड़े रारूर के साथ उठे और बाहर जा कर साहब को सलाम किया । मादूम हुआ कि यह पुरीस का अफ़सर है, जिले के हाकिम ने उसे आदाद का हाल दरियाफ़त करने के किए भेजा है ।

खोन्ली--आप साहब से जा कर कह दीजिए, आश्षाद पाशा नवाब साहब के मेहमान हैं और उनके साथ शवाला साहब भी हैं।

अफ़सर--तो साहब उनसे मिलनेवाला है। अगर आज उनको फुरसत दो तो अच्छा, नहीं तो जब उनका जी चाहे ।

खोजी--मैं उनसे पूछ कर आपको लिख भेजूँगा ।

इंस्पेक्टर साहब चले गये तो मस्तियाबेग ने कद्दा--क्यों साहब, यह बात हमारी -समझ में नहीं आयी कि आपने आजाद पाशा से इसी वक़्त क्यों न पृछ लिया । एक ओददेदार को टिक करने से क्या फ़ायदा ! खोजी ने त्योरियाँ बदछ कर कहा--- तुमसे दज़ार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो, मगर तुम सुनते द्वी नहीं। तुम तो हो अक्छ के दुश्मन, इम चाहते हैं कि आज़ाद पाशा जब किसी द्वाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाक़ात द्वो। इस वक़्त यह वर्दी नहीं पहने हैं। कल जब यह फौजी वर्दो पहन कर और तमगे लगा कर हाकिम-जिला से मिलेंगे तो वद्द खड़ा हो कर ताजजीम करेगा ।

नवाब--अब समझे या अब भी गधे ही बने दो ! इवाजा साहब को तौलने चले हैं | वक्ाह, झूवाजा साहब, आपने खुब सोची । अगर इस वक़्त कद्द देते कि आजाद वह क्या बैठे हैं तो कितनी किरकिरी होती।

इतने में खाने का वक़्त आ पहुँचा । खाना चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक़्त खोजी ने एक क्रिस्सा छेड़ दिया--हुजुर, एक बार जब अंगरेजों की डच छोगों से मुठभेड़ हुई तो जंगरेजी अफ़सर ने कद्दा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ़ के जहाों को ले आये तो हमारी फ़तद्द हो सकती है, नद्ीं तो हमारा बेड़ा तबाह दो जायगा ! इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पड़े । उनके साथ पंद्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूरा ।

नवाब---समुद्र में, ओफ़फ़ोदद |

खोजी--ख़दावंद, उनसे बढ कर दिलेर और कौन द्वो सकता है ! बस अफ़सर ने मल्लाहों से कहा, इस लड़के को रोक छो। लड़के ने कह्दा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान कुरबान द्वो जाय तो क्या मुज़ायक़ा

! यह कह कर वह छड़का तेरता हुआ निकल गया |

नवाब--ख्वाजा साइब, कोई ऐसी फ़िक्र कीजिए कि इमारी-आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह इ।यम रहे ।

खोजी--भाई सुनी, हमें खशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साइब-सलामत रखन। है तो रखए, वरना आप अपने घर खश और में अपने घर खश |

नवात्र - यार, तुम तो बेवजद्द ब्रिगड़ खड़े द्ोते हो |

खोजी--साफ़ तो यह है कि जो तजरबा हमको हासिढ हुआ है उस पर हम जितना ग़रूर करें, बजा है ।

नवाब--इस में क्या शक है जनातर |

खोजी--आप खूब जानते हैं कि आलिम छोग किसी की परवा नहीं करते | मुझे दुनिया में किसी से दबक्े चलना नागवार है, और हम क्यों किसी से दर्बे १ छालूच हमें छू नहीं गया, हमारे नज़दीक बादशाह और फ़क़ीर दोनों बराभर | जहाँ कहाँ गया, लोगों ने लिर और आँखों पर बिठाया । रूम, मिल, रूस वगैरह मुढुकों में मेरी जो क़रर हुई वद्द सारा जमाना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की क़दर नहीं । वद देखिए, नालायक़ मस्तियाबेग आपके सामने चंद्ू का दम लगा रहा है| ऐसे बादमाशों से मुझे नफ़रत दे ।

नवाब -कोई है, इस नालायक़ को निकाल दो यहाँ से ।

मुसाहिब--हुजूर तो आज नाहक़ खफ़ा द्ोते हैं, इस दरबार में तो रोज ही चंद्र के दम लगा करते हैं । इसने किया तो क्या गुनाह किया !

नवाब--क्या बकते हो, हमारे यहाँ चंडू का दम कोई नहीं लगाता |

खोजी--ह में यहाँ आते इतने दिन हुए, इमने कभी नहीं देखा। चंद्ट पीना शरीफ़ों का काम द्वी नहीं |

मिरत्रा--तुम तो ग़ज़ब करते हो खोजी, जमाने भर के चंदट्ूबाज़, अफ़ीमची, अब आये हो वहाँ से बढ़-बढ़के बातें बनाने। ज़रा सरकार ने मुँह लगाया तो छुतीन पर पाँव दी नहीं रखते ।

नवीब--शफ़ूर, इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो | “ख़बरदार ज्ञो आज से कोई यहाँ आने पाया ।

मीर साइब--खु रावंद |! बस, कुछ न कह्दिएगा, हम छोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची हे ।

नवाब -निकालो इन सबों को, अमी-अभी निकाल दो |

ख्वाजा साहन्र शह पा कर उठे और एक कतारा लेकर मस्तियाबेग पर जमाया | बह तो झल्ाया था ही, खोची को एक चाँटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गये, उन्होंने मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाक्की सब माग खड़े हुए | खोजी झाड़ पोंछ कर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को एक दरख्त में बाँष-कर दो सौ कोड़े लगाये जायें, नमकदराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है । बदन में कीड़े न पढ़ें तो सही ।

उधर मिर्यों आाज़ाद साइब से मिल कर लौटे तो देखा कि दरबार में सन्नाटा छाया छुआ है। नवाब साहब उन्हें देखते ही बोले--इजरत, आज से हमने आपको सलाहों पर चलना शुरू कर दिया ।

आज़ाइ--दरबार के लोग कहाँ गायत्र दो गये !

खोजी--सब के सब निकाल दिये गये, अब कोई यहाँ फटकने. भी न पायेगा।

नवाब--अब हम हुक्काम से मिला करेंगे और कोशिश करेंगे कि हरएक क्रिध' की कमेटी में शरीक हों | वाही-तत्राही आदमियों की सोहबत में आप देखें तो मे. फान पकडिएगा |

आशब्ाद--अब आप दर क्रिस्म की किताबें पदा कीजिए ।

नवाब--आप जो कुछ फ़रमाते हैं, बजा है, मेरा पश्चीसवाँ साल है, अभी मुझे पदने-छिखने का बहुत मौका है; और मुझे करना ही क्या है।

आज़ाद-- खदा आपकी नीयत में बरकत दे ।

खोजी--बस, आज से आपको आलिमों की सोहबत रखनी चाहिए | ऐसा न हो इस वक़्त तो सब कुछ तकरार कर लीजिए. और कल से फिर वद्दी दाक के तीन पात।

नवाब--खुदा ने चाहा तो यह सब बातें अब नाम को भी न देखिएगा ।

दूसरे दिन आज़ाद सैर करने निकले तो क्या देखते हैं कि एक जगह कई आदमी एक छत पर बैठे हुए हैं। आजाद को देखते ढी एक आदमी ने आ कर उनसे कद्दा-- अगर आपको तकलीफ़ न द्वो, तो जरा मेरे साथ आइए । आज़ाद उसके साथ छत पर पहुँचे तो उन आदमियों में एक की यूरत अपनी से मिलती-जुलती पायी । उसने आज़ाद की ताज़ीम की और कहा--आइए, आपसे कुछ बातें करूँ। आपने अपनी सूरत तो आईने में देखी होगी !

आब़ाद-- हा, और इस वक़्त बरेर आईने के देख रहा हूँ | आपका नाम!

आदमी- मुझे आजाद मिरज़ा कहते हैं ।

आजाद--तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पदचाना

मिरज़ा--मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अखबारों में आपका द्वाल पढ़ता रहा हूँ । .. आजाद--इस वक़्त आपसे मिल कर बहुत खशी हुई ।

मिर्जा --और अभी और भी खशी होगी । सुरैया बेगम को तो आप जानते हैं!

आंजाद--हाँ-हाँ, आपको उनका कुछ हाल मादूम है !

मिरज़ा--जी हाँ, आपके प्रोखे में मैं उनके यहाँ पहुँचा था, और अब तो वहद बेगम हैं। एक नवाब साहब के साथ उनका निका& दो गया है।

आजाद--्या अब दूर से भी मुलाक़ात न दोगी !

मिरजा--हरगिज नहीं |

आबाद--बे अख्तियार जी चाहता है कि मिछ कर बातें कहूँ।

मिरजा--कोशिश कीनिए, शायद मुलाक़ात हो जाय, मगर उम्मेद नहीं !

HINDI TEXT

प्रसंग १०६

आशाद सुरैया बेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते. हैं कि एक बाण में कुछ छोग एक रईस की सोहबत में बैठे गपं उड़ा रहे हैं । आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैया बेगम के नवाब साहव का कुछ पता चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके इरीब गये । आज़ाद को देखते ही वह रईस चौंक कर खड़ा हो गया और उनकी तरफ़ देख कर बोला--वल्लाह, आपसे मिलने का बहुत शौक या । शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई | फ़र्माइए, आपकी क्या खिदमत करूँ!

मुसाइब--हुजूर, जंडेल साइब को कोई ऐसी चीज पिलाइए कि रूइ तक ताज़ा हो जाय ।

खाँ साइब--समुझ्ले पारसाल सबलवायु का मरज़ दो गया था | दो महीने डाक्टर का इलाज हुआ | खाक फ़ायदा न हुआ | बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाये, मरञ्ज और भी बढ़ गया । पड़ोस में एक बेदराज रहते हैं उन्होंने कहा में दो दिन में अच्छा कर दूँगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा, मगर कुछ फ़ायदा न हुआ । आखिर एक दोस्त ने कह्दा--भाई, तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो | बस हुजूर, दो बार बरांडी पिलायी | दो छर्टक शाम को, दो छटांक युबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन में बिलकुल चंगा हो गया ।

रईस--बरांडी के बड़े-बड़े फ़ायदे लिखे हैं !

दीवान--सरकार, पेशाब के मरज् में तो बरांडी अक्लसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फ़ायदा करती है !

खाँ साहइब-- हुज्र, आँखों देखी कहता हूँ । एक सवार को मिर्यों आती थी, सैकड़ों इलाज किये, कुछ असर न हुआ, आखिर एक आदमी ने कहा, हुजूर हुक्म दें तो एक दवा बताऊँ। दावा करके कद्ता हूँ कि कल ही प्रिर्गी न रहे । खदावंद दो छटाँक शराब लीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिछाइए, अगर एक दिन में फ़ायदा न हो तो जो चोर की सक्षा वह मेरी सजा ।

नवाब--यह सिफ़त है इसमें |

मुसाहब--हुजूर, गैवारों ने इसे झट-मूठ बदनाम कर दिया है। क्यों जंडेल साइब, आपको कभी इत्तफ़ाक़ हुआ है !

आज़ाद--वाह, क्या में मुसल्मान नहीं हूँ।

नवाब--क्या खूब जवाब दिया है, सुभान-अल्लाह !

इतने में एक मुसाहब बिनको औरों ने सिखा-पढ़ा कर भेजा था, चुग़ा पहने और अमामा बाँधे आ पहुँचे । लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताब्ीम की और बुला कर बैठाया ।

नवाक--कैसे मिलाज़ हैं मौठाना साहब !

मौलाना--ख़दा का शुक्र है । मुसाइब--क्क्यों मौलाना साहब, आपके खयाल में शरात्र हलाछ है या हराम ! मौलाना--अगर तुम्हारा दिल साफ़ नहीं तो दज्ञार बार इज्ञ करो कोई फ़ायदा ज्ड़ीं। हरएक चीज़ नीयत के लिद्वाज़ से दलाल या हराम द्वोती है। आजाद--जनाब, हमने हर क्रिस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परदेण नहीं किया, आप छोग शोक़ से पिये, मेरा कुछ खयाल न करे | नवाब--नीयत की सफ़ाई इधी को कहते हैं । दज़रत आजाद, आपकी जितनी तारीफ़ सुनी थी, उससे कहीं बढ़ कर पाया । एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बफ़ लाये और दौर चलने छगे । जब सरूर जमा तो ग़पें उने लगीं-- खाँ साहब--खदावंद, एक बार नेपाल की तराई में जाने का इत्तफ़ाक हुआ। चौदह आदमी साथ थे, वहाँ जंगल में शहद कसरत से है ओर शहद की मक्खियों की अजब खासियत है कि बदन पर जहाँ कहीं बैठती हैं, दर्द होने लगता है। मेंने वहाँ के बाशिंदों से पूछा, क्यों भाई, इसकी कुछ दवा है! कहा, इसकी दवा शराब है | हमारे साथियों में कई ब्राक्षण भी थे। वह शरात्र को छू न सकते थे । हर दवा के तौर पर पी, इमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी तक झींक हें । नवाब--वब्लाह, इसके फ़ायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर इलाल द्वोती तो क्या कद्दना था । मुसाहब--खदावंद, अब तो सब्र हलाल है | लॉ साहब --खदावंद, हैजे की दवा, पेचिस की दवा, बत्रासीर की दवा, दम की दवा, यहाँ तक हि मौत की भी दवा । दीवान--ओ-हो-दहो, मौत की दवा ! नवाब--खब्रदार, सब के सब खामोश, बस कह दिया दीवान--ख'मोश | खामोश ! खाँ साइब--तप की दवा, सिर-दर्द की दवा, बुढ़ापे की दवा । नवाब--यह तुम छोग बदहकते क्यों दो! इमने भी तो पी है। हज़रत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी । तत्रसे क्या मजाल कि मेरी ज्बान से एक बेहूदा बात भी निकले । (चारासी को बुला कर) रमड़ानी, तुम छाँ साहन ओर दीवान जी को यहाँ से ले ज्ञाओ | दीवान- इत्म की कसम, अगर इतनी गुस्ताखी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूतों-पैजार हो जायगी | नवाब --कोई है ! जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकारू दो और फिर भूल के भी न आने देना | लाला--अभी निकाल दो सबको !

यह कद्द कर लाला साइब ने रमज़ान खाँ पर टीप जमायी। वह पठान आदमी, टीप पढ़ते ही आग हो गया । लाला साहब के पट्टे पकड़ कर दो चार धर्पे जोर-ज़ोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर-उधर से उठे । लप्पा-इग्गी होने लगी । आजाद ने नवाब साहब से कदा--मैं तो रुखसत होता हुँ। नवाब साहब ने आजाद का द्वाथ पकड़ लिया और बाग़ में छा कर बोले--इज़रत, मैं बहुत शरमिंदा हूँ कि इन पाजियों की वजह से आपको तकछीफ़ हुई | क्या कहें, उस औरत ने हमें वद्द नसीहत की थी कि अगर दम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते । मगर इन मुसाइबों से ख़दा समझे; हमें फिर घेर-घारके फंदे में फाँस लिया ।

आज़ाद--तो जनाब, ऐसे अदना नौकरों को इतना मुँह चढ़ाना हरगिज़ मुनासित्र नहीं ।

नवाच --भाई साइब, यही बातें उस औरत ने भी समझायी थीं ।

याजाद--आद्‌िर वह औरत कौन थी और आपसे उससे कया ताल्छुक़ था!

नवाब--हजरत, अज् झिया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाश में बैठा था कि एक औरत सफ़ेद दुलाई ओदे निकली । दो चार बिगड़े दिलों ने उसे चकमा दे कर बुलाया । वह बेतक़ल्छफ़ी के साथ आ कर

बैठी तो मुझसे बातचीत होने लगी | उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आज़ाद ने ऐसा मुँह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहाँ ज्ञाओ, उसके जाननेवाले निकल द्वी आते हैं। कुछ देर बाद नवात्न नशे में चूर हो ही गये और आजाद बाहर निकले तो एक पुराने जान-पहचान के आदमी से मुलाक़ात हो गयी। आज़ाद ने पूछा--कटद्दिए इज़रत, आजकल आप कहाँ हें !

आदमी--आजकल तो नवाब वाजिद हुसैन की खिदमत में हूँ | हुजूर तो सैरि-यत से रहे १ हुजूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन दो गया ।

आज्ाद--भाई, जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो ।

आदमी--कोशिश करूँगा हुजूर, किसी न ज़िसी द्वी डे से वद्दाँ तक आपका पैशाम पहुँचा दुगा ।

यह मामला ठीक-ठाकफ़ करके आजाद होटल में गये तो देखा कि खोजी बड़ी शान से बैठे गये उड़ा रदे हैं और दोनों परियों उनकी बातें सुन-सुन कर खिलखिला रही हैं ।

. क्लारिसा--तुम अपनी बीबी से मिले, बड़ी खुश हुई होंगी ।

खोजी--जी हाँ, महल्े में पहुँचते द्वी मारे कर] के छोगों दे. तालियाँ बजायीं । लौंडों ने ढेले मार-मार कर गुल मचाया कि आये-जीये । अब के गले मिलता है, कोई मारे मुहब्बत के उठाके दे मारता है । साथ महल्ला कह रहा है ठुमने तो रूम में वह काम किया कि झंडे गाड़ विये। घर में जो खबर हुई तो लोंढी ने आ कर सलाम किया | हुजूर आइए, बेगम साहब बड़ी देर से इंतज़ार कर रही हैं। मैंने कहा, क्योंकर चढँ ! जब यह इतने भूत छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है, कोई उधर और यहाँ जान अज़ाब में है ।

मीडा--घर का हाल बयान करो | वहाँ क्या बातें हुई !

खोजी--दालान तक बीबी नंगे पाँव इस तरह दौडी आयी कि हाँफ गयीं ।

मीडा--नंगे पाँव क्यों ! क्या तुम लोगों में जूता नहीं पद्नते !

खोजी--पहन ते क्यों नहीं; मगर जूता तो द्वाथ में था ।

मीडा--हाथ से और जूते से क्या वास्ता !

स्वोजी--आप इन बातों को कया समझें ।

मीडा--तो आजखिर कुछ कद्दोगे भी १

खोजी--इसका मतलब यह है कि मियाँ अंदर क्रदम रखें और हम खोपड़ी सुहला दें ।

मीडा--क्या यह भी कोई रस्म है !

खोजी--यड सब अदाएँ हमने सिखायी हैं। इधर हम घर में घुसे, उधर बेगम साहब ने जूतियाँ लगायीं । अब हम छिपें तो कहद्दाँ छिपे, कोई छोटा-मोटा आदमी दो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल लेके कहाँ जायें !

बलारिसा--सच तो है, क़द क्या हे, ताड़ है !

मीडा--क्या तुम्दारी बीबी भी तुम्दारी दी तरह ऊँचे कद की हैं !

खोजी--जनाब, मुझसे पूरे दो हाथ ऊँची हैं। आ कर बोलीं, इतने दिनों के बाद आये तो क्या छाये हो ! मैंने तमग़ा दिखा दिया तो खिल गयीं। कह्दा, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तोला करूँगी।

मीडा--क्या पत्थर का तमग़ा है १ क्या खूब क़दर की है ।

क्लारिसा--और तुम्हें तमग़ा कब्र मिला !

खोजी--कहीं ऐसा कह्दना भी नहीं ।

इतने में आजाद पाशा चुपके से आगे बढ़े ओर कहा--आदात अजे है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं !

खोबी--भाईजान, वह रंग जमाया कि अब खोजी ही खोजी हें |

आज़ाद--भई, इस वक़्त एक बढ़ी फ़िक्र में हूँ। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल वह नवाब वाह्रिद हुसैन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है| बतलाओ, क्या तदबीर करूँ !

खोजी--अजी, यह लटके हमसे पूछो । यहाँ सारी लिंदगी यही किया किये हैं | किसी चूड़ीवाली को कुछ दे-दिलछा कर राज्जी कर छो ।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गयी । जा कर एक चूड़ीवाली को बुरा छाये।

आकन्राद--क्यों मलेमानस, तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी ! अगर कोई काम निकके तो कहें, बरना देझार है।

चूड़ीवाली--अरे, तो कुछ मुँह से कहिएगा मी ! आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है ।

आजाद--नवात्र वाजिद हुसैन को जानती हो !

चूडीवाली---अपना मतलब कहिए |

आजाद-- बस उन्हीं के महल में एक पैग़ाम भेजना है ।

चूड़ीवाली--आपका तो वहाँ गुजर नहीं हो सकता । हाँ, आपका पैग़ाम वहाँ तक पहुँचा दूँगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके खातिर कर दूँगी |

आज़ाद--तुम सुरैया बेगम से इतना कदह्द दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कह्दा है ।

चूड़ीवाली--आजाद आपका नाम है या किसी और का !

आजाद--किसी और के नाम या पेशाम से हमें क्या वास्ता | मेरी यह तस्वीर ले लो, मौक़ा मिले तो दिखा देना ।

चूड़ीवाली ने तसवीर टोकरे में रखी और नवात्र वाजिंद हुसैन के घर चली | सुरैया बेगम कोंठे पर बैठी दरिया की सैर कर रहा थीं। चूड़ोवाली ने जा कर सलाम किया ।

मरैया--कोई अच्छी चीज़ लायी द्वो या खाली-खूली आयी दो !

चूड़ीवाली--हुजूर, वह चीज लायी हूँ. कि देख कर खुश हो बाइएगा; मगर इनाम भरपूर देँगी।

सुरेया--क्या है, जरा देखेँ तो !

चूड़ीवाली ने बेगम साहब के हाथों में तसवीर रख दी । देखते द्वी चोंक के बोलीं सच नभताना कहाँ पायी !

चूढ़ीवाली---पदले यह बतलाइए कि यह कौन साइब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं !

सुरया--बस यह न पूछो, यह बतलाओ कि तसवीर कहाँ पायी !

चूड़ीवाली--जिनकी यह तसवीर है, उनको आपके सामने ल्लाऊँ तो क्या इनाम पाऊं !

सुरैया-- इस बारे में में कोई बातचीत करना नहीं चाहती । अगर वह खेरियत से लोट आये हैं तो खश रहें और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ीवाली--हुजूर, यद्द तसबीर उन्होंने मुझको दी । कहा, अगर मौक़ा हो तो हम भी एक नजर देख ले ।

सुरैया--कह देना कि आज़ाद, तुम्हारे लिए दिल से दुआ निकलती है, मगर पिछली बातों को जाने दो, हम पराये बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा

| दिल कितना द्टी साफ़ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मादूम है, नवात्र साहबत्र को

मालूम हैं। गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा ।

चूढीवाली--हुज्र, एक दफ़ा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आँखों की क्रसप्र, बहुत तरस रहे हैं ।

तुरैया--चाहे जो हो, जो बात खुदा को मंजूर थी, वह हुई और उसी में अब हमारी बेददतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, में इसे छिपा कर रखूँगी।

चूड़ीवाली- तो हुजूर, क्या कह दूँ। साफ़ टका सा जवात्र |

तुरैया-- नहीं, ठुम समझा कर कह देना कि तुम्दारे आने से जितनी खुशो हुई, उसका द्वाल खुदा ही जानता है । मगर अन्न तुम यहाँ नहीं आ सकते और न मैं दी कहीं जा सकती हूँ; और फिर अगर चोरी-छिपे एक दूसरे को देख भी लियां तो क्या फ़ायदा | पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासित्र है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इजत है। पहले में तुमसे ग़रज़ की मुहब्बत करती थी, अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूँ | ख़ुदा ने चाहा तो शादी के दिन द्ुस्नआरा बेगम के यहाँ मुला-क्रात होगी |

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उम्हें परदे ओर हया का इतना खयाल है। चूड़ीवाली ने जा कर यहाँ की सारी दास्तान आज़ाद को सुनायी । आज़ाद बेगम की पाकदामनी की घंटों तारीफ़ करते रहे । यह सुन कर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहाँ जरूर आयेंगी ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०७

मियाँ आज़ाद सैलानी तो ये द्वी, हुस्नआरा से मुलाक़ात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरग़ाइत करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही । एक दिन सैर करते-क रते वह एक बाग़ में पहुँचे और एक क़ुसी पर जा बैठे । एकाएक उनके कान में आवाज़ आयौ-- चले हम ऐ. जुनूँ जब्र फ़स्ले गुल में सैर गुलशन को, एवज्ज फूल्में'के पत्थर से भरा गुलचों ने दामन को । समझ कर चाँद हमने यार तेरे रूए रौशन को; कह्दा बाले को हाला और महे नो ताके गरदन को | जो वह तलवार खींचे तो मुक़ा बिछ कर द में दिल को लड़ाऊँ दोस्त से अपने में उस पहल के दुश्मन को । करूँ आहें तो मेह को ढाँप कर वह शोल कहता है--- था से कुछ नहीं है डर चिराग्े ज़ेर दामन को | तवाजा चाहते हो ज़ाहिदों क्या बादःख्वारों से, कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गदन को ।

आज़ाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है | इतने में एक खिड्डकी खुली और एक चाँद सी सूरत उनके सामने खड़ी नज़र आयी । मगर इत्तिफ़ाक़ से उसकी नजर इन पर नहीं पड़ो । उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रख कर किसी हमजोली को पुकारा, तो आज़ाद ने यह शेर पढा---

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौद्दों पर इस तरह; जैसे मेहरात्र पर अल्लाह छिखा होता है।

उस नाजनीन ने आवाज सुनते ही उन पर नज़र ढाठी और दरीचा बंद कर लिया । दुपट्टे को जो दवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर | इस पर उस शोख ने झँझ्ला कर कहा, यह निगोड़ा दुषद्वा भी मेरा दुश्मन हुआ है |

आज़ाद--अलाह रे ग़ज़ब, दुपट्टे पर भी ग़स्सा आता है !

सनम--ऐस यह कौन बोला ! लोगो, देखो तो, इस बाग में मरघट का मुर्दा कहाँ से आ गया [

सदहेली--ऐ कहाँ, बहन, हाँ-हाँ, वह बैठ; है, में तो डर गयी ।

नम--अख्खाह, यह तो कोई सिड्धी सा मालूम होता है ।

आजाद--या खदा, यह आदमज़ाद हैं या कोहक़ाफ़ की परियाँ !

सनम--तुम यहाँ कहाँ से भटकके आ गये !

आजाद-- भटकते कोई और होंगे हम ते। अपनी मंजिल पर पहुँच गये ।

सनम--मंजिल पर पहुँचना दिक्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है |

आजाद- यह कहाँ का दस्तूर है कि कोई जमीन पर हो, कोई आसमान पर ! आप सवार, मैं पैदल, भला क्योंकर बने !

सनम--और सुनो, आप तो पेट से पाँव निकालने लगे, अब यहाँ से बोरिया बधना उठाओ और चलता धंधा करो |

आजाद--हतना हुक्म दो कि क़रीत्र से दो-दो बातें कर ले ।

सनम--वह काम क्यों करें जिसमें फ़साद का डर है|

सददेली--ऐ, बुला लो, भले आदमी मादूम होते हैं । (आजाद से) चले आइए साहब, चले आइए ।

आज़ाद ख़श-ख़श उठे और कोठे पर जा पहुँचे ।

सनम- वाह बहन, वाह, एक अजनबी को बुला लिया | तुम्हारी भी क्या बातें हैं ।

आजाइ--भई, हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए ।

सनम- हज़रत, आपके भले ही के लिए, कद्दती हूँ, यद्द बड़े जोखिम की जगह है। हाँ, अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खूद ताड़ लोगे ।

आजाद ने जो यह बातें सुनों तो चक्कर में आये कि दिंदोस्तान से रूस तक हो आये और किसी ने चूँ तक न की, और यहाँ इस तरह की घमकी दी जाती है। सोचे कि अगर यह धुन कर यहाँ से भागन्जाते हैं तो यह दोनों दिल में हँसांगी और अगर ठदर जाये तो आसार बुरे नजर आते हैं। बातों-बातों में उस नाजनीन से पूछा-- यह क्या भेद हे !

सनम--यह न पूछो भई, दमारा हाल बयान करने के क्राबिल नहीं ।

आज़ाद-आखिर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहाँ कया तकडीफ़ हे ! मुझे तो कुछ दाल में काला जरूर मादूम होता है।

सनम--जनात, यद्द जहन्नुम है ओर हमारी जैसी कितनी द्वी औरतें इस जहन्नुम में रहती हैं | यों कहिए कि हमीं से यह जदन्नुम आब्ांद है | एक कुंदन नामी बुढ़िया बरसों से यही पेशा करती है। खदा जाने, इसने कितने घर तबाह किये| अगर मुझसे पूछो कि तेरे माँ-बाप कहाँ हें, तो में क्या जवाब दूँ, मुझे इतना ही मांदूम दे कि यह बुढ़िया मुझे किसी गाँव से पकड़ छायी थी । मेरे मॉ-बाप ने बहुत तलाश को, मगर इसने भुझे घर से निकलने न दिया । उस वक़्त मेरा सिन चार-पाँच साल से ज़्यादा न था।

आज़ाद--तो क्या यहाँ सब ऐसी ही जमा हैं !

सनम--यहं जो मेरी सद्देली हैं, किसी बड़े आदमी की बेटी हैं । कुंदन उनके

,. चंदाँ आने जाने छगी और उन सब्रों से इस तरह की सॉठ-गाँठ की कि औरतें इसे

बुलाने लगों | उनको क्या मादूम था कि कुंदन के यह दृथकंडे हैं |

आज़ाद--मछा कुंदन से मेरी मुलाक़ात हो तो उससे केसी बातें कहूँ |

सनम--वह इसका मौक़ा ही न देगी कि तुम कुछ कहो | जो कुछ कद्दना होगा, वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहाँ क्योंकर आये (

आज़ाद--मैं कद्द दूँगा कि तुम्हारा नाम सुन कर आया |

सनम--हाँ, इस तरकीब से बच जाओगे । जो इमें देखता है, समझता है छि यह बड़ी खशनसीब हैं। पहनने के लिए अच्छे से अच्छे कपड़े, खाने के लिए अच्छे से अच्छे खाने, रहने के लिए बड़ी से बड़ी हवेलियाँ, दिल बदलाव के लिए हमजोलियाँ सब कुछ हैं; मगर दिल को खशी और चेन नहीं । बड़ी खुशनसीब वे

ओरतें हैं जो एक मियाँ के साथ तमाम उम्र काट देती हैं। मगर इम बदनसीब औरतों के ऐसे नसीब कहाँ १ उस बुढिया को खदा ग़ारत करे जिसने हमें कद्दीं का न रखा।

आजाद--मुझ्ले यह सुन कर बहुत अफ़सोस हुआ | मैंने तो यह समझा था कि यहाँ सन चेन ही चेन है, मगर अत्र मालूम हुआ कि मामछा इसका उल्टा है।

सनम--हज्ारों आदमियों से बातचीत द्ोती है, मगर हमारे साथ शादी करने को कोई पतियाता हद्वी नहीं । कुंदन से सब डरते हैं। शोहदे-लच्चों की बात का एतबार कया, ६:-एक ने निकाह का वादा किया भी तो पूरा न किया |

यह कद कर वह नाज़नीन रोने लगी।

भाजाद ने समझाया कि द्विल को टारस दो और यहाँ से निकलने की हिकमत सोचो ।

सनम--खुदा बड़ा कारसाज़ है, उसको काम करते देर नहीं लगती, मगर अपने गुनाहों को जब देखते हैं तो दिल गवाद्दी नहीं देता कि हमें यहाँ से छुटकारा मिलेगा।

आजाद-- मैं तो अपनी तरफ़ से जरूर कोशिश करूँगा |

सनम--तुम मर्दों की बात का एतबार करना फ़जूल है ।

आज्ाद--वादह | क्या पाँचों उंगलियाँ बगबर होती हैं ?

इतने में एक और हसीना आ कर खड़ी हो गयी । इसका नाम नूस्जन था | आज़ाद ने उसप्ते कद्दा--तठुम भी अपना कुछ हाल कहो | यहाँ कैसे आ फँसी १

नूर--मियाँ, हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें अपना द्वाल खद ही नहीं मालूम । खदा जाने, हिंदू के धर जन्म लिया या मुसल्मान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुदिया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसछा कर ले आये। सारा जमाना उसके हथकंडों को जानता है, मगर किसी से आज तक बंदोन्नस्त नहीं हो सका | अच्छे-अच्छे मद्ठाजन और व्यापारी उसके मकान एए प्राथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरो+-जादे उसका दम भरते हैं। शाहजादों तक के पास इसकी पहुँच है, सुनते ये कि बुरे काम वा नतीजा बुरा होता है, मगर ख़ुदा जाने, उढ़िया को इन बुरे कामों की सजा क्यों नहीं मिलती १ इस चुड़ेल ने खूब रुपये जमा किये हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गयी दे ।

आज्ाद--तुम सब की सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातों !

सनम--भाग जायें तो फिर खायें क्या, यद्द तो सोचो |

आजआद--इसने अपनी मक्कारी से इस कदर तुम सबको बेवकूफ़ बना रखा है ।

सनम--बेवकूफ़ नहीं । बनाया है, यद्द बात सही है, खाने भर का सहारा तो हो जाय |

आजाद--तुम्द्दारी आँख पर राफ़तत की पट्टी बाँध दी है। तुम इतना नहीं सोचती कि तुम्दारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मैंहताज रहोगी ! जो पसंद दो उसके साथ शादी कर लो और आराम से बिंदगी बसर करो |

सनम--यद्द सच हे, मगर उसका रोब मारे डालता है ।

आजाद--उफ रे रोब, यद्द बुढिया भी देखने के क्राबिल है।

सनम--हइस तरद की मीठी मीठी बातें करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढने लगोगे ।

आज़ाद--अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करू ।

सनम--वाह, नेकी और पूछ-पूछ १ आपका हमारे ऊपर बड़ा एड्सान होगा। हमारी जिंदगी बरत्राद हो रही है। दमें हर रोज गालियों देती है और हमारे माँ बाप को कोसा करती दे । गो उन्हें आँखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहाँ जाय !

इस फ़िकरे से आज्ञाद की आँखें भी डबडबा आयीं, उन्होंने ठान ली कि इस ब्दिया को जरूर सज़ा करायेंगे ।

इतने में सहेली ने आ कर कटद्ठा--बुढिया आ गयी है, धीरे-धीरे बातें करो |

आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दो की दोनों चली गयीं ।

कुंदन--बेटा, आज एक और शिकार किया, मगर अभी बतायेंगे नहीं । यह दरवाजे पर कौन खहा था !

सनम-कोई बहुत बड़े रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं ।

कुंदन ने फ़ौरन आज्ञाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आये दो बेटा ! क्या काम है!

आजाद--मैं खास आपके पास आया हूँ ।

कुंदन--अच्छा बैठो । आजकल बे-फ़सल की बारिश से बड़ी तकलीफ़ होती है, अच्छी वद्द फ़लल कि हर चीज वक़्त पर हो, बरसात द्ो तो मेंद बरसे. सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में छू चले, मगर जहाँ कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी पैदा दो गयी।

आजाद--जी हाँ, क्रायदे की बात है।

कुंदन--और बेटा, हजार बात की एक बात है कि आदमी बुराई से बचे |

आदमी को याद रखना नाहिए कि एक दिन उसको मुँह दिखाना है, बिसने उसे पैदा किया | बुरा आदमी किस मुँद्द से मुँह दिखायेगा !

आज्ञाइ- क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात !

कुंदन--मैंने तमाम उम्र इसी में गुजारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूँ उनको खिल।ऊँ-पिशऊँ और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊँ। खडट्ा मुझे इसका बदला दे तो वाह-वाह, वरना और कुछ फ़ायदा न सही, तो इतना फ़ायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी ज्ञात से परवरिश हुई ।

अ'जाद--छटठा ज़रूर इसका सवात्र देगा ।

कुंदन--तुमने मेरा नाम किससे सुना !

आज्ञाद--आपके नाम की खशबू दूर-दूर तक फेली हुई है ।

कुंदन--वाह, मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ़ ही नहीं करती । जो लड़-कियाँ में पालती हूँ उनको बिलकुल अपने ख़ास बेटों को तरह समझती हूँ। क्या मजाल कि जरा भी फ्रक् हो। जब्र देखा कि चह सयानी

हुईं तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देख-मालके। आदी मर्द और औरत की रज़ामंदी से होनी चाहिए ।

आजाद --यही शादी के माने हैं ।

कुंदन--तुम्हारी उम्र दराज़ हो बेठा, आदमी जो काम करे, अक़्ल से, दर पदलू को देख-भालके |

आजाद---बरशेर इसके मियाँ-बीबी में मुहब्बत नहीं हों सकती और यों ज़बर-दस्ती की तो बात ही और है ।

कुंदन-मेरा कायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूँ उसके सिवा और किसी से «हीं ब्याइती और लड़की से पूछ लेती हूँ कि बेटा, अगर तुमको पसंद हो तो अच्छा, नहीं कुछ जबरदस्ती नहीं है ।

यह कह कर उसने मद्दरी को इशारा किया । आज़ाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं। महरी फ़ौरन कोठे पर गयी और थोड़ी दही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुंदन-- मैंने इन सब्चको गाना भी सिखाया है, गो यहाँ इसका कर नहीं ।

आजाद-- तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाती है।

कुंदन--हाँ, बस एक इस मुढ्क में नहीं ।

आजाद--यह तो तीन की आवाज़ मादूम द्वाती हैं, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ़ है ।

कुंदन-- एक तो उनका दिल बहलता है, दुसरे जो सुनता है उसका भी दिल बहलता है |

आज्ञाद--मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं !

कुंदन--देखो बुलवाती हूँ, मगर बेटा, नीयत दा# रखनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया । वह लजाती हुई आया और बुढ़िया के पास इस तरह गरदन झ्ुकाके बैठी जेसे कोई शरमीली दुरूहिन | भआाजाद-- ऐ, साइब, सिर ऊँचा करके बैठो, यह क्या बात है ! कुंदन--बेटा, अच्छी तरह बैठों सिर उठा कर। (आज़ाद से) हमारी सब हकुड़कियाँ शरमीली ओर हयादार हैं । आज़ाद--यह आप ऊपर क्या गा रही थीं १ इम भी कुछ सुनें। कुंदन--बेटी नूर, वही ग़ज़ल गाभओो | नूर-- अम्माजान, हमें शर्म आती है | कुंदन--कदती है, हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी खातिर से गाभो । नूर--(कुंदन के कान में) अम्माँजान, हमसे न गाया जायगा | आजाद--यह नयी बात है--- अकड़ता है क्या देख-देख आईना, हसीं गरचे है तू पर इतना पधमंड | कुंदन--लो, इन्होंने गाके सुना दिया । महरी--कहद्विए, हुजुर, दिल का परदा क्या कप है जो आप मारे झा के मैंदद छिपाये लेती हैं। ऐ. चीबी, गरदन ऊँची करो, जिस दिन दुलहिन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुज़ायका नहीं है । कुंदन--हाँ, बात तो यही है, और क्या ! आज्ाद--शुक्र है, आपने ज़रा गरदन तो उठायी-- बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी “कुछ सवालो-जवातब बाकी है। कुंदन-- (हँस कर) अब तम जानो और यह जाने | आज्ञाद-- ऐ. साहब, इधर देखिए । न्र--अभ्माँजान, अब दम यहाँ से जाते हैं । कुंदन ने चुटकी ल कर कद्दा--कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल ख़श हो, कुछ जवात्र दो, यह क्या बात है । हू नूर--अम्मॉजान, किसको जवाब दूँ ! न जान, न पहचान | कुंदन इन कार्मों में आठों गाँठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गयी।

नूर ने भी बनावट फे साथ चाहा कि चली जाय, इस पर कुंदन ने डॉट बतायी--हैं-हैं, यह बया, मे मानस हैं.वा कोई नीच क्रोम! शरीफ़ों से इतना डर |! आखिर नूर शर्मा कर बैठ गयी । उधर कुंदन नज़र से गायब हुई, इधर मद्दरी भी चम्पत । आजाद--4६ बुढिया तो एक ही काइयाँ है । नूर-- अभी देखते जाओ, यह अपने नजदीक तुमको उम्र भर के लिए शलाप्त बनाये लेती दे, जा इमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया दोौता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते ।

आज्ाद--भछा यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शथरमाती रहीं ९

नूर--हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें !

आब्ाद --अच्छा, उन दोनों को क्यों न बुलाया !

नूर--देखते जाओ, सबको बुलायेगी ।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आयी |

आज्ाद--महरी साहब, यह क्या अंधेर है ! आदमी आदमी से ज्ोलता है या नहीं !

मदरी --ऐ बीची, तुमने क्या बोलने की क्रसम खा छी है। ले अब हमसे तो बहुत न उंड़ो | ख़ुदा झूठ न बोलाये तो बातचीत तक नौषत आ चुकी होगी और हमारे सामने घँघट की लेती हैं

आज़ाद--गरदन तक तो ऊँची नहीं करतीं, बोलना-चालना केसा, या तो बनती हैं या अम्माँजा; से डरती हैं ।

महरी--वाह-वाद, हुआुर वाह, भछा यह काहे से जान पड़ा कि बनती हैं ! क्या यह नहीं हो सकता कि आँखों को हया के सब्र से लबातों हों !

आज्षाद --वाह, आँख कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर--ख़दा की सवार झूठे पर |

मदहरी - शाबाश, बस यह इसी बात की मुंतज़िर थीं। में तो समझे ही बैठी थी कि जब यह जब्ान खोलेंगी, फिर बंद ही कर छोड़ेंगी |

नूर--ह में भी कोई गँवार समझा है क्या !

आजाद--वल्ला हू, इ4 वक़्त इनका त्योरी चढ़ाना अजब छलुत्फ़ देता है। इनके जौहर तो अब खुले | इनकी अम्मॉब्ान कहाँ चली गयीं ! ज़रा उनकी बुलवाइए तो |

महरी--हुजुर, उनका क्रायदा है कि अगर दो दिलछ मिल जाते हैं तो फिर निकाइ पढ़वा देती हैं, मगर मद भलामानस द्वो, चार पैसे पैदा करता द्वो। आप पर तो कुछ बहुत दी मिहरब्रान नक्षर आती हैं कि दो बातें होते ही उठ गयीं, वरना मद्दीनों जाँच हुआ करती है, आपकी झक़ल-सूरत से रियासत बरसती है |

नूर---वाह, अच्छी फत्रती कद्दी, बेशक रियासत बरसती है |

यह कह नूर ने आद्दिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया।

आज़ाद--मैं तो इनकी आवाज़ पर आश्िक़ हूँ ।

नूर--खुदा की शान, आप क्या और आपको क्ररदानी क्या !

आज्ाइ--दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों मदरी !

महरी--अब यह आप जानें ओर वह जानें, हमसे क्या !

एकाएक नूर उठ कर चली गयी । आज़ाद और मदरी के सिवा वहाँ कोई न रद्दा, तब महरी ने आज़ाद से कह्दा--हुजूर ने मुझे पहचाना नहीं, और में हुजूर को देखते ही पहचान गयी, आप सुरेया बेगम के यहाँ आया-जाया करते थे ।

आज़ाद-हाँ, अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहाँ देखा था | कह्दो, मादूम है कि अब वह कहाँ हैं !

महरी--हुजुर, अब वह वहाँ हैं जहाँ चिड़िया भी नहीं जा सकती; मगर कुछ इनाम दीजिए तो दिखा दूँ । दूर द्वी से बात-चीत होगी । एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क़ में जोगिन दो गयीं । जब मादूम हुआ कि आज़ाद ने हुल्आरा से शादी कर ली तो मजबूर हो कर एक नवाब से निकाह पढ़वा छिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया । जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफ़ाई न करनी चाहिए।

आज़ाद--हमने घुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझ कर निकल भागे |

महरी--अगर आप कुछ दिलवायें तो मैं बीड़ा उठाती हूँ कि एक नज़र अच्छी तरह दिखा दूँगी |

आजाइ--मंजुर, मगर बेईमानी की सनद नहीं ।

महरी--क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी भी न दूँगी ।

महरी ने आज़ाद से यहाँ का सारा कच्चा चिट्ठा कष् घुनाया--मियाँ, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है, उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मंत्र नहीं। पर आजाद को सुरैया बेगण की धुन थी | पूछा--भलछा उनका मकान हम देख सकते हैं !

महरी--जी हाँ, यह क्या सामने हे ।

आबाद--और यह जितनी यहाँ हैं, सब इसी फेशन की होंगी !

मदरी--किसी को चुरा छायी है, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न !

इतने में किसी ने सीटी बज्ायी और महरी फ़ौरन उधर चली गयी । थोडी ही देर में कुदन भायी और कद्दा--ऐं, यहाँ तुम बेठे हो, तोबा तोबा, मगर लड़कियों को (महरी को पुकार कर) क्या करूँ, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई दृद ही नहीं।ऐ,,

उनको बुलाओ, कहो, यहाँ आकर बैठें | यह क्या बात है ! जैसे कोई काटे खाता है ! यह सुनते ही सनम छम्-छम करती हुई आयी । आज़ाद ने देखा तो होश उड़

गये, इस मरतवा राज़त्र का निखार था। आज़ाद अपने दिल में सोचे कि यह सूरत और यह पेशा ! ठान ली कि किसी मौक़े पर जिले के दहाकिम को ज़रूर ल्यर्येंगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिए इन परियों को इस मकक्कार औरत से बचाओ ।

कुंदन ने सनम के द्वाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा | फिर आज़ाद से बोली--अगर किसी चीज़ की जरूरत द्वो 'तो बयान कर दो ।

आज़ाद--इस वक़्त दिल वह मज़े लूट रहा है जो बयान से बाहर है ।

कुंदन--मेरे यहाँ सफ़ाई का बहुत इंतजाम हे ।

आजाद--आगके कद्दने को ज़रूरत नहीं ।

कुदन--यह जितनी हैं सब एक से एक बदी हुई हैं ।

आज़ाद--इनके शौहर भी इन्हीं के से हों तोबात है।

कुंदन-- इसमें किसी के सिखाने की ज़रूरत नहीं | मैं इनके लिए ऐसे लोगों को चुनेंगी बिनका कहीं सानी न हो | इनको खिलाया, पिछाया, गाना सिखाया, अब इन पर हत्म कैसे बरदाइत करूँगी !

आज़ाद--और तो और, मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया |

कुरन---अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बरात्र, आप दो-चार दिन यहाँ रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूँगी, बस अब तो खुश हुए ।

महरी--वह शर्ते तो बता दीज्षिए |

कुंदन--खत्नरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझी !

मदरी - हाँ हुजूर, खता हुई ।

आज़्ाद--फिर अन्न तो शर्ते बयान द्वी कर दीजिए न ।

कुदन --इतमीनान के साथ बयान करूँगी।

आजाद--(सनम से) तुमने तो हमें अपना ग़लाम ही बना लिया |

सनम ने कोई जवाब न दिया ।

आज्ञार--अन्न इनसे क्या कोई बात करे--

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना सुनेंगे वद्द काहे को किस्सा हमारा

कुंदन--ऐ हाँ, यह तुममें क्या ऐच है ! बातें करो बेटा ! सनम--अम्माजान, कोई बात हो तो कया मुजायक्रा और थों ख्वाहमख्वाह एक

अजनबी से बार्ते करना कौन सी दानाई है कुंदन--खुदा को गवाह करके कहती हूँ कि यह सबकी सब बड़ी शरमीली हैं ।

आज़ाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इसलिए कुंदन से रखसत माँगी और कहा कि आज माफ़ कीजिए, कल ह्वाज़िर होऊँगा, मगर अकेले आऊे, या दोस्तों को भी साथ लेता आरऊँ! कुंदन ने खाना खाने के लिए बहुत जिद की मगर आजाद ने न माना ।

आज़ाद ने अभी बाग के बाहर भी कदम नहीं रखा था कि महरी दौडी आयी और कद्दा--हुजूर को बीबी बुछाती हैं। आजाद अंदर गये तो क्या देखते हैं कि कुंदन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ कर है ।

कुंदन--यदह एक जगह गयी हुई थीं, अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कद्दा, तुमको जरी दिखा दूँ कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी क़रीब नहीं आने पाती ।

आज़ाद--बेशक, बी का यहाँ ज़िक्र ही क्या है !

कुंदन--सबसे मिल जुल के चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उदूल है, मुझे आज तक किसी ने किसी से छड़ते न देखा होगा ।

आजाद--यह तो सबों से बढ-चट कर हैं ।

कुंदन--बेटा, सभी घर ग्हस्थ की बहू-बेटियाँ हैं, कहीं आये न जायें, न किसी से हँसी, न दिल

आजाद--बेशक, हमें आपके यहाँ का क़रीना बहुत पसंद आया।

कुंदन--बोलो बेटा, मुँद से कुछ बोलो, देखो, एक शरीफ़ आदमी बेंठे हैं और तुम न बोलती हो न चाछती हो |

परी--क्या करूँ, आप द्वी आप बढ़ूँ १

कुंदन--हाँ यह भी टीक है, वह तुम्दारी तरफ मुँह करके बात-चीत करें तब बोलो । लीजिए साहब, अन्न, तो आप द्वी का कुसूर ठद्दरा ।

आज्ञाद--भल्य सुनिए तो, मेहमानों की खातिरदारी भी कोई चीज़ है या नहीं !

कुंदन-- हाँ, यह भी ठीक है, अब बताओ बेटा !

परी--अम्मॉजान, हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सबके दिल में है, इम मला किसी का खातिरदारी क्यों करे १

कुंदन---अब फ़र्माइए हज़रत, जवाच पाया !

आजाद--वह जवाब पाया कि लाजवात्र हो गया | खेर साहब, खातिरदारी न सही, कुछ शसा ही कीजिए, ।

परी--उस्के लिए भी क्रिस्मत चाहिए ।

मियाँ आजाद बड़े बोलककड़ ये, मगर इस वक्त रिद्दी-पिट्टी भूल गये |

कुंदन--अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं !

परी - अम्माँजान, आपकी तालीम ऐसी-बैती नहीं हे कि हम बंद रहें ।

कुंदन--मगर मियाँ साहब की क़छूई खुल गयी | अरे कुछ तो फ़र्माइए ह्वज़रत--

कुछ तो कह्दटिए कि छोग कहते हैं-- आज 'गालिबः राजलसरा न हुआ।

आजाद--आप शेर भी कहती हैं !

नूर--ऐ वाह, ऐसे घबड़ाये कि ग़ालिब" का तख़ल्टस मोजूद है ओर आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं ! +

परी--आदमी में हवास ही दवास तो हैं; ओर है क्या !

सनम -हम जो गरदन झकाये बैठे थेतो आप बहुत शेर थे, मगर अब द्ोश उड़े हुए हैं |

सदेली--तुम पर रीक्षे हुए हैं बदन, देखती हो, किन आँखों से घूर रहे हैं ।

परी--ऐ, हटा भी, एडी-चोटी पर कुरबान कर दूँ ।

आक्षाद--या खुदा, अब इम ऐसे गये गुज़रे दो गये !

परी--और आप अपने को समझे क्या हैं !

कुंदन -- यद्द हम न मानेंगे, हँसी-दिलल्लगी और बात है, मगर यह भी छाख दो

लाख में एक हैं । परी -- अब अम्मॉजान कब तक तारीफ़ किया करेंगी।

आज्ञाद--फिर जो तारीफ़ के क्राबिल होता है उसकी तारीफ़ द्वोती ही है| नूर---ऊँह-उँह, घर की पुटकी बासी साग | आब्ाद--जलन होगी कि इनकी तारीफ़ क्यों की |

नूर--यहाँ तारीफ़ की परवा नहीं । कुंदन - यद्द तो खूब कही, अब इसका जवात्र दीजिए । आज्ञाद--ह सीनों को किसी की तारीफ़ कब पसंद आती है ! नूर--भला खेर, आप इस क्राब्रिल तो हुए कि आपके हुस्न से छोगों के दिल में जलन होने लगी । कुंदन--(सनम से) तुमने इनको कुछ सुनाया नहीं बेटा ? सनम--हम क्या कुछ इनके नौकर हैं ! आज्ञाद--खूदा के लिए कोई फड़कती हुई ग़ज़ल गाओ; बल्कि अगर कुंदन साहब का हुक्म हो तो सब्र मिल कर गारये । सनम - हुक्म, हुक्म तो हम बादशा ह-वज़ीर का न मानेंगे ! परी--अब्र इसी बात पर जो कोई गाये | कुदन--अच्छा, हुक्म कद्दा तो क्या गुनाह किया, कितनों ढीठ लड़कियाँ हैं कि नाक पर मकखी नहीं बैठने देती । सनम-- अच्छा बहन, आओ, पिक-मिल कर गायें-- ऐ इइक़े कमर दिल का जलाना नहीं अच्छा । परी--यह कहाँ से बूढ़ी ग़ज़ल निकाली ! यह ग़ज़ल गाओ-- गया यार आफ़त पड़ी इस शहर पर; उदासी बरसने लगी बाय व दर पर | सत्रा ने भरी दिन को एक आह टंडी; क्रयामत हुई या दिले नौहागर पर। मेरे भावे गुल्शन को आतश ढछगी है ; नज़र क्या " पड़े खाक गुलहाय तर पर ! कोई देव था या कि जिन था वह काफ़िर ; मुझ्ते गुस्सा आता है पिछले पहर पर । एकाएक किसी ने बाहर से आवाज़ दी कुंदन ने दरवाज्षे पर जा कर कहा--- कोन साहब हें ! सिपाही -दारोग़ा जी आये हैं, दरवाजा खोल दो । कुंदन--ऐ, तो यहाँ किसके पास तशरीफ़ लाये हैं ! सिपाही --कुंदन कुटनी के यहाँ आये हैं | यही मकान है या और ! दूसरा सिपाहो--हाँ-हाँ जी, यही हे, हमसे पूछो । इधर कुंदन पुलीसवाछों से बातें करती थी, उधर आज्ञाद तीनों औरतों के साथ बाग में चक्के गये और दरवाज़ा बंद कर दिया। आजाद--यह माजरा क्या है भई ! सनम--दौड़ आयी है मियों, दरवाजा बंद करने से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि इस घर से निकल भागें।

परी--हमें यहाँ एक दम का रहना पसंद नहीं |

आज़ाद--किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेती !

नूर--ऐ है | यह क्या राजब करते हो, आहिस्ता से बोलो |

आज्ाद--आखिर यह दौड़ क्यों आयी है, दम भी तो सुनें ।

सनम--कल एक भलेमानस आये थे | उनके पास एक सोने को घड़ी, सोने की लंजीर, एक बेग, पॉच आश्तियाँ और कुछ रुपये थे | यह भाप गयी | उसको शराब पिछा कर सारी चीजें उड़ा दीं | सुबह को जब उसने अपनी चीज़ों की तलाश की तो घमकाया कि टरांओगे तो पुलीस को इत्तछा कर दूँगी। वह बेचारा सीधा-सादा आदमी, चुपचाप चला गया ओर दारोगा से शिकायत की, अब वही दौड़ आगी है |

आजाद--अच्छा | यह दथकंडे हैं ।

सनम--कुछ पूछो न, जान अज़ाब में है |

नूर--अब खुदा ही जाने, किस-किस का नाश बह करेगी, क्या आग छगायेगी ।

सनम--अन्री, वह किसी से दबनेवाली नहीं है ।

परी--वह न दबंगी साहब तक से, यह दारोग़ा लिये फिरती हैं !

सनम--जरी सुनो तो कया हो रहा है !

आज़ाद ने दरवाज़े के पास से कान लगा कर सुना तो मारूम हुआ कि बीबी कुंदन पुलीसवालों से बद्दस कर रद्दी हैं कि तुम मेरे घर भर की तलाशी लो । मगर याद रखना, कल ही तो नालिश करूँगी। मुझे अकेली औरत समझके धमका लिया है। मैं अदालत चर्देंगी । लेना एक न देना दो, उस पर यद्द अँधेर ! मैं साहब से कहूँगी कि इसकी नियत खराब है, यह रिआया को दिक्न करता है ओर परायी बहू-बेटी को ताकता है ।

सनम--सुनती हो, केसा डॉट रही है पुलीसवालों को ।

परी - चुपचाप, ऐसा न हो, सब इधर आ जायें।

उधर कुंदन ने मुसाफ़रिर को कोसना शुरू किया --अल्लाह करे, इस अठवारे में इसका जनाजा निकले | मुए ने आके मेरी जान अज़ाब में कर दी। मैंने तो ग़रीब मुसाफ़िर समझ कर टिका लिया था | मुआ उल्टा लिये पढ़ता है |

मुसाफ़िर--दारोग़ा जी, इस ओरत ने सैकड़ों का माल मारा है |

सिपाहदी--हुज्र, यह पहले ग़लाम हुसैन के पुल पर रहती थी | वहाँ एक अद्दी-रिन की लड़की को फुसछा कर घर लायी और उसी दिन मकान बदल दिवा। अद्दीर ने थाने पर रपट लिखवायी । हम जो जाते हैं तो मकान में ताछा पड़ा हुआ, बहुत तलाश की, पता न मिछा। खदा आने, लड़की किसी के हाथ बेच डाछी या मर गयी।

कुंदन--हाँ-हाँ, बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है ।

दारोगा--(मुसाफ़िर से) क्यों हज़रत, जब आपको मादूम था कि यह कुद्दनी है तो आप इसके यहाँ टिके क्यों !

मुसाफ़ि--बेधघा था, और क्या, दो-ठाई सो पर पानी फिर गया, मगर शुक्र दे कि मार नहीं डाला | कुंदन--जी हाँ, साफ़ बच गये । दारोग़ा--(कुंदन से) तू ज़रा भी नहीं शरमाती ! कुंदन--श रमारऊँ क्यों १ क्या चोरी की है ! , दारोग़ा--बस, खैरियत इसी में है कि इनका माल इनके हवाले क़र दो । कुंदन--देखिए, अब किसी दुसरे घर डाका डा्दूँ तो इनके रुपये मिले । सिपाही--हुजूर, इसे पकड़के थाने ले चलिए, इस तरह यह न मानेगी ! कुंदन--थाने में क्यों जाऊं! क्या इज्जत बेचनी है | यह न समझना कि अकेली अभी अपने दामाद को बुला दूँ तो आँखें खुल जायें। यह सुनते दी आज़ाद के द्वोश उड़ गये। बोछे, इस मुरदार को यूझी क्या | महरी--जरा दरवाज्ञा खोलिए | आज़ाद--खुदा की मार तुझ पर | ऊँदन ऐ बेटा, जरी इधर आओ । मर्द की सूरत देख कर शायद यह लोग इतना जुल्म न करें ।

दारोग़ा---अरुखाह, क्या तोप साथ है! हम सरकारी आदमी और तुम्दारे दामाद से दर जायें | अब तो

बताओ, इनके रुपये मिलेंगे या नहीं !

कुंदन एक सिपाही को अलछग ले गयी और कहा--मैं इसी वक़्त दारोशा जी को इस शत पर सत्तर रुपये देती हूँ कि वह इस मामले को दत्रा दें | अगर तुम यह काम पूरा कर दो तो दस रुपया तुम्हे भी दूँगी।

दारोग़ा ने देखा कि यह मकक्कार औरत झांसा देना चाहती है तो उसे साथ ले कर थाने चले गये ।

आज़ाद--बड़ी बला इस वक़्त टली | औरत क्या, सचमुच बला है |

सनम--आपको अभी इससे कहाँ साजबिक्रा पड़ा है ।

आब्ाद--मैं तो इतने द्वी में ऊब उठा ।

सनम---अभी यह न समझना कि बला टल गयी, हम सब बाँघे जायेंगे ।

आजाद--ज़रा इस शगरत को तो देखो कि मुझे थानेदार से लड़वाये देती थी ।

सनम--खझुश तो न होंगे कि दामाद बना दिया ।

आजाद--हम ऐसी सास से बाज आये |

सनम--हस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता | एक औरत को तो इसने जहर दिलवा दिया था ।

नूर--पड़ोसिन से कोई जा कर कद्द दे कि तुम अपनी लड़की का क्यों सत्यानाश करती हो । जो कुछ रूखा-सूला अल्लाह दे वह खाओ और पड़ी रहो |

महरी--हाँ और कया, ऐसे पोछाव से दाल-दलिया दी अच्छी |

सनम---"'" ज्ञाके बला लाओ तो यह समझा टें हीले से ।

्ट

हीकारन्रन+- 'महरी जा कर पड़ोसिन को बुला लायी । आज़ाद ने कद्दा--तुम्हारी पड़ोसिन को तो सिपाही ले गये। अब यह मकान द्वमें सोप गयी हैं। पढ़ोसिन ने हँस कर कहा-- मिर्यां, उनको सिपाही ले जा कर क्या करेंगे ! आज गयी हैं, कल छूट आयेंगी (

इतने में एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा | महरी ने दरवाज़ा खोला तो एक बूढ़े मियों दिखाई दिये | पूछा--बी कुंदन कहाँ हें !

मदहरी ने कहा--उनको थाने के लोग ले गये |

सनम--एक सिरे से इतने मुकदमे, एक, दो, तीन ।

नूर--हर रोज़ एक नया पंछी फाँसती है।

घूढ़े मियो--बस, अब प्याला भर गया ।

सनम--रोज़ तो यही सुनती हूँ कि प्याला भर गया ।

बूदे मियों--अभत्र मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो ! अब इस बक़्त तो वह नहीं है ।

सनम--जायें तो बे सोचे समझे कर्दां जायें ।

आजाद-- बस इसी ह्वत्तिफ़ाक़ को दम लोग किस्मत कहते हैं और इसी का नाम अक्बाल है |

बूढ़े मियाँ--जी हाँ, आप तो नये आये हैं, यह औरत ख़दा जाने, कितने घर तबाद्द कर चुकी है। पुलिस में भी गिरफ़्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी गयी । सब कुछ हुआ, सज़ा पायी, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि इनमें से जिसका जी चाहे, मेरे साथ चली चले । किसी दरीफ़ के साथ निकाह पदवा दूँगा, मगर कोई राजी नहीं होती ।

ए.काएक किसी ने फिर दरवाज़ पर आवाज़ दी, महरी ने दरवाजा खोला तो मम्मन और गुलब्राज अंदर दाखिल हुए। दोनों दढाटे बाँघे हुए थे । महरी उन्हें इ्शारे स बुला कर बाग में ले गयी ।

मम्मन--क्ुंदन कहाँ हैं !

महरी- वह तो आज बडी मुसीबत में फैंस गयी | पुलीसबवाले पकड्ड ले गये।

मम्मन--हम तो आज और द्वी मनयसत्रे बाँध कर आये थे । वह जो मद्दाजन गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आयी है |

महरी--हाँ, मेरा जाना हुआ है । बहुत से रुपये लायी है ।

गुलवाज--मद्दाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जायगा। हमने कई आदमियों से कद दिया था। सब फे सब आते होंगे ।

मम्मन--कुंदन नहीं हैं, न सही | हम अपने काम से क्यों राफ़िल रहे । आओ एक-आध चक्कर लगायें।

इतने में बाग़ के दरवाज़े की तरफ़ सीटी कौ आवाज़ आयी । गुलबाज़ ने दरवाज़ा खोल दिया और बोला -- कोन है, दिलवर !

दिल्वर - बस अब देर न करो। बढ़त जाता है भाई |

गुलबाज--अरे यार, आज तो मामला हुच गया ।

दिलवर--ऐँ | ऐसा न कहो। दो लाख नक्कद रखा हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो दूँ।

मम्मन--अच्छा, तो क़द्दीं भागा जाता है !

दिलवर--यहद क्या ज़रूरी है कि कुंदन ज़रूर ही हो |

पम्मन--भाईजान, एक कुंदन के न होने से कहीं यार छोग चूकते हैं ! और भी कई सबब हैं ।

दिखलवर--ऐसे मामले में ह्तनी सुस्ती !

मम्मन--यह सारा कुसुर गुलबाज का है। चंड्ूखाने में पड़े छींटे उड़ाया किये, और सारा खेल त्रिगाड़ दिया |

दिलवर--आज़ तक इस मामले में ऐसे लोंडे नहीं बने ये । वह दिन याद है कि जब जहूरन की गली में छुरी चली थी !

गुल्बाज--मैं उस दिन कहाँ था !

दिलवर--हाँ, तुम तो मुशिदाब्राद चले गये थे। और यहाँ जहूरन ने इसमें इत्तना) कि सुल्तान मिरज़ा चल बसे | सुल्तान मिरज़ा के मह्लूले में सब मोरे रुपयेवाले, मंगर उनके मारे किसी कि हिम्मत ने पदती थी कि

उनके महल्ले में जाय |

मम्मन - वह तो इस फ़न का उस्ताद था |

ट्िलिवर---बस जनाब, इधर सुल्तान मिरज़ा मरे, उधर जहूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग जा पहुँचे । अब सुनिए कि जिस तरफ़ जाते हैं, कोई गा रहा है, कोई घर ऐसा नहीं, जहाँ रोशनी और जाग न हो |

प्रम्मन--किसी ने पहले से महल्लेवालों को होशियार कर दिया द्वोगा।

दिलवर-जी हाँ, सुनते तो घाइए | पीछे खुला न! हुआ यह कि जिस वक़्त हम छोगों ने जहूरन के दरवाज़े पर आवाज़ दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में ककरी फेंकी । उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में | इस तरह मददल्ले भर में खबर हो गयी | ु

यहाँ तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियाँ और आज़ाद में कुंदन को सजा दिलाने के लिए सलाह होती थीं--

आजाद-- जिन-बिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सब्रों का पता लगाइए ।

बूढ़े मियाँ--अबी, एक-दो हों, तो पता उगाऊँ। यहाँ तो शुमार ही नहीं ।

आजाद- मैं आज ही दाकिम जिला से इसका जिक्र करूँगा।

इन लोगों से रखसत हो कर आजाद मजिस्ट्रेट के बैंगले पर आये । पहले अपने कमरे में जा कर मुँह-द्वाथ धोया, और कपड़े बदछ कर उस कामरे में गये, जहाँ साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बैठे थे । अभी खाना चुना द्वदी जा रद्दा था कि आबाद कमरे में दाखिल हुए । आप शाम को आने का वादा करके गये ये। ६ बजे पहुँचे तो रुबने मिल कर क़द्क़ह्दा लगाया | मेम--क्यों साहनत्र, आपके यहाँ अब शाम हुई ! साहब--बड़ी देर से आपका इंतजार था | मीडा--कहीं शादी तो नहीं तय कर आये ! साइब-- हाँ, देर होने से तो हम सबको यद्दी शक हुआ था। मेम--जब तक आप देर की ब्रजजह न बतायेंगे, यह शक न दुर होगा। आप लोगों में तो चार शादियाँ हो सकती हैं । क्लारिसा-- आप ख़ुप क्यो हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं ! आजाद- अब मैं क्या बयान करँें। यहाँ तो सब छाल-बुशकड़ दी बेटे हैं । कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आँखों से पहचान लेता है; मगर इस वक़्त में जहाँ था, वहाँ खुदा किसी को न ले जाय । साहब--जुवारियों का अड्डा तो नहीं था [आब्ाद--नहीं वह और ही मामला था । इतमीनान से कहूँगा। लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत ज़ोर देने पर भी आज़ाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेडियों ने ग्राना शुरू किया और साहब भी शरीक हुए | उसके बाद उन्होंने आज़ाद से कुछ गाने को कद्दा । आजाद--आपको इसमें क्या लुत्फ़ आयेगा ! मेम-- नहीं, हम हिंदुस्तानी गाना पसंद करते हैं , मगर जो समझ में आये। आज़ाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना । आखिर मजबूर हो कर यह ग़ज़ल गायी--- जान से ,जाती दं क्या क्या हसरतें ; काश वह भी दिल में आना छोड़ दे । दाग? से मेरे जहन्नुम को मिसाल ; तू भी वायज्ञ दिल जलाना छोड दे | परदे की कुछ ह्रद भी है परदानशीं ; खुलके मिल बस मैंद छिपाना छोड़ दे। मेम--हम कुछ-कुछ समझे | वह जहन्नुम का शोर अच्छा है । साइब--हम तो कुछ नहीं समझे । मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ । दूसरे दिन आजाद तड़के कुंदन के मकान पर पहुँचे और महरी से बोले--- क्यों भाई, तुम सुरैया बेगम को किसी तरह दिखा सकती हो ! महरी- भला मैं कैसे दिखा दूँ १ अब तो मेरी

वहाँ पहुँच दी नहीं ! आज़ाद--खुदा गवाद दे, फ़क्रत एक नज़र मर देखना चाहता हूँ। मदरी--खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करुँगी। और आऊ दी शाप को यहीं चले आइएगा |

आजाद--खदा तुमको सलछामत रखे, बड़ा काम निकलेगा ।

महरी--ऐस मिर्यों, में लोंडी हूँ । तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी, ..।

आज़ाद---अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूगा !

महरी--यहाँ एक शाह साहब रहते हैं । द्रेया बेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियाँ ने भी हुक्म दे दिया है कि जब उनका जी चादे, शाह साइब्र के यहाँ जायें। शाह जी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुजुर, जो वह कह्द देते हैं, वही होता है | क्या मजाल जो फरक पढ़े ।

आज़ाद- हाँ साहब, फ़क़ीर हैं, नहीं तो दुनिया क्रायम केसे है !

महरी--मैं शाह जी को एक और जगह भेज दूँगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा । शाह साहब की तरफ़ कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता । इस-लिए. आपको यह खौफ़ भी नहीं है कि सुरेया बेगम पहचान जायेगी।

आज़ाद--बड़ा एट्सान होगा। उम्र भरन भूलूँगा। अच्छा, तो शाम को आऊँगा ।

शाम का ७/हाद कुंदन के घर पहुँच गये । महरी ने कद्दा--लीजिए, मुबारक हो । सब्र मामला चौकस है ।

आजाद- जहाँ तुम हो, वहाँ किस बात की कमी | तुमसे आज मुलाक़ात हुई थी ! हमारा जिक्र तो नहीं आया ! हमसे नाराज़ तो नहीं हैं !

महरी--ऐ हुजूर, अब तक रोती हैं। अक्सर फ़रमाती हैं कि जब आज़ाद मुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेँगे |

शाह साहब शहर के बाहर एक इमली के पेड के नीचे रद्दते थे। महरी आजाद को वहाँ ले गयी और दरख्त के नीचेवाली कोठरी में बैठा कर बोडी--आप यहीं तैठिए, बेगम साहब अन्न आती दही होंगी। जब वह आँख बंद करके नज़र दिखायें तो ले लीजिएगा | फिर आपमें ओर उनमें खद ही बातें होंगी ।

आजाद-- ऐसा न हो कि मुझे देख कर दर जाय ।

महरी--जी नहीं, टिल की मज़बूत हैं | वर्नो-जगलों में फिर आयी हैं ।

इतने में किसी आदमी के गाने की आवाज़ आयी ।

बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की ; गरीबों का खुदा फ़रियाद-रस है ।

आजाद--यद इस वकुत इस वीराने में कोए गा रहा है !

महरी--सिड्धी है। ख़बर पायी होगी कि आज यहाँ आनेवाली हैं।

आज़ाद-- बाबा साहब को इसका हाल मालूम है या नहीं !

परदरी--सभी जानते हैं। दिन-रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं ।

आजाद--भला यद्द तो बताओ कि छुरैया बेगम के साथ कौन-कौन होगा !

महरी--दो-एक महरियाँ होंगी, मौलाई बेगम होंगी और दस-बारह सिपाददी |

आजाद-- मदरियाँ अंदर साथ आयेंगी या बाहर ही रहेंगी

महरी--इस कमरे में कोई नहीं आ सकता ।

इतने में सुरैया बेगम की सवारी दरवाज़े पर आ पहुँची । आजाद का दिल घक-घक करता था | कुछ तो इस बात की खशी थी कि मुदत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का ख़यालछ कि कट्दीं परदा न खुल जाय ।

आजाद--जरा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं |

महरी--बारा में टहल रही हैं। मौलाई बेगम भी हैं। चलके दीवार के पास खड़े हो कर आढ़ से देलिए ।

आजाद--डर मालूम होता है कि कहीं देख न हलें।

आखिर आज़ाद से न रहा गया | मदइरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बारा में कई औरतें चमन की सेर कर रही हैं ।

मदरी--डो जरा भी इनको माल्म हो जाय कि आजाद खड़े देख रहे हैं तो खुदा जाने, दिल का क्या हाल हो।

आजाद- पुकार १ बेअखितयार जी चाहता है कि पुकारूं।

इतने में बेगम दीवार के पास आयी और चैठ कर बातें करने लगीं ।

सुरैया--इस वक़्त तो गाना सुनने को जी चाहता है |

मौलाई--देलिए, यह सोदाई क्या गा रहा है |

सुरैया--अरे ! इस मुए को अब तक मौत न आयी ! इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता दे | शाह जी से कहूँगी कि इसको मौत आये ।

मौलाई--ऐ, नहीं, काहे को मौत आये बेचारे को । मगर आवाज अच्छी है |

छुरैया--आग लगे इसको आवाज़ को |

इतने में जोर से पानी बरसने लगा ! सब्र की सत्र इधर-उधर दौड़ने लगीं। आखिर एक माली ने कहा कि हुजूर, सामने का बेंगला खाली कर दिया है, उसमें ब्रैठिए । सब की सत्र उस बैंगले में गयीं। जब कुछ देर तक बादल नं खुला तो धुरैया बेगम ने कह्दा--भई, अब तो कुछखाने को जी चाहता है ।

ममोढछा नाम को एक महरी उनके साथ थी। बोली-₹"£ जो के यहाँ से कुछ लाऊँ १ मगर फ़क्कीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या द्ोग: |

सुरेया--जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ | ऐसा न हो कि वहाँ कोई बेतुकी बात कहने लगो |

महरी ने दुपट्टे को लपेट कर ऊपर से डोली का परदा भोदा | दुरूरी महरी ने मझालची को हुक्म दिया कि मशाल जला । आगे-आगे मशाल्ची, पीछे पीछे दोनों महरियोँ दरवाजे पर आयों और आवाज दी। आज़ाद और मरी ने समझा कि बेगम साहब आ गयीं, मगर दरवाड़ा खोला तो देखा कि महरियों हैं ।

महरी--जाओ, आओ । क्या बेगम साहब बार ही में हैं ! ममोला--छजी हाँ | मगर एक काम कीजिए ।

शाह साहब के पास भेजा है । यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है ! महरी ने शाह जी के बावरचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियाँ और एक प्याला मधूर की दाल का ला कर दिया। दोनों महरियाँ खाना छे कर बैंगले में पहुँचीं तो सुरेया बेगम ने पूछा--कद्दो, बेट। कि बेटी ! ममोला --हुजु:, फ़कीरों के दरबार से भछा कोई खाली हाथ आता है ! लीजिए, वह मोटे-मोटे टिक्कड हैं । मौलाई--इस वक़्त यही रानीमत हैं । ममोला--बेगम साइबर आपसे एक अरज़ है। सुरेया--क्या है, कहो तुम्दारी बातों से दमें उलझन द्ोती है । ममोछा--हुजूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग़ के दरवाज़े पर एक बेकस, बेगुनाह, बेचारा दबका दबकाया खड़ा भींग रहा है । सुरैय --।+६ उमने वही पाजीपने की ली न | चलो हटो सामने से । मोलाई--बहन, खदा के लिए इतना कह दो कि जहाँ सिपाही बेटे हैं, वहीं उसे भी बुला ले। सुरैया--फिर मुझसे क्या कहती हो ! सिपाहियों ने दीवाने को बुझा कर बेठा लिया। उसने यहाँ आते ही तान लगायी---पसे फ़िना इमें गरदूँ सतायेगा फिर क्या, मिटे हुए को यद्द ज़ाल्मि मिटायेगा फिर क्या! जईफ़ नालादिल उसका हिला नहीं सकता, यह जाके अश का पाया द्विलायैगा फिर क्या ! शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों मे, बह फूल आके लेहद के उठायेगा फिर क्या ! खदा को मानो न तिस्मिल को अपने जबह करो, तड़पके सैर वह तुमको दिखायेगा फिर क्या ! मुरैया "देखा न | यह कम्ब्रख्त बे गुल मचाये कभी न रहेगा । पौलाई--बस यही तो इसमें ऐब है । मगर गाज़ल भी हूँद के अपने ही मतलूय की कही दे । सुरैया--कम्बख्त बदनाम करता फिरता है | दोनों बेगमों ने इाथ धोया । उस वज़्त वहों मदर की दाल और रोटी पोलाव और क्ोर्मे को मात करती थी । उस पर माली ने कैथे की चटनी तैयार कराके मद्दरी के हाथ भेजवा दी | इस वक़्त इस चटनी ने वद्द मज़ा दिया कि कोई छुरैया बेगम

की जबान से सुने ।

मौछाई--माली ने इनाम का काम किया है इस बढ़त |

सुरैया--हसमें क्या शक | पाँच रुपये इनाम दे दो |

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चाँदनी निखरी तो सुरेया बेगम ने महरी भेत्री कि शाह जी का हुक्म हो तो इम द्वाज़िर हों । वहाँ महरी ने कहा-- हाँ, शौक से आयें; पूछने की क्या जरूरत है ।

सुरैया बेगम ने आँखें बंद कीं ओर शाद्द जी के पास गयीं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब द्वाल हुआ | एक ठंडी साँस निकछ आयी। सुरैया बेमम घबरगायीं कि आज शाह साहब ठंडी साँस क्यों ले रहे हैं। आँखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा । पहले तो समझी कि आँखों ने धोखा दिया, मगर करीब से गौर करके देखा तो शक दूर हो गया |

उधर आज़ाद की ज़बान भी बंद हो गयी । लांख चाहा कि दिल का हाल कद सुनाये, मगर ज्बान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक दूसरे को प्यार और हसरत की नज़र से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी । हाँ, आँखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आँखों से टप-टप आँसू गिर रहे थे | एकाएक सुरेया बेगम वहाँ से उठ कर बाहर चली आयी |

ममोछझा ने पूछा--बेगम साहब, आभ इतनी जद्दी क्यों की ! सुरैया--यों ही |

मौलाई--आँखों में आँसू क्यों हैं ! शाह साइब से क्या बातें हुई ! सुरैया--कुछ, नहीं बहन, शाह साहब

क्या कहते, जी ही तो है । मौछाई-- हाँ, मगर खशी और रंज के लिए कोई सबब भी तो होता है। सुरैया--बदन, हमसे इस वक़्त सब न पूछो | बड़ी लम्बी कहानी है । मौलाई--अच्छा, कुछ कतर-झयोंत करके कष्ठ दो।

सुरैया--बहन, बात सारी यह है कि इस वक़्त शाह जी तक ने हमसे चाल की। जो कुछ इमने इस वक्त देखा, उसके देखने की तमन्ना बरसों से थी, मगर अन्न आँखें फेर-फेरके देखने के सिवा और क्या है !

मौलाई--६ सुरैया के गछे में द्वाथ डाल कर) क्या, आज़ाद मिल गये क्या!

सुरैया--चुप-चुप | कोई सुन न ले |

मौलाई--आज़ाद इस वक़्त कहाँ से आ गये | हमें भी दिखला दो |

सुरैया--रोकता कौन है | जाके देख लो |

मौलछाई बेगम चलीं तो सुरेया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कदा-- ख़बरदार, मेरी तरफ से कोई पैग़ाम न कहना ।

मौलाई बेगम कुछ द्िचकती, कुछ झिश्कती आ कर आज़ाद से बोलीं--शाह जी कभी और भी इस तरफ़ आये थे !

आज़ाद--हम फ़कीरों को कहीं आने-जाने से क्या सरोकार। बिधर मौज हुई, डक रा | दिन को सफ़र, गत को खदा की याद । हाँ, ग़म है तो यह कि खदा पार्ये।

मौलाई--सुनो शाह जी, आपकी फ़कीरी को हमर खूब जानते हैं। यद्द सब काँटे आप ही के बोये हुए हैं । और अब आप फ़क़ीर बन कर यहाँ आये हैं | यह बतछाइए कि आपने उन्हें जो इतना परेशान किया तो किस लिए | इससे आपका क्या मतलब शा !

आज़ाद--साफ़्ासाफ़ तो यह है कि हम उनसे फ़क़त दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई--बाह, जब आँखें चार हुई तब तो कुछ बोले नहीं; और वह बातें हुई भी तो नतीज़ा क्या ह उनके मिजाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी दो गयीं, उसकी हो गयीं ।

आजाद-- अच्छा, एक नज्जर तो दिखा दो।

मौलाई--अब यह मुमकिन नहीं | क्यों मुफ्त में अपनी जान को इलाकान करोगे ।

आज़ाद--तो बिलकुल हाथ धो डालें ! अच्छा चलिए, बा. में ज़रा दुर द्वी से दिल के फफोले फोढ़ें

मौछाई--वाह-वाह । जब बाग में हों भी ।

आज्ञा--भच्छा साहब, लीजिए, सब्र करके बैठे जाते हैं।

मौछाई--मैं जा कर कद्दती हूँ, मगर उम्मेद नहीं कि मार्ने ।

यह कह कर मौछाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आ करब्ोलीं--बहन, अछाइ जानता है, कितना खूबसूरत जवान है ।

मुरैया-- हमारा ज़िक्र भी आया था ! कुछ कहते ये !

मौलाई---तुम्दारे सिवा और ज़िक्र ही किसका था ! बेचारे बहुत रोते थे । हमारी एक बात इस वन्नत

मानोगी १ कहूँ !

सरैया-- कुछ मालूम तो हो, क्या कद्दोगी !

मोलाई--पहले क़ौल दो, फिर कहेंगे; यों नहीं ।

सुरैया--वाह ! बे-समझे-बूझे क़ौल केसे दे दूँ !

मौलाई--दमारी इतनी खातिर भी न करोगी बहन '

मुरैया--अब क्या जानें, तुम क्या ऊल-जदूल बात ऋद्दो |

मौलाई-- हम कोई ऐसी बात न कहँगे जिससे नक़सान हो ।

सुरैया--जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे नाखून में है ।

मौलाई-- क्या कहना है | आप ऐसी ही हैं ।

मुरैया--अच्छा, और सब बातें मानेंगे सिवा एक बात के |

मौलाई--वद एक बात कौन सी है, दम सुन तो लें ।

सरैया--जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं ।

ई--अल्ाह को गवाह करके कहती हूँ, रो रद्दा है | मुझसे हाथ जोड़ कर

कह! है कि जिस तरह मुमकिन हो, भुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि नंभर भर कर देख थे ।

सुरैया--बया मजं।ल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊँ |

मौछठाई--मुझे बढ़ा तरस आता है।

मुरैया--दुनिया का भी तो खयाल है ।

मौछाई--दुनिया से हमें क्या काम ! यहाँ ऐसा कौन आता-जाता है | डर कादे का है, चलके ज़रा देख लो, उसका अरमान तो निकल जाय ।

तुरैया--ना, मुमकिन नहीं | अब यहाँ से चछोगी भी या नहीं !

मौछाई--हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक तुम हमारा कहना न मानोगी ।

तुरैया--सुनो मौलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है | इसका नतीजा तुम क्या सोची हो !

मोलाई--उनका दिल खुश होगा । इस वक़्त वह आपे में नहीं हैं; मगर जब इस मामले पर गौर करेंगे तो उन्हें ज़रूर रंज दोगा।

दोनों बेगम पाछकियों पर बेठ कर रवाना हुई | आजाद ने मकान की टीवार से मुरैया बेगम को देखा और ठंडी साँस ली ।

HINDI TEXT

प्रसंग १०८

दूसरे दिन आजाद यहाँ से दखसत हो कर दुस्नआरा से मिलने चले | बात-बात पर बाँछे खिली जाती थीं। दिमाग़ सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंजिल पूरी करके यार के कूचे में पहुँचे । कहाँ रूस, कहाँ हिंदोस्तान ! कहाँ लड़ाई का मैदान, कहाँ हुश्नआरा का मकान | दोनों लेडियों ने उन्हें छेड़ना शुरू किया--

क्लारिसा--आज मला आज़ाद के दिमाश कादे फो मिलेगे।

मीढा-- इस वक़्त मारे खुशी के इन्हें वात करना भी मुश्किल है ।

आजाद---बड़ी मुश्किल है। बोलें तो हँसवाऊँ, न बोूँ तो आवाजे कसे जायें।

क्लारिसा--क्या इसमें कुछ झूठ भी है ! जिसके लिए दुनिया भर की खाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ द्वी चाहे |

एकाएफ कमरे के बाहर से आवाज़ आयी--भल्ा रे गीदी, भला, और ज़रा देर में मियाँ खोजी कमरे में दाखिल हुए !

कलारिसा--आप इतने दिन तक कह थे ख्वाजा साइन

खोजी-- था कहाँ, जहाँ जाता हूँ वहाँ छोग पीछे पढ़ जाते हैं। इतनी दावर्त खार्यी कि क्या किसी ने खार्यी होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं । अगर न जाऊँ तो लोग कहें, ग़रूर करता है। जार तो इतना वक़्त कहाँ | इसी उधेड़-बुन में पड़ा रद्दा | अ

आज़ाद--अब कुछ हमारे भी काम आओ।

खोजी--और दौड़ा आया किस लिए हूँ। कद्दों, हुस्नआरा को खबर हुई या नहीं | न हुई हो तो पहुँचूँ। मुझसे ज़्यादा इस काम के लायक और किसी को न पाओगे । मैं बड़े काम का आदमी हूँ ।

आजाद--इ उमें क्या शक है भाईजान | बेशक हो ।

खोजी--तो फिर में चलूँ !

आज़ाद--नेकी और पूछ-पूछ !

खोजी जानेवाले ही थे कि एक आदमी द्दोटल की तरफ़ आता दिखाई दिया। उसकी शक़्ल-बूरत बिलकुल खोजी से मिलती थी। वद्दी नाटा कद, वही काछा रंग, बी ननन्हे-नन्दे दायथ-पाँव। खोजी का बड़ा भाई माद्म द्वोता था |

आज़ाद--वह्वाह, बिलकुल खोजी ही हैं।

पीडा--बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ। उनको छिपाओ, इनकी दिखाओ । जरा फ़क़े नहीं ।

खोजी--तू कौन है वे ! कहाँ चला आता है ! कुछ बेघा तो नहीं है ! दुझ् जैसे मसखझ़रों का यहाँ

क्या काम ?

मसखरा--फोई इमसे बदके देख के । बड़ा मर्द हो तो आ जाय । खोजी--क्या कहता है ! बरस पढ़ें ! मसखरा--जा, अपना काम्र कर | जो गरजता है, वह बरसता नहीं | खोजी--बचा, तुम्हारी क़ज़ा मेरे द्वी दवाथ से है । मसखरा-माशे-मर का आदमी, बोनों के बराबर कद और चला हई मुझे ललका रने | खोजी--कोई है ! लाना तो चंड्ू की निगाली । के, आइए ! मसखरा--हम तो जहाँ खड़े ये, वहीं खड़े हैँ, शेर कहीं दृटा करते हैं । जमे, सो जमे | बोजी--क्जा खेल रही है तेरी | में इसको क्या करूँ। अब जो कुछ कहना-घुनना हो, कह-सुन लो; थोड़ी देर में लाश फड़कती होगी । मसखरा--जरी ज्दान सँमाले हुए इलरत | ऐसा न हो, में गरदन पर सकार हो जाऊे। होटल में बितने आटमी थे, उनको शियूफ़ा द्ाथ आया) सभी इन दोनों की कुदती देखने के लिए बेकरार थे ! दोनों को चदाने लगे) एक--मई, हम सब तो ख्वाजा साइब की तरफ़ हैं । दुसरा--हम मी | यद्ट उससे कह्दीं तगड़े हैं। तीसरा--कौन १ कहीं हों ने ! इनमें और उसमें बीस और सोलह का फ़के है : बोलों, क्या-दया बदते दे। ! खोली--जिसका रुपया फ़ालतू दो, वद्द इसके हाथ पर बदे | जा कुछ बना का धर ले जाना चादे, वह हमारे हाथ पर बदे । प्रसखरा-- एक लपोंटे में बेल जाइए तो सदह्दी। बात करते-करते परकद्ट हाडऊँ, और चुटकी बजाते त्ित करूँ, (चुटकी बजा कर) यों-यों खोजी--मे इतनी देर नहीं छगमे का । मसखरा--अरे चुत भी रद्द ! यद्द मुँह खाय चौलाई | एक ऊँगली से 5ह पेंच बाँधू कि तड़पने छगो--- लिया जिसने इशारा नाम, मारा बेगुनादइ उसको, निर्शों जिसने बनाया, बस, वह तीरों का निशाना था । आजश्द---बद गये ज्वाजा साइवब, यह आपसे बढ गये । अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज़्शत रदे ! खोजो--अजी, इससे अच्छा शेर लीजए--- तड़पा न क्षरा खंजर के तले सिर अपना दिया शिकवा न किया, था पासे अदब जो कातिल का यह भी न हुआ वद्द भी न दुआ ।

मसखरा--ले, अब आ । खोजी--देख, तेरी क़ज्मा आ गयी है । मसखरा--ज़रा सामने आ | जमीन में सिर खास दूँगा। खोजी--(ताल ठोक कर) अब भी कहा मान, न लड़ । मसखरा--या अली, मदद कर--क्त्र में जिनको ने सोना था, सुलाया उनको, पर मुझ्ले चखे सितमंगर ने सोने न दिया। आजाद--भई खोजी, शायरी में तुम बिलकुछ दब गये। खोजी जवाब देनें ही वाले थे कि इतने में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया | क़रीब था कि ज्षमीन पर दे पटके कि मियाँ खोजी सैंभले और झला-के मसखरे की गरदन में दोनों द्वाथ डाल कर बोले--बस, अब तुम मरे ! मसखरा--आज तुझे जीता न छोड़ूँगा । खोजी-देखो, द्वाथ टूटा तो नालिश कर दूँगा । कुश्ती में हाथा-पाई कैसी ! ' मसखरा--अपनी बुढ़िया को बुला छलाओ । कोई लाश को रोनेवाली तो हो

तुम्हारी | ह खोजञ्जी--या तो ऋत्ल ही करेंगे या तो क़त्ल होंगे ।

मसखरा--भऔर हम क़त्छ ही करके छोड़ेंगे ।

रुवाजा साहब ने एक अंटी बतायी तो मसख्वरा गिरा । साथ ही खोजी भी मेँह के बल जप्तीन पर आ रहे | अत्र न यह उठते हैं न वह । न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं ।

मसखरा--मार डाल, मगर गरदन न छोड़ेंगा ।

खोजी-- तू गरदन मरोड डाल, मगर में अधमरा करके छोड़ेंगा । द्ाय-हाय ! गरदन गयी | पसलियाँ चर-चर बोल रही हैं !

मसखरा -- जो कुछ दो सो हो, कुछ परवा नहीं है |

खोज्ी--यहाँ किसको परवा है, कोई रोनेवाला मी नहीं है ।

अब की खोजी ने गरदन छुड़ा ही; उधर मसखरा भी निकरू भागा । दोनों अपनी-अपनी गरदन सुदछाने लगे। यार छोगों ने फिर फ़िकरे चुस्त किये | भई, हम तो खाजी के दम के क्रायल हैं ।

दूसरा बाला--वाह | अगर कच्ची आध भी और कुश्ती रहती तो बह मार

लेता

तीसरे ने कदह्दा--अच्छा, फिर अब की सद्दी | किसी का दम थोड़े टूटा है |

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आधा घेटे तक दोनों हाँफा किये, मगर क्षबान चली जाती थी |

सखोजो--जुरा और दर होती तो फिर दिल्लगी देखते |

मसझूरा हाँ. बेशक ।

खोजी--तकदीर थी, बच गये, वरना मुँद्द बिगाड़ देता ।

मसखरा--अब तुम इस फ़िक्र में हो कि मैं फिर उठूँ |

आब्ाद--भई, अब ज़्यादा बखेड़ा मत बदाओ । बहुत दो चुकी ।

मसखरा--हुजूर, में बे नीचा दिखाये न मानूँगा ।

खोजी--(मसखरे की गरदन पकड़ कर) आओ, दिखाओ नीचा |

मसखरा-- अबे, वू गरदन तो छोड़ । गरदन छोड दे हमारी ।

सखोजी-- अब की हमारा दाँव है |

मसखरा- (थप्पड़ लगा कर) एक-दो |

खोजी--(चपत दे कर) तीन ।

फ़िक़रेबाज--सौ तक गिन जाओ यों ही | हाँ, पाँच हुई ।

दृध्रा--ऐसे-ऐसे जवान और पॉच ही तक गिनके रह गये !

सखोजी--(चपत दे कर) छद्ट-छद और नहीं तो | छोग बड़ी देर से छद्ट का इंतजार कर रहे ये |

अब की वह धमासन लड़ाई हुई कि दोनों बेदम द्वो कर गिर पड़े और रोने छगे।

खोजी--अब् मौत क्रीब्र है। भई आज़ाद, हमारी क़त्र किसी पोस्ते के खेत के करीब बनवाना |

मसखरा--और हमारी कब्र शाहफ़्सीद के तकिये में बनवाई जाय जहाँ हमारे वालिद ख्याजा वल्ीग दफ़न हैं ।

खोजी-- कौन-कौन ! इनके वालिद का क्या नाम था !

आजञाद--ख्वाजा वलीग कहते हैं ।

का ३ रो कर) अरे भाई, इमें पहचाना! मगर हमारी-तुम्दारी यों दी ।

मसखरे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया--भई क्या गजब हुआ | सगा भाई सगे भाई को मारे?

दोनों भाई गले मिल कर रोये | बड़े भाई ने अपना नाम मिर्यों रईस बतलाया । बोले--बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरद्द से नहीं देखा था। बड़ी खबियों के आदमी ये। इमको रोक्ष दूकान पर ले बाया करते थे !

आब्ाद--कादे की दुकान थी हज़रत !

रईस--जी, टाल थी । रूकड़ियाँ बेचते थे ।

सोजी ने भाई की तरफ घूर कर देखा |

रईस--कुछ दिन कंपू में साइब लोगों के यहाँ खानसामा रहे ये ।

खोजी ने भाई की तरफ़ देख कर दाँत पीसा ।

आज़ाद--बस इजरत, कलई खुल गयी। अन्चाजान खानसामा थे और आप रईस बनते हैं ।

आजाद चले गये तो दोनों भाइयों में खूब तक़रार हुई। मगर थोड़ी ही देर में मेल हो गया और दोनों भाई साथ-साथ झाहर की सैर को गये। इधर-उधर मटर-ग़इत करके मिर्यों रईस तो अपने अड्डे पर गये और खोजी दुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुँचे । बूढ़े मियाँ बैठे हुक्ा क़ा पी “दे ये |

खोजी-- आदाब अज है। पहचाना या भूल गये !

बूढ़े मियाँ--बंदगी अज । मेंने आपको नहीं पहचाना ।

खोजी--तुम भला इमें क्यों पदचानोगे। तुम्दारी आँख में तो यर्रीं छायी हुई है।

बूदे मिर्यो--आप तो कुछ अजीब पागल मादूम होते हैं। जान न पहचान, त्योरियाँ बदलने लगे |

खोजी--अजी, हम तो सुनाये बादशाह को, तुम क्या माल हो |

बूटे मियाँ--अपने होश में दो या नहीं !

खो जी--कोई महलसरा में हुस्तआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफ़िर आये हैं।

बुटे मियों--(खड़े हो कर) अख्वाह | ख्वाजा साहब तो नहीं हैं आप | माफ़ कोजिएगा । आइए गले मिल लें |

चंद पिया ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक़्क़ा भर दो, और अंदर जा कर बोले--लो साइब, खोजी दाखिल हो गये |

चारों बहनें बाग़ भें गयीं और चिक की आड़ से खोज्ी को देखने लगीं |

नाजक अदा--ओ-द्ो-हो ! कैसा ग्रांडील जबान है !

जानी--अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊँट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी दो, इसकी कोई कल दुरुस्त नहीं । हँसी आती है।

खोज्ी इधर-उधर देखने छगे कि यह आवाज़ कहाँ से आती है । इतने में बूढ़े मियाँ आ गये |

खोतजी-- हजरत, इस मकान को अजब खासियत है ।

बूढ़े मियाँ--क्या-क्या ? इस मकान में कोई नयी बात आपने देखी है !

खोजी--आवार्जे आती हैं| में बेठा हुआ था, एक आवाज्ञ आयी, फिर दूसरी आवाज आयी |

बूढ़े मियाँ-- आप क्या फ़रमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी ।

जानी बेगम की रग-रग में शोख्त्री भरी हुईं थी | खोनी को बनाने की एक तर-कीब यूझ्षी । बोलों--एक बात हमें युझ्ी है। अभी दम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम--दइमसे तो कद दो ।

जानी ने बहार बेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा |

बहार-- क्या हरज है, बूढ़ा द्वी तो है ।

सिपहआरा--आखिर कुछ कहो तो बाजीआान ! हमसे कहने में कुछ इरण है !

बहार--जानी बेगम कह्द दें तो बता दूँ ।

आनी- नहीं, किसी से न फहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठ कर दूसरे कमरे में चली गयीं | यहाँ इन पबको हेरत द्वो रद्दी थीं कि या खुदा | इन सबों को कौन तरकीब बूझी है, जो इतना $ " रही हैं । अपनी-अपनी अक़ल दौड़ाने लगीं।

नाजक--हम समझ गये । अफ्रीमी आदमी है। उसकी डिबिया चुराने की फ़िक्र होगी |

हुस्न आरा--यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी !

इतने में बहार बेगम ने आ कर कद्दा--चलो, बाग में चल कर बैठें। ण्वाजा साहब पहले ही से बार में बैठे हुए थे । एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता-अकड़ता चला आता है। अभी मर्से भी नहीं भीगीं। ज्ालीलोट का कुरता, उस पर शरबती कटावदार अैंगरखा, सिर पर बाँकी पगिया और हाथ में कटार |

दुस्नआरा--यह कौन है अल्लाह ! जरा पूछना तो |

सिपआरा--ओफ़फ़ोह | बाजीजञान, पहचानो तो भला ।

हुस्नआरा--अरे | बड़ा घोखा दिया ।

नाजक--सचभुच | बेशक बड़ा घोला दिया ! ओफ़फ़ोह !

सिपडआरा--मैं तो पहले समझी द्वी न थी कुछ ।

इतने में वह जवान खोबी के क़रीब आया तो यह चकराये कि इस बाश में इसका गुज़र कैसे हुआ | उसकी तरफ़ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचा कर कहा--ऐ, ! यह कौन मरुआ बागु में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रदे हो ओर यह लौंड भीतर चला आता है | इसे निकाल क्यों नहीं देते !

खोजी--अजी इज्रत, आखिर आप कौन साहब हैं ! पराये जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है !

खवान--कुछ तुम्हारी चामत तो नहीं आयी है ! चुपचाप चैटे रद्दो ।

सतोजी--सुनिए साइब, हम और आप दोनों एक द्टी पेशे के आदमी हैं ।

जवान--(बात काट कर) हमने कह दिया, चुप रहो, बरना अभी सिर उड़ा दूँगा | हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आये हैं, और हुस्न-

आरा के पास निकाइ का पैगाम भेजनेवाले हैं। बस, अब यही घुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय ।

सोनी--आजाद का मुक्काबिछा तुम क्या खा कर फरोगे | उसने लड़ाइयों सर की हैं। तुम अभी छोड़े हो । जवान--व् भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम

| खोजी--(पैंतरे बदछ कर) हम किसी से दबनेवाऊे नहीं हैं । अवान--आज ही का दिन तेरी मौत का था। खोजी---/ पीछे हट कर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है|

कर

जवान--क्यों नाहक गास्सा दिलाता है। अच्छा, ले सँमल | जवान ने तलवार घुमायी तो खोजी घबरा कर पीछे हटे और गिर पड़े | बस करौली की याद करने लगे | औरतें तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगीं ! लवान--बस, इसी तिरते पर भूला था ! खोजी--अजी, मैं अपने जोम में आप आ रहा | अमी उठूँ तो क़यामत बरपा कर दूँ। | जवान--जा कर आज्ञाद से कददना कि होशियार रहें | त्ोजी--बहुतों का अरमान निकल गया | उनकी सूरत देख छो, तो बुखार आ ज्ञार | अवान--अच्छा, कल देखूँगा ! हह कह कर उसने बहार बेगम का हाय पकड़ा और बेघड़क कोठे पर चढ़ (या ; चार्श बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गयीं | जोडी यहाँ से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आजाद से चकछ कर कहता ई, दुस्न॥ रा के एक और चाइनेवाले पेठा हुए हैं। क्रम-क़दम पर ईँक लगाते ४, जुः -। में मुरलिया बआजेगी । इततफ़ाक़ से रास्ते में उसी दोदछ का ख्ानसामा फ्रज गन, जहाँ आज्ञाद ठदरे ये। बोला--भरे भाई | इस वक़्त कहाँ छपके हुए गे € * खेर तो है ! आज तो आप गरीबों से वाह ही नहीं करते । 'जी->णड़ी दो में मुरलिया बाजेगी | “ईःसाप्ता--मई वाह | सारी दुनिया धूम आये, मगर कैद वही है | दंग रुपए थे आदमी बन कर आये होंगे। पभी--तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ ६ : छ/तसामा--हम देखते हैं, वहाँ से तुम और भी गाउदी दो कर आये हो । डी देर में आप गिरते-पड़ते द्वोट्ल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही (४ अन्त कर सामने खड़े हो गये । आजाइ--क्या खबरें लाये | स्व] औी--+ करौली को दायें हाथ से बाये दवाथ में ले कर) हूँ !|| आज्ाद--अरे भाई, गये थे वर्डा ! | वाजी--(क्रौली को बायें हाथ से दायें द्वाथ में छे कर) हूँ !! आज़ाद--अरे, कुछ मुँह से बोलो भी तो मियाँ ! खोजी--धडी दो में मुरडिया बाजेगी । आजाद--क्या ! कुछ सनक तो नहीं गये ! में पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गये थे ! किसी से मुलाक़ात हुई ! क्या रंग-दंग है । बोजी--वहाँ नहीं गये थे तो क्या - जहन्नुम में गये थे ! मगर कुछ दाल में

काला है ।

आज्ञाद--भाई साहब, हम नहीं समझे । साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई १ क्यों उलझन में डालते हो ।

खोजी--अब् वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की |

आजाद--क्या ! कैसी दाल ! यह बकते क्या हो !

खोजो--बकता नहीं, सच कहता हूँ ।

आजाद--खोजी,अगर साफ़-साफ़ न बयान करोगे तो इस वक़्त बुरी ठहरेगी!

खोजी---उलटे मुझी को डॉटते द्वो | मैंने क्या बिगाड़ा !

आज्ाद--वहाँ का मुफ़्स्सल द्वाल क्यों नहीं बयान करते !

खोजी--तो जनाब, साफ़साफ़ यह है कि हुश्नआरा बेगम के एक और चाइने-वाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और डनकी बहनें बाग के बँगछे में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा और मुझे देखते ह्वी रास्से से छाल हो गया ।

आज्ञाइ--कोई खूबधूरत आदमी है ! है

खोजी--निह्ायत हसीन, और कमसिन ।

आजाद--इसमें कुछ भेद है ज़रूर । तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिलल््लगी को हो | मगर हमें इसका यक्रीन नहीं आता ।

खोजी--यक्रीन तो हमें भी मरते दम तक नहीं आता, मगर वर्डा तो उसे देखते ही क़कहे पड़ने लगे ।

अभ् उधर का हार सुनिए । सिपहआरा ने कदा--अनबझ्झ दिल्लगी दो कि वह जा कर आजाद से सारा क्रिस्सा कह्दे |

हुस्नआरा--आज़ाद ऐसे कन्चे नहीं हैं ।

सिपहआरा--खुदा जाने, वह सिड़ी वहाँ जा कर क्या बके । आज्ञाद को चाहे पहले यकीन न आये, लेकिन जब वह क़समें खा कर बहने छगेगा तो उनको ज़रूर इक हो जायगा |

हुस्नआरा--हाँ, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय । क्यों न किसो कं! भेज कर खोबी को होटल से बुल्बाओ । जो आदमी बुलाने ज्ञाय वह देंसी-ईती में आजाद से यद्द बात कह दे |

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मिययाँ आजाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले--बह आपके मिर्याँ खोजी कहाँ हैं ! क्षर उनको बुल्वाइए |

आजाद--आपके यहाँ से जो आये तो गुस्से में भरे हुए । अब मुझसे बात ही नहीं करते |

बूढ़े मियाँ--वह तो आज खूब्र ही बनाये गये ।

बूढ़े मियां ने सारा किस्सा बयोम कर दिया। आज़ाद सुन कर खूब हँसे और खोन्ी की बुछा कर उनके सामने ही बूढ़े मिर्यां से बोढे---क्यों साहब, आपके यहाँ स्या दस्तूर है कि कटारबाज़ों को बुला-बुछा कर द्वारीफों से मिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ--ख्वाजा साइब को आन खुदा दी ने बचाया ।

आज़ाद--मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला-पतला आदमी है | इनसे-उससे अगर चलती तो यह उसको ज़रूर नीचा दिखाते ।

खोजी--अ ज्री, केसा नीचा दिखाना १ वह तलवार चलाना क्या जाने !

आजाद--आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाय |

स्ोजी--हमारे नजदीक उसको बुलवाना फ़जल है। मुफ़्त की ठाँय-टॉय से क्या फ़ायदा | हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं तो बुल्वा लीजिए ।

यह बातें हू ही रद्दी थीं कि बैरा ने आ कर कद्ा-- हुजुर, एक गाड़ी पर औरतें आयी हैं! एक खिदमतगार ने, जो गाडी के साथ है, हुजूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आर्ये।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गयीं ! खोज्ञी को भेजा कि जा कर देखो । खोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस कदम अलग |!

दिदमतगार-- हजरत, जरी सामने यहाँ तक आइए ।

सोनी -ओ गीदी, खबरदार जो बोला |

दमतगार--एऐँ | कुछ सनक गये हो क्या !

जैग-गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई | दुर क्यों खड़े दो

खोजी--(क़रौली तौल कर) बस खबरदार |

बैरा--एं | तुमको हुआ क्या है ! जाते क्यों नहीं सामने !

खोजी--चुर रहो जी । जानो न बूझो, आये वहाँ से | क्या मेरी जान फ़ालत् है, जो गाड़ी के सामने जाऊँ! |

इत्तफाक से आजाद ने उनकी बेतुकी दहाँक सुन ली। फ़ौरन बाहर आये कि कई ऊफ़िसी से छड् न पड़ें। ख़ोजी से पूछा-- क्यों साइब, यह आप किस पर बिगड़ रहे हैं ! जवाब नदारद । वहाँ से झपट कर आजाद के पास आये और क़रौली घुमाए हुए पैतरे बदलने लगे ।

आज्ञाइ--कुछ मुँह से तो कह्दो । खुद भी ज़लील होते हो और मुझे भी ज़लील करते हो | ।

खोजी--(गाडी की तरफ़ इशारा करके) अब क्या होगा |

खिदमतगार--हुज्र, इन्होंने आते द्वी पेतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नंचाना शुरू किया | न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं |

खोजी--(आज़ाद के कान में) मियाँ, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं। वही लोंडा तुमसे लड़ने आया होगा ।

आछष्टाए-यह कहट्दिए, आपके दिल में यद्द बात जमी हुई थी। आप मेरे साथ गहुत दमदर्दी न कीजिए, अल्य जाके बैठिए ।

मगर खोजी के दिल में खुप गयी था कि इस गाड़ी में बद्दी जवान छिपके आया है। उन्होंने रोना शुरू किया। अब आज्ञाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो, होटल जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठ कर दुसरे कमरे में चली गयीं | यहाँ इन पबको हैरत हो रही थीं कि या खुदा | इन सबों को कौन तरकीब यूझी है, जो इतना " रही हैं। अपनी-अपनी अम्ल दौढाने लगीं।

नाजुक--हम समझ गये । अफ़्रीमी आदमी है। उसकी डिबिया चुराने की फ़िक्र होगी ।

हुस्नआरा--यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी !

इतने में बहार बेगम ने आ कर कदहा--चलो, बाग़ में चलछ कर बैठें। ण्वाज़्ा साहब पहले ही से बार में बेंठे हुए थे । एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐएंठता-अकड़ता चला आता है। अभी मर्से भी नहीं भीगीं। जालीलछोट का कुरता, उस पर शरबती कटावदार अँगरसखा, सिर पर बाँकी पगिया और द्ञाथ में कटार |

हुस्नआरा--यद कोन है अल्लाह १ जरा पूछना तो |

सिपदेआरा- ओफ़फ़ोह ! बाजीजान, पहचानो तो भला |

हुस्नआरा--अरे | बढ़ा घोखा दिया।

ताजक--सचमुच | बेशक बड़ा घोल्ा दिया ! ओफ़फ़ोह !

सिपहआरा--में तो पहले समझी ही न थी कुछ ।

इतने में वद्द जवान खोल्ली के क़रीब आया तो यह चकराये कि इस बारश में इसका गुजर कैसे हुआ | उसकी तरफ़ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचा कर कद्दा--ऐ | यह कोन मरदुआ बार में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह छौंडा भीतर चला आता है | इसे निकाल क्यों नहीं देते !

खोज्ी--अबी इश्रत, भाखिर आप कोन साहब हैं ! पराये जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है !

स्वान--कुछ तुम्हारी झामत तो नहीं आयी है ! चुपचाप बेठे रद्दो |

खोजी--सुनिए साइब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं ।

जवान---(बात काट कर) इमने कद दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूँगा | हम हुस्मआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहाँ आये हैं, और हुस्न-

आरा के पास निकाइ का पैगाम भेजनेवाले हैं| बस, अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय |

खोनी--आजाद का मुका बिला तुम क्या खा कर फरोगे | उसने लडाइयाँ सर की हैं। तुम अमी छोडे हो । छवान--तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा दी काम तमाम

कर पथ | खोजी--६ पेंतरे बदल कर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं । जवान --आज ही का दिन तेरी मौत का था। खोजी-- पीछे इट कर) अभी क्रिसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान--कक्यों नाइक ग़रसा दिलाता है। अच्छा, ले सेमल |

जवान ने तल्वार घुमायी तो खोजी घबरा कर पीछे दटे और गिर पड़े । बस करौली की याद करने छगे | औरतें तालियाँ बज्ा-वजा कर हँसने लगीं ।

नवान--बस, इसी त्रिते पर भूला था !

खोजी--अजी, मैं अपने जोम में आप आ रहा। अभी उहूँ तो क्रयामंत बरपा कर हूँ ।

जवान--ज्ञा कर आजाद से कहना कि होशियार रहे ।

खोज्ञी--बहुतों का अरमान निकल गया । उनकी सूरत देख छो, तो बुखार आ जान |

आअवान--अच्छा, कल देखूँगा ।

4 कह कर लसने बहार बेगम फा हाथ पकड़ा और बेघढक कोठटे पर चद ४ वीं : चारों बहने भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गयीं |

शोत्ी यहाँ मे चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आजाद से चक कर कह्ठता !, बुस्तञ:र के एक और चाहनेवाले पैदा हुए. हैं। क़रम-कदम पर हाँक झंगाते '+, पद । में भुरलिया बाजेगी । इत्तफाक़ से रास्ते में उसी होटरू का खझानसामा गिल ॥ 7१, जहाँ आज़ाद ठहरे ये | बोला--अरे भाई | इस वक़्त कहाँ लछपके हु५ > हें ! खेर तो है ! आज तो आप ग़रीबों से बाद ही नहीं करते |

'हजी--बड़ी दो में मुरलिया बाजेगी ।

एनसामा--भई वाह | सारी दुनिया धूम आये, मगर कैंडा वही है । इध सफक्ष है के; उगटपी बने कर आये होंगे ।

“ञी--तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ़ है |

छाग्मामा--दम देखते हैं, वहाँ से तुम और भी गाउदी हो कर आये हो |

"ही देर में आप गिरते-पड़ते द्ोटछ में दाखिल हुए और जाजाद को देखते हे ४६ अना कर सामने खड़े हो गये |

आज्ञाद---क्या खबरें लाये !

क्षा बी--५ क्रौली को दायें द्वाय से बाये हाय में ले कर) हूँ !!

आज्ञाद--अरे भाई, गये ये वहाँ ! |

कांजी--(करौली को बायें हाय से दायें दवाथ में के कर) हूँ !|

85 जांद--अरे, कुछ मुँद्द से बोलो भी तो मभिर्णों !

खोज्ी--घड़ी दो में मुरडिया बाजेगी |

आजाद--क्या ! कुछ सनक तो नहीं गये | में पूछता हूँ, हुस्नआरा बेगम के यहाँ गये थे ! किसी से मुलाकात हुई ! क्या रंग-दंग है ।

वोजी--वहाँ नहीं गये थे तो क्या - जहन्नुम में गये ये ! मगर कुछ दाल में काला है ।

आज़ाद--भाई साहब, हम नहीं समझे | साफ़-साफ़ कहो, क्या बात हुई ! क्यों उलझन में डालते हो ।

खोजी---अब वहाँ आपकी दाल नहीं गलने की |

आजाद--क्या ! कैसी दाल १ यह बकते क्या हो !

खोजी--बकता नहीं, सच कहता हूँ।

आजाद--खोजी,अगर साफ़-साफ़ न बयान करोगे तो इस वक़्त बुरी ठदरेंगी।

खोन्ी--उलटे मुझी को डॉटते द्वो। मैंने क्या बिगाड़ा !

आज्ञाद--वहाँ का मुफ़्स्सल हाल क्यों नहीं बयान करते !

खोजी--तो जनाब, साफ़-साफ़ यद्द हे कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाइने-वाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें वाग़ के बँगछे में बैठी थीं कि एक जवान अंदर आ पहुँचा और मुझे देखते

ही ग़स्से से छाल हो गया |

आज़ाद--कोई खूबसुरत आदमी है ! हु

खोजी--निद्दायत हसीन, और क्मसिन ।

आजाद--हसमें कुछ भेद है जरूर । तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिंल्छगी की हो । मगर हमें इसका यक्कीन नहीं आता ।

खोजी--यक्रीन तो हमें भी मरते दम तक नहीं आता, मगर वहा तो उसे देखते ही कह कहे पड़ने छगे |

अब उधर का हाल सुनिए । सिपहआरा ने कद्ा--अब हिल्ल्लगी हो कि वह जा कर आजाद से सारा किस्सा कद्दे |

हुस्नआरा--आज़ाद ऐसे कब्चे नहीं हैं ।

सिपदआरा--खुदा जाने, वह सिद्ी वहाँ जा कर क्या बके । आजाद को चाद्दे पहले यकीन न आये, लेकिन जब वह क़समें खा कर कहने छगेगां तो उनको ज़रूर इक हो जायगा |

हुस्तआरा--हाँ, शक द्वो सकता है, मगर किया क्या जाय । क्यों न किसी कं! भेज कर खोजी को होटल से बुल्बाओ | जो आदमी बुलाने जाय वह हँसी-ईसी में आज़ाद से यह बात कह दे |

हुस्नआरा की सलाईइ से बूदे मियाँ आज़ाद के पास पहुँचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले--वह आपके मियाँ खोजी कहाँ हैं १ बरा उनको बुल्वाइए ।

आज़ाद--आपके यहाँ से जो आये तो गुस्से में मरे हुए । अब मुझसे बात दी नहीं करते ।

बूदे मियाँ--वह तो आज खूब ही बनाये गये ।

बूढ़े मियाँ ने सारा किस्सा बयोन कर दिया। आज़ाद सुन कर ख़ब ईंसे और खोजी को बुला कर उनके सामने ही बूढ़े मियाँ से बोढे--क्यों साहब, आपके यहाँ क्या दस्तूर है कि कटारतआज़ों को बुला-बुला कर शरीफों से मिड़वाते हैं।

बूढ़े मियाँ--ख्वाजा साहब को आज खुंदा ही ने बचाया ।

आज़ाद--मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला-पतला आदमी है| इनसे-उससे अगर चलती तो यह उसको ज़रूर नीचा दिखाते ।

खोजी--अजी, कैसा नीचा दिखाना १ वह तलवार चलाना क्या जाने !

आज़ाद---आज उसको बुलवाइए, तो इनसे मुक्राबिला हो जाय |

सोजी--हमारे नजदीक उसको बुलवाना फ़जल है। मुफ्त की ठॉय-ट्राय से क्या फ़ायदा । हाँ, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं तो बुल्वा लीजिए |

यह बातें है ही रही थीं कि बैश ने आ कर कद्ा- हुजुर, एक गाड़ी पर औरतें आयी हैं। एक खिदमतगार ने, जो गाडी के साथ है, हुज्र का नाम लिया और कहा कि जरा यहाँ तक चले आये ।

आज्ाद को हैरत हुई कि औरतें कहाँ से आ गयीं ! खोज्ी को भेजा कि जा कर देखो । खोजी अकड़ते हुए सामने पहुँचे, मगर गाड़ी से दस कदम अलग |

खिदमतगार--हज़रत, जरी सामने यहाँ तक आइए ।

खोजी -- ओ गीदी, खबरदार जो बोला !

खिदमतगार--एऐ | कुछ सनक गये हो क्या !

बैतग--गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई | दूर क्यों खड़े हो !

खोजी--(करौली तौल कर) बस खबरदार !

बैरा--ए | तुमको हुआ क्या ह ! जाते क्यों नहीं सामने !

खोजी--चुप रद्दो जी। जानो न बूझो, आये वहाँ से | क्या मेरी जान फ़ालतू है, जो गाडी के सामने जाऊँ !

इत्तफ़ाक से आज़ाद ने उनकी बेठुकी दाँक सुन ली। फ़ौरन बाहर आये कि कही किसी से छड़ न पड़ें । खोजी से पूछा-- क्यों साहब, यह आप किस पर बिगढ़ रहे हैं?! जनाब मदारद । वहाँ से श्पट कर आज़ाद के पास आये और करौली घुमारे हुए पेतरे बदलने लगे |

आज़ाद--कुछ मुँह से तो कद्दो । खुद भी जलील होते हो और मुझे भी ज़डील करते हो |

खोजी--(गाडी की तरफ़ इशारा करके) अब क्या होगा !

खिदमतगार--हुजूर, इन्होंने आते ही पेतता बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया । न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं ।

खोजी--(आज़ार के कान में) मिर्यों, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं | बद्दी लौंडा तुमसे लड़ने आया होगा।

आल्जाए--यह कदह्िए, आपके दिल में यह बात जमी हुई थी । आप मेरे साथ प्रहुत दमददों न कीजिए, अलग जाके बैठिए ।

मगर खोजी के दिल में खुप गयी थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिपके आया है। उन्होंने रोना शरू किया। अब आजाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो, होटल के भर मुसाफ़िरों को बुरा मादूम होगा, मगर खोजी चुप ही नहीं होते। आखिर आपने कद्दा--जो छोग इस पर सवार हों, वह उतर आयें। पहले मैं देख दे, फिर आप जायें। आज़ाद ने खिदमतगार से कहदा--भाई, अगर वह छोग मंजूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झाँक कर देख के। इस सीड़ी को शक हुआ है कि इसमें कोई और बैठा है। खिदमतगार ने जा कर पूछा, और बोला--सरकार कहती हैं, हाँ, मंजर है | चलिए, मगर दुर ही से झाँकिएगा | खोजी --(सबसे रुखसत हो कर) लो यारो, अब आखिरी सलाम है। आजाद खदा तुमको दोनों जद्दान में सुख रखे । ह छुटता है मुक्राम, कूच करता हूँ मैं, रुखसत ऐश जिंदगी कि मरता हूँ मैं । अल्लाह से लो लगी हुई है मेरी; ऊपर के दम इस वास्ते भरता हूँ। खिदमतगार--अब आखिर मरने तो जाते ही दो, जरा क्रम बढ़ाते न चला । जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद । आजाद--क्यों मुरदे को छेड़ते हो जी । बग्धी से हँसी की आवार्जे आ रही थीं। खोजी आँखों में आँधू भरे चले आ रहे के कि उनके भाई नज़र पड़े। उनको देखते ही खोजी ने हाँक ल्गायी--आइए भाई साइब ! आखिरी वक़्त आपसे खूब मुलाक़ात हुई । रईस--खेर तो है भाई | क्या अकेले दी चले जाओगे ! मुझे किसके भरोसे छोटे जाते हो ! खोजी भाई के गले मिल कर रोने लगे । जब दोनों गछे मिल कर खूब रो ुके तो खोजी ने गाड़ी के पास जा कर खिदमतगार से कदहा--खोल दे | ज्यों

ही गरःन अंदर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं । इनका सिर ज्यों ही अंदर पहुँचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतार कर दो चपते लगा दीं। खोजी की जान में जान आयी। हँस दिये। आ कर अज़ाद से बोढे--अब आप जायें, कुछ मुजायक़ा नहीं है। आजाद ने होटल के आदमियों को वहाँ से हटा दिया और उन औरतों से बातें करने लगे | आज़ाद--आप कोन साहब हैं ! बग्घी में से आवाज़ आयी--आदमी हैं साहब | सुना कि आप आये हैं, तो देखने चले आये । इस तरह मिलना बुरा तो क्षरूर है; मगर दिल ने न माना | आबाद--जब इतनी इनायत की है तो अब नक़ाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए | आवाज--अच्छा, पेट से पाँव निकले ! हाथ देते ही पहुँचा पकड़ लिया। आज़ाद--अगर आप न आर्यगी तो मेरी दिलशिकनी होगी | इतना समझ लीजिए | आदाज--ऐ, हाँ | खूब याद आया। वह जो दो लेडियाँ आपके साथ आयी हैं, बह कहाँ हैं ! परदा करा दो तो हम उनसे मिल्ध छें।

आबाद--बहुत अच्छा, छेकिन मैं रहूँ या न रहूँ !

आवाज--आप से क्या परदा है |

आज़ाद ने परदा करा दिया। दोनों ओरतें गाड़ी से उतर पड़ी और कमरे में आयीं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया; मगर बातें क्या होतीं। मिस उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी ज़बान से क्या मतलब्न | कुछ देर तक वहाँ बैठे रहने के बाद, उनमें से एक ने, जो बहुत ही इसीन और शोख थी, आज़ाद से कहा--भई, यहाँ बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो चलिए, बाग़ की सैर करें |

आज़ाद--यहाँ तो ऐसा कोई बाग़ नहीं | मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाक़ात हुई ।

हसीना ने आँखों में आँसू भर कर कटद्दा-- हाँ साहब, आपको क्यों याद आयेगा। आप दम गरीबों को क्यों याद करने लगे | कया यहाँ कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहाँ कोई ग़ेर न हो | यहाँ तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता । चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें |

आज़ाद को एक अनजबी औरत के साथ दूसरे कमरे में बाते शर्म तो आती थी, मगर यह समझ कर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ऊे भप और पूछा--मुझे आपका हाल उुनने की बढ़ी तमन्ना है| जहाँ तक मुझे याद आता है, मेंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहाँ देखा था (

औरत--खदा की क्रसम, बड़े बेवफ़ा हो | (आज़ाद के गले में द्वाथ डाल कर) अब भी याद नहीं आता ! वाह रे हम !

आक्षाद--तुम मुझे बेवफ़ा चाहे कह लो; पर मेरी याट इस वक्त धोखा दे रही है ।

औरत--द्वाय अफ़सोध् | ऐसा ज्ालिप नहीं देखा--

न क्योंकर दम निकल जाये कि याद आता है रह-रह कर; वह तेरा मुसकिराना कुछ मुझे ओठों में कह-कह कर । आज़ाद--मेरी समझ दी में नहीं आता कि यह क्या माजरा है |

औरत-दिल छीनके बातें बनाते हो ! दह्दतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो ।

आजाद-यह मेरी आदत नहीं |

औरत-- हाय | दिल सा घर तूने ग़ारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं |

आजाद--अब मुझे फुरसत नहीं है, फिर किसी रोज आइएगा |

औरत--अच्छा, अब्र कब मिलोगे !

आज्ञाइ--अब आप तकलीफ़ न कीजिएगा ।

यह कहते हुए आजाद उस कमरे से निकछ आये | उनके पीछे-पीछे वह ओरत भी बाहर निकली । दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गयीं। उसके बाल बिखरे बुए ये, चोडी मसकी हुईं। उस औरत ने आते दी आते आज़ाद को कोसना शुरू किया--तुम लोग गवाह रहना । यह मुझे अलग कमरे में ले गये ओर एक घंटे के बाद मुझे छोढ़ा। मेरी जो द्ालत है, आप लोग देख रही हैं ।

आज़ाद--खलेरियत इसी में है कि अब आप जाइए |

औरत--अब मैं जाऊँ |! अब किसी होके रहूँ !

क्टारिसा--(फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आज़ाद ?

आजाद-- कोई छटी हुई औरत हे ।

आजाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और बद्ठ चमक कर यही कहती थी--अच्छा, तुम्हीं क्रम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं !

आज़ाद---अब जलील हो कर यहाँ से जाओगी तुम। अनब मुसीबत में जान पड़ी है ।

औरत---ऐ, है, अब मुसीबत याद आयी | पहले क्या समझे थे !

आजाद--बस, अब ज़्यादा न बढ़ना |

ओऔरत--गाड़ीवान से कद्दो, गाड़ी बरामदे में लाये ।

आजाद--हाँ, खरा के लिए तुम यहाँ से ज़ाओं ।

औरत--जाती तो हूँ, मगर देखो तो क्या दह्वोता है !

जब गाड़ी रवाना हुई तो ख़ोजी ने अंदर आ कर पूछा-इनमे तुम्दारी कब की जान-पहचान थी !

आज़ाद--भरे भाई, आज तो ग्रज़त्र हो गया |

खोजी--मनः तो करता था कि इनसे दुर रहो, मगर आप सुनते किसकी हैं ।

आजाद--झूठ बकते दहो। तुमने तो कद्दा था हि आप जायें, कुछ मुज़ायक़ा नहीं है। और अब निकले जाते दो ।

खोजी--अच्छा साहब, मुझी से गलती हुई। मैंने गाड़ीवान को चकमा दे कर सारा द्वाल मालूम कर लिया | यह दोनों कुंदन की छोकरियाँ हैं। अभत्र यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आजाद का हमसे निकाद दोनेवाल्य है |

आजाद--इस वक्त दमें बड़ी उलझन है भाई | कोई तदबीर सोचो ।

खोनी--तदबीर तो यही है कि में कुंदन के पास जाऊँ और उसे समझा-बुझा कर टर्र पर छे आाऊं ।

आज्ाद--तो फिर देर न कीजिए । उम्र भर आपका एद्सान मानूँगा ।

खोजी तो इधर रवाना हुए । अब आज़ाद ने दोनों लेडियों की तरफ़ देशा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाये हुए ये । क्लारिसा एक नाविल पढ़ रह्दी थी और मीडा सिर झकाये हुए थी। उन दोनों की यक्रीन हो गया था कि औरत या तो . आश्षाद की ब्यादता बीबी है या आश्वना । अगर जान-पदचान न होती :। उस कमरे में जा कर बैठने की दोनों में से एक को भी द्वि:्मत न दोती। थोड़ी देर तक बिछकुल सन्नाटा रहा, आखिर आजाद ने खूद द्वी अपनी सफ़ाई देनी शुरू की। बोले-किसी ने सच कहा है, 'कर तो डर, न कर तो डर"; मैंने इस औरत की आज तक सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफ़ज़ादी मुझसे मिलने आयी होगी। मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नजर से नहीं गुजरी ।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न रिया । उन्होंने समझा कि आजाद हम चकमा दे रहे हैं। अब तो आज़ाद के रहे-सदह्दे हवास भी ग़ायत्र हो गये । कुछ देर तक तो जब्त किया मगर न रहा गया । बोले--मिस मौडा, तुम) इस मुल्क की मकार औरतें अभी नहीं देखीं ।

मीडा--मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आज़ार--उसकी शरारत देखी !

मीडा-मेरा ध्यान उस वक़त उधर न था।

आज्ाद--मिस कलारिसा, तुम कुछ समझी या नहीं । क्लारिसा--मैंने कुछ खयाल नहीं किया ।

आज़ाद--मुझ सा अद्मक़ भी कम होगा । सारी दुनिया से आ कर यहाँ चरका खा गय' |

मीडा -- अपने किये का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो ।

आज़ाद-हाँ, यही तो मैं चाइता था कि कुछ कद्दो तो सही | मीडा, सच कद्दता हूँ, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो । मगर इसने वह दॉव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक बन गये ।

मीडा--अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गये ६

आज़ाद--शढी ग़छूती का तो रोना है। में कया जानता था कि वह यह्द रंग लायेगी |

मीडा-यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ | अब्न आगे के लिए क्या फ़िक्र कं है ! उसकी बातचीत से मादूम होता था कि वह ज़रूर नालिश करेगी ।

आजाद--इसी का तो .मुझे भी खौफ़ है । खोजी को भजा है हि जा कर उसे घमकायें । देलो, क्या करके आते हैं ।

उधर खोडी गिरते-पड़ते कुंदन के घर पहुँचे, तो दो-तीन औरतों को कुछ बातं करते सुना । कान लगा कर सुनने लगे ।

बेटा, तुम तो समझती ही नहीं दो; बदनामी कितनी बड़ी है ।"

धो अम्मों जान, बदनामी का ऐसा ही डर दो तो सर्मी न दब जाया करें !?

"बते ही हैं। उस फ़ौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिये !!

'अच्छा अम्माँजान, दुम्हें अख्तियार है; मगर ततीजा अ 5 ने होगा ।!

खुंजीसे अब न रहा गया। झला कर बोले-ओ गीदी, कल वो झा। देख तो कितनी क्रौलियाँ मोंकता हूँ ।

अदढ-बटके बाते बनाती है ! नालिश करेगी. और बदनाम करेगी ।

कुंदन ने यह आवाक्ष सुनी तो छिड़की से झाँका। देखा, तो एक ठिंगना सा आदमी पैतरे बदल रहा है। महरी से कद्दा कि दरवाज़ा खोल कर बुला लो । महरी ने आ कर कद्दा--कौन साहब हैं ! आइए |

खोजी अकड़ते हुए अंदर गये और एक मोदे पर बैठे । बैठना द्वी या कि सिर नीचे और टॉगें ऊपर ! औरतें हँसने लगीं। खेर, आप संभल कर दुसरे मोदे पर चैठे और कुछ बोलना द्टी चाहते थे कि कुंदन सामने आयी और आते ही खोजी को एक धका दे कर बोली--चूल्दे में जाय ऐसा मियाँ । बरतों के बाद आज सूरत दिखायी तो भेस बदल कर आया । निगोड़े, तेशा जनाज़ा निकले | तू अब्न तक था कहाँ [

खोजी--यह दिल्लगी दमको पसंद नहीं ।

कुंदन--(धप लगा कर) तो शादी क्या समझ कर कोी थी !

शादी का नाम सुन कर खोजी को बाँछें खिल गयीं । समझे कि मुफ़्त में औरत हाथ आयी । ब्ोले---तो शादी इसलिए की थी क्रि जूतियाँ खायें !

कुंदन--आखिर, तू इतने दिन था कहाँ १ छा, क्या कमा कर लाया है |

यह कद कर कुंदन ने उनकी जेच्च टटोली तो तीन रुपये और कुछ पैसे निकले । बह निकाल लिये । वह बेचारे हाँ-हाँ करते ही रददे कि सब्रों ने उन्हें घर से निकाल कर दरवाज़ा बंद कर दरिया | खोजी वहाँ से भागे और रोनी सूरत घनाये हुए होटल में

दाखिल हुए । है आजाद ने पूछा--कहो भाई, क्या कर आये १ ऐं | तुम तो पिटे हुए से जान

पड़ते हो |

खोजी--ज़रा दम लेने दो | मामछा बहुत नाजुक है। तुम तो फँसे ही ये, में भी फैंस गया । इस सूरत का बुरा हो, जहाँ जाता हूँ वहीं चाइनेवाले निकल आते हैं । एक पंडित ने कद्दा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है । उस वक़्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जेंची, मगर अब्र देखता हूँ तो उसने त्रिलकुल सच कहा था |

आज़ाद--ठुम तो द्वो सिड़ी । ऐसे द्वी तो बड़े हसीन हो। मेरी बाबत भी कुंदन से कुछ बातचीत हुई या आँखें ही सेकते रहे !

खोजी--जडे घर की तेयारी कर रखो । बंदा वहाँ भी तुम्हारे साथ होगा |

आज़ाद--बाज आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिछठाना सब अकारथ गया । बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ | . इस पर खोजी बहुत बिगड़े | बोले--हाँ साइन, काम निकल गया न ! अब् तो मुझसे बुरा कोई न होगा ।

खानसामा--कक्या है ख्वाजा जी, क्यों त्रिगड़ गये !

खोज्जी--तू चुर रह कुली, ख्वाजा जी | और सुनिएगा १

खानसामा--मैंने तो आपकी इज्जत की थी !

खोजी--नहीं, आप माफ़ कीजिए. | क्या ख़ब। टके का आदमी और इमसे इस तरह पर पेश आये। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा नीता ही फिर हुआ है |

खैर, जो चाहो, सुनाओ | अब हम यहाँ से कूच करते हैं। जहाँ हमारे क़द्दों हैं, वहाँ जायँगे ।

खानसामा--यहाँ से बढ़के आपका कौन क़द्रदाँ होगा ! खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बना कर रखें; फिर अब और क्या चाहिए !

खोजी--घच है भाई, सच है। दम आज़ाद के गुल्मतो हैं ही। उन्हीं से कसम लो कि उनके बाप-दादा इमारे बुजुर्गों के ढुकड़े खा कर पले थे या नहीं ।

आजाद--आपकी बातें सुन रहा हूँ । जता इधर देखिएगा !

खोज्जी--सो सोनार की, तो एक लोदह्दार की |

आज़ाद--ह मारे बाप-दादा आपके ट्ुकड़खोरे थे !

खोजी--जी हाँ, क्या इसमें कुछ शक भी है !

इतने में खानसामा ने वुर से कहा--ख्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अंडे बेचा करते थे ।

इतना सुनना था कि खोचन्ची आग हो गये ओर एक तवा उठा कर ख़ानसामा की तरफ दौड़े । तवा बहुत गम या | अच्छी तरह उठा भी नहीं गये थे कि हाथ जल गया । झिक्षक कर तवे को जो फेंका तो खद भी मुँह के बल गिर पढड़े।

खानसामा-या अली, बचाइयो ।

बैरा--तवा तो जल रहा था, द्वाथ जल गया होगा ।

मीडा--डाक्टर को फ़ौरन बुछाओ ।

खानसामा--उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान दो |

आजाद-खदा ने बचा लिया, वरना जान दी गयी थी ।

ख्वाजा साहब चु।चाप पड़े हुए थे | खानसामा ने बरामदे में एक पलंग भिछाया और दो आददमियों ने नि कर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले ज़ार्य | उसी वक़्त एक आदमी ने कद्दा--अब बचना मुश्किल है | खोजी अक़्छ के दुच्मन तो ये ही। उनको यकीन हो गया कि अब आखिरी वक़्त है। रहे-सहे हवात भी ग़ायबत्र हो गये | जानतामा और द्दोट्ड के और नौकर-चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा--भाई, दुनिया इसी का नाम है| जिंदगी का एतत्रार क्या |

बैरा--हसो बहाने मौत लिखी थी ।

मुहर्रिरि---और अभी नौजवान आदमी हैं | इनकी उम्र दी कया है !

आज़ाद--क्या, हाल क्या है ! नब्ज का कुछ पता है !

खानवामा--हुजूर, अब आखिरी वक़्त है। अब कफ़न-दफ़न की फ़िक्र कीजिए ।

यह सुन कर ख़ोजी अल-मुन गये | मगर जांलरी बक़त था, कुछ बोल न सके |

आजाद--किसी मौछवी को बुलाओ ।

मुहर्रिरि--हुल्र, यह न होगा | इमने कभी इनको नमाज़ पढ़ते नहीं देखा |

आज़ाद--भई, इस वक़्त यह जिक्र न करो |

मुहर्रिर--दुलूर मालिक हैं, मगर यह शुसलमान नहीं हैं |

खोजी का बस चलता टो मुदहर्रिर की बोटियाँ नोच लेते; मगर इस वक़्त वह मर रदेथे।

खानसामा -कत्र खुदवाहइए, अब इनमें क्या है !

बैरा--इसी सामनेवाले मैटान में इनको तोप दो ।

खुं।जी का चेहरा सुख हो गया | कम्बख्त कहता है, ठोप दो | बह नहीं कहता कि आपको दफ़न कर दो ।

आजाद--तड़ा अच्छा आदमी था बेवारा ।

खानसामा--लाख सिटड्डी थे, मगर थे नेक |

बेरा-नेक क्या थे | हाँ, यद्द कहो कि किसी तरह निभ गयी ।

खं।जी अपना खन पीके रद्द गये, मगर मजबूर थे ।

मुह रिर--अब इनको मिले तोप दी दीजिए ।

आजार -घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी ।

भैरा--ख्वाजा साहब, कद्दिए, अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी !

आज़ाद--अन्र इस वक़्त क्या बताये वेचारे, अफ़मोस है !

खानसामा--अफ़सोस क्यों हुजर, अब मरने के तो दिन ही-थे । जवान-जवान मरते जा- हैं । यह तो आअयनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आक्षत के बोरिये बटोरेगे !

आज़ाइ--हाँ, है तो ऐता ही, मगर जान बड़ी प्यारी होती है। आदमी चादे दो सो बरस का द्वोक मरे, मगर मरते वक़्त यही जी चाहता है कि दस बरस ओर जिंदा

रहता । ख/नसामा--तों हुज्र, यह तम्नन्ना तो उसको दो, जिसका कोई रोनेवाला दहो।

इनके कोन बेठा है । इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बना कर लाया [| आज़ाद--कुर्सी पर जैठिए इर्काम साइब | हकीम--यह गुस्ताग्ी मुझसे ने हंगी। हुज्र बेटे । अश्रजाइ--इस वक़्त सत्र माफ़ है। इकीमस--यह बेअदबी मुझलते न होगी। «;हाद--ह कीम साहब, मरीज़ की जान बाती है और आप तक़75फ करते हैं। हम -जाहे मरीज मर जाय; मगर मैं अदव को हाथ से न जाने दूँगा। खलोडी को इर्क म् की सूरत से नफ़ात हो गयी । आजाद--आप तक़ब्छफ़ में मरीज की जान ले लेंगे । हर्कीम--अगर मौत है तो मरेंग ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ें ! आजाद ने जी के कान में जोर से कहा- -हकीम साहब आये हैं । व ४ ने इकीम साइन को सलाम जिया और हाथ बढ़ाया । ६ (शाज व हज रज कर) अब क्या बाक़ी है, मगर. तीन-चार दिन की नब्ज़ है; इस वक़्त इनको ८डे पानी से नहलाया जाय तो बेहतर है, बल्कि अगर पानी में बफ़ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है ।

आजाद- तरहुत अच्छा | अभी लीजिए |

हकीम--बस, एक दो मन बर्फ़ काफ़ी होगी |

इतने में मिस मीडा ने आजाद से कहा--गुम भी अजीच आदमी हो । दो-चार होटलवालों को ले कर एक वारीब का खून अपनी गरदन पर लेते हो। खोजी को चारपाई हमारे कमरे के सामने त्रिछबा दो और इन आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के क़रीब न आये।

इस तरद्त खोजी की ज्ञान बची | आराम से सोये । दूसरे दिन घूमते-घामते एक चंड्जाने में ज्ञा पहुँचे ओर छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्नआग का जिक्र सुन कर उनके कान खड़े हुए. । कोई कह रहा था कि हुस्नआरा पर एक शाहज़ादे आशिक हुए हैं, जिनका नाम क़मरुद्दौला है। खोजी बिगड़ कर बोले--सबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम फिर लिया शरीफ़ज़ादियों का नाम बद करता है बे !

एक चेंड्ब्राज--हम तो सुनी-मुनाई कहते हैं साहब ! दशाहर भर में यह ख़बर मशहूर है, आप (किस-किसकी ज़बान रोकिएगा |

खोजी-- झूठ है, बिलकुल झूठ |

चंड्बाज--अच्छा, हम झूठ कहते है तो ईदू से पूछ लीजिए ।

ईंदू- हमने तो यह मुना था कि बेरम साइब ने अखबार में कुछ लिखा था तो वह शाहज़ादे ने पदा और आशक़ हो गये, फ़ौरन वेगम साहब के नाम से खत ल्खिा और शायद किसी बाँके को मुक़रर किया है कि आजाद को मार डाले । खदा जाने, सच है या शूठ । ह

ग्ोजी--तुमने किससे सुनी है यद्द बात ! इस धोखे में न रहना । थाने पर चल-कर गवादी देनी होगी ।

ईदु--हुजूर क्या आजाद के दोस्त हैं !

खोजी--दोस्त नहीं हूँ, उस्ताद हूँ । मेरा शागिद दे ।

ईदू-- आपके कितने शागिद होंगे !

खोजी-- यहाँ से ले कर रूम और शाम तक |

खोजी शाहजादे का पता पूछते हुए लाल कुएँ पर पहुँचे । देखा तो सैकड़ों आदमी णनी भर रहे हैं ।

खोज़ी-- क्यों भाई, यह कुआँ तो आज तक देखने में नहीं आया था ।

भिर्ती--क्या कहीं बाहर गये थे आप £१

खोजी--हाँ भई, बढ़ा लम्बा सफ़र करके लौटा हूँ ।

मिशइती--इसे बने तो चार महीने हो गये ।

खोजी--अहा-हा ! यह कद्दो, भला किसने बनवाया है !

भिश्ती--शाहजादा क़मरुद्दौछा ने ।

खोजी-- शाहजादा साहब रहते कहाँ हैं !

भिश्ती--तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज्ञ ही आये द्धो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है |

खोजी यहाँ से मइल के चोबदार के पास पहुँचे और अलेक-सक्केक करके बोले-- भाई, कोई नौकरी दिल्वाते हो |

दरबान-- दारोगा साहब से कद्दिए, शायद म्रतलत्र निकले ।

खोजी--उनसे कब्र मुलाक़ात द्ोगी |

दरबान--उनके मकान पर जाइए, और कुछ चटाइए ।

खोजी--भला शाहजादे तक रसाई दो सकती है या नहीं !

दरबान--अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ बारद हैं।

इतने में अंदर से एक आदमी निकला। दरबान ने पूछा--किधर चले शेख जी !

शेख--द्ुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जढद द्वाज़िर करो |

खोजी--तो दइमको ले चलिए | इस फ़न में हम अपना सानी नहीं रखते |

शेख--ऐसा न हो, आप वहाँ चल कर बेवकृफ़ बनें |

खोजी--भजी, ले तो चलिए । खदा ने चाह्दा तो सुखरू ही रहूँगा।

शंख साहब उनको ले कर बारादरी में पहुँचे । शाहजादा साइब मसनद लगाये पेचवान पी रहे ये और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे | खोजी ने अदब से सलाम किया और फ़श पर जा बैठे ।

आग़ा--हुजूर, अगर हुक्म द्टो तो तारे आसमान से उतार ढूँ |

मुन्ने-- हक़ है| ऐसा द्वी रोब है हमारे सरकार का |

मिरज़ा--खदावंद, अब हुजूर की तब्ीयत का क्या हाल हे !

आग़ा--खुदा का फ़ज्नल है। खुदा ने चाहा तो सुबह-शाम शिषप्पा लड़ा ही चाहता है। हुज्र का नाम सुन कर कोई निकाह से इनकार करेगा भला !

मुन्ने--अजी, परिस्तान की हूर हो तो लोंडी बन जाय |

खोजी--खुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मादूम होता दे कि ख़ुदा ने अपने हाथ से बनाया है ।

मिरजा--सुभान-अल्लाह | वाह | खाँ साहब, वाह | सच है |

देख--लाँ साहव नहीं, खवाजा साइच कहिए |

मिरज़ा---अजी, वह कोई हों, हम तो इनसाफ़ फे लोग हैं। खटा को मैंद दिखाना है। क्या बात कही है | इ्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं| रफ़्ता-रफ़्ता देखिए गा कि हुजूर ने कैसा मिजाज पाया है।

शेख-- बूदों में बूदे, जवाभों में जवान ।

खोजी--मुझसे कहते हो | शहर में कौन रईस है, जिससे मैं वाक़िफ़ नहीं !

आग़ा--मभई मिरज़ा, अब फ़तह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही ध्ुकी हुंई हें ।

मिरजा--वल्लाह | दाथ लाइएगा | मरदों का वार खाली ज़ाय !

आशा-यद्द सब हुजूर का इक़ब्राल है |

कप्रस्दौला--मैं तो तड़प रहा था, जिंदगी से बेज्ार था | आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया ।

खोजी हैरान थे कि यह क्या माजरा है। हुस्नआश को यह क्या हो गया कि कमरद्ोल्य पर रीहीं | कभी यक्नीन आता था, कभी शक होता था |

आग्ा--हुज़्र का दूर-दूर तक नाम है !

मिरजा--क्यों नहीं, लंदन तक |

लोजी--कद दिया न भाईजान, कि दूसरा नजर नहीं आता । शाहजादा--(आशा से) यह कहाँ रहते हैं और कौन हैं ! खलोजी--जी, ग़रीब का मकान मुर्गी-बाजार में है ।

आग्रा--जभी आप कुड़क रहे थे । मिरजा--हाँ, अंडे बेचते तो हमने भी देखा था ।

खोजी--जभी आप सदर-बाजार में टापा करते हैं | शाहजाटा--ख्वाजा साहब जिले में ताक़ हैं।

लोजी--आपकी क़द्रदानी है । बॉ बातों-बातों में यहाँ की टोह ले कर खोजञी घर चले | होटल में पहुँचे तो आज़ाद

को बूदे मियाँ से बातें करते देखा । छलछकार कर बोले-छो, मैं भी आ पहुँचा । आजाद-- गुल न मचाओ, इम लोग न जाने कैसी सलाह कर रहे हैं, तुमको

क्या; बे-फिक्रे हो । कुछ बसंत की भी ख़बर है ! यहाँ एक नया गुल खिला है ! खोजी--अजी, हमें सब मालूम हैं | हमें क्या सिखाते हो ।

आज़ाद--तठुमसे किसने कहा ! खोजी--अन्री, हमसे बढ़ कर टोहिया कोई हो तो ले । अभी उन्हीं क्रमरुद्दोला

के यहाँ जा पहुँचा । पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बातचीत रही। आदमी तो खब्ती सा है और बिलकुल जाहिल | मगर उसने हुस्नभारा को कहाँ से देख लिया ! छोकरी है चुलबुली | कोठे पर गयी होगी, बस उसकी नज्जर पड़ गयी होगी ।

बूदे मियाँ--ज़रा ज़बान सैभाल कर |

खोजी--आप जब देखो, तिरछे ही हो कर बाते करते हैं ! क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है ! बड़े अक़्लमंद आप द्वी तो हैं एक !

इतने में फिटन पर एक अंगरेज आज़ाद को पूछता हुआ आ पहुँचा | आज़ाद ने बढ़ कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मादूम हुआग कि वह फ़ौजी अफ़सर है। आज़ाद को एक बजलसे का चेयरमैन बनने के लिए कहने आया है ।

आज्ाद--इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ़ की ! एक खत काफ़ी था |

साहइब--मैं चाहता हूँ कि आप इसी वक़्त मेरे साथ चरलें। लेक्चर का वक़्त बहुत क़रीब है।

आज़ाद साइब के साथ चल दिये। टाउन-हाल में बहुत से आदमी जमा थे। आजाद के पहुँनते ही छोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े । और जब वह बोलने के लिए मेज़ के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ़ समा बँध गया । जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मच्चते ये, अभी वुछ और फ़रमाइए। यहाँ तक कि आज़ाद ही के बोलते-बोलते वक़्त पूरा हो गया और साइब बहादुर के बोलने की नौबत न आयी | शाहजादा क्रमरद्दौद्ा

भी शुसाहब्रों के साथ जलसे में मौजूद ये | ज्यों ही आजाद बैठे, उन्होंने आग्रा से कहा- सच कहना, ऐसा खबसूरत आदमी देखा है !

आग़ा--बिलकुल रोर मादूम होता है|

शाहजादा--ऐमा जवान दुनिया में न होगा ।

आंग्रा- और तकरीर बितनी प्यारी है !

शाहजादा--क्यों साहब, जब्र हम मरदों का यह हाल है, तो औरतों का क्या हाल होता होगा !

आग़ा-- औरत क्या, परी आशिक हो जाय |

शाहजादा माहत्र जब्र यहाँ से चले तो दिल में सोचा--भला आक्षाद के सामने मेरी दाल क्या गलेगी! मेश और आज़ाद वा मुक्ाजिला क्या ! अपनी दिमाक़त पर बहुत शर्मिंदा हुए। ज्योंदी मकान पर पहुँचे, मुसाहबों ने बेपर को उड़ानी शुरू की |

मिरजञा- ख़दावंद, आज तो मुँह मीठा कगहए | वह खुशखबरी सुनाऊँ कि फड़क जाइए | हुजूर उनके यहाँ एक महरी नोकर है | वह भुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार को तसवीर का आजाद की तसवीर से मुक़ाबिला किया और बोलीं--मेरी शाहजादे पर जान जाती है ।

और मुसाहत्रों ने भी खुशामद करनी शुरू की; मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कह्दा । थोडी देर तक बैठे रहे | फिर अंदर चले गये । उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आगा से पूछा--अरे मिययाँ | बताओ तो, क्या माजरा है ! क्या सबभ्र है कि सरकार आज इतने उदास हैं !

आग़्ा--भई, कुछ न पूछिए । बस, यही समक्ष लो कि सरकार की आंखें खुल गयीं |

HINDI TEXT

प्रसंग १०९

आजाद के आने के बाद द्वी बडी बेगम ने शादी की तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बरात खूब धूम-घाम से आये। आज़ाद धूम-धाम के स्वुलाफ़ ये | इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं--

बहार बेगम--यह सन्न ठिखाने की बातें है। किसी से दो हाथी माँगे, किसी से दो-चार घोड़े; कहीं से सिपाही आये, कहीं से चरछो-बरदार ! लो साइब, बरात आयी है| माँगे-तांगे को बरात से फ़ायदा १

बड़ी बेगम-- हमको तो यह तमन्ना नहीं है कि बरात धूम दही से दरवाजे पर आये । मगर कम से कम इतना तो जरूर द्ोना चाहिए कि जग-हँसाई न हो |

जानी बेगम--एक काम कीजिए, एक खत लिख भेजिए।

गेती--हमारे खानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं । इमने तो जन तक नहीं मुना । धुनिये जुलाहों के यहाँ तक तो अँगरेजी बाजा बरात के साथ द्वोता है ।

बरहार--हाँ साहब, वरात तो वही है, जिसमें ५० हाथी, बल्कि फ़ीलखाने का फोलखाना हो, सॉड़िनियों की कतार दो महत्ले तक जाय। शहर भर के घोड़े और हवादार और तामदान दों और कई रिसाले, बढ़कि तोपखाना भी जरूर हो | कदम-कदम पर आतशबाजी बघूटती हो और गोले दरग़ते हों । मालूम हो कि बरात क्या, किला फ़तद्द किया जाता है।

नाजुक--यह सब बुरी बातें हैं, क्यों !

बहार--जी नही, इन्हें बुरी कोन कहेगा भला |

नाजुक--अच्छा, वह जानें, उनका काम जाने |

हुस्ुनआरा ने जब्र देखा कि आज़ाद की जिद से बड़ो बेगए नाराज़ हुई जाती हैं तो आजाद के नाम एक खत लिखा--

प्यारे आजाद,

माना कि तुम्हारे खयालात बहुत ऊँचे हैं, मगर राह-रस्म में दखल देने से क्या नतीजा निकलेगा । अम्माजान जिद करती हैं, और ठुम इन्कार, खुदा ही खैर करे। इमारी खातिर से मान लो, और जो वद् कहें सो करो |

आज़ाद ने इसका जवाब लिखा--जैसी तुम्हारी मर्जी । मुझे कोई उज्र नहीं है ।

हुस्नआरा ने यद्द खत पढ़ा तो तस्क्रीन हुईं। नाजुकअदा से बोलीं--लछो बहन,

जवाब आ गया | नाजक---मान गये या नहीं ! हुस्नआरा--न कैसे मानते । नाजुक - बलों, अब अम्मॉजान फो भो तस्क्रीन हो गयी । बहार--मिठाइयाँ बाँटो । अब- इससे बढ कर खुशी की और क्या बात

होगी !

नाशुक--आखिर फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिए दिया है !

बहार--वाह री अक़्ल | बस, रुपया इसी लिए है कि आतशत्राजी में फूँके या ग्जावट में छुटाये । और कोई काम ही नहीं १!

नाज़क--और आखिर क्या काम है ! क्या परचून की दूकान करे ! चने बेचे ! कुछ मालूम तो द्वो कि रुपया किस काम में खच किया जाय ? दिल का हौसछा और

कैसे निकाले | बहार--अपनी-अपनी समझ है|

नाज़क--खुदा न करे कि किसी की ऐसी उलटी समझ हो । लो साहब, अब्र ब्रात भी गुनाद है। द्वाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल । जो बरात निकालते हैं, सब गधे हैं | एक तुम ओर दुसरे मियाँ आजाद दो आदमियों पर अक़छ खतम हो गयी । जरा आने तो दो मियां को, सारी शेखी निकछ जायगी |

दूसरे दिन बड़ी धूम-धाम से माँसे की तैयारी हुईं। आज़ाद की तरफ़ खोजी मुह्तमिम थे | आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी जिसमें कीमती बेल टैकी हुई थी | सिर पर एक बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कशमीर का इरा दुशाला । इस ठाट से आप बाहर आये तो लोगों ने तालियाँ बजायीं। इस पर आप बहुत दी खफ़ा हो कर बोढे--यह तालियाँ हम पर नहीं बजाते हो | यह अपने बाप-दादों पर तालियाँ बजाते हो । यह खास उनका लिबास है। कई लौंडों ने उनके मुँह पर हँसना शुरू किया, मगर इंतजाम के धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़क कर बोले--हाथियों को उसी तरफ रद्दने दो । बस, उसी लाइन में छा-लछा कर

हाथी लगाओ |

एक फ़ीलवान-यहाँ कद्दीं जगद्ट भी है ! सबत्रका भुरता बनारयेंगे आप !

खोजी- चुप रह, बदमाश !

मिर्जा सादव भी खड़े तमाशा देख रहे थे । बोले--भई, इस फ़न में तो तुम उस्ताद दो ।

खोजी--(मुसकिरा कर) आपकी क्रद्रदानी है |

मिसा--आपका रोब सब मानते हैं |

खोजी-हम किस लायक हैं माईजान | दोस्तों का इक़बाल है |

ग़रज़ इस धूम-घाम से माँझा दुलद्विन के मरान पर पहुँचा कि सारे शह्दर में शोर मच गया । सवारियाँ उतरीं । मीरासिनों ने समधिनों को गालियाँ दीं। मियाँ आज़ाद बाहर से बुल्वाये गये और उनसे कद्दा गया कि मढ़े के नीचे बैटिए | आजाद बहुत इनकार करते रहे; मगर औरतों ने एक न झ्ुनी। नाजक बेगम ने कदा--आप तो अभी से बिचकने लगे । अभी तो माँझे का ज्ोडा पहनना पड़ेगा |

आज़ाद--यह मुझसे नहीं होने का।

ज्ञानी बेगम--अब चुपचाप पहन छो, बस |

आब्ाद--ज्या फ़जूल रस्म है !

जानी--के, अब पहनते हो कि तक़रार करते हो ! इमसे जनरेली न चलेगी ।

बेगम-- भला, यह भी कोई बात दे कि माँसखे का जोड़ा न पहनेंगे !

आज़ाद--अगर आपकी खातिर इसी में है तो छाइए, टोपी दे ले ।

नाजुक बेगम--जब्र तक माँसे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहाँ से उठने न पाओगे ।

आज़ाद ने बहुत ह्वाथ जोड़े, गिड़गिड़ा कर कद्दा कि खुदा के लिए मुझे इस

पीले जोड़े से बचाओ । मगर कुछ बस न चला | सालियों ने अंगरखा पहनाया, कंगन बाँधा । सारी बाते रस्म के मुताब्रिक़ पूरी हुई ।

जब आज़ाद बाहर गये तो सत्र बेगमें मिल कर बारा की सैर करने चीं। गतीआरा ने एक फूल तोड़ कर जानी बेगम की तरफ़ फेंका । उसने वह फूल रोक कर उन पर ताक के मारा तो आआँचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बार में चारों तरफ़ फूलों की मार दोने लगी । इसके बाद नाज़ कअद्दया ने यह राजल

गाया । वाक्िफ़ नहीं है क्रासिद मेरे समेनिहाँ से, वह काश हाल मेरा सुनते मेरी ज्बों से। क्यों त्योरियों पर बल है, माथे पर क्यों शिकन है! क्यों इस कदर दो बरहम, कुछ तो कहद्दो जनों से | कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया, काली घटाएँ रो कर उलटी है बोस्ताँ से ! जाने को जाओ लेकिन, यद्द तो बताते जाओ, किस तरह बारे फुरक्रत उठेगा नातवाँ से | बहार--जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम हूँ । नाजुक--और मेरा जी चाहता द कि तुम्दारी तारीफ़ चूम हें । बहार--दहम तुम्हारी आवाज़ के आशिक हैं। नाजक--आपको मेहरबानी । मगर कोई ख़बसूरत मद आशिक्न हो तो बात है | तुम इम पर रीह्वीं तो क्या १ कुछ बात नहों । बहार--बस, इन्हीं बातों से लोग उँगलियाँ उठाते हैं । और तुम नहीं छोड़तीं | जानी--सच्ची आवाज़ भी कितनी प्यारी द्वोती है ! नाजक--क्या कहना है | अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न | अगर इमको अछाह ने ऐटा हुस्न न दिया द्वोता, तो इमारे मियोँ हम पर क्यों रोशते १ बद्दार--तुम्दारा हुस्न तुम्हारे मियाँ को मुबारक हो | दम तो तुम्दारी आवाज पर मिटे हुए हैं । नाजक--ओर मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूँ। अब मैं भी बनाव-चुनाव ' करना तुमसे सीखूँगी ।

नाज्क--बदहन, अब तुम झेपती हो | जन्न कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा । मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। हैं तुम्हारे मियाँ क्रिस्मत के धनी ।

बहार- सुनो बहन, दमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताक़त नहीं कि उसे बाहर का चस्का पढ़े |

साचिक के दिन जब्न चाँदी का पिटारा बाहर आया, तो खोजी बार-बार पियरे का ढकना उठा कर देखने लगे कि कहीं शीक्षियाँ न गिरने लगे। मोतिये का इत्र खूदा जाने, किन डिक़्क्रतों से लाया हूँ । यह वह इतत्र है, जो आसफुद्दौा के यहाँ से बादशाह की बेगम के लिए गया था |

एक आदमी ने हँस कर कह्टा- इतना पुराना इच्न हुजूर को कहाँ से मिल गया १

खोजी-- हूँ: ! कहाँ से मिल गया ! मिल कहाँ से जाता १ मह्दीनों दोड़ा हूँ, तत्र जाके यह चीज हाथ लगी है |

आदमी- क्यों साहब, यद्द बरसों का इत्र चिटक न गया होगा !

खोजी-- वाह ! अक़ल बड़ी कि भेंस १ बादशाही कोठों के दृत्न कहीं चिटका करते हैं! यद भी उन गंधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं !

आदमी--और क्यों साहब, केवडा कहाँ का है !

खोजी--केवड़िस्तान एक मुक्राम है, कजलीवन के पात। वहाँ के केवड़ों से जंचा गया है।

आदमी--केवडिस्तान | यह नाम तो आज ही सुना ।

खोजी--अभी तुमने सुना ही क्या है! - गड़्िस्तान का नाम ही सुन क

घत्रड़ा गये ! आदमी--क्यों हुजूर, यह कजलीवन कौन सा है! वही न, जहाँ घोड़े बहुत

होते हैं !

खोजी--(हँस कर) अत्र बनाते हैं आप | कजलीवन में घोड़े नहीं, खास द्वाथियों का जंगल है।

आदमी- क्यों जनाब, केवड्टिस्तान से तो केवडा आया, और गुलाब कहाँ का है ! शायद गुलातिस्तान का द्वोगा [

खोजी--शाबाश | यह हमारी सोहब्नत का असर है कि अपने परों आप उड़ने लगे | गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहाँ का जादू मशहूर है ।

रात को जब साचिक् का जदूस निकला तो खोजी ने एक पनशाखेवाली का हाथ पक्डा और कद्दा--जब्दी-जढ़्दी क़दम बढ़ा ।

वह ब्रिगड़ कर बोली-दुर मुए | दादी छलस दूँगी, हाँ। आया वहाँ से बरात का दारोग़ा बनके, सिवा मुरहेपन के दूसरी बात नहीं |

खोली -- निकाल दो इस हृगमजादी को यदों से

औरत-+- निकाल दो इस मूड़ीकाटे को |

खोजी--अब मैं दूरी भोंक दूँगा, बस !

ओऔरत--भपने पनशाखे से मुँह छुलस दूँगी। मुआा दीवाना, औरतों को राध्षत में छेड़ता चलता है ।

खोजी---अरे मियाँ कांस्टेबल, निकांठ दो इस औरत को |

औरत - तू ख़द निकाल दे, पहले |

जलूस के साथ कई बिगड़े रिल भी थे। उन्होंने खाजी को चकमा दिया -- जनाब, अगर इसने सजा न पाती तो आपकी बड़ी फिरक्रिरी होगी। बदरोची हं। जायगी | आखिर, यह फ़ेसलछा हुआ, आप कमर कस कर बड़े जोश के साथ पनशाखे-वाली की तरफ़ झपटे | झपटते दी उसने पनशाखा सीधा क्रिया और कहा--अल्ा ६ फी क्रमम | न झल्स हूँ तो अपने बाप का नहीं ।

लोगों ने स्थोजी पर फबतियाँ कसनी झुरू को ।

ए.क--क्यों मेजर साइबर, अब तो द्वारी मानी !

दूसरा--ऐं | करोडी और छूरी क्या हुई !

तीयरा-एक पनशालिेवाली से नहीं जीत पाते, बड़े सिपाही की दुम बने हैं |

औरत--क्या दिछगी है ! ज़रा जगद से बदा।, और मैंने दादी और मूँछ दोनों झुलस दिया।

स्लोजी--देखो, सब्र के सब देख रहे हैं कि औरत समझ कर इसको छोड़ दिया : बरना कोई देव भी होता तो इम बे क़त्ल किये न छोड़ते इस वक़्त ।

जब साचिक्र दुलहिन के घर पहुँचा, तो दुलद्दिन की बहनों ने चंदन से समधिन की माँग भरी । दुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फडक गयी । दुलद्धिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इस # बाद छड़ियों की मार होने लगी । नाजकअदा और जानी बेगम के द्वाथ में फूलों की छड़ियां थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियाँ पड़ीं की बेचारी घषड़ा गयीं ।

जब माँसि और साचिक कौ रस्म अदा द्वो चुको तो मेहैंदी का जदूस निकला इलहिन के यहाँ मदफिल सजी हुई थी। डोमिनियाँ गा रही थीं। कमरे की दीवार इस तरह रेंगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहृरती थी। छतगीर की जगह सुख ज़रबप्नत लगाया गया था। उस पर सुनददरी कलाबत की झालर थी। फ़श भी सुख मखमछ का था। झाड और कवर, मृद्र और हाँड्ियोँ सभ्च सुख । कमरा शीशमइल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती फिरती थीं। इतने में एक सुख-पाल ले कर मद्दरियाँ सदन में आयीं। डस पर से एक बेगम साहब उतरीं, जिनका नाम परोत्ानू था।

सिपहआरा बोलों - हाँ, अब नाजुकअदा बदन की जवाब देनेवाली आ गयीं। घराबर की जोड़ है | यह कम न वह कम |

रूहअफ़जा--नाम बडा प्यारा है।

नाउक-प्यारा क्यों न हो । इनके प्ियाँ ने यह नाम रखा है ।

परीबानू---और तुम्हारे मिर्यों ने तुम्हारा नाम क्या रखा है। चरबाँक महस !

इस पर बड़ी हँसी उड़ी । बारदद बजे रात को मेहंदी रवाना हुईं | जब जदूस सज गया तो ख्वाजा साइब आ पहुँचे और आते हड्डी गुल मचाना शुरू किया--सब चौंजे क़रीमे के साथ छगाओ और मेरे हुक्म के बरौर कोई कदम भी आगे न रखे। वरना बुरा होगा ।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाये गये ये। जिसने देखा, दंग हो गया |!

एक--यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सबसे बदढ-चढ़ कर हैं |

दूसरा--बड़ा रुपया इन्होंने सफ़े किया है साहब |

तीसरा--ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं ।

चौथा--ज़रा चंडूबाज़ों के तइत को देखिए । ओदो-हो | सब के सब आँघे पड़े हुए हैं | आँखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मादूम होता है, सचमुच चंड्रखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पाँढा छील रहा है |

इसके बाद तुर्क सवारों का तख्त आया | जवान लाल बानात की कुतियाँ पहने, सिर पर बाकी टोपियाँ दिये, बूट चढाये, द्वाथ में नंगी तलवारें लिये, बस यही मादूम होता था कि रिसाले ने अब धावा किया |

जब जलूस दूल्दा के यद्दाँ पहुँचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं । दूल्हा की बहने और भावजें दरवाज्षे तक उन्हें लाने आयीं। सब समधघिनें बैठीं तो डोमिनियों ने मुबा-रकबाद गायी । फिर गालियों की बौछार होने लगी । आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े; मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के द्वाशों में मेहंदी लगाने की बारी आयी। उनका इरादा था कि एक ही उँगली में मेइंदी लगाये, मगर जब एक तरफ़ सिपहआरा और दूसरी तरफ़ रूदअफ़जा बेगम ने दोनों द्वाथों में मेहँदी लगानी शुरू की तो उनकी द्विम्मत न पड़ी कि द्वाथ खींच ले ।

हँसी-हँसी में उन्होंने कद्टा--हिंदुओं के देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है | नहीं तो अरब में कौन मेहँदी लगाता है |

सिपहआरा--जिन हाथों से तलवार चलढायी, उन द्वाथों को कोई हँस नहीं सकता । सिपादहदी को कौन दँसेगा भला !

रूहअफ़जा--क्या बात कही है | जवाब दो तो जानें ।

दो बजे रात को रूहअफ़ज्ञा बेगम को शरारत जो बूझी तो गेरू घोल कर सोते में महरियों को रैंग दिया और छगे दाथ कई बेगमों के मुँदह भी रंग दिये । सुबह को जानी बेगम उठीं तो उनको देख कर सब की सब हँसने लगीं। चकरायीं कि आज माजरा क्या है। पूछा--हमें देख कर हँस रही दो क्या !

रूहअफ़जा--घबराओ नहीं, अभी माद्म हो जायगा |

नाणुक--कुछ अपने चेहरे की भी खबर है !

जानी--तुम अपने चेहरे की तो खबर लो |

दोनों आईने के पास जाके देखती हैं, तो मुँह रैंगा हुआ । बहुत शर्मिंदा हुई ।

रूहअफ़ज़ा--क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है !

जानी--अच्छा, क्या मुज़ायक़ा है; 'मगर अच्छे घर बयाना दिया। आज रात होने दो | ऐसा बदला दूँ कि याद ह्वी करो |

रूहअफ़जा--हम दरवाज़े बंद करके सो रहूँगे | फिर कोई कया करेगा !

बानी- चादे दरवाजा बंद कर लो, चाहे दस मन का ताला ढाल दो, इम उस स्याही से मुँह रंगेंगी, जिससे जूते साफ़ किये जाते हैं |

रूहअफ़जा--बहन, अत्र तो माफ़ करो | ओर यों हम हाजिर हैं। जूतों का द्वार गले में डाल दो |

इस तरह चहल-पहल के साथ मेहँदी की रस्म अदा हुई ।

HINDI TEXT

प्रसंग ११०

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ़ तारीफ़ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बडुत झल्झाये और कुछ शहर के अफ़ीमचियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी--भाइयो | लोगों का खयाल है कि अफ़ीम खा कर आदमी किसी काम का नहीं रहता । में कहता हूँ, बिलकुल ग़लत । मैंने रूम की लड़ाई में जैसे-जैसे काम किये, उन पर बड़े से बड़। सिपाही भी नाज़ कर सकता है। मैंने अकेले दो-दो लाख आदमभियों का मुक़ाबिला किया है। तोपों के सामने बेघड़क चला गया हूँ। बड़े-बढ़े पदलवानों को नीचा दिखा दिया है। और में वह आदमी हूं, जिसके यहाँ सत्तर पुइतों से लोग अफ़्रीम खाते आये हैं ।

लोग--सुमान अल्लाह | सुभान-अब्लाह |!

खोजी -- रही अक़ल की बात, तो में दुनिया के बड़े से बड़े शायर, बडे से बड़े फिलास्फर को चुनौती देता हूँ कि वह आ कर मेरे सामने खड़ा हो जाय | अगर एक डपट में भगा न दूँ तो अपना नाम बदल डा ।

लोग--क्यों न हो ।

खोजी--मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफ़ीम की तारीफ़ करके इसे और गिराँ कर दोगे, क्योंकि जिस चीज़ की माँग ज़्यादा द्योती है, वह महँगी जिकती है। मैं कहता हूँ कि इस शक को दिल में न आने दीजिए; क्योंकि सबसे ज़्यादा जरूरत दुनिया में ग़ल्ले की है। अगर माँग के ज़्यादा द्वोने से चीजें महँगी हो जातों तो गल्ला अब्र तक देखने को भी न मिलता | मगर इतना सत्ता है कि कोरी चमार, धुनिये-जुलादे सब खरीदतं और खाते हैं। वजद्द यह कि जब लोगों ने देखा कि ग़ल्ले की जरूरत ज्यादा है, तो राल्ला ज़्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफ़्रीम की माँग होगी, तो ग़ल्ले की तरह बोयी जायगी और सस्ती ब्रिकेगी। इसलिए हरएक सचे अफ़्रीमची का फ़ है कि वह इसके फ़ायदों को दुनिबा पर रोशन कर दे |

एक--क्या कहना है ! क्या बात पैदा की ।

दुसरा--कमाल है, कमाल |

तीसरा--आप इस फ़न के खदा हैं |

चौथा--मेरी तसल्ली नहीं हुई। आखिर, अफीम दिन-दिन क्यों महँगी होती भाती हे !

पाँचताँ -चुप रह | नामाकूल ! ख्याजा साहब की बात पर एतराक्ष करता है ! जा कर छत्राजा साइब्न के पैरों पर गिरो और कहो कि क्ुयूर माफ़ कीजिए ।

खोजी--भाइयों | झिसी माई को जलील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खरा ने मुझे बड़ा रुतवा रिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है; मगर आदमी नहीं, भाउमी का जौदर दे | मैं अपनी जब्रान से किसी को कुछ न कहूँगा । मुझे यद्ी कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा नालायक़, सबसे ज़्यादा बदनलीब और सबसे ज़्यादा जलील हूँ । मैंने मिस के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठाके

मुझे दे मारा था | जहाँ गया, पिटके आया | गो दुनिया जानती है कि ख्वाज साहब का जोड़ नहीं; मगर अपनी जब्ान से मैं क्यों कहूँ। में तो यही कहूँगा कि बुआ ज़ाफ़रान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ़ तक न की |

एक--खुदा बख्शे आपको | क्या कहना है उस्ताद |

दुसरश--पिट गये और उफ़ तक न की !

खोजी--भाइयो ! गोकि मैं अपनी शान में इउनत के बड़े-बड़े स्विताब पेश कर सकता हूँ; मगर घब मुझे कुछ कहना होगा तो यहद्दी कहेँगा कि में झक मारता हूं । अगर अपना जिक्र करूंगा तो यही कहूँगा कि में पाजी हूँ । में चाहता हूं कि छोग मुझे ज्लील समझें ताकि मुझे गारूर न हो !

लोग--वाह-वाहइ | कितनी आबिडी है | जभमी तो खदा ने आउछों यह शतत्रा दिया |

खोजी--आजकछ जमाना नाजुक है। किसी ने ज़रा टेदी बात की और घर लिये गये | कसी का एक धौल लगायी और चालान हो गया | द्वांकम ने १० दपया जुर्माना कर दिया या दो मद्दीने की क्ेद । अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस बप्ताने में अगर नित्राह है, तो आज्िज्ञो में। और अफ़ीम से बद्र कर आजिज़ी का सबक देनेतवाली दूसरी चीज नहीं ।

लोग--क्या इडीलें हैँ | दुभान-अल्लाह !

ले ।जी---भाइयो, मेरी इतनी तारीफ़ न कीनिए, वरना मुझे रारूर हो जायगा । में वह शेर हूँ, जिसने जंग के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया । मगर अब्र तो थापका गल्यम हूँ ।

पक--आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बंद कर दे ।

दुसरा--आपके क्रदमों की खाक ले कर ताबीज्ञ बनानी चाहिए |

तीसरा--इस आदमी को ज़बान चूमने के क्राबिल है |

चौंथा--भाई, यह सब अफ़ीम के दम का ज़हूरा है ।

खोजी---बहुत ठीक । जिसने यह बात कद्दी, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं । यह मेरी खानदानी सिफ़त है। एक नक़ल घसुनिए- एक दिन बाजार में किसी ने बिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे । उसने कहा, आठ आने | उसी के बगल में एक ओर छोटा उलट भे था। पूछा, इसकी क्या क्रीमत है ! कहा, एक रुपया | तब तो गाहक ने कान खड़े किये ओर कद्दा--हतने बड़े उल्दू के दाम आठ आने और जग से जानवर का मोल एक रुपया | चिड़ीमार ने कह्ा--आप५ तो हैं उल्लू । इतना नहीं समझते कि इस बड़े उल्लू में सिफ़ यह सिफ़त है [: यद्द उल्दू हे और इस

में दो सिफ़तें हैं, एक यह कि खद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पद्ठा है । तो भाइगो ! भाषका यह ग़रूम सिर्फ़ उस्खू नहीं, बल्कि उल्लू का पड्ढा है '

डर

एक--हम आज्न से अपने को उल्दू की दुम फ़ाइता लिखा करेंगे ।

पुसरा--हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर अब अपना नाम छिखेंगे तो गधे का नाम बा देंगे | आज से दम

आज़िजी सीख मये |

खोजी--सुनिए, इस उल्लू के पट्टे ने जो-जो काम किया, कोई करे तो बानें; उसकी टॉग की राह निकल जायें । पद्दाड़ों को इमने काठा और बड़े-बड़े पत्थर उठा कर दुश्मन पर फेंके। एक दिन ४४ मन का एक पत्थर एक हाथ से उठा कर रूसियों पर मारा तो दो छाख पच्चीस हज़ार सात सो उनसठ आदमी कुचल के मर गये ।

एक--ओपफ़फ़ोह ! इन दुबले-पतले हाथ-पाँवों पर यह ताकत !

खोजी--क्या कट्दा ! दुबले-पतले हाथ-पाँव | यह द्वाथ-पाँव दुबले-पतले नहीं | मगर बदन-चोर है। देखने में तो माद्म होता है कि मरा हुआ आदमी है; मगर कपड़े उतारे और देव माल्म दोने लगा | इसी तरद मेरे कद का भी द्वाल है। गैंवार भादमी देखे तो कदे कि बौना है। मगर जाननेवाले जानते हैं कि मेरा कद कितना ऊँचा है। रूम में जब दो-एक गँवारों ने मुस्े बीना कहा, तो बेअख्तियार हँसी आ गयी । यह खदा की देन है कि हूँ तो में इतना ऊँचा; मगर कोई कलियुग की खूँटी कहतः है, कोई बौना बनाता है । हूँ तो शरीफ़ज़ादा; मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाज्ी है। अक़लू इस क़दर कूट-कूट कर भरी है कि अगर फलातून जिंदा इंता, तो शागिदी करता । मगर जो देखता है, कहता द कि यद्द गधा है | यह द्रजा अफ़ीम की बरीडत ही हासिल हुआ है। अब तो यह द्वाल है कि अगर कोई आदमी मेरे तिर को जूतों से पीट, तो उफ़ न करूँ । अगर किसी ने कद्दा कि ख्वाजा गधा है, तो हँस कर जवाब दिया कि में ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे ।

एक--दु निया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं !

खोज्जी--मगर इस आज़िज़ी के साथ दिल्ल्लर भी ऐसा हूँ कि किसी ने बात कद्दी और मेंने चाँटा जहा | मिल्ल के नामी पहलवान को मारा । यह बात किसी अफ़ीमची में नहीं देखी | मेरे वालिद भी तोलों अफ़ीम पीते थे और दिन भर दूकानों पर चिलपें भरा करते ये | मगर यह बात उनमें भी न थी ।

छोग--आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया ।

खोनी--अब मैं आप लोगों से चंढू की सिफ़त बयान करना चाहता हूँ । बरैर चंड्ू पिये आदमी में इनसानियत आ नहीं सकती । आप छोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे | मुनिए--बगैर लेटे हुए कोई चंद्टू पी नहीं सकता और लेटना अपने को खाक में मिलाना है। बाना सादी ने कहा है--

खाक शो पेश अर्जों कि खाक शर्बी | (मरने से पहले खाक हो जा ।)

चंद्र की दूसरी सिफ़त यह है कि दरदम लछौ छगी रहती है। इससे आदमी का दिल रोशन दो जाता है । तीतरी सिफ़त यह है कि इसकी पीनक में फ़िक फ्रीब नहीं आगे पाती ; चुस्का छगायी और ग़ोदे में आये । चौथी सिफ़त यह है कि अफ्रीम चो को रात भर नींद नहीं आती । और यहद्द बात पहुँचे हुए फ्क्ीर दही को हातिल होती है। पाँचवीं तिफ़त यह है कि अफ़ीमची तड़के ही उठ बैठता दै। सबेरा हुआ और आग लेने दौड़े । और जमाना जानता है कि सबेरे उठने से बीमारी नहीं आती ।

इस पर एक पुराने खुर्यट अफ़ीमची ने कहा--हजरत, यहाँ मुझे एक शक है। जो लोग चीन गये हैं । वह कहते हैं कि वहाँ तीस बरस से ज़्यादा उम्र का आदमी ही नहीं | इससे तो यदी साबित द्योता है कि

अफ़ीमियों की उम्र कम होती है |

खोजी--यह आपसे किसने कद्दा ! चीनवाके किसी को अपने मुढ़क में नहीं जाने देते । असल बात यद्द है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा द्वोता है।

लोग --क्या, तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है ! इसका तो यक्कीन नहीं आता ।

एक--हाँ-हाँ होगा | इसमें यक्रीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब औरत तीस बरस की द्वो जाती है, तब कहीं लड़का पेदा द्ोता है ।

खोजी--नहीं-नहीं; यह मतलब नहीं है। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता हे ।

लोग--बिलछकुल झूठ | खदा की मार इस झूठ पर |

खोजी--क्या कद्दा १ यह आवाज़ किधर से आयी! अरे, यह कौन बोला था ! यह किसने कहा कि झूठ है !

एक --हुजूर, उस कोने से आवाज़ आयी थी ।

दूसरा--हुजूर, यह ग़छत कहते हैं | इन्हीं की तरफ़ से आवाज आयी थी ।

खोजी--उन बादमाशों को क्त्छ कर डालो | आग लगा दो | हम, और झूठ ! मगर नहीं, हमीं चूत, | मुझे इतना गुस्सा न चाहिए | अच्छा साहब, हम झूठे, हम

ग़प्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जाल्साज् और ज़माने भर के दग़ाबाज | आप लोग बतलाये, मेरी क्या उम्र द्ोगी !

एक--आप कोई पचास के पेटे में होंगे । दूसरा--नदीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे । खोजी--एक हुईं, याद रखिएगा इज़रत | इमारा पिन न पचास का, न साठ

का | हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यक्रीन न आये वह काफ़िर | लोग--उफ़्फ़ोद, दो ऊपर सौ बरस का तिन है |

खोजी--जी हाँ, दो ऊपर सो बरत का तिन है |

एक--अगर यह सद्दी है तो यह एतराज उठ गया क्रि अफ़ोमियों की उम्र कम होती दे | अब भी अगर कोई अफ़ीम न गये, तो बदनसोष है ।

खोजी--दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ अर अब तक वही ख़पदम है कहो, दजार से लड़ें, कहो, छाख से । अच्छा अब आप लोग भी अपने-अपने तज-रबे बयान करें | मेरी तो बहुत सुन चुके; अब कुछ अ'्ती भी कहिए '

इस पर गट्ट नाम का एक अफ़ीमची उठ कर बीआ--भाई पंचों, में कलूवार हूँ ।

मुझ सराब हमारे यहाँ नहीं त्रिकती । हम जब छड़के से थे, तत्र से हम अफ़ीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले | ऐ बस, एक जगह कोई पचास हों, पैतालिस हों, इतने आदमी खड़े ये । किसी के द्वाथ में छोटा, किसी के हाथ में पिच-कारी | हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से दो जूता दिया, तो खोपड़ी भज्ना गयी । अगर चाइता तो उन सबको इपट लेता, मगर चुप हो रहा ।

खोजी-- शाबाश | हम तुमसे बहुत ख़श हुए गुट्टू |

गुट हुजूर की दुआ से यह सब्र है ।

इसके बाद नूरखाँ नाम का एक अफ़ीमची उठा। कद्दा-पंचों | हम हाभ जोड़ कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफ़ीम, चंहू पीना शुरू किया है | एक दिन हम एक चने के खत में त्रैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबराम । आया और मेरा हाथ पकड़ कर कानीदौौज ले चला | मैं कान दबाये हुए उसके साथ चला आया ।

इसके बाद कई अफ़ीमचियों ने अपने-अपने हाल बयान किये । आखिर में एक बुडढे जोगादारी अफ़ीमी ने खड़े हो कर कद्दा--भाश्यो | आज तक अपफ्रीमियों में किसी ने ऐसा काम नहीं किया था। इसलिए हमारा फ़र्ज है कि इस अपने सरदार को कोई खिताब दें | इस पर सब छोगों ने प्रिछकर खशी से तालियाँ बजायीं और खोजी को गीदी का खिताब दिया | खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई ।

HINDI TEXT

प्रसंग १११

आब बही बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बहार है। बेगमें धमा-चौकडी मचा रही हैं।

जानी--दृल्हा के यहाँ तो आज मीरासिनों की धूम है। कहाँ तो मिर्यां आजाद को नाच-गाने से इतनी चिट्र थी कि मजाल क्या, कोई डोमिनी घर के अंदर कदम रखने पाये । और आज सुनती हूँ कि तबले पर थाप पढ़ रही है और राजल, ठुम-रियाँ, टप्पे गाये जाते हैं ।

नाज़क--सुना है, आज सुरैया बेगम भी आनेवाली हैं ।

बहार--उस मालजदी का हमारे सामने क्ि क्र न किया करो |

नाजक-- दाँतों तके ऊँगली दबा कर) ऐसा न कद्दो, बहन |!

जानी --ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका सा द्ोना मुश्किल है |

नाजुक--यह छोग खुदा जाने, क्या समझती हैं घुरेया बेगम को ।

बहार--ऐ है | सच कहना, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहब उतरीं | जानी बेगम और नाज़कअदा में इशारे होने लगे । यह सुरैया बेगम

मुरैया--हमने कहा, चलके जरी दुलद्विन को देख आर्य |

रूहअफ़ज़ा--अब्छी तरह आराम से बेठिए |

सुरैया--मैं बहुत अच्छी बैठी हूँ । तक्रल्लफ़ क्या है ।

नाज़क--यहाँ तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया--मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूँ ।

सिपदआरा--और हमसे मी !

टुरैया--हाँ, तुमसे मी मिले ये, मगर बतायेंगे नहीं ।

सिपहआरा--कब मिले थे अल्लाह | किस मकान में थे !

सुरैया--अजी, में मज़ाक़ करती थी । हुस्नआरा बेगम को देख कर दिल शाद हो गया ।

नाजक--क्या दमप्ते ज़्यादा खूबसूरत हैं ! टुरैया--उ ुम्ह्ारा तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाजक--मला दुर्द्या से आपसे बातचीत हुई थी !

सुरैया--बातचीत आपसे हुई होगी । मैंने तो एक दफ़ा राह में देखा था । नाजुक--भछण दूसरा निकाह भी मंजूर करते हैं वह ।

मुरैया- यह तो उनसे कोई जाके पूछे ।

नाजक---.तुम्हीं पूछ छो बहन, खुदा के वास्ते ।

सुरैया--अगर मंजुर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या !

नाजक--फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब १

रूहअफ़जा-- आखिर दूसरे निकाह के लिए किसे तजवीजा है ।

नाजक--हम खद अपना पैग़ाम करेंगे |

रूहअफ़जा---बस, दृद हो गयी नाजकअदा बअंहन | ओफपफ़ोद्द !

नाजक--(आहिस्ता से) सुरेया बेगम, तुमने रालेती की। धीरज न रख सकी |

सुरैया--हम जान फ़िदा करते, गर वादा वफ़ा होता,

मरना ही मुक़दर था, वह आते तो क्या होता !

नाजक-- हाँ, है तो यही बात । खेर, जो हुआ, अच्छा द्वी हुआ, मसलद्वत भी यही थी।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाजुक बेगम की बातों को तौला, तो समझ गयीं कि द्वो न हो, सुरैया बेगम यही हैं। कनखियों से देखा और गरदन फेर कर दृशारे से सिपहआरा को बुला कर कदा--इनको पहचाना ! सोचो तो, यह कोन हैं १

सिपहआरा--ऐः बाजी, तुम तो पदेलियों बुझ्नवाती हो ।

हुस्नआरा--तुम ऐसी तबीयतदार, और अब तक न समझ सकीं !

सिपदआरा- तो कोई उडती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता ।

हुस्तआरा---उस शेर पर गौर करो |

सिपहआरा--अख्खाह, (सुरैया बेगम की तरफ देख कर) अब समझ गयी ।

हुस्नआरा -- है औरत हसीन !

सिपदआरा--हाँ हैं; मगर तुमसे क्या सुक़ाबिला |

हुस्नआरा--सच कहना, कितनी जद समझ गयी हूँ ।

सिपहआरा-- इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कत्न मिली थीं १ मुझे तो याद नहीं आता ।

हस्नआरा--छ़दा जाने | अछारक्खी बनके आने न पाती, जोगिन के भेम़ में कोई फटकने न देता | शिब्बोजान का यहाँ क्या काम !

सिपटआरा--शायद महरी-बदहरी बनके गुज़र हुआ दो ।

हुस्नआरा--सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है । इन्हे तो यह चाहिए था कि जहाँ आज़ाद का नाम घुनतीं, वर्दों से इट लातों, न कि ऐसी जगह आना !

सिपदआरा--इनसे यहाँ तक आया कक्योंकर गया १

हुस्नआरा--ऐसा न दो कि यहाँ कोई गुल खिले |

सिपहआरा ने जा कर बद्दार बेगम से कहा--ज्रो बेगम अभी आयी हैं, उनको तुमने पहचाना १ सुरैया बेगम यही हैं | तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए | गौर से देख कर बोलीं--माशा-अछाह | कितनी हसीन

औरत है| ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आयी |

सिपहआरा--बाजी को खोफ़ हैं कि कोई गुल न खिलायें ।

बद्ार--गुल क्या खिलायेंगी। अब तो इनका निकाह हो गया। सिपहआरा--ऐ: है, बाजी | निकाह पर न जाना | यह वह खिलाड़ है कि सँघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार--ऐ. नहीं, क्यों त्िचारी को बदनाम करती हो |

सिपहआरा--बाह | बदनामपी की एक ही कही | कोई पेशा, कोई कम इनसे छूटा ? लगावटबाज़ी में इनकी धूम हे ।

बहार--हम बन्र इस दब पर आने भी दें।

उघर नाजकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगस से पूछा--त्रहन, यह भात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहाँ से क्यों निकल आरयी। सुरैया बेगम ने कहद्दा "बहन, इस ज़िक्र से रंब होता है । जो हुआ, वह हुआ; अब उसका घड़ी-बड़ी जिक करना फ़जूल है | लेकिन जब नाजकअदा बेगम ने बहुत ड्विद की तो उन्होंने कहा-- बात यद्द हुईं कि बेचारे पादरी ने मुझ्न पर तरस खा कर अपने घर में रखा और जिस तरह कोई खास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरदद मुझसे पेश आते ! मुझे पदाया-दिजा5;, मुझसे रोज़ कद्दते कि तुम ईसाई हो जाओ; लेकिन मैं हँसके टाल दिया करती थी | एक दिन पादरी साहब तो चले गये थे किसी काम को, उनका भतीजा, जो फ़ौज़ में नौकर है, उनसे मिलने आया | पूछा--कहाँ गये हैं ! मैंने कहा--कहीं बाहर गये हैं। इतना सुनना था कि वद्द गाड़ी से उतर आया और अरनी जैच मे बोतल निकाल कर शरात्र पी | जत्र नशा हुआ तो मुझसे कद्दने छगा, ठम भी पियो । उसते समझा, में राजी हूँ । मेरा हाथ पकड़ लिया | में उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी । मगर वद् मद, में औरत ! फिर फ़ोज़ी जवान, कुछ करते-घरते नहीं बनती थी | आखिर बोली--छाहब, तुम फ़ोज़ के जवान हो। में भला तुमसे क्या ज़ीत पाऊँगी ! मेरा हाथ छोड़ दो । इस पर हँस कर बोरछा--हम बिना पिलाये न मानेंगे । मेश तो खून सूख गया । अब कहे तो क्या करूँ। अगर किसी को पुकारती हूँ, तो यद्द इस वक़्त मार ही ढालेगा | और बेइज्जत करने पर तो तुला ही हुआ है | चाहा कि झपटके निकल जाऊँ, पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला-- इमसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं ! मेरा बदन थर-थर काँप रहा था कि या खदा, आज कैसे श्जत बचेगी, और क्या होगा ! मगर आबरू का बचानेवाला अल्लाह है | उसी वक्त पादरी साइब आ पहुँचे | बस, अपना सा मुँह ले कर रह गया । चुपके से खिसक गया । पादरी साइब उसको तो क्या कहदते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता हो, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज़ करता ही है। जब्र वह भाग गया, तो मेरे पास आ कर बोले- मिस पालेन, अब तुम यहाँ नहीं रह सकतीं ।

मैं--पादरी साहब, इसमें मेरा ज़रा कुसूर नहीं ।

पादरी- मैंने खूद देखा कि तुम और वह हाथपाई करते ये |

मैं--वह मुझे जबरदस्ती शराब पिलाना चाहते ये ।

पादरी--अजी, हैं खूब जानता हूँ। में तुमको बहुत नेक समझता था !

मैं--पूरी बात तो घुन छीनिए ।

प।दरी--अब तुम मेरी आँखों से गिर गयों । बस अन्न तुम्हारा निबाह यहाँ नहीं हो सकता । कल तक उतुम अयना बंदोब्रध्त करलो। मैं नहीं जानता था कि तुम्दारे यह देंग हैं ।

उसी दिन रात को मैं वहाँ से मांगी |

उधर बड़ी बेगम साहब' इंतजाम करने में लगी हुई थीं। बात-बात पर कद्दती जाती थीं कि अछाइ | आज तो बहुत थक्री । अब मेरा सिन थोड़ा है कि इतने तकर लगाऊँ। उस्तानी जी हॉ-में-दाँ मिशञती जाती थीं।

बड़ी बेगम --उस्तानी जी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गयी |

उस्तानी--भरे तो हुजूर दौडती भी कितनी हैं ! इधर से उधर, उधर से इधर |

पहरी--द्रूसरा हो तो बैठ जाय ।

उस्तानी - इस सिन में इतनी दौौड़-घूप मुश्किल है |

महरी--ऐसा न हो, दुश्मनों की तब्रीयत ख़राब हो जाय | आखिर इभ छोग किस लिए हैं !

बड़ी बेगम--अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जायगा । इसके बाद करना द्वी क्या है ।

उस्तानी-यह क्यों ! खुदा सलामत रखे; पोते-पोतियाँ न होंगे !

बड़ी बेगम--बहन, मिंदगानी का कौन ठिकाना है ।

अब बरात का हाल सुनिए । कोई पहर रात गये बड़ी घधूम-घाम से बरात रवाना हुई | सबके आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। द्वाथी के सामने क्रम-क्रम पर अनार छूटते नाते थे । महृताब की रोशनी से चाँद का रंग फ़के था। चर्खी की आनबान से आसमान का कलेजा धक या । तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ़ के कमरे फटे पड़ते ये | ब्रिंस वक़्त गोरों का बाजा चौक में पहुँचा और उन्होंने चंड बजाया तो छोग समझे कि आसमान के फ़रिइते बाजा बजाते-बजाते उतर आये हैं | इतने में मियाँ छोन्ी इधर-उधर फुदकते हुए आये। खोजी--ओ शइनाईवालो ! मुँह न फैलाओ बहुत | लोग--आइए, आइए ! बस आप द्वी की कसर थी। खोजी--अरे, हम क्या कद्दते हैं ! मुँह न फैलाओ बहुत । लोग--कोई आपकी सुनता ही नहीं । खोजी--ये तो नौसिखिये हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे । लोग--इनसे कुछ फ़माइश कीजिए । खोजी-अच्छा, वल्लाह ! वह समाँ बाँधूँ की दंग हो जाइए। यह चीज छेड़ना भाई-- करेनवा में दरद उठी; कासे कहूँ ननदी मोरे राम .।

सोती थी मैं अपने मैंरित्त में; अचानक चौंक पड़ी मोरे राम । (करेजवा में दरद उठी***।)

लोग--सु भान-अछाह ! आप इस फ़न के उस्ताद हैं। मगर शहनाईवाले अन्त तक आपका हुक्म नहीं मानते ।

खोजी--नहीं भई, हुक्म तो मानें दौढ़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूँ । मगर इसको क्या किया जाय कि अनाडी हैं। बस, जरा मुझे आने में देर हुई और सारा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने खोजी के नजदीक जा कर जरा बंधे का इशारा किया तो खोजी लड़खडाये और उनके चेले अफ्कीमी भाइयों ने बिगड़ना शुरू किया |

एक- अरे परियाँ ! क्या आँखों के अंधे दो !

इसरा--इंट की ऐनक ल्गाओ मियों ।

तीसरा--और ख्वाजा साइब भी धक्का देते तो कैसी होती !

पकथा- -मैंह के बल गिरे दोते और क्या |!

पॉचवॉ---अज्जी, यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती !

खोजी--अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से छडते-झगएते थोड़े ही हैं। मगर हाँ, अगर कोई गीदी इमसे बोले तो इतनी क्रौलियोँ भोंकी हों कि याद करे !

जब बरात दुलहिन के घर पहुँची तो दूल्हे को दरवाज़े के सामने लाये और दुलट्टिन का नहाया छुआ पानी घोड़े के सुमों के नीचे डाला ! इसके बाद घी ओर शक्षर मिला कर घोड़े के पाँव में टगाया । दृढ्हा मइल में आया! दृल्द्दा की बहने उस पर दुपट्टे का आँचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ़ से औरतें बीडा! इर कदम पर डालती जाती थीं। इस तरह दृर्द्दा मड़वे के नीचे पहुँचा। उसी वक़्त एक औरत उठी और रूमाल से आँखें पोंछती हुई बाइर चली गयी। यह ररैया बेगम थीं । दे

भाज़ाद मेंडवे के नीचे उस चौकी पर खड़े किये गये जिस पर दुलहिन नहायी थी। मीरासिनों ने दुलह्दिन के उबटन का, जो माँझे के दिन से रखा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कद्दा--कहिए, दुरद्दा भेड, दुरुहिम शेर |

आजाद--अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़; बस !

डोमिनी--ऐ वाह | यह तो अच्छे दुल्हा आये। आप भेड़, वह शेर ।

आज़ाद--अच्छा साहब यों सददी । आप भेड़, वह शेर |

डोमिनी -- ऐ. हुजूर, कहिए, यह शेर, मैं भेह ।

भाजाद--अच्छा साहब, मैं भेड़, वह शेर।

इस पर खूब ऋफ़हा पड़ा। इसी तरह और भी कई रस्में अदा हुई, और तब दूल्हा महफ़िल में गगा। यहाँ नाच-गाना हो रहा था। एक नाज़नीन बीच में बैठी थी, मज़ाक़ हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फ़िक्रा कसा--बी साहब, आपने ग़ज़ब का गछा पाया है । उसकी तारीफ़ दी करना फ़बूलछ है | नाजनीन--कोई समझदार तारीफ़ करे तो खेर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ़ की तो क्या ६ नवाब- ऐ साइब, हम तो खद तारीफ़ करते हैं । नाज़नीन--तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं! बतछाइए, यह बिहाग का वक़्त है या घनाक्षरी का । नवाब--यह किसी दाड़ी-बचे से पूछो जाके । नाजनीन--ऐ छो | जो इस फ़न के नुझते समझे, वह दाड़ी-बचा कहलाये | वाह री अकल, वह अमीर नहीं, गैंवार है, जो दो बातें न जानता हो--गाना और पकाना । आपके से दो-एक घामड़ रईस शहर में और हों तो तारा शहर बस ज्ञाय | नाजनीन ने यह शज़ल गायी-- लगा न रहने दे झगड़े को यारता बाक़ी ; रुके न हाथ अभी है रंगे-गुलू बाक़ी। जो एक रात भी सोया वह गुल गले मिल कर ; तो भीनी-भीनी मद्दीनों रही हैबू बाढ़ी। हमारे फूल उठा के वह बोला गुच-देहन ; अभी तलक है मुहब्बत की इसमें यू बाकी । फ़िना है सबके लिए मुश्प” कुछ नहों मौकूफ़ ; यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाक़ी। जो इस जमाने में रह जाय आनबरू बाकी । नवाब--हाँ, यदं सबसे ज़्यादा मुक़ददम चीज़ है । नाजनीन--मगर इयादारों के लिए । बगड़ेबाज़ों को क्या १ इस पर इस ज़ोर से

क्कद्ा पढ़ा कि नवात्र साहब झप गये | नाजनीन--अब कुछ और फ़रमाइए हुजूर |! चेहरे का रंग क्यों फ़क़ हो गया ! मिरज़ा--आपसे नवात्र साइब बहुत डरते हैं । नवात्र--जी हाँ, दरामज़ादे से सभी डरा करते हैं | नाजनीन--ऐस है, जमी आप अपने अब्भजान से इतना डरते हैं । इस पर फिर क़दक़द्दया पड़ा और नवाब साहब की ज़बान बंद हो गयी । उधर दुलद्दिन को सात सुहागिनों ने मि् कर इस तरह सँवारा कि हुस्न की आब और भी मड़क ठउठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। क्ाज़ी साइब अंदर आये और दो गवाद्यों को साथ छाये | इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आजाद पाशा के साथ निकाह मंजूर दै ! दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया । बड़ी बेगम--ऐ: बेटा, कद दो | रूह अफ़ज़ा-- हुस्न आरा, घोलो बदन । देर क्यों करती हो !

नाजक-- बस, तुम हाँ कद दो । जानी--(आहिस्ता से) बजरे पर सैर कर घुकीं, हवा खा घुकीं और अब इस वक़्त नखरे बघारती हैं । आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से हूँ? कहा । बड़ी बेगम--लीजिए, दुलहिन ने हूँकारी भरी। काज्ी--हमने तो आवाज़ नहीं तुनी । बड़ी बेगम-- हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं । काज़ी साइबर ने बाइर आ कर दुल्हा से भी यदहदी सवाल किया | आज़ाद---जी हाँ क्ुबूल किया ! काज़ी साहब चले गये जोर मद्फ़िल में तायफ़ों ने मिर्ल कर मुबारकबाद गायी । इसके बाद एक परी ने यह ग़ज़ल गायी--- तड़प रहे हैं शबे-हंतज़ार सोने दे; न छेड़ दृमको दिले-बेक़रार सोने दे | क्रफ़स में आँख लगी है अमी असीरों को , ग़रज़ न जार में अभरे-बहार सोने दे | अभी तो सोये हैं यादे-चमन में अहले-क्रफ़त; लगा न उनको नसीमे बद्ार सोने दे | तड़प रदे हैं दिले-बेकरार सोने दे! शरबत-पिलाई के बाद दुल्हा और बुलद्दिन एक ही पर्कुग पर बिठाये गये। गेती-आरा ने कद्दा- बहन, जूती तो छुलाओ | जानी--वाह ! यह तो सिम्रटी-सिमटायी ब्रैठी हैं । बद्दार--आख्र हया भी तो कोई चीज़ है [नाजक--अरे, जूती कंधे पर छुला दो बहन, वाह ! उस्तानी--अगले वक़्तों में तो घिर पर पड़ती थीं । नाजक--इस जूती का मज़ा कोई मर्दों के दिल से पूछे | जब दुलहिन ने ज़रा भी जुम्बिश न की तो बद्दार बेगम ने दुलहिन के दाहने पैर की जूती दृढ़द्दा के कंघे पर छुला दी । नाजक--कट्दिए, आपकी डोली के साथ चूँगा । रूहअफ़जा--और जूतियों झाड़के धरूँगा जानी--और युराही हाथ में ले चढ़ूँगा । आज़ाद--ऐ, | क्यों नहीं, जरूर कहूँगा । नाजुक--ऐ, वाह | अच्छा रंग लाये । बानी- रंडियों से नखरे बहुत सीखे हैं । इस फ़िकरे पर ऐसा कहक़दा पड़ा कि मि्याँ आज़ाद शर्मा गये । जानी बेगम

इक्कीस पान का बीडा छायीं ओर उसे कई बार आज़ाद के मुँह तक ला-छा कर हटाने के बाट मिरकता सिकर

सिपहआरा--सुहाग छायीं और दूल्हा के कान में कहदा--कह्दो, सोने में सुदागा मोतियों में बागा ओर बने का जी बनी से छागा |

इसके बाद आरसी की रस्म अर हुई ।

जानी--बन्नू, जल्दी आँख न खोलना ।

नाजक--जब तक अपने मुँद्द से ग़ालाम न बनें |

हैदरी - कदहिए, बीवी, में आपका ग़लाम हूँ ।

आजाद--बीबी मैं आपका त्रिन दामों ग़लाम हूँ ।

बड़ी बेगम--बेट), अब तो कहवा लिया, अब आँखें खोल दो |

जानी--एक ही बार तो कहा |

हैदरी--ऐ, हुजूर, खशामद तो कीजिये ।

आज़ाद--यह खशामद से न मानेंगी।

हैदरी--जो कद्दा है, उसका खयाल रहे । बीती के ग़लाम बने रदिएगा |

आखिर बड़ी मुश्किलों से दुलद्विन ने आँखें खोडीं, मगर आँखों में भाँयू भरे

हुए थे । बे-अख्तियार रोने लगीं। छोग समझाते-समझाते आरी दो गये, मगर आँसू न थमे | तब आकाद ने सिर झुका कर कान में कहा--यह क्या करती हो, दिरू को मजबूत रखो ।

रूहअफ़ज़ा--बहन, खदा के लिए चुप हो जाओ । इसका कौत सा मौक़ा है !

बहार--अम्माजन, आप ही. सभझायें। नाइक़ अपने को हलाकान करती हैं बुस्नआरा

उस्तानी--वर कपड़े से मुँह .पोंछा ।

जब्र हुस्नभारा का जी बहाल हुआ तो आज़ाद ने सुद्दाग पुडे से मसाला निकाल कर दुलद्विन की माँग भरी | तब दुलाहिन को गोद में उठा कर सुखपाल पर बिठा दिया | वहाँ ज़ितनी औरतें थीं, सबकी आँखों से आँयू जारी हो गये और बड़ी बेगम तो पछाड़ें खाने लगीं | जब बरात इख़सत दो गयी तो बातें होने छूगीं--

रूहअभफ़जा--अब्लाइ करे. आजाद ने ज़ितनी तकडढीफ़ें उठायी हैं, उतना ही आराम भी पार्ये । अन्बासी --अल्लाइ ऐसा डी करेगा |

जानी--मागर आजाद का सा दढ़्दा भी किसी ने कम देखा दोगा |

नाजक--छाखों कुओं का पानी पी चुके हैं |

बहार--बड़े खशमज़ाक़ आदमी मादम दोते है ।

जानी--ह्स वक़्त हुस्नआरा के दिल का क्या हाल होगा !

नाडुक--चौथी के दिन हम ताक-ताक निशाने छगायेंगे |

रूहअफ़ज़--आज़ाद से कोई न जीत पायेगा |

जानी--कोन ! देख लेना बहन, अगर हारी न बोलें जमी कहना । वह अगर तेज हैं, तो हम भी कम नहीं |

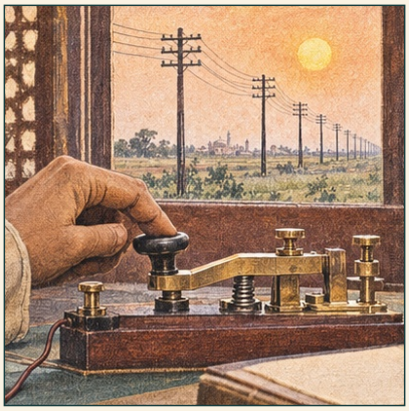
उपसंहार

मीडा और बंद ख़त



१ बम्बई से वापसी

मीडा की बातों पर आज़ाद को यक़ीन नहीं था। बिना ज़रिये के कोई दूर बैठे आदमी तक बात कैसे पहुँचाएगा?



२ तार की खटखट

मीडा ने मिसाल दी। जिसे तार का काम न मालूम हो, उसे भी तो दूर तक ख़बर पहुँचाना जादू लगेगा।



३ दरवाज़े से आया कार्ड

बंद ख़त पढ़ने की बहस चल ही रही थी कि बैरा कार्ड ले आया। मीडा भी मेहमान से मिलना चाहती थीं। आज़ाद उन्हें बुलाने चल दिए।

उपसंहार

प्रिय पाठक, शासत्रानुसार नायक और नायिका के संयोग के स्तथ ही कथा का अंत हो जाता है। इसलिए हम भी अत्र लेखनी को विश्राम देते हैं। पर कदाचित् कुछ पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी कि ख्वाजा साहब का क्या हाल हुआ और पम्रिस मीडा और मिस क्लारिसा पर क्या बीती । इन तीन पात्रों के सिवा हमारे वैचार में तो और कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसके बविबय में कुछ कहना बाक़ी २६ गया हो | अच्छा मुनिए । मियां जोडी मरते दम तक आज़ार के वफ़ादार दोस्त बने रे | अफ़ीम की डिबिया और करौली की घुन ने कमी उनका साथ ने छोड़ा । मिस पीड़ा और पिस कलारिसा ने उर्द और हिंदी पढ़ा और दोनों बियासाफिस्ट हो गयों । नों ही ने स्त्रियों की सेवा करमा ही अपने जीवन का उद्देश्य ता लिया । क्लारिसा तो कलकता की तरफ़ चली गयीं, मीडा वम्बई से लौट कर आड़ाद से मिलने आर्थी नी आजार | हैंग कर कहा -अब तो यियायोफिल्ट हैं आप ! पीडा--जी हाँ, खदा का शुक्र है कि ४से उसने हिदायत की ! आजइ--तों यह आहिए कि अब आप पर खदा का नूर नाज़िल हुआ। इस पनहव में कौन-कौन आलिम शरीक हैं ! पमीडा--अफ़सोस है आशाद, कि तुम थियासोफ़ों से बअिछकुछ वाक्रिफ़ नहीं हो । इसमें बढ़े-बडे नामी आशिम और फिडासफर दर्गेक हैं, जिनके नाम के इस वक़्त दुनिया में झंडे गे हुए है। यूरोप के अकवर आलियों का झुका इसी तरफ़ है | आजाद--हमने सुना है कि पिवासोफोवाड़े रूड से बाते ऊऐ हैं! मुझे तो यह शोबदेबाज़ी मालूम दती है । प्रीका--उम इसे सोचदेजाजी समझते ही ! आजाइ--शोबदा नहों तो और स्या है, मदारियों का खेल प्रीडा--अगर इसका नाम शाजरदा यूटन और ह्वरशेल भी बड़े शोबदे बाज थे ! आज़ाद--बाह, कहाँ न्यूटन और कहाँ यियासोफी । हमने छुता है कि थियासो-फिल्ट लोग गँब का द्वाल बता देते हैं। बम्पई में बैठे हुए अमेरिकावालों से बिना कसी वसोले के बातें करते हैं | यहाँ तक तुनता है कि एक ताहब जो थियासोफिर्टों में बटत उँना दरजा रखते हैं बह डाक से खत ने भेज कर जादू से ४लते हैं। बह खत लिख कर मंत्र पर रख देते हे और जिन लोग उठा क. पहुँचा देते ह | :डा- तो इसर्म ताखब की 7 का) ई | शे लोग लिख्नना-पढना नहीं जानते वह दे आदधियों क हरा से बाते करते देख कर जहर दिल में सोनेंगे कि जादूगर ४ दधोपतो ताउ्जुब होता है कि गेज पर रण हुआ सात होते ए+ हैरे पहँए गया उसी तरह उन जंगली आदमियों को हैरत होती है कि दो आदमी चुप-चाप जड़े हैं, न बोलते हैं, न चालते हैं, और रूकीरों से बातें कर लेते हैं। अफ्रीका के हबशियों से कहा जाय कि एक मिनट में हम छालों मील पर बेटे हुए आदमियों के पास ख़बरें मेज सकते हैं तो वे कभी न मानेंगे । उनकी समझ में न आयेगा कि तार के खटखटाने से कैसे इतनी"दुर खबरें पहुँच जाती हैं। इसी तरह तुम छोर थियातोफी की करामात को शोबदा समझते हो ।

आजाद--तुम मेस्मेरिज़्म को मानती हो !

मीडा--मैं समझती हूँ, जिसे ज़रा भी समझ होगी वह इससे इनकार नहीं कर 'एकता ।

आजाद--खुदा तुमको सीधे रास्ते पर लाये, ब्ष और क्या कहूँ ।

मीडा--मुझे तो सीधे रास्ते पर छाया । अब मेरी दुआ है कि खुदा तुमको भी सीधे दरें पर लगाये ।

आजाद--आखिर इस मजहब् में नयी कोन सी बात है।

मीडा--समझाते-समझाते थक गयी मगर तुमने मज़हब कहना न छोड़ा |

आजार--खता हुई, मुआफ़ करना, छेकिन मुझे तो यक्कीन नहीं आता कि बिला किसी बहीडे के एक दुसरे के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो सकता है । मैंने सुना

कि मैडम ब्लेवेट्स्की खतों को बगैर खोले पढ़ लेती हैं ।

मीडा-हाँ-हाँ, पढ़ लेती हैं, एक नहीं इजारों बार मैंने अपनी आँखों देखा हे और खद्दा ने चाद्दा तो कुछ दिनों में मैं भी बही करके दिखा दूँगी।

आज्ञाद--छुदा करे, वह दिन जल्द आये। मैं बराबर दुआ करूँगा |

यही बाते हो रही थों कि बैरा ने अंदर आ कर एक कार्ड दिया | अजाद ने का देख कर बैरा से कहदा--नवाब साइब को दीवानखाने में बैठाओ, इम अभी आते हैं ।

मीडा ने पूछा--कौन नवाब साहब हैं !

आजडाद-मिरज़ा हुमायूँ फ़र के छोटे भाई हैं, जिनके साथ सिपहआरा की शादी हुई हे ।

प्रीडा--तो यों कहिए कि आपके साढ हैं। तो फिर जाहए। में भी उनसे मिडँगी |

आज्ञाद--मैं उन्हें यहीं लाऊँगा |

यह कहते हुर आज़ाद दीवानखाने की तरफ़ चले गये ।